सर्वश्रेष्ठ रूसी और सोवियत पुस्तकमाला

लेव तोलस्तोय

पुनरुत्थान

उपन्यास

प्रगति प्रकाशन
मास्को

Лев Толстой

ВОСКРЕСЕНИЕ

На языке хинди

हिंदी अनुवाद • प्रगति प्रकाशन • १९७७

सोवियत सघ म मुद्रित

$T\frac{70301-175}{014(01)-77}679-77$

अनुक्रम

अनुवादक भीष्म साहनी

Лев Толстой

ВОСКРЕСЕНИЕ

На языке хинди

सोवियत संघ में मुद्रित

$T\frac{70301-175}{014(01)-77}679-75$

अनुक्रम

पृ०
७
२८७
५२७

पहला भाग

मत्ती, अध्याय १८, पद २१।

तब पतरस ने पास आ कर, उससे कहा, हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करू, क्या सात बार तक? २२ यीशु ने उससे कहा, मैं तुझसे यह नही कहता, कि सात बार, वरन सात बार के सत्तर गुने तक।

मत्ती, अध्याय ७, पद ३।

तू क्यो

अपने भाई की आख के तिनके को देखता है, और अपनी आख का लट्ठा तुझे नही सूझता?

यूमन्ना, अध्याय ८, पद ७।

तुममे

जो निष्पाप हो, वही पहले उसको पत्थर मारे।

लूका, अध्याय ६, पद ४०।

चेला

अपने गुरु से बडा नही, परन्तु जो कोई सिद्ध होगा, वह अपने गुरु के समान होगा।

१

धरती के एक छोटे मे टुकडे पर रहने वाले लाखा इनसानो ने उसे कलुपित करने मे कोई कसर नही छाडी थी। पत्थरो से उस पर फश वाधे, कही हरियाली की कोपल भी फूटती हुई देखी तो उसे उखाड फेंका, पडा की शाखे काट डाली, पशु-पक्षियो को मार भगाया, और वातावरण को कोयले और तेल के विपैले धुए से भर दिया। फिर भी शहर मे भी वसन्त तो आखिर वसन्त ही था। धूप खिली थी, जगह जगह घास उगने लगी थी। हरी हरी घास सडको के किनारे वन लॉनो पर ही नही, पटरी की सिला के वीच बीच भी दिख रही थी। वच, पॉप्लर तथा बड चेरी के वृक्षा पर चिपचिपी, महक भरी कोपले फटने लगी, लाइम वृक्षो पर कलिया चिटकने लगी। वसन्त की हिलार मे चहचहाते पक्षी–चिडिया, कबूतर, कौवे–तिनके बटोर बटोर कर अपने नीड बनाने लगे। और सूरज की सुहावनी धूप मे अलसाई मक्खिया दीवारो पर भनभनाने लगी। सभी खुश थे पेड-पौधे, पक्षी, कीट पतग बच्चे। परन्तु लोगो ने, वयस्क पुरुषा और स्त्रियो ने, अपने को तथा एक दूसरे को ठगना और यातनाए पहुचाना नही छोडा। उनकी नजरो म वसन्त की इस प्रात का कोई महत्व न था, उसकी पवित्रता का वे अनुभव नही कर रहे थे। भगवान की सृष्टि का सौन्दय वे नही देख रहे थे। यह सौन्दय सभी जीवो के लिए आनन्द का स्रात है, इससे हृदय मे शान्ति, प्रेम तथा सदभावना का सचार हाता है। परन्तु लोगो के लिए अगर किसी चीज का महत्व था, अगर कुछ पवित्र था, तो ये थी वे तरकीबें, जा उन्होंने एक दूसरे पर हुक्म चलाने को निकाल रखी थी।

इसी तरह, प्रादेशिक जेल के दफ्तर मे भी वसन्त के पुण्यागमन को कोई महत्व नही मिला। किसी ने यह नही साचा कि यह मनुष्य तथा

पशु पक्षियों के लिए वरदान है, आनद का स्रोत है। उनकी नजरों म यदि किसी चीज का महत्व था तो उस कागज का जो इस जेल मे एक दिन पहले भेजा गया था। कागज पर बाकायदा सरकारी मोहर लगी थी, और उसे रजिस्टर मे दज कर लिया गया था। उसमे लिखा था कि आज २८ अप्रैल के दिन प्रात ६ बजे तीन कैदियों को अदालत-सुपुर्द कर दिया जाय। इन तीन कैदियो मे एक आदमी और दो स्त्रिया थी। हुक्म था कि इन दो म से एक स्त्री को—जो सबस बडी मुजरिम करार दी गई थी—औरो से अलग पहुचाया जाय। इसी लिए आज २८ अप्रैल के दिन, प्रात ८ बजे जेल का बडा जमादार जेल मे औरतो की बैरक मे दाखिल हुआ। अधेरे गलियारे मे बदबू से नाक फटती थी। उसके पीछे पीछे एक औरत चली आ रही थी, चेहरे पर यातना के चिह्न और सिर पर सफेद, घुघराले बाल। उसने वर्दी पहन रखी थी जिसकी आस्तीनो पर सुनहरी डोरी और पेटी पर नीले रग की मगजी लगी थी। यह औरतो की बैरक की जमादारिन थी।

'मास्लोवा को ले जाना है?" उसने पूछा। बडा जमादार और वह एक कोठरी के पास पहुच गये थे, जिसका दरवाजा अधेरे गलियारे मे खुलता था।

जमादार न लोहे के ताले को खडकाते हुए कोठरी का दरवाजा खोला और चिल्लाकर बोला—

'मास्लोवा, अदालत के लिए तैयार हो!"

कोठरी के अदर से गन्दी हवा का झोका आया जो गलियारे की बदबू से भी ज्यादा तीखी थी। पुकार लगाने के बाद जमादार ने दरवाजा बद कर दिया।

जेल के आगन तक म हवा मे ताजगी थी। प्रात समीर के स्वच्छ, जीवनदायी झोके खेतो की ओर से बहते चले आये थे। परन्तु गलियारे मे दम घुटता था। यहा की हवा तपेदिक की कीटाणुओ से, मल मूत्र, कोलतार तथा सडन की गध से भरी थी। जो कोई नया आदमी यहा आता, खिन्न और हताश हो जाता था। यह जमादारिन भी, जो रोज इस बदबू म काम करती थी, यहा आकर थकी-थकी और उनीदी महसूस करने लगी थी। कोठरी के अदर हलचल हुई। औरतो के बतियाने और फर्श पर नगे पैर पडने की आवाजें आने लगी।

"जल्दी करो!" वडा जमादार चिल्लाया।

मिनट, दो मिनट बाद एक मझले कद की युवा स्त्री जल्दी से दरवाज़े म से निकली और जमादार के पास जा खडी हुई। उसका वक्ष उभरा हुआ था। वह सफेद रग की जाकेट और घाघरा पहने थी और ऊपर भूरे रग का चोगा डाले थी। पैरो मे सूती मोज़े और जेल के जूते थे। सिर पर उसने सफेद रूमाल बाध रखा था जिसके नीचे से काले काले बालो की कुछेक कुडलिया निकल आयी थी। जान पडता था जैसे जान बूझ कर उन्हे माथे पर सजाया गया हो। युवा स्त्री का चेहरा पीला था। यह वह पीलापन था, जो लम्बे समय तक अधेरी कोठरी मे बद पडे रहने के कारण लोगो के चेहरे पर आ जाता है और जिसे देख कर अनजाने मे ही उन आलुओ की याद हो आती है जिन पर तहखाने मे ही पडे पडे कल्ले फूट आते हैं। हाथो और गरदन का रग भी सफेद पड गया था। हाथ छोटे छोटे मगर चौडे थे। गरदन सुडौल थी, जो चोगे के चौडे कॉलर के नीचे से दिख रही थी। पीले चेहरे पर गहरी काली चमकदार, थोडी सूजी हुई, किंतु चचल आखें आकर्पित और विस्मित करती थी। एक आख कुछ तिरछे देखती थी। वह चलती तो तन कर, सीधी, जिससे उसकी छातिया और भी उभर आती। सिर को ज़रा सा पीछे किये हुए, वह गलियारे म जमादार के ऐन सामने आ खडी हुई और सीधे उसकी आखो मे देखने लगी, मानो हुक्म बजा लाने के लिए तैयार हो। जमादार कोठरी के दरवाज़े को ताला लगाने जा ही रहा था कि पीछे से एक बुढिया ने अपना सिर बाहर निकाल दिया। उसका कठोर पीला चेहरा झुर्रियो से भरा था और बाल सफेद थे। बुढिया मास्लोवा से कुछ कहने लगी। लेकिन जमादार ने दरवाज़ा उसके सिर पर दबाया और बुढिया का सिर पीछे हट गया। कोठरी मे से किसी औरत के ज़ोर से हसने की आवाज़ आई। मास्लोवा भी मुस्करा दी और दरवाज़े मे बने सीखचो के झरोखे की तरफ मुड गयी। बुढिया इस झरोखे से सिर लगा कर खडी थी और फटी आवाज़ मे कह रही थी

"मेरी बात गाठ बाध लो। जब वे सवाल पूछें तो एक ही बात कहना और उसी को दोहराती रहना। इधर-उधर की बात कोई नही कहना।"

"इससे बदतर हालत और क्या होगी। इधर या उधर, कुछ तो फैसला हो जाय," सिर झटकते हुए मास्लोवा ने कहा।

"फैसला तो होगा ही, और एक ही होगा। फैसले दो नहीं होते," बडे जमादार ने अफसरी के लहजे मे चुहल करते हुए कहा, "चले, मर पीछे पीछे।"

बुढिया झरोखे मे से हट गई और मास्लोवा गलियारे के ऐन बीच आ कर बडे जमादार के पीछे छोटे कदम बढाती हुई तेज़ तेज़ चलने लगी। वे पत्थर की बनी सीढियो पर से नीचे उतर कर जाने लगे। यह जेल का वह हिस्सा था जहा पुरुष कैदी रखे जाते थे। यहा पर शोर मचा हुआ था और हवा औरतो की बैरक से भी ज्यादा गदी थी। कैदी झरोखो मे से झाक झाक कर देखने लगे। मर्दो की बैरक पार कर ये लोग दफ्तर मे पहुचे जहा दो सिपाही मास्लोवा को साथ ले जाने के लिए पहले से खडे थे। दफ्तर के बाबू ने जो वहा बैठा काम कर रहा था एक सिपाही के हाथ मे तम्बाकू की गध से भरा कागज़ दिया और कैदी की ओर इशारा करते हुए बोला

"ले जा।"

सिपाही ने कागज को अपने कोट की आस्तीन मे खोस लिया, और कैदी की ओर कनखियो से देख कर अपने जोडीदार को आख मारी। यह सिपाही नीज्नी नावगोरोद का रहने वाला कोई किसान था। उसका चेहरा लाल और चेचक के दागो से भरा था। दूसरा सिपाही कोई चुवाश था और उसके गालो की हड्डिया उभरी हुई थी। दोनो सिपाही कैदी को साथ लिये बाहर के दरवाजे की ओर बढ गये, और जेल का आगन पार कर के सडक पर आ गये, जिस पर सडक के बीचोबीच चलते हुए वे शहर मे से जाने लगे।

राह जाते लोग—गाडीवान, दूकानदार, रसोइये मजदूर, सरकारी दफ्तरो के बाबू—सभी रुक रुक कर कुतूहल के साथ कैदी की ओर देखते। कुछ तो सिर हिला कर मन ही मन कहते 'बुरे कामो का यही फल होता है। अगर इसका आचरण अच्छा होता—जैसा कि मेरा है—तो इसे यह दिन न देखना पडता।" बच्चे उसे डाकू समझ कर सहमी हुई नजरो से घूर घूर कर देखते। पर कैदी के साथ सिपाहियो को देख कर उनका डर दूर हो जाता, वे आश्वस्त हो जाते कि कैदी उनको कोई नुक्सान नही पहुचा सकता। एक किसान शहर मे कोयला बेचने आया था, कोयला बेच कर, और चाय पी कर अपने गाव लौट रहा था। कैदी को देख कर

उसके पास जा पहुचा, छाती पर सलीब का निशान बनाया और एक कोपक निकाल कर कैदी के हाथ मे दिया। मास्लोवा शर्म से लाल हो गई, सिर झुका लिया और कुछ बुदबुदा दी।

सब लोग कैदी की ओर देख रहे थे। उसे इस बात से प्रसन्नता हुई कि लोग उससे आकर्षित हो रहे हैं। सिर उठाये बिना वह भी कनखियो से हर देखने वाले को देख लेती। जेल के बाद यहा हवा साफ थी। इससे भी उसका दिल खुश हुआ। परन्तु उसके पैर चलने के आदी नही थे। जेल के रद्दी जूता मे नुकीले पत्थरो पर पाव रखते हुए उसे दर्द होता था। जहा तक बन पडता वह रुक रुक कर, हल्के हल्के पाव रखती। अनाज की एक दूकान के सामने कुछ कबूतर गुटरगू गुटरगू करते घूम फुदक रहे थे। कोई उनसे छेड नही कर रहा था। उनके पास से गुज़रते हुए कैदी का पाव एक भूरे-नीले रग के कबूतर को छू गया। कबूतर फर से उडा और पर फडफडाता हुआ उसके कान के पास से निकल गया। वह मुस्करायी, पर फिर अपनी स्थिति का ख्याल कर के उसने गहरी सास ली।

२

कैदी मास्लोवा की जीवन-कहानी बडी साधारण सी है। उसकी मा एक जागीर म नौकरानी थी और उसी जागीर की गोशाला म ग्वालिन का काम करने वाली स्त्री की बेटी थी। शादी-ब्याह नही हुआ था। यह ज़मीदारी दो बुढिया बहिनो की मिलकियत थी। इन बुढिया बहिनो ने भी उम्र भर शादी नही की थी। मास्लोवा की मा के हर साल एक बच्चा हो जाता था। और जैसा कि गाव-गवई के लोगो मे अक्सर होता है, जब इस तरह का अवाछित बच्चा पैदा होता तो मा उसका बपतिस्मा तो करवा देती, पर बाद मे उसकी कोई सुध-बुध न लेती। जिस औरत की गोद म बच्चा हो वह काम क्या करेगी? नतीजा यह होता कि बच्चा घूरे पर पडा रहता। एक एक कर के पाच बच्चे इसी तरह परलोक सिधार चुके थे।

पाचो का बपतिस्मा हुआ, पाचो मे से किसी को भी खाना नही मिला, और पाचो ही घूरे पर मरने के लिए छोड दिये गये। छठे बच्चे

का बाप कोई आवारा जिप्सी था। यह बच्चा भी परलोक को राह लेता, लेकिन भाग्य बली है एक दिन वही बुढ़िया जमींदारिन गोशाला में आ निकली। ग्वालिन को डांटने लगी कि क्रीम में से गाजर की बदबू आ रही है। ग्वालिन की मां उस वक्त गोशाला के एक कोने में पड़ी थी, और पास में एक खूबसूरत, स्वस्थ, नवजात बच्चा लेटा था। बुढ़िया ने बच्चा को यों गोशाला में लेटे देखा तो उसका पारा और चढ़ गया। ग्वालिन को डांटने लगी कि इसे क्यों यहां लेटने की इजाज़त दी गई है। इसके बाद वह वहां से जाने को हुई, जब बच्चे पर नज़र पड़ते ही उसे रहम आ गया, और उसी वक्त बच्चे को अपनी सरपरस्ती में लेने के लिए तैयार हो गई। बस, छोटी बच्ची के प्रति दयाभाव से प्रेरित होकर उसने उसका बपतिस्मा करवाया, मां के लिए कुछ नकदी और थोड़े से दूध का इन्तज़ाम करवा दिया ताकि बच्ची की परवरिश होती रहे। बच्ची बच निकली। दोनों बुढ़िया बहिनें उसे "रक्षिता" कहा करती थीं।

जब बच्ची तीन बरस की हुई तो एक दिन उसकी मां बीमार पड़ गई और आननफानन में मर गई। बच्ची को उसकी नानी ने पालना शुरू किया। लेकिन वृद्ध महिलाओं ने बच्ची को बुढ़िया नानी से ले लिया। नानी उसे क्या पालती, वह तो उस पर बोझ बनी हुई थी। लड़की बला की खूबसूरत निकली। आंखें काली काली और स्वभाव चंचल और हंसमुख। दोनों बुढ़िया बहिनों को मनबहलाव का एक साधन मिल गया।

दोनों बहिनों में से छोटी बहिन अधिक दयालु स्वभाव की थी, उसका नाम सोफिया इवानोव्ना था और उसी ने बच्ची का बपतिस्मा करवाया और उसकी धर्म माता बनी थी। बड़ी बहिन जिसका नाम मारीया इवानोव्ना था, दिल की ज़रा कठोर थी। सोफिया इवानोव्ना बच्ची को अच्छे अच्छे कपड़े पहनाती, उसे पढ़ना लिखना सिखाती। वह चाहती थी कि कुलीन लड़कियों की तरह यह भी पढ़ लिख जाय। परन्तु बड़ी बहिन मारीया इवानोव्ना को यह पसन्द न था। वह चाहती थी कि लड़की घर का कामकाज सीखे, बड़ी हो कर अच्छी नौकरानी बने। वह सख्ती से काम लेती, सजाएं देती, और कभी कभी जब पारा तेज़ होता तो बच्ची को पीट भी देती। इस तरह यह छोटी लड़की दो भिन्न भिन्न प्रभावों के नीचे पलने लगी। नतीजा यह हुआ कि वह आधी नौकरानी और आधी कुलीन-बाला बन कर रह गई। दोनों बहिनें उसे कात्यूशा कह कर बुलाती।

यह नाम इतना परिष्कृत नही था जितना कि कातेन्का, पर साथ ही इतना भद्दा भी नही था जितना कि काल्का। वह कमरा की झाड-पोछ करती, सीने पिरोने का काम करती, देव चित्रा के चौखटो को खडिया मिट्टी से पालिश करती, और इसी तरह के छोटे मोटे ऊपर के काम करती। कभी कभी कोई किताब लेकर बैठ जाती और बुढिया बहिना को पढ कर सुनाती।

यद्यपि कई लोगा ने उसके सामने शादी के प्रस्ताव रखे, परन्तु वह नही मानी। कात्यूशा जानती थी कि इनमे से किसी के साथ ब्याह करने का मतलब होगा उम्र भर चक्की पीसना। कुलीनो के घर मे रह कर वह आराम तलब हो गई थी।

दिन बीतते गये और कात्यशा मोलह बरस की हुई। एक दिन दोना वहिनो का जवान भतीजा कुछ दिन उनके पास ठहरने के लिए आया। वह बेहद अमीर था, और विश्वविद्यालय मे पढता था। कात्यूशा, मन मे ना ना करती हुई भी, उससे प्रेम करने लगी। दो साल बाद यही भतीजा अपनी रजिमेंट मे दाखिल होने जा रहा था। रास्ते म चार दिन के लिए अपनी फूफिया का मिलने के लिए रुक गया। रवाना हाने से एक रात पहले उसने कात्यूशा की अस्मत लूटी, उसे सौ रूबल का नोट दिया और चलता बना। पाच महीने बाद कात्यूशा को यकीन हो गया कि उसे गर्भ हो गया है।

इसके बाद हर चीज उसे बुरी लगने लगी। एक ही बात रह रह कर उसके मन म उठती कि किसी तरह आने वाली लाछना स बच सके, अब इन महिलाओ की सेवा म उसका मन नही लगता था और वह काम म लापरवाही करने लगी थी। एक बार तो ऐसा हुआ कि वह दोना मालकिना के सामने किसी बात पर गुस्ताखी कर बैठी। उसकी समझ म नही आया कि बात कैसे हा गई। बाद मे उसे बडा पछतावा भी हुआ। उसने मालकिना को बुरा भला सुनाया और कहा कि वे उसे रुखसत कर दें। दोना वहिनें उससे काफी नाराज थी, इसलिए रुखसत पाने मे देर नही लगी। इसके बाद उसे किसी पुलिस अफसर के घर मे नौकरानी की जगह मिल गई। यहा वह केवल तीन महीने तक टिक पायी। पुलिस-अफसर पचास साल का बढा कात्यूशा से छेड छाड करने लगा। एक दिन तो उसके पीछे ही पड गया। कात्यूशा आपे से बाहर हो गई। उसने उसे "गधा' और "शैतान" कह कर इस जोर से धक्का दिया कि पुलिस-

अफसर के पाव लडखडा गये और वह फश पर जा गिरा। इस "गुस्ताखी" के लिए कात्यूशा को नौकरी से हाथ धोना पडा। अब कहीं नौकरी ढूढना फिजूल था क्योंकि प्रसव का समय नजदीक आ रहा था और वह गाव की एक दायी के घर जा पहुची। यह दायी लुक छिप कर कच्ची शराब भी वेचा करती थी। प्रसव मे कोई कठिनाई न हुई। कात्यूशा के बेटा हुआ। लेकिन कात्यशा को दायी से कोई छूत की बीमारी लग गई—दायी गाव मे किसी दूसरे घर मे जाया करती थी जहा से वह रोग ले आयी थी। मजबूर हो कर कात्यूशा को अपना बच्चा अनाथालय मे भेजना पडा। एक बुढिया उसे वहा पहुचाने गयी, लेकिन बच्चे ने वहा पहुचते ही दम तोड दिया। यह खबर बुढिया ने लौट कर बतायी।

जब कात्यशा दायी के घर आयी थी तो उसके पास कुल मिलाकर एक सौ सत्ताईस रूबल थे। इनमे से सत्ताईस रूबल तो उसकी अपनी कमाई के थे और सौ रूबल उस शख्स ने दिये थे जिसने उसकी अस्मत लूटी थी। जिस दिन कात्यूशा ने दायी का घर छोडा उस दिन उसके पास केवल छ रूबल बाकी बच रहे थे। सोच समझ कर पैसे खच करना कात्यूशा के स्वभाव के प्रतिकूल था। वह अपने आप पर भी खच करती और जो काई मागता उसे देन म भी हाथ न रोकती। चालीस रूबल तो दायी न इस बात के लिए ले लिये कि दो महीने तक उसन कात्यूशा को घर मे रखा था और उसकी देख रेख की थी। पच्चीस रूबल बच्चे का अनाथालय म भेजने म लग गय। चालीस रूबल दायी ने उधार माग लिये—वह अपने लिये एक गाय खरीदना चाहती थी। इसके अलावा बीस रूबल कपडे-लत्ते, खाने पीने और अय छोटी-मोटी चीज़ो पर खच हो गय। जब जेब मे पैस न रह तो कात्यूशा का फिर नौकरी की तालाश करनी पडी, और अब की बार उस जगलात के एक अफसर के घर जगह मिल गयी। यह अफसर शादी शुदा आदमी था, परन्तु वह पहले दिन से ही कात्यूशा के पीछे पड गया। कात्यूशा का वह बुरा लगता था, और उससे बचने की उसन भरसक कोशिश की। लेकिन वह मालिक था और कात्यशा नौकरानी थी। जिस काम पर जहा भी वह उसे भेजता उसे जाना पडता। इसके अलावा वह बडा धूत था, कई घाट का पानी पी चुका था। आखिर वह कात्यूशा का भ्रष्ट करने म सफल हो गया। पर उसकी पत्नी का पता चल गया। एक दिन उसन कात्यूशा और अपने पति

को एक कमरे मे अकेले पाया तो वह कात्यूशा को पकड कर पीटने लगी। कात्यूशा ने भी अपना बचाव करने के लिए हाथ उठाया, जिससे दोना आपस मे भिड गईं। कात्यूशा को निकाल बाहर किया गया, और उसे तनख्वाह का एक पैसा भी नही दिया गया। कात्यूशा की एक मौसी शहर मे रहती थी। कात्यूशा उसके पास चली गई। उसका पति जिल्दसाज़ी का काम करता था और किसी ज़माने मे अच्छा खाता-पीता आदमी था। लेकिन एक एक कर के उसके सब ग्राहक टूट गये थे, और उसे शराब पीने की लत पड गई थी। अब जो पैसे हाथ लगते वह जेब म डाल कर शराबखान मे जा पहुचता था।

मौसी ने एक छोटी सी लॉन्ड्री खोल रखी थी। जा थोडी बहुत आमदनी होती उससे वह घर चलाती, बच्चो का पालन करती तथा अपनी और अपने उजाड पति की ज़रूरते पूरी करती। कात्यूशा को उसने लॉन्ड्री मे धाबिन का काम करने की सलाह दी। पर कात्यूशा साच म पड गई। मौसी की लॉन्ड्री मे और भी धोबिनें काम करती थी, उनकी कडी और यातनापूर्ण ज़िन्दगी को देख कर कात्यूशा का मन नही माना, और उसने रोज़गार दफ्तर मे नौकरी के लिए दरख़्वास्त कर दी। एक महिला के घर उसे नौकरी मिल गई जो अपन दा बेटा के साथ रहती थी। दोनो बेटे स्कूल मे पढते थे। बडे लडके न शीघ्र ही अपनी पुस्तको को ताक पर रखा और कात्यूशा के इर्दगिर्द मडराने लगा। वह कात्यूशा का घडी भर भी पीछा नही छोडता था। मा ने देखा तो दोष कात्यूशा के सिर मढा और उसे नौकरी से बरखास्त कर दिया।

कात्यूशा फिर नौकरी की तालाश मे इधर-उधर भटकने लगी। आखिर लाचार होकर वह फिर रोज़गार दफ्तर मे अर्ज़ी देने गई। वहा उसे एक महिला मिली, जिसके हाथो मे अगूठिया और नगी गदरायी बाहो मे कगन चमक रहे थे। जब उसने देखा कि कात्यूशा नौकरी के लिए मारी मारी फिर रही है तो उसने कात्यूशा को अपना पता लिख कर दिया और उसे अपने घर आने को कहा। कात्यूशा गई। स्त्री ने बडे प्यार से उसका स्वागत किया, केक मिठाई और मीठी हल्की शराब उसके सामने रखी, फिर एक पुर्ज़ा लिखा और अपने नौकरानी को दे कर उसे कही भेज दिया। शाम के वक्त एक ऊचा-लम्बा आदमी आ पहुचा, सिर पर लम्बे लम्बे सफेद बाल और मुह पर सफेद दाढी थी। कमरे म आते ही वह

कात्यशा से सट कर बैठ गया और मुस्कराते हुए, अपनी चमकती आखो से उसकी ओर देखने लगा और हसी मजाक करने लगा। घर मालकिन बूढे को साथ वाले कमरे मे ले गई। कात्यूशा के कान मे कुछ शब्द पड गये। "अभी अभी गाव से आयी है, बिल्कुल ताजा है," घर मालकिन कह रही थी। इसके बाद वह लौट कर आयी और कात्यूशा को एक तरफ ले गई और उसे बताया कि यह आदमी लेखक है, और बडा अमीर है, और यदि कात्यूशा उसके मन को भा गई तो वह उसकी मुह मागी मुराद पूरी करेगा। कात्यशा सचमुच ही उसे भा गई और उसने उसे पचीस रूबल दिये। साथ ही यह भी कहा कि वह उसे अक्सर मिलता रहेगा। पचीस रूबल खर्च होते पता भी न चले। कुछ तो मौसी को दिये गये—रिहाइश और खान पान के लिए, बाकी से कात्यूशा ने एक नया फ्रॉक और टोपी और रिब्बन खरीद लिये। कुछ दिन बाद लेखक का फिर सन्देसा आया कात्यूशा गई। अब की भी उसने पचीस रूबल दिये और साथ ही यह भी कहा कि मैं तुम्हारे अलग रहने के लिए जगह का इतजाम किये देता हू।

एक जगह किराये पर ले ली गई, और कात्यूशा उसमे रहने चली गई। वहा पडोस मे ही एक हसमुख, जवान लडका रहता था जो किसी दूकान मे कारिन्दे का काम करता था। शीघ्र ही कात्यशा उसे अपना दिल दे बैठी। उसने लेखक से बात छिपायी नही, बल्कि साफ साफ बता दिया और मकान छोड कर एक छोटी सी कोठरी कही पर अपने लिए किराये पर ले ली। कारिन्दे ने शादी करने का वचन दिया, लेकिन एक दिन बिना कुछ कहे-सुने किसी काम पर नीज्नी नोवगोरोद के लिए रवाना हो गया। जाहिर था कि उसने यह काम कात्यूशा से पल्ला छुडाने के लिए किया था। कात्यूशा अकेली रह गई। उसकी इच्छा तो थी कि वही पर रहती रहे लेकिन पुलिस वाले ने कहा कि अगर अलग रहना चाहोगी तो पीला कार्ड (वेश्याओ का कार्ड) बनवाना पडेगा, और बाकायदा डाक्टरी जाच के लिए जाना पडेगा। कात्यूशा अपनी मौसी के घर वापिस लौट गई। जब मौसी ने कात्यूशा के बढिया कपडे देखे, सिर पर टोपी और कधो पर बढिया ओढनी देखी तो उसे साहस न हुआ कि उसे धोबिन का काम करने को वह कहे। उसने समझा कि उसकी भाजी धोबिन के स्तर से बहुत ऊची उठ गई है। कात्यूशा को तो धोबिन का काम करने का ख्याल तक नही आया। मौसी की लॉन्ड्री मे जो धोबिने काम करती थी,

उन्हे जी-तोड मेहनत करनी पडती थी। कइयो को तो तपेदिक का रोग लग चुका था। सामने वाले कमरे मे दिन भर वे अपनी पतली पतली बाहो से कपडे धोती या लोहा करती थी। कमरा बेहद गरम और साबुन की भाप से भरा रहता था। खिडकिया गरमी-सरदी बारहा महीने खुली रहती थी। उन्ह देख कर कात्यूशा का दिल हमदर्दी से भर उठता था। वह सोचती कि अगर मुझे भी यही काम करना पडता तो मेरी क्या दशा होती और वह सिर से पाव तक काप उठती।

ऐन इसी समय जब कात्यूशा की स्थिति सकटमय हो रही थी, और कही भी कोई "अभिभावक" नजर नहा आ रहा था, एक कुटनी की नजर उस पर पड गई।

कुछ मुद्दत पहले कात्यूशा ने सिगरेट पीना शुरू कर दिया था, और जब दूकान का कारिन्दा उसे धोखा दे कर भाग गया तो उसने शराब भी पीनी शुरू कर दी। यह आदत अब दिन ब दिन जड पकडने लगी थी। वह शराब इसलिए नही पीती थी कि उसे इसमे मजा आता था, बल्कि इसलिए कि इससे वह अपने दुख भूले रहती थी। शराब पी कर वह अपने को अधिक स्वच्छद महसूस करती, अपनी नजरो मे कुछ ऊची उठ जाती, उसका आत्मविश्वास बढ जाता। जब वह न पिये होती तो लज्जित और उदास महसूस करती।

कुटनी ने मौसी को स्वादिष्ट मिठाइया दी और कात्यूशा के लिए शराब लायी। शराब पिलाते समय कुटनी ने उस पर डोरे डाले मैं तुम्हारे लिए शहर के सबसे बडे, सबसे शानदार चकले मे इन्तजाम कर दूगी। वहा सुख-चैन से रहोगी, बीसियो तरह के फाइदे होगे। कात्यूशा के सामने दो ही रास्ते थे। या तो किसी के घर चाकरी करे, रोज रोज का अपमान सहे, घर के आदमी उसे परेशान करे, और कभी कभी लुक छिप कर उसके साथ व्यभिचार करे। या फिर वह आराम से किसी चकले मे जा बैठे, जहा से निकाले जाने का डर न हो, कानून की मजूरी हो, और खुले आम इद्रियभोग करे, और साथ मे पैसे भी अच्छे बनाये। कात्यूशा को दूसरा रास्ता अच्छा लगा। उसने यह भी सोचा कि इस तरह मैं उन सब लोगो से जी खोल कर बदला ले सकूगी जिन्होने मुझे यातनाए पहुचाई है—उस अमीरजादे से जिसने मेरी अस्मत लूटी और उस कारिदे से जिसने मेरे साथ छल किया। इसके अलावा, इस फैसले पर पहुचने का

एक ओर कारण भी था। कुटनी ने कात्यूशा को तडक भडक वाले कपडो का लालच दिया। वहा मनचाहे कपडे पहन सकोगी, वह कहती, मखमल के, रेशमी, साटिन के, मन आये तो नीचे गले के फ्रॉक बनवाना जो औरत नाच के वक्त पहनती है। कात्यूशा न अपनी कल्पना म अपने का ऐसी ही एक पोशाक म देखा शोख पीले रग का रेशमी फ्रॉक जिस पर काली मखमल का किनारा लगा है, नीचा गला और आधी आस्तीनें। कात्यूशा का मन ललक उठा और उसने झट से अपना पासपोट कुटनी के हवाले कर दिया। उसी दिन शाम को कुटनी ने एक गाडी पर उसे मदाम कितायेवा के बन्नाम वेश्याघर मे पहुचा दिया।

उस दिन से कात्यूशा मास्लोवा का जीवन सभी मानवीय तथा दैवी नियमो के विरुद्ध घोर पाप का जीवन बन गया। ऐसा ही जीवन ससार म लाखो करोडा स्त्रिया व्यतीत करती है और सरकार न केवल उसकी खुली छुट्टी देती है, बल्कि उसकी सरपरस्ती भी करती है। इस तरह का जीवन बिताने वाली हर दस मे से नौ औरत घोर बीमारियो, युवावस्था म ही शारीरिक क्षति तथा मौत का शिकार हो जाती है।

वेश्याघर म रात भर विषय वासना की आग धधकती रहती। रात बीतने स बीतते वेश्याए खाटो पर जा पडती और दूसरे दिन दोपहर तक गहरी नींद म डूबी रहती। दोपहर को तीन और चार बजे के दरमियान वे अपने गन्दे बिस्तरो पर से निढाल सी उठती। तब सोडे की बोतल खुलती कॉफी के दौर चलते। फिर वे शिथिल सी अपने अपने कमरा मे, रात के कपडा म या चोगे-लबादे पहने इधर-उधर टहलने लगती। खिडकिया के पर्दो मे स बाहर झाकती, एक दूसरी के साथ झगडती, लेकिन य झगडे बेजान और निरुत्साह होते। फिर नहाती, इत्र छिडकती, शरीर और बालो पर तरह तरह क सुगन्धित तल लगाती, चुन चुन कर कपडे निकालती, उन्ह पहन पहन कर देखती और वेश्याघर की मालकिन स उनके लिए झगडती। बार बार शीशे म अपना रूप निहारती, मुह पर पाउडर सुर्खी लगाती, भौह बनाती। इस के बाद भोजन होता, पौष्टिक, चर्बीदार भोजन। फिर शोख रग के रेशमी कपडे पहन, जिनम शरीर का बहुत सा भाग नगा रहता, व नीचे बठक म उतर आती। बैठक जगमग कर रही होती और खूब सजी होती। कुछ देर बाद मेहमानों के शौकीन आने लगते, सगीत बज उठता, नाच होने लगता। तरह तरह के लोग इनसे व्यभिचार

करते—बूढ़े, जवान और अधेड़ उम्र के, इनमे तरुण युवक भी होते और अस्थिपंजर बूढ़े भी, क्वारे भी होते और ब्याहे हुए भी, व्यापारी, दफ्तरो के बाबू, यहूदी, तातार, आर्मीनियाई, अमीर और गरीब, बीमार और स्वस्थ, सभी तरह के लोग होते। कोई शराब पिये होता, कोई बिना शराब पिये, कोई दुत्कारता और बुरा बोलता, कोई प्यार से बात करता, कोई फौजी होता तो कोई नागरिक, कोई विद्यार्थी होता तो कोई स्कूल का बालक—हर वर्ग, हर उम्र और हर श्रेणी के लोग उनके साथ इन्द्रियभोग करते। वहा शोर मचा रहता, लोग लडते, झगडते, चिल्लाते, मजाक करते। शाम से लेकर पौ फटने तक गाना-बजाना होता रहता, लोग सिगरेट फूकते और शराब पीते। सुबह तक क्षण भर के लिए भी वेश्याओ को चैन न मिलता। जब सुबह हो जाती तो वे पड रहती और गहरी नीद मे डूब जाती। हर रोज़ यही कुछ होता, हफ्ते मे छ दिन यही दिनचर्या रहती। सातवे दिन सरकारी कानून के मुताबिक वे पुलिस चौकी मे डाक्टरी जाच के लिए जाती। यहा पर सरकारी डाक्टर, कभी ध्यान से और कभी ठिठोलिया करते हुए उनका मुआइना करते। आत्म-रक्षा के लिए जो शर्म और हया न केवल इनसानो को बल्कि हैवानो को भी प्राप्त है, उसे यहा तार-तार किया जाता। डाक्टर उन्हे बाकाइदा लिख कर इजाज़त दे देते कि जो पाप वेश्याए और उनके सहापराधी हफ्ता भर करते रहे है, वे भविष्य मे भी कर सकते हैं। दूसरा सप्ताह शुरू हो जाता, वही दिनचर्या, वही क्रम हर रात, गरमी हो या सरदी, काम का दिन हो या छुट्टी का, वही कुछ चलता रहता।

इसी तरह कात्यूशा मास्लोवा के जीवन के सात साल बीत गये। इस बीच उसने दो बार अपना स्थान बदला, एक बार अस्पताल मे भी गई। चकले मे रिहाइश के सातवे साल, जब उसकी उम्र छब्बीस बरस की थी वह घटना घटी जिसके लिए उसे गिरफ्तार कर लिया गया। और आज, छ महीने तक चोरो और हत्यारो के बीच रखे जाने के बाद उसे कचहरी मे पेश होने के लिए ले जाया जा रहा था।

३

जब कात्यूशा मास्लोवा दोनो सिपाहियो की निगरानी मे कचहरी के सामने पहुची तो वह चल चल कर थक चुकी थी। ऐन उसी वक्त प्रिंस दमीत्री इवानोविच नेख्लूदोव अपने ऊचे पलग पर लेटा हुआ था। यह वही

शम्स था जिसने मास्लोवा की अस्मत लूटी थी। ऊचा पलग, कमानीदार तोशक और तोशक के ऊपर पखो वाला गद्दा। प्रिंस नेख्लदोव, बढ़िया साफ कपडे पहने, लेटे लेटे सिगरेट के कश लगा रहा था और सोच रहा था कि आज उसे क्या क्या काम करना है और कल का दिन कैसे बीता था।

उसे याद आया, उसने पिछली शाम कोर्चागिन परिवार के साथ बितायी थी। कोर्चागिन परिवार बडा धनी और कुलीन परिवार था, और इस बात की बडी चर्चा थी कि इसी घर की लडकी से प्रिंस नेख्लूदोव शादी करेगा। उसने गहरी सास ली और सिगरेट का टोटा फेंक दिया। फिर अपना चादी का सिगरेट-केस खोला, उसमे से वह दूसरा सिगरेट निकालने जा ही रहा था जब उसका इरादा बदल गया और बिस्तर मे से अपनी नरम नरम सफेद टागें निकाल कर वह उठ खडा हुआ। प्रिंस नेख्लूदोव ने स्लीपर पहने, अपने मासल कधो पर रेशमी ड्रेसिंग-गाउन ओढा और बोझल किन्तु तेज़ चाल से चलता हुआ ड्रेसिंग रूम मे दाखिल हुआ। ड्रेसिंग रूम मे से ओ डी कलोन और इत्र की महक आ रही थी। वहा उसने एक खास मजन से दात साफ किये (बहुत से दान्तो के खोल भरे हुए थे) और गुलाब के पानी से कुल्ले किये, फिर शरीर के अलग अलग भागो को धोने और अलग अलग तौलियो से रगडने लगा। बढिया खुशबूदार साबुन से हाथ धो कर उसने बडे ध्यान से अपने लम्बे लम्बे नाखूनो को साफ किया। सगमरमर की चिलमची मे अपना मुह और स्थूल गरदन को धोया। इसके बाद तीसरे कमरे मे गया जहा नहाने के लिए ऊपर फव्वारा लगा हुआ था। वहा उसने अपने बलिष्ठ, गोरे चिट्टे और मासल शरीर को ताज़ादम किया, खुरदरे तौलिये के साथ मल मल कर पोछा। फिर साफ बढिया अडरवियर पहने चमकते पालिश किये बूट चढाये और शीशे के सामने बैठ कर अपने घुघराले बालो और छोटी सी काली दाढी को दो अलग अलग ब्रुशो से कघी किया। उसके माथे पर के बाल कुछ कुछ हल्के पडने लगे थे।

पहनावे की हर चीज़—बनयान कमीज़, सूट-बूट और नकटाई से लेकर पिन कफ-बटन तक—सबमे बढिया स्तर की, टिकाऊ, देखन मे सादा और कीमती थी।

तरह तरह की दस नकटाइया लटक रही थी और इतने ही नकटाई

पर लगाने वाले पिन भी पडे थे। प्रिंस ने हाथ बढाया और जो पहले हाथ लगा, उठा लिया। जमाना था जब इन नई नई चीजो मे उसकी रुचि थी। लेकिन अब उसके लिए इनमे कोई आकर्षण नही रहा था।

कुर्सी पर कपडे तैयार रखे थे जिन्ह पहले से ब्रुश कर दिया गया था। नेख्लूदोव ने कपडे पहने, और टहलता हुआ खान वाले कमरे मे दाखिल हुआ। वह तरोताज़ा ता नही महसूस कर रहा था लेकिन साफ-सुथरा ज़रूर हो गया था और कपडो से इत्र की महक आ रही थी। यह कमरा चौडा कम और लम्बा ज्यादा था, और उसके बीचोबीच एक शानदार मेज रखी थी, जिसके चारो पाये शेर के पजो की शक्ल के बने थे। पास मे इसी से मिलती जुलती बरतनो की बडी अलमारी भी रखी थी। अभी एक ही रोज पहले तीन नौकरो ने इस कमरे के फर्श को रगड रगड कर पालिश किया था। मेज पर एक बढिया कलफ लगा मेजपोश बिछा था जिस पर परिवार के नाम के अक्षर बडे बडे और खूबसूरत ढग से कढे हुए थे। काफी का पात्र चादी का था, जिसमे से भाप के साथ कॉफी की महक की लपटें उठ रही थी, साथ मे चीनीदान, गरम गरम क्रीम का जग, ताज़ा बनी पाव-रोटी के टुकडे, रस्क और बिस्कुटें रखी थी। इनके साथ कुछेक चिट्ठिया, समाचारपत्र और "Revue des deux Mondes" नामक नयी किताब रखी थी।

नेख्लूदोव चिट्ठिया खोल कर पढना ही चाहता था कि गठीले बदन की एक अधेड उम्र की स्त्री ने गलियारे के दरवाजे से हौले से कमरे मे प्रवेश किया। उसने मातमी लिबास और सिर पर जालीदार टोपी पहन रखी थी जिससे पीछे की ओर अधिक चौडी होती हुई उसकी माग ढकी हुई थी। यह स्त्री नेख्लूदोव की स्वर्गीय मा की निजी नौकरानी आग्राफेना पेत्रोव्ना थी। मा के परलोक सिधारने के बाद वह बेटे के पास घर की देख रेख करने के लिए रह गई थी।

देखने म और चाल-ढाल मे आग्राफेना पेत्रोव्ना कुलीन महिला लगती थी। मालकिन की जिन्दगी म उसके साथ उसने कुल मिलाकर लगभग दस बरस विदेश मे बिताये थे। छोटी उम्र से ही वह नेख्लूदोव परिवार मे काम करती आ रही थी, इसलिए दमीत्री इवानोविच को उस समय से जानती थी, जब घर के लोग उसे प्यार से मीतेन्का कह कर पुकारा करते थे।

"नमस्ते, द्मीत्री इवानोविच।"

"नमस्ते, यहा क्या है?" नेख्लूदोव ने मत्रोना पाव्लोव्ना से पूछा।

"प्रिंसेस के घर से चिट्ठी आई है—यह मुझे नही मालूम कि मा की तरफ से है या बेटी की तरफ से। कहार उसे नौकरानी से घर आई है। और अब मेरे कमरे मे बैठी जवाब का इन्तजार कर रही है।" चिट्ठी पकडाते हुए आग्राफेना पेत्रोव्ना के होठो पर एक महत्वपूर्ण मुस्कान खेल गई।

अच्छी बात है, जरा ठहरो," नेख्लूदोव ने चिट्ठी लेते हुए कहा। आग्राफेना पेत्रोव्ना को मुस्कराते देख कर उसकी भवे सिकुड गई।

यह मुस्करा रही है, इसका मतलब है कि चिट्ठी छोटी प्रिंसेस कोर्चागिना की ओर से आई है। यह समझे बैठी है कि मैं उस लडकी से शादी करूगा। लेकिन आखिर इस तरह के अनुमान लगाने का क्या मतलब है?

"मैं उसे कहती हू कि इन्तजार करे," आग्राफेना पेत्रोव्ना ने कहा, और मेज साफ करने वाले ब्रुश को जो कही गलती से वहा पडा हुआ था, हटाते हुए तैरती हुई बाहर निकल गई।

चिट्ठी मे से इत्र की महक आ रही थी। नेख्लूदोव खोल कर पढने लगा।

जिस कागज पर चिट्ठी लिखी गई थी वह मोटा और भूरे रंग का था, और कोनो पर खुरदरा था। लिखावट तीखी और शब्द एक दूसरे से दूर दूर लिखे हुए थे। लिखा था

"आपने अपनी मौज मे आकर कल कह तो दिया कि आज कोलोसोव और हमारे साथ कला मण्डप देखने चलेगे। लेकिन आप चल कैसे सकते है। इजाजत हो तो आपको याद करा दू कि आज २८ अप्रैल है और आपको कचहरी मे जा कर जूरी मे बैठना है, a moins que vous ne soyez dispose a payer a la cour d' assises les 300 roubles d amende, que vous vous refusez pour votre cheval,* कल आपके चले जाने के बाद मुझे याद आया। सो, भूलना नही।

*अगर कचहरी मे वक्त से न पहुच कर जुर्माने के ३०० रूबल भरना मजूर हो, न कि उन ३०० से घोडा खरीदना, जैसा कि आपका इरादा है, तो बात और है। (फ्रेंच)

प्रि० म० कोर्चागिना"

चिट्ठी की दूसरी तरफ लिखा था

"Maman vous fait dire que votre couvert vous attendra jusqu'a la nuit Venez absolument a quelle heure que cela soit *

M K"

नेख्लूदोव ने पढ कर मुह बनाया। पिछले दो महीने से प्रिंसेस कोर्चागिना बडी पटुता से उसके साथ चाल चल रही थी, डोरे डाल रही थी। वह अप्रत्यक्ष बधनो से उसे अपने साथ गाठती जा रही थी। यह रुक्का भी इसी खेल मे एक चाल थी। परन्तु एक तो जो लोग अपनी जवानी खो चुके होते हैं वो भी शादी के मामले म बडे हिचकिचाते हैं, हा अगर उन्हे किसी से गहरा प्रेम हो जाय तो और बात है, दूसरे यदि नेख्लूदोव शादी करने का निश्चय कर भी लेता तो इस समय वह लडकी मे विवाह का प्रस्ताव नही कर सकता था। इसका एक कारण था। यह नही कि दस बरस पहले उसने मास्लोवा की अस्मत लूटी थी और उसका परित्याग किया था। इस बात को तो वह भूल भी चुका था और इस कारण वह शादी न करे, इसका तो उसे ख्याल भी नहीं आ सकता था। नहीं, वास्तव मे कारण यह था कि उसका एक विवाहिता स्त्री के साथ सम्बन्ध हो गया था। अपनी ओर से तो वह इस सम्बन्ध को तोड चुका था लेकिन वह स्त्री मानने मे न आती थी, उसे तोडने के लिए तैयार न थी।

स्त्रियो के मामले मे नेख्लूदोव कुछ कुछ शर्माता था। इसी शर्मीलेपन ने ही उस विवाहिता स्त्री को उकसाया और उसके मन म यह शर्मीलापन तोडने की उत्कट इच्छा पैदा हुई। जिस जिले म नेख्लूदोव का वोट देने का हक दिया गया था, यह स्त्री उसी जिले के अभिजाता के प्रधान की पत्नी थी। इस औरत ने धीरे धीरे उसके साथ घनिष्ठता बढा ली थी, और अब इसमे से निकलना उसके लिए कठिन हो रहा था। दिन प्रतिदिन इस सम्बन्ध से उसे अधिकाधिक विरुचि हो रही थी। एक बार वह प्रलोभन मे फस तो गया, पर फिर वह अपने को अपराधी महसूस करने

---

*मा ने आपको लिखने को कहा है कि आपका खाना रात तक लगा रहेगा। तो जब चाहे, अवश्य आयें। (फ्रेंच)

लगा। पर उस आग्न की स्वीकृति के बिना इस सम्बन्ध का तोडने का भी उसम साहस नही था। यही कारण था जिससे वह प्रिन्स कार्चागिना के आगे विवाह का प्रस्ताव यदि चाहता ता भी नहा रख सकता था।

मेज पर पडी चिट्ठिया म एक चिट्ठी इसी स्त्री के पति की थी। पता और डाकखाने की मोहर देख कर नेख्लूदोव न पहचान लिया, और पहचानत ही उसका चेहरा लाल हा गया और बदन म तनाव आने लगा। नख्लूदोव का स्वभाव ही ऐसा था कि जब कभी उसे खतर का भास होता तो उसका जाश उभरने लगता। पर यह जोश शीघ्र ही ठण्डा पड गया। नेख्लूदोव की जमींदारी का सबस बडा टुकडा इसी जिले म था। अभिजातो के प्रधान न केवल यह सूचना दी थी कि मई के अन्त मे एक जरूरी बैठक होने वाली है जिसम स्कूलो और सडको के प्रश्न पर वाद विवाद हागा। वाद विवाद मे उसका भाग लेना बेहद जरूरी है, क्योकि उमीद की जाती है कि प्रतिक्रियावादी इसका बडा विरोध करगे।

मार्शल उदारवादी विचारो का था। उन दिनो, जार अलेक्साद्र ततीय के राज्यकाल म प्रतिक्रियावाद की जो तेज लहर उठी थी, मार्शल अपने कुछ सहविचारको के साथ उसके विरुद्ध सघर्ष कर रहा था, और यहा तक इस सघर्ष म खोया हुआ था कि उसे अपने पारिवारिक सकट की भी खबर न हुई।

इस आदमी के कारण नेख्लूदोव को कैसी कैसी विकट परिस्थितियो का सामना करना पडा था। एक एक कर के सभी नख्लूदोव को याद आने लगी। एक बार उसे ऐसा भास हुआ था जैसे पति को पता चल गया है कि उसकी पीठ पीछे क्या हो रहा है, और वह उसे द्वन्द्वयुद्ध के लिए ललकारने वाला है। नेख्लूदोव न निश्चय किया था कि यदि द्वन्द्वयुद्ध हुआ तो वह अपनी पिस्तौल हवा म छोडेगा। उसे वह काण्ड भी याद हो आया जब वह स्त्री एक दिन मायस हो कर बाहर बाग मे दौड आई थी यह कहती हुई कि वह तालाब मे डूब मरेगी और वह उसे रोकने के लिए उसके पीछे पीछे भागा आया था।

"अब मै वहा नही जा सकता और न ही उसका उत्तर पाये बिना कोई कदम उठा सकता हू," नेख्लूदोव न सोचा। हफ्ता भर पहले उसने उसे एक एक निर्णायक पत्र लिख दिया था। उस खत मे उसने अपना दोष

स्वीकार किया और कहा कि मैं इसका प्रायश्चित करने के लिए तैयार हू, पर साथ ही यह भी लिख दिया कि आज से हमारा एक दूसरे के साथ कोई सम्बध नही होगा। इसमे मुझे तुम्हारे ही हित का ख्याल है, उसने लिखा। इस पत्र का अभी तक कोई उत्तर नही आया था। और यह एक अच्छा लक्षण भी हो सकता था। क्योकि यदि वह सम्बध तोडने से सहमत न होती तो जरूर लिखती, या खुद चली आती, जैसे कि पहले कई बार आ चुकी थी। नेख्लूदोव के कान म यह बात पडी थी कि कोई अफसर उस औरत पर डोरे डाल रहा है। यह सुन कर वह मन ही मन बेचैन तो हुआ था क्योकि इससे उसकी ईर्ष्या जाग उठी थी, पर साथ ही उसे इस मिथ्याचार से छुटकारा पाने की उमीद भी बनने लगी थी।

दूसरा खत उसके अपने कारिन्दे की ओर से था। कारिन्दे ने लिखा था कि हुजूर का जमीदारी म एक बार आना बहुत जरूरी है ताकि जमीन-जायदाद आपके नाम हो सके। यह भी पूछा था कि क्या जमीन की देख रेख उसी तरह चलती रहेगी जिस तरह मा जी के जीवन-काल मे चलती थी या उसमे कोई परिवतन होगा। मैंने तो आपकी माता स्वर्गीय प्रिंसेस स निवेदन किया था, और अब आपसे निवेदन करता हू कि कृषि औजारो की मात्रा बढानी चाहिए और जो जमीन हमने किसानो को भाडे पर दे रखी है उसकी अब खुद काश्त करनी चाहिए। इस तरह जमीन जायदाद से ज्यादा लाभ होगा। कारिन्दे ने इस बात के लिए क्षमा मागी थी कि वह तीन हजार रूबल की रकम अभी तक नही भेज पाया जो पहली तारीख तक भेज दी जानी चाहिए थी। अगली डाक से जरूर भेज दूगा। कारण यह था कि किसानो से वसूली नही हो पायी थी। उनका अब कोई विश्वास नही रहा, मुझे मजबूर हो कर अधिकारियो के आगे दरखास्त करनी पडी। चिट्ठी पढ कर नेख्लूदोव को खुशी भी हुई और कुछ कुछ बुरा भी लगा। खुशी इस बात की हुई कि कितनी बडी रियासत पर उसका अधिकार है। परन्तु इसी कारण उसे निराशा भी हुई, क्योंकि किसी जमाने मे वह हर्बर्ट स्पेंसर का बडा उत्साही समथक रहा था। स्पेंसर ने अपनी पुस्तक 'Social statics" म लिखा था कि निजी सम्पत्ति का अधिकार न्यायोचित नही। स्वय एक बडी जमीदारी का उत्तराधिकारी होने के बावजद नेख्लूदोव ने इस मत का समथन किया था। उस समय वह

युवक था और उसमे विचारो की दृढता थी, जिम कारण उसने न केवल लोगो से वाद विवाद ही किया कि जमीन को निजी सम्पत्ति करार देना अन्याय है और विश्वविद्यालय मे इस विषय पर लेख ही नही लिखे बल्कि अपने विश्वास के अनरूप आचरण भी किया, और जो पाच सौ एकड भूमि पिता की ओर से विरासत मे मिली थी, उसे किसानो को दे दिया। परतु अब जब मा की बडी ज़मीदारी विरासत मे मिलने पर वह भूमिपति बन रहा था तो उसके सामने दो म से एक ही रास्ता खुला था। या तो वह यह जमीन-जायदाद भी किसानो को सौंप दे जैसा कि आज से दस साल पहले उसने अपने पिता की ज़मीन के सबध मे किया था, या फिर चुपचाप यह कबूल कर ले कि उसके पहले विचार गलत और झूठे थे।

जमीन-जायदाद वह किसानो को नहीं दे सकता था, क्योकि यही उसकी जीविका का एकमात्र साधन था। वह सरकारी नौकरी करना नही चाहता था। साथ ही उसे अब खरचीली आदते पड गई थी जिन्हे छोडना उसके बस की बात नही थी। यह व्यर्थ भी था क्योकि अब उन विचारो मे उसके लिए पहले का सा आकर्षण भी नही रहा था। विचारो की दृढता, जवानी का जोश और विलक्षण कार्य करने की महत्वाकाक्षा अब नही रही थी। पर वह यह भी नही कर सकता था कि ज़मीन मिलकियत के अन्याय पर आखें मूद सके, जिसके स्पष्ट और अकाट्य तर्क उसने स्पेसर के "Social statics" मे पढे थे। इन्ही तर्कों का योग्य समर्थन बाद मे हैनरी जार्ज की पुस्तको मे उसे मिला था। फिर भी वह यह नही कर सकता था।

यही कारण था कि कारिन्दे का खत पढ कर उसका मन खिन्न हो उठा।

४

कॉफी पी चुकने के बाद नख्लूदाव उठा और अपने पढ़ने वाले कमरे म चला गया ताकि सम्मन म देख सके कि उस किस वक्त कचहरी पहुचना है। साथ ही वह प्रिंसेस के खत का जवाब भी देना चाहता था। जाते हुए वह अपने स्टूडियो म से गुज़रा। ईज़ल पर अब भी एक अधूरी तस्वीर

लगी थी। उस तस्वीर पर उसने दो साल तक निष्फल मेहनत करता रहा था। दीवारों पर कुछेक चित्र टंगे थे जो किसी जमाने मे उसने बनाये थे। यह सोच कर कि वह चित्रकला मे भी आगे नही बढ पाया, उसमे कोई योग्यता नही, उसका मन क्षुब्ध हो उठा। कुछ दिनो मे उसके मन को यह विचार परेशान किये हुए था, पर वह अपने आपको यह कहकर ढाढस दे लेता कि उसकी सौन्दर्य-भावना बेहद सूक्ष्म और विकसित है। जो भी हो, उसके मन मे क्षोभ उठा।

सात साल पहले उसने नौकरी को लात मार दी थी, यह सोच कर कि उसमे कलाकार बनने की सच्ची योग्यता है। कला के शिखर पर खडे हुए उसे बाकी सब काम तुच्छ नजर आये थे। पर अब जाहिर हो गया था कि ऐसा सोचने का उसे कोई अधिकार नही था। अब जब भी कोई चीज उसे इन बातो की याद दिलाती तो उसका मन क्षुब्ध हो उठता। स्टूडियो की अमीराना ढग की साज-सज्जा को देख कर भी उसका मन उदास हुआ। इसलिए जब वह अपने अध्ययन-कक्ष मे पहुचा तो वह कुछ खीझा हुआ था। अध्ययन-कक्ष भी बडे ठाठ का था, खुला, बडा कमरा और ऊची छत। उसे इस तरह सजाया गया था कि आरामदेह भी हो और बेहद सुदर भी लगे।

लिखने के बडे मेज पर, कागज रखने के खाने मे कचहरी का सम्मन पडा था। ऊपर "अविलम्ब" का लेबल लगा था। ग्यारह बजे उसे कचहरी पहुचना था।

प्रिंसेस के खत का जवाब देने के लिए नेख्लूदोव मेज के पास बैठ गया। वह लिखना चाहता था कि आपके निमन्त्रण के लिए धन्यवाद, मैं जरूर भोजन के समय आने की कोशिश करूगा। उसने एक रुक्का लिखा, लेकिन फिर फाड दिया। उसमे कुछ अधिक घनिष्ठता आ गई थी। उसने दूसरा रुक्का लिखा। लेकिन वह भी ठीक नही बन पाया, उसमे उपेक्षा का भास होता था। उसने उसे भी फाड दिया, यह सोच कर कि कही प्रिंसेस पढ कर नाराज न हो। उसने बिजली की घण्टी का बटन दबाया। नौकर हाजिर हुआ। वह अधेड उम्र का चिडचिडा सा आदमी लगता था, मुह पर गलमुच्छे, ठुड्डी पर के बाल और मूछें मुडी हुई, एक सूती एप्रन लटकाये हुए था।

"गाडी बुलाओ।"

"बहुत अच्छा हुजूर।"

'और जो नौकरानी चिट्ठी लेने के लिए बैठी है उसे कहो कि मैं जरूर आने की कोशिश करूंगा। निमन्त्रण के लिए धन्यवाद कहना।'

'बहुत अच्छा हुजूर।"

नेख्लूदोव मन में सोचने लगा—"जवाब तो लिख कर ही देना चाहिए, या ज़बानी कहलवा देने में रुखाई सी लगती है, लेकिन क्या करूं, लिखा नहीं जाता। कोई बात नहीं, आज उसे मिलूंगा ही।" और वह उठ कर अपना ओवरकोट लेने चला गया।

जब वह घर में से निकला तो एक गाडी दरवाज़े पर खडी थी, जिसके पहियों पर रबड के टायर लगे थे। वह गाडीवान को जानता था। नेख्लूदोव गाडी में बैठा ही था कि गाडीवान ने तनिक घूम कर कहा—

कल आप प्रिंस कोर्चागिन के घर से अभी निकले ही होंगे कि मैं गाडी ले कर पहुंच गया। दरवाज़े पर दरबान ने बताया कि अभी अभी निकल गये हैं।'

'गाडीवानों तक को पता चल गया है कि कोर्चागिनों के साथ मेरे कैसे सम्बन्ध हैं,' नेख्लूदोव ने सोचा। और यह सवाल फिर उसके मन में उठा कि प्रिंसेस कोर्चागिना के साथ शादी करे या न करे। परन्तु वह कोई फैसला नहीं कर पाया। आजकल वह किसी सवाल का भी फैसला नहीं कर पा रहा था।

शादी के हक में कई बातें थीं। गृहस्थी का आराम तो होगा ही, साथ में, भलमनसाहत से ज़िन्दगी गुजरने लगेगी, और मुख्यतः परिवार से, बाल बच्चों से जीवन में कोई लक्ष्य आ जायेगा। आजकल तो जीवन बिल्कुल शून्य हो उठा है। शादी के विरुद्ध भी कई बातें थीं परन्तु उनमें मुख्य यही थी कि वह डरता था। सभी लोग जो अपने यौवन का पहला भाग गुज़ार चुके होते हैं शादी करने से घबराते हैं, डरते हैं कि उनकी आज़ादी छिन जायेगी। साथ ही, अनजाने में ही उनकी नज़रों में स्त्री बडी रहस्यमयी जीव हो उठती है, जिससे वे कुछ कुछ भय खाने लगते हैं।

इस विशेष स्थिति को सोचते हुए, मिस्सी के साथ शादी करने के हक में कई बातें थीं। (उसका असल नाम मारीया था, पर जैसा कि एक खास श्रेणी के लोगों में पाया जाता है, उसे एक प्यार का नाम भी दिया गया था।) एक तो यह कि घर-परिवार अच्छा था। दूसरे लडकी हर

बात मे ग्राम लडकियो मे भिन्न थी—उसके बातने का ढग, चलने का, हसने का ढग, हर बात म भिन्नता थी। किसी विलक्षणता के कारण नही, वरन अपनी "भद्रता' के कारण ही यह गुण उसने ग्रहण किया था। 'भद्रता" से इस गुण की ठीक ठीक व्याख्या ता नही हाती थी, हालाकि भद्रता का उसकी नजरा म बडा मूल्य था। साथ ही वह किसी भी दूसरे आदमी को इतना अच्छा नही समझती जितना कि उसे—जिसका मतलब है कि वह उसके गुणो को पहचानती है, उसे समझती है। और जो लडकी उसके गुणो का मूल्य आक सकती है, उसे समझ सकती है, जाहिर है कि वह सूझ-बूझ वाली लड्की है, उसकी पहचान अच्छी है। मिस्सी से शादी करने के विरुद्ध सबसे बडी बात यह थी कि समव है उससे भी अच्छी लडकी मिल जाय। मिस्सी सत्ताईस बरस की हो चली है, जिसका मतलब है कि जरूर उसने पहले भी किसी से प्रेम किया होगा, कि उसे ही उसने सबसे पहले अपना दिल नही दिया। यह सोच कर उसके मन मे चुभन सी हुई। उसके आत्मसम्मान को चोट लगी कि कोई दूसरा भी आदमी हो सकता है जिसे वह प्रेम कर सकती थी, भल ही वह अतीत मे कभी रहा हा। बेशक उसे उस वक्त यह मालूम तो नही हा सकता था कि भविष्य म कभी उसकी नेख्लूदोव स मुलाकात हागी, परन्तु वह किसी दूसरे को प्यार कर सकती थी, यह सोच कर ही नेख्लूदोव का बुरा लगा।

सो शादी करने के हक मे भी उतने ही तक थे जितने कि उसके विरुद्ध। कम से कम नेख्लूदोव को लगता था कि दोनो पलडे एक जैसे भारी हैं। मैं भी कैसा गधा हू, नेख्लूदोव ने सोचा और हसने लगा। उसे उस गधे की कहानी याद हो आई जो यह निश्चय नही कर पाता था कि भूसे के किस ढेर की ओर जाय।

"कुछ भी हो, जब तक मुझे मारीया वासील्येव्ना (अभिजातो के प्रधान की पत्नी) का जवाब नही आ जाता, और वह किस्सा खत्म नही हो जाता, मैं कुछ भी नही कर सकता," उसने मन ही मन कहा।

इस विश्वास से कि वह इस निश्चय को स्थगित कर सकता है, बल्कि उसे जरूर इसे स्थगित कर देना चाहिए, उसके मन को बडा ढाढस मिला।

"बस ठीक है, इस बारे मे फिर सोचा जायगा," उसने मन ही मन कहा। गाडी पक्की सडक पर चलती हुई धीरे से कचहरी के फाटक के सामने जा कर रुक गई।

"अब तो मेरा काम यह है कि पूरी ईमानदारी से अपना सार्वजनिक कर्तव्य निभाऊं जैसे कि मैं सदा करता रहा हूं और जैसा करना उचित भी है। और यह काम अक्सर दिलचस्प भी होता है।" पहरेगी के पास से हो कर नेख्लूदोव ने कचहरी मे प्रवेश किया।

५

कचहरी के गलियारा म अभी से बडी चहल-पहल थी। चपरासी कागजा के फाइल उठाय, और तरह तरह के सन्देशो के पुर्जे पकडे इधर से उधर, पाव घसीटते भागे फिरते थे। उनके सास फूल रहे थे। दरबान, वकील और अदालती अफसर इधर उधर आ जा रह थे। मुद्दई और मुद्दालेह, जो हिरासत म नही थे दीवारो के साथ साथ, मुह लटकाये घूम रहे थे या बैठे इन्तजार कर रहे थे।

"जिला अदालत कहा पर है?" नेख्लूदोव ने एक चपरासी से पूछा।

"कौन सी अदालत, दीवानी या फौजदारी?"

"म जूरी का सदस्य ह।"

"वह फौजदारी अदालत है। इधर दाये हाथ जाइये, फिर बाये घम कर दूसरा दरवाजा।"

नेख्लूदोव उसी रास्ते जाने लगा।

दरवाजे पर दो आदमी खडे इन्तजार कर रहे थे। उनमे से एक कोई व्यापारी था, ऊचा-लम्बा और मोटा-ताजा आदमी, जो ख ब चहक रहा था। प्रत्यक्षत अभी अभी खा पी कर आया था और कुछ चढा रखी थी। दूसरा कोई यहूदी था और किसी दूकान का कारिन्दा था। वे ऊन के भाव के बारे मे बात कर रहे थे जब नेख्लूदोव ने पास आ कर पूछा कि क्या जूरी का यही कमरा है?

"जी, श्रीमान, यही कमरा है। क्या आप भी हमी मे से है—जूरी मे बठने आये हैं?" व्यापारी ने हस कर आख मारते हुए पूछा।

नख्लूदोव ने हा म जवाब दिया।

'तो फिर एक साथ ही काम करेंगे, क्या?' व्यापारी कहता गया। "मेरा नाम बाक्लाशोव है द्वितीय व्यापारी गिल्ड का सदस्य हू।" और उसने अपना चौडा, पिलपिला हाथ, जो इतना मोटा था कि मुडता भी नही था, आगे बढाया। 'जो बन पडा करेंगे। और श्रीमान् का शुभनाम?"

नेख्लूदोव ने अपना नाम बताया और सीधा जूरी के कमरे में चला गया।

कमरे म उस वक्त दसेक आदमी होगे, सभी भिन्न भिन्न प्रकार के। कुछ बैठे थे, कुछ इधर-उधर टहल रहे थ, कुछेक खडे एक दूसरे की ओर देख रहे थे और आपस मे परिचय प्राप्त कर रहे थे। सभी लोग अभी अभी आये थे। उनमे से एक अवकाशप्राप्त फौजी अफसर था जिसने वर्दी पहन रखी थी। कुछेक ने फ्रॉक-कोट पहने थे, बाकिया न साधारण कोट। एक आदमी देहाती लिबास मे था।

सभी सन्तुष्ट नजर आते थे क्योकि एक सामाजिक कतव्य पूरा करने जा रहे थे। हालाकि कुछ लोगों को अपना कामधधा छोड कर आना पडा था, और वे इस पर बडबडा भी रहे थे।

मौसम की चर्चा हो रही थी कि इस बार वसत जल्दी आ गया है, और इस बात की कि कैसे केस उन्ह सुनने होगे। कुछेक का एक दूसरे के साथ परिचय हो चुका था, कुछ लोग खडे खडे एक दूसरे के बारे मे अनुमान लगा रहे थे कि कौन आदमी कौन है। जिन लोगो का नेख्लदोव से परिचय नही हुआ था वे उसके साथ हाथ मिलाने के लिए उत्सुक हो उठे, उससे परिचय प्राप्त करना वे अपना गौरव समझते थे। और नेख्लदोव इसे अपना हक समझता था। अपरिचित लोगा के बीच सदा उसे ऐसा ही महसूस होता था। यदि कोई आदमी उससे पूछता कि वह क्यो अपने को अधिकाश लोगो से बडा समझता है, तो शायद इस सवाल का वह स्वय कोई जवाब न दे पाता। जिस प्रकार का जीवन उसने अब तक बिताया था उसमे कोई विशेषता नही थी। हा, वह अग्रेजी, फ्रासीसी और जमन भाषाए बडी नफासत से बोल सकता था, और उसके कपडे, नेकटाइया, कफ-बटन वगैरा बहुत बढिया होते थे। उन्ह वह सबसे फैशनेबुल दूकाना पर खरीदा करता था। परन्तु इन बाता के कारण तो कोई अपने को औरो से बडा नही समझ सकता। फिर भी वह अपने को बडा समझना चाहता था, लोगो से जो सम्मान प्राप्त होता उसे वह अपना हक समझता, और यदि कोई उसके प्रति उपेक्षा से पेश आता तो उसके दिल को चोट लगती। इस जूरी के कमरे मे उसे वह मान नही मिला, इसलिए उसकी भावनाओ को ठेस लगी। जूरी के सदस्यो मे से एक आदमी को वह पहले से जानता था। प्योत्र गेरासिमोविच उसका नाम था, किसी

ज़माने मे वह नेख्लूदोव की बहिन के बच्चो को पढाने आया करता था। नेख्लूदोव उसके कुल नाम से अनभिज्ञ था। कई बार इस बात के लिए नेख्लूदोव न डीग भी मारी थी। अब यह आदमी एक पब्लिक स्कूल का अध्यापक था। उसकी बेतकल्लुफी नेख्लूदोव सहन नही कर सका। वह हसता तो बडे आत्मतुष्ट लोगो की तरह। नेख्लूदोव को वह आदमी बडा अशिष्ट लगा।

"ओ-हो! तो तुम्हे भी फसा लिया इन्होने!" कहते हुए प्योत्र गेरासिमोविच ने नेख्लूदोव का अभिवादन किया, और ठहाका मार कर हसने लगा। "तुम बच कर निकल नही पाये, है?"

"मैंने बच कर निकलने की कोई कोशिश भी नही की," नेख्लूदोव ने गभीर आवाज़ मे उत्तर दिया। उसके लहजे मे कठोरता थी।

"वाह, मान लिया! जन सेवा का क्या बढिया शौक है! पर ज़रा ठहर जाओ। जब भूख लगेगी और नीद से ऊघने लगोगे, तब पूछूगा। तब कोई दूसरा ही राग आलापोगे।"

नेख्लूदोव ने सोचा कि "यह पादरी का बच्चा अभी मेरा कधा भी थपथपाने लगेगा," और सीधा वहा से हट कर दूसरी तरफ जाने लगा। उसका मुह लटक गया, मानो किसी ने अभी अभी आ कर खबर दी हो कि उसके सब सबधी स्वर्ग सिधार गये हैं। एक जगह पर कुछ आदमी एक ऊचे-लम्बे, रोबीले आदमी के इर्द गिर्द खडे थे, जो बडे जोश से कोई बात सुना रहा था। उसकी दाढी-मूछ मुडी हुई थी। बात एक मुकद्दमे के बारे मे थी जो दीवानी अदालत मे चल रहा था। जिस मज़े से वह प्रख्यात वकीलो और जजो के नाम ले ले कर बात सुना रहा था उससे जान पडता था कि उसे मुकद्दमे की पूरी पूरी जानकारी है। मुकद्दमा एक बुढिया औरत का था। वह कह रहा था कि वकील ने इतनी कुशलता से पैरवी की कि मुकद्दमे का सारा रुख ही बदल गया। बुढिया औरत के हक मे न्याय था, पर अब उसे उलटे लेने के देने पड रहे है। अब उसे अच्छी खासी रकम अपने मुखालिफ को देनी पडेगी।

"वकील नही जादूगर है," वह कह रहा था।

सब लोग बडे ध्यान से सुन रहे थे। सबके चेहरे पर आदर का भाव था। कुछेक ने अपनी राय देने की कोशिश की, लेकिन उसने किसी को बोलने नही दिया, मानो वही मुकद्दमे के बारे मे सब कुछ जानता हो।

नेख्लूदोव को वडी देर तक इन्तजार करना पडा, हालाकि वह खुद भी देर से आया था। एक जज अभी तक नही पहुचा था, और सब लोग उसका इन्तज़ार कर रहे थे।

६

अदालत का प्रधान जज वक्त से पहले पहुच गया था। ऊचा-लम्बा, हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति, बडे बडे सफेद गलमुच्छे। विवाहित होते हुए भी वह बेलगाम होकर भोग विलास करता था। उसकी पत्नी भी यही कुछ करती थी। इसलिए दोनो स्वतन्त्र थे। आज प्रात उसे स्विट्ज़रलैंड की एक लडकी से खत आया था। यह लडकी पहले इसके बच्चो की गवर्नेस रह चुकी थी और अब दक्षिणी रूस के किसी स्थान से पीटसवर्ग जा रही थी। उसने लिखा था कि वह शाम को होटल "इतालिया" मे ३ और ६ बजे के बीच उसका इन्तजार करेगी। लडकी का नाम क्लारा वासील्येव्ना था। कद-बुत की गुडिया सी, और सिर पर लाल लाल बाल थे। पिछले साल गर्मी के दिनो म देहात मे इनका रोमास शुरू हुआ था। अब प्रधान जज की इच्छा थी कि जितनी जल्दी हो सके अदालत की कार्यवाही शुरू की जाय, ताकि वह ६ बजे से पहले उसके पास पहुच सके।

वह निजी कमरे मे गया और दरवाज़े को अन्दर से चिटखनी चढा दी। फिर एक अलमारी मे से डबल का जोडा निकाल कर सामने रखा। दोनो बाजुओ को सामने, ऊपर, नीचे, दायें और बायें बीस बार हिला हिला कर व्यायाम किया। फिर दोनो डबल उठा कर, हाथो को ऊपर कर के, धीरे धीरे, तीन बार उठक-बैठक लगायी।

"सेहत कायम रखने का अगर कोई साधन है तो ठण्डे जल से स्नान और व्यायाम," वह बोला, और अपने बायें हाथ से दायें बाज़ू की मासपेशी को दबा दबा कर देखने लगा। तर्जनी मे उसने सोने की अगूठी पहन रखी थी। इसके बाद वह व्यायाम का दूसरा आसन करने की तैयारी करने लगा। (जब भी अदालत की कार्रवाही लम्बी हो तो वह ये दोनो आसन जरूर कर लिया करता था)। लेकिन उसी वक्त किसी ने दरवाज़े को धक्का दिया। प्रधान जज ने फौरन डबल अपनी जगह पर रख दिये और दरवाज़ा खोला।

"माफ कीजिये, आप को इन्तजार करना पडा।"

अदालत के एक सदस्य ने कमरे मे प्रवेश किया। छोटा कद, आखो पर सुनहरी चश्मा और ऊचे-ऊचे कधे। उसके चेहरे पर असन्तोष की छाप थी।

"आज फिर मात्वेई निकीतिच अभी तक नही पहुचा," उसने खीज कर कहा।

"अभी तक नही पहुचा। वह हमेशा देर से आता है," प्रधान जज ने वर्दी पहनते हुए कहा।

"मैं हैरान हू कि उसे शम तक नही आती," सदस्य ने गुस्से से कहा और बैठ कर सिगरेट सुलगाने लगा।

यह आदमी हर काम मे बडी मीन मेख निकालता था। उस दिन प्रात इसका अपनी पत्नी के साथ झगडा हो गया था। महीना खत्म होने से पहले ही पत्नी के पास घर-खर्च के पैसे चुक गये थे और उसने इससे कुछ पैसे पेशगी मागे। इसने देने से इन्कार कर दिया था। इस पर झगडा हो गया। पत्नी ने साफ कह दिया कि अगर तुम्हारा ऐसा व्यवहार रहेगा तो आज घर मे खाना नही बनेगा। इस बात पर वह घर से निकल आया था, लेकिन दिल ही दिल मे डर रहा था कि कही उसकी धमकी सच्ची ही न निकले, क्योंकि उसकी पत्नी अपनी सनक मे जो कर सो थोडा। प्रधान जज के दमकते, स्वस्थ, हसमुख और दयालु स्वभाव चेहरे को देख कर उसने मन ही मन कहा, "भोगो सदाचार का फल।" प्रधान कुर्सी पर बठा, दोनो कोहनिया मेज पर दूर दूर रखे, अपने नाजुक गोरे-गोरे हाथो से अपने गलमुच्छे सहला रहा था। घने, सफेद गलमुच्छो के नीचे वर्दी कोट के कालर पर बढिया कसीदाकारी थी। "यह आदमी सदा प्रसन्नचित्त और सन्तुष्ट रहता है, और मेरी किस्मत मे क्लेश भोगना ही लिखा है।"

सेक्रेटरी ने प्रवेश किया। वह किसी केस के कागजात लाया था।

'धन्यवाद,' प्रधान जज ने सिगरेट सुलगाते हुए कहा, "पहले कौन सा मुकद्दमा शुरू करें?'

"मैं सोचता हू जहर वाला मुकद्दमा ठीक रहेगा," सेक्रेटरी ने उपेक्षा से कहा।

"ठीक है, यही सही," प्रधान जज ने कहा। उसने सोचा कि चार बजे तक मैं इसे खत्म कर सकूगा और फिर यहा से जा सकूगा। "क्या माल्वेई निकीतिच आ गया है?"

"अभी तक नही आया।"

"और ब्रेवे?"

"ब्रेवे आ गया है।"

"तो अगर मिले तो उसे कह देना कि हम पहले जहर वाला मुक्द्दमा लेगे।"

ब्रेवे सरकारी वकील था जिसे इस मुक्द्दमे की पैरवी करनी थी।

गलियारे मे ब्रेवे और सेक्रेटरी की मुठभेड हो गई। ब्रेवे कधे ऊपर को उठाये, बगल मे बैग दबाये, एडिया खटखटाता हुआ तेज़ तेज़ जा रहा था। वह दूसरे बाज़ू को अपने सामने दायें बायें झुला रहा था।

"तैयार हो न? मिखाईल पेत्रोविच पूछ रहे थे," सेक्रेटरी ने कहा।

"मैं हर वक्त तैयार रहता हू," सरकारी वकील ने जवाब दिया, "कौन सा मुकद्दमा पहले होगा?"

"ज़हर वाला मुक्द्दमा।"

"ठीक है," सरकारी वकील ने कहा। परन्तु दिल मे उसे यह ठीक नही लगा। रात को वह अपने एक दोस्त की विदायी पार्टी मे गया था और रात के २ बजे तक शराब और जुआ चलता रहा था और बाद मे सब यार-दोस्त चकले मे गये थे। उसी चकले मे जहा छ महीने पहले मास्लोवा रह रही थी। इस कारण उसे ज़हर वाला केस पढने का वक्त नही मिला था, और वह सोच रहा था कि अब बैठ कर उसे देखूगा। सेक्रेटरी को यह मालूम था, इसी लिए उसने ज़हर वाले मुक्द्दमे से ही कार्यवाही शुरू करने की सलाह प्रधान जज को दी थी। सेक्रेटरी उदारवादी विचारो का था, बल्कि किसी हद तक रेडिकल था। इसके विपरीत ब्रेवे कट्टरपन्थी था, और रूस मे आ कर आबाद हुए सभी जर्मनो की तरह, उसके मन मे भी आर्थोडाक्स मत के लिए विशेष अनुराग था। सेक्रेटरी को वह बुरा लगता था और उसे इस पद पर देख देख कर जलता था।

"और स्कोप्त्सी* वाले मुक्द्दमे का क्या करोगे?" सेक्रेटरी ने पूछा।

---

*स्कोप्त्सी—एक धार्मिक समुदाय।

"मैंने पहले ही कह दिया है कि गवाहो के बिना मैं कुछ नहीं कर सकता। यही बात मैं अदालत मे भी कह दूगा।"

"वाह, इससे क्या फरक पडता है?"

"मैं नही कर सकता," अबे ने झुझला कर हाथ हिलाते हुए कहा, और तेज तेज चलता हुआ अपने निजी दफ्तर मे चला गया।

वह जान बूझ कर इस मुकद्मे को स्थगित करना चाहता था और जिन गवाहो का बहाना वह बना रहा था वे बिल्कुल गैरज़रूरी थे। असल वजह यह थी कि अगर मुकद्मा पढे लिखे जूरी के सामने पेश हुआ तो सभव है अपराधी छूट जाय। इसलिए प्रधान जज से मिल कर उसने यह फैसला कर लिया था कि इस मुकद्मे की पेशी अगले इजलास मे रखा जायेगी, और वह भी इलाके के किसी छोटे कस्बे मे जहा जूरी मे किसानों की सख्या अधिक होगी और इससे सजा दिलवाना आसान होगा।

गलियारे मे हलचल बढने लगी। दीवानी अदालत के दरवाज़े पर लोगो की भीड जमा हो गई। यहा पर उसी मुकद्मे की सुनाई हो रही थी जिसकी चर्चा वह रोबीला आदमी कर रहा था जिसे सभी मुकद्मो की खबर रहती थी।

कचहरी मे थोडी देर के लिए इजलास बरखास्त हुआ, और वह बूढी महिला निकल कर बाहर आयी, जिसकी ज़मीन-जायदाद छिन गई थी। प्रतिभावान वकील ने ऐसी बढिया जिरह की थी कि सारी सम्पत्ति उसके मुवक्किल व्यापारी के हाथ आ गई थी, जिस पर वास्तव मे उसका कोई अधिकार न था। जजो को सब मामला मालूम था। वकील और मुवक्किल भी मामले को खूब जानते थे। पर वकील ने जो चाल चली वह ऐसी थी कि यह फैसला अनिवार्य हो गया कि बुढिया की ज़मीन जायदाद व्यापारी को दे दी जाय।

बुढिया गठीले बदन की स्त्री थी। उसने बढिया कपडे पहन रखे थे और टोपी पर बडे-बडे फूल लगा रखे थे। दरवाजे मे से निकल कर वह रुक गई और अपनी छोटी लेकिन मोटी मोटी बाहे फैला कर बार बार अपने वकील से कहने लगी—"इसका मतलब क्या है? यह हो कैसे सकता है? इसका ख्याल ही किसी को कभे आ सकता है?"

वकील का ध्यान किसी दूसरी तरफ था, और उसकी आखें बुढिया की टोपी मे लगे फूलो को देखे जा रही थी।

बूढी महिला के पीछे पीछे वह प्रतिभावान वकील दीवानी अदालत के कमरे मे से निकल कर बाहर आया जिसने यह मुकद्दमा जीता था और अपने मुवक्किल से दस हजार रूबल ले कर उसे एक लाख रूबल की ज़मीन-जायदाद दिलवा दी थी। यह उसकी ही एक चाल का करिश्मा था कि बुढिया अपना सब कुछ गवा बैठी। कमरे मे से निकलते वक्त उसकी सफेद कलफ चढी कमीज उसकी छोटी सी वास्कट के नीचे से खूब चमक रही थी। वह तेज तेज़ कदम रखता हुआ चला आ रहा था, चेहरा खुशी और आत्मसन्तोष से दमक रहा था, और चाल-ढाल ऐसी मानो सबकी आखें उसी पर लगी हो और वह कह रहा हो—"नही, नही, ताली बजाने की कोई जरूरत नही।"

७

आखिर मात्वेई निकीतिच भी आ पहुचा। उसके पहुचने पर अदालत के पेशकार ने जूरी के कमरे मे प्रवेश किया। पतला सा आदमी, जब वह चलता तो एक ओर को झूलता था। उसका निचला होठ भी एक ओर को लटका हुआ था।

पेशकार पढा लिखा आदमी था, विश्वविद्यालय मे तालीम पा चुका था, और बेहद ईमानदार था, पर ज्यादा देर तक कही भी नौकरी नही कर पाता था, क्योकि उसे शराब पीने की इल्लत पड गई थी। तीन महीने हुए एक काउटेस की सिफारिश पर उसे कचहरी मे नौकरी मिली थी। काउटेस ने भी सिफ़ारिश इसलिए की कि वह उसकी पत्नी पर मेहरबान थी। और वह इस बात पर बडा खुश था कि इस नौकरी पर वह अब तक डटा हुआ था।

नाक पर अपनी कमानीदार ऐनक चढाते हुए और उसके पीछे से सबको देखते हुए पेशकार बोला—

"तो साहिबान, सब पहुच गये?"

"सब मौजूद हैं," हसमुख व्यापारी ने कहा।

"अच्छी बात है, अभी देख लेते हैं।" और जेब मे से एक सूची निकाल उसने एक एक कर के नाम पढने शुरू कर दिये। नाम पढता

जाता और कभी ऐनक मे से और कभी ऐनक के ऊपर से ताक झाक कर वहा बैठे आदमियो को देखता जाता।

"राज्य-परिषद् के सदस्य श्री इ० म० निकीफोरोव!"

"हा, मैं हाजिर हू।" एक रोब दाब वाले आदमी ने कहा। यह वही सज्जन थे जो कचहरियो के मामलात की पूरी पूरी जानकारी रखते थे।

"पैशन याफ्ता कनल इवान सेम्योनोविच इवानोव!"

"हाजिर!" एक पतला सा आदमी बोला जिसने अवकाश प्राप्त अफसरो की वर्दी पहन रखी थी।

"द्वितीय व्यापारी गिल्ड के सदस्य, प्योत्र वाक्लाशोव!"

"तैयार-बर-तैयार," हसमुख व्यापारी ने खीसिया निपोरते हुए कहा।

"गाड स के लेफ्टिनेंट प्रिस द्मीत्री नेख्लूदोव!"

"हाजिर!" नेख्लूदोव ने जवाब दिया।

ऐनक के ऊपर से झाकते हुए पेशकार ने झुक कर बडी नम्रता तथा प्रसन्नता से अभिवादन किया, मानो उन्ह औरो से अलग समझ कर सत्कार करना चाहता हो।

"कैप्टेन यूरी द्मीत्रियेविच दानचेको, ग्रिगोरी येफीमाविच कुलेशोव, व्यापारी," इत्यादि। दो को छोड कर सभी उपस्थित थे।

"तो साहिबान अदालत मे तशरीफ ले चलिये," बडे आतिथ्यपूर्ण ढग से दरवाजे की ओर इशारा करते हुए पशकार ने कहा।

सभी दरवाजे की ओर बढे। एक दूसरे के लिए रास्ता छाड दने के लिए वे तनिक रुक जाते फिर आगे बढ जाते। गलियारे मे से हाते हुए वे कचहरी मे दाखिल हुए।

अदालत का कमरा खूब खुला और लम्बा था। कमरे के एक ओर मच था जिस पर चढने के लिए तीन सीढिया थी। मच पर एक बडा मेज रखा था जिस पर हरे रग का मेजपाश बिछा था। मेजपोश के किनारो पर गहरे हरे रग का बाडर लगा था। मेज के पीछे तीन बडी बडी बलूत की कुसिया रखी थी। कुसिया की पीठ ऊची थी, और उन पर नक्काशी का काम हुआ था। कुसियो के पीछे, दीवार पर ज़ार का एक बहुत रगीन चित्र लटक रहा था। चित्र मे ज़ार ने वर्दी और कधे पर पट्टा पहन रखे थे, हाथ तलवार की मूठ पर था, और एक पाव तनिक आगे को रखा

था। दायी ओर कोने मे एक चौखटा लटक रहा था जिसमे ईसा की प्रतिमा थी, सिर पर काटो का ताज, और चौखटे के नीचे बाईबल-पाठ के लिए मेज़ रखी थी। उसी तरफ सरकारी वकील की मेज लगी थी। बायी ओर, सरकारी वकील की मेज के ऐन सामने सेक्रेटरी की मेज़ थी, और लोगो के बैठने की जगह के नज़दीक बलूत की लकडी का डडहरा लगा था। डडहरे के पीछे कटघरा था जिसमे कैदी के बैठने की बेंच थी। इस वक्त कटघरा खाली था। मच के दायें हाथ जूरी के लिए ऊची पीठ की कुर्सिया रखी थीं। नीचे, फर्श पर वकीलो की मेज़ें थी। यह सब कमरे के सामने वाले हिस्से मे था। कमरे के बीचोबीच एक डडहरा लगा था जो पिछले हिस्से और सामने के हिस्से को एक दूसरे से अलग करता था। कमरे के पिछले हिस्से मे बेंचो की कतारे लगी थी। सामने के बेंच पर चार औरते और दो आदमी बैठे थे। औरते या नौकरानिया थी या किसी फैक्टरी की मज़दूरिनें। दोनो आदमी श्रमिक थे। कमरे के वैभवपूर्ण वातावरण का उन पर इतना रोब था कि वे एक दूसरे से बात भी करते तो फुसफुसा कर।

जब जूरी के सदस्य अपनी अपनी जगह पर बैठ गये, तो पेशकार फिर तिरछा चलता हुआ सामने आ खडा हुआ और ऊची आवाज़ मे बोला, मानो वहा बैठे लोगो को डराना हो—

"जज साहिबान तशरीफ ला रहे हैं!"

सभी उठ खडे हुए। जज साहिबान मच की ओर बढे। सबसे आगे प्रधान जज था, बढिया गलमुच्छो और मासपेशियो वाला। उसके पीछे सुनहरी ऐनक वाला दूसरा जज था जिसका मुह हर वक्त लटका रहता था और आज वह पहले से भी अधिक लटका हुआ था। दरअसल अभी अभी उसे उसका साला मिला था। साला बहिन को मिल कर चला आ रहा था, और बहिन ने कहा था कि आज खाना नही पकेगा।

"मतलब है आज किसी ढाबे की तलाश करनी होगी," हसते हुए साले ने कहा।

"यह हमी की बात नही है," जज ने कहा, और उसका मुह और भी लटक आया।

अन्त म अदालत के तीसर जज ने प्रवेश किया। यह मात्वेई निकीतिच था, वही आदमी जो हमेशा दर से पहुचता था। लम्बी सी दाढी और

बडी बडी, गाल-गाल सम्भावनापूर्ण आखें। उसे पेट मे गूजन की शिकायत रहती थी आज सुबह, अपने डाक्टर के कहने पर एक नया इलाज शुरू किया था, जिस कारण उसे घर पर ज्यादा देर तक रुकना पडा। मच पर चढते समय वह बडा विचारमग्न नजर आ रहा था। कारण, उसकी एक आदत थी—उसके मन में तरह तरह के सवाल उठते, और उन सवालों का हल ढूढने के लिए वह तरह तरह की अजीब तरकीबें सोचता रहता। अभी अभी उसके मन मे सवाल उठा था कि यह नया इलाज फायदेमन्द होगा या नही। और जवाब में उसने सोचा था कि मैं दरवाजे से ले कर अपनी कुर्सी तक अपने कदम गिनूगा। अगर तो ये कदम तीन पर तक्सीम हो सके तब तो मेरी गूजन ठीक हो जायेगी वरना नही। कदम सख्या में छब्बीस निकले, लेकिन उसने कुर्सी के पास पहुच एक हल्का सा कदम और ले कर पूरे सत्ताईस बना लिये।

तीनो जज, प्रधान और उसके साथी अपनी अपनी वर्दियो मे जिनके कॉलरो पर सुनहरी गोटा लगा था, बडे रोबीले नजर आ रहे थे। ऐसा लगता जैसे वे स्वय भी इस बात का महसूस कर रहे हो। वे बडी जल्दी से मेज के पीछे लगी अपनी ऊची कुर्सियो पर आ बैठे, मानो अपने ही गौरव से अभिभूत हो उठे हो। मेज पर हरा कपडा बिछा था, एक तिकोनी वस्तु जिसके सिर पर उकाब बना था, मेज पर रखी थी। इसके अलावा दो काच के गुलदान थे, जो शक्ल-सूरत से उन पात्रो के से लगते थे जिनमे जल-पानगृहो मे मिठाई रखी जाती है। साथ ही कलमदान, कलमे, साफ कागज और तरह तरह की खूब तराशी हुई पेंसिलें रखी थी।

जजो के पीछे पीछे सरकारी वकील भी आया। एक बाजू के नीचे बैग, दूसरा झलता हुआ, वह आते ही सीधा खिडकी के पास अपनी जगह पर जा बैठा, और फौरन कागजात पर नजरसानी करने लगा। वह एक क्षण भी जाया नही करना चाहता था। उसका ख्याल था कि कारवाई शुरू होने से पहले वह अपना केस तैयार कर लेगा। उसे सरकारी वकील बने बहुत अरसा नही हुआ था। अभी तक उसने केवल चार मुकद्दमे लिये थे। ऊपर उठने की उसके मन मे बडी लालसा थी, और उसने दृढ निश्चय कर रखा था कि जरूर किसी न किसी ऊचे ओहदे पर पहुचूगा। इसलिए उसकी यही कोशिश होती कि जो भी मुकद्दमा वह हाथ मे ले उसमे मुद्दालेह को

सज़ा दिलवाये। ज़हर वाले केस को वह मोटे तौर पर जानता था, उसने अपनी तकरीर की रूपरेखा भी तैयार कर ली थी, लेकिन उसे कुछ तथ्यों की ज़रूरत थी, जिन्हें वह अब जल्दी जल्दी नोट कर रहा था।

मंच से हट कर ऐन दूसरी तरफ सेक्रेटरी बैठा था। जिस जिस कागज़ की उसे ज़रूरत हो सकती थी उसने पहले से तैयार कर लिया था, और अब बैठा एक लेख पढ रहा था। यह वह लेख था जिस पर सेंसर ने प्रतिबंध लगा दिया था। एक दिन पहले उसने यह लेख मंगवा कर पढ लिया था, मगर इस वक्त उसे दोबारा इसलिए पढ रहा था कि वह इसकी चर्चा दाढी वाले जज के साथ करना चाहता था, जिसके साथ उसके विचार मिलते थे।

८

प्रधान जज ने कुछेक कागज़ों को उलट-पलट कर देखा, पेशकार और सेक्रेटरी से कुछेक सवाल पूछे जिनका उत्तर उन्होंने हां में दिया। इसके बाद उसने कैदियों को पेश करने का हुक्म दिया।

फौरन कटघरे का दरवाज़ा खुला और दो सशस्त्र पुलिस के सिपाही टोपियां लगाये और हाथों में नंगी तलवारें पकडे दाखिल हुए। उनके पीछे पीछे तीन कैदी—एक आदमी और दो औरतें—अन्दर आयीं। आदमी का चेहरा दागों से भरा था और सिर पर लाल रंग के बाल थे। उसने कैदियों का लबादा पहन रखा था जो उसके लिए बहुत बडा था, लम्बाई में भी और चौडाई में भी। आस्तीनों में से हाथों के अंगूठे निकालते हुए उसने अपने दोनों बाज़ू बगलों के साथ सटा कर रखे थे ताकि आस्तीनें खिसक कर हाथों को भी न ढक लें, क्योंकि लबादे की आस्तीनें भी बडी लम्बी थीं। जजों और दर्शकों की ओर उसने नहीं देखा। वह सीधा बेंच की ओर एकटक देखता रहा और उसके दूसरे सिरे पर जा कर बडे ध्यान से एक कोने में बेंच के सिरे पर बैठ गया, और बाकी सारी जगह दूसरों के लिए खाली छोड दी। फिर उसकी आंखें प्रधान जज पर जम गईं, और उसकी गालों की मांसपेशियां थिरकने लगीं, मानो वह कुछ फुसफुसा रहा हो। उसके पीछे पीछे एक स्त्री आई। इसने भी कैदियों का लबादा पहन रखा था और सिर पर भी कैदियों का रूमाल बांधे हुए थी। वह बडी उम्र की थी, और चेहरा ज़र्द था। आंखों पर न बरौनियां थीं, न भौंह।

ग्रौर ग्राखें लाल थी। वह बिल्कुल शान्त जान पडती थी। चलते हुए उसका लबादा किसी चीज़ के साथ ग्रटक गया। वडे ध्यान से उसने उसे छुडाया ग्रौर ग्राराम से ग्रा कर बैठ गई।

तीसरी कैंदी मास्लोवा थी।

ज्यो ही वह ग्रन्दर ग्राई, कचहरी मे बैंठे सभी ग्रादमियो की नज़रें उसकी ग्रोर घूम गइ ग्रौर वे उसके गोरे मुह, चमकती काली ग्राखो ग्रौर लबादे के नीचे छातिया के उभार को देखने लगे। ग्रौर तो ग्रौर जब तक वह बैठ नही गई पुलिस का हथियारबन्द सिपाही भी जिसके पास से वह हो कर ग्रायी थी, एकटक उसकी ग्रोर देखता रहा, ग्रौर फिर घूम कर खिडकी की ग्रोर देखन लगा। उसके वदन मे एक सिहरन सी हुई मानो उसे किसी जुर्म का एहसास होने लगा हो।

प्रधान जज चुप बैठा रहा। जब कैदी ग्रपनी ग्रपनी जगह पर बैठ गये ग्रौर मास्लोवा भी बैठ गई तो वह सेक्रेटरी की तरफ मुखातिब हुग्रा।

फिर रोज़मर्रा की कारवाई शुरू हुई। जूरी मे बैठे सदस्यों की गणना हुई, कौन ग्राया है कौन नही ग्राया। जो नही पहुचे उनकी प्रधान जज ने टीका टिप्पणी की, ग्रौर उन पर जुर्माने लगाये, जिन सदस्यो ने छुट्टी की दरख्वास्त दे रखी थी, उनके बारे मे फ़ैसला किया, साथ ही ग्रतिरिक्त सदस्यो को नियुक्त किया।

प्रधान जज ने छोटे छोटे कागज के टुकडे लिये, ग्रौर उन्हे तह कर के एक गुलदान मे रखा। फिर ग्रपनी बाहो पर से ग्रास्तीनें थोडी सी पीछे को हटाइ। ग्रास्तीनो पर सुनहरी गोटा लगा था। ग्रास्तीनें हटान पर उसकी कलाई पर के बाल नज़र ग्राने लगे। फिर उसने एक मदारी के से ग्रदाज़ मे हाथ हिलाये ग्रौर एक एक कर के काग़ज़ निकाल निकाल कर खालने ग्रौर पढने लगा। उसके बाद, ग्रास्तीनें नीची कर के, प्रधान जज पादरी की तरफ मुखातिब हुग्रा ग्रौर उसे जूरी के सदस्यो से शपथ लेने का ग्रादेश दिया।

बूढा पादरी चलता हुग्रा देवप्रतिमा के नीचे रखे मेज़ के पास ग्रा कर खडा हो गया। उसका चेहरा फूला हुग्रा ग्रौर ज़द था। वदन पर उसने कत्थई रग का चोगा पहन रखा था, गले से सोने का क्रॉस झूल रहा था ग्रौर सीने पर एक छोटा सा तमग़ा लटका हुग्रा था। वह चलता था ग्रपनी कडी, बोझल टागो को घसीटते हुए।

जूरी के सदस्य उठे और जमघट सा बना कर मेज़ की ओर जाने लगे।

"आइये, चले आइये," अपने गुदगुद हाथ से शॉल को खींचते हुए पादरी ने कहा, और मेज़ के पास जूरी के सदस्यों के पहुंचने का इन्तज़ार करने लगा।

यह काम करते हुए पादरी का पूरे छियालीस बरस हो चुके थे। और तीन साल बाद वह अपनी स्वर्ण जयन्ती मनाने की तैयारी कर रहा था, और उसी ठाठ-बाठ से मनाना चाहता था जिससे कुछ ही मुद्दत पहले लाट पादरी ने अपनी स्वर्ण जयन्ती मनाई थी। जिस दिन ज़िला अदालत खुली थी, यह पादरी उसी दिन से इसमें काम कर रहा था। उसे बड़ा गर्व था कि उसने हज़ारों आदमियों को शपथ दिलवाई है, और अपनी वृद्धावस्था के बावजूद अपने धर्म, देश और परिवार के हित में बराबर मेहनत किये जा रहा है। उसे आशा थी कि वह अपने परिवार के लिए एक मकान और कम से कम तीस हज़ार रूबल तक के सूद वाले शेयर छोड़ जायेगा। उसे इस बात का कभी ख्याल नहीं आया कि जिस पवित्र इंजील पर हाथ रखवा कर वह लोगों से शपथ दिलवाता है, उसी इंजील का यह उपदेश है कि शपथ लेना पाप है। उसने अपनी स्थिति का ख्याल करते हुए यह कभी नहीं सोचा कि वह कितनी लज्जाजनक बात कर रहा है। बजाय इसके कि यह काम उसके अन्तःकरण को कचोटता, उसे अपना यह काम अच्छा लगता था क्योंकि इसमें उसे तरह तरह के बड़े लोगों से मिलने का मौका मिलता था। अभी अभी उसे विख्यात वकील से मिल कर बहुत ख़ुशी हुई थी जिसने एक ही मुकद्दमे में दस हज़ार रूबल कमा लिये थे। यह वही बड़े बड़े फूल लगी टोपी वाली बूढ़ी महिला का मुकद्दमा था। पादरी का दिल वकील के प्रति आदर से भर उठा था।

जब सबके सब सीढ़ियों पर से मंच पर चढ़ गये तो पादरी ने अपना मैला-कुचैला लबादा उठाया और सिर टेढ़ा कर के उसे पहन लिया। उसके बाद अपने विरले बालों को ठीक कर के वह जूरी के सदस्यों की ओर घूम कर कांपती आवाज़ में बोला—

"अपना दायां हाथ उठाइये, इस तरह, और उंगलियों को एक साथ जोड़ कर रखिये।" अपना मोटा, गुदगुदा हाथ उठाया और अंगूठे और दो उंगलियों को एक साथ इस तरह जोड़ कर दिखाया मानो चुटकी लेने

जा रहा हो। "अब मेरे पीछे पीछे बोलिये सर्वशक्तिमान परमात्मा, परम पावन इजील, तथा भगवान के सजीव क्रॉस का नाम ले कर मैं वचन देता हू कि इस काय म " एक एक वाक्याश के बाद रुक रुक कर वह बोल रहा था। "हाथ मत गिराओ, इस तरह सीधा रखो," उसने एक युवक को कहा जिसकी बाजू ढीली पड गई थी, " कि इस काय म जिसे "

कुछ लोगो ने—जैसे गलमुच्छो वाले रोबीले आदमी, कनल और व्यापारी आदि ने—अपने बाजू खूब ऊचे और उगलियो को बिल्कुल उसी तरह बना कर रखा जैसे पादरी ने कहा था, मानो उन्हे ऐसे करना अच्छा लगता हो। बाकी लोगो ने भी हाथ उठाये मगर लापरवाही से और अनमने पन से। कुछ लोग खूब ऊची आवाज मे ललकारते हुए इन शब्दो को बोलने लगे मानो कह रहे हो, "कुछ भी हो जाय, मैं मन की बात कह के छोड़ूगा।" कुछ लोग बडी धीमी, फुसफुसाती आवाज म बोल रहे थे, और बडे धीरे धीरे। जब पीछे रह जाते, तो, मानो डर कर, तेज तेज बोलने लगते, ताकि पादरी के साथ साथ चलने लगें। कुछेक ने अपनी उगलिया खूब जोर से मिला रखी थी, मानो डर रहे हो कि चुटकी में से कुछ गिर न जाय। बाकी लोगो की उगलिया कभी खुलती और कभी बन्द होती। सभी को झेंप हो रही थी—सिवाय पादरी के। पादरी समझ रहा था कि वह बडा उपयोगी और महत्वपूण काय सम्पन्न कर रहा है।

शपथ के बाद प्रधान जज ने जूरी को अपना मुखिया निर्धारित करने के लिए कहा। सभी सदस्य उठे और भीड सी बनाते हुए परामश-कक्ष में चले गये। वहा पहुचते ही, लगभग सभी ने सिगरेट सुलगा लिये। किसी ने रोबीले आदमी को मुखिया बनाने की तजवीज़ की। सवसम्मति से उसे चुन लिया गया। इस पर जूरी के सदस्यों ने सिगरेट बुझाये, टुकडे फेंके और अदालत मे वापस आ गये। रोबीले आदमी ने प्रधान जज को सूचित किया कि उसे मुखिया चुना गया है, इसके बाद सभी अपनी ऊची ऊची पीठ वाली कुर्सियो पर जा बैठे।

सब काम जल्दी जल्दी, विधिवत् और बडे सुचारू रूप से हो रहा था। प्रत्यक्षत इसमे भाग लेने वाले खुश थे, उन्हे इस तरह का काम अच्छा लगता था जो विधिवत, व्यवस्थित और गभीर ढग से किया जाय। इससे उन्हें इस बात का दृढ विश्वास होने लगता था कि वे जनता के

प्रति कोई बडा गभीर और महत्वपूण कतव्य निभा रहे हैं। नेख्लूदोव भी ऐसा ही महसूस कर रहा था।

जब जूरी बैठ गये तो प्रधान जज न उन्हे एक भाषण दिया जिसमे उन्हे बताया कि उनके क्या कतव्य, अधिकार तथा जिम्मेदारिया है। बोलते समय वह बार बार करवट बदलता, कभी दायें हाथ की टेक लेता कभी बायें की, कभी कुर्सी की पीठ का सहारा ले कर बैठता, कभी कुर्सी के बाजुओ का। कभी सामने पडे कागजों को सीधा रखता, कभी पेंसिल उठा लेता, कभी कागज काटने का चाकू उठा लेता।

जो सवाल भी आपको कैदियो से पूछने हो, आप मेरी माफत पूछेंगे, प्रधान जज ने कहा। आप कागज पेंसिल का प्रयोग कर सकते हैं, और जो चीजें यहा सबूत के लिए रखी गई हैं, उनकी जाच कर सकते है। आप का फैसला न्याय पर आधारित होना चाहिए, झूठ पर नही। आपको अपनी जिम्मेदारी का अहसास करते हुए कोई भेद की बात बाहर नही करनी होगी, और बाहर के किसी आदमी से सम्पक स्थापित नही करना होगा। यदि आपकी ओर से भूल हुई तो आपको इसकी सजा भुगतनी पडेगी।

सभी बडे ध्यान से सुन रहे थे, सभी के चेहरो पर आदर का भाव था। व्यापारी, जिससे ब्राडी की बू आ रही थी, और जो अपनी हिचकी दबाने की भरसक कोशिश कर रहा था, एक एक वाक्य पर सिर हिला हिला कर अपनी सम्मति प्रकट कर रहा था।

६

अपना भाषण समाप्त करने पर प्रधान जज कैदियो की ओर मुखातिब हुआ।

"सीमन कार्तीनकिन!"

सीमन उछल कर उठ खडा हुआ। उसके गालो की मासपेशिया पहले से भी ज्यादा तेजी से थिरकने लगी।

"तुम्हारा नाम?"

"सीमन पेत्रोविच कार्तीनकिन," उसने फटी हुई आवाज मे तेज तेज जवाब दिया। जाहिर था कि वह यह जवाब देने के लिए पहले से खूब तैयारी कर के आया था।

"कौन वर्ण?'
"किसान हुजूर।"
'अपना गाव जिला व इलाका बताओ।"
"गाव बोर्की कुप्यान्स्की परिश, जिला क्रापीवेन्स्की, तूला प्रान्त।"
"उम्र?'
"तैंतीस साल, जन्म सन अठारह सौ   "
"धर्म?'
"धर्म रूसी, ऑर्थोडाक्स ईसाई।"
"शादी हुई है?"
"जी नही, हुजूर।"
"क्या धधा करते हो?"
"होटल 'माव्रीतानिया' मे नौकर था।"
"पहले कभी तुम पर मुकद्मा चला है?"
"नही हुजूर, कभी नही, क्योकि जिस तरह पहले हम रहते थे
"पहले तुम पर कभी मुकद्मा नही चलाया गया?"
"नही हुजूर, खुदा रहम करे।"
"क्या नालिश की नकल तुम्हे मिल गई है?"
"जी, मिल गई है।"
"बैठ जाओ।"

"येवफीमिया इवानोव्ना बोच्कोवा,' प्रधान जज ने दूसरी कैदी को पुकारा।

परन्तु सीमन बोच्कोवा के सामने अब भी खडा था।

"बैठ जाओ, कार्तीनकिन।"

कार्तीनकिन फिर भी खडा रहा।

"कार्तीनकिन बैठ जाओ!"

परन्तु कार्तीनकिन फिर भी खडा रहा। इस पर पेशकार भागा हुआ उसके पास गया, और सिर एक तरफ को टेढा किये आखें फाड फाड कर उसकी तरफ देखते हुए बडे दर्द भरे लहजे मे फुसफुसाया–"बैठ जाओ, बैठ जाओ!" तब वह झट से बैठ गया उसी तरह जिस तरह वह उठा था, अपना गाउन अपने इर्द गिर्द लपेटा, और उसके गाल फिर चलने लगे।

"तुम्हारा नाम ?" प्रधान जज ने थक कर गहरी साम लेते हुए पूछा, विना कैदी की ग्रार देखे। उसकी नजर सामने पडे कागज़ पर थी। प्रधान जज को अपने काम मे इतना अभ्यास हो गया था कि जल्दी जल्दी काम भुगतान के लिए वह एक वक्त मे दो काम करता था।

वोच्कावा ४३ वरस की थीं, और कोलाम्ना नगर की रहनेवाली थी। वह भी "मावीतानिया" होटल मे नौकरानी का काम करती थी।

"मुझ पर पहले कभी मुकद्दमा नही चलाया गया, और मुझे नालिश की नकल मिल गई है।" उसने तुनक कर जवाव दिये। उसके लहजे से ऐसा जान पडता था मानो हर जवाब के साथ यह भी कहना चाहती हो, "हा, मैं येवफीमिया वोच्कोवा हू, मुझे नालिश की नकल मिल गई है, जो जानता है जाने, मुझे किसी की काई परवाह नही, और देखना, मेरे साथ मुह मत लगाना।"

आखिरी सवाल का जवाब देते ही वह अपने आप वैठ गई। उसन इस बात का इन्तज़ार नही किया कि कोई कहेगा तब बैठूगी।

प्रधान जज तीसरी कैदी की ओर मुखातिव हुआ

"तुम्हारा नाम ?" प्रधान जज की आवाज़ मे विशेष नम्रता आ गई, क्योकि उसके दिल मे औरता के लिए वेहद प्रेम था। "तुम्ह खडा होना पडेगा," उसने धीमी, मृदु आवाज़ मे कहा, जव उसने देखा कि मास्लोवा अव भी बैठी हुई है।

मास्लोवा झट उठ खडी हुई, और छाती फुलाये प्रधान जज की ओर देखने लगी। उसकी काली काली हसती आखो म अजीव तत्परता का भाव था।

"तुम्हारा नाम ?"

"ल्युवोव," उसने जल्दी से कहा।

जिस समय कैदियो से सवाल पूछे जाने लगे थे, तो नेख्लूदोव ने अपनी कमानीदार ऐनक नाक पर चढा ली थी। "नही, यह नही हो सकता, नामुमकिन है!" उसकी आखें कैदी के चेहरे पर से हटाये न हटती थी। उसने कैदी का जवाब सुना और मन ही मन कहा—"ल्युवोव! यह कैसे हो सकता है?"

प्रधान जज अगला सवाल पूछने जा ही रहा था, परन्तु साथ मे बैठे ऐनक वाले जज ने टोक दिया, और गुस्से से फुसफुसा कर प्रधान जज को

पुछ कहा। इस पर प्रधान जज ने सिर हिलाया और फिर मुन्शी की ओर मुखातिब हुआ

"क्या बात है, यहां पर स्वभाव नहीं, तुम्हारा नाम कुछ और ही लिखा है।'

कैदी चुप रही।

"तुम्हारा असली नाम क्या है?"

"बपतिस्मे के वक्त तुम्हें कौन सा नाम दिया गया?" उस जज ने पूछा जो गुस्से से लाल-पीला हो रहा था।

"पहले मुझे येकातेरीना के नाम से बुलाते थे।"

नेख्लूदोव ने फिर मन ही मन कहा—"नही, यह नहीं हो सकता," पर अब उसे यकीन हो गया था कि यह वही लडकी है—जो उस घर में आधी नौकरानी और आधी कुलीन-बाला की तरह रहती थी—वही है जिसे वह सचमुच कभी प्रेम करता था, और एक दिन मदान्ध हो कर जिसकी उसने अस्मत लूटी थी। और अस्मत लूटने के बाद ऐसा त्यागा था कि फिर कभी याद तक न किया था। याद इसलिए नही किया था कि याद कर के वह बहुत दुखी होता, स्वय अपनी नज़रो मे गिरता और मुजरिम बनता। नेख्लूदोव को अपने आचार की दृढता का अभिमान था। इस घटना को याद कर के उसे कबूल करना पडता कि उसने इस औरत के साथ बडा घृणित और निन्दनीय व्यवहार किया है।

हा, यह वही औरत थी। अब उसे उसके चेहरे पर उसके व्यक्तित्व की झलक नजर आने लगी। हर चेहरे की अपनी विशेपता होती है, और इसी मे वह और सभी चेहरो से पृथक् होता है। उसका चेहरा भरा हुआ था, लेकिन उस पर एक प्रकार की रुग्ण पीलिमा छायी थी। इसके बावजूद वह विशेप मदु व्यक्तित्व इसमे से झलक रहा था, उन होठो से, उसकी आखो के हल्के से ऐंचेपन से, और विशेप कर उसकी भोली मुस्कान से, उसके सारे शरीर और चेहरे पर छाये तत्परता के भाव से।

"तुम्हे यही बताना चाहिए था," प्रधान जज ने फिर विनम्र लहजे मे कहा, "तुम्हारा पितृ नाम?"

"मैं अवैध लडकी हू।"

"बपतिस्मे के वक्त पिता की जगह कौन था?"

"उसके नाम से मिखाइलोव्ना।"

नेख्लूदोव के लिए सास लेना मुश्किल हो रहा था। वह मन ही मन सोच रहा था—"इसने कौन सा अपराध किया होगा?'

"तुम्हारा कुलनाम?" प्रधान जज पूछ रहा था।

"मा के कुलनाम म मेरा भी मास्लोवा रखा गया था।"

"वर्ग?"

"मश्चान्का।"*

"धर्म—ओर्थोडोक्स?"

"हा।"

"धधा? तुम क्या काम करती थी?"

मास्लोवा चुप रही।

"तुम कहा नौकरी करती थी?"

"मैं एक अड्डे मे थी।"

"कैसा अड्डा?" ऐनको वाले जज ने रूखी आवाज मे पूछा।

"आप तो जानते हैं," उसने कहा और मुस्करा दी। इसके बाद उसने जल्दी से कमरे मे चारो ओर नजर दौडायी और फिर प्रधान जज की ओर देखने लगी।

उसके चहरे के भाव मे कुछ ऐसी विलक्षणता थी, उसके इन शब्दो मे एक ऐसा भयानक तथा दयनीय अर्थ छिपा था, उसकी मुस्कान मे, उसके यो तेजी से कमरे मे नजर घुमाने मे, कि प्रधान जज शर्मा गया, और क्षण भर के लिए अदालत मे चुप्पी छा गई। यह चुप्पी तब टूटी जब सामने बैठे लोगो मे एक आदमी हसने लगा। फिर किसी ने कहा—"श्श ।।" इस पर प्रधान जज ने नजर ऊपर उठायी और अपने प्रश्न जारी रखते हुए बोला—

"पहले कभी किसी जुर्म मे पकडी गई हो?"

"कभी नही," मास्लोवा ने धीमे से कहा और एक ठण्डी सास ली।

"क्या तुम्हें नालिश की नकल मिल गई है?"

"जी, मिल गई है।"

"बैठ जाओ।"

---

*मध्य वर्ग के शहरी लोग।

जिस भांति कोई कुलीन महिला बैठने से पहले, तनिक सा पीछे की ओर झुक कर, हाथो से गाउन का लटकता पल्लू उठा कर बैठती है, इसी तरह मास्लोवा ने भी किया। अपने घाघरे को सभाल कर बैठ गई, और अपने गाउन की आस्तीनो के तहो म अपने छोटे छोटे सफेद हाथ छिपा लिये। वह अब भी प्रधान जज की ओर देखे जा रही थी।

गवाहो के नाम बताये गये, फिर उन्ह कमरे मे से भेज दिया गया। इसके बाद डाक्टर के बारे म निर्णय किया गया, जो मुकद्दमे म विशेषज्ञ के नाते अपनी राय देगा, और उसे अदालत मे बुला भेजा गया।

इसके बाद सेक्रेटरी उठा और नालिश पढ कर सुनाने लगा। उसकी आवाज़ ऊची और साफ थी हालाकि उसका 'ल' और 'र' बोलने का ढग एक ही था। पर वह इतना तेज तेज़ पढ रहा था कि शब्द एक दूसरे मे मिलते जा रहे थे और ऐसा जान पडता था जैसे कोई शहद की मक्खी सारा वक्त एक ही आवाज़ मे भिनभिनाये जा रही है।

जज कभी कुर्सी के एक बाजू पर कोहनिया टेकते, कभी दूसरे बाजू पर कभी मेज़ पर झुकते, कभी फिर कुर्सी की पीठ का सहारा लेते, कभी आखें बद करते, कभी खोलते, कभी एक दूसरे से फुसफुसा कर कुछ कहते। सशस्त्र पुलिस का एक सिपाही बार बार जम्हाइया दबाने की चेष्टा कर रहा था।

कैदी कार्तीनकिन के गाल अब भी उसी तरह चल रहे थे। बोच्कोवा सीधी तन कर बैठी थी, केवल कभी कभी सिर खुजलाने के लिए अपना हाथ उठाती और सिर पर बधे रुमाल के नीचे ले जाती।

मास्लोवा मूर्तिवत बैठी थी और नालिश पढने वाले की ओर देखे जा रही थी। केवल कभी कभी वह चौंक सी उठती, मानो कुछ जवाब देना चाहती हो, फिर शर्मा जाती और ठण्डी सास ले कर अपने हाथ एक जगह से उठा कर दूसरी जगह रख लेती और अपने आस पास नज़र घुमा कर फिर नालिश पढने वाले की ओर एकटक देखने लगती।

नेख्लूदोव अगली कतार मे एक सिर से दूसरी कुर्सी पर बैठा था, और अपनी कमानीदार ऐनक हाथ मे पकडे एकटक मास्लोवा की ओर देखे जा रहा था। उस समय उसके अन्दर एक सघर्ष चल रहा था जो जटिल भी था और दुखपूर्ण भी।

नालिश मे लिखा था—

"१७ जनवरी, १८८ के दिन, हाटल "माव्रीतानिया" मे फेरापान्त स्मेल्कोव नामी द्वितीय गिल्ड के व्यापारी की सहसा मृत्यु हो गई। यह आदमी साइबेरिया मे कुरगान नामक नगर का रहने वाला था।

"शहर के चौथे वार्ड के स्थानीय पुलिस-डाक्टर ने तसदीक की कि मौत दिल की नाडी फट जाने के कारण हुई है—मृत व्यक्ति ने अत्यधिक शराब पी रखी थी। उसके शरीर को दफना दिया गया।

"कुछ दिन बाद मृत व्यक्ति स्मेल्कोव का एक मित्र तीमाखिन पीटर्सबर्ग से लौट कर आया। यह आदमी भी साइबेरिया का व्यापारी है और स्मेल्कोव के ही शहर का रहने वाला है। जब उसे पता चला कि किन स्थितियो मे स्मेल्कोव की मृत्यु हुई तो उसे सन्देह हुआ और उसने सूचित किया कि स्मेल्कोव का रुपया चुराने की गरज से उसे जहर दिया गया है।

"पहली तफ्तीश मे यह शक ठीक साबित हुआ। मालूम हुआ कि—

"१) मौत से पहले स्मेल्कोव ने अपने बैक मे से ३,८०० रूबल निकलवाये थे। लेकिन जब बाद मे उसकी चीजो की सूची तैयार की गई तो उसके पास से केवल ३१२ रूबल और १६ कोपेक निकले।

"२) मौत से पहले सारा दिन और सारी रात स्मेल्कोव न वेश्या ल्यूब्का (येकातेरीना मास्लोवा) के साथ चकले मे और होटल "माव्रीतानिया" के अपने कमरे म गुजारी। एक बार उसके कहने पर येकातेरीना मास्लोवा चकले से उसके कमरे मे पैसे लाने के लिए गई। वह उसके साथ नही था। स्मेल्कोव ने खुद उसे अपने बैग की चाभी दी थी जिसमे उसके पैसे रखे थे। होटल के दो नौकरो येवफीमिया बोच्कोवा और सीमन कार्तीनकिन की मौजूदगी म मास्लोवा ने चाभी लगा कर बग खोला और फिर बन्द कर दिया। बोच्कोवा और कार्तीनकिन ने इस बात की शहादत दी है कि जब बैग खुला था तो उसम उन्होने सौ सौ रूबल के नोटो की गड्डिया देखी थी।

"३) जब स्मेल्कोव चकले से लौट कर अपने कमरे मे आया तो वेश्या ल्यूब्का उसके साथ आई। कार्तीनकिन के कहने पर उसने एक गिलास

शराब मे सफेद सा पाउडर डाला और स्मेल्कोव को पीने के लिए दिया। यह पाउडर भी स्वय कार्तीनकिन ने ही उसे दिया था।

"४) इसके दूसरे दिन ल्यूब्का (येकातेरीना मास्लोवा) ने एक हीरे की अगठी अपनी मालकिन (गवाह कितायेवा, चकले की मालकिन) को बेची। मास्लोवा का कहना है कि यह अगूठी स्मेल्कोव ने स्वय उसे भेंट की थी।

"५) स्मेल्कोव की मौत के दूसरे दिन नौकरानी येवफीमिया बोच्कोवा ने बैंक म अपने चालू खाते मे १,८०० रूबल जमा करवाये।

"स्मेल्कोव की शव-परीक्षा की गई, तथा उसके मेदे के द्रव्यो का रासायनिक विश्लेषण किया गया, जिससे पता चला कि मौत जहर दिये जाने के कारण हुई है।

"तीनो मुजरिम मास्लोवा, बोच्कोवा तथा कार्तीनकिन कहते हैं कि उन्होंने कोई जुम नहीं किया। मास्लोवा ने अपने बयान मे कहा है कि जिस वक्त स्मेल्कोव चकले में था, जहा वह 'काम करती है'–उसने इसी शब्द का प्रयोग किया है–तो उसे खुद स्मेल्कोव ने ही 'मावीतानिया' होटल से कुछ पैसे लाने के लिए भेजा था। जो चाभी व्यापारी ने उसे दी थी, उससे उसने बैग खोला और उसम से स्मेल्कोव के आदेशानुसार ४० रूबल निकाले, इससे ज्यादा कुछ नही लिया। उसका कहना है कि बोच्कोवा और कार्तीनकिन इस बात की शहादत दे सकते हैं, क्योकि उनकी मौजूदगी में उसने बैग खोला और बन्द किया था।

"आगे चल कर बयान मे कहा है कि जब वह दूसरी बार होटल म आई तो उसने सीमन कार्तीनकिन के कहने पर स्मेल्कोव को शराब मे कोई पाउडर जरूर दिया था। उसका ख्याल था कि यह नीद दिलाने वाला पाउडर है और उसके पीने से वह सो जायेगा और उसे और तग नही करेगा। जहा तक अगूठी का सवाल है, उसका कहना है कि स्मेल्कोव ने उसे पीटा, पर जब वह रोने लगी और कहा कि वहा से चली जायेगी तो उसने खुद वह अगूठी उसे दी।

'मुजरिम येवफीमिया बोच्कोवा ने जिरह के वक्त कहा कि उसे गुमशुदा रुपये के बारे म कुछ भी मालूम नही कि वह स्मेल्कोव के कमरे म गयी तक नही थी, कि सब काम वहा ल्यूब्का ने ही किया है। अगर

चोरी हुई है तो रुपया ल्यूबा ने ही उस वक्त चुराया होगा जब वह व्यापारी से चाभी ले कर पैसे लेने आयी थी।"

इस जगह मास्लोवा चौंकी, उसने मुह खोला और बोच्कोवा की ओर देखने लगी।

सेक्रेटरी पढता गया—"जब बोच्कोवा को १,८०० रुबल की बैंक रसीद दिखायी गयी और पूछा गया कि यह रकम उसे कहा से मिली है तो उसने जवाब दिया कि यह उसकी और सीमन की पिछले बारह साल की कमाई की रकम है, और वह शीघ्र ही सीमन से शादी करने वाली है।

"पहली जिरह मे मुजरिम कार्तीनकिन ने कबूल किया कि मास्लोवा के उकसाने पर जो चकले से चाभी ले कर आयी थी, उसने और बोच्कोवा ने रकम चुरायी थी, और उसे दोनो ने मास्लोवा के साथ मिल कर, बराबर बराबर आपस मे बाट लिया था।"

यहा पर भी मास्लोवा चौंकी, बल्कि उठ खडी हुई, और शर्म से लाल हुए बोलने लगी। लेकिन पेशकार ने उसे चुप करा दिया।

सेक्रेटरी पढता गया—"अन्त मे कार्तीनकिन ने कबूल किया कि स्मेल्कोव को सुलाने के लिए उसी ने पाउडर दिया था। जब दूसरी बार जिरह की गई तो उसने इन दोनो बातो से इन्कार कर दिया, और कहा कि न ही पैसे चुराने के मामले मे और न ही पाउडर के मामले म उसका कोई हाथ था, कि जो कुछ भी किया है, अकेली मास्लोवा ने किया है। जब उससे पूछा गया कि बैंक मे जो रकम बोच्कोवा ने जमा कराई उसके बारे मे उसे क्या कहना है, तो उसने भी वही जवाब दिया जो बोच्कोवा ने दिया था कि यह वह रकम है जो होटल मे रहने वाले लोगो ने गाहे गाह पिछले बारह साल की नौकरी के दौरान उन्हे इनाम के रूप मे दी थी।"

इसके बाद जाच का विवरण, गवाहिया और विशेषज्ञो की राय पढ कर सुनायी गई। नालिश को समाप्त करते हुए सेक्रेटरी ने अन्त मे पढा—

"उपरोक्त तथ्यो के अनुसार, सीमन कार्तीनकिन, उम्र तेतीस साल, गाव बोर्की, किसान, मेश्चाका येवफीमिया बोच्कोवा, उम्र ४३ साल, और मेश्चाका येवातेरीना मास्लोवा, उम्र २७ साल—पर यह फर्दे जुर्म लगाया जाता है कि १७ जनवरी, १८८ के दिन तीनो ने मिल कर उपरोक्त व्यापारी स्मेल्कोव की चोरी की जिसमे नक्दी और हीरे की

अगूठी शामिल थे। कुल मिला कर यह चोरी २,५०० रूबल का हुआ। अपने जुर्म को छिपाने के लिए उपरोक्त व्यापारी स्मेल्कोव को जहर दिया गया ताकि वह मर जाय। और इसी जहर से उसकी मौत हुई।

"इस जुर्म पर दण्ड-विधान की धारा १४५३ (पैरा ४ और ५) लागू होती है। अत जाब्ता फौजदारी की धारा २०१ के अनुसार, किसान सीमन कार्तीनकिन, मेश्चानका येवफीमिया बोच्कोवा तथा मेश्चान्का येकातेरीना मास्लोवा को जिला कचहरी मे जूरी युक्त अदालत के सामने पेश किया जाता है।"

सक्रेटरी ने नालिश का चिट्ठा समाप्त किया, कागजो को समेटा और लम्बे बालो पर हाथ फेरते हुए अपनी जगह पर जा बैठा। कमरे में बैठे सभी लोगो ने चैन की सास ली। सभी ने सोचा कि अब मुकद्दमा शुरू होगा सब बात साफ होगी और इन्साफ किया जायेगा। केवल नेख्लूदोव ही एक ऐसा आदमी था जिसके हृदय मे पृथक् भावनाए उठ रही थी। उसे यह देख कर गहरा धक्का लगा था कि यह लडकी मास्लोवा, जो दस ही साल पहले कितनी भोली भाली और प्यारी हुआ करती थी आज न जाने कैसे घोर अपराध करने लगी।

११

नालिश पढे जाने के बाद प्रधान जज ने बाकी जजो से मशविरा किया और कार्तीनकिन की ओर मुखातिब हुआ। उसके चेहरे का भाव देख कर ऐसा जान पडता था मानो कह रहा हो—"अभी हम सच-झूठ का पता लगा लेंगे कि क्या हुआ और क्या नही हुआ। छोटी छोटी बात तक का पता चल जायेगा।" फिर बाईं ओर झुक कर बोला—

"किसान सीमन कार्तीनकिन।'

सीमन कार्तीनकिन उठ खडा हुआ, दोनो बाजू नीचे की ओर सीधे किये, और अपने समूचे शरीर से आगे की ओर झुक गया। उसके होंठ अब भी चल रहे थे हालाकि मुह मे से एक शब्द भी नही निकल रहा था।

"तुम पर यह जुर्म लगाया गया है कि तुमने १७ जनवरी, सन १८८ के दिन येवफीमिया बोच्कोवा और येकातेरीना मास्लोवा के साथ मिल कर स्मेल्कोव नामी व्यापारी के बैग मे से रुपये चुराये। इसके बाद

तुमने सखिये की पुड़िया येकातेरीना मास्लोवा को दी और कहा कि वह उसे शराब मे मिला कर स्मेल्कोव को पिला दे। वह रजामन्द हो गई और इस तरह स्मेल्कोव की मौत हुई। बोलो, तुम अपना जुर्म कबूल करते हो या नही?" प्रधान जज ने दायी ओर झुकते हुए कहा।

"यह कैसे, नही जी, हमारा काम तो मेहमानो की सेवा करना है, हम तो "

"यह सब बाद मे कहना। जुर्म कबूल करते हो?"

"जी नही हुजूर, हम तो केवल "

"यह बाद मे कहना, हम सुन लेगे। जुर्म कबूल करते हो?" प्रधान जज ने धीमी, दृढ आवाज मे कहा।

"हम कभी ऐसा काम कर सकते है, हम तो "

पेशकार फिर भागा हुआ सीमन कार्तीनकिन के पास गया, और पहले जैसे ही दुखपूर्ण लहजे मे फुसफुसा कर उसे चुप रहने को कहा।

प्रधान जज ने अपना हाथ हिलाया जिसमे कागज पकडा हुआ था, फिर अपनी कोहनी दूसरे रख रखी, मानो कह रहा हो—"बस, एक काम भुगत गया," और इसके बाद येवफीमिया बोच्कोवा की ओर मुखातिब हुआ।

"येवफीमिया बोच्कोवा तुम पर यह जुर्म लगाया गया है कि १७ जनवरी, १८८ के दिन होटल 'माव्रीतानिया' मे तुमने सीमन कार्तीनकिन और येकातेरीना मास्लोवा से मिल कर व्यापारी स्मेल्कोव के बैग मे से कुछ रुपया और एक अगूठी चुराई, यह रकम तुमने आपस मे बाटी और व्यापारी स्मेल्कोव को जहर दी जिससे वह मर गया। अपना जुर्म कबूल करती हो?"

"मैंने कोई जुर्म नही किया," कैदी ने बडे दुस्साहस और दृढता से जवाब दिया। "मैं उस कमरे के नजदीक तक नही गई। यही डायन उस कमरे मे गई और इसी ने सब कुछ किया।"

"यह सब बाद मे कहना," प्रधान जज ने फिर धीमी आवाज मे दृढता से कहा, "तो तुम कहती हो कि तुमने कोई जुर्म नही किया?"

"मैंने कोई पैसे नही लिये, न ही उसे कुछ पिलाया और न ही मैं उस कमरे मे गई। अगर मैं अन्दर गई होती तो इसे धक्के मार कर बाहर निकाल देती।"

"तो तुम अपने को दोषी नही मानती?"

"बिल्कुल नही।"

"अच्छी बात है।"

"येकातेरीना मास्लोवा," प्रधान जज तीसरी कैंदी की ओर मुखातिब हुआ। "तुम पर यह जुर्म लगाया गया है कि जब तुम व्यापारी स्मेल्कोव के बैंग की चाभी ले कर चकले से होटल मे आईं तो तुमने उसके बा में से कुछ रुपया और एक अगूठी चुराई।" प्रधान जज ने ये शब्द इस तरह कहे मानो पाठ पहले से याद कर रखा हो। वह बायें हाथ बैठे जज की ओर झुक गया जो उसके कानो मे फुसफुसा रहा था कि शहादती चीजों की सूची मे जिस मतबान का जिक्र है, वह नहीं मिल रहा है। "उसके बैंग मे से कुछ रुपया और एक अगूठी चुराई," प्रधान जज ने दोहरा कर कहा, "और उस रकम को आपस मे बाटा। फिर तुम स्मेल्कोव के साथ होटल 'माव्रीतानिया' मे वापिस आयी जहा तुमने उसे शराब म जहर मिला कर पिलाया जिससे उसकी मौत हो गई। अपना जुम कबूल करती हो?"

"मैंने कोई जुम नही किया," मास्लोवा तेज तेज बोलने लगी, "मैंने पहले भी कहा था और अब भी कहती हू—मैंन नही लिया, नहा लिया, मैंने कुछ भी नही लिया। अगूठी उसने खु द मुझे दी थी।"

"क्या तुम अपना जुम कबूल नही करती हो कि तुमने २ हजार ५ सौ रूबल चुराये?" प्रधान जज ने पूछा।

"मैंने कह दिया है कि ४० रूबल को छोड कर मैंने कुछ भी नही लिया।"

"और यह जुम मानती हो कि तुमने व्यापारी स्मेल्कोव को शराब मे एक पाउडर मिला कर पिलाया?"

"हा, यह मैंन किया था। पर मैंने इन लोगो की बात पर विश्वास किया। इन्होंने कहा कि यह नीद लाने की दवाई है, इससे कोई नुक्सान नही हो सकता। मुझे इसका ख्याल तक नही आया, न ही मैं चाहती थी भगवान साक्षी है, मेरा उसे जहर देने का कोई मतलब न था।"

'तो तुम अपना यह जुम नही कबूलती हो कि तुमने व्यापारी स्मेल्काव के रुपये और अगूठी चुराई, मगर यह मानती हो कि तुमन उसे पाउडर दिया।'

"हा, मैं यह मानती हू। पर मैंने समझा वह सोने की दवा थी। मैंने उसे इसलिए दिया कि वह सो जाय। मेरा कोई बुरा इरादा नही था, मुझे ख्याल भी नही आया कि इसका कोई बुरा नतीजा निकल सकता है।"

"अच्छी बात है," प्रधान जज बोला। प्रत्यक्षत इस जाच के परिणाम से वह सन्तुष्ट था। "अब सारी बात बताओ क्या क्या हुआ?" और वह कुर्सी की पीठ के साथ सट कर बैठ गया, और दोनो हाथ मेज पर रख लिये। "सारी बात खोल कर बताओ। जो सच सच बताओगी तो इसमे तुम्हारा ही फायदा है।"

मास्लोवा चुपचाप सीधी प्रधान जज की ओर देखे जा रही थी।

"बताओ यह बात कैसे हुई।"

"कैसे हुई?" मास्लोवा ने सहसा तेज तेज़ बोलना शुरू कर दिया। "मैं होटल मे गई, और मुझे उसके कमरे मे भेजा गया। जब मैं अन्दर गई तो वह बहुत शराब पिये हुए था।" "वह" शब्द कहते हुए उसकी बडी बडी आखें त्रस्त हो उठी। "मैं लौट जाना चाहती थी, मगर उसने मुझे जाने नही दिया।"

वह चुप हो गई मानो उसे घटनाक्रम भूल गया हो, या उसे कोई बात याद हो आई हो।

"अच्छा तो फिर क्या हुआ?"

"तो फिर क्या? मैं थोडी देर तक वहा रही, और फिर वापस घर लौट गई।"

यहा सरकारी वकील अपनी कोहनी का सहारा ले कर थोडा सा ऊपर को उठा। उसकी मुद्रा बडी अटपटी सी लग रही थी।

"क्या आप कोई सवाल पूछना चाहते हैं?" प्रधान जज ने पूछा। वकील के हा मे जवाब देने पर प्रधान जज ने उसे बोलने का इशारा किया।

"मैं यह पूछना चाहता हू कि क्या मुजरिम सीमन कार्तीनकिन को पहले से जानती थी?" उसने बिना मास्लोवा की ओर देखे हुए पूछा। सवाल पूछने के बाद उसने अपने होठ भीचे और भौंहें सिकोड ली।

प्रधान जज ने सवाल दोहराया। मास्लोवा डरी हुई नजर से सरकारी वकील की ओर एकटक देखने लगी।

"सीमन को? हा," उसने कहा।

"मैं जानना चाहता हूं कि यह वाकफियत कैसी थी? क्या वे दोनों एक दूसरे को अक्सर मिलते रहते थे?"

"कैसी थी? वह मुझे होटल के मेहमानों के लिए बुलाया करता था। उससे मेरी कोई खास वाकफियत नहीं है," मास्लोवा ने जवाब दिया। उसने घबराई हुई नज़र से पहले प्रधान जज की ओर देखा, फिर सरकारी वकील की ओर, और उसके बाद फिर प्रधान जज की ओर देखने लगी।

"मैं पूछना चाहता हूं कि कार्तीनिकिन होटल के मेहमानों के लिए केवल मास्लोवा को ही क्यों बुलाता था, और लड़कियों में से किसी को क्यों नहीं बुलाता था?" आंखों को सिकोड़े, धूर्तताभरी मुस्कान के साथ सरकारी वकील ने पूछा।

"मैं नहीं जानती। मुझे क्या मालूम?" मास्लोवा ने कहा और घबराई हुई आंखों से इधर-उधर देखा। क्षण भर के लिए उसकी नज़र नेख्लूदोव पर टिक गयी। "जिसे वह चाहता था बुला लेता था।"

"क्या यह मुमकिन है कि इसने मुझे पहचान लिया हो?" नेख्लूदोव ने सोचा, और उसका मुंह लाल हो गया। परन्तु मास्लोवा की नज़र उस पर से हट गई। उसने यह नहीं जाना कि यह औरों से भिन्न है और फिर घबरा कर सरकारी वकील की ओर देखने लगी।

"तो मुजरिम इस बात से इन्कार करती है कि उसका कार्तीनिकिन के साथ कोई गहरा सम्बन्ध रहा है? अच्छी बात है, मुझे और कोई सवाल नहीं पूछना है।'

सरकारी वकील ने मेज पर से अपनी कोहनी हटायी और कुछ लिखने लगा। वास्तव में वह कुछ भी नहीं लिख रहा था, केवल अपना कलम टिप्पणियों के उन्हीं शब्दों पर फेर रहा था जो उसने पहले से लिख रखे थे। उसने बड़े सरकारी वकील और दूसरे वकीलों को ऐसा करते देखा था। वे कोई चतुर सा सवाल पूछते और अपनी टिप्पणियों में कुछ दर्ज कर लेते ताकि बाद में अपने विरोधी को परेशान कर सकें।

प्रधान जज ने उसी वक्त मुजरिम से सवाल नहीं किया। वह ऐनक वाले जज से यह पूछ रहा था कि वह इस बात से सहमत है या नहीं कि ये सवाल पूछे जाय (ये सवाल पहले से तैयार किये गये थे और काग़ज़ पर लिखे हुए थे)।

"फिर? फिर क्या हुआ?" उसने पूछा।

"मैं घर आ गई," मास्लोवा ने कहा। उसकी आखो मे कुछ साहस आ गया, और वह केवल प्रधान जज की ओर देखती रही। "मैंने पैसे मालकिन का दिये और सोने चली गई। मुझे नीद आने ही लगी थी जब वहाँ की एक लडकी, बेर्ता ने मुझे जगा दिया। कहने लगी–'जाओ, वह व्यापारी फिर आया है और तुम्हे पूछ रहा है।' मैं नही जाना चाहती थी पर मालकिन ने मुझे जाने का हुक्म दिया। वह आदमी," उसने फिर बडी त्रस्त आवाज मे "वह आदमी" कहा, "वह आदमी हमारे घर की लडकियो को खिलाता पिलाता रहा। फिर वह और शराब मगवाना चाहता था, पर उसके सब पैसे चुक गये थे, और मालकिन उसका विश्वास नही करती थी। इसलिए उस आदमी ने मुझे अपने होटल म भेजा जहा उसके पैसे पडे हुए थे। उसने मुझे बता दिया कि कितने पसे निकाल कर लाने है। इसलिए मैं गई।"

प्रधान जज अपने बायें हाथ बठे जज के साथ धीमे धीमे बाते कर रहा था, पर यह दिखाने के लिए कि वह सब कुछ सुन रहा है, उसने मास्लोवा के अन्तिम शब्द दोहराते हुए कहा–

"तो तुम गइ। फिर? फिर क्या हुआ?"

"मैं गई और जैसे उसने कहा था किया। मैं उसके कमरे मे गई। मगर मैं अकेली नही गयी, मैंने सीमन और इसे बुलाया," बोच्कोवा की ओर इशारा करते हुए उसने कहा।

"यह सरासर झूठ है। मैं बिलकुल उस कमरे मे नही गयी," बोच्कोवा बोली, मगर उसे रोक दिया गया।

"इन दोनो की मौजूदगी मे मैंने बैग मे स दस दस रूबल के चार नोट निकाले," बिना बोच्कोवा की ओर देखे मास्लोवा ने भौंह सिकोड कर फिर कहना शुरू किया।

"ठीक है, मगर क्या मुजरिम ने बैग मे से चालीस रूबल निकालते समय यह भी देखा कि उसमे कितनी रकम पडी थी?" सरकारी वकील ने फिर सवाल किया।

सरकारी वकील का सवाल सुनते ही मास्लोवा काप उठी। अनजाने मे ही उसे ऐसा लगने लगा था जैसे यह आदमी उसका बुरा चाहता है।

"मैंने गिने नही, मगर मैंने देखा कि उसमे कुछ सौ सौ रूबल के नोट पडे थे।"

"आह! तो मुजरिम ने उसमें सौ सौ रूबल के नोट पड़े देखे। बस, मैं इतना ही जानना चाहता था।"

"तो तुम पैसे ले कर वापस आ गयीं," प्रधान जज ने घड़ी को आँख देखते हुए कहा।

"हां।"

"फिर? फिर क्या हुआ?"

"फिर वह मुझे वापस होटल में ले गया," मास्लोवा ने कहा।

"तो तुमने उसे पाउडर किस तरह दिया?"

"किस तरह दिया? मैंने पाउडर शराब के गिलास में डाला और उसे दे दिया।"

"तुमने क्यों ऐसा किया?"

इस सवाल का उसने सहसा जवाब नहीं दिया, बल्कि एक गहरी आह भरी।

"वह मुझे छोड़ता नहीं था," क्षण भर चुप रहने के बाद वह कहने लगी, "पर मैं थक कर चूर हो गई थी। मैं बरामदे में गई और सामने से बोली कि यह मुझे जाने ही नहीं देता, मैं बहुत थक गई हूं। सीमन कहने लगा, हम भी तंग आ गये हैं, हम सोच रहे हैं कि उसे सोने की दवाई पिला दें। वह पी कर यह सो जायेगा, और फिर तुम चली जाना। मैंने कहा, अच्छा। मैंने समझा इसे देने में कोई डर नहीं। सीमन ने मुझे एक पुड़िया दी और मैं उसे ले कर अन्दर चली गई। वह पार्टीशन के पीछे लेटा हुआ था। मेरे अन्दर पहुंचते ही उसने ब्रांडी मांगी। मैंने ब्रांडी की बोतल मेज पर से उठायी, दो गिलास भरे, एक उसके लिए, एक अपने लिए, फिर उसके गिलास में पाउडर डाला और गिलास उसके हाथ में दे दिया। मुझे मालूम होता कि यह क्या चीज़ है तो मैं देती ही क्या?"

"अच्छा यह बताओ, यह अंगूठी तुम्हारे हाथ कैसे लगी?" प्रधान जज ने पूछा।

"यह उसने खुद मुझे दी थी।"

"कब?"

"जब मैं होटल में लौट कर उसके साथ आयी। मैं घर जाना चाहती थी, पर उसने मुझे सिर पर घूंसा मारा जिससे मेरी कंघी टूट गई। मुझे गुस्सा आ गया और मैंने कहा कि मैं यहां नहीं ठहरूंगी, यहां से जरूर

चली जाऊगी। तब उसने अपनी उगली मे से अगूठी निकाल कर मुझे दे दी ताकि मैं नही जाऊ," मास्लोवा ने कहा।

सरकारी वकील फिर तनिक सा उठा, और बडा मासूम दिखने की काशिश करते हुए कुछ सवाल और पूछने की इजाजत मागी। प्रधान जज ने इजाजत दे दी। इस पर अपना सिर आगे को झुकाते हुए, जिससे उसका कसीदा किया हुआ कॉलर कुछ कुछ ढक गया, वह बोलने लगा—

"मैं जानना चाहता हू कि मुजरिम कितनी देर तक व्यापारी स्मेल्कोव के कमरे मे रही।"

मास्लोवा जैसे फिर डर गई। घबराई हुई आखो से पहले सरकारी वकील की ओर और फिर प्रधान जज की ओर देखते हुए तेज तेज बोलते हुए कहने लगी—

"मुझे याद नही कितनी देर।"

"ठीक है। पर क्या मुजरिम को इतना याद है कि स्मेल्कोव के कमरे मे से निकलने के बाद वह कही और गयी थी या नही?"

मास्लोवा क्षण भर सोचती रही।

"हा, उसके साथ वाले कमरे मे गई थी। वह खाली था।"

"तुम वहा क्यो गई?" सरकारी वकील कायदा भूल कर सीधा उससे पूछने लगा।

"मैं थोडी देर आराम करने के लिए वहा चली गई थी, साथ ही मुझे गाडी का भी इन्तजार करना था।"

"क्या मुजरिम के साथ कमरे मे कार्तीनकिन भी था या नही?"

"वह अन्दर आया था।"

"वह क्यो आया था?"

"व्यापारी की थोडी सी शराब बच रही थी। वह हमने मिल कर पी डाली।"

"ओह, मिल कर पी डाली। खूब! क्या उस वक्त सीमन के साथ कोई बातचीत हुई? यदि हुई तो किस बारे मे?"

मास्लोवा की भवे चढ गइ, शर्म से उसका चेहरा लाल हो गया, और जल्दी जल्दी बोलते हुए वह कहने लगी—

"किसके बारे मे? मैंने कोई बात नही की। बस, मुझे यही कुछ मालूम है। जो मन मे आये, करो। मैंने कोई जुर्म नही किया। बस, इससे ज्यादा मैं कुछ नही जानती।"

"मुझे और कुछ नहीं पूछना है," सरकारी वकील ने कहा, और बड़े अस्वाभाविक ढग से अपने कन्धे सीधे कर के अपने भाषण की टिप्पणियों में यह दर्ज कर लिया कि मुजरिम ने खुद तस्लीम किया है कि वह कार्तीनकिन के साथ खाली कमरे में गई थी।

अदालत में थोडी देर के लिए खामोशी छा गई।

"क्या तुम्हें कुछ और कहना है?"

"मैंने सब कुछ बता दिया है," मास्लोवा ने ठण्डी सांस भरते हुए कहा और बैठ गई।

इसके बाद प्रधान जज ने कुछ नोट किया। उसके बायें हाथ बैठे हुए जज ने प्रधान जज को कुछ फुसफुसा कर कहा, जिस पर प्रधान जज ने १० मिनट के लिए अदालत स्थगित कर दी, और झट से उठ कर कमरे में से निकल गया। जिस जज की बात सुन कर प्रधान जज ने अदालत स्थगित की थी, वह वही ऊंचा लम्बा दाढ़ी वाला जज था जिसकी आंखों से दयालुता टपकती थी। जज के पेट में कुछ गडबड हो गई थी, और उसे ठीक करने के लिए वह पेट की थोडी मालिश करना चाहता था और कुछ बूंदें दवाई की पीना चाहता था।

जजों के उठने पर वकील, जूरी के सदस्य और गवाह भी उठ खडे हुए। उस समय वे सब यह सोच कर खुश और सतुष्ट थे कि एक महत्वपूर्ण काम का कम से कम कुछ हिस्सा तो उन्होंने खत्म कर लिया है। और यह सोचते हुए वे अलग अलग दिशा में जाने लगे।

नेख्लूदोव जूरी के कमरे में चला गया और खिडकी के पास जा कर बैठ गया।

१२

हां, यह कात्यूशा ही है!

नेख्लूदोव और कात्यूशा के आपसी सम्बन्धों की कहानी इस प्रकार है।

पहली बार वे तब मिले जब नेख्लूदोव विश्वविद्यालय के तीसरे वर्ष में था। गर्मी की छुट्टियां थी और वह अपनी फूफियों के पास रहने के लिए गया था। इन्हीं छुट्टियों में वह भूमि-स्वामित्व के सवाल पर एक निबंध लिखने की तैयारी कर रहा था। इससे पहले वह गर्मी का मौसम

हमेशा अपनी मा और बहिन के साथ मास्को के नजदीक गुजारा करता था जहा उसकी मा की बहुत बडी जमीदारी थी। पर इस साल उसकी बहिन की शादी हो गयी थी, और मा विदेश चली गई थी जहा वह गर्मी का मौसम किसी स्वास्थ्यप्रद स्थान म खनिज जल के भरना के पास व्यतीत करना चाहती थी। चूकि नख्लूदोव को अपना निबध लिखना था, इसलिए उसने ये दिन अपनी फूफियो के घर बिताने का निश्चय किया। यहा वातावरण मे शान्ति थी, क्योकि जमीदारी अलग-थलग जगह पर थी और कोई ऐसी चीज भी न थी जो उसका ध्यान दूसरी तरफ खीच सके। दोनो फूफिया उसे बेहद प्यार करती थी। नेख्लूदोव उनका भतीजा ही न था, उनकी जमीन-जायदाद का वारिस भी था। नेख्लूदोव को भी अपनी फूफिया बडी अच्छी लगती थी। उसे उनका सीधा-सादा, पुराने ढग का जीवन बडा पसन्द था।

उन गर्मी के दिनो मे इस जागीर पर रहते हुए नेख्लूदोव को जीवन मे पहली बार उस अपूर्व आनन्द का अनुभव हुआ जो एक युवक को उस समय होता है जब वह अपने आप, बिना किसी दूसरे की मदद के जीवन के अदभुत सौन्दर्य और महत्व को देखने लगता है। जब उसे नजर आने लगता है कि जीवन म उस काम का अपार महत्व है जो मनुष्य को करने के लिए सौंपा गया है। उसे इस काम द्वारा पूर्णता तक पहुचने के लिए प्रगति की असीम सभावनाए नजर आने लगती है—न केवल अपने लिए बल्कि सकल मानव जाति के लिए—और वह अपने काम मे जुट जाता है। उसके हृदय मे न केवल आशा की तरगें उठती हैं, बल्कि यह दृढ विश्वास भी होता है कि वह अवश्य उस पूर्णता को प्राप्त करेगा जिसके वह स्वप्न देखता है। उसी साल नेख्लूदोव ने यूनीवर्सिटी म स्पेंसर की पुस्तक "सोशल स्टेटिक्स" पढी थी। उसे पढ कर वह स्पेंसर के विचारो से बेहद प्रभावित हुआ था, विशेषकर उन विचारो से जिनका सम्बन्ध भूमि-स्वामित्व से था। विशेषकर इसलिए कि वह खुद एक बडी जमीदारनी का बेटा था। नेख्लूदोव के पिता अमीर नही थे, लेकिन उसकी मा को दहेज मे पचीस हजार एकड जमीन मिली थी। उस समय उसने पहली बार यह समझ लिया था कि भूमि के निजी स्वामित्व की प्रथा कितनी क्रूर और अन्यायपूर्ण है। कुछ लोगो को अपने अन्त करण की खातिर कुर्बानी देते हुए आध्यात्मिक आनन्द का अनुभव होता है। नख्लूदोव भी इन्ही मे से था। उसने निश्चय

पवित्र वहस्पतिवार अर्थात ईसा के ऊर्ध्वगमन दिवस के पर्व पर फूफियो की एक पडोसिन महिला अपनी दो बेटिया और एक स्कूल जाते वालक को साथ लेकर उनके घर आयी। उनके साथ उनका मेहमान—एक युवा कलाकार भी था। इस कलाकार का जन्म एक मामूली किसान के घर मे हुआ था।

घर के सामने एक खुला मैदान था जिसमे पहले से घास काट दी गई थी। चाय के बाद सभी लोग वहा खेलने के लिए गये। "गोरेल्की" नाम का खेल शुरू हुआ। कात्यूशा को भी खेलने के लिए बुलाया गया। इस खेल मे बार बार भागना और अपना साथी बदलना पडता था। एक बार नेख्लूदोव ने कात्यूशा को छू लिया जिससे वह उसकी साथिन बन गई। अब तक नेख्लूदोव को यह लडकी यो तो बहुत भली लगती थी लेकिन उसके मन मे यह विचार कभी नही आया था कि उन दोनो के बीच किन्ही सम्बधो की भी सभावना हो सकती है।

"लो, अब इन दोनो को पकडना आसान नही। अगर ख ुद गिर पडे तभी पकडाई देंगे," युवा कलाकार ने कहा जो तबीयत का बडा हसोड था। अब पकडने की उसी की बारी थी। उसकी टागें छोटी छोटी और टेढी थी, लेकिन आखिर वह किसान था, उसकी टागें तो मजबूत होनी ही थी। भागता भी वह ख ूब तेज था।

"वाह! क्या तुम भी हमे नही पकड सकते?" कात्यूशा बोली।

"एक, दो, तीन," और कलाकार ने ताली बजायी।

कात्यूशा खिलखिला कर हस पडी, उसने नेख्लूदोव के साथ अपनी जगह बदली और उसके चौडे हाथ का अपने छोटे से खुरदरे हाथ से दबा कर बायी ओर को भाग गयी। माडी लगे उसके घाघरे से सरसर की आवाज आ रही थी।

नेख्लूदोव दायी ओर को तेज तेज भागने लगा। वह नही चाहता था कि कलाकार उसे पकड पाये। लेकिन जब उसने सिर घुमा कर देखा तो पाया कि कलाकार कात्यूशा के पीछे भागा जा रहा है। कात्यूशा काफी आगे थी और उसकी मजबूत छोटी छोटी टागें ख ूब तेज भागे जा रही थी। उनके सामने लिलक की एक झाडी थी। कात्यूशा ने अपना सिर झटक कर नख्लूदोव को इशारा किया कि उसके पीछे चलो। खेल के मुताबिक अगर वे दोनो फिर एक दूसरे का हाथ पकड ले तो उन्ह अा कर कोई नही पकड सकता। नेख्लूदोव इशारा समझ गया और झाडी के

पीछे की ओर भागा। उसे मालूम नहीं था कि आगे एक छोटा सा गड्ढा है जिसमें कटीली झाड़ियाँ उग रही हैं। ठोकर खा कर वह उसमें जा गिरा और उसके हाथ छिल गये। झाड़ियाँ ओस से बिल्कुल भीगी थीं। पर वह फौरन ही उठ खड़ा हुआ, और हँसता हुआ खुली जगह पर निकल आया।

कात्यूशा मानो उड़ी चली आ रही थी, काली काली जामुन जैसी आँखें और खुशी से चमकता चेहरा। उन्होंने एक दूसरे का हाथ पकड़ लिया।

"अरे, तुम्हारा तो हाथ छिल गया है।" उसने हाँफते हुए कहा, और दूसरे हाथ से अपने बाल ठीक करते हुए, मुँह उठा कर नेख्लूदोव की ओर देखा। उसके होंठों पर एक मीठी सी मुस्कान खेल रही थी।

"मुझे क्या मालूम कि वहाँ पर गढ़ा है," उसने भी मुस्कराते हुए कहा और कात्यूशा का हाथ पकड़े रहा।

वह उसके ज्यादा नजदीक आ गई। फिर किसी अज्ञात प्रेरणावश, नेख्लूदोव का मुँह कात्यूशा के मुँह की ओर झुक गया। कात्यूशा पीछे नहीं हटी। नेख्लूदोव ने उसका हाथ जोर से दबाया और उसके होंठ चूम लिये। नेख्लूदोव को खुद भी मालूम नहीं था कि उसने ऐसा क्यों किया।

"अरे, यह क्या!" उसने कहा और जल्दी से हाथ छुड़ा कर वहाँ से भाग गई।

लिलक की झाड़ियों के पास पहुँच कर, जिनके फूल कुछ कुछ मुरझा चुके थे, उसने सफेद लिलक की दो टहनियाँ तोड़ीं और उनसे अपने तमतमाते चेहरे पर थपकी देते हुए गरदन घुमा कर नेख्लूदोव की ओर देखा और फिर अपनी बाहों को आगे की ओर जोर जोर से झुलाते हुए वह बाकी खिलाड़ियों की ओर भाग गयी।

इसके बाद इन दोनों के बीच एक अजीब सा रिश्ता पनपने लगा, एक ऐसा रिश्ता जो अक्सर शुद्ध चाल चलन के लड़के और लड़कियों के बीच पैदा हो जाता है जो एक दूसरे को चाहने लगते हैं।

जब कात्यूशा कमरे में आती, या नेख्लूदोव को दूर से ही उसके सफेद एप्रन की झलक मिलती तो उसकी आँखों में हर चीज रोशन हो उठती, उसी तरह जैसे सूरज के निकलने पर प्रत्येक वस्तु अधिक रोचक, उल्लासित और महत्वपूर्ण हो उठती है। जीवन अधिक आनन्दपूर्ण बन

जाता। कात्यूशा की भी यही मन स्थिति थी। और ऐसा केवल कात्यूशा की मौजूदगी मे ही नही होता था। नेख्लूदोव के लिए इतना सोच भर लेना ही काफी था कि कात्यूशा जीती है (और कात्यूशा के लिए कि नेख्लूदोव जीता है) वही असर होता। यदि कभी घर से कोई बुरा खत आ जाता, या निबन्ध लिखने मे कोई मुश्किल दरपेश होती, या अकारण ही कभी उदास हो उठता, जैसा कि जवानी मे अक्सर होता है, तो कात्यूशा का नाम लेते ही, और इस विचार से ही कि वह उससे मिलेगा, उसकी सारी उदासी फौरन दूर हो जाती।

कात्यूशा को घर मे बहुत काम रहता लेकिन किसी न किसी तरह वह पढने के लिए थोडा वक्त निकाल लेती थी। नेख्लूदोव ने उसे दोस्तोयेव्स्की और तुर्गेनेव की किताबें पढने को दी, जिन्हे उसने खुद हाल ही मे पढा था। तुर्गेनेव की रचना "शान्त नीड" उसे सबसे अधिक पसन्द आयी। जब कभी दोनो एक दूसरे को अचानक कही मिल जाते—गलियारे मे या बरामदे मे या बाहर अहाते मे—तो डरते, झिझकते एक दो बात कर लेते। उसी घर मे फूफियो की एक बूढी दासी मत्र्योना पाव्लोव्ना रहती थी। कात्यूशा उसी के कमरे मे सोती थी, और नेख्लूदोव उनके साथ बैठ कर कभी कभी चाय पिया करता था। यहा पर बितायी घडिया सबसे ज्यादा खुशगवार होती। जब अकेले मिलते तो उन्हे बडी झिझक होती। तब आखें कुछ कहती और मुह मे से कुछ निकलता। आखो का भाव बेहद महत्वपूर्ण होता और बाते मामूली होती। उनके होंठ फडफडाते, मन मे एक तरह का भय छा जाता और वे फौरन एक दूसरे से अलग हो जाते।

जितनी देर नेख्लूदोव वहा पर रहा, दोनो के बीच इस तरह के सम्बन्ध बने रहे। फूफियो ने भी देखा और उनका माथा ठनका, और उन्होंने नेख्लूदोव की मा, प्रिंसेस येलेना इवानोव्ना को विदेश मे एक खत लिख दिया। बडी फूफी को डर था कि इन दोनो के बीच अवैध सम्बन्ध पैदा हो जायगा। लेकिन यह डर निराधार था। नेख्लूदोव को कात्यूशा से प्रेम था, हालाकि उसे खुद भी इस की खबर न थी। पर उसका प्रेम वैसा ही था जैसा कि एक निश्छल युवक का हो सकता है। इस कारण उनके कुमार्ग पर पड जाने की कोई आशका नही हो सकती थी। शारीरिक भोग की इच्छा तो दूर, उसका ख्याल तक आते ही उसका मन घृणा

से काप उठता। छोटी फूफी के स्वभाव में कवित्व अधिक था। उसकी आशकाए इतनी निर्मूल भी न थी। वह जानती थी कि द्मीत्री दृढस्वभाव युवक है, जो बात मन मे ठान ले उसे पूरी कर के छोडता है। इसलिए उसे डर था कि यदि वह कात्यूशा से प्रेम करने लगा तो ऐन मुमकिन है उससे शादी करने का फैसला कर ले। उस वक्त वह यह नही सोचेगा कि लडकी का खानदान कैसा है और उसकी स्थिति क्या है।

यदि उस समय नेख्लूदोव को मालूम होता कि उसे कात्यूशा से प्रेम है, और विशेषकर यदि उसे कहा जाता कि लडकी छोटी जात की है, उसके साथ तुम्ह किसी हालत मे भी शादी नही करनी चाहिए, तो वह जरूर उससे शादी करने का निश्चय कर लेता। उस निश्छल युवक की दृष्टि मे शादी की यथेष्टता प्रेम से थी, प्रेम के अतिरिक्त सब विचार असगत थे। पर उसकी फूफियो ने अपने डर उस पर ज़ाहिर नही होने दिये। और जब वह वहा से चला गया तब भी उसे मालूम न था कि वह कात्यूशा से प्रेम करता है।

उन दिना उसका रोम रोम जीवन के असीम आनद का अनुभव कर रहा था। उसे विश्वास था कि कात्यूशा के प्रति जो भावनाए उसके मन मे उठती हैं, वे इसी आनन्द का एक रूप हैं, और यह प्यारी, हसमुख बालिका भी उसके साथ इस आनन्द का उपभोग कर रही है। पर जब वह जाने लगा और कात्यूशा उसकी फूफियो के साथ सायबान के नीचे खडी, अपने काले काले, आसू भरे नेत्रो से उसे देखे जा रही थी, तो उसे ऐसा जान पडा जैसे उसके जीवन मे से कोई सुन्दर, अमूल्य चीज निकली जा रही है जो फिर उसे कभी प्राप्त नही होगी। और इससे उसका मन उदास हो उठा।

"अलविदा कात्यूशा," बग्घी मे बैठते हुए उसने कात्यूशा की ओर देख कर कहा जिसका चेहरा छोटी फूफी की टोपी के पीछे से नजर आ रहा था, "तुम्हारा बहुत बहुत शुक्रिया, हर बात के लिए।"

"अलविदा, दमीत्री इवानोविच," कात्यूशा ने कोमल, मधुर आवाज मे जवाब दिया। उसकी आखें आसुओ से भर आयी थी और वह उन्हें रोकने की भरसक कोशिश कर रही थी। फिर वह ड्योढी के अन्दर भाग गई ताकि वहा खुल कर रो सके।

१३

इसके बाद तीन साल तक नेख्लूदोव कात्यशा से नही मिला। जब वह दोबारा उसे मिला तब वह फौज का अफसर बन चुका था और अपनी रेजिमेंट मे भरती होने जा रहा था। रास्ते मे वह कुछ दिन के लिए अपनी फूफियो के पास ठहर गया। पर अब नेख्लूदोव तीन साल पहले वाला नेख्लूदोव नही रहा था, जो यहा गर्मी की छुट्टिया बिताने आया था। अब वह बहुत कुछ बदल गया था।

तब वह एक सच्चा, निस्स्वार्थ युवक था जो किसी भी अच्छे काम के लिए अपनी जान तक कुर्बान करने के लिए तत्पर रहता। परन्तु अब वह एक भ्रष्टाचारी युवक था, बाहर से शिष्ट किन्तु अदर से घोर अहवादी, जिसकी एकमात्र रुचि विलासिता म थी। पहले उसे यह ससार एक पहेली नज़र आता था जिसे वह अपने हृदय के समूचे उत्साह और उमग के साथ सुलझाने की चेष्टा करता था। किन्तु अब हर बात स्पष्ट और सरल नज़र आती थी, जिस प्रकार का उसका जीवन था उसके अनुसार वह हर चीज़ की व्याख्या कर लेता था। पहले उसे प्रकृति के ससग मे रहना आवश्यक और महत्वपूण जान पडता था। न केवल प्रकृति के ही, बल्कि उन दार्शनिको और कवियो के भी ससग मे रहना, जो उससे पहले अपना जीवन व्यतीत कर गये थ और अपनी भावनाए और विचार मानवजाति को सौंप गये थे। अब उसे केवल क्लब, नाचघर और साथियो से मेल मिलाप ही आवश्यक और महत्वपूण लगता था। तब स्त्रिया बडी रहस्यपूण और सुदर नज़र आती थी—उनकी रहस्यमयता ही उन्ह सौंदय प्रदान करती थी। अब सभी स्त्रियो का एक ही मतलब था, सिवाय अपने परिवार की स्त्रियो के या उन स्त्रियो के जो उसके मित्रो की पत्निया थी। स्त्रिया सभोग की वस्तु थी, और इस सभोग का रस वह कई बार ले चुका था। पहले उसे धन की कोई ज़रूरत नही थी। जेब-खच के लिए जितने पैसे उसे मा से मिलते थ, उसके एक तिहाई से भी उसका काम चल जाता था। और जो जमीन-जायदाद उसे पिता की ओर से विरासत मे मिली थी, उसे वह लेने से इन्कार कर सकता था और किसानो म बाट सकता था। अब मा से हर महीने मिलने वाले पद्रह सौ रूबलो से भी पूरी न पडती थी। और इस पर वह अपनी मा से झगडा भी कर चुका

था। तब उसकी दृष्टि म "ग्रह" का ग्रर्थ था ग्रात्मा, ग्रब उसकी दृष्टि म "ग्रह" का ग्रय था एक स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट शरीर।

इस घोर परिवतन का एक मात्र कारण यह था कि उसने ग्रपने ग्राप पर विश्वास करना छोड दिया था ग्रौर ग्रौरो पर विश्वास करने लगा था। यदि ग्रपने ग्राप पर विश्वास रखो तो जीना दूभर हो जाता है। तब हर प्रश्न का उत्तर स्वय ढूढना पडता है, ग्रौर यह उत्तर लगभग सदा ही शारीरिक "ग्रह" के विरुद्ध ग्रौर ग्रात्मिक "ग्रह" के हक म होता है। शारीरिक "ग्रह" म तो केवल भोग की लालसा रहती है। परन्तु यदि ग्रौरो पर विश्वास करो तो किसी भी सवाल का जवाब स्वय ढूढने की जरूरत नही रहती। सभी निश्चय गढे गढाये मिल जाते हैं, ग्रौर वे निश्चय सदैव शारीरिक "ग्रह" के हक में ग्रौर ग्रात्मिक "ग्रह" के विरुद्ध होते है। इतना ही नही। यदि मनुष्य को ग्रपने ग्राप में विश्वास हो तो लोग उसकी खिल्ली उडाते हैं, ग्रौर यदि ग्रौरो पर विश्वास हो तो लोग शाबाश कहते है।

जब नेख्लूदोव जीवन के गभीर विषयो पर विचार करता या उनकी चर्चा करता–जैसे भगवान्, सत्य, धन-दौलत, दारिद्रय इत्यादि–तो उसके मित्र-सम्बधी इस चर्चा को ग्रसगत समझते, बल्कि किसी हद तक हास्यास्पद भी। उसकी मा ग्रौर फूफिया बडे प्यार से उस पर व्यग करती ग्रौर उसे notre cher philosophe* कहती। परन्तु जब वह नावल पढता, ग्रश्लील कहानिया कहता, मजाकिया फ्रासीसी नाटक देखने जाता ग्रौर उनके चुटकुले हस हस कर सुनाता तो सभी उसकी सराहना करते ग्रौर उसका साहस बढाते। जब वह ग्रपनी जरूरतो को कम करना चाहता ग्रौर सादा जीवन बिताना चाहता–जैसे पुराना ही ग्रोवरकोट लटकाये रहता, या शराब नही पीता–तो सब हैरान होते ग्रौर समझते कि वह दिखावा कर रहा है। लेकिन जब वह शिकार पर पैसे लुटाता या ग्रपने पढने वाले कमरे की सजावट पर पैसे बरबाद करता तो लोग उसकी पसन्द की वाह वाह करते ग्रौर उसके शौक को प्रोत्साहित करने के लिए उसे बढिया, कीमती उपहार देते। जब वह ब्रह्मचय व्रत का पालन करता ग्रौर कहता कि विवाह के समय तक वह ग्रपने शरीर को पवित्र रखेगा, तो

---

*हमारा प्यारा दार्शनिक। (फ्रेंच)

रिश्तेदारो को उसके स्वास्थ्य की चिन्ता होने लगती। यहा तक कि जब उसकी मा का पता चला कि उसके बेटे ने अपना "पुरुषत्व" प्रमाणित कर दिया है, और एक फ्रासीसी लडकी को, जो उसी के एक मित्र की प्रेयसी थी, अपने वश मे कर लिया है, तो दु खी होने के बजाय वह ख ुश हुई। लेकिन कात्यूशा वाली बात याद कर के और यह कि उसका बेटा उस लडकी से शादी करने की सोच सकता था, प्रिंसेस मा का तो दिल ही बैठ जाता था।

इसी तरह जब नेख्ल्यूदोव बालिग हुआ और उसने विरसे म मिली पिता की छोटी सी जमीन किसानो को दे डाली—क्योकि वह भूमि की निजी मिल्कियत को अन्यायपूर्ण समझता था—तो उसकी मा और सभी घर वालो को बडी निराशा हुई। रिश्तेदारो को तो मजाक करने का बहाना मिल गया। लोग कहते कि इस तरह किसान अमीर थोडे ही हो गये हैं, उल्टे और भी गरीब हुए हैं, क्योकि एक तो उन्होने तीन शराबखाने खोल लिये हैं, दूसरे ख ुद काम करना छोड दिया है। पर जब नेख्ल्यूदोव गार्ड्स सेना मे भरती हुआ और अपने अमीर साथियो के साथ जुए और ऐशोइशरत मे रुपया लुटाने लगा, यहा तक कि मा को अपनी पूजी म से रुपया निकलवाने की नौबत आ गई तो भी मा को कोई दु ख नही हुआ। इसे वह स्वाभाविक ही समझती थी, बल्कि किसी हद तक अच्छा भी, कि आदमी को जो गुल खिलाने हो छोटी उम्र मे ही खिला ले और अच्छे खानदानी लोगो की सोहबत मे।

शुरू शुरू मे तो नेख्ल्यूदोव के मन मे सघर्ष उठा। उसने देखा कि अपने आप पर विश्वास रखते हुए जो कोई बात उसे अच्छी लगती थी, वही उसके सगी-साथियो को बुरी लगती, और जिसे वह बुरा समझता उसे वे लोग अच्छा समझते थे। किंतु यह सघर्ष नेख्ल्यूदोव के लिए बहुत कठिन था और अत यही हुआ कि उसने हार मान ली, अर्थात् अपने आप पर विश्वास करना छोड दिया और दूसरो पर विश्वास करने लगा। पहले तो उसे इस तरह आत्मविश्वास को देना खला, पर यह स्थिति ज्यादा देर तक नही रही। उसी समय उसने सिगरेट और शराब पीने की आदत डाल ली, इस तरह शीघ्र ही यह अप्रिय भावना बिल्कुल ही दब गई, और यहा तक कि उसे लगा मानो उस पर से कोई बोझ हट गया है।

नेख्ल्यूदोव धुन का पक्का युवक था। नये ढग का जीवन अपनाने को

देर थी कि बेलगाम हो कर उसमे कूद पडा। अब जो कुछ भी वह करता उसमे उसे मित्रा-सम्बन्धियो की अनुमति प्राप्त थी। हा, अन्तरात्मा की आवाज़ कुछ और ही कहती थी, पर उसका उसने गला घोट दिया था। इस स्थिति का आरंभ उस समय हुआ जब वह पीटसबर्ग मे जा कर रहने लगा, परन्तु पराकाष्ठा तो वह उस समय पहुची जब वह फौज म भरती हुआ।

सामान्यतया फौज मे जा कर लोगो का नैतिक पतन होने लगता है। वहा का जीवन ऐसा है कि उन्हे कोई काम नहीं करना पडता, कम से कम कोई ऐसा काम नहीं जिसे सूझ-बूझ वाला और उपयोगी कहा जा सके। साधारण मानवीय कर्तव्यो तक से उन्हे छुट्टी मिल जाती है, और उनके स्थान पर उन्हे केवल औपचारिक कर्तव्य निभाने पडते हैं, जैसे अपनी रेजिमेंट, और वर्दी और झण्डे का गौरव बनाये रखना। एक तरफ अपने से छोटे अफसरो पर उन्हे निरकुश अधिकार प्राप्त होता है, दूसरी तरफ अपने से बडे अफसरो का उन्हे दासो की तरह हुक्म मानना पडता है।

सेना की नौकरी मे जहा बडी वर्दी और झण्डे के गौरव का ढोल पीटा जाता है और हिंसा और हत्या को वैध माना जाता है, वहां पर एक तो मनुष्य का यो ही पतन होने लगता है। पर इसके साथ साथ एक दूसरी तरह का भी पतन होने लगता है जिसका स्रोत पैसा और ज़ार-परिवार के निकट का सपर्क है। गार्डस के लिए केवल अमीर और कुलीन घराना से ही अफसर चुने जाते है। जब इस तरह दोनो तरफ से पतन होने लगता तो मनुष्य को घोर स्वार्थ के अलावा कुछ नज़र नही आता। और नेख्लूदोव उसी वक्त से स्वार्थान्धता के कीच म फस गया जब वह फौज मे दाखिल हुआ और अपने साथियो का सा जीवन व्यतीत करने लगा।

उसका कोई और काम नही था, सिवाय इसके कि बढिया वर्दी कसता, जिसका बनाने वाला कोई और होता और ब्रुश से साफ करने वाला कोई दूसरा। फिर हथियारो से लैस हो जाता। ये हथियार भी दूसरा के हाथ के बने होते, और दूसरे ही इन्हे साफ कर के नेख्लूदोव को पकडाते। परेड या कवायद पर जाने के लिए वह बढिया घोडे पर सवार होता, और इस घोडे का पाल कर बडा करने वाले, सवारी के लिए तैयार करने वाले, और अब उसकी देख रेख करने वाले भी और लोग थे। वह बडे ठाठ से तलवार घुमाता, और तोप चलाता जिस तरह उसके अन्य साथी करते,

ौर अन्य लोगो को इसकी शिक्षा देता। इसके अलावा उसका कोई और
ाम नही था। और इस काम के लिए बडे बडे अफसर, बूढे और जवान,
वय जार और उसके निकट के लोग न केवल अपनी अनुमति देते बल्कि
उसकी सराहना करते और इसका धन्यवाद करते। इसके अतिरिक्त वहा
कस चीज को अच्छा और महत्वपूण समझा जाता था? खाने-पीने को,
वशेष कर पीने को, अफसरो के क्लबो और बढिया होटलो मे पैसे लुटाने
ो, जो पैसे किसी अदृश्य स्रोत से चले आते थे। फिर नाटक, नाच,
स्त्रिया। इसके उपरान्त फिर घुड-सवारी, तलवार घुमाना और घुड-
ौडें। जब यह समाप्त होता तो पैसे लुटाने का दौर शुरू हो जाता—शराब,
जुआ, औरतें।

जो आदमी सेना मे नही है, यदि वह इस प्रकार का जीवन व्यतीत
करे तो उसे अन्दर ही अन्दर शम महसूस होने लगेगी। परन्तु इसके विपरीत
फौजी को इस प्रकार के जीवन पर दम्भ होता है, विशेषकर जब जग
का जमाना हो, और नेख्लदोव ने तो फौज मे उस समय प्रवेश किया था
जब अभी अभी तुर्की के खिलाफ जग का ऐलान हुआ था। "लडाई म हम
अपनी जान कुरबान करने के लिए तैयार रहते हैं। इसलिए हमारे लिए
हसी-खेल और ऐश न केवल क्षम्य हैं बल्कि आवश्यक भी। और इसी
लिए हम ऐसा जीवन व्यतीत करते हैं।"

इस तरह के अस्पष्ट विचार उन दिनो नेख्लूदोव के मन मे घूमते थे।
वह मन ही मन खुश था कि उस नैतिक नियन्त्रण से छुटकारा मिला
जो उसने अपने ऊपर लाद रखा था। और उसके जीवन की स्थिति बिल्कुल
ऐसे आदमी की थी जिसे स्वाथ ने अधा कर रखा हो।

और इसी स्थिति मे वह, तीन साल के बाद, अपनी फूफियो से मिलने
के लिए आया था।

१४

जिस रास्ते नेख्लूदोव अपनी रेजिमेंट मे शामिल होने के लिए जा
रहा था, उसी के नजदीक ही उसकी फफियो की जमीदारी पडती थी।
एक तो इस कारण वह उनसे मिलने के लिए चला गया। दूसरे इसलिए
कि उन्होंने बडे प्यार से उसे आने को कहा था। पर वहा जाने का सबसे

बडा कारण यह था कि वह कात्यूशा को देखना चाहता था। शायद
से ही उसके अन्तमन मे कात्यूशा के खिलाफ नीच इरादे बन चुके
जिनकी प्रेरणा अब उसे अपनी असयत पाशविक वृत्तियो से मिल
पर इसकी उसके चेतन मन को खबर न थी। वह दोबारा वहा
इसलिए जाना चाहता था कि उसने पहले वहा बडे अच्छे दिन
थे, और अपनी बूढी फूफियो से मिलना चाहता था, जो था तो
सी जीव पर दिल की बडी अच्छी थी, और प्यार से भरी। उसे पता
न चलता था कैसे, लेकिन वे सदा उसके इद गिर्द प्रेम और
का वातावरण बना देती थी। वह कात्यूशा से भी मिलना चाहता था
जिसकी बडी मधुर स्मृति वह मन मे सजोये हुए था।

वह वहा माच महीने के अन्त मे, ईस्टर शुक्रवार के दिन
बफ पिघलनी शुरू हो गई थी। उस रोज मूसलाधार बारिश हो रही थी
और वह बुरी तरह से भीग गया था, और ठिठुर रहा था, लेकिन
भी खूब चुस्त और खुश था जैसा कि उन दिनो वह हर वक्त
करता था। "क्या कात्यूशा अब भी उनके साथ रहती होगी?" वह
ही मन सोच रहा था, जब वह बग्घी मे बैठा, जाने पहचाने, पुराने
के सहन मे दाखिल हुआ। सहन के चारो तरफ ईंटो की दीवार थी और
उसमे छतो पर से गिर गिर कर बफ इकट्ठी हो रही थी।

उसका ख्याल था कि बग्घी की घटियो की आवाज सुनते ही वह
भाग कर बाहर आ जायगी। परन्तु वह नही आयी। दो स्त्रिया, नग पाव
घाघरे ऊपर कर के बाधे हुए, और हाथो मे बाल्टिया उठाये,
दरवाजे मे से बाहर निकली। जाहिर था कि फश साफ कर रही थीं।
कात्यूशा सामने के दरवाजे पर भी नही मिली। केवल नौकर तीखोन
बाहर निकल कर सायबान मे आया। उसने एप्रन पहन रखा था, और
जाहिर था कि वह भी सफाई मे लगा हुआ है। छोटी बैठक मे उसे केवल
उसकी छोटी फूफी सोफिया इवानोव्ना मिली। उसने रेशमी पोशाक पहन
रखी थी, और सिर पर टोपी पहन रखी थी।

"कितना अच्छा किया तुमने जो तुम आ गये।" अपने भतीजे को
चूमते हुए सोफिया इवानोव्ना ने कहा। 'मारीया की तबीयत ठीक नहीं
कुछ थक गई है। हम कम्यूनियन मे गई थी।'

"ईस्टर की मुबारक हो फूफी,' सोफिया इवानोव्ना का हाथ चूमते

नेख्लूदोव ने कहा। "उह! मैंने तो आपके कपडे गीले कर दिये!
्ष कीजिये।"

"तुम चलो अपने कमरे मे—अरे तुम तो सिर से पाव तक भीग रहे
। और तुम्हारी तो अब मूछें भी आ गई हैं! कात्यूशा! कात्यूशा!
ई गरम गरम कॉफी पिलाओ, जल्दी करो।"

"अभी लाती हू," एक मधुर सुपरिचित आवाज़ ने गलियारे मे से
ाब दिया।

नेख्लूदोव का दिल बल्लियो उछलने लगा, "यही पर है!" उसे
ं जान पडा जैसे सूरज बादलो के पीछे से निकल आया हो। नेख्लदोव
ुश खुश अपने पहले कमरे की ओर बढ गया ताकि कपडे बदल डाले।
के पीछे पीछे तीखोन हो लिया।

नेख्लूदोव का मन चाहता था कि तीखोन से कात्यूशा के बारे मे पूछे,
का क्या हाल है, क्या करती है, शादी करेगी या नही। पर तीखोन
भाव-भगिमा म इतना आदर-भाव और साथ ही इतनी दढता थी—
ा तक कि हाथ धुलाने का भी तीखोन हठ करने लगा कि वही हाथो
ं पानी डालेगा—कि नेख्लूदोव फैसला ही नही कर पाया कि पूछू या
पूछू। केवल तीखोन के ही नाती-पोतो के बारे मे पूछता रहा, और
ाई के बूढे घोडे के बारे मे और पोलकान कुत्ते के बारे मे। पोल्कान को
ाड कर सभी जीते-जागते थे। पोल्कान पिछली गरमियो मे बावला हो
या था।

नेख्लूदोव ने गीले कपडे उतारे और दूसरे कपडे पहन ही रहा था
ि तेज़ तेज़ कदमो की आवाज़ आई और किसी ने दरवाज़ा खटखटाया।
ख्लूदोव इन कदमो को पहचानता था और इस विशेष खटखटाहट को
ी। केवल वही इस तरह चलती और दरवाज़ा खटखटाती थी।

नेख्लूदोव ने अपना गीला बरान कोट कधो पर डाल लिया और
रवाज़ा खोला।

"आ जाओ।"

कात्यूशा ही थी। बिल्कुल पहले सी, केवल पहले से अधिक प्यारी।
हले की ही तरह उसने अपनी मुस्कराती, भोली, थोडी ऐंची काली
आखें ऊपर उठा कर उसे देखा। अब भी उसने सफेद एप्रन पहन रखा
था। उसने हाथो म खुशबूदार साबुन की नयी टिकिया, जिस पर से

अभी अभी कागज़ उतारा गया था और दो तौलिये उठाये हुए थी। ये फूफियों ने भेजे थे। एक तौलिया मुंह-हाथ पोंछने के लिए था, दूसरा लम्बा रूसी तौलिया था, जिस पर कसीदाकारी की हुई थी। ताजा साबुन पर नाम का ठप्पा, तौलिये, हर चीज़, कात्यूशा समेत, स्वच्छ, ताज़ा, निष्कलंक और प्रिय थी। नेख्लूदोव को देख कर कात्यूशा बरबस बड़े प्यार से मुस्करा उठी, और उसके प्यारे प्यारे सुगठित होंठ उसी तरह सिकुड़ उठे जिस तरह पहले सिकुड़ा करते थे।

"तुम कैसे हो, दमीत्री इवानोविच," कात्यूशा बड़ी मुश्किल से कह पाई। उसका चेहरा लाल हो गया।

"कहो, अच्छी हो!" नेख्लूदोव ने कहा। वह भी शर्मा रहा था। "मजे मे हो?"

"भगवान की दया है। यह रहा गुलाबी साबुन जो तुम्हें इतना अच्छा लगता था, और यह रहे तौलिये। तुम्हारी फूफी ने भेजे हैं।" उसने वह और साबुन की टिकिया मेज़ पर रख दी और तौलिये एक कुर्सी के हत्थे पर लटका दिये।

"यहा पर सब कुछ मौजूद है," मेहमान की आत्मनिर्भरता का पक्ष लेते हुए तीखोन बोला, और नेख्लूदोव के सामान की ओर इशारा किया जहा साबुन-तेल रखने वाला बक्स खुला पड़ा था और उसमें तरह तरह की शृगार की चीजें, ब्रुश, इत्र तथा बहुत सी बोतलें रखी थी जिनके ढकने चादी के बने थे।

"मेरी ओर से फूफी को धन्यवाद कहना। यहा आ कर मुझे बड़ी ख़ुशी हुई है," नेख्लूदोव ने कहा। पहले की तरह अब भी उसका हृदय प्यार और मृदुता से भर उठा।

इन शब्दों को सुन कर कात्यूशा केवल मुस्करा दी और बाहर चली गई।

नेख्लूदोव से फूफियों को बेहद प्रेम था। अब की वे और भी प्यार से मिली। दमीत्री लड़ाई मे जा रहा था, क्या मालूम वहा वह ज़ख्मी हो जाय, या मारा जाय। यह सोच कर वृद्ध महिलाओं का हृदय द्रवित हो उठा था।

नेख्लूदोव आया तो इस इरादे से था कि वहा पर केवल एक दिन और एक रात रहेगा, लेकिन जब उसने कात्यूशा को देखा तो ईस्टर का पर्व वही मनाने के लिए राजी हो गया। उसने अपने दोस्त शोनबोक के

साथ यह फैसला कर रखा था कि उसे ओदेस्सा मे मिलेगा। अब उसे तार दे दिया कि सीधे यहीं आ जाओ।

कात्यूशा को देखते ही नेख्लूदोव के मन मे पहली भावनाए जाग उठी। अब भी उसके सफेद एप्रन की झलक पडते ही उसका दिल उद्वेलित हो उठता। उसकी आवाज़ सुन कर, उसके पावो की आहट पा कर, उसे हसते सुन कर, उसका दिल खिल उठता। जब कात्यूशा मुस्कराती और नेख्लूदोव उसकी काली काली, भीगे जगली बेरो की सी आखो की ओर देखता तो उसका दिल कोमलतम भावनाओ से भर उठता। उससे सामना होते ही कात्यूशा का चेहरा लाल पड जाता, और उसे लजाते देख नेख्लूदोव के दिल मे स्नेह उमड पडता था। नेख्लूदोव को महसूस होने लगा जैसे वह कात्यूशा को प्रेम करने लगा है। परन्तु यह प्रेम की भावना पहले की सी न थी। तब वह प्रेम एक पहेली सा था। तब वह स्वय भी स्वीकार न कर पाता कि उसे प्रेम है, तब उसे विश्वास था कि मनुष्य जीवन मे एक ही बार प्रेम कर सकता है। परन्तु अब वह जानता था कि उसे प्रेम है, वह खुश था, उसे धूमिल सा ज्ञान था कि यह प्रेम किस प्रकार का है और इसका क्या अन्त हो सकता है, हालाकि वह अपने आपसे भी उसे छिपाने की कोशिश कर रहा था।

सभी मनुष्यो की तरह नेख्लूदोव मे भी दो जीव बसते थे, एक आध्यात्मिक जीव, जो ऐसे सुख की कामना करता था जिसमे सभी का सुख हो, दूसरा कामुक जीव, जो केवल अपनी ही तृप्ति चाहता था और उसे प्राप्त करने के लिए बाकी सारी दुनिया का सुख होम करने के लिए तैयार था। जीवन के इस काल म नेख्लूदोव का अहकार पीटसबग मे और सेना म रहने के कारण स्वार्थान्धता की सीमा तक जा पहुचा था, और कामुक जीव ने आध्यात्मिक जीव को बिल्कुल कुचल कर वहा अपना आधिपत्य जमा लिया था। परन्तु अब, तीन साल के बाद, कात्यूशा से मिलने पर, उसके हृदय मे फिर वही भावनाए जाग उठी जो पहले उठी थी। आध्यात्मिक जीव ने फिर एक बार सिर उठाया। पूरे दो दिन, ईस्टर के दिन तक उसके मन मे निरन्तर सघर्ष चलता रहा, हालाकि वह स्वय इसका स्पष्ट अनुभव नही कर रहा था।

उसके अतंतम से यह आवाज़ उठती थी कि यहा से चले जाना चाहिए, फूफियो के घर मे टिके रहने का कोई मतलब नही, कि नतीजा

अच्छा नहीं होगा, परन्तु रहने मे इतना मजा था, इतना लुत्फ था कि उसने सच्चे दिल से इस बार मे नही सोचा, और वहीं पर टिका रहा।

शनिवार शाम को एक पादरी डीकन के साथ स्लेज म बठ कर उपासना करवाने आये। गिरजे से घर तक तीन मील का फासला था। उन्हें यहां तक पहुचने म बडी कठिनाई हुई, कम से कम उनका यही कहना था क्योंकि सडक पर जगह जगह पानी खडा था और कहीं कहीं पर स्लेज को नगी जमीन पर खींचना पडा था।

नेख्लूदोव भी अपनी फूफियो और घर के नौकर चाकरो के साथ सम्मिलित उपासना मे शामिल हुआ, और सारा वक्त कात्यूशा की ओर देखता रहा जो दरवाजे के पास खडी थी और पादरी के लिए धूपदानियां ला जा रही थी। उपासना खत्म होने पर नेख्लूदोव ने पादरी और फूफियों को ईसा मसीह के पुनर्जन्म पर बधाई देते हुए चूमा और फिर वह सोने जा ही रहा था कि बाहर गलियारे मे मारीया इवानोव्ना की बढ़िया नौकरानी मात्र्योना पाव्लोव्ना को कात्यशा के साथ ईस्टर के केका और रग किये अडो को पवित्र करवाने के लिए चच जाने की तयारियां करते सुना। "मैं भी जाऊगा," नेख्लूदोव ने मन ही मन कहा।

घर से ले कर गिरजे तक की सडक बहुत ही खराब थी। उस पर न स्लेज म और न ही बग्घी म जाया जा सकता था। नेख्लूदोव ने फौरन घोडा तैयार करने का हुक्म दे दिया और कहा कि बूढे "भाई के घोड" पर जीन कस दी जाय। नेख्लूदोव इस घर को अपना ही घर समझता था, और उसी तरह व्यवहार करता था। बिस्तर पर सोने की बजाय उसने अपना बढिया वर्दी-कोट पहना चुस्त पतलन कसी और कधो पर बरान कोट डाले, घोडे पर सवार हो गया। घोडा बूढा था, लेकिन खूब पला हुआ और बोझल गति से चलता था। सारा रास्ता वह हिनहिनाता गया। बाहर गहन अधेरा था, जिसमे गढो और बफ को लाघता हुआ नेख्लूदोव गिरजे की ओर जाने लगा।

१५

नेख्लूदोव के मन पर ईस्टर उपासना का वह दृश्य अत्यन्त सुन्दर और सजीव छाप छोड गया जो उसे आजीवन याद रही।

घने अधेरे म से होता हुआ, जिसे केवल किसी किसी जगह सफेद

र्फ के पैबन्द भग करते थे, वह जगह जगह खडे पानी पर छप छप करते हुए गिरजे के आगन मे दाखिल हुआ। गिरजे के चारो ओर लैम्पो की क़तार थी। रोशनी को देख कर घोडे ने कान खडे हो गये।

जब नेख्लूदोव गिरजे पहुचा तो उपासना शुरू हो चुकी थी। आगन मे खडे किसानो ने मारीया इवानोव्ना के भतीजे को पहचान लिया, और उसके घोडे की लगाम पकड कर सूखी जगह पर ले गये, जहा नेख्लूदोव घोडे पर से उतर सके। फिर घोडे को ठीक जगह पर ले जा कर बाध दिया, और नेख्लूदोव को गिरजे मे ले गये। गिरजा खचाखच लोगो से भरा हुआ था।

गिरजे मे दायी तरफ किसान खडे थे, बूढे आदमी, घर के कते-बुने कोट पहने और पावो मे छाल के बूट कसे और साफ-सुथरी सफेद पट्टिया बाधे। जवानो ने नये नये ऊनी कोट पहन रखे थे और कमर मे शोख रग की पेटिया और चमडे के लम्बे बूट चढाये थे। बायी ओर छोटी उम्र की स्त्रिया थी, सिरो पर लाल रग के रेशमी रूमाल बाधे, काले रग की नकली मखमल की जाकटें जिनके नीचे शोख लाल रग की कमीज़ें और भडकीले हरे, नीले और लाल रग के घाघरे पहने हुए थी। पावो मे उन्होंने चमडे के जूते पहन रखे थे जिनके नीचे लोहे की पतरिया लगी थी। उनके पीछे बूढी स्त्रिया खडी थी जिनकी पोशाक अधिक सादा थी। सिर पर सफेद रूमाल, भूरे रग के कोट, पुरानी चलन के घाघरे, और पावो मे चमडे या छाल के जूते। उनके बीच सजे धजे, सिर पर तेल लगाये बच्चे खडे थे। पुरुष क्रॉस का चिन्ह बनाते वक्त अपना सिर झुका लेते और बाद मे सीधा कर लेते और झटक कर अपने बाल पीछे को कर देते। स्त्रिया, विशेषकर बूढी स्त्रिया अपनी धुधली आखो से टिकटिकी बाधे एक देव प्रतिमा की ओर देखे जा रही थी और क्रॉस का चिन्ह बना रही थी। देव प्रतिमा के आस-पास मोमबत्तिया जल रही थी। वे अपनी जुडी उगलियो से अपने सिर के रूमाल को कस कर छूती, फिर पेट को और फिर एक एक कर के दोनो कधो को। और मुह मे से कुछ फुसफुसाती हुई झुक जाती या घुटनो के बल बैठ जाती। बच्चे बडो की नकल कर रहे थे, जब उन्हे ध्यान होता कि लोग उनकी ओर देख रहे है तो बडे गभीर बन कर प्राथना करते। देव प्रतिमाओ के सुनहरी फ्रेम चमक रहे थे। उनके चारो तरफ बडी बडी मोमबत्तिया जल

रही थी जिन पर बेलबूटेदार, सुनहरी खोल बने थे। उनके गिर्द शमादानों मे छोटी बत्तियां जल रही थी। सहगान के मच पर से नई तरह के रोचक स्वर सुनाई दे रहे थे। गान मण्डली के सदस्य शौकिया गाने वाले थे। इनमे गहरी आवाजें भी थी और नन्हे बालको की तीखी आवाजें भी।

नेख्लूदोव सीधा आगे बढ गया। गिरजे के बीचाबीच भद्रजन थे: एक जमीदार जो अपनी पत्नी और बेटे के साथ आया था (बेटे ने जहाजियों का सूट पहन रखा था), पुलिस अफसर, तार-बाबू, एक व्यापारी जिसने लम्बे बूट चढा रखे थे, और गाव का मुखिया जिसकी छाती पर तमगा चमक रहा था। वेदी के दायी ओर जमीदार की पत्नी के ऐन पीछे मात्र्योना पाव्लोव्ना हल्के बैगनी रंग की पोशाक पहने और कन्धों पर सफेद झालरदार शाल ओढे खडी थी। उसके साथ ही कात्यूशा थी। छाती पर झालरो वाली सफेद पोशाक, नीले रग का कमरबन्द और काले काले बालो पर लाल रंग का रिब्बन था।

गिरजे मे उत्सव का वातावरण था, हर चीज उज्ज्वल, पवित्र और सुन्दर लग रही थी। पादरी जरी का जामा पहने था जिस पर सुनहरी क्रास बने थे। डीकन, क्लर्क और गायको ने सफेद और सुनहरी रंग के वस्त्र पहन रखे थे। शौकिया गान-मण्डली के सदस्य, पूरी सज-धज के साथ, सिर पर खूब तेल चुपड कर आये थे। स्तुतिगान की धुनें बड़ी हल्की फुल्की और रोचक थी, ऐसा जान पडता जैसे नाच की धुनें बज रही हो। पादरी हाथ मे एक मोमबत्ती पकडे जिस पर फूल बने थे बराबर लोगो को आशीष दिये जा रहा था। गिरजे मे बार बार "प्रभु ईसा जाग उठे! प्रभु ईसा जाग उठे!" की आवाज गूज उठती। हर चीज़ कितनी सुन्दर थी, पर सबसे अधिक सुन्दर थी कात्यूशा, जो सफेद सफेद पोशाक पहने, नीला कमरबन्द और अपने काले बालो मे लाल रिब्बन बांधे खडी थी और जिसकी आंखें हृदयोल्लास से चमक रही थी।

वह नेख्लूदोव की ओर देख तो नही रही थी पर नेख्लूदोव जानता था कि उसे उसकी उपस्थिति का पूरा पूरा भास है। वेदी की ओर जाते हुए उसने यह भांप लिया था। वह उसके पास से गुजरा। उसे कुछ भी कहना नहीं था, मगर उसने झट से एक बात गढ ली और उसके पास जा कर कान मे बोला

: "फूफी ने कहा है कि वह दूसरी उपासना के बाद अपना व्रत तोड़ेगी।"

· सदा की तरह उसे देखते ही कात्यूशा का प्यारा चेहरा लाल हो गया। उसकी उल्लसित काली काली आँखें, जिनमें हँसी फूट रही थी, बड़े भोलेपन से नेख्लूदोव के चेहरे की ओर देखने लगी।

"मुझे मालूम है," उसने मुस्करा कर कहा।

ऐन उसी वक्त गिरजे का क्लर्क पास से गुजरा। वह ताँबे का पात्र लिए भीड़ मे रास्ता बना रहा था। उसने कात्यूशा को नही देखा जिससे उसका वस्त्र कही कात्यूशा से अटक गया। प्रत्यक्षत यह इसलिए हुआ कि वह नेख्लूदोव से थोड़ा हट कर निकल जाना चाहता था। पर नेख्लूदोव को बड़ी हैरानी हुई। क्या यह क्लर्क नही जानता कि यहा की हर चीज कात्यूशा के लिए है। यहा की ही क्या, ससार भर की हर चीज कात्यूशा के लिए है! और चीजो की ओर ध्यान न जाय तो समझा जा सकता है, परन्तु कात्यूशा की उपेक्षा कैसे की जा सकती है? वह तो सकल विश्व का केन्द्र है। जो देवप्रतिमाओ के सुनहरी चौखटे चमक रहे है तो उसी के लिए, जो शमादानो मे मोमबत्तिया जल रही हैं तो उसी की खातिर, उसी की खुशी के लिए गिरजे मे स्तुतिगान के बोल गूज रहे हैं—"देखो सब जन! ईसा का प्रस्थान!" ससार मे जो कुछ भी श्रेष्ठ है, सब उसी के लिए है। ऐसा जान पड़ता था जैसे कात्यूशा को भी मालूम हो कि सब उसी के लिए हैं। जब नेख्लूदोव ने उसके सुडौल शरीर की ओर देखा, उसकी सफेद पोशाक और प्रफुल्लित चेहरे को देखा तो उसने समझ लिया कि जिस सगीत से उसकी अपनी आत्मा झकृत है, वही सगीत कात्यूशा की आत्मा मे भी गूज रहा है।

पहली और दूसरी उपासना के बीच अन्तराल था। इस बीच नेख्लूदोव गिरजे मे से बाहर निकल गया। गिरजे मे खड़े लोग पीछे हट हट कर उसके लिए रास्ता बनाने लगे और झुक झुक कर उसका अभिवादन करने लगे। कुछ लोग तो उसे जानते थे। जो नही जानते थे वे एक दूसरे से पूछने लगे कि यह आदमी कौन है। सीढ़िया पर पहुच कर वह खड़ा हो गया। बाहर खड़े हुए भिखमगे भागते हुए उसके पास आ गये। नेख्लूदोव ने अपना बटुआ निकाला और जितनी भी रेजगारी उसमे थी उन्हे दे दी, और फिर सीढ़िया उतर गया।

पौ फट रही थी, परन्तु सूर्य अभी नहीं निकला था। लोग कि
के कब्रिस्तान मे, कब्रो के पास बैठे हुए थे। कात्यूशा अब भी अन्दर
और नेख्लूदोव उसका इन्तजार करने लगा।

लोग अब भी गिरजे मे से बाहर निकल रहे थे और निकल
कब्रिस्तान मे बिखरते जा रहे थे। पत्थर की सीढ़ियों पर उनके बूटों
नीचे लगे कील खट खट कर रहे थे।

एक बहुत बूढ़े आदमी ने जिसका सिर हिल रहा था, नेख्लूदोव
रोक लिया ताकि प्रथानुसार ईस्टर-चुम्बन कर सके। वह नेख्लूदोव
फूफियो का रसोइया था। उसकी बूढ़ी पत्नी ने जिसके मुह पर झुर्रियों
जाल बिछा था, अपने रूमाल मे से एक अण्डा निकाला जिस पर
रग पुता हुआ था और नेख्लूदोव को भेंट किया। एक युवा कि
मुस्कराता हुआ नया कोट और हरे रग की पेटी कसे, नेख्लूदोव के पास
आ खड़ा हुआ।

"ईसा फिर जाग उठे!" उसने कहा और आगे बढ़ कर अ
मजबूत, ताजादम होंठो से नेख्लूदोव को सीधा मुह पर चूम लिया। उसकी
आखें हस रही थी और सारे शरीर म से एक खास तरह की मधुर ग
आ रही थी, जो केवल किसान के ही शरीर से आ सकती है। उस
वक्त उसकी घुघराली दाढ़ी नेख्लूदोव के गालो को गुदगुदाती रही।

किसान अभी नेख्लूदोव को चूम ही रहा था और उसे गहरे भूरे र
का एक अण्डा भेंट कर रहा था जब नेख्लूदोव को मात्र्योना पाव्लाव्ना
की बैगनी पोशाक और कात्यूशा का प्यारा सा सिर जिस पर लाल रिब
बधा था, नजर आये।

कात्यूशा के सामने बहुत से लोग चले थे। उनके सिरो के ऊपर से
देखते हुए उसे भी नेख्लूदोव नजर आ गया और नेख्लूदोव ने देखा कि उस
पर नजर पड़ते ही कात्यूशा का चेहरा खिल उठा है।

वह मात्र्योना पाव्लाव्ना के साथ गिरजे की सीढ़ियों पर चली आ
थी और भिखमगो को भीख बाट रही थी। एक भिखारी उसके पा
आया। उसके मुह पर, नाक की जगह, लाल पपड़ी जमी थी। कात्यूशा
ने उसे भीख दी, फिर आगे बढ़ कर, बिना किसी प्रकार की घिन महसूस
किये, तीन बार उसे चूम लिया। कात्यूशा की आखें अब भी खुशी से
चमक रही थी। इस बीच उसने नेख्लूदोव की ओर देखा। दोनो की आ

। कात्यूशा की आंखें मानो पूछ रही हो—"मैं ठीक, अच्छा रही हूं न?"
"ठीक प्रिय, ठीक। तुम जो कुछ कर रही हो ठीक है, शुभ है, हर सुन्दर है। मेरा रोम रोम तुमसे प्रेम करता है।"
वे सीढ़िया उतर आयी और नेख्लूदोव उनके पास चला गया। वह शा के पास ईस्टर चुम्बन के लिए नही गया, वह केवल उसके नजदीक : चाहता था।
मात्र्योना पाव्लोव्ना ने सिर झुका कर मुस्कराते हुए कहा—
"ईसा जाग उठे।" उसने य शब्द इस लहजे मे कहे जिसका मतलब "आज हम सब बराबर हैं।' उसने अपना रुमाल निकाला जिसे : गोल कर के गेंद की सी शक्ल का बना रखा था और अपने हाठ , और फिर चुम्बन के लिए मुह आगे कर दिया।
"बेशक, ईसा जाग उठे," नेख्लदोव ने जवाब मे कहा और उसे लिया।
फिर उसने कात्यूशा की ओर देखा। कात्यूशा शर्मा गई, और उसके ोक बढ आयी।
"ईसा जाग उठे, दमीत्री इवानोविच।"
"बशक, ईसा जाग उठे।" नख्लूदोव ने जवाब मे कहा, और उन्होंने बार एक दूसरे को चूमा। फिर क्षण भर के लिए रुक गये मानो सोच हा कि तीसरी बार चूमने की जरूरत है या नही, फिर यह निश्चय के कि जरूरत है, उन्होंने तीसरी बार चुम्बन किया और मुस्कराने ।
"क्या तुम दोना पादरी के पास नही जाओगी?" नेख्लूदोव ने पूछा।
"नही, दमीत्री इवानोविच, हम थोडी देर यही पर बाहर बैठेंगी," यूशा ने कहा। उसके लिए बोलना कठिन हो रहा था, मानो वह कोई व हर्षपूर्ण काय सम्पन्न कर पायी हो। उसने एक गहरी सास ली, का समूचा वक्ष फूल उठा। नजर उठा कर उसने सीधा नेख्लदोव की ः देखा। उसकी आखो मे जिनमे हल्का सा ऐंच रहा करता था, इस य विनम्रता, कौमार्य की पवित्रता तथा सच्चा प्रेम छलक रहे थे।
पुरुष और स्त्री के प्रेम मे सदैव एक ऐसा समय आता है जब यह पराकाष्ठा तक जा पहुचता है। उस समय यह अचेतन तथा

होता है तथा इसमे कामुकता का लेशमात्र भी नही होता। उस ईस्टर
रात को नेख्लूदोव का प्रेम भी उसी स्तर तक जा पहुचा था। जब
वह कात्यूशा को याद करता तो उसकी आखो के सामने उसी समय
दृश्य साकार होता। बाकी सब गौण था। कात्यूशा के चिकने, काले
सफेद लिबास जो उसके कोमल, सुडौल शरीर पर बिल्कुल ठीक
था, उसकी छोटी छोटी छातिया, लज्जाशील चेहरा, चमकती,
वाली आखें। उसके समूचे व्यक्तित्व पर पवित्रता और सच्चे प्रेम की
थी—उस प्रेम की जो उसके दिल मे केवल नेख्लूदोव के प्रति ही न
बल्कि हर प्राणी और हर वस्तु के लिए था, न केवल जो कुछ
है उसके लिए ही, बल्कि ससार मे हर चीज़, हर किसी के लिए
यहा तक कि उस भिखारी तक के लिए था, जिसका कात्यूशा ने
अभी मुह चूमा था।

नेख्लूदोव जानता था कि कात्यूशा का हृदय इस प्रकार के प्रेम
उद्वेलित है, क्योंकि उस रात और दूसरे दिन सुबह वह अपने मे भी
ही प्रेम का अनुभव कर रहा था, और जानता था कि इस प्रेम के
दोनो एक हो गये हैं।

काश कि वह वही पर रुक जाता, उसी स्तर तक रहता जिस
पर उस रात पहुचा था। "ईस्टर की रात के बाद ही वह भयकर
हुआ था!" जूरी के कमरे की खिड़की के पास बैठा नेख्लूदोव सोच
था।

१६

गिरजे से लौट कर नेख्लूदोव ने अपनी फूफियो के साथ बैठ कर
ताश, और थोड़ी शराब पी। रजिमेंट मे उसे पीने की आदत पड़ गई थी।
उसके बाद वह अपने कमरे मे आया और बिना कपड़े उतारे सो गया।
उसकी नीद उस वक्त टूटी जब किसी ने दरवाजा खटखटाया।
सुनते ही वह पहचान गया कि कौन आया है। उसने अगड़ाई ली,
मलता हुए उठ बैठा।

"क्या तुम हो कात्यूशा? आ जाओ," उसने कहा।
कात्यूशा ने दरवाजा खोला।

"खाना तैयार है," उसने कहा।

कात्यशा ने अब भी वही सफेद पोशाक पहन रखी थी, परन्तु उसके लो मे रिब्बन न था। उसने मुस्कराते हुए नेख्लूदोव की ओर देखा, मानो ई खुशखबरी दे रही हो।

"मैं आ रहा हू," उसने उठते हुए कहा और कघी ले कर बाल क करने लगा।

कात्यूशा मिनट भर वही खडी रही। नेख्लूदोव ने उसे खडे देखा तो घी फेंक कर उसकी ओर बढा। पर ऐन उसी वक्त वह सहसा मुड डी और गलियारे के बीचोबीच बिछी दरी पर हल्के हल्के पाव रखती ई तेज तेज वापस जाने लगी।

"मैं भी कैसा मूर्ख हू," नेख्लूदोव ने सोचा, "मैंने उसे रोका क्यो ही?" और भाग कर उसके पास जा पहुचा।

वह क्या चाहता था, यह वह स्वय नही जानता था। परतु उसे हसूस हो रहा था कि जब कात्यूशा कमरे मे आई तो मुझे कुछ करना ाहिए था, कोई ऐसी बात जो ऐसे मौको पर की जाती है, पर मैं चूक या हू।

"जरा ठहरो, कात्यूशा!" उसने कहा।

"जी, क्या बात है?" कात्यशा ने रुकते हुए पूछा।

"कुछ नही, केवल " नेख्लूदोव ठिठक गया, लेकिन फिर याद र के कि ऐसी स्थिति मे लोग अक्सर क्या करते है, उसने अपना हाथ ात्यूशा की कमर पर रख दिया।

वह मूर्तिवत खडी हो गई और उसकी आखो मे देखने लगी।

"नही, द्मीत्री इवानोविच, ऐसा मत करो," उसने कहा। लज्जावश उसकी आखो मे आसू आ गये, और उसने अपने दृढ, मजबूत हाथ से नेख्लूदोव का बाजू परे हटा दिया।

नेख्लूदोव ने उसे जाने दिया। क्षण भर के लिए वह हतबुद्धि और लज्जित सा खडा रहा। उसके दिल मे अपने प्रति नफरत सी पैदा हुई। इस समय उसे चाहिए था कि वह अपने अन्तकरण की आवाज सुनता। तब उसे पता चल जाता कि इस घबराहट और लज्जा का कारण आत्मा की वे उच्चतम भावनाए है जो मुक्त होना चाहती है। पर उसने समझा कि यह केवल उसकी मूढता है, और उसे वही कुछ करना चाहिए जो

सब लोग करते हैं। वह लपक कर फिर उसके पास जा पहुंचा और उ
गरदन पर चूम लिया।

यह चुम्बन उस भोले चुम्बन से बडा भिन्न था जो तीन साल पहले लिलक की झाडी के पीछे उसने लिया था, और उस चुम्बन से भी जो आज ही प्रात गिरजे के आगन मे लिया था। यह तो एक भयानक च था और कात्यूशा ने भी ऐसा ही महसूस किया।

"यह तुम क्या कर रहे हो?" वह इस तरह चिल्लाई मानो नख्लूदोव ने उसके दिल के किन्ही कोमल, अमूल्य तारो को सदा के लिए तोड दिया हो और दौडती हुई वहा से भाग गई।

नेख्लूदोव खाने वाले कमरे मे आया। कमरे मे पहले से ही उसकी सजी धजी फूफिया, परिवार का डाक्टर तथा एक पडोसिन बैठे थे। सब कुछ साधारण ही था परन्तु नेख्लूदोव के मन मे एक तूफान मचा हुआ था। उनकी बात उसकी समझ मे नही आ रही थी और वह बिना सोचे समझे जवाब दिये जा रहा था। उसके मन मे कात्यूशा समाई हुई थी। गलियारे मे लिये गये इस आखिरी चुम्बन से उसके शरीर मे जो सनसनी सी दौड गई हुई थी, उसी को वह बार बार याद कर रहा था। वह और कुछ भी नही सोच पा रहा था। जब कात्यूशा कमरे मे आयी तो बिना सिर ऊपर उठाये ही नख्लूदोव को उसके आने का पता चल गया। उसका रोम रोम उसकी उपस्थिति को महसूस कर रहा था। वह उसकी ओर देखना चाहता था, परन्तु बडी मुश्किल से इस इच्छा को सवरण कर रहा था।

भोजन के बाद वह सीधा अपने कमरे मे चला गया। वह बेहद उत्तेजित था और बडी देर तक इधर-उधर टहलता रहा। उसके कान घर की हर आहट की ओर लगे हुए थे। उसे यह आशा थी कि कात्युशा की पदचाप सुनाई देगी। अब उसके अन्दर कामुक जीव ने सिर उठा लिया था। इतना ही नही, उसने उस आध्यात्मिक जीव को पूर्णतया कुचल भी डाला था जो आज से तीन साल पहले जीवित था, जब वह पहली बार यहा आया था बल्कि जो आज प्रात भी जीवित था। अब उसके अन्दर कामुक जीव का ही निरकुश शासन था।

दिन भर वह कात्युशा की टोह मे रहा, मगर उसे अकेले मे न मिल सका। शायद वह उससे जान बूझ कर दूर रहना चाहती थी। परन्तु शाम के वक्त कात्यूशा को मजबूर हो कर उसके साथ वाले कमरे मे आ

पड़ा। डाक्टर से आग्रह किया गया था कि वह रात को यहीं पर रह जाय, इसलिए कात्यूशा उसका बिस्तर बिछाने आई थी। जब नेख्लूदोव को उसके अन्दर जाने की आहट मिली तो वह भी पीछे पीछे कमरे मे चला गया। वह दबे पाव, सास रोक कर इस तरह जा रहा था मानो कोई जुर्म करने जा रहा हो।

कात्यूशा तकिये पर नया गिलाफ चढ़ा रही थी। अपने बाज़ गिलाफ के अन्दर डाले वह दोनो कोनो से तकिये को पकडे हुए थी। उसने मुड कर नेख्लूदोव की ओर देखा और मुस्करायी। पर इस मुस्कराहट में पहले सी खुशी और उल्लास न था, बल्कि भय और दयनीयता थी। इस मुस्कान को भी देख कर उसे लगा जैसे वह कोई गलत काम करने जा रहा हो। वह क्षण भर के लिए रुक गया। उसके मन में सघर्ष की अब भी सभावना थी। उसके हृदय मे से एक क्षीण सी आवाज़ अब भी उठ रही थी। यह कात्यूशा के प्रति उसके सच्चे प्रेम की आवाज़ थी, जो कह रही थी—"कात्यूशा को मत भूल जाओ, उसकी भावनाओ की तो सोचो, उसके जीवन की तो सोचो।" पर एक दूसरी आवाज़ भी थी, जो कह रही थी—"यही मौका है! मत चूको! अपनी खुशी और सभोग के इस अवसर को हाथ से मत जाने दो!" और इस दूसरी आवाज़ ने पहली आवाज़ को दबा दिया। वह दृढ निश्चय से कात्यूशा की ओर बढ़ गया। भयानक, अदम्य कामवासना ने उसे बेचैन कर दिया।

कात्यूशा की कमर मे बाह डाल कर उसने उसे बिस्तर पर बिठा लिया। फिर यह सोच कर कि उसे कुछ और भी करना चाहिए, वह उसके साथ सट कर बैठ गया।

"द्मीत्री इवानोविच! मुझे जाने दो!" उसने बडी दयनीय आवाज़ मे कहा। "मात्योना पाव्लोव्ना आ रही है!" वह चिल्लाई, और अपने को छुडा कर खडी हो गई। सचमुच कोई दरवाज़े की तरफ आ रहा था।

"अच्छी बात है, मैं रात को तुम्हारे पास आऊंगा," वह फुसफुसाया। "तुम वहा अकेली हो ना?"

"तुम क्या सोच रहे हो? हरगिज़ नही! नही, नही!" परन्तु ये शब्द केवल उसके होठो में से ही निकल पाये। उसका शरीर, जिसके रोम रोम मे उद्भ्रान्ति के कारण कपन उठ रहा था, कुछ और ही कह रहा था।

मात्र्योना पाव्लोव्ना ही थी जो दरवाजे के पास आई। बाजू के ऊ
एक कम्बल रखे उसने अन्दर झांका और वही भर्त्सना भरी नजर।
नेख्लूदोव की ओर देखा, और फिर गुस्से से कात्यूशा को फिड़कने ल
कि वह गलत कम्बल क्यों उठा लाई है।

नेख्लूदोव चुपचाप बाहर चला गया लेकिन उसे ज़रा भी शर्म न
आयी। मात्र्योना पाव्लोव्ना के चेहरे से साफ नजर आ रहा था कि व
नेख्लूदोव पर नाराज है, उसे कुसूरवार समझती है। स्वयं नेख्लूदोव भी
जानता था कि मात्र्योना पाव्लोव्ना का गुस्सा वाजिब है, कि वह बुरा
कर रहा है। पर जो घृणित काम पिपासा इस समय उसके मन पर छा
हुई थी, उसमें न तो कात्यूशा के प्रति पहले सच्चे प्रेम की भावना का
लेशमात्र ही रह गया था, और न ही उसके रहते कोई दूसरी भावना
उसके मन में उठ सकती थी। वह अब जानता था कि इस पिपासा को
शान्त करने के लिए उसे क्या करना है, और सोच रहा था कि कैसे इसके
लिए मौका निकाला जाय।

सारी शाम वह पागलों की तरह कभी एक कमरे में जाता रहा कभी
दूसरे में। कभी फूफियों के कमरे में जाता, कभी अपने कमरे में लौट
आता, कभी बाहर सायबान के नीचे जा खड़ा होता। उसके मन में एक
ही धुन समायी हुई थी कि किसी तरह कात्यूशा को अकेले में मिल पाये।
पर वह नेख्लूदोव से कन्नी काट रही थी, और मात्र्योना पाव्लोव्ना की
कड़ी नज़र उस पर थी।

१७

इस तरह शाम आखिर खत्म हुई और रात आयी। डाक्टर आ कर
सो गया। नेख्लूदोव की फूफियां भी सोने के लिए चली गई थीं। नेख्लूदोव
ने सोचा कि इस वक्त मात्र्योना पाव्लोव्ना जरूर उन्हीं के पास होगी
जिसका मतलब है कि दासियों के कमरे में कात्यूशा अकेली बैठी होगी।
वह फिर बाहर सायबान के नीचे आया। बाहर अंधेरा था और कुछ
कुछ गरमी थी। हवा में नमी थी और वसन्त की सफेद धुंध छायी हुई
थी जो बर्फ की आखिरी पर्तों को साफ कर जाती है या शायद आखिरी
पर्तों के पिघलने के ही कारण पैदा होती है। फाटक से लगभग सौ कदम

की दूरी पर, पहाडी के नीचे, नदी बहती थी। इस समय उस ओर से अजीब सी आवाज़ आ रही थी। नदी पर जमी बरफ़ टूट रही थी।

नेख्लूदोव सीढिया उतर कर दासियो के कमरे की ओर जाने लगा। जगह जगह चिकनी बरफ़ पर पानी खडा था। नेख्लूदोव बच बच कर चलता हुआ खिडकी के पास जा खडा हुआ। उसका दिल धक् धक कर रहा था और सास फूल रही थी। सास खीचता तो जैसे लम्बी आहे भरता। दासियो के कमरे मे एक छोटा सा लैम्प जल रहा था। मेज़ के पास कात्यूशा अकेली बैठी थी, और विचारशील मुद्रा मे सामने की ओर देख रही थी। नेख्लूदोव वही चुपचाप, बिना हिले-डुले, बडी देर तक खडा रहा। वह देखना चाहता था कि कात्यूशा अब क्या करेगी, जिसे यह नही मालूम था कि उसे कोई देख रहा है। मिनट, दो मिनट तक तो कात्यूशा ने कोई हरकत नही की। फिर उसने आखें ऊपर उठाई, मुस्कराई, और सिर झटका, मानो अपने को डाट रही हो फिर रुख बदल कर बैठ गई, दोनो बाजू मेज़ पर रख लिये और सामने, नीचे की ओर देखने लगी।

वह वही खडा उसे देखता रहा। न चाहते हुए भी उसे अपने दिल की धडकन और नदी की ओर से आती हुई विचित्र सी आवाज़ें सुनाई दे रही थी। वहा, नदी पर, धुध के नीचे, प्रकृति का अनवरत श्रम चल रहा था। तरह तरह की आवाज़ें मिल कर आ रही थी मानो कोई चीज़ सिसक रही हो, टूट रही हो, गिर रही हो, टुकड टुकडे हो रही हो। इन्ही आवाज़ो के साथ एक और टुनटुनाती सी आवाज़ भी मिल रही थी काच की तरह, बरफ़ की पतली पर्तों के टूटने की आवाज़।

कात्यूशा का चेहरा गभीर और दुखी था। उससे उसके विकट आन्तरिक सघर्ष का बोध होता था। उसकी ओर देखते हुए नेख्लूदोव का हृदय अनुकम्पा से भर उठा। परन्तु, अजीब बात है, इस अनुकम्पा से उसकी कामवासना और भी भडक उठी।

वह कामान्ध हो रहा था।

उसने खिडकी पर दस्तक दी। कात्यूशा चौक गई, मानो उसे बिजली छू गई हो। उसका अग अग काप उठा और चेहरे पर भय छा गया। फिर वह उछल कर खडी हो गई और खिडकी के पास आ कर अपना चेहरा खिडकी के शीशे के नज़दीक ले आयी। आखो के ऊपर अपने दोना हाथो से छज्जा बना कर उसने झाक कर बाहर देखा। वह नेख्लूदोव को

पहचान गई लेकिन उसके चेहरे पर त्रास का भाव उसी तरह बना रहा।
कात्यूशा का चेहरा बेहद गभीर हो रहा था। नेख्लूदोव न उसे इस तरह पहले कभी नही देखा था। नेख्लूदोव को मुस्कराते देख कर वह भी मुस्कराई, मगर जैसे हुक्म मान रही हो। उसका हृदय नही मुस्करा रहा था, वहा तो केवल भय छाया हुआ था। नेख्लूदोव ने हाथ से उसे इशारा किया कि बाहर आगन मे आ कर मुझे मिलो। पर कात्यूशा न सिर हिला दिया और खिडकी के पीछे ही खडी रही। नेख्लूदोव खिडकी के शीशे के पास मुह ले जा कर उसे कहना चाहता था कि वह बाहर आ जाय, पर वह सहसा दरवाजे की ओर घूम गई। प्रत्यक्षत किसी ने अन्दर से उसे बुला लिया था। नेख्लूदोव खिडकी पर से हट गया। धुध इतनी गहरी थी कि घर से पाच कदम की दूरी पर से भी खिडकिया नजर नही आती थी, केवल लैम्प की लाल लाल रोशनी का विशाल वृत अधकार के निराकृत पुज मे से निकलता हुआ नजर आ रहा था। नदी पर से बडी विचित्र आवाजें आ रही थी, सिसकने की, सरसराने की, टटने की, खनकने की। धुध मे ही, नजदीक कही किसी मुर्गे ने बाग दी। जवाब मे एक दूसरे मुर्गे न बाग दी। फिर दूर, गाव मे बहुत से मुर्गे एक साथ बाग देने लगे। होते होते सभी मुर्गों की आवाजे मिल कर एक हो गई। या चारो ओर निस्तब्धता छायी हुई थी। केवल नदी पर से वहा शब्द सुनाई दे रहे थे। उस रात यह दूसरी बार थी कि मुर्गे बाग देने लगे थे।

घर के नुक्कड के पीछे नेख्लूदोव टहलने लगा। किसी किसी वक्त उसका पाव किसी गढे मे जा पडता। वह फिर खिडकी के पास आया। लैम्प अब भी जल रहा था और कात्यूशा फिर अकेली मेज के पास बैठी थी। वह द्विविधा मे जान पडती थी, मानो उसकी समझ मे न आ रहा हो कि क्या करे और क्या न करे। वह खिडकी के पास पहुचा ही था कि उसने आख उठा कर देखा। नेख्लूदोव न दस्तक दी। बिना देखे कि कौन खिडकी खटखटा रहा है, वह फौरन् कमरे मे स भाग गई। नेख्लूदोव को बाहर का दरवाजा खुलने की आवाज आई। बगल वाले सायवान के नीचे वह उसका इन्तजार करने लगा। वह आई और नेख्लूदोव ने बिना कुछ कहे उसे बाहो मे भर लिया। वह नेख्लूदोव से निसहाय सी लिपट गई, और अपना मुह ऊपर को उठाया। दोनो के होठ मिले। वे सायवान के कोने के पीछे खडे थे। यहा पर से बरफ गल चुकी थी। अतृप्त वासना

के कारण वह बेचैन हो रहा था। इस के बाद फिर दरवाज़ा खुलने की वैसी ही आवाज़ आई, और मात्योना पाव्लोव्ना ने गुस्से से चिल्ला कर पुकारा—

"कात्यूशा!"

कात्यूशा अपने को छुडा कर दासियो के कमरे मे वापस लौट गई। नेख्लूदोव ने सिटकनी लगने की आवाज़ सुनी, फिर सब चुप हो गया। लाल रोशनी बुझ गई, केवल धुध अब भी छायी हुई थी, और नदी पर से वही आवाज़ें आ रही थी।

नेख्लूदोव खिडकी के पास गया। वहा कोई भी नज़र नही आ रहा था। उसने खिडकी पर दस्तक दी। कोई जवाब नही आया। सामने के दरवाज़े मे से वह घर के अन्दर लौट गया, मगर उसे नीद नही आयी। वह उठ खडा हुआ और नगे पाव गलियारे को लाघता हुआ कात्यूशा के कमरे के पास जा पहुचा जो मात्योना पाव्लोव्ना के कमरे की बगल मे था। मात्योना पाव्लोव्ना नीद मे हल्के हल्के खर्राटे ले रही थी। नेख्लूदोव आगे कदम रखने ही वाला था कि मात्योना पाव्लोव्ना खासी और करवट बदली जिससे उसकी खाट चरमरा उठी। नेख्लूदोव का दिल बैठ गया। वह जडवत लगभग पाच मिनट तक, बिना हिल-डुले, खडा रहा। जब फिर सन्नाटा छा गया और मात्योना पाव्लोव्ना फिर आराम से खर्राटे भरने लगी तो उसने आगे कदम रखा। फर्श के एक एक तख्ते पर वह बडे ध्यान से पाव रखता ताकि कोई आवाज़ न हो। वह कात्यूशा के दरवाज़े तक जा पहुचा। कोई आवाज़ नही आ रही थी। शायद वह जाग रही थी, वरना उसे उसके सास लेने की आवाज़ आती। पर ज्यो ही उसने फुसफुसा कर कहा—"कात्यूशा!" वह उछल कर खडी हो गई और उसे वापस लौट जाने का आग्रह करने लगी, मानो उसे बहुत गुस्सा हो।

"तुम्हारा मतलब क्या है? तुम कर क्या रहे हो? तुम्हारी फूफिया सुन लेगी," उसके मुह से तो ये शब्द निकल रहे थे, परन्तु उसका रोम रोम कह रहा था—"मेरा सवस्व तुम्हारा है।" और नेख्लूदोव केवल इसी को समझ पा रहा था।

"दरवाज़ा खोलो! एक मिनट के लिए! मेहरबानी कर के दरवाज़ा खोलो।" नेख्लूदोव खुद भी नही जानता था कि क्या कह रहा है।

कात्यशा चुप थी। फिर नेख्लूदोव ने सुना, उसका हाथ सिटकनी को ढूढ रहा था। सिटकनी खुलने की आवाज आई। वह अन्दर चला गया।

नेख्लूदोव ने झट से उसे उठा लिया और बाहर ले आया। उसने यह नही देखा कि वह केवल एक मोटी सी खुरदरी कमीज पहने थी और उसके बाजू नगे थे।

"यह तुम क्या कर रहे हो?" वह फुसफुसायी, पर नेख्लूदोव ने उसके शब्दो की ओर कोई ध्यान नही दिया और उसे उठाये हुए अपने कमरे मे ले आया।

"नही नही, ऐसा मत करो, मुझे जाने दो!" कात्यूशा कह रही थी, परन्तु उसके साथ और भी सट कर लिपट रही थी।

कात्यूशा नेख्लूदोव के कमरे मे से निकली। चुपचाप, कांपती हुई। उसने कुछ कहा मगर कात्यूशा ने कोई जवाब नही दिया। वह फिर निकल कर सायबान के नीचे जा खडा हुआ, और जो कुछ हुआ था उसे समझने, उसकी तह तक पहुचने की कोशिश करने लगा।

दिन चढ रहा था। नीचे, नदी की ओर से टटती बरफ के खनखने और सिसकने की आवाजें और भी ऊची हो उठी थी। साथ ही पानी का कल कल शब्द भी आ रहा था। धुध नीची होने लगी थी और उसके ऊपर से घटता चाद नजर आ रहा था। उसके क्षीण प्रकाश मे कोई काली, भयानक सी चीज दिख रही थी।

"इस सबका क्या मतलब है? क्या मैंने किसी महान सुख का अनुभव किया है, या मुझ पर बहुत बडा दुर्भाग्य टटा है?" उसने मन ही मन पूछा।

'ऐसा सभी के साथ होता है—सभी लोग यही कुछ करते हैं,' उसने अपने आपसे कहा और सोने चला गया।

१८

दूसरे दिन उसका दोस्त शेनबोक आ पहुचा। बडा हसमुख, खूबसूरत और चतुर जवान था वह। बात करता तो बडे सलीके से, मिलनसार, दरियादिल और खिलाडी तबीयत का लडका था। एक तो इन गुणो के

कारण और दूसरे दमीत्री के प्रति प्रेम के कारण आते ही उसने दोनो फूफियो का दिल जीत लिया। उसकी दरियादिली देख कर फूफिया प्रभावित तो हुइ, पर साथ ही साथ उलझन मे भी पडी क्योकि यह दरियादिली स्वाभाविक नही जान पडती थी। फाटक पर कुछ अधे भिखारी आये, उसने उन्हे एक रूबल निकाल कर दे दिया। नौकरा को बखशीश मे पन्द्रह रूबल दे दिये। सोफिया इवानोव्ना के कुत्ते के पजे पर चोट लग गई और खून बहने लगा तो इसने अपना केम्ब्रिक का रूमाल निकाला और देखते ही देखते उसे फाड कर उसमे से पट्टिया बना दी (सोफिया इवानोव्ना जानती थी कि ऐसे रूमाल पन्द्रह रूबल की दजन से कम पर नही मिलते) और कुत्ते के पजे की मरहम पट्टी करने लगा। बूढी स्त्रियो ने इस सरीखे लोग पहले कभी नही दखे थे। उन्हे यह मालूम नही था कि शेनबोक पर दो लाख रूबल का कर्ज है जिसमे से यह एक कौडी भी अदा नही करेगा। अगर और बीस-पचीस रूबला पर पानी फिर गया तो उसे कोई फर्क नही पडेगा।

केवल एक दिन के लिए ही शेनबोक वहा ठहरा। उसी रात वह और नेख्लूदोव, दोनो रवाना हो गये। रेजिमेट मे हाजिरी देना लाजमी था क्योकि दोनो की छुट्टी खत्म हो रही थी।

नेख्लूदोव का इस घर मे आखिरी दिन था। पिछली रात का व्यापार अब भी उसकी आखो के सामने घूम रहा था, जिससे उसके हृदय मे दो पृथक भावनाओ का सघर्ष चल रहा था। एक तो उस कामुक सभोग की याद थी, हालाकि जिस इन्द्रियसुख की उसे आशा थी वह उसे प्राप्त नही हुआ था, और इस बात की तुष्टि भी थी कि मैदान मार लिया, जो करना चाहता था, कर दिखाया। दूसरी ओर रह रह कर यह ख्याल उठता था कि मैने जो कुछ किया है बहुत बुरा किया है। उसका प्रायश्चित करना होगा, उस लडकी की खातिर नही, बल्कि अपनी खातिर।

नेख्लूदोव की स्वार्थाधता जिस सीमा तक जा पहुची थी वहा उसे केवल अपना ही ख्याल आ सकता था, और किसी का नही। वह सोच रहा था कि अगर इस बात का पता लोगो को लग गया तो उसकी बहुत निन्दा तो नही होगी? लोग उसे दोषी ठहरायेंगे भी या नही? उस कात्यूशा का ख्याल नही आया कि उस पर इस समय क्या बीत रही होगी, या भविष्य मे उसे क्या भुगतना पडेगा।

शेनबोक ने भाप लिया कि कात्यूशा के साथ नेख्लूदोव का कुछ म
है। नेख्लूदोव ने भी देख लिया कि वह भाप गया है। पर इसम क दे
भी फूल उठा।

"जी, अब मैं समझा कि फुफियां क्यों तुम्हें इतनी प्यारी लग-
ह, किस लिए तुम हफ्ते भर से यहां आसन जमाये हो," कात्यू-
नज़र पड़ते ही शेनबोक ने कहा, "ख़ूब रहा पर लड़की प्यार
मैं भी तुम्हारी जगह होता तो यही करता।"

नेख्लूदोव को इस बात का खेद तो था कि उसे जल्दी जाना पड़ र
है। यहां रहता तो जी भर कर कात्यूशा के प्रेम का रस लेता। प
मजबूरी मे जाना पड रहा था। लेकिन साथ ही इस तरह चले जा
एक लाभ भी था। ऐसे संबंध जिन्हें निभाना कठिन हो, शुरू में ह
दिये जाय ना अच्छा रहता है। फिर उसे ख्याल आया कि कात्यूशा
कुछ दते जाना चाहिए। इसलिए नहीं कि उसे पैसा की जरूरत है
मगर इसलिए कि सभी एसा करते हैं। कात्यूशा को इस्तमाल भी कि
और पैसे भी न दिये तो बड़ी शर्म की बात होगी। इसलिए उसने
कुछ रकम दे दी जो अपनी और कात्यूशा की स्थिति को देखते हु
वाजिब लगा।

विदाई के दिन, भोजन के बाद, नेख्लूदोव घर के बाहर आ क
और बगल वाले दरवाजे के पास कात्यूशा का इन्तज़ार करने लगा। क
आई। नेख्लूदोव को देखते ही उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया।
[illegible] पर [illegible] चाहती थी। उसने [illegible]
लिया कि [illegible] के कमरे का दरवाजा खुला है, लेकिन नेख्लू
उसे रोक लिया।

"मैं तुमसे विदा लेने आया हूं," [illegible] हाथ में [illegible]
[illegible] हुए उसने कहा। [illegible] था।"
[illegible]

वह उसका अभिप्राय समझ गई [illegible] और [illegible], सिर हि
हुए [illegible] नेख्लूदोव का हाथ [illegible] दिया।

[illegible]
[illegible]
[illegible]

ो हाथो उसे कोई चोट लगी हो। बडी देर तक वह कमरे म लम्बे लम्बे ग भरता हुआ घमता रहा, जैसे दद से छटपटा रहा हो। यहा तक कि स आखिरी दृश्य को याद कर के वह फश पर पाव पटकता और ऊची न्ची आवाज़ म कराहने लगता।

"पर मैं और कर भी क्या सकता था? क्या सबके साथ ऐसा नही होता? शेनबोक ने अपनी अध्यापिका के साथ क्या किया? यही कुछ। वह खुद बता रहा था। और चाचा ग्रीशा ने। और मेरे पिता ने तो एक किसान औरत से जारज लडका तक पैदा कर दिया था, जब वह गाव मे थे। मीतेन्का उसका नाम था, आज भी वह ज़िन्दा है। अगर सभी लोग ऐसा करते हैं तो इसका मतलब है कि ऐसा ही होना चाहिए," इस तरह अपने मन को शान्त करने की कोशिश करने लगा। पर बेसूद। इस घटना को याद कर के उसका दिल छलनी हा रहा था।

उसका अन्ततम कह रहा था कि उसने एक अत्यन्त नीच, क्रूर और कायरो का सा काम किया है। जो खुद यह करतूत की तो औरो पर उगली उठानी ता क्या, किसी से आख तक नही मिला सकेगा। आज तक वह अपने को बडा शानदार, श्रेष्ठ और ऊचे विचारा वाला आदमी समझता रहा था। भविष्य म भी वह अपनी नज़रा म यही कुछ बन रहना चाहता था, क्योकि साहस के साथ जीवन का आनन्द लूटने के लिए यह बडा जरूरी था। परन्तु अब यह असम्भव हो गया था। इस समस्या का एक ही हल था, कि इसके बारे मे सोचना छोड दे। और उसने ऐसा ही किया।

जिस ढग के जीवन मे वह अब प्रवेश करने जा रहा था, वहा बहुत कुछ नया था—नया पास-पडोस, नये दोस्त, और युद्ध। इन सब बातो ने भी इस घटना को भूल जाने मे उसकी सहायता की। ज्यो ज्यो वक्त गुज़रता गया, यह बात उसके मन पर से उतरती गई, और आखिर वह इसे बिल्कुल भूल गया।

लडाई के बाद नेख्लूदोव अपनी फूफियो को मिलने गया, इस आशा से कि वहा कात्यूशा से भेंट होगी। पर कात्यूशा वहा पर नही थी। नेख्लूदोव के विदा होने के कुछ ही मुद्दत बाद वह वहा से चली गई थी। फूफियो ने कहीं से सुना था कि उसे गभ हो गया था और वह बच्चा जनने के लिए कही रहने गई थी। उन्होंने कहा कि कात्यशा का पतन

ही चुका था। नेख्लूदोव के मन में मगर उठी थी। यदि कात्यूशा के ऽ साल से अनुमान लगाया जाय तो बच्चा नेख्लूदोव का हो था उसका और नहीं भी हो सकता था। उसकी फूफियां कात्यूशा को ही दोष थीं, कहती थीं, जैसी मां वैसी बेटी। उनकी यह राय सुन कर नेख्लूदोव दिल ही दिल में खुश हुआ। इससे जैसे वह अपने गुनाह से बरी हो जाता था। पहले तो उसकी इच्छा हुई कि कात्यूशा का पता लगाये, उस बच्चे का पता लगाये। पर जब कात्यूशा का ख्याल आता तो वह मन ही अन्दर इतना लज्जित और दुखी महसूस करता कि उसने कात्यूशा को ढूंढने की कोई कोशिश नहीं की, बल्कि इस दुष्कर्म के बारे में सोचना ही छोड़ दिया और इस तरह उसे भुलाने की कोशिश करने लगा।

और आज यह विचित्र, आकस्मिक घटना घटी जिसने सारी स्मृति जगा दी और नेख्लूदोव से मांग करने लगी कि अपने उस निर्दयी, और कायरतापूर्ण आचरण को स्वीकार करो जिसके कारण तुम दस साल से पाप का बोझा उठाये जी रहे हो। परन्तु स्वीकार करना तो दूर रहा, नेख्लूदोव को तो केवल इस बात की फिक्र थी कि कहीं उसका भण्डाफोड़ न हो जाय, कहीं कात्यूशा या उसका वकील सारी कहानी सुनानी शुरू कर दे और उसे सबके सामने लज्जित होना पड़े।

१९

इस तरह के विचार नेख्लूदोव के मन में उठ रहे थे जब वह अदालत में से उठ कर जूरी के कमरे में आया। वह खिड़की के पास बैठा सिगरेट पर सिगरेट फूंके जा रहा था और आस-पास के लोगों की बात सुन रहा था।

हंसोड़ व्यापारी स्मेल्कोव की तारीफ कर रहा था। कह रहा था कि उस आदमी को मजा लूटने का ढंग आता था—

"ऐश कर गया पट्ठा! इसे कहते हैं ऐश! असली साइबेरियाई ढंग की ऐश! वह ढंग जानता था साहिब, क्या छोकरी चुनी थी!"

मुखिया का विश्वास था कि इस मामले में जो निष्कर्ष विशेषज्ञ ने निकाले हैं, वही किसी न किसी रूप में महत्वपूर्ण साबित होंगे। प्योत्र गेरासिमोविच ने यहूदी क्लर्क से कोई हंसी की बात कही, जिस पर

दोनों ठहाका मार कर हस पडे। नेख्लूदोव से यदि कोई कुछ पूछता तो उसका जवाब वह सक्षिप्त सा हा या न म दे कर चुप हो जाता। वह नही चाहता था कि उसे कोई छेडे।

पेशकार उमी तरह टेढा चलता हुआ आया और जरी के सदस्यो को वापम अदालत में चलने को कहा। नेख्लूदोव को भय ने जकड लिया, मानो वह जुरी न हो कर स्वय मुजरिम हो। अपने अन्ततम मे वह महसूस करता था कि वह एक पतित आदमी है, जिसे लोगो के साथ आखें मिलाते हुए भी शर्म आनी चाहिए। परन्तु वह अभ्यासवश उठा, उसी तरह स्थिर, आश्वस्त चाल से चलता हुआ मच पर जा पहुचा, और मखिया की बगल में बैठ कर, टाग पर टाग रखे, अपनी कमानीदार ऐनक को हाथ मे हिलाने डुलाने लगा।

कैंदियो को भी बाहर ले जाया गया था। अब वे भी अन्दर लाये गये।

अदालत मे कुछ नये चेहरे भी दिखायी दिये। ये गवाह थे। नेख्लूदोव ने देखा कि एक गवाह पर से कात्यूशा की आखें हटाये नही हटती। यह कोई बडी मोटी सी औरत थी जो जगले के सामने वाली कतार मे बैठी थी। शोख, भडकीले रग के रेशमी व मखमल के कपड पहने थी, और सिर पर एक रिब्बन वाला हैट लगाये थी। उसकी दोना बाहे कोहनियो तक नगी थी, और एक बाजू पर बडा नाजुक और खूबसूरत सा बटुआ लटक रहा था। बाद मे नेख्लूदोव को पता चला कि यह औरत उस चकले की मालकिन थी जिसमे मास्लोवा रहा करती थी।

गवाहो की जाच-पडताल शुरू हुई। उनके नाम, धम इत्यादि पूछे गये। फिर यह सवाल उठा कि गवाहो के बयान शपथ पर लिये जायेंगे या नही। बूढा पादरी फिर पाव घसीटता अन्दर आया। छाती पर लटकते सुनहरी क्रॉस को उगली से हिलाते डुलाते पहले की तरह धीमी आवाज मे उसने गवाहो और विशेषज्ञ से शपथ ली। अब भी उसके चेहरे पर वही आश्वासन का भाव था कि जो काम वह कर रहा है वह कोई उपयोगी और महत्वपूण काम है।

शपथ के बाद गवाह फिर बाहर ले जाये गये। केवल चकले की मालकिन कितायेवा अपनी जगह पर बैठी रही। उससे इस वारदात के बारे मे पूछा गया कि बताइये, आप क्या जानती हैं। एक एक वाक्य पर वह

अपना सिर हिलाती, मय अपने ऊंचे टोप के और बड़े बनावटी ढंग से मुस्कराती। उसने वातफसील और चतुराई के साथ अपना बयान दिया। उसके बोलने के ढंग मे जर्मन लहजे की पुट थी।

वह बताने लगी कि सबसे पहले होटल का नौकर सीमन हमारे यहां एक लडकी की फर्माइश ले कर आया। जोला साइबेरिया के एक मालदार व्यापारी के लिए दरकार है। हम सीमन को पहले से जानता है। हमने ल्युबोव को भेजा। कुछ देर बाद जब ल्युबोव लौटा तो व्यापारी भी उसके साथ था। वह उस वक्त भी सरूर मे था—यह शब्द कहते हुए वह मुस्कराई—और हमारे यहा पहुच कर भी वह पीता रहा और लडकियों को खिलाता पिलाता रहा। उसके पास पैसा कम हो गया तो उसने इसी ल्युबोव को होटल मे भेजा। इसके साथ उसका कुछ मुहब्बत हो गया था। यह वाक्य कहते हुए उसने कैदी की ओर देखा।

नेख्लूदोव को ऐसे लगा जैसे मास्लोवा भी इस वाक्य पर मुस्कराई है। कैसी ज्लालत है, उसने सोचा। नेख्लूदोव के मन मे एक अजीब और धूमिल सी भावना मास्लोवा के प्रति उठी, जिसमे घृणा और अनुकम्पा दोनो मिली हुई थी।

"मास्लोवा के बारे मे तुम्हारी क्या राय है?" मास्लोवा के वकील ने झेंपते शर्माते हुए सवाल किया। इस आदमी ने अदालत म नौकरी के लिए दरख्वास्त दे रखी थी। इस समय उसे मास्लोवा का वकील मुकर्रर किया गया था।

"बहुत ही अच्छा लडकी ह," कितायेवा ने जवाब दिया। "पढा लिखा और सलीके वाला लडकी है। अच्छे घर म पल कर बडा हुआ है, फ्रासीसी जबान पढ सकता है। कभी कभी शराब जरा ज्यादा पी जाता है, फिर भी सभल कर रहता है। बहुत अच्छा लडकी है।"

कात्यूशा ने उस औरत की तरफ देखा, फिर सहसा जूरी के सदस्यों की ओर आखें फेर ली और नेख्लूदोव के चेहरे को एकटक देखने लगी। उसका चेहरा गभीर और कठोर हो उठा। उसकी एक आख म हल्का सा ऐंच था। दोनो आखें बडे विचित्र ढग से, कुछ देर तक नेख्लूदोव के चेहरे पर जमी रही। नख्लूदोव को यद्यपि भय ने जकड रखा था, फिर भी वह अपनी नजर इन तिरछी आखो पर से नही हटा पाया। उन आखो की सफेदी म वही स्वच्छता और चमक थी। उसे वह भयानक रात याद

ने आई। चारो ओर छायी हुई धुध, नीचे, नदी पर टूटती बरफ, और वह घटता चाद, जो पौ फटने से पहले उभर आया था, और जिसके कोने ऊपर को उठे हुए थे। कोई भयानक काली सी चीज़ उस चाद की रोशनी मे चमकने लगी थी। इन काली काली आखो को देखते हुए जो उसकी ओर टिकटिकी बाधे थी, उसे वह भयानक काली चीज़ याद हो आयी।

"इसने मुझे पहचान लिया है!" नेख्लूदोव ने सोचा, और सिकुड़कर पीछे हो गया, मानो डर रहा हो कि मुह पर तमाचा पडेगा। पर उसने उसे नही पहचाना था। कात्यूशा ने ठण्डी सास ली और फिर प्रधान जज की ओर देखने लगी। नेख्लूदोव ने भी ठण्डी सास ली। "यह कब खत्म होगा! जल्दी जल्दी क्यो नही करते?" उसने मन ही मन कहा। जब कभी शिकार खेलते समय कोई परिन्दा ज़ख्मी हो जाय और उसे हाथ से मारना पडे तो जो भावना मनुष्य के मन मे उठती है—घृणा और अनुकम्पा और परेशानी की भावना—वही इस समय नेख्लूदोव के मन मे उठ रही थी। शिकार के थैले मे ज़ख्मी परिन्दा छटपटा रहा होता है। आदमी को उस वक्त बडी घिन होती है, पर साथ ही दया भी आती है और आदमी चाहता है कि जल्दी से जल्दी उसे मार कर खत्म करे और किसी तरह मन मे से निकाल दे।

इस प्रकार की मिश्रित भावनाए नेख्लूदोव के मन मे उठ रही थी जब वह अदालत म बैठा गवाहो की जिरह सुन रहा था।

२०

पर मुकद्दमे की कारवाई तूल पकडती गई मानो नेख्लूदोव से उसे कोई वैर हो। एक एक गवाह से अलग अलग जिरह की गई। आखिर मे विशेषज्ञ से जिरह हुई। सरकारी वकील और दोनो वकीलो ने बडा गम्भीर मुह बना कर तरह तरह के फिजूल और अनगिनत सवाल पूछे। इसके बाद प्रधान जज ने जूरी से कहा कि शहादती चीजो की जाच कर ले। इन चीजो मे एक बडी सी अगूठी थी जिसके अन्दर छोटी छोटी पखुडियो की शक्ल में हीरे जड हुए थे। जाहिर है उसे पहली उगली मे

ही पहना जाता रहा होगा। एक टेस्ट-ट्यब रखी थी जिसमे जहर र विश्लेपण किया गया था। इन चीजो के साथ वावाइन्ग लेबल ला और उन पर सरकारी मोहर थी।

जूरी उठ कर इन चीजो का मुश्राइना करने जा ही रह थे जब सरकारी वकील उट खडा हुआ और माग की कि इन चीजो की जाच करने से पहले डाक्टर की शव-परीक्षा की रिपाट पढ कर सुनाई जाय।

प्रधान जज जल्दी जल्दी काम खत्म करना चाहता था ताकि स्विस लडकी के पास पहूच सके। वह जानता था कि इस रिपोट से केवल सुनने वाला की ऊब ही वढेगी और भाजन का समय और पीछे पड जायेगा। वह यह भी जानता था कि सरकारी वकील इसकी माग इसलिए कर रहा है कि कानून ने उसे इसका अधिकार दे रखा है। लाचार, उसे इजाजत दनी पडी।

सेक्रेटरी ने डाक्टर की रिपोर्ट निकाली और अपनी नीरस, तुतलाती आवाज मे पढने लगा। जब वह पढता तो "ल" और "र" के उच्चारण म कोई भेद पता न चलता।

"शरीर की बाहरी जाच से पता चला कि—

"१) फेरापोत स्मेल्कोव का कद छ फुट पाच इच था।"

"वाह, क्या डीलडौल था, एँ!" नेख्लदोव के कान म व्यापारी ने बडा रस लेते हुए फुसफुसा कर कहा।

"२) शक्ल सूरत से वह लगभग चालीस साल का नजर आता था।

"३) लाश सूजी हुई थी।

"४) मास का रग हरा था, कुछेक जगह पर गहरे रग के धब्बे थे।

"५) चमडी पर भिन्न भिन्न आकार के फफोले निकल आये थे। कही कही से चमडी के वडे वडे टुकडे फट कर उतर आये थे।

"६) बाल मोटे और भूरे रग के थे। हाथ लगाने पर उखड आते थे।

"७) आखें बाहर को निकली हुई थी, पुतलिया धमिल पड गई थीं।

'८) नाक, कान और मुह म से कोई तरल सी चीज रिस रिस कर वह रही थी।

"६) चेहरा और छाती इस कदर सूजे हुए थे कि गरदन नजर नहीं आती थी।'

इत्यादि इत्यादि।

पूरे चार पन्ना की रिपोर्ट थी, जिसमें इस तरह के २७ पैरे थे। एक एक तफ्सील के साथ उस व्यापारी की लाश की जाच की गई थी, जो शहर मे मौज मनाता रहा था। लाश बहुत बडी, सूजी हुई और मोटी थी। पहल से ही नेख्लूदोव के मन मे एक अस्पष्ट सी घिन उठ रही थी, लाश का वर्णन सुन कर वह और भी तीव्र हो उठी। कात्यूशा का जीवन, लाश की नाक म मे रिसता मवाद, बाहर को निकली हुई आखें, कात्यूशा के प्रति उसका अपना व्यवहार, सभी बातें एक ही क्रम से सबधित जान पडती थी। उसे एसा जान पडा जैसे उसके चारो ओर इसी प्रकार की घिनौनी चीजें उसे घेर हुए हो और वह उनमे डूब रहा हो।

आखिर बाहरी जाच की रिपोर्ट खत्म हुई। प्रधान जज ने इतमीनान की सास ली और सिर ऊपर उठाया, यह सोच कर कि रिपोर्ट अन्त तक पढ डाली गई होगी, पर सेक्रेटरी फौरन् अन्दरूनी जाच की रिपोर्ट पढने लगा।

प्रधान जज ने फिर सिर झुका लिया और हाथ माथे पर रख कर आखें बन्द कर ली। नेख्लूदोव के साथ बैठा व्यापारी कब से ऊघने लगा था, और किसी किसी वक्त उसका शरीर दायें-बायें झूलने लगता। बंदी और सशस्त्र पुलिस के सिपाही चुपचाप बैठे थे।

"अन्दरूनी जाच से पता चला कि—

"१) खोपडी की हड्डियो पर से चमडी बहुत आसानी से उतर आई। उसमें कही भी जमा हुआ खून नहीं मिला।

"२) खोपडी की हड्डिया साधारण मोटाई की थी, और अच्छी हालत म थी।

"३) दिमाग की झिल्ली पर लगभग चार-चार इच लम्बे दो धब्बे थे। झिल्ली का रग गदला सफेद था।" इत्यादि। रिपोर्ट में इसी तरह के १३ और पैरे दर्ज थे।

उसके बाद सहायको के नाम और दस्तखत थे। [illegible] नतीजे पर पहुचा था कि शव-परीक्षा के दौरान पेट [illegible] हद तक अन्तडियो और गुर्दे मे जो तब्दीलिया देखने [illegible], और जिनकी तफ्सील सरकारी रिपोर्ट म दी गई है, [illegible] पूरी पूरी सभावना जान पडती है कि [illegible]

हुई। यह जहर जब उसके पेट मे पहुचा तो शराब से मिली हुई हालत था। पेट की स्थिति से यह निश्चय करना बडा कठिन है कि कौन ह जहर दिया गया। पर यह अनुमान ठीक जान पडता है कि जहर शरा मे मिला कर दिया गया क्योंकि स्मेल्कोव के पेट मे बहुत सी शराब पा गयी थी।

"पीने मे भी लाजवाब था, ऐं," व्यापारी फिर फुसफुसाया, जिसने अभी अभी आख खोली थी।

इस रिपोर्ट को पढने म पूरा एक घण्टा लग गया था, परन्तु सरकार वकील अभी भी सन्तुष्ट नही था। इसकी समाप्ति पर प्रधान जज ने उस ओर देखते हुए कहा—

"मैं सोचता हू अब अन्दर के एक एक अग की रिपाट पढने की कोई जरूरत न होगी?"

जवाब म सरकारी वकील ने, बिना प्रधान जज की ओर देख, कडी आवाज मे कहा—

"मैं चाहता हू कि वह भी पढ कर सुनाई जाय।" सरकारी वकील बैठे बैठे, तनिक सा ऊपर को उठा। उसके चेहरे के भाव स लगता था मानो कह रहा हो कि रिपोट पढवाने का मुझे अधिकार है, और मैं अपना अधिकार मनवा कर छोडूगा। अगर इसकी इजाजत न दी गई तो मैं अपील दायर कर दूगा।

लबी दाढी वाले सज्जन, जिनकी दयाद्र आखो के नीचे गहरे छल्ले पड हुए थे और जिनके पट म शूल था, इस समय बहुत कमजोरी महसूस कर रह थे। उन्होंने प्रधान जज से कहा—

"यह सब पढवाने का आखिर लाभ क्या है? मुकदमे को घसीटते जाना है और क्या! ये नये रगरूट काम-वाम कुछ नही करते, केवल लम्बी हाकना जानते हैं।"

सुनहरी चश्मे वाले जज ने कुछ नही कहा। वह केवल मुह लटकाए सामने देखते रहे। उन्हे किसी ओर से भी भलाई की आशा नही थी, न अपनी बीवी की ओर से, न ही सामान्यत जीवन की ओर से।

रिपोट पढी जाने लगी—

"चिकित्सा विभाग के आदेशानुसार, १५ फरवरी, सन १८८ के दिन मैंने सहायक चिकित्सा इन्स्पेक्टर की उपस्थिति मे परीक्षण न०

३८ सम्पन्न किया।" सेक्रेटरी की आवाज मे पहले सी स्थिरता थी। रन्तु अब की वह और भी ऊंची आवाज मे पढने लगा था, मानो ऊघते लोगो को जगा देना चाहता हो। "इस परीक्षण मे निम्नलिखित भीतरी ग शामिल थे–

"१) दिल और दाया फेफडा (छ पौंड वाले शीशे के मरतवान मे)।

"२) आमाशय के अन्दर पाई गई चीजें (छ पौड वाले शीश के मरतवान मे)।

"३) आमाशय (छ पौंड वाले शीश के मरतवान म)।

"४) कलेजा, तिल्ली, गुर्दे (तीन पौंड वाले शीशे के मरतवान मे)।

"५) अंतडिया (छ पौंड वाले मिट्टी के मरतवान मे)।"

रिपोट की पढवाई अभी शुरु हुई थी कि प्रधान जज ने एक जज की ओर झुक कर उसके कान मे कुछ कहा, फिर दूसरी ओर झुक कर दूसरे जज के कान मे कुछ कहा, फिर दोनो की स्वीकृति प्राप्त करने के बाद ऊंची आवाज मे बोला–

"अदालत का मत है कि इस रिपोट के पढने की कोई जरूरत नही।"

सेक्रेटरी ने पढना बद कर दिया और कागज समेटने लगा। सरकारी वकील गुस्से मे कुछ लिखने लगा।

"जूरी से अनुरोध है कि वे शहादती चीजो को आ कर जाच कर ले," प्रधान जज ने कहा।

मुखिया और कुछेक अन्य सदस्य उठ कर मेज़ के पास आये। उनकी समझ मे नही आ रहा था कि अपने हाथो को कहा रखे। बारी बारी उन्होने अगूठी का, शीशे के मरतवान तथा टेस्ट-ट्यूब को देखा। व्यापारी ने तो अगूठी को पहन कर भी देखा।

"वाह, खूब मोटी उगली थी उसकी! खीरे जैसी!" अपनी जगह पर लौटते हुए वह बोला। जाहिर है कि उसने अपने मन मे उस भीमकाय व्यापारी का बडा मनोरजक चित्र बना रखा था।

२१

शहादती चीजो की जाच खत्म हुई। प्रधान जज ने घोषणा की कि जाच का काम समाप्त हुआ। इसके बाद उसने जल्दी जल्दी काम निबटाने के लिए, बिना अन्तराल किये ही, सरकारी वकील से बोलने को कहा।

वह आस लगाये बैठा था कि आखिर सरकारी वकील भी इन्सान है, उसे भी सिगरेट पीने या कुछ खाने की ख्वाहिश होती होगी, या कम से कम औरों पर तो रहम करेगा। परन्तु सरकारी वकील ने किसी पर रहम नहीं किया—अपने आप पर भी नहीं। वह स्वभावतः बड़ा मन्दबुद्धि आदमी था, इस पर यह दुर्भाग्य कि स्कूल की अंतिम परीक्षा में सोने का तमगा पाया था। और जब विश्वविद्यालय में पढ़ता था तो रामन ला का अध्ययन करते समय उसने "दासता" के विषय पर एक निबन्ध लिखा और इस निबंध पर भी उसे इनाम मिला था। अतः इस आदमी में आत्मविश्वास और आत्मसन्तोष कूट कूट कर भरे थे (इसलिए भी कि स्त्रियाँ उसे बहुत चाहती थीं)। उसकी मूर्खता का कोई वार-पार न था।

जब उसे बोलने के लिए कहा गया तो वह बड़ा धीरे धीरे उठा, ताकि सभी लोग कामदार बढ़िया वर्दी में सजे उसके सुडौल शरीर को आँख भर कर देख सकें। उसने दोनों हाथ मेज पर रखे, सिर को हल्का सा टेढ़ा कर के कमरे के चारों ओर देखा। फिर, कैदियों की ओर बिना देखे वह अपना भाषण देने लगा जिसे वह उस समय तैयार करता रहा था जब रिपोर्टें पढ़ी जा रही थीं।

"जूरी के आदरणीय सदस्यो! आपके विचाराधीन केस को आपकी आज्ञा से मैं एक लाक्षणिक अपराध का नाम दूंगा।"

सरकारी वकील यह समझता था कि वह जो भाषण देगा, वह एक महान सार्वजनिक महत्त्व का भाषण होगा, उन वकीलों के प्रसिद्ध भाषणों की ही तरह, जिनका उन दिनों बहुत नाम था। यह ठीक है कि इस समय उसका भाषण सुनने वाली केवल तीन औरतें थीं—एक दर्जिन, एक बावर्चिन और एक सीमन की बहिन—और इनके अलावा एक मर्द था जो बावर्ची का काम करता था, पर इससे क्या फर्क पड़ता है। शुरू शुरू में विख्यात वकीलों को भी ऐसी ही स्थिति का सामना करना पड़ा था। और उसका यह सिद्धान्त था कि सरकारी वकील हर बात में सदा मामले की जड़ देखे, अर्थात् अपराध के मनोवैज्ञानिक कारणों की गहराइयों तक पहुँचे और समाज के जख्मों को नंगा कर सामने रख दे।

'जूरी के माननीय सदस्यो! आपके विचाराधीन अपराध को आपकी आज्ञा से मैं इस शताब्दी के अंतिम वर्षों का—हमारे काल का—लाक्षणिक अपराध कहूँगा, जिसमें वे सब विशिष्टताएँ हैं, जो नैतिक

नन की उस शोचनीय प्रक्रिया की लाक्षणिकताए है, जिसके प्रभाव मे
मारे काल मे हमारे समाज के वे तत्व डूब रहे है, जो, आपकी आज्ञा
, मैं यह कहूगा कि पतन की भयानक प्रक्रिया की चपेट मे आये हुए
।"

सरकारी वकील ने खूब लम्बा चौडा भाषण दिया। उसकी कोशिश
ी कि कोई भी ऐसी प्रभावोत्पादक बात छूट न जाय, जिसे उसने पहले
े दिमाग म बिठा रखा था। साथ ही, कहीं भी भाषण टूटे नही, उसका
वाह अबाध गति से बहता जाय। इस तरह वह पूरे ७५ मिनट तक बोलता
हा। केवल एक बार वह रुका, और थोडी देर तक खडा अपनी थूक
निगलता रहा। पर शीघ्र ही वह सभल गया और पहले से भी ज्यादा
जोश के साथ बोलने लगा ताकि जो क्षति इस बाधा के कारण हुई थी
वह पूरी हो जाय।

बोलते हुए कभी उसका लहजा कोमल हो उठता, कभी उसम
खुशामद की पुट होती। कभी एक पाव पर खडा होता, कभी दूसरे पर
और जूरी की ओर देखता। कभी वह धीमे धीमे व्यावहारिक लहजे मे
बोलने लगता और अपनी कापी मे लिखी टिप्पणियो की ओर देखता। फिर
कभी उसकी आवाज ऊची हो उठती और वह अपराधियो को ललकारने
लगता। श्रोताओ की ओर स आखें हटा कर जूरी की ओर दखने लगता।
परन्तु कैदियो की ओर वह कभी नही देखता था। उनसे नजर चुरा जाता
था, हालाकि तीना अभियुक्त आखें फाड फाड कर उसी की ओर देख रहे थे।
अपनी विद्वत्ता दिखाने के लिए वह जगह जगह ऐसे विषयो का हवाला
देता जिनका उन दिनो, उस जैसे लोगो के बीच फैशन सा चल पडा था—
कुछेक का आज भी फैशन है—और जिन्हें वैज्ञानिक ज्ञान की चरम सीमा
माना जाता था। इनमे से कुछ विषय थे जुर्म करने की वशगत तथा
जन्मजात प्रवृत्ति, लोम्ब्रोसो और तार्द, क्रमिक विकास तथा अस्तित्व के
लिए सघर्ष, सम्मोहन विद्या तथा सम्मोहन का प्रभाव, शारको तथा
ह्रासवाद इत्यादि।

सरकारी वकील की व्याख्या के अनुसार व्यापारी स्मेल्कोव एक विशिष्ट
रूसी था—बलिष्ठ और सदाचारी—जिसने नीच लोगो के हाथो पड कर
अपने उदार और विश्वासी स्वभाव के कारण अपना सर्वनाश कर लिया
था।

सीमन कार्तीनकिन के चरित्र मे वे प्रवृत्तिया थी जो भूदास प्रथा
देन हैं और जिसका वशानुगत प्रभाव अब भी उसके ख़ून मे मौजूद है
इस मूढ और निरक्षर आदमी का कोई सिद्धान्त नही, यहा तक कि
कोई धर्म भी नही है। येवफीमिया इस आदमी की रखैल है और
प्रवृत्ति की शिकार है। इसके चरित्र मे पतन के सभी लक्षण प्रकट हैं
परतु अपराध की जड मास्लोवा है जो ह्रासवाद के निम्नतम स्तर
प्रतिनिधित्व करती है।

"यह औरत," मास्लोवा की ओर देखे बिना उसने कहा, "
कि इसकी मालकिन ने आज अदालत के सामने कहा, पढी लिखी है,
केवल लिखना-पढना ही नही जानती बल्कि फ्रासीसी भी जानती है।
अनाथ, जिसमे सभवत अपराध की जन्मजात प्रवृत्ति है, एक
सुसस्कृत परिवार मे पाली-पोसी गयी और अगर चाहती तो ईमानदारी
परिश्रमी जीवन व्यतीत कर सकती थी किंतु यह अपने हितकारी
को छोड, अपनी काम वासना की प्यास बुझाने, विषय भोग का रस
चकले मे जा बैठी और वहा भी इसने अपनी शिक्षा के फलस्वरूप
जैसी दूसरी पतिताओ से अलग एव विशिष्ट स्थान पा लिया और
कि माननीय जूरी ने अभी अभी इसकी मालकिन से सुना है यह वहा
मे आने वाले लोगो को एक रहस्यमय आकर्षण शक्ति से अपने वश
करती थी, वह शक्ति, जिसकी हमारे काल मे विज्ञान म भी खोज
है विशेषकर शारको प्रणाली के वैज्ञानिको द्वारा और जिसे विज्ञान
भाषा मे सम्मोहन प्रभाव का नाम दिया गया है। ठीक इस सम्मोहन
प्रभाव द्वारा इसने उस अमीर रूसी मेहमान को फास लिया, जो
था इतना दयालु था कि हम उसे दूसरा सादको कह सकते हैं और उस
भोले विश्वास का अनुचित लाभ उठा कर इसने पहले उसे लूटा और उसके
बाद क्रूरता के साथ उसकी जान ले डाली।"

"इसने तो जबान की पूरी लगाम ही छोड दी है," प्रधान जज ने
गभीर जज की ओर झुक कर मुस्कराते हुए कहा।

"बिल्कुल असहनीय आदमी है," गभीर जज बोला।

परन्तु सरकारी वकील । बडे नाटकीय अन्दाज से घूमा हुआ
भाषण उसी तरह जारी रखा—

'जूरी के माननीय सदस्यो ... आपका ... लोगो ... ही

ग निणय करना है, बल्कि किसी हद तक समाज का भाग्य निर्धारण ी करना है। समाज आपके निणय से प्रभावित होगा। मैं चाहता हू कि ाप इस अपराध की गभीरता को पूणतया समझे, उस खतरे को समझे ो मास्लोवा जैसे अपराधियों से समाज को पहुचता है। आपकी आज्ञा े मैं ऐसे लोगों को समाज के विकार ग्रस्त तत्वों का नाम दूगा। समाज को इस सक्रामक रोग से बचाइये, समाज के भोले भाले और स्वस्थ प्राणियों को इस सक्रामक रोग से बचाइये, सवनाश से बचाइये!"

सरकारी वकील अपनी कुर्सी पर बैठ गया। प्रत्यक्षत उसे अपने भाषण पे बेहद खुशी हुई थी। लगता था जैसे वह स्वय इस बात से अभिभूत हो उठा हो कि जजो के प्रत्याशित निणय का कितना महत्व होगा।

अगर अलकारो और शब्दाडम्बर की ओर ध्यान न दें तो सीधे-सादे शब्दो मे सरकारी वकील के भाषण का यह अथ निकलता था कि मास्लोवा ने व्यापारी का विश्वास प्राप्त कर के उसके मन पर जादू कर दिया। फिर उसी की चाभी ले कर, वह उसके होटल मे गई, इस इरादे से कि उसका सभी रुपया लूट लेगी। लेकिन जब सीमन और येवफीमिया ने उसे चोरी करते हुए पकड लिया तो इसे मजबूर हो कर उनके साथ चोरी का रुपया बाटना पडा। इसके बाद अपने अपराध के चिन्ह मिटाने के लिए वह व्यापारी को वापस होटल मे ले आयी और वहा उसे जहर दे कर मार डाला।

सरकारी वकील के बाद एक अधेड उम्र का आदमी वकीलो के बैंच पर से बोलने के लिए उठा। उसने फ्रॉक कोट पहन रखा था जो पीछे से अबाबील की पूछ की तरह लटक रहा था। कोट के नीचे से कलफ लगी सफेद कमीज़ को अद्धवृत्त सा दिख रहा था। उसने कार्तीनकिन और बोच्कोवा के पक्ष मे भाषण दिया। इस वकील को उन्होंने तीन सौ रूबल दे कर अपने लिए नियुक्त कर रखा था। अपने भाषण मे उसने यह सवित करने की कोशिश की कि ये दोनो निर्दोष है, और सारा दोष मास्लोवा का है।

उसने मास्लोवा के इस बयान को मानने से इन्कार किया कि रुपया निकालते वक्त बोच्कोवा और कार्तीनकिन दोनो उसके साथ थे। वह बार बार इस बात पर बल देता कि चूकि उस पर जहर देने का जुम लगाया गया है, इसलिए उसके बयान को स्वीकार नही किया जा सकता। २,५००

रूबल की रकम के बारे मे उसने कहा कि इतनी रकम आसानी से मेहनती और ईमानदार आदमी कमा सकते है, जब कि उन्हे तीन से रूबल तक रोज़ाना मेहमानो से बख्शीश मिल जाती हो। व्यापारी के मास्लोवा ने चुराये। चुराने के बाद यह रकम उसने किसी को दे दी हो या इससे खो गई होगी, क्योकि उस समय इसका दिमाग ठीक तरह से नही कर रहा था। व्यापारी को ज़हर केवल मास्लोवा ने ही दिया।

इसलिए उसने जूरी से अनुरोध किया कि वे चोरी के इलज़ाम से कार्तीनकिन और बोच्कोवा को बरी कर दें, और यदि वे बरी नहीं कर सकते तो कम से कम यह मान ले कि ज़हर देने मे उनका कोई हाथ नहीं था।

अन्त मे सरकारी वकील पर व्यग कसते हुए उसने कहा कि मेरे विद्वान मित्र ने वशानुगत प्रवृत्तियो के बारे म बडा आलिमाना लेक्चर दिया। लेकिन इससे वैज्ञानिक तथ्यो पर भले ही प्रकाश पडता हो, पर बोच्कोवा से उसका कोई सम्बन्ध नही क्योकि उसके कुल और वश के बारे मे किसी को कुछ भी मालूम नही।

सरकारी वकील ने क्रुद्ध दिखने की कोशिश की और घृणा से आश्चर्य प्रकट करते हुए अपने कन्धे बिचकाये और अपनी कापी में कुछ लिख लिया।

इसके बाद मास्लोवा का वकील उठा, और डरते डरते, बडे सकोच के साथ अपना भाषण देने लगा। उसने इस बात से इन्कार नही किया कि रुपया चुराने मे मास्लोवा का हाथ था, पर साथ ही यह बात भी ज़ोर से कही कि स्मेल्कोव को ज़हर देने का उसका कोई इरादा नहीं था। उसने यह पाउडर केवल नीद लाने के लिए दिया था। इस वकील ने भी अपने भाषण को थोडा जोशीला बनाने की कोशिश की। कहने लगा कि जिस आदमी ने वास्तव म मास्लोवा को व्यभिचार के गर्त म धकेला, उस शत्रु की ओर से कोई सज़ा नही मिली। उस दुष्कर्म की मार इस मास्लोवा को सहनी पडी है। परन्तु मनोविज्ञान के क्षेत्र म वकील की यह चेष्टा बिल्कुल असफल रही, यहाँ तक कि अदालत म बैठे लोग भी इसे सुनकर शर्मिन्दगी महसूस करने लगे। जिस समय उसने स्त्री जवान न पुरुषो की निर्दयता और स्त्रियो की असहायता के बारे म कुछ कहा तो प्रधान जज ने उसे पटरी पर लाने के लिए उसकी सहायताथ उसे धीरे से सुझाया कि इधर उधर की बात करने के बजाय वह सीधा तथ्यो पर ही ध्यान।

उसके भाषण के बाद सरकारी वकील जवाब देने के लिए उठा। पहले वकील के तर्कों का उत्तर देते हुए कहा कि भले ही बोच्कोवा के कुल-वंश का कुछ भी मालूम न हो, पर इससे वशानुगत प्रवृत्तियों का सिद्धान्त गलत साबित नही हो जाता। वशानुगत प्रवृत्तियों के नियमो को विज्ञान ने यहा तक प्रमाणित कर दिया है कि हम न केवल वश से जुर्म का बल्कि जुर्म से वश का भी अनुमान लगा सकते हैं। जहा तक मास्लोवा के पक्ष मे दिये गये तर्कों का सवाल है – मास्लोवा के वकील ने किसी काल्पनिक व्यक्ति पर दोष लगाया है कि उसने मास्लोवा की अस्मत लूटी और उसे व्यभिचार के गर्त मे झोका (सरकारी वकील ने "काल्पनिक" शब्द पर विशेष कटुता से बल दिया) – तो साक्ष्य हमारे सामने है, वह तो यही बतलाता है कि इस औरत ने अनगिनत लोगो को अपने जाल मे फास कर उन्हे भ्रष्ट किया होगा। इतना कह चुकने के बाद सरकारी वकील बडे गर्वोल्लास के साथ अपनी कुर्सी पर जा बैठा।

इसके बाद कैदियो को इजाजत दी गई कि वे अपने पक्ष मे जो कुछ कहना चाहे कह सकते हैं।

येवफीमिया बोच्कोवा ने फिर वही बात दोहराई कि न उसे इस मामले का कुछ मालूम है और न ही उसने उसमे भाग लिया है। उसने सारा दोष मास्लोवा पर लगाया। सीमन कार्तीनकिन बार बार यही कहता रहा – "यह आपका काम है, पर मैं निर्दोष हू। यह बडा अन्याय है।"

मास्लोवा अपने पक्ष मे कुछ भी नही बोली। जब प्रधान जज ने कहा कि यदि वह कुछ कहना चाहे तो कह सकती है तो उसने केवल आख उठा कर प्रधान जज की ओर देखा, फिर कमरे मे चारो ओर इस नजर से देखा मानो किसी निरीह हिरन पर शिकारी टूट पडे हो, और सिर झुका कर फफक फफक कर रोने लगी।

"क्या बात है?" व्यापारी ने नेख्लूदोव से पूछा। नेख्लूदोव के मुह से एक अजीब सी आवाज निकली थी। वह सिसकी दबाने की चेष्टा कर रहा था।

नेख्लूदोव अभी तक अपनी वर्तमान स्थिति के महत्व को नही समझ पाया था। उसका ख्याल था कि उसके स्नायु कमजोर होने के कारण ये सिसकिया उठ रही हैं, और आसू आखो मे भर रहे हैं। उसने आसू

के लिए अपनी कमानीदार ऐनक आखो पर लगा ली, फिर रूमाल निक-
कर नाक साफ करने लगा।

वह डर रहा था कि यदि अदालत मे सब लोगो को उसके दुर्व्यव-
का पता चल गया तो बडी बदनामी होगी। इस डर ने आत्मा की आवाज
को दबा दिया। यह डर ही इस समय सबसे अधिक बलवान था।

२२

कैदियो ने जो कहना था कह लिया। इसके बाद इस बात का नि-
होने लगा कि किस रूप मे जूरी के सदस्यो के सामने सवाल रख जाय।
इसमे कुछ वक्त लग गया। आखिर सवाल तैयार हो गये और प्रधान जज
ने अपना अन्तिम भाषण देना शुरू किया।

जूरी को अपना फैसला देने के लिए कहने से पहले प्रधान जज थोड़ा
देर तक बडे मीठे मीठे और दोस्ताना ढग से भाषण देता रहा और समझाता
रहा कि किस भाति चोरी चोरी होती है और डाका डाका होता है।
अगर किसी जगह पर ताला पडा हुआ है और चोरी हो जाती है तो
वह भी चोरी है और अगर किसी जगह पर ताला नही पडा हुआ है
और चोरी हो जाती है तो वह भी चोरी है। केवल पहली चोरी एक
ऐसे स्थान पर हुई जहा पर ताला था और दूसरी एक ऐसे स्थान प
जहा पर ताला नही था। बोलते हुए प्रधान जज किसी किसी वक्त नेख्ल्यूदो
की ओर देखता, इस आशा से कि यदि ये महत्वपूर्ण तथ्य उसकी समझ
मे आ गये तो वह बाकी सदस्यो को भी समझा देगा। जब उसने दे-
कि इन तथ्यो पर वह काफी प्रकाश डाल चुका है तो वह एक दूसरे विषय
की व्याख्या करने लगा। हत्या एक ऐसी क्रिया है जिसके परिणामस्वरू
इन्सान की मौत हो जाती है। इसलिए जहर देने को भी हत्या का नाम
दिया जा सकता है। जब प्रधान जज ने देखा कि यह तथ्य भी जूरी के
सदस्यो के दिमाग मे बैठ गया है तो उसने समझाना शुरू किया कि यदि
चोरी और हत्या एक ही वक्त म एक साथ किये जाय तो इस सम्मिलि-
जुर्म को हम हत्या के साथ की गई चोरी कहेगे।

वह स्वय अपना भाषण जल्दी समाप्त करना चाहता था, क्योंकि
जानता था कि उसकी स्विस प्रेमिका उसकी राह देख रही होगी, लेकिन

अपने व्यवसाय की उसे कुछ ऐसी आदत पड गई थी कि जब एक बार बोलना शुरू कर देता तो उसके लिए बोलना बन्द करना कठिन हो जाता था। अत अब वह जूरी को बडी तफसील के साथ यह समझाने लगा कि यदि वे समझें कि बंदिया ने जुम किया है तो वे अपने फैसले मे उन्हे मुजरिम ठहरायें, और यदि समझें कि उन्होने जुम नही किया है तो अपने फैसले मे कह दें कि वे मुजरिम नही हैं, और यदि वे देखें कि उन्होने एक जुम तो किया है लेकिन दूसरा जुम नही किया, तो वे उन्हे एक जुम मे मुजरिम करार दें और दूसरे जुम मे कह दें कि वे मुजरिम नही हैं। आगे चल कर प्रधान जज ने बताया कि उन्हे इस अधिकार का समझदारी के साथ प्रयोग करना चाहिए। वह यह भी समझाना चाहता था कि यदि किसी सवाल के जवाब मे वे अपना उत्तर हा म देना चाहते हो, तो यह सकारात्मक उत्तर उस सवाल के सभी अशो पर लागू होगा। परन्तु यदि वे समूचे प्रश्न का उत्तर हा मे नही देना चाहते हो, तो उन्हे चाहिए कि स्पष्टतया बता दें कि उनका जवाब प्रश्न के किस अश पर लागू नही होता। पर प्रधान जज ने घडी की ओर देखा। तीन बजने मे पाच मिनट रह गये थे। यह सोच कर कि और देर करना ठीक नही प्रधान जज ने अपने कानूनी तथ्यो का लेखा समेटने का निश्चय किया।

"इस मुकद्दमे की मुख्य बाते क्या हैं?" प्रधान जज ने कहा, और फिर वे सब बात दोहराने लगा, जो कई बार सरकारी वकील, अन्य वकीलो तथा गवाहो द्वारा कही जा चुकी थी।

प्रधान जज अपना भाषण देता गया। उसके साथ बैठे जज बडे ध्यान से उसका भाषण सुनते रहे। पर किसी किसी वक्त आख उठा कर घडी की ओर देख लेते। उनके विचार मे प्रधान जज का भाषण कुछ ज्यादा लम्बा था, लेकिन था बहुत अच्छा। ऐसा ही होना चाहिए था। सरकारी वकील, अन्य वकील तथा अदालत मे बठे सभी लोगा का यही विचार था। प्रधान जज ने अपनी अन्तिम टिप्पणिया समाप्त की।

जान पडा जैसे सब कुछ कहा जा चुका है। लेकिन नही। प्रधान जज को बोलने का अधिकार था, और वह इस अधिकार को जल्दी छोड देने वाला नहीं था। अपनी आवाज़ सुनते हुए उसे बडा आनद आ रहा था। अपना लहजा बडा प्रभावशाली लग रहा था। इसलिए उसने उचित समझा कि जूरी के सदस्यो को उनके अधिकारो के बारे मे भी दो शब्द कह दे,

कि उन्हे अपने अधिकारो का किस भाति उचित प्रयोग करना और अनुचित प्रयोग नही करना चाहिए। उन्हें यह नही भूलना कि उन्होंने शपथ ले रखी है, कि वे समाज के अन्त करण हैं। जा वे अपने कमरे मे करें उन्ह पवित्र मानें और उनका भेद बाहर किसी को न दें, इत्यादि, इत्यादि।

जब से प्रधान जज ने बोलना शुरू किया था, मास्लोवा का आख उसके चेहरे पर गडी हुई थी, मानो उसे डर हो कि कही कोइ शब्द छूट न जाय। इधर नेख्लदोव मास्लोवा के चेहरे की ओर देखे जा रहा था, क्योकि उसे अब यह डर नही था कि वह उसकी ओर देखन लगा। जब हम मुद्दत के बाद किसी परिचित चेहरे को देखते हैं तो सबसे पहले हमारा ध्यान उन बाहरी तबदीलियो की ओर जाता है जो उस अर्से में उस पर घटी हैं। फिर धीरे धीरे वह चेहरा अधिकाधिक अपने पहले रूप जैसा लगने लगता है, और जो परिवतन उसमे समय के कारण हुए हैं वे आखों से ओझल होने लगते हैं और हमारे आन्तरिक नेत्रो के सामने उसके विलक्षण, एकमात्र आध्यात्मिक व्यक्तित्व का मुख्य भाव उभर कर सामने आ जाता है।

और यही नेख्लूदोव अनुभव कर रहा था।

मास्लोवा ने कैदिया का लिबास पहन रखा था। उसका शरार गदरा गया था। छातिया उभर आयी थी। चेहरे का निचला हिस्सा भर गया था। माथे और कनपटियो पर कुछेक झुरिया नजर आने लगी थी। आखें सूजी हुई थी। पर इन सब तबदीलियो के बावजूद यह वही कात्यूशा थी जो उस ईस्टर के दिन अपने निष्कपट, प्रेमपूण नेत्रो से नेख्लूदोव की ओर देखती रही थी, जिसे वह हृदय से प्रेम करती थी। तब उसकी प्रेम भरी, हसती आखो म खुशी और जीवन की उमगें छलछला रही थीं।

"कितने बरसा से मने उसे नही देखा। अजीब बात है कि आज ही यह मुकद्मा पश होना था जब मैं जूरी का सदस्य हू और यह एक कैदी की हालत मे, मुजरिमा के कटघरे मे मेरे सामने खडी है। इस मामले का अन्त क्या होगा? काश कि यह मुकद्मा जल्दी से जल्दी खत्म हो पाये।"

उसके दिल मे पश्चात्ताप की भावना उठने लगी थी, परतु नेख्लूदोव ने उसे दबा दिया। वह चाहता था कि इसे केवल एक आकस्मिक घटना मात्र ही समझे, जो शीघ्र ही टल जायेगी और उसका कोई असर उसका

जीवन चर्या पर नही पडेगा। उसे अपनी स्थिति उस पिल्ले की सी लग रही थी जो किसी स्थान को अपने मल-मूत्र से गन्दा कर देता है और उसका मालिक उसे गरदन से पकड कर उसी जगह ले आता है, और उसकी नाक जबरदस्ती उस गन्दगी मे घुसेडता है ताकि उसे सबक आ जाय। पिल्ला किकियाता है, पीछे को हटता है, और अपने दुष्कृत्य के परिणाम से जहा तक हो सके दूर भागना चाहता है, परन्तु उसका निमम मालिक उसे छोडता नही। उसी तरह नेख्लूदोव को महसूस होने लगा था कि उसने कैसा घणित काम किया। साथ ही वह मालिक के बलिष्ठ हाथ का भी अनुभव कर रहा था। परन्तु अभी तक वह अपने दुष्कृत्य की गभीरता को पूणतया समझ नही पाया था, और यह मानने से इकार कर रहा था कि उसे किसी मालिक ने पकडा हुआ है। वह यह मानना नही चाहता था कि जो कुछ वह देख रहा है वह उसी के दुष्कृत्य का परिणाम है। परन्तु मालिक का निमम हाथ उसे पकडे हुए था, और नेख्लूदोव को पूर्वाभास सा हो रहा था कि वह भाग नही पायेगा। उसका धैय अब तक कायम था, और वह जूरी की पहली पक्ति मे रोज की तरह, बडी स्थिरता और आत्मविश्वास के साथ, बडे आराम से एक टाग दूसरी टाग पर रखे कुर्सी पर बैठा था, और हाथ म अपनी ऐनक हिला-डुला रहा था। परन्तु आत्मा की गहराइयो मे उसे सारा वक्त अपने दुष्कृत्य की क्रूरता, कायरपन और नीचता नजर आ रही थी। केवल इसी दुष्कृत्य की नही, बल्कि उसे अपने समूचे जीवन की भी स्वार्थाधता, अध पतन, क्रूरता, और निष्क्रियता का बोध हो रहा था। एक भयानक पर्दा था जो, न मालूम कैसे, इस पाप को तथा पिछले बारह साल के जीवन को उसकी आखो से छिपाये हुए था। आज वह पर्दा हिलने लगा था, और उसे इसके पीछे छिपी चीजो की झलक मिलने लगी थी।

२३

आखिर प्रधान जज ने अपना भापण समाप्त किया, और बडे खूबसूरत अन्दाज से प्रश्नो की सूची उठा कर जूरी के मुखिया के हाथ मे दी, जो उसे लेने के लिए आगे बढ आया। जूरी के सदस्यो ने चैन की सास ली

कि उन्हें अपने अधिकारों का किस भांति उचित प्रयोग करना चाहिए और अनुचित प्रयोग नहीं करना चाहिए। उन्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि उन्होंने शपथ ले रखी है, कि वे समाज के अन्तःकरण हैं। जो कुछ वे अपने कमरे में करें उन्हें पवित्र मानें और उनका भेद बाहर किसी को न दें, इत्यादि, इत्यादि।

जब से प्रधान जज ने बोलना शुरू किया था, मास्लोवा की आंखें उसके चेहरे पर गड़ी हुई थीं, मानो उसे डर हो कि कहीं कोई शब्द छूट न जाय। इधर नेख्लूदोव मास्लोवा के चेहरे की ओर देख जा रहा था, क्योंकि उसे अब यह डर नहीं था कि वह उसकी ओर देखने लगेगी। जब हम मुद्दत के बाद किसी परिचित चेहरे को देखते हैं तो सबसे पहले हमारा ध्यान उन बाहरी तबदीलियों की ओर जाता है जो उस अरसे में उस पर घटी हैं। फिर धीरे धीरे वह चेहरा अधिकाधिक अपने पहले रूप जैसा लगने लगता है, और जो परिवर्तन उसमें समय के कारण हुए हैं वे आंखों से ओझल होने लगते हैं और हमारे आन्तरिक नेत्रों के सामने उसके विलक्षण, एकमात्र आध्यात्मिक व्यक्तित्व का मुख्य भाव उभर कर सामने आ जाता है।

और यही नेख्लूदोव अनुभव कर रहा था।

मास्लोवा ने कैदियों का लिबास पहन रखा था। उसका शरीर गदरा गया था। छातियां उभर आयी थीं। चेहरे का निचला हिस्सा भर गया था। माथे और कनपटियों पर कुछेक झुरियां नजर आने लगी थीं। आंखें सूजी हुई थीं। पर इन सब तबदीलियों के बावजूद यह वही कात्यूशा थी जो उस ईस्टर के दिन अपने निष्कपट, प्रेमपूर्ण नेत्रों से नेख्लूदोव की ओर देखती रही थी, जिसे वह हृदय से प्रेम करती थी। तब उसकी प्रेम भरी, हंसती आंखों में खुशी और जीवन की उमंगें छलछला रही थीं।

"कितने बरसों से मैंने उसे नहीं देखा। अजीब बात है कि आज ही यह मुकद्दमा पेश होना था जब मैं जूरी का सदस्य हूं और यह एक कैदी की हालत में, मुजरिमों के कटघरे में मेरे सामने खड़ी है। इस मामले का अन्त क्या होगा? काश कि यह मुकद्दमा जल्दी से जल्दी खत्म हो पाये!"

उसके दिल में पश्चात्ताप की भावना उठने लगी थी, परन्तु नेख्लूदोव ने उसे दबा दिया। वह चाहता था कि इसे केवल एक आकस्मिक घटना मात्र ही समझे, जो शीघ्र ही टल जायेगी और उसका कोई असर उसके

जीवन चर्या पर नही पडेगा। उसे अपनी स्थिति उस पिल्ले की सी लग रही थी जो किसी स्थान को अपने मल मूत्र से गदा कर देता है और उसका मालिक उसे गरदन से पकड कर उसी जगह ले आता है, और उसकी नाक जबरदस्ती उस गदगी मे घुसेडता है ताकि उसे सबक आ जाय। पिल्ला किकियाता है, पीछे को हटता है, और अपने दुष्कृत्य के परिणाम से जहा तक हो सके दूर भागना चाहता है, परन्तु उसका निमम मालिक उसे छाडता नही। उसी तरह नेख्लूदोव को महसूस होने लगा था कि उसने कैसा घृणित काम किया। साथ ही वह मालिक के बलिष्ठ हाथ का भी अनुभव कर रहा था। परन्तु अभी तक वह अपने दुष्कृत्य की गभीरता को पूणतया समझ नही पाया था, और यह मानने से इन्कार कर रहा था कि उसे किसी मालिक ने पकडा हुआ है। वह यह मानना नही चाहता था कि जो कुछ वह देख रहा है वह उसी के दुष्कृत्य का परिणाम है। परन्तु मालिक का निमम हाथ उसे पकडे हुए था, और नेख्लूदोव को पूर्वाभास सा हो रहा था कि वह भाग नही पायेगा। उसका धैय अब तक कायम था, और वह जूरी की पहली पक्ति मे रोज की तरह, बडी स्थिरता और आत्मविश्वास के साथ, बडे आराम से एक टाग दूसरी टाग पर रखे कुर्सी पर बैठा था, और हाथ मे अपनी ऐनक हिला-डुला रहा था। परन्तु आत्मा की गहराइयो मे उसे सारा वक्त अपने दुष्कृत्य की क्रूरता, कायरपन और नीचता नजर आ रही थी। केवल इसी दुष्कृत्य की नही, बल्कि उसे अपने समूचे जीवन की भी स्वार्थाधता, अध पतन, क्रूरता, और निष्क्रियता का बोध हो रहा था। एक भयानक पर्दा था जो, न मालूम कैसे, इस पाप को तथा पिछले बारह साल के जीवन को उसकी आखो से छिपाये हुए था। आज वह पर्दा हिलने लगा था, और उसे इसके पीछे छिपी चीजो की झलक मिलने लगी थी।

२३

आखिर प्रधान जज ने अपना भाषण समाप्त किया, और बडे खूबसूरत अन्दाज से प्रश्नो की सूची उठा कर जूरी के मुखिया के हाथ म दी, जो उसे लेने के लिए आगे बढ़ आया। जूरी के सदस्यो ने चैन की सास ली

कि अब अपने कमरे मे जा पायेंगे और उठ उठ कर अदालत से बाहर जाने लगे। बाहर जाते हुए वे ऐसे लग रहे थे मानो किसी बात पर लज्जा महसूस कर रहे हो। अब भी उनकी समझ मे नही आ रहा था कि अपने हाथ कहा पर रखें। ज्यो ही वे अपने कमरे के अन्दर पहुचे तो दरवाजा बन्द कर दिया गया और एक हथियारबन्द सिपाही दरवाज़े के बाहर आ कर खडा हो गया। उसने मियान मे से तलवार निकाली और उसे कन्धे पर रख कर पहरा देने लगा। जज भी अदालत के कमरे म से उठ गये। कैदियो को भी बाहर ले जाया गया।

जूरी के सदस्यो ने कमरे मे पहुचते ही पहले की तरह अपने सिगरेट सुलगाये। जितनी देर तक वे अदालत मे बैठे रहे थे, उन सब का अपनी स्थिति किसी हद तक अस्वाभाविक और झूटी लगती रही थी। पर अपने कमरे मे पहुच कर, सिगरेट सुलगाते ही, यह भावना जाती रही थी। उन्होंने इतमीनान की सास ली और बैठते ही बडे जोश से एक दूसरे के साथ बाते करने लगे।

"लडकी निर्दोष है, वह इस मामले मे फस गई है," दयालुस्वभाव व्यापारी बोला। "हमे सिफारिश करनी चाहिए कि इसे क्षमा कर दिया जाय।"

"इसी बात पर तो हमे विचार करना है," मुखिया कहने लगा, "हमे अपनी निजी भावनाओ को बहुत महत्व नही देना चाहिए।"

"प्रधान जज का भाषण अच्छा था," कनल बोला।

"खाक अच्छा था, मुझे तो नीद आने लगी थी!"

"मुख्य बात तो यह है कि अगर मास्लोवा नौकरो के साथ नही मिली थी तो नौकरो को रुपये का पता ही नही चल सकता था," यहूदी क्लर्क बोला।

"तो आप क्या समझते हैं, रुपये मास्लोवा ने चुराये है?" जूरी के एक सदस्य ने पूछा।

"मैं कभी भी यह नही मान सकता," दयालुस्वभाव व्यापारी बोला, "यह सब उस लाल लाल आखो वाली चुडैल की करतूत है।"

"सभी छटे हुए बदमाश हैं," कनल ने कहा।

"पर वह तो कहती है कि उसने कमरे के अन्दर पाव तक नही रखा था।'

"तो तुम उसकी बात मानोगे? कुछ भी हो जाय, मैं उस डायन की बात तो कभी भी नही मान सकता।"

"तुम्हारे मानने या न मानने से तो इस सवाल का फैसला नही हो जायेगा," क्लर्क बोला।

"चाभी तो लडकी के पास थी।"

"तो क्या हुआ?" व्यापारी झट से बोल उठा।

"और अगूठी भी।"

"पर क्या लडकी ने सब बात साफ साफ नही बता दी?" व्यापारी ने फिर चिल्ला कर कहा। "वह आदमी अपने मिज़ाज का था, और कुछ ज्यादा पी भी गया था। उसने लडकी का एक घूसा जमा दिया। सीधी सी बात है। उसके बाद उसे अफसोस हुआ—स्वाभाविक बात है, और उसने कहा, बस, बस, रोओ नही, यह लो, यह ले लो। कहते है उसका कद छ फुट पाच इच था। वजन भी कम से कम तीन मन रहा होगा।"

"सवाल यह नही है," प्योत्र गेरासिमोविच कहने लगा, "सवाल यह है कि इस मामले की जड मे कौन है? यह लडकी या नौकर? इनमे से किसको इसका ख्याल आया और किसने बाकियो को उकसाया?"

"नौकर अकेले यह काम नही कर सकते थे। चाभी लडकी के पास थी।"

इस तरह की फुटकर बाते काफी देर तक चलती रही। अन्त मे मुखिया ने कहा—

"क्षमा कीजिये, क्या यह बेहतर नही होगा कि हम मेज पर बैठ कर इस मामले पर विचार करें? आइये, चलिये।" और वह जा कर अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठ गया।

"लेकिन ये रण्डिया जो न करें वह थोडा," क्लर्क बोला। उसकी राय मे मास्लोवा मुजरिम थी। और इस राय की पुष्टि मे वह सुनाने लगा कि किस तरह एक दिन एक सडक पर उसके किसी दोस्त को एक रण्डी मिली जिसने उसकी घडी चुरा ली।

यह सुन कर कर्नल को भी एक घटना याद हो आई, जो इससे भी ज्यादा रोचक थी और जिसमे चादी की समोवार चुराई गई थी।

"सज्जनो, मेरी प्रार्थना है कि आप इन प्रश्नों को सुनें," 1। ने पेंसिल से मेज को ठकारते हुए कहा।

सब चुप हो गये।

प्रश्नो को इस तरह पेश किया गया था—

१) क्या सीमन कार्तीनकिन-किसान, उम्र तैंतीस वर्ष, गाव बार, जिला क्रापीवेन्स्की—इस बात का मुजरिम है कि उसने १७ जनवरी, १ के दिन और लोगो से मिल कर नामक शहर मे स्मेल्कोव नामक व्यापार को ब्राण्डी म जहर मिला कर पिलाया, इस इरादे से कि उसे मार कर उसका रुपया लूट लिया जाय, जिसके परिणामवश स्मेल्कोव की मृत्यु हो गई? क्या वह इस बात का भी मुजरिम है कि इसने उस आदमी से लगभग दो हजार पाच सौ रूबल नकद और एक अगूठी चुरा ली?

२) क्या येवफीमिया इवानोव्ना बोच्कोवा, उम्र ४३ वर्ष, इस बात की मुजरिम है कि उसने उपरोक्त अपराध किये है?

३) क्या येकातेरीना मिखाइलोव्ना मास्लोवा, उम्र २७ वर्ष, इस बात की मुजरिम है कि उसने उपरोक्त पहले सवाल मे दिये गए अपराध किये है?

४) यदि कैदी येवफीमिया बोच्कोवा ने वह अपराध नही किया जिसका उल्लेख पहले प्रश्न मे किया गया है तो क्या वह इस बात की मुजरिम है कि उसने १७ जनवरी, १८८ को शहर म, जहा वह होटल "मावीतानिया" मे मुलाजिम थी, होटल के एक मेहमान, व्यापारी स्मेल्कोव के बैग मे से जिस पर ताला चढा हुआ था, और जो उपरोक्त व्यापारी के कमरे मे रखा था, २,५०० रूबल की रकम चुरा ली? और इस काम के लिए उसने बैग पर लगे ताले को उसी द्वारा लायी चाभी लगा कर खोला?

मुखिया ने पहला सवाल पढ कर सुनाया।

"तो सज्जनो, आपकी क्या राय है?"

इस प्रश्न का उत्तर मिलने मे देर नही लगी। सभी ने एकमत हो कर कहा—"मुजरिम है!" उन्हे विश्वास था कि जहर देने और चोरी करने, दोनो कामो मे कार्तीनकिन का हाथ था। केवल एक बूढे मजदूर की राय इससे भिन्न थी। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर म उसने एक ही जवाब दिया था कि बरी कर दिया जाय।

मुखिया ने समझा कि सवाल उसकी समझ में नही आया, इसलिए वह उसे बताने लगा कि किस तरह हर बात से कार्तीनकिन और बोच्कोवा का अपराध सिद्ध होता है। जवाब मे बूढे ने कहा कि मैं सवाल को भली भाति समझता हू पर अब भी समझता हू कि यह बेहतर होगा कि उस पर दया की जाय। "हम खुद भी कोई सन्त नही हैं," उसने कहा और अपनी राय पर अडा रहा।

दूसरे सवाल पर जिसका सम्बध बोच्कोवा से था बहुत बहस हुई, बहुत शोर-गुल हुआ, परन्तु अन्त मे यही कहा गया कि "मुजरिम नही है"। उसके विरुद्ध कोई स्पष्ट प्रमाण नही था कि जहर देने मे उसका कोई हाथ था। इस तथ्य पर उसके वकील ने भी बहुत बल दिया था।

व्यापारी मास्लोवा को बरी करवाना चाहता था। इसलिए उसने इस बात पर जोर दिया कि अपराध की जड बोच्कोवा ही थी। जूरी के बहुत से सदस्यो का भी यही ख्याल था। लेकिन मुखिया बडा कानूनी आदमी था, उसने कहा कि हमारे पास कोई प्रमाण नही जिसके आधार पर हम कह सके कि जहर देने मे बोच्कोवा ने भाग लिया। बडी बहस हुई, पर अत मे मुखिया की राय ही सबको माननी पडी।

लेकिन चौथे सवाल के जवाब मे, जिसका सम्बध भी बोच्कोवा से था, कहा गया कि "मुजरिम है"। परन्तु बूढे मजदूर के आग्रह पर सिफारिश की गई कि उसे क्षमा कर दिया जाय।

तीसरे सवाल पर बडी गरमागरम बहस हुई। यह मास्लोवा के बारे म था। मुखिया का कहना था कि जहर देने और चोरी करने, दोना मे वह अपराधी थी। लेकिन व्यापारी इसका विरोध करता था। कनल, क्लक और बूढे मजदूर ने व्यापारी का पक्ष लिया, बाकी लोग असमजस मे थे। नतीजा यह हुआ कि मुखिया की राय जोर पकडने लगी। इसका मुख्य कारण यह था कि सभी थक गये थे, और ऐसा मत अपनाना चाहते थे जिससे जल्दी जल्दी किसी फैसले पर पहुच सके ताकि छुट्टी हो।

नेख्लूदोव को यकीन था कि मास्लोवा निर्दोष है। उसने न चोरी की है और न ही जहर दिया है। उसने आज जो कुछ देखा, और जो कुछ वह मास्लोवा के बारे मे पहले से जानता था, उसके आधार पर वह इस नतीजे पर पहुचा, और उसे यकीन था कि बाकी सब लोग भी इसी नतीजे पर पहुचेंगे। व्यापारी के तक बडे बेडौल से थे (प्रत्यक्षत इनका आधार

मास्लोवा का शारीरिक आकर्षण था जिस पर व्यापारी लट्टू हो रहा था, और जिसे छिपाने की व्यापारी ने कोई कोशिश भी नही की थी)। उधर मुखिया अपनी बात पर अड़ा हुआ था। और सबसे बडी बात यह थी कि लोग थक गये थे। इन सब बातो के कारण इस बात की सभावना बनने लगी थी कि मास्लोवा को मुजरिम करार दिया जायेगा। जब नेख्लूदोव ने यह देखा तो वह चिन्तित हो उठा और उसका मन चाहा कि उठ कर अपनी राय दे। लेकिन वह डर रहा था कि कही लोगो को मास्लोवा के साथ उसके सम्बन्ध का पता न चल जाय। पर फिर भी उसने सोचा कि यदि इसी तरह चलता रहा तो मामला हाथ से निकल जायेगा। शर्माते सकुचाते हुए उसने बोलने का निश्चय किया, उसका चेहरा भी पीला पड़ गया। पर ऐन उसी वक्त प्योत्र गेरासिमोविच ने एतराज उठाने शुरू कर दिये और वही बात कहने लगा जो नेख्लूदोव कहना चाहता था। मुखिया को अफसरो की तरह बाते करते देख कर वह झल्ला उठा था।

"मुझे भी एक मिनट के लिए बोलने की इजाजत दीजिये," वह बोला, "आप यह समझते जान पडते हैं कि चूकि चाभी मास्लोवा के पास थी इसलिए चोरी भी उसी ने की है। क्या यह नौकरो के लिए कही ज्यादा आसान नही था कि मास्लोवा के होटल मे से चले जाने के बाद वे कोई दूसरी चाभी लगा कर बैग खोल लेते?"

"क्यो नही, क्यो नही," व्यापारी ने कहा।

"यह सभव ही नही कि उसने रुपया लिया हो। रुपया ले लेती तो उसकी समझ मे ही न आता कि उसके साथ करे क्या।"

"यही तो मैं कहता हू," व्यापारी बोला।

"हा, यह मुमकिन है कि मास्लोवा के होटल मे आने पर ही उन्हे चोरी करने का ख्याल आया। इसके बाद उन्होंने मौके का फायदा उठाया और सारा दोष मास्लोवा के सिर मढ दिया।"

प्योत्र गेरासिमोविच इतना चिढ कर बोला कि उसे सुन कर मुखिया भी चिढ उठा। उसने जिद्द पकड ली और उसकी बात का विरोध करने लगा। पर प्योत्र गेरासिमोविच की बाते जूरी के सदस्यो को इतनी तर्कसगत जान पडी कि उनमे से अधिकाश उसके हक मे हो गये, और यह निश्चय किया कि मास्लोवा ने रुपये नही चुराये और अगूठी भी उसे दी गई थी उसने खुद नही ली। पर जब यह सवाल उठा कि जहर देने मे उसका

कोई हाथ था या नही तो व्यापारी बडे जोश के साथ बोला कि इस अपराध से भी उसे बरी कर दिया जाना चाहिए, क्योकि उसके ज़हर देने का कोई प्रयोजन ही नही हो सकता था। जवाब मे मुखिया ने कहा कि उसे किसी सूरत मे भी बरी नही किया जा सकता क्योकि उसने स्वय अपना जुर्म कबूल किया है और कहा है कि उसने पाउडर दिया।

"हा, मगर यह समझ कर कि वह अफीम थी।"

"अफीम से भी तो आदमी मर सकता है," कर्नल ने कहा। कर्नल का ध्यान किसी बात पर भी ज्यादा देर तक टिक नही सकता था। उसने बताना शुरू किया कि एक बार उसके साले की पत्नी ने कुछ ज्यादा मात्रा मे अफीम खा ली। अगर पडोस मे ही डाक्टर नही रहता होता, और वक्त पर इलाज न हो जाता तो वह जरूर मर जाती। कर्नल ने यह कहानी इतने रोचक ढग से सुनाई, इतनी स्थिरता और बडप्पन के साथ कि बीच मे बोलने का किसी को भी साहस नही हुआ। पर उसकी कहानी सुन कर, छूत की बीमारी की तरह, क्लर्क को भी एक कहानी याद हो आई।

"कई लोगो को अफीम खाने की आदत पड जाती है, यहा तक कि चालीस चालीस बूदो तक वे चढा जाते है। मेरा एक रिश्तेदार था "

परन्तु कर्नल को उसका इस तरह विघ्न डालना पसन्द नही था। उसने अपनी कहानी जारी रखी और सुनाने लगा कि अफीम का उसके साले की पत्नी पर क्या असर हुआ।

"सज्जनो, यह मत भूलिये कि पाच बजा चाहते हैं," जूरी का एक सदस्य बोला।

"अच्छी बात है, तो सज्जनो, बताइये, क्या निश्चय हुआ?" मुखिया ने पूछा। "क्या हम यह कहे कि उसने अपराध तो किया है लेकिन चोरी करने का उसका इरादा नही था? न ही कोई चीज़ उठाने का? क्या यह काफी होगा?"

प्योत्र गेरासिमोविच सहमत हो गया। उसे इस बात की खुशी थी कि उसकी जीत हुई है।

"पर हमे यह सिफारिश करनी चाहिए कि उसे क्षमादान दिया जाय," व्यापारी बोला।

सभी सहमत हो गये। केवल बूढा मजदूर बार बार यही कहता रहा कि उन्हें यह घोषणा करनी चाहिए कि वह मुजरिम नही है।

"एक ही बात है," मुखिया ने समझाया, "चोरी करने का इरादा नही था, और कोई चीज नही उठायी। इसलिए स्पष्ट है कि वह बकसूर है।"

"अच्छी बात है। यही ठीक रहेगा। और हम सिफारिश करते हैं कि उसे क्षमादान दिया जाय," व्यापारी ने खुशी खुशी कहा।

वे सब इस कदर थके हुए थे, और बहस के कारण यहा तक अपनी सुध-बुध खो बैठे थे कि किसी को भी यह नही सूझा कि साथ मे यह भी जोड दें कि मास्लोवा ने पाउडर देने का अपराध तो किया है परन्तु उसका कोई इरादा जान लेने का नही था।

नेख्लूदोव इतना उत्तेजित था कि इस छूट की ओर उसका ध्यान ही नही गया। बस, जैसा फैसला हुआ था उसके अनुसार जवाब लिख डाले गये और जूरी उन्हे अदालत मे ले चले।

रब्ले ने एक जगह एक जज का ज़िक्र किया है जो किसी मुकद्दमे की पैरवी करते समय तरह तरह के कानूनो के हवाले देता, कितने ही पन्ने न्याय ग्रथो मे से लातीनी जबान के पढ कर सुनाता और इसके बाद मुद्दई मुद्दालेह से कहता कि पासा फेंक कर फैसला कर लीजिये, अगर पासा जिस्त मे बैठे तो मुद्दई ठीक कहता है, और जो ताक मे बठे तो मुद्दालेह।

इस मुकद्दमे की भी वैसी ही स्थिति थी। यह फैसला इसलिए नहीं किया गया कि सभी इससे सहमत थे, बल्कि इसलिए कि प्रधान जज अपने लम्बे भाषण मे वह बात बताना भूल गया था जो वह हमेशा ऐसे मौको पर बता दिया करता था कि इन प्रश्नो के उत्तर मे यह भी लिखा जा सकता है—"कुसूरवार है, लेकिन इसका इरादा जान लेने का नहीं था।" इसलिए भी कि कनल बडी देर तक अपने साले की बीवी की कहानी सुनाता रहा था। और नेख्लूदोव इतने उत्तेजित हो उठा था कि इस शर्त की ओर—"इरादा जान लेने का नही था"—उसका ध्यान ही नही गया। उसका ख्याल था कि ये शब्द लिख देने से ही कि "लूटने का इरादा नही था", फर्देजुम रद्द हो जाता है। इसलिए भी कि जब प्रश्न और उनके उत्तर पढे जा रहे थे तो प्योत्र गेरासिमोविच कमरे मे से बाहर गया हुआ था। पर मुख्य कारण यह था कि सभी थक चुके थे और जल्दी से जल्दी छुट्टी करना चाहते थे, इसलिए इस मामले को खत्म करने के लिए जो भी फैसला किया जा सके उससे सहमत होने के लिए तयार थे।

जूरी ने घंटी बजायी। हथियारबंद सिपाही ने, जो बाहर पहरे पर खडा था, अपनी तलवार मियान मे रखी और दरवाजे के सामने से हट गया। जज अपनी अपनी जगह पर बैठ गये, और एक एक कर के जूरी के सदस्य बाहर आने लगे।

मुखिया जवाबो का कागज उठाये बडी गभीरता से अदालत मे दाखिल हुआ और उसे प्रधान जज के हाथ मे दे दिया। प्रधान जज ने उसे पढा, और हैरान हो कर हाथ हिलाया, फिर अपने साथियो से मशविरा करने लगा। प्रधान जज को इस बात का अचम्भा हुआ था कि जहा पचो ने यह शर्त तो लिख दी कि "लूटने का इरादा नही था", वहा दूसरी शर्त नही लिखी कि "जान लेने का इरादा नही था"। जूरी के फैसले का तो यह मतलब निकलता था कि मास्लोवा ने न चोरी की है, न लूटा है, लेकिन फिर भी बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के एक आदमी को जहर दे डाला है।

"कैसा बेहूदा फैसला है," प्रधान जज ने बायें हाथ बैठे जज से फुसफुसा कर कहा। "इसका मतलब है साइबेरिया मे कैद व मशक्कत की सजा। और लडकी निर्दोष है।"

"क्या आप समझते हैं कि लडकी निर्दोष है?"

"हा, बिल्कुल निर्दोष है। मेरे ख्याल मे इस केस पर धारा ८१८ लागू की जानी चाहिए (धारा ८१८ के अनुसार यदि अदालत जूरी के फ़ैसले को अन्यायपूर्ण समझे तो उसे रद्द कर सकती है)।

"आपका क्या ख्याल है?" प्रधान जज ने दूसरे जज से पूछा।

दयालुस्वभाव जज ने फौरन जवाब नही दिया। उसके सामने एक कागज पर किसी सख्या के अक लिखे थे। उसने इन अको को जोडा और तीन पर तक्सीम किया। लेकिन वह तीन पर तक्सीम नही हो सका। उसने मन मे फैसला किया था कि अगर जोड तीन पर तकसीम हो गया तो वह प्रधान जज से सहमत हो जायेगा। पर अब तकसीम न होने पर भी, चूकि वह दयालुस्वभाव पुरुष था, इसलिए सहमत हो गया।

"मैं भी सोचता हू कि उस धारा को लागू करना चाहिए," वह बोला।

"और आप?" प्रधान जज ने गभीर जज को सबोधित करते हुए पूछा।

"हरगिज नही," उसने दृढता से जवाब दिया, "पहले ही अख़ब
मे खबरें छपती रहती हैं कि जूरी कैदियो को बरी करते रहते हैं।
अगर जजो ने बरी करना शुरू कर दिया तो लोग क्या कहेंगे। मैं कि
सूरत मे भी इससे सहमत नही हो सकता।"

प्रधान जज ने घडी निकाल कर देखी।

"बडे अफसोस की बात है, मगर किया क्या जाय?" और
कागज़ मुखिया को पढ़ कर सुनाने के लिए दिया।

सभी उठ खडे हुए। मुखिया ने एक पाव पर से अपना बाे
कर दूसरे पाव पर रखा खासा, और फिर प्रश्न और उत्तर पढ़न
कर दिये। अदालत मे सभी लोग—सेक्रेटरी, वकील, यहा तक कि सर
वकील भी—हैरान रह गये।

कैदी अचेत से बैठे थे। ज़ाहिर था कि इन जवाबो का मतलब उ
समझ मे नही आया। सब लोग बैठ गये। प्रधान जज ने सरकारी व
से अभियुक्तो को सज़ा तजवीज़ करने के लिए कहा।

सरकारी वकील को इस सफलता की आशा नही थी। वह खुश
कि मास्लोवा को सज़ा दिलाने मे कामयाब हुआ है, और समझता
कि इसका श्रेय उसकी वाक्पटुता को है। उसने यथावश्यक निर्देश
देखी, और उठ कर बोलने लगा—

"मैं चाहता हू कि सीमन कार्तीनकिन को धारा १४५२ तथा
१४५३ के चौथे पैरे के अनुसार सज़ा दी जाय, येवफीमिया बो
को धारा १६५६ के अनुसार और येकातरीना मास्लोवा को धारा १
के अनुसार।"

तीनो सज़ाए बेहद कडी थी। इनसे ज्यादा कडी सज़ाए नही दी
सकती थीं।

"सज़ाओ पर विचार करने के लिए अदालत की कार्यवाही कुछ
के लिए स्थगित की जाती है," प्रधान जज ने उठते हुए कहा।

उसके उठने के बाद सभी लोग उठ खडे हुए। कोई बाहर चला
और कोई वहीं टहलने लगा। सब खुश थे कि एक काम अच्छी तरह स
हो गया।

मुखिया नेख्लूदोव के पास खडा उसे कुछ बता रहा था। इत
प्योत्र गेरासिमोविच पास आ कर नेख्लूदोव से बोला—

"क्या आपको मालूम है कि हमने तो सारा मामला ही खराब कर दिया है? लडकी तो अब साइबेरिया की हवा खायेगी।"

"क्या कह रहे हो?" नेख्लूदोव ने चिल्ला कर कहा। अब की उसे इस अध्यापक की बेतकल्लुफी बुरी नही लगी।

"हम लोगो ने जवाब मे यह नही लिखा कि कुसूरवार तो है लेकिन इसका इरादा जान लेने का नही था। सेक्रेटरी ने अभी अभी मुझे बताया है कि सरकारी वकील उसे पन्द्रह साल कडी कैद की सजा दिलवा रहा है।"

"तो क्या हुआ? यही तो निश्चय हुआ था,' मुखिया बोला।

प्योत्र गेरासिमोविच ने इसका विरोध किया, कहने लगा कि चूंकि उसने रुपया नही चुराया इसलिए जाहिर है कि उस आदमी को मारने का इसका कोई इरादा नही हो सकता था।

"लेकिन बाहर निकलने से पहले मैंने सब जवाब पढ कर सुना दिये थे," मुखिया ने अपनी सफाई देते हुए कहा। "उस वक्त किसी ने कोई एतराज नही उठाया।"

"मैं उसी वक्त कमरे से बाहर गया था," प्योत्र गेरासिमोविच बोला, फिर नेख्लूदोव की ओर मुड कर बोला, "आपका दिमाग भी उस वक्त घास चरने गया होगा कि आपने इसकी ओर कोई ध्यान नही दिया।"

"मुझे ख्याल ही नही था," नेख्लूदोव कहने लगा।

"ख्याल नही था?"

"पर हम अब भी तो इसे ठीक कर सकते हैं," नेख्लूदोव बोला।

"जी नहीं, अब कुछ नही हो सकता। मामला खत्म हो गया है।"

नेख्लूदोव न कैदियो की ओर देखा। वे लोग, जिनकी किस्मत का फैसला होने जा रहा था, अब भी कटहरे के पीछे, सिपाहियो के सामने गतिहीन बैठे थे। मास्लोवा मुस्करा रही थी। नेख्लूदोव के मन मे कुविचार उठा। अब तक उसे आशा थी कि मास्लोवा बरी हो जायेगी। लेकिन यह सोच कर कि वह इसी शहर मे रहने लगेगी उसकी समझ मे नही आ रहा था कि उसके प्रति वह कैसा रवैया अपनाये। उसके साथ अब किसी प्रकार का भी सबध रखना बडा कठिन था। यदि उसे बडी मशक्कत की सजा दे कर साइबेरिया भेज दिया गया तो उसके प्रति कोई रवैया

अपनाने का सवाल ही नही उठेगा। जख्मी परिन्दा शिकारी के बस ही छटपटा छटपटा कर दम तोड देगा और शिकारी को उसकी या' नही आयेगी।

२४

प्योत्र गेरासिमोविच का अनुमान ठीक निकला।

प्रधान जज विचार-कक्ष मे से निकल कर वापस आया। उसके हाथ में एक कागज था जिसे उसन पढना शुरू कर दिया

"तिथि १८ अप्रैल, १८८ । महाराजाधिराज के आज्ञानुसार, जूरी के निश्चय तथा जाब्ता फौजदारी की धारा ७७१ के भाग ३, धारा ७७६ के भाग ३ और धारा ७७७ के आधार पर अदालत फौजदारी किसान सीमन कार्तीनकिन, उम्र ३३ साल और मेश्चान्का येकातेरीना मास्लोवा, उम्र २७ साल को सब प्रकार के सम्पत्ति अधिकारा से वचित कर के दोनो को कडी मशक्कत की सज़ा दे कर साइबेरिया मे भजती है कार्तीनकिन को ८ साल के लिए और मास्लोवा को ४ साल के लिए- उन्ही अनुवर्ती परिणामा के साथ जिनका उल्लेख जाब्ता फौजदारी की धारा २८ म किया गया है। मेश्चाका बोच्कोवा, उम्र ४३ साल, को सभी विशिष्ट निजी व अनुप्राप्त अधिकारो से वचित कर के ३ साल कै की सज़ा दी जाती है उन्ही अनुवर्ती परिणामो के साथ जिनका उल्लेख जाब्ता फौजदारी की धारा ४६ मे किया गया है। मुकद्दमे का सारा खर्च कैदी बरदाश्त करेंगे, जो बराबर बराबर हिस्सा म उनसे वसूल किया जायेगा। यदि अदायगी के पर्याप्त साधन उनके पास नही होंगे तो यह खच सरकारी खज़ाने मे से अदा किया जायेगा। सब शहादती चीजें बच दी जायेंगी अगूठी वापस कर दी जायेगी और शीशे के पात्र तोड दिये जायेंगे।"

कार्तीनकिन अब भी सीधा तन कर खडा हुआ था और उसके गाल फरफरा रहे थे। बोच्कोवा पूणतया शान्त नज़र आ रही थी। मास्लोवा न जब फैसला सुना तो उसका चेहरा लाल हो गया।

'मैंने कोई कसूर नही किया, मेरा कोई दोष नही," सहसा वह चिल्ला उठी और उसकी आवाज़ सार कमरे मे गूज उठी। "यह पाप है।

मैं निर्दोष हू। मेरी कोई इच्छा उसे मुझे इसका ख्याल तक नही आया। मैं सच कहती हू, बिल्कुल सच कहती हू।" वह बेंच पर ढह गई और बिलख बिलख कर रोने लगी।

कार्तीनकिन और बोच्कोवा अदालत मे से बाहर चले गये। मास्लोवा फिर भी बैठी रोती रही, यहा तक कि सिपाही को उसके लबादे की आस्तीन छू कर उसे उठाना पडा।

जो बुरे विचार नेख्लूदोव के मन मे उठे थे, वे सब गायब हो गये। "इस मामले को यही पर नही छोडा जा सकता, नामुमकिन है," उसने मन ही मन कहा और बरामदे मे तेज़ तेज़ चलता हुआ मास्लोवा के पीछे जाने लगा। न जाने क्यो, वह उसे फिर एक बार देख लेना चाहता था। दरवाज़े पर लोगो की खासी भीड जमा हो गई थी। वकील और जूरी के सदस्य बाहर निकल रहे थे। वे खुश थे कि काम समाप्त हुआ। नेख्लूदोव को कुछ देर इन्तज़ार करना पडा, इसलिए जब वह बरामदे मे निकल कर आया तो मास्लोवा बहुत दूर जा चुकी थी। वह फिर तेज़ तेज़ चलता हुआ, बिना इस बात की परवाह कि लोग उसे देख रहे होगे, उसके पीछे पीछे जाने लगा। वह उसके पास जा पहुचा, फिर आगे निकल गया और एक जगह रुक कर उसकी ओर देखने लगा। वह अब रो नही रही थी, केवल सिसकिया भर रही थी, और सिर पर बधे रूमाल के एक कोने से मुह पोछ रही थी। उसका चेहरा लाल हो रहा था और उस पर जगह जगह धब्बे पडे हुए थे। उसने नेख्लूदोव की ओर नही देखा और आगे निकल गई। इसके बाद नेख्लूदोव भागा हुआ प्रधान जज को मिलने गया। प्रधान जज अदालत के कमरे मे से जा चुका था। नेख्लूदोव उसके पीछे पीछे ड्योढी मे जा पहुचा जहा प्रधान जज अपना हल्का भूरे रग का ओवरकोट पहना रहा था और अदली से अपनी चादी की मूठ वाली छडी ले रहा था। नेख्लूदोव सीधा उसके पास चला गया।

"जनाब, इजाज़त हो तो मैं आपसे कुछ कहना चाहता हू। यह इस मुकद्दमे के बारे म है जिसका अभी अभी फैसला हुआ है। मैं जूरी का एक सदस्य हू।"

"जरूर, जरूर, प्रिस नेख्लूदोव, मुझे खुशी होगी। मैं सोचता हू हम पहले एक दूसरे को मिल चुके हैं," प्रधान जज ने नेख्लूदोव का हाथ दबाते हुए कहा। उसे वह शाम याद हो आई जब वह पहली बार

नेख्लूदोव से मिला था। और याद आते ही उसका मन खुशी से भर गया। उस शाम वह दिन भोज पर गया था और इतना बढ़िया कि वहा नाचने वा युवक भी देखते रह गये थे। "मैं आपकी क्या खिदमत कर सकता हूँ?"

"मास्लोवा के बारे में जो जवाब दिया गया उसमें एक भूल हो गई। उस पर जहर देने का जुर्म नहीं है फिर भी उसे बामशक्कत की सजा दी गई है,' नेख्लूदोव ने कहा। वह भनभना और उदास लग रहा था।

"आपके जवाबों की ही बिना पर अदालत ने सजा दी है," दरवाजे की ओर जाते हुए प्रधान जज ने कहा। "हालांकि आपके जवाब जजों को भी असगत से लगते थे।"

उसे याद आया कि वह जूरी को यह बताने जा ही रहा था कि अभियुक्त को "मुजरिम" करार देते वक्त अगर ये शब्द साथ में न जोड़े जाय कि "जुर्म जान लेने के इरादे से नहीं किया गया", तो इसका यही अर्थ लिया जाता है कि जुर्म जान बूझ कर मार डालने के इरादे से किया गया। मगर उस वक्त उसे काम खत्म करने की इतनी जल्दी थी कि वह समझाना भूल गया था।

"लेकिन क्या अब इस गलती को ठीक नहीं किया जा सकता?"

"अपील करनी हो तो हमेशा कोई न कोई वजह तो मिल ही सकती है। आपको किसी वकील से सलाह लेनी होगी," प्रधान जज ने चलते चलते कहा, और सिर पर तिरछे से अन्दाज से टोप पहना।

"लेकिन यह बडा जुल्म है।"

"आप जानते हैं, मास्लोवा के सबध मे दो ही सभावनाए थी," प्रधान जज ने कहा। जाहिर था कि वह नेख्लूदोव से यथासभव विनम्रता और शिष्टता से बात करना चाहता था। कोट के कॉलर के ऊपर अपने गलमुच्छे ठीक करते हुए उसने हल्के से नेख्लूदोव की कोहनी के नीचे हाथ रखा, और अब भी दरवाजे की ओर बढते हुए बोला—"आप भी चल रहे है?"

"जी हा," नेख्लूदोव ने कहा, और जल्दी जल्दी अपना कोट पहन कर उसके साथ हो लिया।

बाहर धूप खिल रही थी, और सडक पर गाडियो के पहियो की गड़गड़ाहट सुनाई दे रही थी, इस कारण उन्हे अपनी आवाज ऊची कर के बोलना पडा।

"स्थिति बड़ी अजीब सी है," प्रधान जज ने कहा, "मास्लोवा के समय मे दो म से एक ही बात हो सकती थी। या तो उसे थोडी सी क़ैद की सज़ा देकर लगभग बरी कर दिया जाता। और इस बात का ख्याल रखते हुए कि वह जेल मे काफी वक्त पहले ही काट चुकी है, उसे बिल्कुल बरी कर दिया जा सकता था। या फिर उसे साइबेरिया भेजा जाता। इनके बीच और कोई रास्ता नही था। यदि आप लोग केवल य शब्द जोड देते कि 'उसका जान लेने का इरादा नही था' तो वह बरी हो जाती।"

"हा, मुझमे बहुत बडी भूल हुई, मैं अपने को कभी माफ नही कर सकता," नख्लदोव ने कहा।

"इसी पर सब बात का दारोमदार है," प्रधान जज ने मुस्कराते हुए कहा, और अपनी घडी को देखा।

केवल ४५ मिनट बाकी रह गये थे। इसके बाद वह अपनी क्लारा को नही मिल सकेगा।

"अब यदि आप चाहे तो वकीलो से बात कर देखिये। आपको अपील दायर करने के लिए कोई आधार चाहिए और वह आसानी से मिल जायेगा।" फिर एक गाडीवान की ओर मुह कर के बोला, "द्वोर्यान्स्काया चलोगे? तीस कोपेक दूगा। इससे ज्यादा मैं कभी नही देता।"

"चलूगा, हुजूर, मैं आपको ले चलूगा।"

"तो इजाज़त है? यदि मैं आपकी कोई खिदमत कर सकू तो शौक से मेरे पास तशरीफ लाइये। मेरा पता है द्वोर्यान्स्काया रोड, द्वोनिकोव भवन। इसे याद रखना आसान है।"

और बडे दोस्ताना ढग से झुक कर विदा लेते हुए वह गाडी मे बैठ कर रवाना हो गया।

२५

प्रधान जज के साथ बात कर लेने से नेख्लूदोव का मन कुछ हल्का हुआ। कुछ इस कारण भी कि बाहर ताज़ा हवा बह रही थी। उसने सोचा कि इतनी तीव्रता से ये भावनाए उसके दिल मे न उठती यदि वह सुबह से इस वक्त तक इस अजीब से वातावरण मे न बैठा रहता।

"सचमुच कैसी विचित्र घटना घटी है, आकस्मिक और विलक्षण! और यह बेहद जरूरी है कि यथाशक्ति मैं उसकी सज़ा को कम करने की कोशिश करूं। और वह भी फौरन! मुझे यहीं कचहरी में से हो के पता कर लेना चाहिए कि फानारिन या मिकीशिन यहां रहते हैं,' दो प्रसिद्ध वकीलों के नाम याद करते हुए उसने मन ही मन कहा।

वह कचहरी में लौट आया, और ओवरकोट उतार कर ऊपर चला गया। पहले बरामदे में जाते हुए उसकी स्वयं फानारिन से ही भेंट हो गई। उसने फानारिन को रोक लिया और कहा कि मैं आपको एक काम के सिलसिले में मिलने ही जा रहा था। फानारिन ने नेख्लूदोव का नाम सुन रखा था, और शक्लसूरत से भी उसे पहचानता था। बोला कि जो भी खिदमत हो, मैं खुशी से करने के लिए हाजिर हूं।

"मैं इस वक्त कुछ थका हुआ हूं लेकिन बात लम्बी न हो तो आप बेशक इसी वक्त मुझे उसके बारे में बता दीजिये। चलिये, इधर अन्दर चले चलिये।"

और वह नेख्लूदोव को एक कमरे में ले गया जो शायद किसी जज का कमरा था। दोनों मेज़ के सामने बैठ गये।

"कहिये, क्या काम है?"

"सबसे पहले तो मैं गुज़ारिश करूंगा कि इसे अपने तक ही रखिये। मैं नहीं चाहता कि किसी को भी मालूम हो कि मेरी इस मामले में कोई दिलचस्पी है।'

"बेशक बेशक, यह बताने की आपको कोई ज़रूरत नहीं।"

"आज मैं जूरी पर था और हमने एक बेगुनाह औरत को कड़ी मशक्कत की सज़ा दिलवा दी है। इससे मेरा मन बहुत बेचैन हुआ है।"

नेख्लूदोव का चेहरा लाल हो गया और वह घबरा सा गया। वह खुद हैरान हो रहा था कि उसे क्या हो गया है। फानारिन ने उसके चेहरे पर एक नज़र फेंकी और फिर नीचे देखने लगा, और उसकी बात सुनने लगा।

"कहिये।"

"हमने एक बेगुनाह औरत को सज़ा दिलवा दी है और मैं इस बारे में ऊंची अदालत में अपील करना चाहता हूं।"

"आपका मतलब है सेनेट में," नेख्लूदोव की अशुद्धि ठीक करते हुए फानारिन ने कहा।

"और मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि आप इस मुकद्दमे का हाथ में ले लें।"

जो बात नेख्लूदोव के लिए कहना कठिन हो रहा था, वह उसे जल्दी जल्दी कह डालना चाहता था। बोला—

"इस मुकद्दमे का जितना भी खर्च होगा मैं दूगा।" और उसका चेहरा लाल हो गया।

"कोई बात नहीं, यह हम बाद में देख लेंगे," इन मामलों में नेख्लूदोव की अनुभवहीनता पर कृपाभाव से मुस्कराते हुए वकील ने कहा।

"मामला क्या है?"

जो कुछ हुआ था नेख्लूदोव ने वह सुनाया।

"अच्छी बात है। मैं इस पर काम करना शुरू कर दूगा और कल इसकी मिसल देखूगा। आप मुझे परसों मिलिये, नहीं, बेहतर है बृहस्पतिवार को मिलिये। छ बजे के बाद आप मेरे पास आ जाइये और मैं इसके बारे में आपको जवाब दूगा। तो अब चलें। मुझे यहां कुछेक बातों के बारे में पूछना है।"

नेख्लूदोव ने विदा ली और बाहर निकल आया।

वकील के साथ बात कर लेने से, और यह सोच कर कि मास्लोवा को बचाने के लिए उसने कदम उठाया है, नेख्लूदोव का मन और भी हल्का हो गया। वह बाहर सड़क पर आ गया। मौसम बेहद सुहावना था। वसन्त की ताजा हवा में उसने लम्बी सांस ली। बहुत से गाड़ीवान उसके आस-पास इकट्ठे हो गये और गाड़ी लेने के लिए बार बार कहने लगे। मगर नेख्लूदोव गाड़ी में नहीं बैठा और पैदल जाने लगा। सहसा उसके मन में तरह तरह की स्मृतियां और चित्र घूमने लगे—कात्यूशा के बारे में, और उसके प्रति अपने व्यवहार के बारे में। वह उदास हो गया और हर चीज उसे उदास नजर आने लगी। "नहीं, इन सब बातों के बारे में बाद में सोचा जायेगा। आज जो कुछ देखा है, कितना घिनौना था। उसे मन में से निकाल देना चाहिए," वह मन ही मन सोचने लगा।

उसे याद आया कि कोर्चागिन परिवार के घर उसे डिनर खाने जाना

है। उसने घड़ी देखी। अभी भी वक्त था, वह पहुँच सकता था। उस ए ट्राम की घण्टी की आवाज़ सुनाई दी। भाग कर वह उसके पास जा पहुँचा और कूद कर उसके ऊपर चढ़ गया। बाज़ार में पास पहुँच कर वह उस पर से कूद पड़ा, और एक अच्छी घोड़ा गाड़ी में जा बैठा। दस मिनट के बाद वह कोर्चागिन परिवार के विशाल भवन के सामने खड़ा था।

२६

"आइये हुज़ूर, पधारिये," दरवाज़ा खोलते हुए इस बड़े घर के मोटे दरबान ने बड़े अदब से कहा और बढ़िया अंग्रेज़ी कब्जे लगा बलूत का भारी दरवाज़ा ज़रा भी शोर किये बिना खोल दिया। "सब लोग आपका इन्तज़ार कर रहे हैं। भोजन शुरू हो गया है लेकिन मुझे हुक्म है कि आपको अन्दर ले चलूँ।"

दरबान ने सीढ़ियों के पास जा कर घण्टी बजायी।

'बाहर के लोग भी हैं क्या?" नेख्लूदोव ने अपना ओवरकोट उतारते हुए पूछा।

"जी, घर के लोगों को छोड़ कर केवल श्रीमान| कोलोसोव और मिखाईल सेर्गेयेविच हैं।"

फ्रॉक कोट और सफ़ेद दस्ताने पहने हुए एक बेहद ख़ूबसूरत चोबदार सीढ़ियों के ऊपर आ खड़ा हुआ।

"चलिये, हुज़ूर, सब आपका इन्तज़ार कर रहे हैं," उसने कहा।

नेख्लूदोव सीढ़ियाँ चढ़ कर ऊपर पहुँचा। सामने एक बड़ा हॉल था, बड़े ठाट से सजा हुआ। नेख्लूदोव इससे भली भाँति परिचित था। इसे लाँघ कर वह भोजन-कक्ष में पहुँचा। परिवार के सभी सदस्य मेज़ पर मौजूद थे, सिवाय प्रिंसेस सोफ़िया वासील्येव्ना के, जो सदा अपने कमरे में ही रहती थी। मेज़ के सिरे पर वृद्ध कोर्चागिन विराजमान थे। उनके बायें हाथ डाक्टर, और दायें हाथ एक अतिथि इवान इवानोविच कोलोसोव बैठे थे। यह सज्जन कभी अपने ज़िले के अभिजात वर्ग के निर्वाचित प्रधान रह चुके थे और आजकल एक बैंक के डायरेक्टर थे। विचारों के उदारवादी और कोर्चागिन के मित्र थे। बायें हाथ मिस्सी की छोटी चार साला बहिन

तथा उसकी अध्यापिका मिस रेडर बैठी थी। उनके सामने, दूसरी तरफ मिस्सी का भाई पेत्या बैठा था। कोर्चागिन परिवार का यही एक लडका था। वह छठी कक्षा मे पढ रहा था। आजकल उसके इम्तहान हो रहे थे। यही कारण था कि अब तक सारा परिवार शहर मे टिका हुआ था। उसके साथ विश्वविद्यालय का एक छात्र, जो उसे पढाता था, और मिस्सी का चचेरा भाई मिखाईल सेर्गेयेविच तेलेगिन, जिसे अक्सर लोग मीशा कह कर पुकारते थे, बैठे थे। मीशा के ऐन सामने येकातेरीना अलेक्सेयेव्ना बैठी थी। इस महिला की उम्र ४० वर्ष की थी और वह कुवारी थी, और उसके दिमाग पर स्लाव जाति की श्रेष्ठता का भूत सवार था। मेज़ के दूसरे सिरे पर स्वय मिस्सी बैठी थी, और उसके साथ वाली कुर्सी खाली पडी थी।

"अच्छा हुआ तुम आ गये। हमने अभी मछली खाना ही शुरू किया है," अपनी लाल आखें ऊपर को उठा कर वृद्ध कोर्चागिन ने कहा। उसकी आखो को देख कर ऐसा लगता था जैसे उन पर पलके नहीं हैं। कोर्चागिन को बात करने मे तकलीफ हो रही थी, क्योकि उसका मुह भरा हुआ था और दात नकली थे जिनसे वह बडे ध्यान से, धीरे धीरे मछली चबा रहा था। उसी तरह भरे हुए मुह से उसने दस्तरखान के नौकर को आवाज़ दी –

"स्तेपान!" और आखो से खाली कुर्सी की ओर इशारा किया।

नेख्लूदोव कोर्चागिन को भली भाति जानता था, पहले भी उसे कई बार भोजन करते देख चुका था, लेकिन आज कोर्चागिन का लाल लाल चेहरा, वॉस्कट मे लगे नैप्किन के ऊपर मोटी, स्थूल गर्दन, तथा कामुक होठ देख कर जिनसे वह बार बार चटखारे ले रहा था, उसे बडी घिन हुई। उसका अग अग बता रहा था कि वह एक पेटू, फौजी अफ्सर है। अपने आप ही नेख्लूदोव को वे बाते याद हो आयी जिनसे इस आदमी की क्रूरता का पता चलता था। जिन दिनो फौज की कमान इसके हाथ मे थी, कोर्चागिन, बिना किसी वजह के, लोगो को हण्टर लगवाता, यहा तक कि फासी तक चढवा देता था। और यह महज़ इसलिए कि अमीर होने के कारण उसे किसी की खुशामद करने की जरूरत नही थी।

"अभी, हुज़ूर," स्तेपान ने कहा और चादी के गुलदानो से सजी हुई बर्तनो की अलमारी मे से शोरबा डालने की कलछी उठाई। फिर मिर

झटक कर उसने खूबसूरत गलमुच्छों वाले चोबदार को इशारा किया। चोबदार फौरन खाली कुर्सी के सामने कांटे छुरियां और नैप्किन उठा अपनी जगह रखने लगा। नैप्किन को बड़ी खूबसूरत ढंग से तह किया हुई थी और उस पर कुल चिह्न कसीदा किया हुआ था।

नेख्लूदोव एक एक कर के सबसे हाथ मिलाने लगा। वृद्ध कार्चागिन और महिलाओं को छोड़ कर, सभी उठ उठ कर उससे हाथ मिलाते। नेख्लूदोव को इस तरह मेज़ के इर्दगिर्द घूमना और लोगों से हाथ मिलाना जिनमें से बहुतों के साथ उसकी दुआ-सलाम तक न थी, बड़ा अजीब और अप्रिय लगा। देरी से पहुंचने के लिए उसने माफी मांगी। फिर मिस्सी और येकातेरीना अलेक्सेयेव्ना के बीच वाली कुर्सी पर बैठने ही जा रहा था कि कोर्चागिन ने रोक लिया। कहने लगा कि खाना खाने से पहले अगर एक जाम वोदका नहीं पीना चाहते तो कम से कम छोटी मेज़ पर से कुछ तो मुंह में डाल लो ताकि भूख चमक उठे। साथ वाली छोटी मेज़ पर प्लेटों में झींगा मछली, केवियर, पनीर और हरिंग मछली रखी थी। नेख्लूदोव को ख्याल भी नहीं था वह इतना भूखा है और डबलरोटी-पनीर का सैंडविच लेकर उसने जो खाना शुरू किया तो फिर रुक ही नहीं पाया और दबादब खाता गया।

"कहो, आज कैसा रहा? खूब तोड़ी समाज की नींव?" कोलोसोव ने व्यंग्य से एक अखबार का फिकरा दोहराते हुए पूछा। एक प्रतिक्रियावादी अखबार में उन्हीं दिनों उस अदालती प्रथा की कटु आलोचना की गई थी जिसमें मुकद्दमे का फैसला जूरी के सदस्यों पर छोड़ा जाता है। "ज़रूर अपराधियों को बरी कर आये होंगे और बेगुनाहों को सज़ा दी होगी, क्यों?"

"तोड़ी समाज की नींवें... तोड़ी समाज की नींवें... हा! हा!" प्रिंस कार्चागिन ने हंसते हुए कोलोसोव के शब्द दोहराये। उसे अपने इस उदारवादी मित्र और साथी की बुद्धिमत्ता पर बड़ा विश्वास था।

नेख्लूदोव ने कोई जवाब नहीं दिया, यह जानते हुए भी कि उसका चुप रहना शायद कोलोसोव को बुरा लगे और गरमागरम शोरबा खाता रहा।

"कुछ खाने तो दीजिये उसे," मिस्सी ने मुस्कराते हुए कहा। "उसे" का प्रयोग कर के उसने मानो याद दिलायी कि देखो नेख्लूदोव के साथ मेरी कितनी घनिष्ठता है।

कोलोसोव ख ूब ऊची उची आवाज़ मे वड जोश के साथ उस लेख का व्योरा देने लगा जिसमे जरी-मुकद्दमा की प्रथा का विरोध किया गया था। उसे वह लेख बिल्कुल पसन्द नही था। मिस्सी का चचेरा भाई मिखाईल सेर्गेयेविच उसकी हा मे हा मिलाने लगा और ख ुद भी किसी दूसरे लेख की चचा करने लगा जो उसी अखबार मे छपा था।

मिस्सी वडी अच्छी लग रही थी। उसने सादे किन्तु बडे सुरुचिपूण ढग के कपडे पहन रखे थे।

"तुम तो बहुत थक गये होगे, और बडी भख लगी होगी," जब नेख्लदोव ने मुह का कौर निगल लिया तो मिस्सी उसे बोली।

"नही, बहुत तो नही, और तुम? क्या तुम तस्वीरें देखने गयी थी?" उसने पूछा।

"नही, हमने सोचा फिर किसी दिन जायेंगे। हम सालामातोव परिवार को मिलन चले गये और वहा टेनिस खलते रहे। मिस्टर ब्रूक्स सचमुच बहुत अच्छा खेलते हैं।"

नख्लूदोव जो यहा आया था तो अपना ध्यान दूसरी ओर करन के लिए। उसे इस घर मे आना अच्छा लगता था। यहा के ऐशो आराम मे एक तरह की नफासत थी जो उसके मन को भाती थी। साथ ही यहा पर सब उसे चाहते थे और उसकी हल्की चापलसी करते रहते थे। पर अजीब बात है, आज उसे इस घर की हर चीज घिनौनी लग रही थी, उसी वक्त स जिस वक्त उसने इस घर मे कदम रखा था। इस घर का दरवान, चौडा जीना, फूल, चोबदार, मेज की सजावट, हर चीज उसे बुरी लग रही थी। स्वय मिस्सी मे भी आज कोई आकर्पण नही था। वह उसे बनावटी लग रही थी। जिस ओछे, उदारवादी ढग से, आत्मविश्वास के साथ कोलोमोव बाते कर रहा था, वह भी उसे भद्दा लग रहा था। इसी तरह बूढे कोर्चागिन का कामुक, आत्मतुप्ट, साड का सा आकार-प्रकार और येकातेरीना अलेक्सेयेव्ना के फ्रासीसी वाक्याश उसे खल रहे थे। अध्यापिका और विश्वविद्यालय के छात्र के दब्ब चेहरे भी बडे अप्रिय थे। पर जो चीज़ उसे सब से बुरी लगी वह थी, मिस्सी का उसके लिए "उसे" शब्द का प्रयाग। मुद्दत से नेख्लदाव असमजस मे था कि वह मिस्सी का किस दप्टि से देख। कभी कभी वह उसे इस तरह देखता मानो चाद की चादनी मे उसे देख रहा हो। उस समय मिस्सी के सौन्दय के अतिरिक्त

उसे कुछ भी नजर नही आता था। उस समय वह उसे सुन्दर सादा-चतुर प्रतीत होती थी, ऐसी लडकी जिसमे बनावट का नाम निशान न हो। फिर सहसा उसे ऐसा लगने लगता जैसे वह उसे दिन की रोशनी मे, सूर्य के प्रकाश म देखने लगा हो। तब उसे मिस्सी के दोष नजर आते, और उन्हे न देखने की इच्छा रखते हुए भी वे उघड उघड कर उसके सामने आते थे। आज वैसा ही दिन था। आज उसे उसके चेहरे की सब झुरिया, उसके बालो मे बने कुण्डल, उसकी नुकीली कोहनियां और विशेषकर उसके अगूठे का नाखून नजर आ रहे थे। इसका नाखून कितना बड़ा है,—नेख्लदोव सोच रहा था,—और इसके पिता के नाखून से कितना मिलता है।

"टेनिस मज़ेदार खेल नही है," कोलोसोव कह रहा था। "हम तो जब छोटे थे तो 'लाप्ता' खेला करते थे। उसमे बहुत मजा आता था।"

"नही, नही, आपने टेनिस खेल कर देखा नही है। बेहद रोचक खेल है," मिस्सी ने कहा। जिस ढग से बल देकर उसने "बेहद" शब्द कहा, वह नेख्लूदोव को बहुत बनावटी लगा।

इसके बाद एक बहस छिड गई जिसमे मिखाईल सेर्गेयेविच और येकातेरीना अलेक्सेयेव्ना ने भाग लिया। यदि भाग नही लिया तो अध्यापिका, विद्यार्थी और बच्चो ने नही लिया, जो चुपचाप बैठ थे और बेहद ऊब उठे थे।

"ओह, ये बहसे तो कभी खत्म ही नही होती।" बूढ़े कोर्चागिन ने वॉस्कट मे से नैप्किन खीच कर हसते हुए कहा और बडा शोर मचाते हुए कुर्सी को पीछे धकेल कर उठा (चोबदार ने फौरन बढ़ कर कुर्सी सभाल ली) और वहा से चला गया। जब वह उठा तो सभी लोग उठ खड़े हुए और एक दूसरी मेज़ की ओर गये जिस पर गम, खुशबूदार पानी के गिलास रखे थे। उन्होंने कुल्ले किये और इसके बाद फिर बहस शुरू कर दी जिसमे किसी को कोई रुचि न थी।

किसी ने कहा कि खेल से मनुष्य के चरित्र का पता चलता है। "ठीक है न?" मिस्सी ने नख्लदोव से उसका समर्थन प्राप्त करने की इच्छा से पूछा। उसने देख लिया था कि नेख्ल्दोव का ध्यान किसी दूसरी तरफ है, और साथ ही वह उसे असन्तुष्ट सा लग रहा था। उसे असन्तुष्ट देख कर मिस्सी को डर सा लगने लगता था, और वह इसका कारण जानना चाहती थी।

"मैं कुछ भी नहीं कह सकता। मैंने इस बारे में कभी भी सोचा नहीं है," नेख्लूदोव ने जवाब दिया।

"तुम maman से तो मिलने चलोगे न?" मिस्सी ने पूछा।

"हां, हां, जरूर," उसने कहा और सिगरेट निकालने लगा। उसके लहजे से साफ पता चल रहा था कि उसकी maman से मिलने की कोई इच्छा नहीं है।

मिस्सी चुपचाप, प्रश्नसूचक नेत्रों से उसकी ओर देखने लगी, जिससे नेख्लूदोव को शर्म सी आ गई। "किसी के घर आओ और मुंह लटका कर बैठ जाओ," उसने अपने बारे में मन ही मन सोचा, फिर बातें करने की चेष्टा करते हुए बोला कि यदि प्रिंसेस की इजाजत हुई तो मैं शौक से मिलने चलूंगा।

"Maman तो तुम्हें मिल कर बहुत खुश होंगी। वहां तुम सिगरेट भी पी सकते हो। इवान इवानोविच भी वहीं पर है।"

घर की मालकिन प्रिंसेस सोफिया वासील्येव्ना सदा लेटी रहती थी। वह मेहमानों को भी सदा अपने कमरे में ही मिलती। पिछले आठ साल से यही चल रहा था। गहना कपड़ों से लदी मालकिन मेहमानों से मिलती और वह भी ऐसे मेहमानों से जिन्हें वह समीपी मित्र कहती थी, अर्थात वे लोग जिनका स्तर मामूली लोगों से बहुत ऊपर था। कमरे की सज-धज भी देखते बनती थी, मखमली पर्दों, फूलों और तरह तरह के मुलम्मा चढ़े, हाथी दांत, कांसे, और लाख के बने पदार्थों से वह भरा पड़ा था। इन मित्रों में नेख्लूदोव भी शामिल था क्योंकि उसे सयाना-समझदार आदमी समझा जाता था, उसकी मां की इस परिवार से घनिष्ठ मैत्री रह चुकी थी और साथ ही इसलिए भी कि उसे मिस्सी के लिए उचित वर समझा जाता था।

सोफिया वासील्येव्ना का कमरा दीवानखाने और छोटी बैठक से परे था। मिस्सी आगे आगे चल रही थी। दीवानखाने में पहुंच कर वह दृढ़ता से खड़ी हो गई और एक मुलम्मा चढ़ी छोटी सी कुर्सी की पीठ पकड़ कर उसकी ओर देखने लगी।

मिस्सी शादी करने के लिए बेचैन थी। चूंकि नेख्लूदोव उपयुक्त वर था, और वह उसे चाहती भी थी। इसलिए उसने अपने मन में यह बात बिठा ली थी कि वह उसी का हो कर रहेगा (यह नहीं कि वह स्वयं

नेख्लूदोव की होगी)। स्वयं न जानते हुए भी वह इस लक्ष्य की ओर बड़े हठ से बढ़ रही थी। यह हठ और चालाकी अक्सर ऐसे व्यक्तियों में देखने को मिलती है जिनके मन विकारग्रस्त हों। मिस्सी जानना चाहती थी कि नेख्लूदोव के क्या इरादे हैं।

"जान पड़ता है कोई बात हुई है," वह बोली, "क्या हुआ है?"

नेख्लूदोव को अदालत की बैठक याद हो आयी, उसकी भौंहें चढ़ गयीं और चेहरा लाल हो गया।

"हां, एक बात हुई है," सच बोलने की इच्छा से उसने उत्तर दिया, "एक गंभीर और असाधारण बात हुई है।"

"क्या हुआ है? क्या मुझे नहीं बता सकते?"

"इस समय नहीं, मुझे कहने के लिए कहो ही नहीं। मुझे स्वयं उस पर विचार करने का समय नहीं मिला।" उसका चेहरा और भी लाल हो गया।

"तो तुम मुझे बताओगे नहीं?" मिस्सी के चेहरे पर ऐंठन सी आई और उसने कुर्सी को धक्का देकर पीछे हटा दिया।

"नहीं, मैं नहीं बता सकता," उसने जवाब दिया। यह कहते हुए नेख्लूदोव को महसूस हुआ जैसे वह अपने आपको भी कह रहा है कि आज की घटना का सचमुच उसके लिए बड़ा महत्व था।

"चलो, अन्दर चलें।"

मिस्सी ने सिर झटक दिया मानो निरर्थक विचारों को मन में से हटाना चाहती हो, और पहले से भी तेज़ कदम रखती हुई उसके आगे आगे जाने लगी।

नेख्लूदोव को लगा जैसे मिस्सी ने अपने होंठ अस्वाभाविक रूप से भींच लिये हैं, ताकि उसे रुलाई न आ जाय। उसे शर्म महसूस हुई कि मैंने नाहक उसका दिल दुखा दिया है। लेकिन फिर भी वह अड़ा रहा, यह जानते हुए कि ज़रा सी भी कमज़ोरी दिखाने पर वह कहीं का न रहेगा, अर्थात् उसे ज़रूर मिस्सी से शादी करनी पड़ेगी। आज विशेषकर वह इस बात से डर रहा था। चुपचाप, मिस्सी के पीछे पीछे चलता हुआ वह प्रिंसेस के कमरे में दाखिल हुआ।

मिस्सी की मा भोजन कर के हटी थी। भोजन मे अनगिनत बढिया व्यजन बने थे। वह सदा अलग से भोजन करती ताकि इस नीरस, कवित्वहीन क्रिया को कोई देख न पाये। उसके कोच के पास एक छोटी सी तिपाई पर कॉफी का सामान रखा था, और वह सिगरेट के कश लगा रही थी। प्रिंसेस एक लम्बी, पतली औरत थी, काले बाल, बडी बडी काली आखें और लम्बे लम्बे दात, वह अभी भी अपने को जवान समझती थी।

डाक्टर के साथ उसके गहरे सम्बन्ध की काफी चर्चा थी। कुछ मुद्दत से नेख्लूदोव भी इसके बारे मे सुन रहा था। प्रिंसेस के कोच के पास डाक्टर बैठा था। उसकी चिकनी, चमकती दाढी बीच मे से काढी हुई थी। आज डाक्टर को देख कर नेख्लूदोव को न केवल वे अफवाहे याद हो आई जो उनके बारे मे सुनने मे आती थीं, बल्कि उसका मन भी घृणा से भर उठा।

सोफिया वासील्यव्ना के बिल्कुल निकट, तिपाई के साथ एक नीची, नरम नरम आराम-कुर्सी पर कोलोसोव बैठा कॉफी हिला रहा था। तिपाई पर हल्की शराब का एक गिलास रखा था।

नेख्लूदोव को ले कर मिस्सी अन्दर आई मगर वहा रुकी नही।

"जब maman तुमसे ऊब उठें और यहा से तुम्हे चलता करे तो मेरे पास आना," उसने कोलोसोव और नेख्लूदोव को सम्बोधित करते हुए कहा। वह इस तरह बाते कर रही थी मानो कुछ भी न हुआ हो। इसके बाद वह हसती मुस्कराती, गुदगुदे कालीन पर बडी नजाकत से पाव रखती हुई बाहर चली गई।

"आओ मित्र, कहो कैसे हो? आओ बैठो और मेरे साथ बात करो," प्रिंसेस ने कहा। उसके होठो पर एकदम स्वाभाविक सी, किन्तु वास्तव मे बनावटी झूठी मुस्कान खेल रही थी। मुस्कराते हुए उसके खूबसूरत, लम्बे लम्बे दातो की झलक मिलती थी। ये दात नकली थे, मगर उसके पहले दातो से बेहद मिलते थे। "कोई कह रहा था कि तुम आज कचहरी से बडे परेशान लौटे हो। मैं सोचती हू जो लोग महसूस बहुत करते हो,

उनके लिए कचहरी मे बैठना बडा कठिन होता होगा," उसने
मे यह बात जोडी।

"आप ठीक कहती है," नेख्लूदोव ने कहा, "आदमी को अपने
आदमी महसूस करने लगता है कि उसे किसी की किस्मत का फ़ैसला
का कोई अधिकार नही।"

"Comme c'est vrai,"* वह बोली, मानो नेख्लूदोव के बात
छिपा सत्य उसे बडा विलक्षण लगा हो। प्रिंसेस की आदत था कि
जिस किसी से भी बाते कर रही होती, तो हल्के हल्के, बड
से उसकी खुशामद करती रहती।

"और तुम्हारी तसवीर का क्या बना? उसे देखने के लिए मेरा
जी चाहता है। अगर मैं यो खाट से न जुडी होती तो कब का उसे
आई होती," उसने कहा।

"मैने तसवीर बनाना बिल्कुल छोड दिया है," नेख्लूदोव ने
आवाज मे कहा। इस औरत की खुशामद कितनी झूठी है, आज
को साफ नज़र आ रहा था, उसी तरह जिस तरह आज उसे उसक
पर की झुरिया साफ नजर आने लगी थी, हालाकि प्रिंसेस उन्हें
की बेहद कोशिश कर रही थी। इसलिए मीठे लहजे मे उसके साथ
करना नेख्लूदोव के लिए असभव हो रहा था।

"ओह! कितने अफसोस की बात है! यह शख्स तो तसवीर
का हुनर जानता है। स्वय रेपिन** ने मुझसे कहा था," कोलासोव
घूम कर देखते हुए प्रिंसेस ने कहा।

"इस औरत का झूठ बोलते हुए शर्म भी नही आती!" नेख्लूदोव
मन ही मन कहा और उसके माथे पर बल पड गये।

जब प्रिंसेस को यकीन हो गया कि नेख्लूदोव का मिजाज बिगडा हुआ
है और उसे हल्की फुल्की चुस्त गुफ्तगू मे खीचना कठिन हो रहा है ता वह
कोलासोव की ओर घूम गई और किसी नये नाटक के बारे म उसकी रा
पूछने लगी, ऐसे लहजे मे, मानो उसकी राय जान कर उसके सब सद
दूर हो जायेंगे, और उसका एक एक शब्द अमर होने योग्य हो।

---

*क्या ठीक बात है। (फ्रेंच)

**रूसी चित्रकार, (१८४४–१९३०)।

लोसोव नाटक की निंदा और साथ ही कला पर अपने विचार प्रकट करने लगा। प्रिंसेस सोफिया वासील्येव्ना उसके तर्कों की सच्चाई पर विस्मय प्रकट करती, पर साथ ही नाटक के लेखक के पक्ष में कुछ कहने का प्रयत्न करती, और फिर तुरत ही कोलोसोव की बात मान जाती या नई बिचली राय पकडती। नेख्लूदोव बैठा यह सब देख रहा था, किंतु देख उसे कुछ और ही रहा था, उनकी बाते उसके कानो मे पड रही थी किंतु सुनाई उसे कुछ और ही दे रहा था।

कभी सोफिया वासील्येव्ना और कभी कोलोसोव की बाते सुनते हुए नेख्लूदोव साफ साफ देख रहा था कि उन्हे न तो उस नाटक से कोई दिलचस्पी है न एक दूसरे से। अगर वे बाते कर रहे है तो महज इसलिए कि खाना खाने के बाद उन्ह गले की मासपेशियां और जबान हिलाने की जरूरत है। कोलोसोव कुछ सरूर मे भी था क्योकि उसने वोद्का, हल्की शराब और लिकर शराब—तीनो तरह की शराब पी रखी थी। किसानो की तरह सरूर म नही जो केवल कभी कभी पीते है बल्कि उन लोगो की तरह जिन्हें पीने की आदत होती है। वह लडखडा नही रहा था, न ही अंट-संट बक रहा था, लेकिन उसकी स्थिति सीधे सादे आदमी की भी नही थी। वह उत्तेजित और आत्मतुष्ट हो रहा था। नेख्लदोव ने यह भी देखा कि बाते करते समय प्रिंसेस सोफिया वासील्येव्ना की नजर बार बार खिडकी की ओर जाती थी और वह बेचैन सी दिख रही थी। खिडकी म से सूरज की एक तिरछी किरण धीरे धीरे सरकती हुई उसकी ओर बढ रही थी। उसे डर था कि मुह पर पडने मे उसकी झुरियां नजर आने लगेंगी।

"कसी ठीक बात तुमने कही," कोलोसोव की किसी टिप्पणी पर राय देते हुए उसने कहा, और कोच के साथ लगे घण्टी के बटन को दबा दिया।

डाक्टर उठ खडा हुआ, और बिना कुछ कहे, घर के आदमी की तरह, बाहर चला गया। सोफिया वासील्येव्ना की आखे उसकी पीठ पर लगी रही, और साथ साथ वह बाते भी करती रही।

खूबसूरत चोबदार घण्टी सुन कर कमरे मे हाजिर हुआ।

"मेहरबानी कर के ये पर्दे गिरा दो, फिलिप,' उसने खिडकी की ओर इशारा करते हुए कहा।

"मैं नही मानती, तुम कुछ भी कहो, उसमे एक तरह का र
है। रहस्यवाद के बिना कविता नही हो सकती," वह कह रही थी।
साथ ही उसकी एक काली आख नौकर की ओर लगी हुई थी जो प
गिरा रहा था।

"कविता के बिना रहस्यवाद—अंधविश्वास बन कर रह जाता है
और रहस्यवाद के बिना कविता—गद्य बन कर रह जाती है," ए
सी मुस्कान के साथ वह कहे जा रही थी और साथ ही चोबदार
पर्दों को भी उसी तरह देखे जा रही थी।

"नही, नही, वह पर्दा नही, फिलिप, वह पर्दा जो बडा खिड़की
है," उसने दुखी लहजे मे कहा। प्रत्यक्षत सोफिया वासील्यवना
पर तरस आ रहा था कि उसे ये शब्द कहने की चेष्टा करना पड रहा है
इसलिए अपने को ढाढस बधाने के लिए उसने सिगरेट का होठों से लगा
और एक महक भरा कश लिया। जिन उगलियो मे उसने सिगरेट
रखा था, उन पर अनगिनत अगूठिया झिलमिला रही थी।

फिलिप ने हल्के से सिर झुकाया, मानो क्षमाप्रार्थना कर रहा हो,
कालीन पर हल्के हल्के कदम रखते हुए, आज्ञाकारी नौकरों की तरह
चुपचाप दूसरी खिडकी के पास गया, और बडे ध्यान से प्रिसस की
देखते हुए पर्दा ठीक करने लगा, ताकि एक भी किरण प्रिसेस के
पर न पड पाये। फिलिप बडा खूबसूरत जवान था, चौडी छाती, मजबूत
पट्ठे, मज़बूत टागे, और चौडी चौडी पिडलिया। पर अब भी प्रिसस सन्तुष्ट
नही थी। फिलिप उस पर जुल्म ढा रहा था। उसे फिर रहस्यवाद की
चर्चा छोड कर, शहीदो की सी आवाज़ मे उस मूर्ख नौकर को समझाना
पडा। क्षण भर के लिए फिलिप की आखें चमक उठी।

"शैतान की नानी, तुम चाहती क्या हो?—नौकर यही मन म
रहा होगा,' नेख्लूदाव ने सोचा, जो बैठा यह दृश्य देख रहा था। पर
सुन्दर और हृष्ट-पुष्ट फिलिप ने फौरन अपने चेहरे का भाव बदल लि
ताकि प्रिसस को उसकी खीज का पता न चल पाये, और चुपचाप
थकी मादी, दुबल, और झूठी औरत के आदेश का पालन करता रहा।

"बेशक, डारविन की बातो म सच्चाई है," अपनी नीची आराम
कुर्सी म गुस्ताते हुए और उनीदी आखो स सोफिया वासील्यव्ना की
देखत हुए कालोसोव न कहा, "लकिन किसी हद तक। उसन कई
बातो को बढा चढा कर भी कहा है।'

"तुम कहो, क्या तुम्हारा वशानुगति म विश्वास है ?" उसने नेख्लूदोव से पूछा। नेख्लूदोव की चुप्पी देख कर वह मन ही मन नाराज हो रही थी।

"वशानुगति म ?" नेख्लूदोव न पूछा "नही मैं नही मानता।" इस समय उसके मन म अजीब स चित्र घूम रह थे, और वह उन्ही म खोया हुआ था। एक तरफ़ फ़िलिप का चित्र था—सुन्दर और सबल फ़िलिप का, जो एक चित्रकार के मॉडल के रूप म खडा था। उसके सामने उसे कोलासोव का नग्नरूप नजर आ रहा था—तरबूज की तरह बढी हुई तोंद गजा सिर और मूसलो की तरह लटकते बाजू जिनमे पट्ठो का नाम निशान नही। इसी धुंधलके म सोफ़िया वासील्येव्ना के कधे भी उसे नजर आये, जो इस समय मखमल और रेशम से ढके थे। उनके वास्तविक रूप की कल्पना करते ही वह सिहर उठा और उस मन मे से निकालने की कोशिश करने लगा।

सोफ़िया वासील्येव्ना नेख्लूदोव का आखो ही आखो से जायजा ले रही थी।

"तुम्हे मालूम है मिस्सी तुम्हारा इन्तजार कर रही है," उसने कहा, "जाओ वह तुम्हे शूमा की एक नयी धुन बजा कर सुनाना चाहती है। बेहद दिलचस्प धुन है।"

"उसका कोई इरादा सगीत सुनाने का नही। यह औरत महज झूठ बोले जा रही है, न जाने क्या," नेख्लूदोव ने मन ही मन कहा, और उठ कर प्रिंसेस के पतले, पारदर्शी अगूठियो से सजे हाथ को दबा कर बाहर चला गया।

दीवानखाने मे उसे येकातेरीना अलेक्सेयेव्ना मिली, और मिलते ही वह रोज़ की तरह फ़ासीसी भाषा म बात करने लगी—

"जान पडता है, कि जूरी के काम से तुम्हारा मन उदास हो उठता है।"

"जी हा। क्षमा कीजिये, मैं आज बहुत खुश नही हू, और सोचता हू कि यहा रह कर और लोगो का भी मन खराब करने का मेरा कोई अधिकार नही है।"

"तुम खुश क्यो नही हो ?"

"क्षमा कीजिये, मैं इस बारे म बात करना नही चाहता," अपनी टोपी ढूढते हुए उसने कहा।

"क्या तुम भूल गये हो—तुम खुद ही तो कहा करते थे कि हम

सदा सच बोलना चाहिए। और किस निर्दयता से तुम हम सब का मज़ाक बात बनाया करते थे। अब क्यों नहीं बताना चाहते?" फिर मिस्सी की ओर घूम कर देखते हुए, जो अभी अभी अन्दर आई थी, वह बोली, "क्यों मिस्सी, याद है?"

"वह खेल खेल में था," नेख्लूदोव ने गंभीरता से कहा, "खेल में सच बोला जा सकता है, लेकिन वास्तविक जीवन में, हम लोग—मेरा मतलब है मैं—इतना बुरा हूं कि कम से कम मैं तो सच नहीं बोल सकता।"

"जो कहना चाहते हो वही कहो, अपने लफ़्ज़ बदलते क्या हो। हमें बताओ हम क्यों इतने बुरे हैं," मेकातेरीना अलेक्सेयेव्ना ने शब्दाडम्बर दिखाते हुए इस तरह कहा मानो उसे मालूम ही न हो कि नेख्लूदोव गंभीर हो उठा है।

"किसी को भी यह कभी स्वीकार नहीं करना चाहिए कि मैं बहुत उदास हूं। इससे बुरी बात कोई नहीं," मिस्सी बोली, "मैं कभी स्वीकार नहीं करती, इसी लिए मैं हर वक्त खुश रहती हूं। चलो, हमारे साथ चलो, हम तुम्हारा mauvaise humeur* दूर करने की कोशिश करेंगी।"

नेख्लूदोव को लगा जैसे वह कोई घोड़ा हो जिसे पुचकारा जा रहा है ताकि वह चुपचाप मुंह में लगाम और पीठ पर साज डलवा ले। पर आज उसका मन बिल्कुल ही नहीं चाह रहा था कि कोई उससे मनमानी करवाये। उसने माफी मांगी, कहा कि उसे घर जाना है, और विदा लेने लगा। हाथ मिलाते वक्त मिस्सी पहले से ज्यादा देर तक उसका हाथ अपने हाथ में रखे रही।

"यह नहीं भूलना कि जिस बात को तुम ज़रूरी समझते हो वह तुम्हारे मित्रों के लिए भी ज़रूरी है," वह बोली, "कल आओगे न?"

"शायद नहीं,' नेख्लूदोव ने कहा और लज्जित सा अनुभव करने लगा—न मालूम मिस्सी के कारण या अपनी वजह से, और शर्म से लाल होते हुए वहां से चला गया।

"बात क्या है? Comme cela m'intrigue"** येकातेरीना

---

* बुरा मिज़ाज। (फ्रेंच)

** कितनी उत्सुक हूं मैं (यह जानने को)। (फ्रेंच)

अलेक्सेयेव्ना बोली, "मैं जरूर इस की तह तक पहुचूगी। मैं सोचती हू कि यह कोई affaire d amour propre il est tres susceptible, notre cher* दमीत्री।"

"Plutot une affaire d'amour sale"** मिस्सी कहने जा रही थी पर रुक गई। उसके चेहरे पर से सारी रौनक जाती रही। जब नेख्लूदोव से बाते कर रही थी तो उसका चेहरा खिला हुआ था, मगर अब वह बात न रही थी। यहा तक कि येकातेरीना अलेक्सेयेव्ना के सामने भी वह ऐसे भद्दे शब्द नही कह सकती थी। उसने केवल इतना भर कहा—

"हम सबके साथ यही कुछ होता है, कभी खुश तो कभी उदास।"

"क्या यह मुमकिन है कि यह भी मुझे धोखा दे जायेगा?" वह सोच रही थी। "इतना कुछ हो चुकने के बाद बहुत ही बुरी बात होगी।"

यदि मिस्सी से पूछा जाता कि "इतना कुछ हो चुकने" का क्या मतलब है तो शायद वह कुछ भी निश्चित तौर पर न कह पाती। फिर भी वह जानती थी कि नेख्लूदोव ने न केवल उसकी आशाओ को जगा दिया था बल्कि एक तरह का वचन तक दे दिया था। हा, उन दोनो के बीच स्पष्टतया कुछ भी नही कहा गया था—केवल आखो आखो मे, मुस्कराहटो और इशारो मे बात हुई थी। फिर भी मिस्सी उसे अपना समझती थी, उसे खो देना उसके लिए असह्य था।

२८

"कितनी शर्म की बात है, कितनी घिनौनी बात है!" चिरपरिचित सडको पर घर की ओर जाते हुए नेख्लूदोव सोच रहा था। मिस्सी से बात करते हुए उसका मन खिन्न हो उठा था, और अब भी उसका असर बराबर उसके मन पर बना हुआ था। औपचारिक रूप से वह कह सकता था कि उसने कभी भी मिस्सी को कोई वचन नही दिया, उसके सामने

---

*जरूर कोई आत्मसम्मान की बात है। हमारा प्यारा दमीत्री है भी बहुत भावुक। (फ्रेंच)

**बात शायद इश्कबाजी की है। (फ्रेंच)

कोई प्रस्ताव नही रखा, इसलिए वह निर्दोष है। परन्तु दिल ही दिल वह जानता था कि वह अपने को मिस्सी के साथ बाध चुका है, उसकी आशाओ को जगा चुका है। फिर भी आज उसका रोम रोम कह रहा था कि वह किसी सूरत मे भी उसके साथ शादी नही कर सकता। "कितनी शर्म की बात है! कितनी घिनौनी बात है!" उसने फिर सोचा। वह मिस्सी के साथ अपने सबध के बारे मे ही नही बल्कि हर चीज के बारे मे सोच रहा था। "हर चीज शर्मनाक और घिनौनी है!" उसने अपने घर के सायबान मे पाव रखते हुए सोचा।

"मैं कुछ नही खाऊगा," नेख्लूदोव ने अपने नौकर कोर्नेई से कहा जो उसके पीछे पीछे खाने वाले कमरे म चला आया था जहा भोजन और चाय के लिए मेज लगी थी। "तुम जा सकते हो।"

"अच्छा हुजूर," उसने कहा, पर वही खडा रहा और मेज पर से चीजें उठाने लगा। नेख्लूदोव के मन मे कोर्नेई के प्रति भी बुरी भावना उठी। वह एकात चाहता था, लेकिन उसे लग रहा था जैसे हर आदमी जान बूझ कर उसे परेशान करने पर तुला हुआ है। जब कोर्नेई बर्तन उठा कर चला गया, तो नेख्लूदोव चाय बनाने के लिए समोवार की ओर बढा। पर ऐन उसी वक्त उसे आग्राफेना पेत्रोव्ना के कदमो की आवाज आई और वह भागा हुआ बैठक मे चला गया ताकि उससे सामना न हो, और अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया। आज से तीन महीने पहले इसी कमरे मे उसकी मा का देहात हुआ था। कमरे मे दो लैम्प जल रहे थे, दोनो के साथ रिफ्लेक्टर लगे थे। एक की रोशनी उसके पिता के चित्र पर पड रही थी, और दूसरे की रोशनी उसकी मा के चित्र पर। कमरे म दाखिल होते ही उसे याद हो आया मा की मृत्यु से पहले उसके साथ उसके कैसे सबध रह थे। अस्वाभाविक और घिनौने। यह भी कितनी शर्मनाक और घिनौनी बात थी। उसकी बीमारी के अन्तिम दिना म वह चाहता था कि उसकी मा मर जाय। अपने आपसे तो वह यह कहता था कि मैं मा के खातिर ऐसा सोच रहा हू, ताकि उसे इस यन्त्रणा से छुटकारा मिले, लेकिन वास्तव म वह अपना छुटकारा चाहता था, ताकि उसे मा का दुख न देखना पडे।

वह चाहता था कि उसके मन म मा के अच्छे दिनो की कोई याद जागे। वह तसवीर के पास गया। यह तसवीर एक विख्यात कलाकार ने

पाच हजार रूबल ले कर बनाई थी। तसवीर म मा ने काले रग की मखमली पोशाक पहन रखी थी जिसका गला बहुत नीचा था। कलाकार ने खास तौर पर बडे प्यार स स्तनो की गोलाई उनके बीच का हिस्सा मा की बेहद खूबसूरत ग्रीवा और कधो का चित्रित किया था। यह भी शम की बात थी। इसे भी देख कर मन म घिन उठती थी। मा का अध-नग्न सुन्दरी के रूप मे चित्रित किया गया था। मा को इस रूप म दिखाना बेहद घिनौना काम है। यह और भी घिनौना इसलिए है कि तीन ही महीने पहले यही स्त्री इस कमरे म लेटी थी, जब वह सूख कर मम्मी बन गई थी, और उससे ऐसी दुगन्ध उठ रही थी जो न केवल इस कमरे म ही बल्कि सारे घर मे फैली हुई थी। उससे नाक म दम हो उठा था और उसे दूर करना असम्भव हो रहा था। नेख्लूदोव को ऐसा जान पडा जैसे अब भी वह दुगन्ध आ रही हो। उसे याद आया, मौत से एक ही दिन पहले मा ने अपने कृश हाथ से, जिसकी उगलियो का रग पीला पड चुका था, उसका सबल, सफेद हाथ ले कर उसकी आखो म आखें डाल कर कहा था—"मेरा बुरा नही सोचना, दमीत्री, अगर मुझसे कोई भूल हुई हो।" और उसकी आखो मे आसू भर आये थे। यन्त्रणा के कारण उसकी आखें पीली पड चुकी थी।

उसने फिर आख उठा कर तसवीर की ओर देखा। इस अध-नग्न स्त्री के होठो पर विजय की मुस्कान खेल रही थी और कधे और बाजू इतने सुन्दर थे मानो सगमरमर तराश कर बनाये गये हो। नेख्लूदोव ने मन ही मन कहा—"उफ! कितनी घिनौनी बात है!" तसवीर म मा की आधी नगी छातिया देख कर उसे एक दूसरी स्त्री याद आ गई, जिसे कुछ ही दिन पहले इसी तरह अध-नग्न स्थिति मे उसने देखा था। वह मिस्सी थी। वह किसी नाच पर जाने के लिए तैयार थी और किसी बहाने उसने नेख्लूदोव को अपने घर बुला लिया था ताकि वह उसे नाच की पोशाक मे देख सके। उसकी सुन्दर बाहो और कधो को याद कर के उसका मन घृणा से भर उठा। "और उसका भौंडा बाप, जो इनसान नही पशु है, अतीत म न मालूम क्या क्या करता रहा है और कितना जालिम है। और उसकी मा की bel esprit* होने की यह कुख्याती।" यह सब सोच कर

*हाजिरजवाब। (फ्रेंच)

उसे घृणा हो आयी, साथ ही लज्जा का भी भास हुआ। "कितनी श
की बात है, कितनी घिनौनी बात है!"

वह सोचने लगा—"नहीं, नहीं। मुझे आजादी चाहिए! इन सम्बन्धों से आजादी, जो इन कोर्चागिनो और मारीया वासील्येव्ना के सा चल रहे हैं, इस विरासत से आजादी। हर चीज से आजादी! मैं खु हवा मे सास लेना चाहता हू! मैं विदेश जाऊगा, रोम मे जाऊगा, तसवीर मुकम्मल करूगा।" उसके मन मे सशय उठा, क्या चित्रकार बन की मुझ मे योग्यता भी है? "तसवीर, न सही, मैं केवल आज़ाद हवा सास लूगा। पहले कुस्तुनतुनिया जाऊगा, उसके बाद रोम जाऊगा। बस, यह जूरी वाले काम से निबट लू, और वकील के साथ जो इन्तज़ाम है कर लू। बस यह काम खत्म हो जाय, फिर "

फिर सहसा उसकी आखो के सामने उस कैदी की तसवीर उठी, बड़ी सजीव, उसकी काली काली आखें, जिनमे हल्का सा ऐंच था, किस तरह वह रो पड़ी थी जब कैदियो से कहा गया था कि तुम्हे जो कहना है क लो। नेख्लूदोव ने तेज़ी से अपना सिगरेट बुझा दिया। उसने सिगरेट के टुकडे को राखदानी मे दबा कर बुझाया, फिर एक दूसरा सिगरेट सुलगा लिया, और कमरे मे इधर-उधर चलने लगा। एक के बाद दूसरी व घड़िया उसकी आखो के सामने साकार हो आयी जो उसने उस लडकी के साथ बितायी थी। उसे वह आखिरी मुलाकात याद हो आई, जब उसने एक कामान्ध पशु की तरह व्यवहार किया था, और वासना की भूख शान्त करने के बाद उसे कितनी निराशा हुई थी। गिरजे मे प्रार्थना के समय लडकी ने सफेद पोशाक और नीले रग का कमरबन्द पहन रखा था। "हां, मुझे उससे प्रेम था। उस रात मेरे हृदय मे सचमुच उसके प्रति प्रेम था, और मेरा प्रेम पवित्र था, निर्मल था। इससे पहले भी मैं उससे प्रेम करता था। हा, जब मैं पहली बार अपनी फूफियो के घर ठहरा था, और अपना निबन्ध लिख रहा था तब भी म उससे प्रेम करता था।" उसे याद हो आया कि उन दिनो वह कैसा व्यक्ति हुआ करता था। उसे ऐसा जान पड़ा जैसे उस ताज़गी, यौवन, और जीवन की पूर्णता का एक हल्का सा झोंका उसे फिर छू गया हो, और उसके दिल में गहरी टीस उठी।

कितना फर्क पड गया था उसमे, तब क्या था वह और आज क्या है! यह उतना ही फर्क था जितना कि उस मातमपूर्ण मे जो उस रात गिरजे

गयी थी, और इस वेश्या मे जो उस व्यापारी के साथ शराब पीती रही थी और जिसे आज सुबह सजा दी गई थी। तब वह आज़ाद था, निश्शक था, उसके सामने असख्य सभावनाए थी। आज वह ऐसा महसूस कर रहा था जैसे किसी जाल मे फस गया हो, एव विवेकहीन, खोखले, निरथक और तुच्छ जीवन के जाल मे। अगर वह चाहता भी तो उसमे से निकलने का कोई रास्ता उसके सामने नही था। और निकलने की ख्वाहिश भी विरले ही उसके मन मे कभी उठती थी। उसे याद आया—एक ज़माना था जब उसे अपनी सत्यवादिता पर गव हुआ करता था, उसन नियम बना रखा था कि सदैव सच बोला करेगा, और इस नियम का पालन भी किया करता था। और आज वह झूठ के पक मे कितना गहरा धस गया था। ये झूठ कितने भयानक थे, और इन झूठो को उसके आस-पास के लोग सच समझते थे। इन झूठो मे से निकलने का कोई साधन उसे नही सूझ रहा था। वह कीच मे धस गया था, और अब इसी मे लोटने की उसे आदत हो गई थी।

मारीया वासील्येव्ना और उसके पति के साथ वह किस तरह अपना सम्बन्ध तोडे जिससे वह फिर आख उठा कर उसके पति और उनके बच्चो की ओर देख सके? बिना किसी झूठ के किस प्रकार वह मिस्सी से अपना पीछा छुडाये? एक तरफ वह मानता था कि भूमि का स्वामी बनना अन्यायपूण है, दूसरी ओर वह उस ज़मीन का मालिक बना हुआ है जो उसे अपनी मा से विरासत मे मिली है। इस विरोधाभास से कसे छुटकारा पाये? कात्यूशा के प्रति किये गये पाप का किस भाति प्रायश्चित करे? इस अन्तिम प्रश्न को तो यही नही छोडा जा सकता था। जिस स्त्री से वह प्यार करता था, उसके प्रति इतना भर कर देने से वह सन्तुष्ट नही हो सकता था कि एक वकील को पैसे दे दे कि वह उसे साइबेरिया के कडे श्रम से बचा ले। उसे कडे श्रम की सज़ा देना ही अ यायपूण था। क्या पैसे दे कर अपने पाप का प्रायश्चित करे? उस दिन भी उसने उसे पैसे दिये थे और पैसे देते समय क्या यही नही समझा था कि वह अपने पाप का प्रायश्चित कर रहा है?

उसे वह क्षण स्पष्टतया याद हो आया जब उसने बरामदे मे लडकी को रोक लिया था और उसके एप्रन मे पैसे ठूस कर भाग गया था। "उफ, पैसा!" उसने कहा, और उसके मन मे वैसी ही घृणा और भय उठे

इस रोज़ उठे थे। "हे भगवान! कितना घृणित काम है!" उसके मुँह से उसी भाति ये शब्द आज भी निकले जिस भाति उस दिन निकले थे। "कोई नीच पापी ही ऐसा काम कर सकता था—और मैं ही वह पापी हू, मैं ही वह नीच हू!" वह ऊची ऊची आवाज़ मे बोलने लगा। "परन्तु क्या यह सभव है?" वह चलते चलते रुक गया और निश्चल खड़ा हो गया। "क्या मैं सचमुच नीच हू?—यदि मैं नही हू तो और कौन है?" उसने स्वय अपने सवाल का जवाब दिया। "और क्या यही एक पाप मैंने किया है?" वह अपने पर इलज़ाम लगाता गया। "क्या मारीया वासील्येव्ना और उसके पति के प्रति मेरा व्यवहार घृणित और नीच नही है? और सम्पत्ति के प्रति? यह जानते हुए कि सम्पत्ति का उपभोग अन्यायपूर्ण है मैं उसका उपभोग किये जा रहा हू, यह कह कर कि यह मुझे मेरी माँ से प्राप्त हुई है। और मेरा समूचा निष्क्रिय घृणित जीवन? और कात्यूशा के प्रति मेरा व्यवहार सबसे अधिक घृणापूर्ण नही था? नीच और पापी! वे लोग भले ही जो चाहे मेरे बारे म सोचे, मुझे बुरा समझें या अच्छा, मैं उनको तो धोखा दे सकता हू, परन्तु अपने आपको तो धोखा नही दे सकता।"

सहसा उसकी समझ मे यह बात आ गई कि आज जो घृणाभाव उन लोगो के प्रति—प्रिंस कोर्चागिन, सोफिया वासील्येव्ना, मिस्सी और दूसरों के प्रति—उसके मन मे उठा था, वह वास्तव मे स्वय उसके अपने प्रति था। और अजीब बात है, जहा अपनी नीचता को इस भाति स्वीकार करते हुए उसके मन को क्लेश हुआ, वहा एक तरह की खुशी और सन्तोष का भी उसने अनुभव किया।

एक बार नही, कई बार नेख्लूदोव के जीवन मे ऐसे क्षण आए थे जिन्हे वह "आत्मपरिशोध" के क्षण कहा करता था। आत्मपरिशोध से उसका मतलब था वह आन्तरिक स्थिति जब वह अपने मन मे से उस सब कूड़ा-करकट साफ कर लेता था जो बड़ी देर तक मन की निष्क्रियता के कारण वहा इकट्ठा होता रहता था और जिससे मन म अवरोध पैदा हो जाता था।

इस जागरण के बाद नेख्लूदोव सदा अपने लिए कुछ नियम निर्धारित करता, निश्चय करता कि उनका पालन करेगा, डायरी लिखना आरम्भ और एक फिर से अपना जीवन शुरू करता, यह सोचते हुए कि फिर

उसमे कभी कोई परिवतन नही आने देगा। अंग्रेजी का मुहावरा दुहराते हुए वह इसे turning a new leaf कहता। परन्तु हर बार सासारिक प्रलोभन उसे अपने जाल मे खीच लेते, और बिना जाने ही उसका फिर पतन हो जाता, और वह पहले से भी कही गहरे गत मे जा गिरता।

इस तरह जीवन मे कई बार उसने उठने और अपनी आत्मा का कलुष धोने की कोशिश की थी। पहली बार यह तब हुआ था जब वह गमियो के मौसम मे अपनी फूफियो के घर रहा था। वह जागरण सबसे सशक्त तथा उल्लासपूण रहा था, और उसका असर भी काफी देर तक रहा था। दूसरी बार उसे जागरण का अनुभव तब हुआ था जब वह सरकारी नौकरी छोड कर फौज मे दाखिल हुआ था, और अपने जीवन तक की बलि देने के लिए तैयार था। यह लडाई के दिनो की बात है। पर यहा अन्त करण की आवाज शीघ्र ही फिर दब गई थी। फिर एक बार वह जागा। यह उस समय हुआ था जब वह फौज की नौकरी छोड कर विदेश गया था और कला की सेवा करने लगा था।

उसके बाद आज तक बहुत सा समय बिना आत्मपरिशोध के निकल गया था। इसलिए वह खाई बहुत चौडी हो गई थी जो उसके अन्त करण की मागो और उसके जीवन की मागा के बीच पैदा हो गई थी। इतना अधिक भी भेद हा सकता है, यह देख कर उसका दिल काप उठा।

खाई बहुत चौडी थी, उसकी आत्मा पूणतया कलुपित हो चकी थी। उसे कोई उमीद न थी कि यह मल अब कभी धोया जा सकेगा। "पहले भी तो तुमने कई बार अपने को सुधारने की, पूर्ण बनाने की चेप्टा की थी। क्या उन चेप्टाओ का कुछ नतीजा निकला? कुछ भी तो नही," उसके अन्दर बैठे शैतान ने फुसफुसा कर कहा। "अब फिर कोशिश करने का क्या लाभ? इस तरह का स्वभाव केवल तुम्हारा ही तो नही है। सभी एक जैसे है—यही जीवन है," आवाज ने फिर फुसफुसा कर कहा। पर उसके अन्दर का उन्मुक्त आध्यात्मिक जीव जाग उठा था। वही एकमात्र जीव सत्य है, सक्षम है, अनन्त है। इसलिए वह उस पर विश्वास किये बिना नही रह सकता था। बेशक उसकी वतमान स्थिति और वाछित स्थिति म बहुत गहरा अन्तर था, परन्तु इस नव-जागत आध्यात्मिक जीव को कुछ भी असभव नही जान पडता था।

"किसी भी कीमत पर मैं इस झूठ को तो तार-तार कर के छोड़ूंगा जो इस समय मुझे बांधे हुए है। मैं सबको सच सच बता दूंगा, और सच पर ही आचरण करूंगा," नेख्लूदोव ने दृढ़ता के साथ, ऊंची आवाज में कहा। "मैं मिस्सी को सच सच बता दूंगा, कह दूंगा कि मैं दुराचारी हूं, इसलिए तुम्हारे साथ विवाह नहीं कर सकता, मुझे खेद है कि मैंने व्यर्थ ही तुम्हें परेशान किया। मैं मारीया वासील्येव्ना को कह दूंगा ... मा उसको कहने के लिए क्या है। मैं उसके पति को बता दूंगा कि मैं नीच आदमी हूं, तुम्हें धोखा देता रहा हूं। अपनी विरासत को भी मैं दे डालूंगा, इस ढंग से कि मैं सत्य को स्वीकार कर सकूं। मैं कात्यूशा को बता दूंगा कि मैं एक नीच, पतित हूं जिसने उसके प्रति घोर पाप किया है। उसकी यन्त्रणा कम करने का भरसक प्रयत्न करूंगा। ठीक है, मैं उसे मिलूंगा और उससे क्षमा-याचना करूंगा। हां, मैं उसी तरह उससे माफी मांगूंगा जिस तरह बच्चे मांगते हैं।" वह रुक गया। "और जरूरत हुई तो उसके साथ शादी कर लूंगा।"

वह फिर रुक गया, अपनी छाती पर दोनों हाथ ले जा कर जोड़ लिये जिस तरह वह बचपन में किया करता था, फिर आंखें ऊपर उठा कर किसी को सम्बोधन करते हुए कहने लगा—

"भगवान, मेरी सहायता करो, मुझे शिक्षा दो, मेरे अन्दर प्रवेश करो और मेरे अंदर का सारा कलुष दूर कर दो।"

वह प्रार्थना कर रहा था, भगवान् से सहायता की याचना कर रहा था, कि भगवान् उसके अन्दर प्रवेश करें और उसका कलुष धो डालें। पर जिस बात के लिए वह प्रार्थना कर रहा था वह पहले ही हो चुकी थी। उसके अन्दर का भगवान् उसकी चेतना में जाग उठा था। उसे महसूस हो रहा था जैसे वह भगवान् के साथ एकाकार हो रहा है। इसलिए उसे न केवल स्वतन्त्रता, जीवन की पूर्णता तथा आनन्द का अनुभव होने लगा था, बल्कि नेकी की समूची शक्ति का भी। वह महसूस कर रहा था कि वह अच्छे से अच्छा काम सम्पन्न कर सकता है, जिसे करने की मनुष्य में योग्यता हो सकती है।

इस तरह अपने आपसे बातें करते हुए उसकी आंखों में आंसू भर आये। ये आंसू अच्छे भी थे और बुरे भी। अच्छे इसलिए कि ये खुशी के आंसू थे। बरसों तक निद्राग्रस्त रहने के बाद आज उसके अन्दर का आध्यात्मिक

जीव जाग उठा था। बुरे इसलिए कि ये आत्मानुकम्पा के आसू थे, वह अपनी अच्छाई पर गद्गद् हो कर रो रहा था।

नेख्लूदोव को कमरे मे घुटन सी महसूस हुई। उसने आगे वढ कर खिडकी खोल दी। खिडकी वाग मे खुलती थी। वाहर चादनी रात थी, मौन, स्वच्छ। किसी गाडी के पहियो की गडगडाहट सुनाई दी, फिर सब चुप हो गया। खिडकी के बाहर पोपलर का ऊचा पेड खडा था जिसकी पल्लवहीन टहनियो की छाया बाग की ककडी पर अपना जाल विछाये हुए थी। बाये हाथ बग्घी-खाना था जिसकी छत चादनी मे चमक रही थी और सफेद लग रही थी। सामने पेडो की उलझी हुई शाखो मे से बाग की दीवार का अधियारा साया नजर आ रहा था। नेख्लूदोव छत की ओर, चादनी मे नहाये बाग की ओर, पोपलर की छाया की ओर देखता रहा और ताज़ा, शक्तिदायिनी हवा मे गहरी सास लेता रहा।

"कितना सुदर है, कितना सुदर! हे भगवान्, कितना सुदर है!" वह कह रहा था। उसका अभिप्राय उस परिवतन से था जो उसके अदर घट रहा था।

२६

मास्लोवा जेलखाने की अपनी कोठरी मे शाम के छ बजे जा कर वही पहुची। थक कर चूर हो रही थी, और पावो मे छाले पड गये थे। चलने की उसे आदत न थी, और यहा पथरीली सडक पर दिन मे दस मील चलना पडा था। इस सज़ा को सुन कर उसका दिल टूट गया था, उसे आशा न थी कि इतनी कडी सज़ा मिलेगी। और भूख के कारण वह बेचैन हो रही थी।

मुकद्दमे के वक्त जब बीच मे पहली छुट्टी हुई थी तो उसके नज़दीक ही कुछ सिपाही बैठ कर डबलरोटी और उबले हुए अण्डे खाने लगे थे। मास्लोवा के मुह मे पानी भर आया था, और उसे मालूम हुआ था कि उसे भूख लग रही है। लेकिन सिपाहियो से मागना उसने आत्मसम्मान के विरुद्ध समझा था। तीन घण्टे बाद उसकी भूख मर चुकी थी, केवल बदन मे वह कमज़ोरी महसूस करने लगी थी। इसी समय उसे वह अप्रत्याशित सज़ा सुनाई गई। पहले तो उसे यकीन नही हुआ, उसने सोचा कि वह ठीक

तरह से समझ नही पायी। वह इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि वह साइबेरिया मे एक अपराधी की तरह भेजी जा सकती है। उसने जजो और जूरी के सदस्यो के चेहरा की ओर देखा। सभी चुप थे चेहरो पर व्यावहारिक तटस्थता छायी थी, मानो जो उन्होने सुना था वह स्वाभाविक और प्रत्याशित ही था। यह देख कर मास्लोवा क्रुद्ध हो उठी थी और चिल्ला कर सारी अदालत को कहा था कि मैं बेगुनाह हूं। पर उसने देखा कि उसकी पुकार को भी लोगो ने स्वाभाविक और प्रत्याशित ही समझा है, और उससे कुछ भी नही बन पायेगा। यह देख कर निराशा मे वह रो पडी थी, और महसूस करने लगी थी कि इस निर्दयी, विचित्र अन्याय के सामने उसे सिर झुकाना ही पडेगा, इसके सिवा कोई चारा नही। उसे सबसे ज्यादा अचम्भा इस बात का था कि वही जवान आदमी या कम से कम वे लोग जो अभी बूढे नही हुए थे जो सदा नजर भर कर उसकी ओर देखते थे—उन्होंने ही उसे सजा दिलवाई थी। उनमे से एक आदमी को सरकारी वकील को तो वह बिल्कुल दूसरे रग से देख चुकी थी। मुकद्दमा शुरू होने से पहले और बीच बीच मे जब छुट्टी होती थी तो यही लोग दरवाजा खुला देख कर अन्दर झाकते थे, यह दिखाते हुए कि वे किसी काम से उधर से हो कर जा रहे है, या सीधे अन्दर आ जाते और आखें भर कर उसकी ओर देखते। फिर इन्ही लोगो ने ही न क्यो उसे कडे श्रम की सजा दे दी थी, हालाकि वह निर्दोष थी, और उस पर जो अपराध लगाया गया था, वह गलत था। पहले तो वह रोती रही, फिर चुप हो गई, और कैदियो के कमरे मे निरद्ध सी इस इन्तजार मे बैठी रही कि कब उसे वापस ले जाया जायेगा। उस वक्त उसकी एक ही इच्छा हो रही थी—सिगरट पीने की। वह इस हालत मे बैठी था जब बोच्कोवा और कार्तीनकिन को भी उसी कमरे मे लाया गया। उन्हें भी फैसला सुना दिया गया था। अन्दर आते ही बोच्कोवा ने मास्लोवा को बुरा भला कहना शुरू कर दिया और उसे "मुजरिम" कह कर पुकारने लगी।

"तुम्हें आखिर मिला क्या? यहा कहती थी, मन काई जुम नहीं किया, काई जुम नही किया, ल लिया सजा, छिनारी राण्ड! किये का फल मिल गया न? अब जाओ साइबेरिया, वहा ये गहने कपडे नहीं चलेंगे।"

लबादे की आस्तीनो मे दोनो हाथ खोसे मास्लोवा चुपचाप...

झुकाये बैठी थी, और नीचे गदे फर्श की ओर एक टक देखे जा रही थी। उसने केवल इतना भर कहा—

"मैं तुम्हे कुछ नही कहती, तुम भी मुझे कुछ मत कहो मैने क्या तुम्हे कुछ कहा है?" उसने बार बार दोहरा कर कहा, फिर चुप हो गई। जब बोच्कोवा और कार्तीनकिन को वहा से ले गये और एक कमचारी ने उसे तीन रूबल ला कर दिये तो उसके चेहरे पर कुछ रौनक आई।

"तुम्हारा ही नाम मास्लोवा है?" उसने पूछा, "यह लो। एक औरत ने तुम्हारे लिए दिये है।" और उसने रूबल आगे बढा दिये।

"औरत ने—किस औरत ने?"

"तुम ले लो—मैं तुम्हारे साथ कलाम नही करूगा।"

ये रूबल चकले की मालकिन कितायेवा ने भेजे थे। कचहरी से जाते वक्त उसने पेशकार से पूछा था कि क्या वह कुछ रकम मास्लोवा को दे सकती है। पेशकार ने जवाब दिया कि हा, दे सकती हो। इजाजत मिलने पर उसने एक एक बटन कर के तीनो बटन खोलकर अपने गोरे-चिट्टे स्थूल हाथ पर से स्वेड का दस्ताना उतारा, फिर कमर मे से अपने रेशमी घाघरे की सिलवटो मे से एक बढिया सा बटुआ निकाला। उसमे कपनो का एक पूरा पुलिन्दा रखा था जो उसने कुछ लाभाश पत्रको मे से फाड रखे थे। यह नफा उसे अपने चकले के व्यापार मे से हुआ था। उसने ढाई रूबल का एक कूपन निकाला, उसके साथ दो बीस बीस के और एक दस कोपेक का सिक्का जोडे, और यह सब रकम पेशकार के सुपुर्द कर दी। पेशकार ने कितायेवा की मौजूदगी मे ही एक कमचारी को बुलाया और पैसे उसके हाथ मे दे दिये।

"किरपा कर के ठीक ठीक दे देना," कितायेवा ने कहा।

इस अविश्वास से कमचारी के मन को खेद हुआ। यही कारण था कि उसने मास्लोवा के साथ रुखाई से बात की।

पैसे मिले तो मास्लोवा बडी खुश हुई। इससे वह अपनी एकमात्र ललक तो शान्त कर पायेगी।

"अगर कही से सिगरेट मिल पायें और मैं एक कश लगा सकू!" उसने मन ही मन कहा। बरामदे मे दूसरे कमरो के भी दरवाज़े खुलते थे, जिनमे से सिगरटो का धुआ छन छन कर आ रहा था। मास्लोवा सिगरेट पीने के लिए इतनी बेचैन थी कि वह इसी धुए मे लम्बी लम्बी

सास खीचने लगी। सिगरेटो के लिए उसे बडी देर तक इन्तजार करना पडा। सेक्रेटरी का आर्डर मिलने पर ही कैदियो को वहा से ले जाया जा सकता था। और सेक्रेटरी बाते करने मे ऐसा मस्त था कि उसे कुर्सी पर ही गये। वह फिर एक वकील के साथ उस लेख के बारे म बहस करने लगा था, जिसे छापने की सेसर ने मनाही कर रखी थी।

मुकद्दमे के बाद, छोटे-बडे, कितने ही आदमी मास्लोवा को देखने के लिए कमरे म आये, और एक दूसरे के साथ फुसफुसा कर बातें करते रहे। पर मास्लोवा ने उनकी ओर कोई ध्यान नही दिया।

आखिर पाच बजे जा कर कही उसे वहा से निकलने की इजाजत मिली। पिछले दरवाजे मे से वह निकली। दो सरक्षक, वही नीज्नी नोवगारोद का आदमी और चुवाश उसके साथ थे। अभी वह कचहरी के अहाते मे ही थी कि उसने उन्हे बीस कोपेक दिये और कहा कि उसके लिए दो छोटी डबलरोटिया और एक डिबिया सिगरेट ला दें। चुवाश हस दिया, बोला- "अच्छी बात है, ला देता हू," और पैसे ले लिये। और सचमुच वह सिगरेट और डबलरोटिया ले भी आया और ईमानदारी से बाक़ी पैसे भी लौटा दिये।

रास्ते मे उसे सिगरेट पीने की इजाज़त नही दी गई। वह उसी तरह बेचैन जेलखाने की ओर चलती गई। जब वह जेल के फाटक पर पहुची तो उसी वक्त बाहर कही से एक सौ कैदी रेलगाडी द्वारा वहा लाये गए थे और उन्हे अदर ले जाया जा रहा था। गलियारे मे उसका उनसे सामना हुआ।

बाहर की ड्योढी कैदियो से भर गई थी। सभी तरह के कैदी थे बूढे, जवान, दाढी वाले, बेदाढी, रूसी, गैर रूसी, किसी किसी का सिर भी घुटा हुआ था, सभी के पावो मे बेडिया खनखना रही थी। ड्योढी धूल, शोर और कैदियो के पसीने की तीखी गध से भर गई। मास्लोवा के पास से गुजरते हुए सभी कैदी उसकी ओर घूर घूर कर देखते थे। कुछेक तो जान बूझ कर उसे ठोकर लगा रहे थे।

"कैसी लौंडिया है-रसभरी," एक बोला।

"सलाम है मेम साहिब," एक दूसरे ने आख मारते हुए कहा। एक सावला सा आदमी बेडिया खनखनाता आया। उसकी बडी बडी मूछें थी, लेकिन बाकी चेहरा, गर्दन तक, सफाचट था। पास आते ही वह रुक गया और उछल कर मास्लोवा को बाहो मे भर लिया।

"तुम अपने यार को भूल ही गई हो! वाह वाह, बडा गरूर करती हो।" अपने दात दिखाते हुए वह चिल्लाया। मास्लोवा ने उसे धकेल कर हटा दिया तो उसकी आखें चमकने लगी।

'ए सूअर! क्या कर रहे हो?" छोटे इन्सपेक्टर ने पीछे से कहा।

कैदी डर कर पीछे हट गया। छोटे अफसर ने मास्लोवा की ओर घूम कर पूछा—

"तुम यहा क्यो?"

मास्लोवा कहना चाहती थी कि उसे कचहरी से यहा वापस लाया गया है, लेकिन वह इतनी थकी हुई थी कि उसने जवाब देना नही चाहा।

"इसे कचहरी से लाया गया है, साहब!" एक सिपाही ने सैल्यूट करते हुए आगे बढ कर कहा।

"तो इसे बडे वार्डर के हवाले करो। मै यहा यह बकवास नही चलने दूगा।"

"जी, जनाब!"

"माकोलाव, इसे ले जाओ यहा से," छोटे इन्स्पेक्टर ने चिल्ला कर कहा।

बडा जमादार आया। उसने गुस्से से मास्लोवा का कधा पकड कर धक्का दिया और सिर झटक कर इशारा किया कि मेरे पीछे पीछे चलती आओ, और उसे एक दूसरे वार्ड के बरामदे मे ले गया जहा कैदी औरतो को रखा जाता था। यहा पर उसकी तलाशी ली गयी। जब कुछ भी बरामद न हुआ (उसने सिगरेटो की डिबिया डबलरोटी के अन्दर छिपा ली थी) तो उसे उसी कोठरी मे ले जाया गया जहा से निकल कर वह सुबह कचहरी मे गयी थी।

३०

एक लम्बोतरी सी कोठरी मे मास्लोवा को रखा गया था, जिसकी लम्बाई २१ फुट और चौडाई १६ फुट थी। उसमे दो खिडकिया और एक टूटा-फूटा अलावघर था। इसके दो तिहाई हिस्से मे कैदियो के लिए एक के ऊपर दूसरा तख्ते लगे हुए थे। उनकी लकडी जगह जगह से ऐंठी और सिकुडी

हुई थी। दरवाजे के ऐन सामने देवप्रतिमा टगी थी जिसके पास एक मोमबत्ती
खासी हुई थी, और सदा बहार फूला का एक गुच्छा लटक रहा था।
बायी ओर दरवाजे के पीछे जहा फर्श काला पड गया था, एक टब रखा
था जिसमे से बदबू आ रही थी। कैदी औरतो की जाच हो चुकी था और
उन्हे रात के लिए कोठरी मे बन्द कर दिया गया था।

इस कोठरी मे पन्द्रह लोगो को रखा गया था जिनमे से तीन बच्चे थे।
अभी रोशनी काफी थी। केवल दो औरते लेटी हुई थी। उनमे से एक
तपेदिक की मारी थी, जिसे चोरी के इलजाम मे कैद किया गया था।
दूसरी मूढ थी जिसे पासपोर्ट न होने के कारण पकड लिया गया था, और
जो अधिकाश समय सोती रहती थी। तपेदिक वाली औरत सो नहीं रही
थी, केवल लेटी थी और आखें फाड फाड कर देख रही थी। उसने सिर
के नीचे अपना कैदियो का लबादा लपेट कर रखा हुआ था, और गले मे
उठती बलगम को दबाने की चेष्टा कर रही थी ताकि खासी न होने लगे।

अधिकाश स्त्रिया ने केवल भूरे रग की गाढे की कमीजें पहन रखी
थी। उनमे से कुछेक खिडकी के पास खडी बाहर मैदान मे झाक रही थी
जहा कैदी जा रहे थे। तीन स्त्रिया बैठी सिलाई कर रही थी। इन तीन
स्त्रियो मे कोराब्ल्योवा भी थी। यह वही औरत थी जिसने सुबह मास्लोवा
को विदा किया था। कद की ऊची लम्बी, और मजबूत औरत थी। चेहरा
कठोर, भवे चढी हुई, गालो का मास पिलपिला हो रहा था जिससे ठुड्डी
दोहरी हो गयी थी। पीठ पर सुनहरी रग के बालो की हल्की सी चोटी
लटक रही थी, कनपटियो पर के बाल सफेद हो चले थे, और गाल पर
एक मस्सा था जिसमे बाल उग रहे थे। इसे साइबेरिया मे कडी मशक्कत
करने की सजा दी गयी थी। इसने एक कुल्हाडी के साथ अपने पति की
हत्या कर डाली थी जो इसकी बेटी के साथ अनुचित सम्बन्ध रखना चाहता
था। कोठरी मे सब औरतो की यह मुखिया थी, और लुक छिप कर किसी
तरह इन्हे शराब बेचा करती थी। वह चश्मा पहन कुछ सी रही थी। अपने
बडे बडे काम के आदी हाथो मे उसने सुई पकड रखी थी—तीन उगलियों
से और नोक अपनी तरफ किये, जैसे कि किसान औरत पकडती है।
उसकी बगल मे एक दूसरी स्त्री बैठी थी जो मोटी किरमिच का एक थैला
सी रही थी। यह औरत रेलवे मे चौकीदारी का काम करती थी। इसे
तीन महीने कैद की सजा दी गई थी, क्योकि उसने वक्त पर गाडी को

झण्डी नहीं दिखायी थी जिससे हादसा हो गया था। दयालु-स्वभाव और बातें करने की शौकीन थी, कद छोटा सा, नाक चपटी और आखें काली काली थी। सिलाई करने वाली औरतों म तीसरी औरत का नाम फेंदोस्या था। यह बेहद सुदर युवती थी, गोरा रग, गुलाबी गाल, बच्चा सी चमकती आख, सुनहरी बालो की लम्बी लम्बी चोटिया जो इसन सिर पर लपेट सी रखी थी। इसे इसलिए कैद कर रखा था कि इसने अपनी शादी के फौरन् ही बाद अपने घर वाले को जहर देन की कोशिश की थी (इसकी शादी, इससे बिना पूछे १६ साल की उम्र म ही कर दी गयी थी)। आठ महीने तक यह जमानत पर रिहा रही। इस दौरान इसकी अपने पति के साथ सुलह हो गई। सुलह ही नहीं हो गई, यह उसे प्यार करने लगी। और जब मुकद्दमे का वक्त आया तो दोनो जी जान से एक दूसरे को चाहते थे। इसके पति, ससुर और सास ने—खास तौर पर सास ने जो इसे बेहद प्यार करने लगी थी—इसे छुडाने की भरसक कोशिश की, लेकिन फिर भी इसे साइबेरिया म कडे परिश्रम की सजा द दी गयी। फेंदोस्या बडी दयालु-स्वभाव, और हसमुख लडकी थी, सारा वक्त हसती-खेलती रहती। उसका तख्ता मास्लोवा के बिल्कुल साथ था। उसे मास्लोवा से बेहद प्यार हो गया था, यहा तक कि उसकी देखभाल और खिदमत करना वह अपना फर्ज समझती थी। तख्तो पर दो और स्त्रिया बैठी थी जो कोई काम नही कर रही थी। उनमे से एक की उम्र लगभग ४० वर्ष की होगी, दुबला-पतला, पीला सा चेहरा, जो शायद किसी जमाने मे बडा खूबसूरत रहा होगा। उसकी गोद मे बच्चा था जो उसके गोरे चिचुडे स्तन को मुह लगाये दूध पी रहा था। इसके गाव मे पुलिस अफसर एक रगरूट को ले जा रहा था (यह लडका इस औरत का भतीजा था)। गाव वालो ने आपत्ति उठाई, क्योंकि उनकी राय मे वह उसे गैरकानूनी तौर पर ले जाया जा रहा था और पुलिस अफसर का रास्ता रोक कर लडके को छुडा लिया। इस औरत ने सबसे पहले आगे बढ कर उस घोडे की लगाम पकडी थी जिस पर बिठा कर उसे ले जाया जा रहा था। यही इसका जुर्म था। दूसरी स्त्री जो बेकार बैठी थी, कोई बुढिया थी जिसके बाल पके हुए थे और पीठ झुक गई थी। उसकी आखो से भी दयालुता टपकती थी। उसका तख्ता अलावघर के पीछे था। इस वक्त वह चार साल के फूले हुए पेट वाले लडके को पकडने की कोशिश कर रही थी जो हसता हुआ

उमके सामने आगे-पीछे भाग रहा था। इस लडके ने केवल एक [illegible]
पहन रखी थी, और इसके बाल छोटे छोटे थे। जब भी औरत के पास
से हो कर निकलता तो बार बार कहता—"देखा, नहीं पकड़ा, [illegible]
पकडा।" बुढ़िया और उसके बेटे को आग लगाने के जुर्म में [illegible]
गया था। यह अपनी सजा हसते-हसते काट रही थी। उसे चिन्ता थी [illegible]
अपने बेटे की, और मुख्यतया अपने बूढ़े पति की। वह सोचती कि उसका
"बूढा" बहुत बिगडता होगा क्योकि उसके कपड़े धोने वाला अब कोई
नही रहा था।

इन सात स्त्रियो को छोड कर चार स्त्रिया खुली खिडकी के पास,
सीखचो को पकडे खडी थी। बाहर आगन मे से उन कैदियो का [illegible]
जा रहा था जिनसे मास्लोवा की टक्कर हुई थी और ये स्त्रिया उन्हें
इशारे कर रही थी और चिल्ला चिल्ला कर उनसे बाते कर रही थीं।
इनमे से एक बडी भारी-भरकम औरत थी, थलथल पिलपिल, सिर पर [illegible]
रग के बाल, जर्द चेहरे, हाथो और गर्दन पर चित्तिया, गर्दन स्थूल जो
कॉलर मे से बाहर निकली हुई जान पडती थी। उसने कालर के बटन
खोल रखे थे। वह चिल्ला कर, फटी आवाज मे कोई अश्लील बात कह
रही थी। यह औरत चोरी के इलजाम मे कैद काट रही थी। उसकी
बगल मे एक दस बरस की लडकी जितनी सावले रग की स्त्री खडी थी।
लम्बी कमर, छोटी छोटी टागे, लाल धब्बो भरा चेहरा, आखें एक दूसरी
से दूर-दूर, और मोटे मोटे होठ थे जो उसके लम्बे लम्बे सफेद दातो को
भी ढक नही पाते थे। आगन मे जो कुछ हो रहा था, उसे देख कर वह
किसी किसी वक्त अचानक ऊची कर्कश आवाज मे हसने लगती। वह चोरी
और आग लगाने के इलजाम मे सजा काट रही थी। उसे सिगार-सिगरेट
का बडा शौक था, इसी लिए औरतो ने उसका नाम छबीली रख छोड़ा
था। इसके पीछे एक दुबली-पतली, दयनीय सी स्त्री, भूरे रग की [illegible]
गदी कमीज पहने खडी थी। उसे गर्भ था। इसे चोरी का माल छिपा
कर रखने का अभियोग लगाया गया था। यह औरत चुपचाप खडी थी
लेकिन आगन मे जो कुछ हो रहा था, उसे देख देख कर खुश हो रही
थी और मुस्करा रही थी, मानो उसे अच्छा लग रहा हो। इन्ही के साथ
एक नाटे कद की गठीली किसान औरत खडी थी, बडी बडी आखें
मिलनसार चेहरा। यह उस लडके की मा थी जो बुढ़िया के साथ खेल रहा

था। इसी की एक सात बरस की बेटी भी थी जो उसी के साथ जेल मे थी। बच्चे भी इसलिए उसके साथ जेल मे आये थे क्योकि बाहर इनकी देखभाल करने वाला कोई न था। नाजायज शराब बेचने के जुर्म मे कैद काट रही थी। वह खिडकी से कुछ हट कर खडी मोज़ा बुन रही थी। खिडकी से जो कुछ कहा जा रहा था उसे सुन तो रही थी लेकिन उसे बुरा समझती थी, और बार बार सिर हिला कर आखें बन्द कर रही थी। पर उसकी सात साल की बेटी, छोटी सी शमीज पहने, छोटे से, दुबले-पतले हाथ से लाल बालो वाली औरत की स्कर्ट पकडे खडी थी, और बडे ध्यान से उन अश्लील गालिया को सुने जा रही थी जो औरते और मद कैदी एक दूसर को निकाल रहे थे, और धीरे धीरे उन्हे मुह मे दोहरा रही थी, मानो ज़बानी याद कर रही हो। उसके पटुए के से बाल खुले लटक रह थे और नीली नीली आखें एकटक लाल बालो वाली औरत को देखे जा रही थी। बारहवी औरत एक पादरी की लडकी थी, लम्बी-ऊची, रोबीले आकार वाली लडकी जिसने अपने अवैध बच्चे को कुए म फेंक दिया था। वह इस गाली-गलोच की ओर कोई ध्यान नहीं दे रही थी। उसने भी केवल एक गन्दी सी शमीज पहन रखी थी और नगे पावो धूम रही थी। उसके सुनहरी बालो की एक छोटी सी लट जूडे मे से निकल कर लटक रही थी और बडी भद्दी लग रही थी। कोठरी म खाली जगह पर बिना किसी की ओर दखे, वह इधर-उधर चल रही थी, और जब भी दीवार के सामने पहुचती तो झट से घूम कर फिर चलने लगती।

३१

ताला खुलने की आवाज़ आई। दरवाज़ा खुला और मास्लोवा कोठरी म दाखिल हुई। सभी औरते घूम कर उसकी ओर देखने लगी। यहा तक कि पादरी की बेटी भी क्षण भर के लिए रुक गई और भवे चढा कर मास्लोवा की ओर देखा, पर फिर बिना कुछ कहे, लम्बे लम्बे डग भरती हुई तेज़ तेज़ चलने लगी। कोराब्ल्योवा ने सूई अपने भूरे रग के टाट मे खासी और चश्मे मे से प्रश्नसूचक नेत्रो से मास्लोवा की ओर दखा।

"हे भगवान्, लौट आयी क्या? मुझे तो पक्का यकीन था कि वे तुम्हे छोड देंगे। तो तुम्ह भी सजा मिल गई!" उसने गहरी खरज आवाज़ मे कहा। उसकी आवाज आदमियो जैसी थी।

उसने अपना चश्मा उतारा और अपना थाम उठा कर पास ही तख्त पर रख दिया।

"और यहा मैं और बुढिया चाची बैठी कह रही थी, 'यह भी हो सकता है कि मास्लोवा को फ़ौरन् ही छोड दें', सुनती हू ऐसा भी होता है। किसी किसी को तो ढेरो रुपया भी मिलता है। लेकिन सब क़िस्मत की बात है," चौकीदारिन कहने लगी। वह जब बातें करती तो ऐसा जान पडता जैसे गा रही है। "और हुआ बिल्कुल ही उलट। हमारा अनुमान बिल्कुल गलत निकला। भगवान् को यह मजूर नही था, प्यारा।" वह अपनी मधुर आवाज़ मे कहती गई।

"क्या यह कभी मुमकिन हो सकता है? क्या तुम्हें सजा दी गई है?" फ़ेदोस्या ने सद्भावना भरी, व्यग्र आवाज़ मे पूछा और अपनी हल्की नीली बच्चो की सी आखो से उसकी ओर देखने लगी। उसका चमकता चेहरा मुर्झा गया मानो उसे रुलाई आ रही हो।

मास्लोवा ने कोई उत्तर नही दिया। वह सीधी अपने तख्त की ओर गई, जो दिवार के साथ दूसरे नम्बर पर कोराब्ल्योवा के पास था, और जा कर बैठ गई।

"कुछ खाया भी है या नही?" फेदोस्या ने पूछा और उठ कर मास्लोवा के पास चली आई।

मास्लोवा ने जवाब नही दिया और डबलरोटी के दोनो रोल तख्त पर रख दिया। फिर अपना धूल भरा लबादा उतारा और अपने घुघराले बालो पर से रूमाल हटाया।

बुढिया औरत जो बच्चे के साथ खेल रही थी, चली आई और मास्लोवा के सामने आ कर खडी हो गई।

'च च च!" उसने बडी दया से सिर हिलाते हुए कहा।

लडका भी उसके साथ चला आया। डबलरोटी को देख कर उसके होठ खुल गये और आखें फाड फाड कर उसकी ओर देखने लगा। आज दिन भर जो उसके साथ बीती थी, उसके बाद इन सवेदनापूर्ण चेहरों को देख कर मास्लोवा के होठ कापने लगे और उसे रोना आ गया। लेकिन उसने अपने को सभाल लिया। पर यह उस वक्त तक रहा जब तक कि बुढिया और लडका यहा पर नही पहुचे। जब उसने बुढिया की दयाई, सहानुभूतिपूर्ण आवाज़ सुनी और बच्चे की डबलरोटी पर से हट कर अपने

ओर देखते पाया तो वह अपने को न रोक सकी। उसका सारा चेहरा कांपने लगा और वह फफक फफक कर रोने लगी।

"मैंने कहा नहीं था कि कोई अच्छा सा वकील कर ले," कोराब्ल्योवा ने कहा। "अब क्या मिला? देश निकाला?"

मास्लोवा कोई जवाब नहीं दे पायी। उसने डबलरोटी में से सिगरेटों की डिबिया निकाली और कोराब्ल्योवा के सामने बढ़ा दी। डिबिया पर एक गुलाबी गालों वाली औरत की तसवीर थी, जिसके बाल ऊपर को उठे हुए थे और बहुत नीचे गले वाली कमीज़ पहने थी। कोराब्ल्योवा ने डिबिया को देख कर सिर हिला दिया। लेकिन मुख्यतया इसलिए कि उसे मास्लोवा का इन चीजों पर पैसे जाया करना अच्छा नहीं लगा। फिर भी उसने एक सिगरेट निकाली, लैम्प के पास जा कर उसे सुलगाया, और एक कश ले कर मास्लोवा के हाथ में दे दिया। मास्लोवा अब भी रो रही थी। लेकिन वह बड़ी अधीरता से तम्बाकू के कश खीचने लगी।

"कड़ी मशक्कत की सज़ा मिली है," मास्लोवा ने धुआ छोड़ते हुए, सिसकी भर कर कहा।

"इन जाननेवालों को भगवान् का भी डर नहीं," कोराब्ल्योवा बुदबुदायी। "बिना किसी दोष के लड़की को सज़ा दे दी।"

खिड़की की ओर से ऊंची ऊंची हसने की कर्कश आवाज आई। औरतें हस रही थी। छोटी लड़की भी हस रही थी और उसकी पतली बचपना आवाज औरतो की तीखी फटी आवाज मे मिल रही थी। बाहर आंगन में किसी कैदी ने कोई ऐसी हरकत की थी जिस पर ये दर्शक औरतें हसने लगी थी।

"अरे, वह देखो उस सिर-मुंडे शिकारी कुत्ते को, क्या कर रहा है," लाल बालों वाली मोटी औरत ने कहा, और हसी से उसका सारा शरीर हिलने लगा। फिर सीखचों के पास आगे की ओर झुक कर उसने अश्लील जबान मे फिजूल चिल्लाना शुरू कर दिया।

"मोटी खूसट चिल्लाये जा रही है। क्या हुआ है जो इतना हस रही है?" कोराब्ल्योवा ने कहा और फिर मास्लोवा की ओर घूम कर बोली, "कितने साल?"

"चार साल," मास्लोवा ने जवाब दिया। उसकी आखों से झर झर आंसू बह रहे थे, यहां तक कि एक आंसू सिगरेट पर भी जा पड़ा। मास्लोवा

ने गुस्से मे सिगरेट मरोड कर फेंक दी और एक दूसरी सिगरेट निकाली

चौकीदारिन सिगरेट पीती तो नही थी लेकिन उसने फिर भी सिगरेट उठा ली और उसे सीधा करने लगी। और उसी तरह सारा वक्त बात करती रही—

"हा, तो यह हुआ प्यारी, आखिर तो यह सच है कि सब को तो इन्होंने भाड मे झोक दिया है। अब जो मन मे आये करते है। यहा हम बैठी अनुमान लगा रही थी कि तुम्हे छोड दिया जायगा। कोराब्ल्योवा कहती थी—'उसे जरूर छोड देंगे'। मैं कहती थी—'नही, नही प्यारी, मेरा दिल कहता है कि उसे कभी नही छोडेंगे।' और वही हुआ भी," वह बोलती जा रही थी। प्रत्यक्षत उसे अपनी आवाज सुन कर मजा आ रहा था।

एक एक कर के वे औरते भी मास्लोवा के पास चली आयीं जो खिडकी के पास खडी थी। बाहर आगन मे से कैदी चले गये थे जिनसे उनका दिलबहलाव हो रहा था। सबसे पहले मोटी मोटी आखो वाली औरत आई जो नाजायज़ शराब बेचने के कारण कैद काट रही थी। उसके साथ उसकी नही बेटी भी आई।

"इतनी सख्त सज़ा क्यो मिली?" मास्लोवा के पास बैठते हुए और खूब तेज तेज़ बुनते हुए उसने कहा।

"इतनी सख्त क्यो? क्योकि पैसे नही थे। इसलिए। अगर पैसे होते, और एक अच्छा वकील कर लिया जाता जो उनकी चालाकिया पकड सकता तो यह छूट जाती। यकीनी बात है," कोराब्ल्योवा ने कहा। "वहा एक वकील है, क्या नाम है उसका—वह जिसके मुह पर बाल ही बाल है और लम्बी सी नाक है—वह ऐसा मर्म जानता है कि फासी के तख्ते पर से उतरवा लेता है आदमी को। मैं बताऊ तुम्हें। अगर उसे कर लिया होता तो कोई बात ही नही थी।"

"जी, वह तुम्हारे हाथ जरूर आता," छबीली ने उनके पास बैठते और अपनी बत्तीसी निपोरते हुए कहा, "वह एक हजार से नीचे तो बात ही नहीं करता।"

"लगता है जैसे तुम पर ग्रह है," उस बुढिया ने कहा जिसे आग लगाने के जुर्म मे कैद किया गया था। "जरा सोचो तो, एक तो सारे की घर वाली को फसा लिया, दूसरे उसे कैद कर दिया। और मुझे भी

मेरा बुढापा नही देखा। कीडे खा जायेंगे हमे यहा पर," अपनी कहानी उसने फिर शुरु कर दी जो सैंकडो बार पहले सुना चुकी थी। "या जेल भुगतो या भाग कर खाम्रो। भिखारी और कैदी बनते देर नही लगती।"

"लगता है सभी एक जैसे है," नाजायज़ शराब बेचने वाली ने कहा, और अपनी बेट के सिर की ओर देख कर अपनी बुनाई तख्ते पर रख दी और लडकी को घुटनो के बीच खडा कर के उसके बालो मे से जूए निकालनी शुरू कर दी। "पूछते हैं—'तुम शराब क्यो बेचती हो?' वाह!" वह बोलती गई "क्यो, बच्चो का पेट कैसे पाले?"

मास्लोवा ने य शब्द सुने तो उसका शराब पीने का जी कर आया।

"थोडी सी शराब मिल जाय?" अपनी आस्तीन मे आखे पोछते हुए उसने कोराब्ल्यावा से पूछा। अब उसकी सिसकिया कुछ थमने लगी थी।

"अच्छी बात है, हो जाय," कोराब्ल्योवा बोली।

३२

मास्लोवा ने पैसो का कूपन निकाला और कोराब्ल्योवा के हाथ मे दे दिया। इसे भी उसन डबलरोटी मे छिपा रखा था। कोराब्ल्यावा पढना नही जानती थी, फिर भी उसन कूपन ले लिया। उसे छबीली पर यकीन था, और छबीली ने बताया था कि कूपन दो रूबल और पचास कापेक का है। कोराब्ल्योवा तख्तो पर पाव रखती हुई रोशनदान तक जा पहुची जहा उसने शराब की एक छोटी सी शीशी छिपा रखी थी। उसे शराब निकालते देख कर व औरते वहा से सरक गइ जिनके तख्त वहा से दूर थे। इस बीच मास्लोवा ने अपने लबादे और रूमाल को झाड कर साफ किया और तख्ते पर चढ कर बैठ गई और डबलरोटी खाने लगी।

"मैंने तुम्हारे लिए चाय रख दी थी," फेदोस्या बोली, और एक तख्ते पर से टीन की चायदानी और एक मग उठा लाई जिन्हे उसने एक चियडे मे लपट कर रखा हुआ था, "पर चाय जरूर ठण्डी हो गई होगी।"

चाय ठण्डी थी, और उसमे चाय की कम और टीन की अधिक गध आ रही थी। फिर भी मास्लोवा ने मग भर लिया और डबलरोटी के साथ साथ उसे पीने लगी।"

"फिनाश्का, यह लो," उसने डबलरोटी का एक टुकड़ा तोड़ा और छोटे लड़के को दिया जो खड़ा उसके चलते मुह को देखे जा रहा था।

इस बीच कोराब्ल्योवा ने शराब की शीशी और एक मग मास्लोवा के आगे बढ़ा दिया। मास्लोवा ने थोड़ी थोड़ी शराब कोराब्ल्योवा और छबीली को भी पीने के लिए दी। इन क़ैदियों का इस कमरे में बहुत ऊंचा समझा जाता था, क्योंकि इनके पास कुछ पैसे थे। इसलिए भी कि इनके पास जो कुछ होता ये दूसरों के साथ बाट कर खाते थे।

कुछ ही मिनटों मे मास्लोवा सहज मे आ गई और चहक चहक कर अदालत की बात सुनाने लगी। सरकारी वकील की नक्ल उतारती। जिस बात ने उसे सबसे अधिक प्रभावित किया, उसके बारे में बोली। सभी आदमी उसके पीछे पीछे जाते रहे थे, वह सुनाती रही, सभी आदमी उसे घूर घूर कर देखते थे, और जितनी देर वह कैदियों के कमरे में रही, बार बार अन्दर आते रहे।

"एक सिपाही मुझे कहने लगा– 'ये सब तुम्हें देखने आते है।' एक आदमी अन्दर आता और पूछता–'यहा मेरा कागज़ पड़ा था।' या कुछ और। मगर मैं जानती थी, वह कागज़ ढूढने नही आया था, वह तो मन धूरने के लिए आया है," उसने सिर हिलाते हुए कहा, "पूरे कलाकार थे।"

"ठीक कहती हो," चौकीदारिन की सुरीली आवाज़ आई, "वे तो इस तरह मण्डराते हैं जैसे गुड पर मक्खिया, और कुछ मिले या न मिले, उन जैसे लोग रोटी छोड़ देंगे पर औरत को नही छोड़ेंगे।"

"यहा पर भी वही कुछ हुआ," मास्लोवा ने उसकी बात काटते हुए कहा, "मैं अभी कचहरी से वापस पहुची ही थी कि रेल पर से क़ैदियों का एक गिरोह यहा पहुचा। मुझे छोड़ते ही न थे, मेरी समझ मे नही आ रहा था कि उनसे कैसे पीछा छुड़ाऊ। शुक्र है, छोटे इन्स्पेक्टर ने उन्हें वहा से भगा दिया। एक तो मेरे पीछे ही पड़ गया था। मैं तो मुश्किल से उसके हाथो से बच पायी।

"कैसा था वह?" छबीली ने पूछा।

"सावले रग का था, बड़ी बड़ी मूछें थी।"

'वही होगा।"

"वही कौन?"

"श्चेग्लोव, वही जो अभी अभी आगन मे से गया है।"

"श्चेग्लोव कौन है?"

"वाह, तुम श्चेग्लोव को भी नही जानती? दो बार वह साइबेरिया से भाग चुका है। अब उन्होंने फिर उसे पकड लिया है, मगर यह फिर भाग जायेगा। जेल के वाडर खुद उससे डरते हैं," छबीली बोली। उसे जेल की सब बाता की जानकारी रहती थी। किसी न किसी तरह यह कैदियो को पुर्जे भेजती रहती थी। "वह जरूर भाग जायेगा, मानी हुई बात है।"

"अगर वह भाग जायेगा तो हमे कौन सा अपने साथ ले जायेगा," कोराब्ल्योवा ने कहा और मास्लोवा की ओर घूम गई, "तुम बताओ कि अपील करने के बारे मे वकील क्या कहता है? दरखास्त देने का यही वक्त है।"

मास्लोवा ने कहा कि मुझे इस बारे मे कुछ भी मालूम नही।

उसी वक्त लाल बालो वाली औरत इन "बडे लोगो" के पास चली आई। अपने दोनो चित्तीदार हाथ उसने बालो मे खस रखे थे और नाखूनो से सिर खुजला रही थी।

"मैं तुम्हे सब बताये देती हू, येकातेरीना," वह कहने लगी, "सबसे पहली बात तो यह कि तुम्हे लिख कर देना होगा कि यह सजा नाजायज है, फिर इसके बाद सरकारी वकील को नोटिस देना होगा।"

"तुम्हारा यहा क्या काम है?" कोराब्ल्यावा ने गुस्से से कहा। "शराब की गध तुम तक पहुच गई है न! तुम्हारी बक बक की यहा कोई जरूरत नही। अपनी नसीहत अपने पास रखो।"

"तुम्हारे साथ कौन बात कर रहा है? तुम अपनी टाग मत अडाओ।"

"शराब लेने आई हो और क्या। इसी लिए नाक रगडती यहा आ गई हो।"

"इसे थोडी दे देंगे," मास्लोवा ने कहा, जो हमेशा अपनी चीजे दूसरो के साथ बाटने के लिए तैयार रहती थी।

"इसे मैं मजा चखाऊगी "

"आओ, चखाओ मजा," लाल बालो वाली ने कोराब्ल्योवा की ओर बढते हुए कहा, "तुम समझती हो मैं तुमसे डरती हू?"

"डायन!"

"डायन वह जो दूसरो को कहे।"

"रण्डी।"

"रण्डी मैं? मैं रण्डी हू। तू कौन है? हत्यारी, कैदी।" लाल बालो वाली ने चीख कर कहा।

"चली जाओ यहा से, मैं तुम्हे कह रही हू," कोराब्ल्योवा ने दृढ़ता से कहा, मगर लाल बालो वाली पास आती गई, और कोराब्ल्योवा ने उसे धक्का दिया। जान पडता है लाल बालो वाली इसी इन्तजार मे थी। उसने झट हाथ बढा कर कोराब्ल्योवा के बाल पकड लिये और दूसरे हाथ से उसे मुह पर घूसा जमाने की कोशिश की। कोराब्ल्योवा ने उसका यह हाथ पकड लिया। मास्लोवा और छबीली ने लाल बालो वाली का बाह पकड ली और उसे पीछे खीचने की कोशिश करने लगी। क्षण भर के लिए उसने बुढिया के बाल छोड दिये, पर दूसरे ही क्षण उसने फिर उन्हें पकड कर अपनी कलाई पर लपेट लिया। कोराब्ल्योवा का सिर एक ओर को झुका हुआ था। एक हाथ से वह लाल बालो वाली को घूसे लगा रही थी और कोशिश कर रही थी कि किसी तरह उसके हाथ को दांतों से काट सके। बाकी औरते चीखती चिल्लाती उन्हें छुडाने की कोशिश कर रही थी। यहा तक कि तपेदिक की मरीज भी उठ आई थी और खांस रही थी और तमाशा देखे जा रही थी। बच्चे रोने लगे थे और एक दूसरे के साथ सिमट कर खडे हो गये थे। शोर सुन कर जमादारिन और जमादार वहा आ गये। जो औरते लड रही थी वे अलग हो गई और शिकायतें करने लगी। कोराब्ल्योवा अपनी सफेद चुटिया को खोल कर उसमें से टूटे बाल निकाल रही थी। और लाल बालो वाली औरत का कुरता फट गई थी जिससे उसकी पीली पीली छाती नजर आने लगी थी, और वह दोनो हाथो से कमीज को पकडे हुए थी।

"मैं जानती हू यह सब शराब की करतूत है। जरा ठहरो, मैं कल ही इन्स्पेक्टर को बताऊगी और वह तुम्हें मजा चखायेगा। मुझे साफ़ उसकी गन्ध आ रही है। हटा लो सब कुछ वरना बहुत बुरा होगा," जमादारिन ने कहा, "हमारे पास तुम्हारे झगडे निपटाने के लिए वक्त नहीं है। अब चुपचाप अपनी अपनी जगह पर चली जाओ। खबरदार जो शोर मचाया तो।'

मगर शोर फिर भी बडी देर तक मचता रहा। बडी देर तक औरतें

एक दूसरी से झगडती रही और बोलती रहीं कि किसका कसूर है। आखिर जमादारिन और जमादार दोनो कोठरी मे से चले गये, औरते थोडी देर के लिए चुप हो गयी और अपने अपने तख्ते पर जा लेटी। बुढिया देव-प्रतिमा के सामने जा खडी हुई और प्रार्थना करने लगी।

"मिल गईं दो सॉवेरन राडें," सहसा कमरे के दूसरे सिरे से लाल बालो वाली औरत की फटी हुई आवाज आई, एक एक शब्द के साथ चुनी चुनी गाली निकल रही थी।

"अभी जी नही भरा? फिर से सीधा कर दूगी," कोराब्ल्योवा ने जवाब दिया। उसने भी गालिया निकाली। फिर दोनो चुप हो गईं।

"किसी ने छुडाया न होता तो मैं तेरी आखें नोच लेती," लाल बालो वाली ने फिर बोलना शुरू किया। दूसरी ओर से पट से वैसा ही जवाब आया।

फिर थोडी देर तक चुप्पी छायी रही, परन्तु कुछ देर तक ही। गालियो की बौछाड फिर पडने लगी। पर बौछाडो के बीच की चुप्पी ज्यादा लबी होती गई और अन्त मे कमरे मे बिल्कुल सन्नाटा छा गया। बाकी सब स्त्रिया भी तख्तो पर लेटी हुई थी, कुछेक तो खर्राटे भी भरने लगी थी। केवल बुढिया, जो हमेशा बडी देर तक प्रार्थना करती रहती थी, अब भी देव-प्रतिमा के आगे बार बार सिर नवा रही थी। और पादरी की बेटी वार्डर के चले जाने पर उठ खडी हुई थी, और फिर कमरे मे इधर-उधर टहलने लगी थी।

मास्लोवा के दिमाग मे बडी देर तक यह ख्याल चक्कर लगाता रहा कि मैं मुजरिम हू, सजायाफ्ता मुजरिम, जिसे कडी मशक्कत की सजा दी गई है। आज दो बार अलग अलग औरतो ने उसके लिए इस शब्द का प्रयोग किया था। एक बार बोच्कोवा ने और दूसरी बार इस लाल बालो वाली औरत ने। पर उसका मन मानने को तैयार नही था। उसके साथ वाले तख्ते पर कोराब्ल्योवा ने करवट बदली।

"किसे ख्याल था कि ऐसा होगा," धीमी आवाज मे मास्लोवा ने कहा, "लोग कैसे कैसे जुर्म करते हैं और साफ छूट जाते हैं, और मैं बेकसूर भुगत रही हू।"

"चिन्ता नही करो बच्ची, लोग साइबेरिया मे भी रह लेते हैं। तुम भी वहा पर खो नही जाओगी," कोराब्ल्योवा ने ढाढस बधाते हुए कहा।

"खो तो नही जाऊगी, पर फिर भी है तो सब बेइन्साफी ही। मैं ये सब नही भुगतना चाहती—मुझे ज्यादा आराम से रहने की आदत है।"

"भगवान के आगे किसी का बस नही चलता," कोराब्ल्योवा ने उसास भरते हुए कहा, "कुछ बस नही चलता।"

"ठीक है, बडीबी, पर मेरे लिए बडा मुश्किल है।"

कुछ देर तक दोनो चुप रही।

"सुनती हो उस नामुराद की आवाज?" कोराब्ल्योवा ने फुसफुसा कर कहा। कमरे के दूसरे सिरे से एक अजीब सी आवाज आने लगी थी।

लाल बालो वाली औरत दबी दबी सिसकिया ले रही थी। वह इसलिए रो रही थी कि उसे गालिया निकाली गई, पीटा गया और फिर शराब नही मिली, जिसके लिए वह तरस गई थी। साथ ही उसे याद आ रहा था कि हमेशा ही लोग उसे गालिया देते रहे हैं, उसका अपमान करते रहे हैं, उसकी खिल्ली उडाते रहे हैं, पीटते रहे हैं। अपने दिल को ढाढस देने के लिए वह फैक्ट्री के मजदूर फेदका मोलोदेन्कोव से अपने पहले प्यार की बात सोचने लगी। पर साथ ही उसे यह भी याद आने लगा कि उस प्यार का क्या अत हुआ था। और अत यह हुआ था कि इसी मोलोदेन्कोव ने नशे मे धुत्त हो कर हसी हसी मे उसके सबसे कोमल अग पर फिटकरी का तेजाब लगा दिया था और फिर उसे दर्द से छटपटाता देख कर अपने दोस्तो के साथ ठहाके मारता रहा था। यह याद कर के उसे अपने पर तरस आने लगा। फिर यह सोच कर कि कोई भी सुन नही रहा है, वह बच्चो की तरह रोने लगी, नाक मे से सू स करती और अपने आसू निगलती जाती।

"तरस आता है बेचारी पर," मास्लोवा बोली।

"हा, तरस तो आता ही है, पर टाग अडाने का क्या काम।"

३३

दूसरे दिन जब नेख्लूदोव जागा तो उसे ऐसा भास हुआ जैसे उसके साथ कोई घटना घटी है। क्या हुआ है यह याद आने से पहले ही उसे यह महसूस हो रहा था कि कोई अच्छी और महत्वपूर्ण बात हुई है।

"कात्यूशा, मुकद्दमा।" ठीक है, अब और झूठ नही बोलना होगा, अब सच सच बता देना होगा।

अचानक उसी दिन ही उसे मारीया वासील्येव्ना से वह पत्र भी मिल गया जिसका उसे बहुत दिना से इन्तज़ार था। इस चिट्ठी की उसे खास तौर पर ज़रूरत भी थी। मारीया वासील्येव्ना ने उसे आज़ाद कर दिया था और शादी के लिए अपनी शुभेच्छाए भेजी थी।

"शादी!" उसने व्यग भरे लहजे मे कहा, "इस वक्त तो शादी के ख्याल तक से मैं कोसा दूर हू!"

उसे वे इरादे याद आये जो पिछले रोज़ उसने किये थे कि उसके पति से साफ साफ सब बात कह दूगा, अपना सारा दोप स्वीकार करूगा, और कहूगा कि जो भी तुम इसकी सज़ा मुझे देना चाहो, मुझे सिर-आखो पर मजूर होगी। पर यह सब कल जितना आसान लग रहा था, आज उतना आसान नही था। फिर एक आदमी को जान बूझ कर दुखी करने से क्या हासिल—जब वह जानता ही नही तो उसे बताने का क्या लाभ? हा, अगर वह खुद मेरे पास आये और पूछे तो मैं सब कुछ बता दूगा। लेकिन खुद यह मतलब लेकर उसके पास जाऊ और सब कुछ बताऊ—इसकी बिल्कुल कोई ज़रूरत नही।

इसी तरह मिस्सी को भी सच सच बता देना आज कठिन लग रहा था। वह बोलना शुरू ही करेगा तो वह नाराज़ हो उठेगी। सासारिक मामलो म हर बात साफ साफ नही कही जाती। हा, उसके मन मे एक बात बिल्कुल साफ थी, कि वह उनके घर कभी नही जायेगा, और जो उन्होंने पूछा तो सच सच बता भी देगा।

परन्तु जहा तक कात्यूशा का सवाल है, उससे कोई भी बात नही छिपानी होगी, सब कह देना होगा।

"मैं जेलखाने मे जा कर उससे मिलूगा, और सब बात कह कर उससे माफी मागूगा। और अगर ज़रूरत हुई हा, अगर ज़रूरत हुई तो उससे शादी भी कर लूगा," उसने सोचा।

यह विचार आते ही कि अपनी नैतिक सतुष्टि की खातिर वह सब कुछ कुरबान करने के लिए तैयार है और उसके साथ शादी कर लेगा, वह द्रवित हो उठा।

बहुत दिना के बाद आज उसे दिन का काम आरभ करते समय इतनी स्फूर्ति का अनुभव हो रहा था। जब आग्राफेना पेत्रोव्ना उसके कमरे मे

"खो तो नही जाऊगी, पर फिर भी है तो सब बेइसाफी ही। मैं .
सब नही भुगतना चाहती—मुझे ज्यादा आराम से रहने की आदत है।
"भगवान् के आगे किसी का बस नही चलता," कोराब्ल्योवा
उसास भरते हुए कहा, "कुछ बस नही चलता।"
"ठीक है, बडीबी, पर मेरे लिए बडा मुश्किल है।"
कुछ देर तक दोनो चुप रही।
"सुनती हो उस नामुराद की आवाज?" कोराब्ल्योवा ने फुसफु
कर कहा। कमरे के दूसरे सिरे से एक अजीब सी आवाज आने लगी थी।
लाल बालो वाली औरत दबी दबी सिसकिया ले रही थी। वह रह
रो रही थी कि उसे गालिया निकाली गईं, पीटा गया और फिर भी शराब
नही मिली, जिसके लिए वह तरस गई थी। साथ ही उसे याद आ रहा
था कि हमेशा ही लोग उसे गालिया देते रहे हैं, उसका अपमान करते र
हैं, उसकी खिल्ली उडाते रहे हैं, पीटते रहे हैं। अपने दिल को ढाढ
देने के लिए वह फैक्ट्री के मजदूर फेदका मोलोदेकोव से अपने पहले प्या
की बाते सोचने लगी। पर साथ ही उसे यह भी याद आने लगा कि उ
प्यार का क्या अत हुआ था। और अत यह हुआ था कि इसी मोलोदेकोव
ने नशे मे धुध हो कर हसी हसी मे उसके सबसे कोमल अग पर तेजा
का तेजाब लगा दिया था और फिर उसे दर्द से छटपटाता देख कर अप
दोस्तो के साथ ठहाके मारता रहा था। यह याद कर के उसे अपने प
तरस आने लगा। फिर यह सोच कर कि कोई भी सुन नही रहा है, व
बच्चो की तरह रोने लगी, नाक मे से सू सू करती और अपने आसू निगल
जाती।

"तरस आता है बेचारी पर," मास्लोवा बोली।

"हा, तरस तो आता ही है, पर टाग अडाने का क्या काम।"

३३

दूसरे दिन जब नेख्लूदोव जागा तो उसे ऐसा भास हुआ जैसे उ
साथ कोई घटना घटी है। क्या हुआ है, यह याद आने से पहले ही
यह महसूस हो रहा था कि कोई अच्छी और महत्वपूर्ण बात हुई है।

"कात्यूशा, मुकद्मा।" ठीक है, अब और झूट नही बोलना होगा, अब सच सच बता देना होगा।

अचानक उसी दिन ही उसे मारीया वासील्येव्ना से वह पत्र भी मिल गया जिसका उसे बहुत दिनो से इन्तजार था। इस चिट्ठी की उसे खास तौर पर जरूरत भी थी। मारीया वासील्येव्ना ने उसे आजाद कर दिया था और शादी के लिए अपनी शुभेच्छाए भेजी थी।

"शादी!" उसने व्यग भरे लहजे मे कहा, "इस वक्त तो शादी के ख्याल तक से मैं कोसो दूर हू!"

उसे वे इरादे याद आये जो पिछले रोज उसने किये थे कि उसके पति से साफ साफ सब बात कह दूगा, अपना सारा दोष स्वीकार करूगा, और कहूगा कि जो भी तुम इसकी सजा मुझे देना चाहो, मुझे सिर-आखो पर मजूर होगी। पर यह सब कल जितना आसान लग रहा था, आज उतना आसान नही था। फिर एक आदमी को जान बूझ कर दुखी करने से क्या हासिल—जब वह जानता ही नही तो उसे बताने का क्या लाभ? हा अगर वह खुद मेरे पास आये और पूछे तो मैं सब कुछ बता दूगा। लेकिन खुद यह मतलब लेकर उसके पास जाऊ और सब कुछ बताऊ—इसकी बिल्कुल कोई जरूरत नही।

इसी तरह मिस्सी को भी सच सच बता देना आज कठिन लग रहा था। वह बोलना शुरू ही करेगा तो वह नाराज हो उठेगी। सासारिक मामलो मे हर बात साफ साफ नही कही जाती। हा, उसके मन मे एक बात बिल्कुल साफ थी, कि वह उनके घर कभी नही जायेगा, और जो उन्होने पूछा तो सच सच बता भी देगा।

परन्तु जहा तक कात्यूशा का सवाल है, उससे कोई भी बात नही छिपानी होगी सब कह देना होगा।

"मैं जेलखाने मे जा कर उससे मिलूगा, और सब बात कह कर उससे माफी मागूगा। और अगर जरूरत हुई हा, अगर जरूरत हुई तो उससे शादी भी कर लूगा," उसने सोचा।

यह विचार आते ही कि अपनी नैतिक सतुष्टि की खातिर वह सब कुछ कुरबान करने के लिए तैयार है और उसके साथ शादी कर लेगा, वह द्रवित हो उठा।

बहुत दिनो के बाद आज उसे दिन का काम आरभ करते समय इतनी स्फूर्ति का अनुभव हो रहा था। जब आग्राफेना पेत्रोव्ना उसके कमरे मे

आई तो उसने उसे साफ साफ कह दिया कि अब वह इस घर में नहीं रहेगा, और उसे उसकी खिदमत की जरूरत नही होगी। वह घर में इत नौकर चाकर और इतना साज-सामान इसलिए रखे हुए था कि उसका ख्याल था कि शादी करेगा। यह बात सभी समझते थे। इसलिए अब घर छोड देने का एक विशेष महत्व था। आग्राफेना पेत्रोव्ना ने हैरान हो कर उसकी ओर देखा।

"जिस ध्यान से आपने मेरी देख-सभार की है, मैं उसके लिए आपका शुक्रगुज़ार हू। पर अब मुझे इतने बडे घर की और इतने नौकरो की कद जरूरत नही है। अगर आप मेरी मदद करना चाहती हैं, तो बस सब साज-सामान ठिकाने लगवा दें, जैसा कि मा के जीते-जी हुआ करता था जब नताशा आयेगी तो खुद सारा प्रबध कर लेगी।" (नताशा नेखल्यूदोव की बहिन थी।)

आग्राफेना पेत्रोव्ना ने सिर हिलाया—

"ठिकाने लगवा दू, क्यो? उनकी तो जरूरत होगी।"

"नही, इनकी जरूरत नही होगी, आग्राफेना पेत्रोव्ना, इनकी बिलुकल जरूरत नही होगी" उसके सिर हिलाने का अभिप्राय समझ कर नेखल्यूदोव ने जवाब दिया। "साथ ही मेहरबानी कर के कोर्नेई को भी कह देना कि अब मुझे उसकी भी जरूरत नही होगी। मैं उसे दो महीने की तनख्वाह दे दूगा।"

"बडे खेद की बात है, दमीत्री इवानोविच, कि आप ऐसा करने की सोच रहे हैं," वह बोली, "अगर आप विदेश घूमने भी गये, तो भी लौट कर शहर में घर की तो जरूरत होगी।"

"आप जो कुछ सोच रही हैं वह ठीक नही है, आग्राफेना पेत्रोव्ना। मैं विदेश नही जा रहा हू। यदि मैं कही गया भी तो किसी दूसरी ही दिशा मे जाऊगा।"

सहसा उसका चेहरा लाल हो गया।

"मुझे जरूर बता देना चाहिए," उसने सोचा, "अब कुछ छिपाना नही चाहिए। सभी को सब कुछ बताना चाहिए।"

"कल मेरे साथ एक बहुत ही अजीब और महत्वपूर्ण बात घटी। आपको वह लडकी कात्यूशा याद है जो फफी मारीया इवानोव्ना के यहा रहती थी?"

"हा, हा, क्यो नही, मैंने ही तो उसे सीना पिरोना सिखाया था।"

"कल अदालत मे इसी लडकी का मुकद्दमा था और मैं जूरी मे था।"

"हे भगवान्, बडे खेद की बात है। किस जुर्म के लिए उस पर मुकद्दमा चलाया जा रहा था?"

"कत्ल के लिए, और यह सब मेरा दोष है।"

"वाह, कैसी अजीब बात कहते है। इसमे आपका कैसे दोष हो सकता है?" आग्राफेना पेत्रोव्ना ने कहा। उसकी बूढी आखो मे एक चमक सी दौड गयी।

उसे कात्यूशा वाला किस्सा मालूम था।

"हा, वह सब मेरे ही कारण हुआ। यही वजह है कि आज मेरे सब इरादे बदल गये हैं।"

"आपको इससे क्या फरक पडता है?" अपनी हसी दबाते हुए आग्राफेना पेत्रोव्ना ने कहा।

"फरक यह पडता है कि मैंने ही उसे इस रास्ते पर डाला है, अब मेरा फर्ज हो जाता है कि मैं उसकी हर तरह से मदद करू।"

"जैसे आपकी खुशी हो करो, लेकिन इसमे आपकी कोई खास कसूर तो नही। हर किसी के साथ ऐसी बाते होती रहती है, और आदमी जरा समझ बूझ से काम ले तो बात रफा-दफा हो जाती है और लोग उसे भूल जाते हैं," उसने बडी गभीरता और सख्ती से कहा। "आप इसका दोष अपने पर क्यो लेते हो? इसकी क्या जरूरत है? मैंने भी सुना था कि वह बुरे रास्ते पर पड गई थी। इसमे दोष किसका है?"

"मेरा। इसी लिए मैं अपनी गलती ठीक करना चाहता हू।"

"इन मामलो को ठीक करना आसान नही होता।"

"यह मेरा काम है। लेकिन अगर आपको अपना ख्याल आ रहा है तो उसकी चिन्ता नही करो। मा की जैसी इच्छा थी, मैं उसी के अनुसार "

"मैं अपने बारे मे नही सोच रही हू। आपकी स्वर्गीय मा का बर्ताव मेरे साथ इतना अच्छा रहा है कि मुझे किसी चीज की कमी नहीं। लीजा मुझे बार बार बुलाती रही है (लीजा उसकी भतीजी का नाम था)। जब मेरी जरूरत यहा पर नही रहेगी तो मैं उसके पास चली जाऊगी। मुझे अफसोस केवल इस बात का है कि आपने इस बात को दिल से लगा लिया है। ऐसी बाते तो आये दिन हर किसी के साथ होती रहती हैं।"

"मैं ऐसा नही समझता। मेरी आपसे यही प्रार्थना है कि आप हर सामान ठिकाने लगाने मे और घर मे कोई किरायेदार बिठान म मेरी मदद करो। और मुझ पर खफा नही होना। आपने मेरे लिए बहुत कुछ किया है और मैं आपका बेहद शुक्रगुज़ार हू।"

और अजीब बात है, जिस क्षण नख्लूदोव को यह महसूस होने लगा कि वह खुद बुरा है और घृणास्पद है, उसी क्षण से उसे अन्य लोग अच्छे लगने लगे। आग्राफेना पेत्रोव्ना और कोर्नेई के प्रति उसके दिल म प्यार का भाव उठने लगा। उसका मन चाहता था कि वह कोर्नेई के पास भी जा कर अपना दोष कबूल करे, परन्तु कोर्नेई सदा ही इतने आदर और शिष्टता के साथ उससे पेश आता था कि उसकी हिम्मत नही हुई।

कचहरी की ओर जाते हुए वह उन्ही सडको पर से जा रहा था जिन पर कल गया था, गाडी भी वही थी। लेकिन वह महसूस कर रहा था जैसे कोई दूसरा ही व्यक्ति चला जा रहा हो। इस परिवतन पर वह स्वय बहुत हैरान था।

कल उसे लग रहा था कि वह मिस्सी से शादी करेगा, आज उसे यह शादी असम्भव लग रही थी। कल वह अपनी स्थिति या समझता था कि मिस्सी उससे विवाह कर के खुश होगी, इस बात म जरा भी सन्देह उसे नही था। आज उसे महसूस होने लगा था कि वह शादी करने के सवथा अयोग्य है, न केवल शादी करने के ही, बल्कि मिस्सी के साथ किसी प्रकार की घनिष्ठता के भी। "अगर उसे पता चल पाय कि मैं कैसा आदमी हू तो मेरा तो वह मुह तक नही देखना चाहेगी। और कल ही मैं उसके दोष निकाल रहा था कि वह उस आदमी से आखें लडा रही थी। पर नही, यदि वह मेरे साथ विवाह करना मज़ूर भी कर ले तो मेरे मन को चैन नही होगा। खुशी तो दूर रही। मुझे सारा वक्त यह बात सतायेगी कि दूसरी जेल म पडी है और कल या परसो उसे साइबेरिया मे कडी मशक्कत के लिए भेज देंगे। जिस लडकी को मैंने बरबाद किया है वह तो साइबेरिया ले जायी जा रही होगी, और मैं अपनी दुल्हन के साथ मित्रो और सम्बन्धियो को मिलने जाऊगा, और वे मुझे बधाइया देंगे। या स्थानीय स्कूलो की जाच होगी, और सदस्यो की बैठको मे उन सुधारों पर बहस होगी जो जाच कमेटी ने प्रस्तुत करेगी। लोग पचियो डालेंगे और मैं अभिजात वग के उसी प्रधान के साथ बैठ कर, जिसे मैं इतनी

ाचता से धोखा देता आया हू, इन्हे गिनूगा। वहा तो पर्चियां गिनूगा और उसके बाद छिप कर उसकी पत्नी से मिलने जाऊगा (उफ! कैसा घिनौना विचार है!)। या मै अपनी तसवीर पर काम करने लगूगा जो कभी भी खत्म नही हो पायेगी, क्योंकि मुझे ऐसी फिजूल चीजों पर न तो वक्त जाया करना ही चाहिए और न ही अब मैं यह सब कर सकता हू।" वह सोचता जा रहा था। अपने मे इस परिवर्तन का भास पा कर उसका मन बल्लियों उछल रहा था।

"पहला काम तो यह है कि वकील से मिलू और पता लगाऊ कि उसने क्या निश्चय किया है फिर उसे मिलने जाऊ जिसे कल मुजरिम करार दिया गया था, और उसके सामने दिल खोल कर रख दू।"

और जब मन ही मन उसने इस बात की कल्पना की कि वह कैसे उससे मिलेगा, किस भांति उसे सब कुछ बतायेगा, अपना पाप स्वीकार करेगा, उससे कहेगा कि मैं इस पाप को धोने के लिए जो बन पडेगा करूगा और उससे शादी कर लेगा, तो उसका हृदय एक विचित्र आनन्द से भर उठा और उसकी आखो मे आसू छलक आये।

३४

जब नेख्लूदोव कचहरी पहुचा तो बरामदे मे ही उसे कल वाला पेशकार मिला। उसने पेशकार से पूछा कि सजायाफ्ता कैदियों को कहा रखा जाता है, और उनसे मिलने के लिए किसकी इजाजत लेने की जरूरत होती है। पेशकार ने बताया कि सजायाफ्ता कैदी अलग अलग स्थानो पर रखे जाते है, और जब तक उन्हे आखिरी फैसला नही सुना दिया जाता उनसे मिलने की किसी को इजाजत नही होती। लेकिन अगर बडा सरकारी वकील मिलने की इजाजत दे दे तो दूसरी बात है।

"आज अदालत की कार्यवाही के बाद मैं खुद आपको सरकारी वकील के पास ले चलूगा। इस वक्त तो वह यहा पर है भी नही। अदालत की कार्यवाही के बाद मिल सकेगा। अब आप अन्दर तशरीफ ले चलिये। काम शुरू होने ही वाला है।"

नेख्लूदोव ने पेशकार का धन्यवाद किया (जो आज उसे बडा दयनीय लगा) और जूरी के कमरे की ओर चल दिया।

कमरे के नज़दीक पहुचा तो उसने देखा कि बाकी सदस्य कमरे से निकल कर अदालत की ओर जा रहे हैं। आज भी व्यापारी ने चढा रखी थी और कल की ही तरह चहक रहा था। नेख्लूदोव से वह इस तरह मिला जैसे उसका पुराना दोस्त हो। प्योत्र गेरासिमोविच भी कल की ही तरह बेतकल्लुफी दिखाने की कोशिश कर रहा था और ऊचे हस रहा था। लेकिन आज नेख्लूदोव के दिल मे इन बातो को देख कर नफरत पैदा नही हुई।

नेख्लूदोव चाहता था कि जूरी के सभी सदस्यो को बता दे कि कल वाले कैदी के साथ उसके कैसे सम्बन्ध रहे थे। "अच्छा तो यह होता कि मुकद्दमे के समय मैं उठ कर अपना जुर्म सबके सामने कबूल कर लेता," वह सोच रहा था। पर अदालत मे प्रवेश करने पर उसने देखा कि कल की ही तरह आज भी सारी कायवाही बडी गभीरता और रीति अनुसार चल रही है। "जज साहिबान तशरीफ ला रहे हैं," आज भी यह घोषणा हुई और तीन आदमी फूलदार कॉलर लगाये, मच पर पहुचे, उसी तरह जूरी के सदस्य अपनी ऊची पीठ वाली कुर्सियो पर बैठे, वही सिपाही, वही चित्र, वही पादरी। और नेख्लूदोव अपना कर्तव्य पहचानते हुए भी यह सोच रहा था कि अदालत के इस सजीदा माहौल म विघ्न डालना उसके बस की बात नही। वह कल भी यह नही कर सकता था और अब भी नही कर सकता।

आज भी अदालत की कायवाही की तैयारिया उसी तरह चल रही थी, हा, जूरी से कल की तरह शपथ नही ली गई, प्रधान जज ने उनके सामने भाषण भी नही दिया।

आज अदालत के सामने चोरी का मुकद्दमा था। कैदी बीसेक बरस का दुबला पतला युवक था, जिसकी छाती अन्दर को धसी हुई थी, और चेहरे पर रगत का नाम न था। उसने भूरे रग का लबादा पहन रखा था और उसे दो सिपाही, नगी तलवार के पहरे मे अन्दर लाये थे। कटघरे मे वह अकेला बैठा था और अदालत के अन्दर आने वालो को झुकी झुकी नजरो स देखे जा रहा था। उसका जुर्म यह था कि उसने एक और आदमी के साथ मिल कर एक गोदाम का ताला तोडा और उसमे से कुछेक पुरानी चटाइया चुराइ, जिनकी कुल कीमत ३ रूबल और ६७ कोपक बनती थी। तालिनी पर्चे के अनुसार चटाइया इसके साथी ने ...

पीठ पर उठा रखी थी, और जब ये दोनो सडक पर जा रहे थे तो पुलिस के सिपाही ने इन्हे रोका। दोनो ने उसी वक्त अपना जुर्म कबूल कर लिया, और दोनो को हिरासत मे ले लिया गया। उसका साथी कोई लुहार था। वह जेल मे ही मर गया था। इसलिए इस लडके पर अकेले मुकद्दमा चलाया जा रहा था। चटाइया एक मेज़ पर शहादती चीजो के तौर पर रखी थी।

अदालत की कार्यवाही का क्रम भी कल जैसा ही था। शहादते, सबूत, गवाहिया, शपथ, सवाल जवाब, विशेषज्ञ, जिरह आदि सब कल की ही तरह था। जब भी प्रधान जज या सरकारी वकील या वकील सिपाही से कोई सवाल पूछते (जो एक गवाह था) तो जवाब मे वह यही कहता– "ठीक है, सा'ब" या "जी नही जानता, सा'ब।" बेशक, कठोर अनुशासन ने उसे एक मशीन बना डाला था, और उसके मन मे जडता आ गई थी, फिर भी जाहिर था कि वह सकुचा रहा था और मुजरिम के कद किये जाने के बारे मे कुछ नही कहना चाहता था।

एक दूसरा गवाह भी सकुचा रहा था। यह उस घर का बूढा मालिक था जिसमे चोरी हुई थी। चटाइया इसी की थी। इस चिडचिडे आदमी से जब पूछा गया कि चटाइया तुम्हारी है या नही, तो बडी देर तक हिचकिचाने के बाद उसने स्वीकार किया कि हा, मेरी ही हैं। जब सरकारी वकील ने पूछा कि इन चटाइयो का वह क्या करेगा, वे उसके किस काम आयेंगी तो वह खीज कर बोला–

"भाड मे जाये चटाइया। मुझे उनकी कोई जरूरत नही। अगर मुझे मालूम होता कि इन पर इतना तूफान खडा किया जायेगा तो मैं इनके बारे मे पूछता तक नही, बल्कि दस रूबल का नोट अपनी तरफ से इनके साथ रख देता ताकि मुझे कचहरियो की खाक नही छाननी पडती। मैं इन सवालो से परेशान हो उठा हू। पाच रूबल तो मैं गाडियो के भाडे मे दे चुका हू। और फिर मेरी सेहत भी ठीक नही। मुझे जोडो का दर्द रहता है और गठिया है।"

ये थे गवाहो के बयान। मुजरिम ने खुद सब कुछ कबूल कर लिया था। और जाल मे फसे जगली जनवर की भाति अपने चारो ओर मूढ दृष्टि से देखते हुए उसने रुक रुक कर सारी घटना का ब्योरा दे दिया था।

सब बात साफ थी, लेकिन फिर भी सरकारी वकील, कल की तरह,

कन्धे झाडता हुआ उठ खडा हुआ और तरह तरह के बारीक सवाल ... लगा मानो किसी चालाक मुजरिम को फासने की कोशिश कर रहा हो।

अपनी तकरीर मे उसने साबित किया कि चोरी एक रिहाइशी मकान मे हुई है और ताला तोड कर की गई है, इसलिए लडके को सख्त सजा दी जानी चाहिए।

मुजरिम के वकील ने, जिसे अदालत ने नियुक्त किया था, कहा कि चोरी रिहाइशी मकान मे नही हुई है। बेशक, मुजरिम ने अपना अपराध स्वीकार किया है, फिर भी वह समाज के लिए इतना खतरनाक नही है जितना कि सरकारी वकील ने दिखाने की कोशिश की है।

प्रधान जज कल की तरह आज भी पूणतया तटस्थ था और इन्साफ करना चाहता था। उसने जूरी के सामने उन सभी तथ्यो की व्याख्या की और उन्हे खोल कर समझाया जिन्हे वे पहले से भली भाति जानते थे और जिन्हे वे जाने बिना रह भी न सकते थे। कल की तरह आज भी कार्यवाही बार बार स्थगित की गई, आज भी वे सिगरेट पीते रहे, आज भी पेशकार बार बार चिल्लाकर कहता रहा—"जज साहिबान तशरीफ ला रहे है" और आज भी कदी के ऊपर नगी तलवार का पहरा था, और दोनो सिपाही भरसक कोशिश कर रहे थे कि वे ऊघने से बचे रहें।

अदालत की कार्यवाही से पता चला कि यह लडका एक तम्बाकू की फैक्ट्री म काम करता था जहा इसके बाप ने इसे शागिद लगा रखा था। ... साल तक वहा पर यह काम करता रहा। इस साल फक्ट्री म हडताल हो गई और इसे बरखास्त कर दिया गया। काम न होने के कारण यह शहर मे आवारा घूमता रहा और जो थोडा-बहुत इसके पास था शराब म ... रहा। एक शराबखाने मे इसे अपने जैसा ही बेकार लुहार मिला, जिसकी नौकरी इससे पहले की छूट चुकी थी। एक रात दोनो ने शराब के ... कर एक गोदाम का ताला तोडा और जो चीज सबसे पहले हाथ लगी उठा लिया। वे पकडे गये। उन्होंने सब बात कबूल कर ली और उन्हें ... कर लिया गया। जेल म, मुकद्दम स पहल ही, लुहार की मृत्यु हो गई। लडके को अब एक खतरनाक व्यक्ति मान कर उस पर मुकद्दमा चलाया जा रहा था जिससे समाज की रक्षा करना जरूरी है।

"यह भी उतना ही खतरनाक है जितना कि कल वाला अपराधी था," अदालत की कार्यवाही को सुनते हुए नेख्लूदोव सोच रहा था। ...

ख़तरनाक है, और हम? — जो उन पर बैठ कर न्याय करते हैं—क्या हम खतरनाक नही है? मैं कौन हू? एक कपटी, भोग विलासी और व्यभिचारी। फिर भी लोग, मुझे अच्छी तरह जानते हुए भी, मुझसे नफरत करने की वजाय मेरा आदर करते हैं। पर मान ले कि इन सब आदमिया मे से जो इस वक्त इस कमरे म मौजद हैं, यह लडका ही समाज के लिए सबसे अधिक खतरनाक है, तो हमारी अक्ल क्या कहती है, इसे पकडने के बाद हम इसके साथ कैसा सलूक करना चाहिए था?

"यह तो स्पष्ट है कि यही सबसे बडा अपराधी नही है। साधारण सा लडका है। आज यदि यह अपराधी बन गया है तो उन परिस्थितियो के कारण जो ऐसे चरित्र का निर्माण करती हैं। अत इस जैसे लडको को कुमार्ग से बचाने के लिए जरूरत इस बात की है कि उन परिस्थितिया को बदला जाय जिनमे ऐसे अभागे युवक परवरिश पाते हैं।

"पर हम करते क्या हैं? जो लडका हमारे हाथ मे आ जाय उसे तो हम झपट कर पकड लेते है और जेल मे ठूस देते हैं यह अच्छी तरह जानते हुए कि इस जैसे हजारो और लडके हैं जिन्हे हम नही पकड पाते। जेल मे यह लडका या तो बिल्कुल बेकार पडा रहता है, या फिर इसे हम इस जैसे ही दुर्बल और पतित लोगो की सगति मे ऐसा काम करने पर मजबर करते है जो निरर्थक और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हाता है और इसके बाद हम इसे सरकारी खर्च पर अन्य भ्रष्ट लोगा के साथ मास्को से इर्कूत्स्क गुबेनिया मे भेज देते हैं।

"हम उन परिस्थितिया को बदलने की कोई कोशिश नही करते, जिनमे इस तरह के लाग पैदा होते है। उलटे हम ऐसी सस्थाओ को बढावा देते हैं जिनके कारण ऐसी परिस्थितिया पनपती हैं। इन सस्थाओ को हम भली भाति जानते है कारखाने, फैक्ट्रिया, शराबखाने, जुएखाने और चकले। हम इन सस्थाओ का न केवल बरकरार रख हुए है, बल्कि हम इनको प्रोत्साहन देते हैं, इनकी व्यवस्था करते हैं और इन्हे अत्यावश्यक समझते हैं।

"इस तरह हम, एक नही, लाखो ऐसे लडका को जन्म देते हैं। जब हम उनमे से किसी एक को पकड पाते हैं तो उसे अपनी बहुत बडी सिद्धि समझते है। हम समझते है कि हमने समाज की रक्षा की है। फिर हम उसे मास्को से इर्कूत्स्क गुबेनिया भेज कर निश्चित हो जाते है कि अब

हमे और कुछ भी करने की जरूरत नही।" नेख्लूदोव के मन में ये वडी स्पष्टता से उठ रहे थे। जूरी मे वह कर्नल की बगल म बगा जज, छोटे सरकारी वकील और वकील के लयबद्ध भाषणो को सुन था और उनकी आत्मतुष्ट भाव-भगिमा को देखे जा रहा था। "यह खडा करने के लिए कितनी मेहनत की गई है!" वह अपने चारो कमरे मे नजर दौडाते हुए सोच रहा था—"ये तसवीरें, आराम-कुर्सियां, वर्दियां, मोटी मोटी दीवारें और आलीशान खिड़कियां इतनी वडी इमारत और इससे भी वडी सस्था, जिसम अनगिनत अफसर क्लर्क, चौकीदार, और चपरासी काम कर रहे हैं, और इस नाटक खेलने के लिए जिसका किसी को कोई लाभ नही, इन्हे बडी बडी दी जाती हैं। केवल यही पर नही, रूस भर मे यही कुछ हो रहा है। जितना परिश्रम इस आडम्बर को खडा रखने पर बर्बाद किया जाता है यदि उसका सौवा हिस्सा भी उन परित्यक्त लोगो की मदद करने मे जाता तो कितना बडा उपकार होता। आज हम उन लोगो को इन्सान तक नही समझते और उन्हे केवल अपने सुख और आराम के लिए इस्तेमाल करते हैं।

"यह लडका गरीब था। गरीबी के कारण मजबूर हो कर इसके सम्बन्धियो ने इसे शहर भेज दिया। यदि उस समय कोई आदमी इस पर तरस खा कर इसकी मदद कर देता, तो यह बच जाता," लडके के और त्रस्त चेहरे की ओर देखते हुए नख्लूदोव सोच रहा था। "या उस वक्त भी, जब यह फैक्ट्री मे बारह बारह घण्टे तक काम करने के बाद अपने से बडे साथियो के साथ शराबखाना के चक्कर लगाने लगा था, कोई आदमी आ कर इसे कहता—'नही, वान्या, मत जा, यहां जाना ठीक नही,' तो यह सभल जाता, बुरे रास्ते पर नही पडता और यह जुर्म नही करता।

"लेकिन नही, इसके जीवन म कोई ऐसा आदमी नही आया जो इस पर तरस खाता। बरसो तक यह फैक्ट्री मे शागिर्दी करता रहा, और एक असहाय जानवर की तरह शहर मे घूमता रहा। इसका सिर मूड दिया गया ताकि उसम जुए नही पडें, और यह मिस्त्री लोगो के छोटे-मोटे काम करने के लिए भागता रहा। इसके विपरीत, जब से यह शहर म रहने लगा था अपने से बडे कारीगरो के मुह से यही कुछ सुन रहा था कि जो

ो दगा करता है, शराब पीता है, गालिया वक्ता है, दूसरे को पीट
क्ता है, व्यभिचार कर सकता है, वही सबसे वडा सूरमा है।

"इस तरह यह बीमार लडका, जिसका स्वास्थ्य वडे परिश्रम, शराब
ौर व्यभिचार के कारण टूट चुका है, बावला सा शहर मे निष्प्रयोजन
क्कर काटता फिरता है, मानो वह नीद मे ही चल रहा हो। और ऐसे
ो अपने बावलेपन मे एक दिन वह किसी गोदाम मे जा पहुचता है और
हा से कुछ पुरानी चटाइया उठा लेता है जिनकी किसी को कोई जरूरत
ही। यहा बैठे हुए हम शिक्षित, अमीर लोग यह नही सोचते कि उन
ारणो को किस भाति दूर किया जाय जिनसे यह लडका इस स्थिति तक
हुचा, उलटे हम उसे सजा देना चाहते हैं और समझे बैठे हैं कि सुधार
ा यही तरीका है।

"कैसी भयानक स्थिति है! क्रूरता और मूढता का बोलवाला है।
ौर यह कहना कठिन है कि दोनो मे से कौन अधिक प्रबल है—क्रूरता या
ूढता। जान पडता है, दोनो चरम सीमा तक जा पहुची हैं।"

नेख्लूदोव के मन मे इस तरह के विचार उठ रहे थे। उसका ध्यान
प्रदालत की कायवाही से हट गया था। आज जिन बातो को वह देख रहा
था, उनसे उसका मन भयाकुल हो उठा था। और वह सोच रहा था,
मैं इह पहले क्या नही देख पाया, और लोगो को ये क्यो नजर नही
आती?

३५

एक बार जब अदालत की कायवाही कुछ देर के लिए स्थगित हुई तो
वह उठ कर बरामदे मे आ गया। अदालत मे अब वह लौट कर नही जाना
चाहता था। अब इस घणित नाटक मे मैं भाग नही लूगा, उनके जी म
जो आये कर ले।

उसन बडे सरकारी वकील के दफ्तर का पता लगाया और सीधा वहा
जा पहुचा। बाहर खडे अदली ने उसे रोकने की कोशिश की, कहा कि
साहिब मसरूफ है, लेकिन नेख्लूदोव न कोई परवाह नही की और सीधा
दरवाजे के पास चला गया। दरवाजे पर एक कमचारी खडा था। नेख्लूदोव
ने उससे कहा कि जा कर सरकारी वकील को मेरा नाम बताओ और
कहो कि मैं जूरी का सदस्य हू और एक जरूरी बात कहने के लिए आया हू।

नेख्लूदोव की उपाधि और कपडे बडे सहायक सिद्ध हुए। नेख्लूदोव को अदर बुला लिया गया। सरकारी वकील उसे खडे खडे ही मिला, प्रत्यक्ष वह नेख्लूदोव की धृष्टता पर नाराज़ था।

"आप क्या चाहते है?" सरकारी वकील ने बडे कठोर लहजे में पूछा।

"मैं जूरी का सदस्य हू। मेरा नाम नेख्लूदोव है। मैं कैदी मास्लोवा से मिलना चाहता हू। उसे मिलना मेरे लिए बेहद ज़रूरी है," नेख्लूदोव दृढता से, जल्दी जल्दी कह गया। वह शर्माने लगा था और महसूस करने लगा था कि जो कदम वह आज उठाने जा रहा है उसका उसके जीवन पर गहरा प्रभाव पडेगा।

सरकारी वकील एक छोटे से कद का, सावला सा आदमी था, छोटे छोटे भूरे रग के बाल, चमकती, सजीव आखे। निचला जबडा कुछ आगे को बढा हुआ था और उस पर घनी, कटी-तराशी दाढी थी।

"मास्लोवा? हा, ठीक है, याद आया। उस पर ज़हर देने का जुर्म था," सरकारी वकील ने धीरे से कहा। "आप उसे क्या मिलना चाहते है?" फिर मानो अपने सवाल की कठोरता को कम करने के लिए स्वय ही कहने लगा, "मैं उस वक्त तक इजाज़त नही दे सकता जब तक कि मुझे मालूम न हो कि आप क्यो उससे मिलना चाहते है।"

नेख्लूदोव का चेहरा लाल हो गया।

"एक विशेष कारण है जिसके लिए मैं यह इजाज़त माग रहा हू। वह बेहद ज़रूरी है।"

"अच्छा?" सरकारी वकील ने आख उठा कर बडे ध्यान से नेख्लूदोव की ओर देखते हुए पूछा। "उसके मुकद्दमे की सुनाई हो चुकी है या नहीं?"

"उसका मुकद्दमा कल पेश हुआ था, और उसे चार साल की कडी मशक्कत की सजा दी गई थी। यह सज़ा ठीक नही थी। लडकी बेकसूर है।"

"अच्छा? अगर कल ही उसे सज़ा दी गई है तब तो वह अभी हवालात में होगी," सरकारी वकील ने कहा। उसने नेख्लूदोव के इन शब्दों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जो उसने मास्लोवा के निर्दोष होने के बारे में कहे थे। "जब तक आखिरी तौर पर सज़ा नहीं सुना दी जाती मुजरिमो को वहीं रखा जाता है। वहा कैदियो को मिलने के लिए खास दिन मुकर्रर है। आप वही से दर्याफ्त कीजिये।'

"पर मैं उससे जल्दी से जल्दी मिलना चाहता हू," नेख्लूदोव ने कहा। निर्णायक घडी को नज़दीक आता देख कर उसकी ठोडी कापने लगी।

"क्यो चाहते हैं?" सरकारी वकील ने आख उठा कर तनिक झल्लाहट के साथ पूछा।

"क्योकि वह निर्दोष है, फिर भी उसे इतनी कडी सज़ा दी गई है। यह सब मेरे कारण हुआ है," नेख्लूदोव ने कापती आवाज़ मे कहा। वह महसूस कर रहा था कि वह जो कुछ कह रहा है, उसके कहने की कोई ज़रूरत नही।

"वह किस तरह?" सरकारी वकील ने पूछा।

"क्योकि मैंने उसकी अस्मत लूटी थी, इसी कारण उसकी आज यह हालत है। मैंने ही उसे इस स्थिति मे झोका है, अगर मैंने ऐसा नही किया होता तो आज उसे यह सज़ा नही मिलती।"

"फिर भी मैं नही समझ सकता कि इस सबका उसे मिलने से क्या सबध है।"

"सबध यह है कि मैं उसके साथ जाना चाहता हू उससे विवाह करना चाहता हू," नेख्लूदोव ने हकला कर कहा। अपने ही व्यवहार से अभिभूत, उसकी आखो मे आसू आ चले थे।

"क्या सच? खूब!" सरकारी वकील बोला, "यह तो सचमुच ही निराली स्थिति है। यदि मैं भूल नही करता तो आप क्रास्नोपेर्स्क स्थानीय बोर्ड के सदस्य हैं न?" उसने पूछा, मानो उसे याद हो आया हो कि इस नेख्लूदोव के बारे म कही कुछ सुना था। यह वही आदमी है जो आज ऐसी विचित्र घोषणा कर रहा है।

"क्षमा कीजिये, इसका मेरी प्रार्थना के साथ कोई सबध नही है," गुस्से से तमतमाते हुए नेख्लूदोव ने कहा।

"नही, नही, कोई सबध नही," सरकारी वकील ने निलज्जता से मुस्कराते हुए कहा। "मैं तो केवल यह सोच रहा था कि आपकी इच्छा कुछ इतनी विलक्षण और असाधारण सी है।"

"तो कहिये, आप मुझे इजाजत देंगे।"

"इजाजत? हा, हा, अभी लीजिये। मैं आपको प्रवेश-पत्र अभी लिखे देता हू। आप तशरीफ रखिये।"

और वह मेज के पास जा कर लिखने बैठ गया।

"आप बैठ जाइये।"

नेख्लूदोव अब भी खड़ा रहा।

उसने प्रवेश पत्र लिया और नेख्लूदोव के हाथ में देते हुए बड़ी कुतूहल भरी आंखों से उसकी ओर देखने लगा।

"मैं यह भी बता देना चाहता हू कि मैं अब से अदालत की कार्रवाई मे भाग नही लूगा।"

"इसके लिए आपको बाकायदा अदालत को लिख कर देना होगा कि आप क्यो भाग नही लेना चाहते। यह तो आपको मालूम ही होगा।"

"इसलिए कि मैं दूसरो का न्याय करना न केवल निरर्थक समझता हू बल्कि पाप भी।"

"ठीक है," फिर वही हल्की सी मुस्कान सरकारी वकील के होठों पर आई, मानो वह दिखाना चाहता हो कि इस प्रकार की घोषणाओं से वह भली भाति परिचित है, और इन्हें वह हास्यास्पद समझता है। "ठीक है, मगर आप यह तो मानेंगे कि सरकारी वकील होने के नाते इस बात पर मैं आपसे सहमत नही हो सकता। इसलिए मैं आपसे कहूगा कि इस बारे मे आप अदालत से दरखास्त कीजिये। वही आपके इस बयान पर गौर करेगी और फैसला करेगी कि वह बाजाब्ता है या नही। अगर बाजाब्ता न हुई तो आपको जुर्माना भरना होगा। इसलिए आप अदालत से दरखास्त कीजिये।

"मैंने जो कहना था कह दिया है, अब मैं कही दरखास्त देने नहीं जाऊगा," नेख्लूदोव ने गुस्से से कहा।

"अच्छी बात है, तो खुदा-हाफिज़," सरकारी वकील ने तनिक सा सिर झुका कर कहा। जाहिर था कि वह इस अनोखे मुलाकाती से पीछा छुड़ाना चाहता था।

"यह कौन आदमी तुमसे बाते कर रहा था?" नेख्लूदोव के चले जाने पर अदालत के एक सदस्य ने अन्दर प्रवेश करते हुए पूछा।

"नेख्लूदोव था। तुम उसे जानते होगे, वही जो क्रास्नापेस्क के स्थानीय बोर्ड मे तरह तरह के अजीब बयान दिया करता था। जरा सोचो! यह शख्स जूरी का सदस्य है। यहा कैदियो मे एक औरत है या कोई लड़की है जिसे बड़ी मशक्कत की सजा दी गई है। यह कहता है कि मैंने उसकी अस्मत लूटी है, और अब उससे शादी करना चाहता हू।"

"सच ?"

"यही कुछ उसने मुझसे कहा है। और बहुत उत्तेजित हो रहा था।"

"आजकल के नौजवानो के दिमाग खराब हो गये है।"

"पर यह तो लडका नही है, काफी उम्र का है।"

"अरे, बाबा, तुम्हारे इस सहायक इवार्शेकाव ने तो सबकी नाक मे दम कर रखा है। बोले जायेगा, बोले जायेगा, जब तक अदालत मे सब उसकी बक बक से निढाल न हो जाय।"

"उफ, ऐसे लोगो का मुह बन्द कर देना चाहिए, वरना ये कोई काम नही होने देंगे। हर काम मे रुकावट डालेंगे।"

३६

बडे सरकारी वकील को मिलने के बाद नेख्लूदोव सीधा हवालात मे गया। मालूम हुआ कि मास्लोवा नाम की कोई औरत वहा पर नही है। इन्स्पेक्टर ने बताया कि मुमकिन है वह पुरानी जेल मे ही हो। नेख्लूदोव उधर चल पडा।

येकातेरीना मास्लोवा सचमुच वही थी। बडे सरकारी वकील को यह याद नही रहा था कि तब से कोई छ महीने पहले पुलिस ने बेहद बढा-चढा कर एक राजनीतिक मामला खडा किया था और इस कारण हवालात की सभी जगहें छात्र छात्राओ, डाक्टरो, मजदूरो, नर्सों से भरी पडी थी।

पुरानी जेल हवालात से बहुत दूरी पर थी। इसलिए वहा तक पहुचते पहुचते नेख्लूदोव को शाम हो गई। जेल की इमारत बहुत बडी और भयावह सी थी। वह दरवाजे की ओर जा ही रहा था कि एक सन्तरी ने उसे रोक दिया और घण्टी बजायी। घण्टी सुन कर एक जेलर बाहर आया। नेख्लूदोव ने उसे प्रवेश-पत्र दिखा दिया, मगर जेलर ने कहा कि जब तक इन्स्पेक्टर इजाजत न दें वह उसे अन्दर नही जाने दे सकता। नेख्लूदोव इन्स्पेक्टर से मिलने गया। वह सीढिया चढ रहा था जब उसके काना मे सगीत की आवाज पडी। दूर कोई पियानो पर कठिन सी धुन बजा रहा था। एक गुस्सैल नौकरानी ने, जिसकी एक आख पर पट्टी बधी थी, दरवाजा खोला। दरवाजा खुलने पर अन्दर से सगीत की आवाज उफनती हुई उसके कानो

मे पडी। लिस्त की एक रचना बजाई जा रही थी, एक रप्सोडी। बजाने वाला बडी कुशलता से बजा रहा था, लेकिन एक खास स्थल तक पहुच कर वह रुक जाता और शुरू से बजाने लगता। नेख्लूदाव ने नौकरानी से इन्स्पेक्टर के बारे मे पूछा। मालम हुआ कि वह घर पर नही है।

"क्या जल्दी लौटेंगे?"

धुन बजनी बन्द हो गई। बजाने वाला उसी स्थल तक आ पहुचा था। थोडी देर खामोशी रही, इसके बाद धुन फिर शुरू से बजाई जाने लगी। अब की बार और भी ज़ोर ज़ोर से, और पहले से भी अधिक कुशलता के साथ। लेकिन उसी विलक्षण स्थल तक पहुच कर फिर चुप हो गई।

"मैं जा कर पूछती हू," दासी ने कहा।

रैप्सोडी फिर बडी तरग से बजने लगी थी, लेकिन उस विलक्षण स्थल तक पहुचने से पहले ही फिर बन्द हो गई, और उसके स्थान पर एक आवाज़ सुनाई दी—

"कह दे कि घर पर नही है, और आज लौटेंगे भी नही। कित्ते है यहा गये हुए हैं। घडी भर के लिए चैन भी लेने देंगे?" आवाज़ एक औरत की थी, और दरवाज़े के पीछे से आ रही थी। धुन फिर बजने लगी, और फिर बन्द हो गई। फिर एक कुर्सी के फश पर घिसटने की आवाज़ आई। ज़ाहिर था कि पियानो बजाने वाली खीज उठी है और आगन्तुक को खरी खरी सुनाना चाहती है जो ऐसे गलत वक्त पर आ टपका है, और उसे परेशान कर रहा है।

"पिताजी घर पर नही हैं," एक लडकी ने डयोढी म आते हुए और घर कहा। पीली-दुबली लडकी, थकी हुई आखो के नीचे स्याह छल्ले और घुरमुर बाल। लेकिन बाहर एक युवक को खडे देख कर, जिसने बढ़िया कोट पहन रखा था, वह धीमी पड गयी।

"आइये तशरीफ ले आइये, आपको क्या चाहिए?"

"मैं जेल म एक कैदी मे मिलना चाहता हू।"

"कोई सियासी बदी होगा शायद?"

"नही, सियासी कैदी नही है। मेरे पास बडे सरकारी वकील का दिया हुआ प्रवेश-पत्र है।'

"मैं तो जानती नही हू, और पिता जी घर पर नही हैं पर अन्दर आइये," उसने फिर कहा, "या फिर आप छोटे इन्सपेक्टर से बात

कर देखिये। वह इस वक्त दफ्तर मे ही हैं। आप उनसे पूछ लीजिये। आपका शुभ नाम?"

"धन्यवाद," लडकी के सवाल का उत्तर दिये बिना नेख्लूदोव वहा से चला गया।

दरवाज़ा बन्द होने की देर थी कि वही धुन फिर सुनाई देने लगी। पहले की ही तरह सजीव। यह सगीत इस स्थान के साथ बिल्कुल मेल नही खाता था और इस रुग्ण लडकी की शक्ल-सूरत के साथ भी नही जो इतनी ढिठाई से इस धुन को बजाये जा रही थी। बाहर आगन मे उसे एक अफसर मिला जिसके मुह पर तीखी खुरदरी मूछे थी। उससे नेख्लूदोव ने छोटे इन्स्पक्टर के बारे मे पूछा। वही आदमी छोटा इन्स्पक्टर निकला। उसने प्रवेश पत्र पर नज़र दौडाई और बोला कि यह प्रवेश पत्र हवालात के लिए है। वह इजाज़त नही दे सकता। साथ ही अब बहुत देर हो चुकी है।

"आप कल आ जाइये। कल सुबह, दस बजे। उस वक्त हर किसी को मिलने की इजाज़त होती है। इन्स्पेक्टर साहिब भी उस वक्त घर पर होगे। तब आप कैदी से बडे कमरे म मिल सकते हैं जिसमे सभी मुलाकाती मिलते हैं, या फिर, अगर इन्स्पक्टर साहिब ने इजाजत दे दी तो दफ्तर मे भी मिल सकते है।"

इस तरह नेख्ल्दाव मुलाकात नही कर सका और घर लौट गया। वह मास्लोवा से मिलेगा, इसका ध्यान आते ही, वह उत्तेजित हो उठा था। इस उत्तेजना म, सडको पर चलते हुए, उसे कचहरी की कार्यवाही बिल्कुल भूल गई। उसे केवल सरकारी वकील और छोटे इन्स्पेक्टर के साथ हुई बातचीत ही याद आ रही थी। यह सोच कर ही कि वह मास्लोवा से मिलने की कोशिश करता रहा है, और सरकारी वकील से सारी बात कह दी है, और दो जेलो मे उसे मिलने के लिए जा भी चुका है, वह बेहद उत्तेजित हो उठा था और बडी देर तक उसका मन ठिकाने पर नही आया। घर पहुचते ही उसने अपनी डायरी निकाली, जिसमे मुद्दत से उसने कुछ नही लिखा था, उसमे से कुछ वाक्य पढे और फिर लिखने लगा—

"दो बरस से मैंने इस डायरी मे कुछ नही लिखा। सोचता था डायरी लिखना बडी बचकाना बात है और आगे स कभी नही लिखूगा। लेकिन यह बचकाना बात नही है। इसके द्वारा मैं अपनी अन्तरात्मा से बातें करता

हू—उस दैवी ज्योति से जो हर मनुष्य मे वास करती है। जितनी देर यह सुप्तावस्था मे रही, मेरे लिए इसके साथ वार्तालाप करना असभव था। लेकिन २८ अप्रैल के दिन कचहरी मे एक विलक्षण घटना घटी जिसने इसे जगा दिया। उस दिन मैं जूरी के सदस्य के नाते अदालत मे बैठा था। वहा मैंने उसे कैदियो के कटघरे मे देखा, उसी कात्यूशा को जिसे मैंने भ्रष्ट किया था। उसने कैदियो के कपडे पहन रखे थे। एक अजीब सी गलती के कारण और मेरी भूल से उसे कडी मशक्कत की सजा दी गई है। मैं आज सरकारी वकील से मिला था और अभी जेल से आ रहा हू। आज अन्दर जाने की इजाजत नही मिली। परन्तु मैंने निश्चय कर लिया है कि उससे मिलने की यथासभव कोशिश करूगा, उसके सामने अपने गुनाह तसलीम करूगा, और अपने पाप का प्रायश्चित करूगा—जरूरी हुआ तो उसके साथ शादी तक करूगा। भगवान मेरी सहायता करें। आज मेरी आत्मा शान्त है और मेरा हृदय खुशी से भर उठा है।"

३७

उस रात मास्लोवा बडी देर तक आखें खोले लेटी रही। उनका ध्यान दरवाजे पर लगी हुई थी, जिसके सामने पादरी की लडकी टहल रही थी। वह लाल बालो वाली का सुडकना सुन रही थी और उसके मन मे तरह तरह के विचार घूम रहे थे।

वह सोच रही थी कि कुछ भी हो जाय, मैं सखालिन मे किसी कुली से तो शादी नही करूगी। अगर जेल के किसी अफसर से बात बन जाय, किसी क्लर्क या वार्डर या छोटे वार्डर तक से भी, तो ठीक रहेगा। "सभी मर्द एक जैसे होते हैं। बस कही दुबली न हो जाऊ। नही तो सब मामला गडबड हो जायेगा।" मास्लोवा को याद आया कि वकील किस तरह मेरी तरफ देख रहा था, और वह बडा जज भी, और सभी लोग जो मुझे मिलते थे। कचहरी मे कितने ही आदमी तो बार बार पास से गुजरते थे। उसे याद आया कि बेरता उससे जेल मे मिलने आयी थी और उसे बता रही थी कि जिस विद्यार्थी को मास्लोवा चाहती थी, जब वह कितायेव के यहा रहती थी, वही उसके बारे मे पूछ रहा था और उसकी सजा की बात सुन कर बहुत दुखी हो रहा था। मास्लोवा को लाल बालो वाली के

साथ हुआ झगडा भी याद आया और उस पर दया आई। उसे वह डबलरोटी वाला याद आया जिसने एक डबलरोटी मुफ्त मे अलग उसे दे दी थी। उसे बहुत लोग याद आये। यदि कोई याद नही आया तो नेख्लदोव याद नही आया। मास्लोवा अपने बचपन और यौवन के दिनो का, और विशेष रूप से नेख्लूदोव के प्रति अपने प्रेम को कभी याद नही करती थी, उन्हे याद करना बेहद दु खपूण होता। ये स्मृतिया उसकी आत्मा की गहराइयो मे अछती पडी थी। वह उसे कभी याद नही आया, स्वप्न मे भी नही। आज अदालत मे भी मास्लोवा ने उसे नही पहचाना। जब आखिरी बार उसने उसे देखा था तो वह वर्दी पहने हुए था, तब उसके मुह पर दाढी नही थी, केवल छोटी सी मूछें थी, और सिर पर घने, छोटे छोटे, घुघराले बाल थे। अब नेख्लूदोव बडा हो गया था, उसके दाढी थी। लेकिन उसे न पहचानने का यह कारण नही था। कारण यह था कि उसने नेख्लूदोव के बारे मे कभी सोचा ही नही था। उसकी याद को उसने उस रात, उस भयानक अधेरी रात को दफना दिया था, जब वह फौज मे से लौट रहा था और बिना अपनी फूफियो को मिले सीधा आगे निकल गया था।

जब तक कात्यूशा को यह आशा बनी रही कि वह उसके पास लौट आयेगा, उसे अपना गभ बोझल नही लगा। कभी कभी गभ के अदर बच्चा हरकत करता, नन्ही नन्ही, आकस्मिक करवटें लेता, तो मास्लोवा का दिल गदगद हो उठता। पर उस रात सब बदल गया, और बच्चा निरा बोझ बन गया।

फूफिया नेख्लदोव का इन्तजार कर रही थी। उन्होंने उसे कहा था कि लौटते समय जरूर मिल कर जाना। लेकिन उसने तार दे दी कि मुझे खास वक्त पर पीटसबग पहुचना है, इसलिए रुक नही सकता। जब कात्यूशा ने यह सुना तो दिल मे ठान ली कि मैं जरूर उसे स्टेशन पर मिलने जाऊगी। रात को दो बजे गाडी वहा से गुजरती थी। सोने के वक्त तक कात्यूशा फूफिया के साथ रही। जब वे सोने चली गईं, तो उसने बावचिन की छोटी बेटी माश्का को अपने साथ चलने के लिए तैयार कर लिया, फिर पुराने बूट निकाल कर पहने, शाल ओढी, और अपने कपडे सभालती हुई स्टेशन की ओर भाग निकली।

पतझड की अधेरी रात थी, पानी बरस रहा था और हवा चल रही थी। किसी किसी वक्त पानी की मोटी मोटी, गम बून्दें गिरतीं, फिर

धद हो जाती। खेतो मे से जाते हुए उसे रास्ता नही सूझ रहा था औ जगल म तो घुप्प अधेरा था। रास्ता जानते हुए भी कात्यूशा भटक गई। उसे उमीद थी कि वह छोटे से स्टेशन पर, जहा गाडी सिर्फ़ तीन मिन खडी होती थी, गाडी आने स पहले ही पहुच जायेगी, लेकिन जब वह पहुची तो गाडी की रवानगी की दूसरी घटी भी बज चुकी थी। भा हुई कात्यूशा प्लेटफ़ाम पर पहुची। उसे फौरन नेख्लूदोव नज़र आ गया। फस्ट क्लास के डिब्बे मे, खिडकी के पास वह बठा था। डिब्ब म ख ब रोशनी थी। मखमली सीटो पर दो अफसर एक दूसरे क सामने बैठे ताश खेल रहे थे। सीटो के बीच एक मेज़ रखी था जिस पर दो मोटी मोटी मोमबत्तिया जल रही थी, और उनका मोम पिघल पिघल कर गिर रहा था। नेख्लूदोव ने सफेद कमीज़ और चुस्त बिजस पहन रखी थी, और सीट के बाजू पर बैठा, पीठ के साथ टेक लगाय, किसी बात पर हस रहा था। सर्दी के कारण कात्यूशा के हाथ सुन्न हो रहे थे। उसे पहचानते ही कात्यूशा ने आगे बढ कर खिडकी के शीशे का खटखटाया। ऐन उसी वक्त तीसरी घण्टी बजी, गाडी ने पीछे की ओर एक हल्का सा झटका लिया और चल पडी। डिब्बे धीरे धीरे आगे बढने लगे। ताश खेलने वालो मे से एक उठ खडा हुआ, और बाहर की ओर ताक कर देखा। उसने हाथ मे ताश के पत्ते पकड रखे थे। कात्यूशा ने फिर खिडकी को खटखटाया, और अपना मुह शीशे के पास ले गई। लेकिन डिब्बा आग बढता जा रहा था और वह उसके साथ साथ चलने लगी थी। सारा वक्त वह अन्दर देखे जा रही थी। अफसर ने शीशा गिराने की कोशिश की, लेकिन नही गिरा पाया। इस पर नेख्लूदोव उठा और उसे हटा कर ख द शीशा गिराने लगा। गाडी की रफ़्तार तेज़ होने लगी, और कात्यूशा भी तज तेज़ चलने लगी। जब शीशा उतरा तो गाडी की रफ्तार और भा तेज़ हो चुकी थी। ऐन उसी वक्त गाड न उसे धक्का दे कर परे हटा दिया और खुद उछल कर गाडी पर चढ गया। प्लेटफॉम के भीगे तख्तो पर कात्यू भागती चली जा रही थी। प्लेटफॉम का दूसरा सिरा आ पहुचा। कात्यूशा सीढिया उतरते हुए गिरते गिरते बची। अब वह गाडी के साथ साथ भाग रही थी, हालांकि फस्ट क्लॉस के डिब्बे कब के आगे निकल गये थ, और अब सैकड क्लॉस के डिब्बे भी बडी तेज़ी से आगे बढते जा रह थ। थ क्लॉस के डिब्बा के पहुचते पहुचते गाडी की रफ्तार और भी तेज़ हा चुकी

थी। पर कात्यूशा अब भी दौड़े जा रही थी। आखिर गाडी का सबसे पिछला डिब्बा भी आगे निकल गया, जिसके पीछे बत्तिया लगी होती हैं। तब तक कात्यूशा उस टैंक तक जा पहुची थी, जिसमे से इजनो मे पानी डाला जाता है। यहा तेज हवा चल रही थी जिसमे उसकी शाल उड रही थी और उसका घाघरा टागो के साथ चिपका जा रहा था। उसके सिर पर से शाल उड गई, पर वह अब भी दौड़े जा रही थी।

"मौसी मिखाइलोव्ना, शाल उड गई!" बच्ची ने चिल्ला कर कहा जो उसके पीछे पीछे बडी मुश्किल से भागी आ रही थी।

"वह तो जगमग करती गाडी मे बैठा हसी मज़ाक कर रहा है, मखमली कुसियो पर बैठा शराबें पी रहा है, और मैं यहा घुप्प अधेरे मे कीचड मे बारिश, हवा के थपडे खाती खडी रो रही हू," कात्यूशा ने सोचा और रुक गई। सिर पीछे को झटक कर, उसे दोना हाथो मे ले कर वह फफक फफक कर रोने लगी।

"चला गया!" उसने चीख कर कहा।

बच्ची डर गई और उसे अपनी बाहो मे भीच लिया।

"मौसी, चलो घर चले।"

"अगली गाडी आते ही उसके पहिया के नीचे   बस," कात्यूशा सोच रही थी। बच्ची की ओर उसने कोई ध्यान नही दिया।

कात्यूशा ने निश्चय कर लिया था कि वह ऐसा कर के रहेगी। पर जैसे कि सदा होता है, गहरी उत्तेजना के बाद छाने वाली शाति के पहले क्षण मे बच्चा—उसका बच्चा—जो उसके गभ मे था, सहसा काप उठा और धक्का सा देकर, धीरे धीरे सीधा हुआ और फिर किसी पतली, कोमल और तेज सी चीज से हल्के हल्के आघात करने लगा और सहसा सब कुछ बदल गया। क्षण भर पहले उसे जीना असभव लग रहा था, और वह बेहद दुखी थी। पर सहसा उसके प्रति सारी कटुता दूर हो गई। अपनी जान द कर उससे बदला लेने की जो भावना उसके मन म उठी थी, वह जाती रही। वह शात हा गई, शाल सिर पर ओढी और घर चल दी।

बारिश मे भीगी, कीचड से लथपथ, और थक कर चूर वह घर पहुची। और उसी दिन से उसके अदर वह परिवतन होने लगा जो आज

उसे इस स्थिति पर ले आया था। यह परिवतन उसी भयानक रात से
शुरू हो गया था, जब नेकी मे उसका विश्वास जाता रहा। उसे नेकी में
गहरा विश्वास था, और वह समझती थी कि बाकी सब लोगों का भी
उसमे विश्वास है। परन्तु उस रात के बाद कात्यूशा का यकीन हो ग
कि नेकी म किसी को भी विश्वास नही, कि भगवान और उसके नि
के बारे म जो कुछ भी कहा जाता है, सब धोखा है, झूठ है। जिससे वह
प्रेम करती थी और जो उसे प्रेम करता था—हा, कात्यूशा जानती थी कि
वह उससे प्रेम करता था—उसी ने उसके शरीर का भोग कर के उसे ...
पर फेंक दिया था, उसके प्रेम को ठुकरा दिया था। और वह सबसे अ...
आदमी था। जितने भी लोगो को वह जानती थी, उनम वह सबसे अ...
था। बाकी लोग तो और भी बुरे थे। इस घटना के बाद उसके ज...
मे जो कुछ भी हुआ, उससे कदम कदम पर उसका यह विश्वास और ...
दृढ होता गया। नेख्लूदोव की फूफिया जैसी भद्र महिलाए थी। जब कात्यू...
पहले की तरह उनकी सेवा नही कर सकी तो झट उसे निकाल ...
जितने लोग भी उसे मिले सभी एक जैसे थे। स्त्रिया पैसे कमाने के लि...
उसे इस्तेमाल करती और पुरुष वासना-तृप्ति के लिए। बूढे पुलिस अफ...
से ले कर जेल के वार्डरो तक सभी यही चाहते थे। अपनी खुशी के सि...
दुनिया मे किसी को किसी चीज की परवाह नही। कात्यूशा का यह विश...
उस समय और भी दृढ हो गया था जब वह अपनी आजादी के दूसरे ...
बूढे लेखक के साथ रह रही थी। वह कात्यूशा को सीधे से यही कहा क...
था कि जीवन का सुख इसी म है, इसे वह कविता और सौन्द...
करता था।

सभी अपने लिए जीते थे, अपनी खुशी के लिए और भगवान और
सदाचार की दुहाई देना धोखा था। कभी कभी कात्यूशा के मन म ...
उठते, और वह हैरान हो कर मन ही मन पूछती कि ससार की ...
क्यो इतनी बुरी है कि सब लोग एक दूसरे को कष्ट देते है और दु...
करते है। पर जब ऐसे प्रश्न उठते तो वह सोचना छोड देती। यदि ...
अच्छा था। जब बहुत उदास हुई तो सिगरेट का कश लगा लिया ...
शराब का घूट गले तले उतार लिया या फिर किसी मर्द से प्रेम कर लि...
और उदासी खतम।

इतवार के दिन सुबह पाच बजे जेल के उस हिस्से म जहा औरतो को रखा जाता था, बरामदे में एक सीटी बजी। कोराब्ल्योवा पहल से जाग रही थी। उसन मास्लोवा को जगाया।

"मैं मुजरिम हू!" जागते ही यह विचार उसके मन म आया। सुबह के वक्त जेल की हवा मे और भी अधिक सडाध आ गयी थी। उस बदबू भरी हवा मे सासे लेती हुई मास्लोवा आखे मल रही थी। उसका जी चाहा कि फिर सो जाय, विस्मृति के लोक मे फिर चली जाय, लेकिन उसके दिल म ऐसा डर बैठ गया था कि नीद उडते देर न लगती थी। वह उठ बैठी और टागे अपने नीचे समेटते हुए कमरे म इधर उधर देखने लगी। सभी स्त्रिया जाग चुकी थी, केवल बच्चे अब भी सो रह थे। जिस औरत को नाजायज शराब बेचन के जुर्म मे सजा मिली थी, वह धीरे धीरे, बडे ध्यान से, बच्चा क नीचे से लबादा खीच रही थी, ताकि व जाग न जाय। जिस औरत ने रगरूट को छुडाया था, वह अलगनी पर सूखने के लिए चिथडे टाग रही थी। इन्ही चिथडो मे बच्चे का लपट कर रखा जाता था। बच्चा जार जार से रो रहा था। नीली आखो वाली फेदोस्या उसे उठाये हुए थी और अपनी कोमल आवाज म उसे चुप कराने की कोशिश कर रही थी। तपेदिक की रोगी अपनी छाती को हाथो से दबाये जोर जोर से खास रही थी। उसका चेहरा लाल हो रहा था। जब जब खासी रुकती तो वह ऊचे ऊचे उसासे भरती। ऐसा लगता जैसे चीख रही हो। लाल बालो वाली मोटी औरत घुटन ऊपर को उठाये पीठ के बल लेटी थी और मजे मे ऊची ऊची आवाज मे अपना सपना सुना रही थी। जिस बुढिया को आग लगाने के जुर्म मे बंद किया गया था, वह देव प्रतिमा के सामने खडी बार बार सिर निवा रही थी और छाती पर क्रास का चिन्ह बना रही थी, और एक ही वाक्य को बार बार गुनगुना रही थी। पादरी की बेटी अपने तख्ते पर बैठी थकी हुई, उनीदी आखो से सामने देखे जा रही थी। छरीली अपन चिकने, काले, खुरदरे बालो को अपनी उगलियो के इद गिद लपेटे जा रही थी।

गलियारे मे किसी के घिसटते जूतो की आवाज आयी। दरवाजा खुला और दो बंदी कोठरी मे दाखिल हुए। दोनो ने जाकेटें और भूरे रग

की पतलूनें पहन रखी थी जो उनके टखना तक भी नही पहुच पा रह
थी। चेहरो से वे गभीर और खीजे हुए से लग रहे थे। वे अन्दर हवे
और वदवू से भरा टब उठा कर बाहर ले गये। औरते मुह हाथ धाने के
लिए वरामदे मे चली गइ जहा पानी के नल लगे थे। वहा पर भी लाल
बालो वाली औरत ने एक दूसरी औरत के साथ झगडना शुरू कर दि
जो किसी दूसरी कोठरी मे से आयी थी। एक वार फिर गाली-गलौज
चीखना चिल्लाना, शिकवा शिकायत शुरू हो गया।

"क्या चाहती हो, अकेली कोठरी मे डाल दू?" एक जलर ने चिल्ला
कर कहा और ज़ोर से लाल बालो वाली की नगी, मोटी पीठ पर चपत
जमाई। आवाज़ बरामदे भर मे गूज गई। "खवरदार जो फिर मैंने तुम्हे
लडते देखा तो!"

"अरे, बूढा तो चुहले करता है!" लाल वालो वाली औरत बोली।
चाटे को वह लाड-प्यार समझ रही थी।

"जल्दी करो, गिरजे के लिए तैयार हो जाओ।"

मास्लोवा मुश्किल से कपडे पहन कर वालो मे कघी कर पायी थी कि
अपने सहायको को साथ ले कर इन्स्पक्टर वहा आ पहुचा।

"जाच के लिए हाज़िर होओ!" एक जेलर ने चिल्ला कर कहा।

अन्य कोठरियो मे से भी कैदी निकल निकल कर आने लगे। बरामदे
मे सभी औरते दो लाइनें बना कर खडी हो गइ। प्रत्येक स्त्री ने अपने दाना
हाथ सामने वाली स्त्री के कधो पर रखे। इस के बाद कैदियो की गिनती
हुई।

जाच के बाद एक वाडर स्त्री कैंदिया को गिरजे की ओर ले जाने लगा।
अलग अलग कोठरियो मे से आयी लगभग एक सौ कदी स्त्रिया की लाइन
आगे वढने लगी। इस लाइन के मध्य मे मास्लोवा और फेनास्या एक सग
चली जा रही थी। लगभग सभी स्त्रियो ने सफेद घाघरे और सफेद जाके
पहन रखी थी और सिर पर सफेद रूमाल बाध रखे थे। कुछेक न अपने
रगदार कपडे पहन रखे थे। ये वे औरते थी जिनके पति साइवरिया भेजे
जा रहे थे और ये भी उनके साथ, अपने वाल-बच्चा को ले कर साइबेरिया
जा रही थी। सीढियो पर, ऊपर से नीचे तक, कैंदियो की लाइन लगी
हुई थी। जूतो की हल्की हल्की टप-टप के साथ वात करने की आवाज़

और किसी किसी वक्त हसने की आवाज़ सुनाई देती। मोड पर पहुच कर मास्लोवा को अपनी दुश्मन वोच्कोवा की सडियल सूरत नज़र आई। वह आगे आगे जा रही थी। मास्लोवा ने अपनी साथिन फेदोस्या को इशारा कर के उसे दिखाया। सीढ़िया पर से उतरते हुए औरत चुप हो गई और सिर निवाते और त्रास का चिन्ह बनाते हुए गिरजे के अन्दर दाखिल होने लगी। गिरजे मे अभी तक कोई न था। सुनहरी मुलम्मे से गिरजा चमचमा रहा था। औरता की जगह दाये हाथ को थी और वे धक्का-मुक्की करती हुई वहा खडी होने लगी।

स्त्रियो के बाद पुरुष कैदी अन्दर आने लगे। उन्होने भूरे रग के लवादे पहने रखे थे। इनमे कई तरह के कैदी थे कुछ यहा जेल मे अपनी सजा काट रहे थे, और कुछ वे जिन्हें ग्राम-पचायतो द्वारा साइबेरिया भेजा जा रहा था। ज़ोर ज़ोर से खासत हुए वे गिरजे के मध्य मे और बाई ओर भीड बना कर खडे हो गये।

ऊपर की गैलरी मे एक तरफ को वे कैदी खडे थे जिन्हे साइबेरिया मे बडी मशक्कत की सज़ा दी गई थी। इन्हे सबसे पहले गिरजे मे लाया गया था। सबके आधे आधे सिर मुडे हुए थे, और उनके पावा मे से बेडिया के खनकने की आवाज़ आ रही थी। गैलरी की दूसरी ओर वे कैदी थे जिन्हे हवालात मे रखा गया था। इनके पावो मे बेडिया नही थीं, और न ही इनके सिर मुडे हुए थे।

जेलखाने के इस गिरजे का निर्माण और साज-सजावट एक व्यापारी के पैसो से की गई थी, जिसने हज़ारो रूबल इस पर खर्च कर दिये थे। तरह तरह के शोख रगो और सुनहरी मुलम्मे से गिरजा चमचमा रहा था।

कुछ देर तक गिरजे मे चुप्पी छायी रही। केवल खासने खखारने, नाक साफ करने, बच्चा के रोन और किसी किसी वक्त बेडिया के खनकने की आवाज़ें आ रही थी। आखिर गिरजे के मध्य मे खडे कैदी हिलने लगे और एक दूसरे को धकेलन लगे, गिरजे के ऐन बीचोबीच एक रास्ता सा बन गया। इस रास्ते पर इन्स्पेक्टर चलता हुआ आया और गिरजे के मध्य मे कैदियो के आगे आ कर खडा हो गया।

उपासना आरभ हुई।

उपासना इस तरह थी पादरी ने अजीब सा जरी का जामा प
इस जामे को पहन कर खडे होना आसान न था। फिर उसने एक
मे डबलरोटी के छोटे छोटे टुकडे किये, और उन्ह शराब से भरे एक
मे डाल दिया। सारा वक्त वह प्रार्थना के शब्द गुनगुनाता रहा और
अलग नाम लेता रहा। इसी बीच डीकन ने स्लावोनिक भाषा में प्र
की। एक तो उसे समझना यो भी कठिन था, दूसरे डीकन इतनी ते
से पढ रहा था कि कुछ भी पल्ले नही पडता था। प्रार्थना की इस सू
को उसने बाद मे कैदियो के साथ गा गा कर दोहराया। प्रार्थना म
और उसके परिवार के स्वास्थ्य की कामना की गई थी। प्रार्थना
उक्तिया को बार बार दोहराया गया, अकेले मे भी और अन्य उ
के साथ मिला कर भी। सारा वक्त लोग घुटने टेके रहे। इसके
डीकन ने धर्मदूतो के कर्म ग्रन्थ मे से कुछेक पद पढ कर सुनाये।
आवाज मे इतना तनाव था कि उन्हे समझना असभव था। इसके बा
पादरी ने इजील मे से सत मार्क के उपदेश का एक अश बडी साफ
मे पढा। इस मे ईसा के पुनर्जागरण का उल्लेख था। पुनर्जागरण के
ईसा उडकर स्वर्ग जाने और वहा पर अपने पिता अर्थात परमात्मा
हाथ पर बैठने से पूर्व मरियम मैग्डेलीन से मिले, जिसके शरीर
उन्होंने सात दुष्टात्माओ को निकाल भगाया। तत्पश्चात वह अपने
अनुयाइयो से मिले और उन्ह आदेश दिया कि वे ससार भर म
वाणी का प्रचार करे, और कहा कि जो इजील मे विश्वास नही
उसका सर्वनाश होगा, और जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा
भगवान् रक्षा करेगे और वह अपने स्पर्श द्वारा लोगो को रोगमुक्त
उनके शरीर मे स पिशाचो को भगायेगा, नयी भाषाओ म बात कर
भाषा का परहगा और यदि वह विषपान भी करेगा तो मरेगा नहीं,
जीता-जागता और स्वस्थ रहेगा।

उपासना का सार यह था कि डबलरोटी के जो छोटे छोटे टु
पादरी ने तोड तोड कर शराब म डाले हैं, उन पर जब विशेष रीति
प्रार्थना की जायगी, तथा विधिवत् कृत्य सम्पन्न किया जायगा, तो इनसे

टुकडे भगवान के मास के टुकडे बन जायेंगे और शराब खून मे बदल जायेगी। कृत्य इस तरह था पादरी सुनहरी जरी का जामा पहने, बार बार हाथ ऊपर को उठाता–जामे के कारण हाथ उठाना कठिन हो रहा था–फिर घुटने टेक देता और मेज़ का चूमता, और मेज़ पर रखी प्रत्येक चीज़ को चूमता। परन्तु कृत्य की मुख्य क्रिया यह थी कि पादरी एक कपडे को दो सिरा से पकड कर सोने के प्याले और चादी की तश्तरी के ऊपर हल्के हल्के और एक लय मे झुलाता। अनुमान किया जाता था कि ठीक इसी वक्त डबलरोटी मास मे और शराब खून म परिवर्तित हुई है। इसी लिए कृत्य का यह भाग बडी गभीरता से सम्पन्न किया गया।

फिर पार्टीशन के पीछे से पादरी की आवाज आई– "अब भगवान् की परम भाग्यशालिनी, परमपावन, परमपवित्र मा के हेतु!" इस पर सगीत मण्डली बडी गभीरता से गाने लगी। गीत मे यह कहा गया था कि माता मरियम का यशोगान सवथोचित है, क्योकि ईसा को अपने शरीर म धारण करने के पश्चात् भी उसका कौमाय भग नही हुआ। अत वह फरिश्ता से कही अधिक माननीय है और देवदूता से कही अधिक कीर्ति के योग्य है। माना जाता था कि इस गान के बाद परिवतन सम्पन्न हुआ। पादरी ने तश्तरी पर से कपडा उठाया। उस पर रखे डबलरोटी के टुकडा मे से बीच वाले टुकडे को काट कर चार हिस्से किये, फिर एक हिस्से को उठाया, उसे पहले शराब मे भिगाया और फिर अपने मुह मे डाल लिया। इसका अर्थ था कि उसने भगवान् का मास खाया है और खून पिया है। इसके बाद पादरी ने एक पर्दा गिराया, और पार्टीशन के बीच का दरवाज़ा खोल कर हाथ म सोने का प्याला उठाये वह बीच वाले दरवाज़े मे से बाहर आ गया, और लोगो को निमन्त्रण देने लगा कि जिसकी इच्छा हो, वह आये और भगवान् का मास खाये और खून पिये।

कुछेक बच्चा की ऐसा करने की इच्छा हुई।

पादरी ने बच्चा के नाम पूछे। फिर चमचे से शराब मे भीगा एक डबलरोटी का टुकडा प्याले म से निकाला और एक बच्चे के गले मे दूर ले जाकर डाल दिया। फिर बारी बारी सभी बच्चा के गले मे डाला। डीकन ने बच्चो के मुह पाछे, और पोछते हुए ऊची ऊची आवाज़ मे बडे आनन्द स गाने लगा कि बच्चे भगवान् का मास खा रहे है और खून पी रहे हैं। इसके बाद प्याला उठाय पादरी पार्टीशन के पीछे चला गया

और वहा जा कर भगवान् के मास के सभी बचे हुए टुकडे ख द खा लि ख न पी लिया और प्याला और मूछें अच्छी तरह साफ कर के, प्रसन्नता से, तेज तेज कदम रखता हुआ बाहर आ गया। पावों में बछडे की खाल के जूते पहन रखे, जो चलते वक्त ख ब थे।

उपासना का सबसे जरूरी भाग सम्पन्न हो चुका था। परन्तु अभागे कैदियो को सान्त्वना देने के लिए पादरी ने साधारण उपासना साथ एक छोटी सी उपासना और जोड दी। वह चलता हुआ के पास गया जिस पर सोने का मुलम्मा चढा हुआ था और जिसके और मुह काले रग के थे। उसके आगे दजन के लगभग मोमबत्तियां रही थी। यह उसी भगवान् की प्रतिमा थी जिसका मास पादरी अभी खा कर हटा था। देव-प्रतिमा के सामने खडे हो कर वह फटी हुई आवाज़ मे गुनगुनाने और गाने लगा—

"हे यीसु! सबसे प्यारे यीसु! धमदूता ने जिसका यशोगान हुतात्माओ ने जिसका गुणगान किया। हे सवशक्तिमान, मेरी रक्षा करो! मेरे मुक्तिदाता यीसु, सबसे सुन्दर यीसु इस याचक रक्षा करो! हे मुक्तिदाता, हे आराधना के पुत्र यीसु, अपने सभा की, सभी पैगम्बरो की रक्षा करो, उन्हें स्वग के आनन्द का बनाओ, हे यीसु! तुम्हारे हृदय मे सभी मनुष्यो के प्रति प्रेम है!"

फिर वह चुप हो गया, एक गहरी सास खीची, छाती पर का चिन्ह बनाया और जमीन तक सिर निवा लिया। गिरजे म लोगो ने—इन्स्पेक्टर, वाडर, कैदी—सभी ने ऐसा ही किया। ऊपर देर तक बेडिया घनघनाती रही।

पादरी की प्रार्थना अब भी चल रही थी—"हे देवदूता के तुम सभी शक्तिया के स्वामी हो, तुम सबसे अद्भुत, सवशक्तिमान, का अपने प्रताप से चकित करने वाले, तथा हमारे पुरखाओ का वाले हो! हे यीसु, तुम सबसे प्यारे हो, हमारे बडा ने तुम्हारा किया है! हे यीसु, तुम्हारी महिमा अपरम्पार है, तुम राजाओ का करने हो। हे सवश्रेष्ठ यीसु, तुमने पगम्बरो को सिद्धि है! हे यीसु, तुम सबसे हो, तुम हुतात्माओ का की है। हे यीसु, तुम सबसे हो, धर्माभिमुखो के आनन्द का

हो। हे यीसु, तुम दयालुता की मूर्ति हो, पादरियो की आख का तारा हो। हे कृपानिधान, तुम व्रतधारियो को सयम प्रदान करते हो। हे सर्वप्रिय यीसु, सभी न्यायप्रिय व्यक्तियो के लिए तुम आनन्द का स्रोत हो! हे परमपावन यीसु, तुम ब्रह्मचारियो का ब्रह्मचर्य हो। हे यीसु, आदि काल से तुम पापियो का उद्धार कर रहे हो! हे यीसु, भगवान के पुत्र, मुझ पर कृपादृष्टि रखो!"

हर बार "यीसु" शब्द के साथ "स" की आवाज़ और अधिक ज़ोर से सीटी की तरह निकलती। अन्त मे वह चुप हो गया। फिर अपना वस्त्र उठा कर, जिसके नीचे रेशम का अस्तर लगा था, वह एक घुटने के बल झुक गया और ज़मीन तक सिर निवाया। सगीत मण्डली ने फिर गीत आरभ किया—"भगवान के बेटे यीसु, हम पर कृपादृष्टि रखो!" कैदियो ने भी घुटनो के बल झुक कर माथा निवाया। फिर उठे, सिर के आधे हिस्से पर जो बाल बच रहे थे, उन्हे झटक कर पीछे किया। बेडिया फिर खनकी जिनसे कैदियो के टखने ज़ख्मी हो रहे थे।

यही कुछ बडी देर तक चलता रहा। पहले महिमागान हुआ, जिसके अन्तिम शब्द थे—"हम पर कृपादृष्टि रखो!" इसके बाद और महिमागान हुआ, जिसके अन्त मे "अल्लेलूइया" कहा गया। कैदियो ने क्रास का चिन्ह बनाया, सिर निवाया और ज़मीन पर गिरे। पहले वे हर वाक्य के बाद और बाद मे हर दूसरे और हर तीसरे वाक्य के बाद सिर निवाते रहे। सभी खुश थे कि महिमागान समाप्त हुआ। पादरी ने भी पोथी बन्द की, और चैन की सास लेते हुए पार्टीशन के पीछे चला गया। हा, एक क्रिया अभी और बाकी थी। पादरी ने एक मेज़ पर से बडा सा क्रॉस उठाया और उसे ले कर गिरजे के ऐन बीचोबीच आ कर खडा हो गया। क्रॉस पर सोने का मुलम्मा चढा हुआ था और दोनो सिरो पर इनेमल के पदक लगे थे। सबसे पहले इन्सपेक्टर ने आगे बढ कर उसका चुम्बन किया, उसके बाद छोटे इन्स्पेक्टर और वार्डरो ने। और इसके बाद कैदी, एक दूसरे को धकेलते, कोहनिया मारते, और एक दूसरे को दबी आवाज़ मे गालिया देते हुए आगे बढ बढ कर उसे चूमने लगे। पादरी इन्स्पेक्टर से बाते करने लगा। जिस हाथ मे उसने क्रॉस को पकड रखा था उसे कैदियो की ओर बढा दिया। कभी उसे कैदियो के मुह के सामने ले जाता, कभी उनके नाक के सामने। कैदी क्रॉस को भी चूमने की कोशिश कर रहे थे और पादरी

के हाथ को भी। इस भांति ईसाई धर्म की यह उपासना सम्पन्न हुई, जिसका अभिप्राय अपने उन भाइयों को उबारना और सान्त्वना प्रदान करना था जो सन्मार्ग से भटक गये थे।

४०

पादरी और इन्स्पेक्टर से ले कर मास्लोवा तक, वहां पर सभी लोगों मे से किसी को भी यह ख्याल नही आया कि जिस यीशु का नाम पादरी बार बार ले रहा था, और इन विचित्र शब्दो मे जिसका गुणगान कर रहा था, उस यीशु ने उन सभी बातो की मनाही कर दी थी जो यहा पर की जा रही थी। यह कोलाहल सर्वथा निरर्थक था। रोटी और शराब के ऊपर किया गया मन्त्रपाठ पाखण्डपूर्ण था। यीशु ने न केवल इसकी मनाही कर रखी थी, बल्कि बडे स्पष्ट शब्दो मे आदेश दिया था कि कोई किसी को अपना गुरू न पुकारे, मंदिरों में जा कर उपासना नही करे। उसकी तो शिक्षा थी कि सभी एकान्त मे उपासना करे। उसने मन्दिरो के बनाने तक की मनाही कर दी थी और कहा था कि मैं उनका नाश करने के लिये ससार मे आया हू। उसकी शिक्षा थी कि सच्ची उपासना मन्दिरों में नहीं वरन हृदय मे तथा सत्याचरण मे होती है। उसका आदेश था कि कोई किसी का न्याय नही करे, किसी को कैद नही करे, यन्त्रणा नहीं दे, फासी नहीं लगाये, और ये सब काम यहा पर किये जा रहे थे। उसका आदेश था कि किसी प्रकार की हिंसा नही की जाय। मैं बन्दियों को छुड़ाने आया हू—यह उसका कथन था।

किसी ने नहीं सोचा कि जो कुछ यहा हो रहा है, बडे से बड़ा पाप है, उस ईसा का अपमान है जिसके नाम पर ये क्रियाए की जा रही हैं। किसी को यह ख्याल नही आया कि जिस सोने चढे और पच्चीकारी के क्रास को पादरी चूमने के लिए लोगों के सामने बढा रहा था, वह उस फांसी के तख्ते का प्रतीक है जिस पर ईसा को लटकाया गया था, क्योंकि ईसा ने इन सब कार्यों का विरोध किया था जो आज यहा पर किये जा रहे थे। ये पादरी यह सोचते हैं कि वे भगवान् का मांस खाते और रक्त पीते हैं। वास्तव में वे सचमुच उसका मांस खाते और रक्त पीते अपराधी हैं। इसलिए नहीं कि वे रोटी के टुकड़े खाते और शराब के घूट

हैं बल्कि इसलिए कि वे उन निरीह लोगों को अपने जाल में फसा रहे हैं जिन्हें ईसा ने अपने भाई माना था, उन्हें सभी सुखों से वंचित कर रहे हैं, उन्हें क्रूरतम यन्त्रणा पहुंचा रहे हैं और जिस महान सुख का सन्देश वह संसार में लाया था उसे लोगों से छिपा रहे हैं। यह ख्याल वहां खड़े किसी आदमी को भी नहीं आया।

पादरी का अन्तःकरण साफ था। वह अपना काम सन्तोष के साथ किये जा रहा था। उसे बचपन में यही सिखाया गया था कि यही एकमात्र सच्चा धर्म है। प्राचीन काल में सर्वोत्कृष्ट लोगों का यही मत था और आज भी राज्य तथा धर्म के सभी अधिकारी इसी मत के अनुयायी हैं। वह यह नहीं मानता था कि रोटी सचमुच मांस में परिणत हो जाती है, या कुछेक शब्दों को बार बार दोहराने से आत्मा का उद्धार होता है, या डबलरोटी और शराब के सेवन से उसने सचमुच भगवान् के एक अंश को अपने अन्दर ग्रहण किया है। किसी को भी यह यकीन नहीं हो सकता था। लेकिन पादरी का यह विश्वास था कि इसमें यकीन करना चाहिए। और यह विश्वास और भी दृढ़ इसलिए हो पाता था कि धर्म की इन मांगों को पूरा करते हुए पिछले १८ साल से वह अच्छे पैसे कमा रहा था, जिससे वह एक बड़े परिवार का लालन पालन कर पाया था, अपने बेटे को जिम्नेज़ियम में और अपनी बेटी को एक कन्यापाठशाला में भेज पाया था जिसमें पादरियों की बेटियां पढ़ती थीं। डीकन का भी विश्वास इसी तरह का था, बल्कि उसकी आस्था पादरी की आस्था से भी अधिक दृढ़ थी। धर्म के सिद्धान्तों का सार वह कब का भूल चुका था। वह केवल इतना जानता था कि उसकी सभी प्रार्थनाओं का, पितरों के लिए की गई प्रार्थनाओं, सामूहिक प्रार्थनाओं, एकेथिस्टस के साथ या उसके बिना की गई प्रार्थनाओं—सबका निश्चित मूल्य है। और यह मूल्य सच्चे ईसाई बड़ी ख़ुशी से चुका देते हैं। इसलिए वह बड़े उत्साह से "कृपादृष्टि रखो! कृपादृष्टि रखो, भगवान्!" का उच्चारण किया करता था। निर्धारित सूत्रों तथा उक्तियों को आवश्यक मानता था और उनका पाठ पूरी निष्ठा से करता था, उसी तरह जिस तरह दूकानदार लोग ईंधन, आटा और आलू बेचते हैं। जेल का इन्स्पेक्टर तथा वार्डर लोग इन सिद्धान्तों को या गिरजे में होने वाली क्रियाओं को नहीं समझते थे, न ही उन्होंने कभी इनपर विचार किया था। फिर भी वे समझते थे कि उन्हें जरूर इनमें विश्वास

करना चाहिए क्योंकि ऊचे पदाधिकारी, स्वय जार बादशाह तक इस विश्वास रखते हैं। साथ ही एक धूमिल सा विचार भी उनके मन में था (जिसका कारण वे नही जानते थे)—इस धर्म मे विश्वास रखते हुए वे अपना अमानुषिक धधा बेधडक हो कर किये जा सकते हैं, कि यह धर्म उनकी पीठ ठोकता है। यदि यह विश्वास न होता तो व लोगो पर इतने पूरी शक्ति से जुल्म नही ढा सकते थे, जैसा कि वे अब शुद्ध अन्तःकरण के साथ कर सकते थे। इस विश्वास के बिना ऐसा करना कठिन होता, शायद असभव होता। इन्स्पेक्टर तो ऐसा दयालु-स्वभाव पुरुष था कि यदि उसमे विश्वास की दृढता न होती तो उसके लिए इस प्रकार जीना कठिन हो जाता। इसी लिए वह बडे उत्साह के साथ सीधा खडा होता, सिर निवाता और छाती पर क्रॉस का चिन्ह बनाता। जिस समय देवदूतो का गीत गाया जा रहा था, उस समय उसने पूरी कोशिश की कि उसकी आखो मे आसू आ जाय। और जब बच्चो ने पादरी से भगवान के मास और खून को ग्रहण किया तो उसने एक बच्चे को स्वय बाहो मे उठा कर पादरी के सामने किया था।

अधिकाश कैदी समझते थे कि इन सुनहरी प्रतिमाओ, पादरी के वस्त्रों मोमबत्तियो, प्यालो, क्रॉसो तथा "मधुरतम यीसु" तथा "कृपादृष्टि रखो" ऐसे गोपनीय शब्दो मे कोई रहस्यपूर्ण शक्ति विद्यमान है, जिससे उन्हें लोक मे तथा परलोक मे सुख की प्राप्ति हो सकती है। केवल कुछेक ही लोग स्पष्टतया उस धोखाधडी का देख पाते थे जो इस मत के अनुयाइयों के साथ की जाती थी। मन ही मन मे वे हसते थे। परन्तु अधिकाश लोगो ने प्रार्थनाओ, प्रीतिभाजो और मोमबत्तिया इत्यादि से, वाछित सुख प्राप्त करने की कुछेक बार कोशिश की। उन्हें सुख नही मिला, भगवान ने उनकी प्रार्थनाए नही सुनी। फिर भी वे यही समझते रहे कि उनकी असफलता किसी आकस्मिक कारणवश रही होगी। उन्ह विश्वास था कि यह सस्था जिसे शिक्षित समुदाय का तथा बडे बडे पादरियो का समर्थन प्राप्त है, बडी महत्वपूर्ण तथा आवश्यक है, यदि लोक के लिए नही तो परलोक के लिए तो जरूर ही है।

मास्लोवा का भी यही विश्वास था। और लोगो की तरह उसमे भी एक मिश्रित सी भावना उठती थी, भक्ति की तथा ऊब की। पहले तो वह कटहरे के पीछे भीड म खडी रही, पर इस तरह वह केवल अपने

साथियो को ही देख पाती थी, और किसी को नही। लेकिन जब कम्युनियन ग्रहण करने वाली स्त्रिया आगे बढ गई तो वह और फेदोस्या दोनो आगे चली आई। यहा से उन्होने इन्सेक्टर का देखा, और उसके पीछे जहा वाडर खडे थे, एक छोटे से किसान को भी खडे देखा जिसके छोटी सी दाढी और मिर पर सुनहरी बाल थे। यह आदमी फेदोस्या का पति था और एकटक अपनी पत्नी की ओर देखे जा रहा था। अकाथिस्टस के समय मास्लोवा बडे गौर से उसकी ओर देखती रही और फेदोस्या के साथ दबी आवाज मे बाते करती रही। जिस वक्त सब लाग सिर निवाते और क्रॉस का चिन्ह बनाते तो वह भी बना लेती थी।

४१

नेख्लूदोव घर से जल्दी ही निकल पडा। गली मे एक किसान, जो गाव से दूध बेचने आया था, एक छकडे पर बैठा, अजीब से लहजे मे बराबर चिल्लाये जा रहा था—"दूध! दूध, ले लो दूध! दूध!"

पिछले ही दिन वसन्त की पहली स्निग्ध वर्षा हुई थी। जहा कही भी पटरा नही बिछी थी, हरी हरी घास लहरा रही थी। बागो मे बर्च के वृक्ष हरियाली की ओढनी ओढे थे, बर्ड चेरी और पोपलर के पेडो के लम्बे लम्बे महकभरे पत्ते निकल रह थे। लोग अपनी दूकानो और घरा मे खिडकिया के दोहरे चौखटो मे से अन्दर वाले चौखटे उतार रहे थे जो उन्होंने सर्दी के मौसम के लिए लगा रखे थे और खिडकिया साफ कर रहे थे। फेरी बाजार मे, जहा से नेख्लूदोव को हो कर जाना था, दूकानो की कतार के सामने अभी से लोगो की भीड उमड रही थी।

फटे-पुराने कपडे पहने कुछ लोग ऊचे बूट बगल मे दबाये और लोहा की हुई पैंटें और जाकेटे कधे पर डालकर बेचते फिर रहे थे।

अपनी फैक्ट्रियो से छुटकारा पा कर मजदूर स्त्री-पुरुष ढाबो के पास भीड लगाये खडे थे। स्त्रिया सिर पर चटकीले रगा वाले रेशमी रूमाल बाधे व काच के मोती लगे कोट पहने थी, पुरुष साफ सुथरे लबे कोट और चमकीले ऊचे बूट डाटे थे। अपनी पिस्तौलो की पीली डोरिया चमकाते सिपाही इस ताक मे खडे थे कि कोई गडबड हो और वे अपनी ऊब भगा

पायें। चौडी सडको की पटरियो पर तथा हरी हरी घास पर छोटे छो
बच्चे और कुत्ते इधर-उधर भाग-दौड रहे थे और दाइया बेंचो पर बैठी
मजे मे गप्पें हाक रही थी।

बायी ओर, जहा साया था, सडके अभी भी नम और ठण्डी थी
लेकिन बीच मे से वे सूख गयी थी। गडगडाते बोझल छकडे, खडखड करती
बग्घिया और टनटन करती ट्रॉम गाडिया लगातार आ जा रही थी। इस
तरह तरह के शोर और गिरजो के घटो की गूज से वातावरण कम्पित हो
रहा था। गिरजो के घटे लोगो को ईश्वर के वैसे ही महिमा-जप में भाग
लेने के लिए बुला रहे थे, जैसा इस समय जेल मे हो रहा था और लोग
अपने अपने गिरजो की ओर सजे धजे चले जा रहे थे।

बग्घी वाले ने नेख्लूदोव को जेल तक न ले जा कर, जल से पहले
मोड पर ही उतार दिया।

इसी मोड पर, जेल से लगभग सौ कदम की दूरी पर कुछेक स्त्रिया
और पुरुष खडे थे। अधिकाश बण्डल उठाये थे। दायें हाथ लकडी के छोटे
से मकान थे। बायें हाथ एक दो मजिला इमारत थी जिसके बाहर एक
बोर्ड लगा था। सामने ही जेलखाने की, ईंटो की बनी, भीमकाय इमारत
थी, लेकिन आगन्तुको को उसके पास जाने की इजाजत नही थी। उनके
सामने ही एक सन्तरी ड्यूटी दे रहा था। जो भी आदमी उसके पास से
निकल कर जेलखाने की तरफ जाने की कोशिश करता, उसे वह रोक
देता।

लकडी के घरो के बाहर, सन्तरी के ऐन सामने एक वार्डर वर्दी पहने
बैंच पर बैठा था। उसकी वर्दी पर सुनहरी पाइपिंग लगी थी, और उस
के हाथ मे एक कॉपी थी। मुलाकाती उसके पास जा कर कैदियो के नाम
बताते जिनसे वे मिलने आये हैं, और वह अपनी कॉपी में उनके नाम दर्ज
कर लेता। नेख्लूदोव भी उसके पास गया और येकातेरीना मास्लोवा का नाम
बताया। वार्डर ने नाम लिख लिया।

"अन्दर क्यो नही जाने देते?" नेख्लूदोव ने पूछा।

'गिरजे में उपासना हो रही है। जब खतम हो जायगी तो अन्दर
जाने देंगे।'

नेख्लूदोव घूम कर मुलाकातियो की भीड में आ मिला। फटे पुराने
कपडे पहने एक आदमी, नगे पाव, सिर पर मुचडा हुआ टोप रखे, भीड

मे अलग हो कर जेलखाने की ओर जाने लगा। उसका चेहरा लाल लाल रेखाओ से भरा पड़ा था।

"अबे ओ! किधर चला?" बन्दूक वाले सन्तरी ने पुकारा।

"अरे तो चिल्ला क्या दिया है," फटे हाल आदमी ने ज़रा भी झेंपे बिना जवाब दिया, और लौट आया। "नही जाने देना तो ना सही, इतज़ार कर लूगा। देखिया तो बडा आया है, जनरल चिल्लाने वाला!"

लोग हसने लगे। उन्हे उसकी बात पसन्द आई थी। अधिकाश लोगो के तन पर ढग के कपडे न थे, कुछेक तो बिल्कुल फटे पुराने कपडे पहने थे। लेकिन उसी भीड मे कुछेक स्त्रिया पुरुष भले घरा के जान पडते थे। नेख्लूदोव के साथ ही एक हट्टा कट्टा आदमी खडा था। चेहरा सफाचट और लाल-लाल, हाथ मे एक बण्डल उठाये हुए था जिसमे प्रत्यक्षत नीचे पहनने वाले कपडे रखे थे। नेख्लूदोव ने उससे पूछा कि क्या वह पहली बार यहा आया है। वह बोला कि नही, वह हर इतवार यहा आता है। बाते चल पडी। वह किसी बैक मे चौकीदार था। यहा वह अपने भाई से मिलने आया था जिसे जालसाज़ी के जुर्म मे पकडा गया था। यह आदमी इतने सरल स्वभाव का था कि उसने नेख्लूदोव को अपनी सारी जीवन कहानी कह सुनाई। सुना चुकने पर उसने नेख्लूदोव से उसकी राम-कहानी सुनाने को कहा। लेकिन उसी वक्त एक छोटी बग्घी वहा आ पहुची जिसमे एक विद्यार्थी और एक युवती बैठे थे। युवती के हैट से जाली गिर कर उसके मुह पर पड रही थी। बग्घी के पहियो पर रबड के टायर थे और आगे एक बडा नस्ली घोडा जुता हुआ था। लडके के हाथ मे एक बडा सा बण्डल था। उस बण्डल मे डबलरोटिया थी। नेख्लूदोव से आ कर बोला कि वह इन डबलरोटियो को कैदियो मे बाटना चाहता है। क्या बाटने की इजाज़त होगी? यदि इजाज़त होगी तो किस भाति बाटना होगा? उसके साथ जो युवती आयी थी, वह उसकी मगेतर थी। उसी की इच्छा से वह यहा आया था। उसके माता पिता ने परामर्श दिया था कि कैदियो को कुछ दान कर आयें।

"मैं खुद आज पहली बार यहा आया हू" नेख्लूदोव ने कहा, "मुझे मालूम नही है। पर तुम उस आदमी से दरयाफ्त करो।" और उसने दायी तरफ बैठे वार्डर की ओर इशारा किया जिसकी वर्दी पर सुनहरी पाइपिंग लगी थी, और हाथ मे कॉपी पकडे हुए था।

वे बातें कर ही रहे थे कि जेल का लोहे का फाटक खुला, जिसमें एक खिडकी थी, और एक बावर्दी अफसर बाहर निकल कर आया। उसके पीछे पीछे एक और वाडर भी बाहर आया। जिस जेलर के हाथ में कापी थी, उसने पुकार कर कहा कि अब मुलाकाती अन्दर जा सकते हैं। मुलाकाती हट कर एक तरफ को खडा हो गया, और लोग लपक कर फाटक की ओर दौडे, मानो उन्हे डर हो कि कहीं देर न हो जाय। मुलाकाती अन्दर जाने लगे। एक वाडर दरवाजे के पास खडा उन्हें ऊंची ऊंची आवाज में गिनने लगा—सोलह, सत्तरह, इत्यादि। अन्दर की तरफ एक और वार्डर खडा अगले दरवाजे से अन्दर जाते मुलाकातियो को छू छू कर गिन रहा था, ताकि जब ये लोग वापस लौट कर आयें, तो इनमें से कोई भी एक जेल में न रह जाय, और कोई कैदी बाहर न निकल जाय। इस वार्डर ने यह देखे बिना कि कौन गुजर रहा है, नेख्लूदोव की पीठ पर हाथ मारा और वाडर का यह स्पर्श शुरू में उसे अपना अपमान लगा, लेकिन यह याद कर के कि किस काम के लिए यहा आया है, उसे अपनी इस नाराजगी और अपमान की भावना पर लज्जा होने लगी।

दरवाजों में से निकल कर सामने एक बडा, मेहराबदार कमरा था। इसकी खिडकियां छोटी छोटी थीं और उन पर लोहे के सीखचे लगे थे। यह मुलाकात का कमरा था। नेख्लूदोव यह देख कर हैरान रह गया कि कमरे में क्रास से लटके ईसा का एक विशालकाय चित्र था।

"इस तसवीर का यहा क्या काम?" उसके मन में सवाल उठा। "ईसा का सम्बन्ध तो आजादी से है, न कि कैद से।"

धीरे धीरे वह आगे बढने लगा, उन मुलाकातियों को रास्ता देता हुआ, जो जल्दी में थे। इस इमारत में वे लोग भी बन्द थे जिन्होंने बुरे काम किये थे। उनके बारे में सोच कर उसका मन भय से कांप उठता। लेकिन जब वह निर्दोष लोगों के बारे में सोचता, जैसे कि कात्यूशा, या वह लडका जिसे कल ही सजा दी गई थी, तो उसके मन में अनुकम्पा उठती। ये लोग भी यहा पर कैद थे। कात्यूशा के साथ होने वाली भेंट के बारे में सोच कर उसका हृदय द्रवित हो उठा और हल्की हल्की घबराहट का भास होने लगा। मुलाकाती-कमरे के दूसरे सिरे पर एक जेलर खडा था। पास से गुजरते हुए मुलाकातियों से वह कुछ कह रहा था। परन्तु नेख्लूदोव अपने विचारों में खोया हुआ था, उसने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं

ग्या। मुलाकातिया की भीड के पीछे पीछे चलता हुआ औरतो वाले हिस्से मे जाने की बजाय मद-कैदियो वाले हिस्से मे जा पहुचा।

वह सबसे पीछे मुलाकाती-कमरे म दाखिल हुआ। जो लोग जल्दी पहुचने के लिए उद्विग्न थे, वे आगे बढते गये थे। कमरे का दरवाजा खोलते ही नेख्लूदोव भौचक्का रह गया। अन्दर कोलाहल मचा हुआ था, सौ आदमियो की चीखें मिल कर एक कानफाड शोर बन गई थी। पहले तो नेख्लूदोव की समझ मे नही आया कि इस शोर का क्या कारण हो सकता है, लेकिन जब वह लोगो के और नजदीक पहुचा तो उसने देखा कि सब लोग लोहे की जाली पर टूटे पडते हैं जैसे मक्खिया चीनी पर टूटती हैं। तब उसकी समझ मे सब बात आ गई। एक नही, दो जालिया, फश से लेकर छत तक, कमरे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लगी थी, जिनसे कमरे मे दो अलग अलग विभाग बन गये थे। दोना जालियो के बीच सात फुट का गलियारा था, जिसमे वाडर आगे-पीछे चल रहे थे। जिस दरवाजे को लाघ कर वह अन्दर आया था, उसके ऐन सामने वाली दीवार में खिडकिया थीं। नजदीक वाली जाली के पीछे मुलाकाती खडे थे, और दूर, उनके सामने वाली जाली के पीछे, कैदी। दोना के बीच मे जालिया थी, और ७ फुट का गलियारा था, ताकि वे एक दूसरे के हाथ मे कुछ दे नही सकें। यदि किसी आदमी की नजर कमजोर हो, ता वह गलियारे के पार जाली के पीछे खडे आदमी को ठीक तरह से पहचान भी नही सकता था। बाते करना भी बडा कठिन था। जब तक चिल्लाओ नही, दूसरा आदमी कुछ समझ नही सकता था।

दोना तरफ लोग जालियो के साथ जुड कर खडे थे। इनमे पत्निया थी, पति थे, पिता और माताए थी, बच्चे थे। सभी एक दूसरे का पहचानने की कोशिश कर रहे थे, और इस बात का भरसक प्रयत्न कर रहे थे कि उन्हें जो कहना है वह कह पायें।

हर कोई चाहता था कि उसका सम्बधी उसकी बात सुन सके, और उसके पडोसी भी यही चाहते थे और उनकी आवाजें एक-दूसरे के लिए बाधा थी। इसलिए हर कोई अपने साथ वाले आदमी से ज्यादा ऊचा चिल्ला चिल्ला कर बोलने की कोशिश कर रहा था। यही कारण था कि यहा ऐसा कोलाहल मचा हुआ था जिससे नेख्लूदाव अन्दर आते ही भौचक्का सा खडा रह गया था। एक दूसरे की आवाज सुनना असभव हो रहा था।

एक दूसरे के चेहरे की ओर ही देख कर ही अनुमान लगाया जा सकता था कि दूसरा आदमी क्या कह रहा है। इसी से उन आपसी सम्बन्धों का अनुमान लगाया जा सकता था। नेख्लूदोव के साथ ही एक बूढ़ी औरत जाली के साथ सट कर खडी थी। उसने सिर पर रुमाल बांध रखा था और उसकी ठुड्डी कांप रही थी। चिल्ला चिल्ला कर वह सामने, जंगले के दूसरी तरफ खडे, एक पीले से युवक को कुछ कह रही थी। युवक का आधा सिर मुंडा हुआ था, और वह भौंहें उठाये, बडे ध्यान से बुढ़िया की बात सुन रहा था। बुढिया की बगल में एक युवक खडा था जिसने किसान का कोट पहन रखा था। वह बार बार सिर हिला रहा था और कान पर हाथ रख कर सामने, दूसरी जाली के पीछे खडे एक वयस्क आदमी की आवाज को बडे ध्यान से सुन रहा था। आदमी का चेहरा थका-मांदा था और दाढी के बाल सफेद हो चले थे। जान पडता था कि वह इस लडके का बाप है। युवक से आगे फटे-पुराने कपडो वाला आदमी खड़ा था। वह बाजू हिला हिला कर चिल्ला रहा था और हंसे जा रहा था। उसके साथ ही एक स्त्री फर्श पर एक बच्चे को गोद में लिये बैठी थी और जार जार रोये जा रही थी। वह कन्धों पर एक अच्छी सी शाल ओढ़े हुए थी। दूसरी तरफ एक बूढ़ा आदमी खडा था जिसका सिर मुंडा हुआ था। प्रत्यक्षत पहली बार वह स्त्री इस आदमी को कैदियों की वर्दी और बेडियों में और मुंडे हुए सिर से देख रही थी। इस स्त्री से आगे वह चौकीदार खडा था जिसके साथ, जेल से बाहर, नेख्लूदोव ने बातें की थी। वह पूरे जोर से चिल्ला चिल्ला कर एक गंजे कैदी से कुछ कह रहा था। कैदी की आंखें चमक रही थीं।

नेख्लूदोव ने समझ लिया कि इन्हीं हालात में उसे भी बात करनी होगी। उसका दिल इस व्यवस्था के प्रबन्धकों के विरुद्ध घृणा से भर उठा। मानवीय भावनाओं का अपमान था। नेख्लूदोव हैरान था कि इस स्थिति में अपने को पा कर किसी आदमी के मन में भी विद्रोह की भावना नहीं उठ रही थी। सिपाहियों, इन्स्पेक्टर, मुलाकातियों तथा कैदियों का व्यवहार ऐसा था मानो वे इसे आवश्यक समझते हों।

लगभग पांच मिनट तक नेख्लूदोव इस कमरे में खडा रहा। वह यह देख कर कि वह कितना लाचार है, और उसके विचार और लोगों से कितने

ा कितने भिन्न हैं, उसके मन पर एक अजीब सी उदासी छा गई। जिस रह जहाज़ मे बैठे आदमी को उबकाई सी आने लगती है नेख्लूदोव को अपनी मानसिक विवशता की पीडा से मतली सी आने लगी।

४२

"पर मैं जिस काम से यहा आया हू करू," अपना हौसला बढाने की कोशिश करते हुए नेख्लूदोव ने मन ही मन कहा। "अब मुझे क्या करना चाहिए?"

उसने इधर-उधर देखा, ताकि कोई जेल का अधिकारी मिले तो उससे पूछ सके। एक पतला, ठिगना सा आदमी, अफसरो की वर्दी पहने, लोगो के पीछे टहल रहा था। नेख्लूदोव उसके पास जा पहुचा।

"हुजूर क्या मुझे बता सकते हैं," अतीव नम्रता दिखाते हुए नेख्लूदोव ने पूछा, "कि स्त्री-कैदियो को कहा रखा जाता है, और उन्हे मिलने के लिए कहा जाना होगा।"

"औरतो के विभाग में जाना चाहते हैं?"

"जी, मैं वहा एक कैदी औरत से मिलना चाहता हू," उसी खिचे खिचे विनम्र लहजे मे नेख्लूदोव ने कहा।

"आपको चाहिए था कि यह बात हाल कमरे म बताते। किसे मिलना चाहते है?"

"मैं कैदी येकातेरीना मास्लोवा से मिलना चाहता हू।"

"क्या वह सियासी कैदी है?"

"नही, वह तो केवल "

"हू, उसे सजा मिल चुकी है?"

"जी, परसो सजा दी गई थी," नेख्लूदोव ने उसी तरह यतीमो के से लहजे मे कहा। जान पडता था कि इन्स्पेक्टर उसकी मदद कर देगा, इसलिए वह पूरी कोशिश कर रहा था कि उसका मिज़ाज नही बिगडे।

नेख्लूदोव के रूप रग से अधिकारी ने समझ लिया कि इस व्यक्ति की उपेक्षा नही करनी चाहिए।

"यदि आपको स्त्री-कैदियो के विभाग मे जाना है, तो कृपया, इस तरफ आइये," अफसर ने कहा, और फिर एक मूछो वाले कार्पोरल की

एक दूसरे के चेहरे की ओर ही देख कर ही अनुमान लगाया जा सकता था कि दूसरा आदमी क्या कह रहा है। इसी से उन आपसी सम्बन्धों का अनुमान लगाया जा सकता था। नेख्लूदोव के साथ ही एक बुढ़िया जाली के साथ सट कर खडी थी। उसने सिर पर रूमाल बांध रखा था और उसकी ठुड्डी काप रही थी। चिल्ला चिल्ला कर वह सामने, जाली के दूसरी तरफ खडे, एक पीले से युवक को कुछ कह रही थी। युवक का आधा सिर मुडा हुआ था, और वह भौंहें उठाये, बडे ध्यान से बुढ़िया की बात सुन रहा था। बुढिया की बगल मे एक युवक खडा था जिसने किसान का कोट पहन रखा था। वह बार बार सिर हिला रहा था और छाती पर हाथ रख कर सामने, दूसरी जाली के पीछे खडे एक वयस्क आदमी की आवाज को बडे ध्यान से सुन रहा था। आदमी का चेहरा थका हुआ था और दाढी के बाल सफेद हो चले थे। जान पडता था कि वह इस लडके का बाप है। युवक से आगे फटे पुराने कपडा वाला आदमी खडा था। वह बाजू हिला हिला कर चिल्ला रहा था और हस जा रहा था। उसके साथ ही एक स्त्री फर्श पर एक बच्चे को गोद म लिए बैठी थी और जार जार रोये जा रही थी। वह कधो पर एक अच्छी सी शाल ओढे हुए थी। दूसरी तरफ एक बूढा आदमी खडा था जिसका सिर मुडा हुआ था। प्रत्यक्षत पहली बार वह स्त्री इस आदमी को कैदियो की वर्दी और बेडिया मे और मुडे हुए सिर से देख रही थी। इस स्त्री से आगे वह चौकीदार खडा था जिसके साथ, जेल से बाहर, नेख्लूदोव ने बातें की थी। वह पूरे जोर से चिल्ला चिल्ला कर एक गजे कैदी से कुछ कह रहा था। कैदी की आखें चमक रही थी।

नेख्लूदोव ने समझ लिया कि ऐसी हालात मे उसे भी बातें करनी है। उसका दिल इस व्यवस्था के प्रबधको के विरुद्ध घृणा से भर उठा। यह मानवीय भावनाओ का अपमान था। नेख्लूदोव हैरान था कि इस स्थिति मे अपने को पा कर किसी आदमी के मन म भी विद्रोह की भावना नहीं उठ रही थी। सिपाहियो, इन्स्पेक्टर, मुलाकातियो तथा कैदियो का व्यवहार ऐसा था मानो वे इसे आवश्यक समझते हों।

लगभग पाच मिनट तक नेख्लूदोव इस कमरे म खडा रहा। यह सोच कर कि वह कितना लाचार है, और उसके विचार और लोगो के विचार

ओर घूम कर, जिसकी छाती पर तमगे लटक रहे थे, बोला, "साहेब साहब को स्त्री विभाग मे ले जाओ।"

"जनाब।"

ऐन इसी वक्त किसी के ज़ार ज़ार रोने की आवाज़ नेख्लूदोव के कान मे पडी। जाली के नज़दीक कोई व्यक्ति बिलख बिलख कर रो रहा था।

यहा की हर चीज़ नेख्लूदोव को अजीब सी लगी। परन्तु जो बात सबसे विचित्र लगी वह यह थी कि उसे जेल के इन्स्पेक्टर तथा हेड वाडरा का शुक्रिया अदा करना पड रहा था और अपने आपको कृतज्ञ मानना पड रहा था—उन लोगो के प्रति जो इस इमारत मे … तरह तरह के जुल्म ढा रहे थे।

कमरे से बाहर निकल कर, कार्पोरल नेख्लूदोव को एक लम्बे बरामदे मे ले गया। उसके दूसरे सिरे पर एक दरवाज़ा था जो औरतो के मुलाक़ात के कमरे मे खुलता था।

यह कमरा मर्दो के कमरे से छोटा था। इसमे भी जालियो की पांते लगी थी। यहा पर कैदी भी कम थे और मिलने वालो की सख्या भी कम थी। पर शोर-गुल उतना ही था जितना कि मर्दों के कमरे म। यहा पर जालियो के बीच की जगह म अधिकारी टहल रहा था, फ़र्क केवल इतना था कि यहा पर अधिकारी एक महिला थी। इस वाडर-स्त्री ने वर्दी की जॉकेट पहन रखी थी जिसके किनारो पर नीले रग की मगज़ी और आस्तीनो पर सुनहरी डोरी लगी थी और कमर मे नीले रग की पेटी लगा रखी थी। मर्दों के कमरे की तरह यहा पर भी दोनो तरफ लोग जालियो से सट कर खडे थे। जहा नेख्लूदोव खडा था उसके नज़दीक शहर से आये हुए लोग थे और तरह तरह के कपडे पहने हुए थे। दूसरी तरफ कैदी औरतें थीं जिनमे से कुछेक ने कैदियो की सफेद पोशाक पहन रखी थी, और बाकियो ने अपने रगदार कपडे पहन रखे थे। कमरे के एक सिरे स ले कर दूसरे सिरे तक लोग जाली के साथ जुड कर खडे थे। कुछ लोग, पजो के बल उठ उठ कर, लोगो के सिरो के ऊपर से बोल रहे थे ताकि उनकी आवाज़ सुनाई दे सके। कुछ लोग फश पर बैठे बाते कर रहे थे।

एक पतली सी जिप्सी औरत, बाल और कपडे अस्त-व्यस्त, चीख चीख कर बाते कर रही थी। जिस ढग से वह चिल्ला चिल्ला कर बाते कर रही थी, उसे देख कर, और उसके रूप रग को देख कर, वह औ

ाभी कैदियो मे विलक्षण लग रही थी। जिम हिस्से मे कैदी औरते खडी ी, उनके ऐन बीचोंबीच वह एक खम्भे के पास खडी, हाथ हिला हिला र चिल्लाये जा रही थी। उसके सिर पर से रुमाल फिसल गया था और घुघराले बाल नजर आने लगे थे। वह इस ओर खडे एक जिप्सी आदमी ा बातें कर रही थी जिसने नीले रग का कोट पहन रखा था और उसके ऊपर कमर के नीचे कस कर पेटी बाध रखी थी। इस जिप्सी आदमी की बगल मे एक फौजी फर्श पर बैठा किसी कैदी औरत से बाते कर रहा था। फौजी के आगे, जाली के साथ सट कर एक किसान युवक खडा था। उसके मुह पर हल्के सुनहरी रग की दाढी थी और चेहरा लाल हो रहा था। वह अपने आसू रोकने की भरसक चेष्टा कर रहा था। उसके साथ एक खूबसूरत सी कैदी-लडकी बाते कर रही थी। लडकी की नीली नीली आखो मे चमक थी, और सिर पर सुनहरी रग के बाल थे। ये फेदोस्या और उसका पति थे। उनके आगे एक आवारा आदमी एक चौडे मुह वाली औरत से बाते कर रहा था। उसके आगे दो औरते थी, फिर एक आदमी, फिर एक औरत, हरेक के सामने एक कैदी औरत खडी थी। मास्लोवा इनमे नही थी। परन्तु कैदियो के पीछे कोई और खडा था, और नेख्लूदोव का दिल कह रहा था कि वही मास्लोवा है। उसका दिल धक धक करने लगा और सास फूलने लगी। निर्णायक क्षण आ रहा था। वह जाली के पास गया और मास्लोवा को पहचान लिया। वह नीली आखो वाली फेदोस्या के पीछे खडी, उसकी बाते सुन सुन कर मुस्करा रही थी। इस समय वह कैदियो के लबादे मे नही थी, बल्कि एक सफेद पोशाक पहने थी, जिसे उसने कमर पर पेटी से कस रखा था और जो छातियो पर ऊची उभरी हुई थी। रूमाल के नीचे से काले काले कुण्डल उसी तरह नजर आ रहे थे जिस तरह कचहरी मे नजर आ रहे थे।

"बस, क्षण भर मे निणय हो जायेगा," नेख्लूदोव ने सोचा, "इसे कैसे बुलाऊ? क्या वह खुद इधर आ जायेगी?"

लेकिन वह उधर नही आयी। उसे क्लारा का इन्तजार था और यह ख्याल भी नही था कि यह आदमी उसे मिलने आया है।

"आप किससे मिलना चाहते हैं?" स्त्री-वार्डर ने, जो जालियो के बीच घूम रही थी, नेख्लूदोव के पास आकर पूछा।

"येकातेरीना मास्लोवा से" नेख्लूदोव के मुह से ये शब्द कठिनाई से निकले।

"मास्लोवा! तुम्हे कोई मिलने ग्राया है!" वार्डर ने चिल्ला कर कहा।

४३

मास्लोवा ने घूम कर देखा, फिर सिर झटक कर, और छाती फुला कर, जाली के पास ग्रा गई। उसके चेहरे पर वही तत्परता का भाव था, जिससे नेख्लूदोव भली भाति परिचित था। दो कैदियो के बीच जगह बनाते हुए वह खडी हो गई और विस्मित, प्रश्नसूचक नजरो से नेख्लूदोव की ओर एकटक देखने लगी।

नेख्लूदोव के कपडे देख कर उसने समझ लिया कि यह कोई ग्रमीर ग्रादमी है, और मुस्कराने लगी।

"ग्राप मुझसे मिलना चाहते हैं?" उसने मुस्कराते हुए पूछा और ग्रपना चेहरा जाली के और नजदीक ले ग्राई। उसकी ग्राखो मे वही हल्का सा ऐंचापन था।

"मैं मैं मिलना चाहता था " नेख्लूदोव निश्चय नही कर पा रहा था कि 'ग्राप' कहे या "तुम" और ग्रन्त में उसने "ग्राप" ही कहा। वह साधारणतया जैसे बोलता था, ग्रब भी उससे ऊचा नही बोल रहा था। "मैं ग्रापसे मिलना चाहता था मैं "

"झूठ नही बोल," खडा ग्रावारा ग्रादमी चिल्ला रहा था। "तूने उठाया था या नही?"

"बहुत कमजोर हो गई है, मर रही है!" दूसरी तरफ से कोई ग्रौर चिल्ला रहा था।

मास्लोवा को नेख्लूदोव की ग्रावाज सुनाई नही दी। परन्तु जब वह बोल रहा था, तो उसके चेहरे के भाव को देख कर उसे उसकी याद हो ग्रायी। किंतु वह ग्रपनी ग्राखो पर विश्वास नही कर पा रही थी। फिर भी उसके चेहरे पर से मुस्कराहट गायब हो गई और माथे पर गहरी यन्त्रणा की रेखाए खिच गइ।

"क्या कह रहे हैं, कुछ सुनाई नही देता," आखें सिकोडते हुए तथा माथे पर और भी अधिक बल डालते हुए उसने कहा।

"मैं इसलिए आया हू कि "

"ठीक है, मैं अपना कर्तव्य निभा रहा हू—अपना अपराध स्वीकार कर रहा हू," नेख्लूदोव ने सोचा, और यह सोचते ही उसकी आखो मे आसू आ गये, और गला भर आया। दोनो हाथो से उसने जाली को पकड लिया और भरसक चेष्टा करते हुए कि कही फूट फूट कर रोने न लग जाये, चुप हो गया।

"जहा तेरा कोई काम नही क्या वहा अपनी टाग अडाई?" एक ओर से कोई चिल्ला रहा था।

"भगवान् जानता है, मुझे कुछ भी मालूम नही है," एक कैदी चीख कर दूसरी ओर से कह रही थी।

मास्लोवा ने नेख्लूदोव की उद्विग्नता देखी और उसे पहचान लिया।

"शक्ल तो वैसी ही है, पर नही, वह नही"

नेख्लूदोव की ओर देखे बिना वह चिल्लाई। उसका लाल चेहरा और भी अधिक उदास हो उठा।

"मैं तुमसे माफी मागने आया हू," नेख्लूदोव ने ऊची लेकिन नीरस आवाज मे कहा, मानो रटा हुआ पाठ दोहरा रहा हो।

ये शब्द कहते ही उसे झेंप होने लगी। उसने अपने आस पास देखा। फिर सहसा उसके मन मे यह विचार उठा कि यदि मैं लज्जित महसूस कर रहा हू तो यह और भी अच्छा है, मुझे यह लज्जा सहन करनी होगी। और वह फिर ऊची आवाज मे बोला—

"मुझे क्षमा कर दो। मैंने तुम्हारे साथ बडा जुल्म किया है "

उसने इतना ही कहा।

मास्लोवा निश्चेष्ट खडी थी, और अपनी ऐंच वाली आखो से एकटक उसकी ओर देखे जा रही थी।

उसके लिए बोलना कठिन हो रहा था। वह जाली के पास से हट आया और अपनी सिसकिया दबाने की भरसक चेष्टा करने लगा जो उसके गले को रुधे जा रही थी।

जिस इन्स्पेक्टर ने नेख्लूदोव को स्त्रिया के विभाग की ओर भेजा था, वह टहलता हुआ वहा आ पहुचा। नेख्लूदोव के बारे मे उसे कुतूहल हो रहा

था। जब उसने देखा कि नेख्लूदोव जाली के पास नही खडा है तो उसके पास आ गया और पूछने लगा कि क्या वह उस औरत के साथ बाते नही कर रहा है जिसे वह मिलने आया था। नेख्लूदोव ने नाक साफ किया, और अपने को सभालने की कोशिश करते हुए कहा—

"इन जालियो मे से बात करना बेहद मुश्किल है। कुछ भी तो सुनाई नही देता।"

इन्सपेक्टर ने क्षण भर के लिए सोचा, और फिर बोला—

"तो कुछ देर के लिए उसे बाहर भी लाया जा सकता है मारीया कार्लोव्ना " वाडर की ओर मुखातिब होते हुए उसने कहा, "मास्लो वा को बाहर ले आओ।"

मिनट भर बाद मास्लोवा बगल वाले दरवाजे म से बाहर आ गई। हल्के हल्के कदम रखती हुई वह सीधी नेख्लूदोव के बिलकुल पास आ कर खडी हो गई और आख उठा कर भौंहो के नीचे से उसकी ओर देखा। आज भी उसके माथे पर उसी तरह काले बालो के कुण्डल बने हुए थे जैसे कि दो दिन पहले उसने देखे थे। उसका चेहरा अस्वस्थ और फूला हुआ था, लेकिन फिर भी शान्त और आकर्षक था। केवल उसकी काली आखें सूजी हुई पलको के नीचे से अजीब ढग से चमक रही थी।

"आप यहा बात कर सकते है," इन्स्पेक्टर ने कहा और एक तरफ हट गया।

दीवार के साथ एक बेंच रखा था। नेख्लूदोव उसकी ओर जाने लगा।

मास्लोवा ने प्रश्नसूचक नेत्रो से इन्स्पेक्टर की ओर देखा, फिर विस्मय से कधे बिचका कर, नेख्लूदोव के पीछे पीछे जाने लगी और अपनी स्कर्ट ठीक कर के बेंच पर बैठ गई।

"मैं जानता हू कि तुम्हारे लिए क्षमा करना आसान नहीं है,' उसने फिर कहना शुरू किया, लेकिन आगे नही कह सका। उसका गला रुध रहा था। "मैं अपने पिछले किये को मिटा तो नहीं सकता, लेकिन अब मैं यथाशक्ति जो भी कर सकता हू करूगा। मुझे बताओ "

"आपको मेरा पता कैसे मालूम हुआ?" मास्लोवा ने उसके सवाल का जवाब दिये बिना पूछा। उसकी ऐंची आखें न तो नेख्लूदोव के चेहरे की ओर सीधा देख रही थीं न ही उस पर से हट रही थीं।

"हे भगवान्, मेरी सहायता करो, मुझे सुझाओ मैं क्या करू," मास्लोवा

के चेहरे की ओर देखते हुए नेख्लदोव मन ही मन कह रहा था। मास्लोवा का चेहरा अब बहुत कुछ बदल गया था। उसमे पहले सी कोमलता नही थी।

"परसो मैं अदालत मे था। जूरी मे बैठा था," वह बोला, "क्या तुमने मुझे वहा नही पहचाना?"

"नही, मैं नही पहचान पाई। पहचानने का वक्त ही कहा था। मैंने तो उस तरफ देखा भी नही," उसने कहा।

"तुम्हारे बच्चा हो गया था न?" उसने पूछा और उसका चेहरा शर्म से लाल होने लगा।

"शुक्र है भगवान् का, पैदा होते ही मर गया," उसके चेहरे पर से नजर हटाते हुए उसने कटुता से दो टूक उत्तर दिया।

"कैसे? क्या हुआ था?"

"मैं खुद मरते मरते बची। बहुत बीमार हो गयी थी," बिना नजर उठाये उसने कहा।

"पर फूफियो ने तुम्हे जाने कैसे दिया?"

"बच्चे के साथ नौकरानी को कौन रखता है? ज्यो ही उन्हे पता चला फौरन् जवाब दे दिया। लेकिन इन बातो का जिक्र करने का क्या लाभ? मुझे कुछ भी याद नही, सब भूल गयी हू। वे सब बाते खत्म हो चुकी हैं।"

"नही, खत्म नही हुई हैं। मैं अपने पाप का देर से सही प्रायश्चित करना चाहता हू।"

"प्रायश्चित करने की कौन सी बात है। जो होना था हो गया, अब यह बीते दिनो की बात है," मास्लोवा ने कहा, और नख्लूदोव की ओर लुभावनी, दयनीय आखो से देखा जिसकी नेख्लूदोव को तनिक भी आशा नही थी। उसे उसका या देखना अप्रिय लगा।

मास्लोवा को ख्याल न थी कि वह फिर कभी नेख्लूदोव से मिल पायेगी। कम से कम यहा पर और इस समय मिलने की तो उसे तनिक भी आशा न थी। इसलिए नेख्लूदोव को पहचानने पर अनायास ही वे स्मृतिया जाग उठी जिन्हें वह कभी भी याद करना नही चाहती थी। क्षण भर के लिए उसकी आखो के सामने भावनाओ और विचारो के उस नवीन और अद्वितीय ससार का धूमिल दृश्य घूम गया, जिसके द्वार एक

सुदर युवक ने एक दिन उसके आगे खोल दिये थे। वह युवक उससे प्यार करता था, और वह स्वय उससे प्यार करती थी। इसके बाद उसे उस युवक की बबरता याद हो आई, अगम्य बबरता! फिर एक के बाद एक उसे वे सब अपमान, तिरस्कार और यत्रणाए याद आने लगी जो उसे भोगनी पडी थी। उस अपूव आनन्द की घडियो के बाद इनका ताता लग गया था, और इनका उद्गम भी उसी अपूव आनन्द से हुआ था। उसका हृदय व्यथित हो उठा। लेकिन वह अपनी वेदनाओ का कारण समझने म असमथ थी, अत इस समय भी उसने वही कुछ किया जिसकी उसे आदत हो गई थी इन कटु स्मृतियो को उसने मन मे से निकाल दिया और उन्हे अपने भ्रष्ट जीवन के धुधलेपन मे डुबो देने का प्रयत्न करने लगी। शुरू शुरू मे तो उसने इस आदमी का सम्बध उस युवक से जोडा जिससे वह प्रेम करती थी। पर यह देख कर कि इससे उसके दिल मे दद उठता है, उसने अपने मन म यह सबध जोडना छोड दिया। अब यह आदमी, जो बन सवर कर उसके सामने बैठा था, जिसकी दाढी पर इत्र छिडका हुआ था, वह नेख्लूदोव नही था जिससे वह प्रेम करती थी। यह आदमी भी अब उन अनगिनत आदमियो मे से एक था, जो जरूरत के वक्त उस जसी स्त्रियो का इस्तेमाल करते है और उस जसी स्त्रिया भी अपने लाभ के लिए इन आदमियो का इस्तेमाल करती हैं। यही कारण था कि मास्लोवा ने उसकी ओर लुभावने ढग से मुस्कराते हुए देखा था। वह चुपचाप बैठी सोच रही थी कि किस भाति इसका अधिक से अधिक लाभ उठाया जाय।

"वह सब बीत चुका है," वह बोली, "अब तो मुझे कडी मशक्कत की सजा भुगतनी होगी।"

और ये भयानक शब्द कहते हुए उसके होठ कापने लगे।

"मुझे मालूम था मुझे पक्का विश्वास था कि तुमने कोई जुम नही किया," नेख्लूदोव ने कहा।

"हा, सो तो है ही। मैं भला कोई चोर हू या डाकू हू। यहा औरत कहती हैं बात सारी वकील की है,' वह कहने लगी, "कहती है, दरख्वास्त करनी चाहिए, पर सुना है पैसे बहुत लगते है "

"जरूर करनी चाहिए " नेख्लूदोव ने कहा, "मैंने पहले ही एक वकील से बात कर ली है।"

"पैसे का ख्याल नही करना चाहिए। वकील अच्छा होना चाहिए," मास्लोवा बोली।

"जो भी मैं कर सका करूँगा।"

दोनो चुप हो गये।

मास्लोवा फिर लुभावने ढग से मुस्कराई।

"और मैं कहना चाहती थी ... अगर आप ... कुछ पैसे मुझे दे सके ... बहुत नही ... सिर्फ दस रूबल," उसने एकाएक कहा।

"हा, हा," नेख्लूदोव ने कहा। और वह झेंप कर अपना बटुआ निकालने लगा।

मास्लोवा की नजर झट इन्स्पेक्टर की ओर गई जो कमरे म आगे-पीछे टहल रहा था।

"इसके सामने नही देना, वह ले लेगा।"

ज्यो ही इन्स्पेक्टर की पीठ हुई, नेख्लूदोव न झट से बटुआ निकाल कर उसमे से दस रूबल का नोट निकाल लिया। लेकिन वह मास्लोवा को दे नही पाया, क्योकि उसी वक्त इन्स्पेक्टर घूम कर उनकी ओर आने लगा था। नेख्लूदोव ने नोट को मरोड कर मुट्ठी म बन्द कर लिया।

"यह स्त्री तो मर चुकी है," नेख्लूदोव ने सोचा। यही चेहरा जो किसी जमाने मे इतना प्यारा हुआ करता था, अब भ्रष्ट और सूजा हुआ था। काली काली ऐंची आखो मे धृष्टता की चमक थी, जो इस समय कभी नेख्लूदोव की मुट्ठी की ओर देख रही थी, जिस मे नोट बन्द था, कभी इन्स्पेक्टर की ओर। क्षण भर के लिए नेख्लूदोव द्विविधा म पड गया।

गत रात उसकी दुरात्मा उसे तरह तरह के मशविरे देती रही थी। अब फिर उसकी आवाज आने लगी। दुरात्मा उसका मन कर्तव्य पर से हटा कर उसके परिणामो की ओर ले जाने की चेष्टा करने लगी, उसे समझाने लगी कि व्यावहारिक दृष्टि से क्या करना चाहिए।

"अब इस स्त्री का तुम कुछ नही बना सकते," दुरात्मा की आवाज आयी, "तुम केवल पावो मे बेडिया डाल लोगे, जो तुम्हे ले डूबेंगी और तुम दूसरे लोगो के लिए कुछ भी नही कर पाओगे। क्या यह बेहतर नही कि तुम्हारे बटुए म इस वक्त जितने भी पैसे है, इसके हवाले करो, इसे खैर-बाद कहो और इससे सदा के लिए पल्ला छुडाओ?' दुरात्मा ने फुसफुसा कर कहा। लेकिन उसे महसूस हुआ जैसे ऐन उसी वक्त उसकी आत्मा

मे एक महत्वपूर्ण घटना घटने लगी है। उसका आतरिक जीवन डगमगाने लगा है। तनिक सी भी कुचेष्टा उसे डुबो देगी, और सुचेष्टा उसे उबार लेगी। उसने भगवान् से सहायता की प्राथना की, उस भगवान से जिसकी उपस्थिति उसने दो दिन पहले अपनी आत्मा मे महसूस की थी। भगवान ने उसकी प्राथना सुनी। और नेख्लूदोव ने फौरन, उसी वक्त, मास्लोवा को सब कुछ कह डालने का निश्चय किया।

"कात्यूशा, मैं तो तुमसे क्षमा मागने आया हू, और तुमने मुझे कोई उत्तर नही दिया। क्या तुमने मुझे क्षमा कर दिया है? क्या तुम कभी भी मुझे क्षमा कर पाओगी?" उसने पूछा।

मास्लोवा ने उसकी बात नही सुनी। उसकी आखें उसकी मुट्ठी पर और इस्पेक्टर पर लगी हुई थी। ज्यो ही इस्पेक्टर ने पीठ मोडी, उसने हाथ फैला दिया, झपट कर नोट हाथ मे लिया और उसे अपनी पेटी मे छिपा लिया।

"कैसी अजीब बाते कर रहे है आप," मास्लोवा ने मुस्करा कर कहा। नेख्लूदोव को लगा जैसे उसकी मुस्कान मे तिरस्कार की भावना छिपी हुई है।

नेख्लूदोव को ऐसा महसूस हुआ जसे मास्लोवा की आत्मा म कोई ऐसी चीज है जो उसका विरोध कर रही है, जो मास्लोवा की वतमान स्थिति का समथन करती है, और उसे उसके दिल तक पहुचने स रोक रही है।

परन्तु यह अजीब बात है कि इससे उसके दिल म घणा नही उठी। बल्कि कोई नई विचित्र शक्ति उसे मास्लोवा के और भी निकट ले जाने लगी। वह जानता था कि उसे मास्लोवा की आत्मा को जगाना है। यह काम मुश्किल होगा। लेकिन इस काम की कठिनाई ही उसे बढावा दे रही थी। मास्लोवा के प्रति उसके हृदय मे ऐसी भावनाए उठ रही थी जैसी कि पहले उसके प्रति, या किसी भी अन्य व्यक्ति के प्रति नही उठी थी। इन भावनाओ मे स्वाथ का लेशमात्र भी नही था। वह उससे अपने लिए कुछ भी नही चाहता था। उसकी केवल यही इच्छा थी कि मास्लोवा वह न रहे जो इस समय थी, बल्कि फिर स जाग उठे और वैसी ही बन जाय जैसी वह पहले हुआ करती थी।

"ऐसा क्या कहती हो कात्यूशा? मैं तुम्हे जानता हू। मुझे पानोवो के वे दिन याद हैं, तुम याद हो।"

"बीती बातों को याद करने का क्या लाभ?" उसने रूखी आवाज़ मे कहा।

"मैं उन्हे इसलिए याद कर रहा हू कि मैं अपने पाप का प्रायश्चित करना चाहता हू, कात्यूशा," नेख्लूदोव न कहा और उससे कहने जा ही रहा था कि मैं तुम्हारे साथ विवाह करूगा। जब मास्लोवा की आखो के साथ उसकी आखें मिली तो उनमे उसे ऐसी भयानक, अशिष्ट, और घृणित भावना नज़र आयी कि उसका मुह बन्द हो गया।

ऐन इसी वक्त मुलाकाती जाने लगे। इन्स्पेक्टर ने नेख्लूदोव के पास आ कर कहा कि मुलाक़ात का वक्त खत्म हो चुका है। मास्लोवा सहमी हुई सी उठ खडी हुई, और इन्तज़ार करने लगी कि कब उसे वहा से चले जाने को कहा जायेगा।

"खुदा-हाफ़िज़, मुझे तुमसे बहुत कुछ कहना है, मगर, तुम देख रही हो, इस वक्त कहना मुमकिन नही," नेख्लूदोव ने कहा और अपना हाथ आगे बढाया। "मैं फिर आऊगा।"

"मैं तो सोचती हू तुमने जो कहना था वह लिया है।"

मास्लोवा ने हाथ मिलाया लेकिन नेख्लूदोव के हाथ को दबाया नही।

"नही, मैं फिर तुम्हे मिलने की कोशिश करूगा, और किसी ऐसी जगह जहा हम बाते कर सके। तब मैं तुम्हे अपने दिल की बात बताऊगा—वह बहुत ज़रूरी है।"

"अच्छी बात है, तो आओ," उसने जवाब मे कहा, और उसी तरह मुस्कराई जिस तरह वह उन आदमियो के सामने मुस्कराया करती थी जिन्हे वह खुश करना चाहती थी।

"तुम मुझे मेरी बहिन से भी ज्यादा अजीज़ हो," नख्लूदोव ने कहा।

"अजीब बात है," उसने फिर कहा, और सिर झटक कर जाली के पीछे चली गई।

४४

इस भेंट से पहले नेख्लूदोव का ख्याल था कि जब कात्यूशा को पता चलगा कि उसके मन मे कितना अनुताप है, जब वह जान जायेगी कि वह उसकी सेवा करना चाहता है तो वह बेहद खुश होगी, उसका हृदय द्रवित

हो उठेगा, और वह फिर पहले भी कात्यूशा हो जायेगी। पर जब उसने देखा कि कात्यूशा का तो वहा लेशमात्र भी नही रहा है, कि उसके स्थान पर अब मास्लोवा है, तो वह बेहद हैरान और भयभीत हो उठा।

उसे सबसे ज्यादा हैरानी यह देख कर हुई कि कात्यूशा तनिक भी लज्जा का अनुभव नही करती—इस बात पर नही कि वह एक कैदी है (इस पर तो वह जरूर लज्जित महसूस करती थी), लेकिन इस बात पर कि वह वेश्या है। इसके विपरीत, ऐसा जान पडता था जैसे वह अपनी स्थिति से सतुष्ट हो, उसे उस पर गर्व हो। परन्तु देखा जाय तो इसके अतिरिक्त कुछ हो भी नही सकता था। हर आदमी को अपना धधा उत्कृष्ट और महत्वपूर्ण समझना पडता है। यदि वह ऐसा न समझे तो उसके लिए काम करना मुश्किल हो जाता है। इसलिए, किसी स्थिति मे भी इसान हो, वह मानव जीवन के प्रति एक ऐसा दृष्टिकोण बना लेता है जिसमे उसका अपना व्यवसाय उसे उत्कृष्ट और महत्वपूर्ण नजर आने लगता है।

अक्सर यह समझा जाता है कि चोर चकार, हत्यारे, जासूस, वेश्याए आदि यह मान कर कि उनका धधा बडा अधम है, लज्जित महसूस करते होगे। लेकिन सचाई इसके बिलकुल उलट है। ऐसे लोग जिन्हे भाग्य ने या उनके कुकर्मो ने एक विशेष स्थिति मे ला पटका है, जीवन का एक ऐसा दृष्टिकोण बना लेते है जिसमे उन्हे अपनी स्थिति अच्छी और स्वीकार्य जान पडती है। भले ही वह स्थिति कितनी ही बुरी क्यो न हो। और इस दृष्टिकोण का बनाये रखने के लिए वे उन्ही लोगो के साथ उठते बैठते हैं जिनका उन जैसा ही दृष्टिकोण और उन जैसी ही स्थिति हो। जब चोर अपनी चालाकी की डीग मारते है, वेश्याए अपने पतन की शेखी बघारती हैं, और हत्यारे अपनी क्रूरता पर ऐंठते हैं, तो हम हैरान रह जाते है। कारण ये लोग सीमित दायरे तथा वातावरण मे रहते हैं। परन्तु हमारे आश्चर्य का मुख्य कारण यह होता है कि हम स्वय इनके दायरे से बाहर होते है। लेकिन जब धनी लोग अपने धन की डीग मारते है—जो और कुछ नही लूट-खसोट ही है, और फौजी जनरल अपने कारनामो की—जो निरी हत्या ही है, और उच्च पदाधिकारी अपनी शक्ति की—जो मात्र हिंसा ही है, तो यह सब क्या वही कुछ नही है? यदि उनका दृष्टिकोण हमे विकृत नही लगता तो इसलिए कि उनका दायरा बडा होता है, और हम खुद उसी मे रहते हैं।

इसी तरह मास्लोवा ने भी जीवन तथा अपनी स्थिति के प्रति अपना दृष्टिकोण स्थिर कर रखा था। वह थी तो एक वेश्या जिसे कडी मशक्कत की सजा दी गई थी, परन्तु अपनी जीवन धारणा के कारण अपने आपसे सन्तुष्ट थी, यहा तक कि अपनी स्थिति पर उसे गर्व भी था।

इस धारणा के अनुसार वह समझती थी कि पुरुष—भले ही वे बूढे हो या जवान, स्कूलो के छात्र हो या जनरल, शिक्षित हो या अशिक्षित—सभी पुरुषो की सिद्धि इसी मे है कि वे सुन्दर स्त्रियो के साथ इद्रिय भोग करे। सभी पुरुषो के अन्ततम मे यही इच्छा होती है, भले ही बाहर से वे अन्य कामो म व्यस्त होने का बहाना करते हो। वह जानती थी कि वह एक सुदर स्त्री है, कि यह उसकी सामर्थ्य मे है कि किसी की इच्छा को सन्तुष्ट करे या न करे। इसलिए वह अपने को आवश्यक और महत्वपूर्ण व्यक्ति समझती थी। उसका समूचा पिछला तथा वतमान जीवन इस धारणा को सिद्ध करता था।

पिछले दस सालो से वह देखती आयी थी कि जिस किसी स्थिति मे भी वह रही, सभी आदमियो को उसकी जरूरत रहती थी—नख्लूदोव तथा बूढे पुलिस अफसर से ले कर जेलखाने के जेलरो तक। कारण, जिन लोगो को उसकी जरूरत नही थी, उन्हे न ही कभी उसने देखा था और न ही उनकी परवाह की थी। इसलिए उसे ससार मे सभी लोग इद्रिय-भोग के लिए बेचैन नजर आते थे जो हर तरीके से—कपट, हिंसा, धन तथा धूर्तता से—उसे अपने वश म करने की कोशिश कर रहे हो।

यह थी मास्लोवा की जीवन के बारे मे धारणा। और इस दृष्टिकोण के अनुसार वह अपनी नजरो म एक अधमतम व्यक्ति नही थी बल्कि एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थी। और यह दृष्टिकोण मास्लोवा के लिए बहुमूल्य था। यदि वह इस दृष्टिकोण को खो देती तो वह अपना महत्व खो बैठती। इसलिए इसे मूल्यवान समझना उसके लिए अनिवार्य था। जीवन म अपना महत्व बनाये रखने के लिए वह स्वभावत ऐसे लोगो के साथ रहती थी जिनका जीवन के प्रति उस जैसा ही दृष्टिकोण था। जब उसने देखा कि नेख्लूदोव उसे इस दायरे मे से बाहर, किसी दूसरी दुनिया मे ले जाना चाहता है, तो उसने इसका विरोध किया। वह जानती थी कि ऐसा करने से वह जीवन मे अपना स्थान खो बठेगी, जिससे उसको स्थिरता और आत्मसम्मान मिलता था। इसी कारण उसने अपने मन म से अपनी

किशोरावस्था तथा नेख्लूदोव से अपने प्रथम सम्बन्धों की स्मृतियों को निकाल दिया था। ससार के प्रति उसकी वतमान धारणा के साथ ये स्मतिया मेल नही खाती थी। इसी लिए उनके लिए मन मे जगह न थी। या यह कहना चाहिए कि ये स्मतिया कही दवा दी गई थी। उन्ह कभी छुआ नही गया था। ऐसा जान पडता जैसे उन्ह बन्द कर के ऊपर से पलस्तर कर दिया गया हो ताकि कभी भी बाहर निकल नही सकें—उसी तरह जिस तरह मधुमक्खिया, अपने परिश्रम के फल को सुरक्षित रखने के लिए, कीडा के छत्ते को ऊपर से बन्द कर देती हैं। अत यह नेख्लूदोव वह आदमी नही है, जिस पर उसने कभी अपना पवित्रतम प्रेम न्योछावर किया था, बल्कि एक अमीर आदमी है जिसका वह लाभ उठा सकती है, और उसे अवश्य उठाना चाहिए, और जिसके साथ उसके सम्बन्ध वही कुछ हो सकते है जो सामान्यतया पुरुषो के साथ रहे हैं।

"नही, मैं ज़रूरी बात तो उससे कह ही नही पाया," मुलाकातियो के साथ बाहर जाते हुए नेख्लूदोव सोच रहा था, "मैंने उससे यह नही कहा कि मैं तुम्हारे साथ शादी करूगा। यह नही कहा, लेकिन मैं उसे ज़रूर कहूगा।"

फाटक पर दो वार्डर खडे थे जो पहले की ही तरह गिन गिन कर मुलाकातियो को बाहर निकाल रहे थे। एक एक मुलाकाती को वे हाथ से छते ताकि कोई अन्दर का आदमी बाहर नही निकल जाय, न ही कोई मुलाकाती अन्दर रह जाय। अब भी गुज़रते हुए नेख्लूदोव की पीठ पर हाथ पडा। लेकिन अब की वह नाराज़ नही हुआ, बल्कि उसने इस ओर ध्यान ही नही दिया।

४५

नेख्लूदोव अपने समूचे बाह्य जीवन की फिर से व्यवस्था करना चाहता था। वह चाहता था कि नौकरो को निकाल दे, बडे मकान को किराये पर चढा दे और खुद होटल मे कमरा ले कर रहने लगे। परन्तु आग्राफेना पेत्रोव्ना ने सुझाव दिया कि सर्दी के मौसम से पहले कोई भी तबदीली करना बेसूद होगा। गरमी के मौसम मे कौन आदमी शहर म घर ले कर रहेगा? फिर सामान को भी तो कही रखना है। अत अपनी जीवन चर्या बदलन

की उसकी सभी कोशिशे नाकामयाव रही (वह छात्रो की तरह सादा जीवन व्यतीत करना चाहता था)। सब बात वैसी की वैसी ही रही। इतना ही नही, घर मे एक दूसरी ही तरह की गहमागहमी शुरू हो गई। घर के सब ऊनी व फर के वस्त्र निकाल कर उन्ह धूप मे रखा जाने लगा और साफ किया जाने लगा। इस काम म पहरी, छोकरा, बावरची और स्वय कोर्नेई तक जुट गये। तरह तरह के फर के कपडे जिन्ह कभी इस्तेमाल नही किया गया था, तथा तरह तरह की वदिया रस्सी पर लटका दी गयी। इसके बाद फर्नीचर और कालीन बाहर डाल दिये गये। पहरी और छोकरे दोनो ने अपनी मासल बाहो पर आस्तीनें चढा ली और डण्डे हाथ मे ले कर इन्ह एक साथ, एक ताल मे पीटने लगे। कमरो मे फीनाइल की गोलिया की गन्ध फैल गई।

आगन लाघते हुए या खिडकी मे खडे खडे जब नेख्लूदोव यह कार-वाई देखता तो हैरान रह जाता कि घर मे कितना अधिक सामान धरा पडा है, और सबका सब फिजूल है। इन सब चीजो का एक ही उपयोग और लाभ था कि इससे आग्राफेना पेत्रोव्ना, कोर्नेई, पहरी, छोकरे और बावरची—सबकी वरजिश हो जाती थी।

"इस समय अपने रहन सहन का ढग बदलने का लाभ भी क्या है," वह सोचने लगा, "मास्लोवा के मामले का कोई फैसला नही हुआ। इसके अलावा रहन-सहन बदलना बहुत मुश्किल है। जब उसे छोड दिया जायेगा या अगर साइबेरिया भेज दिया गया और मै उसके पीछे पीछे वहा चला गया, तो मेरा रहन-सहन अपने आप बदल जायेगा।"

निश्चित दिन को नेख्लूदोव बग्घी मे बैठ कर वकील फानारिन के घर जा पहुचा। बडा आलीशान मकान था, ऊचे ऊचे ताड-वृक्षो और तरह तरह के बेलबूटो से सजा हुआ। अद्भुत पर्दे टगे थे। वास्तव मे ऐशो आराम की हर चीज से साफ झलकता कि यहा मुफ्त का पैसा बहुत है (जिसे कमाने के लिए मेहनत नही की गई), और जिसकी नुमाइश वही लोग करते है जो सहसा अमीर हो जाय। बाहर ड्याढी मे बहुत से आदमी मेजो के पास बैठे थे, जैसे किसी डाक्टर के घर की ड्योढी मे बैठते हैं। सब इस इन्तजार मे थे कि कब उनकी बारी आये और वे वकील साहब से मुलाकात कर सकें। सभी के चेहरे उदास थे। मेजो पर उनके मनबहलाव के लिए सचित्र पत्रिकाए रखी थी। कमरे मे वकील का मुशी एक ऊची सी मेज के सामने

बैठा था। उसने नेख्लूदोव को देखते ही पहचान लिया, और उठ कर उसके पास चला आया, और कहने लगा कि मैं अभी जा कर वकील साहिब से आपके आने की सूचना देता हूं। लेकिन अभी मुंशी दरवाज़े तक पहुंच भी न पाया था कि दरवाज़ा खुल गया और कमरे में से ऊंचा ऊंचा बोलने की आवाज़ें आने लगीं। एक व्यापारी और फानारिन आपस में बात कर रहे थे। व्यापारी अधेड़ उम्र का हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति था, लाल लाल चेहरा और बड़ी बड़ी मूछें, नये बढ़िया कपड़े पहन कर आया था। दोनों के चेहरे का भाव बताता था कि अभी अभी उनमें कोई सौदा पटा है, जिससे लाभ तो बहुत होगा लेकिन जिसमें ईमानदारी नहीं है।

माफ कीजिये, लेकिन कसूर आप ही का है," फानारिन मुस्करा कर कह रहा था।

"अजी फरिश्ता कौन भया हमन में। फरिश्ते होते तो स्वर्ग में नहीं पौंच जाते।"

"हां ठीक है, ठीक है, यह तो सभी जानते हैं।"

और दोनों बड़े बनावटी ढंग से हंसे।

"ओह, प्रिंस! आइये, आइये, तशरीफ लाइये," नेख्लूदोव को देखते ही वकील बोला। एक बार फिर उसने व्यापारी को झुक कर विदा किया और नेख्लूदोव को अपने कमरे में ले गया। इस कमरे की हर चीज़ बिलकुल सही ढंग से सजायी गयी थी। "सिगरेट पीजिये," नेख्लूदोव के सामने बैठते हुए वकील ने कहा। उसके होंठों पर मुस्कराहट थी जिसे वह दबाने की चेष्टा कर रहा था। ज़ाहिर था कि उस सौदे की सफलता से उसके दिल में अभी भी गुदगुदी हो रही थी।

"शुक्रिया। मैं मास्लोवा के केस के बारे में आपसे मिलने आया हूं।"

"हां, हां, अभी लीजिये! ये मोटी तोंद वाले लोग बड़े लुच्चे होते हैं," उसने कहा, "आपने इस आदमी को देखा? करोड़पति है यह। और बात करता है तो 'फरिश्ता कौन भयो हमन में'। फिर भी एक एक कौड़ी को दांत से रगड़ता है।"

"वह कहता है 'फरिश्ते' और 'हमन में' और तुम कहते हो 'कौड़ी को रगड़ता है'," नेख्लूदोव सोच रहा था। और नेख्लूदोव का मन इस आदमी के प्रति गहरी घृणा से भर उठा। "मेरे साथ हंस हंस कर बातें कर के यह दिखाना चाहता है कि यह और मैं दोनों एक ही पक्ष के हैं और इसके बाकी सब मुवक्किल दूसरे पक्ष के।'

"इसने मुझे परेशान कर रखा है। बेहद नीच आदमी है। क्या करूँ, मुझे अपने दिल का गुबार तो हल्का करना है," वकील बोला, मानो इस बात के लिए माफी माग रहा हो कि वह ऐसी बातो की चर्चा करने लग गया है जिनका उनके काम से कोई सबम्बध नही। "अच्छा, तो काम की बात करे। मैंने केस ध्यान से पढा है, और जैसा कि तुर्गेनेव ने एक जगह लिखा है 'उसकी हिमायत नही करना'। मतलब यह कि वह नौसिखुआ वकील एकदम भोदू है और उसने अपील के लिए कोई आधार ही नही छोडा।"

"तो फिर, अब क्या करना होगा?"

"जरा माफ कीजिये," वकील ने कहा और मुशी की ओर मुखातिब हो कर, जो अभी अभी अदर आया था, बोला, "उसे कह दो कि मेरी बात पत्थर पर लकीर होती है। अगर वह कर सकता है, तो ठीक है, नही कर सकता, तो मैं मजबूर हू।"

"लेकिन वह नही मानता।"

"तो मैं मजबूर हू।" और वकील का चेहरा जो पहले खिला हुआ और शात था, सहसा चिडचिडा और क्रुद्ध हो उठा।

"यह लीजिये! और लोग कहते हैं कि वकील मुफ्त की कमाई खाते हैं," कुछ देर रुक कर, पहले की तरह हस हस कर बातें करने की चेष्टा करते हुए वह कहने लगा, "एक दिवालिये पर बिलकुल झूठा मुकद्दमा चल रहा था, मैंने उसे बचा लिया। अब सब लोग मेरे यहा भीड लगाये रहते हैं। लोग यह नही समझते कि एक एक मुकद्दमे के लिए खून-पसीना एक करना पडता है। हम भी तो, जैसा किसी लेखक ने कहा है, अपनी दवाता मे दिल का टुकडा छोडते हैं। अच्छा, तो आपके मुकद्दमे के बारे मे—यानी उस मुकद्दमे के बारे मे जिसमे आपकी दिलचस्पी है—मैं कहूगा कि मुकद्दमे की पैरवी निहायत नामाकूल तरीके से हुई है। अपील करने का कोई माकूल आधार ही नही रह गया। तो भी," वह कहता गया, "हम अपील करने की कोशिश तो कर सकते हैं। मैंने इस सम्बध मे यह दर्ज किया है।'

उसने कुछ पन्ने उठाये जिन पर उसने बहुत कुछ लिख रखा था और तेज तेज पढ़ने लगा। किसी किसी वाक्य को खास बल दे कर पढता और जहा कही नीरस कानूनी बात लिखी होती उसे छोडता जाता।

"उच्च यायालय, महकमा फौजदारी, वगैरा वगरा। अदालत क निणयानुसार जो सजा दी गई है, वगैरा वगैरा। मास्लोवा को मुजरिम करार दिया गया है कि उसन व्यापारी स्मेल्कोव को जहर दिया जिससे उसकी मृत्यु हो गई, और इसलिए जाब्ता फौजदारी की दफा १४५४ के अनुसार उसे कडी मशक्कत की सजा दी गई है। वगैरा वगैरा।"

वह रुक गया। जाहिर था कि वह अपनी रचना को पढ कर खुश हो रहा था, हालाकि इन्हे पढने का उसे रोज मौका मिलता था।

"मुकद्दमे की सुनवाई म अदालती कायवाही का जो जगह जगह उल्लघन किया गया है और जो गलतिया की गई हैं, वे स्पष्ट हैं। यह सजा उन्ही भूलो का मीधा परिणाम है," उसने प्रभावपूण आवाज मे पढा, "और इस सजा को रद्द किया जाना चाहिए। पहले तो, जब स्मेल्कोव की अतडियो की परीक्षा की रिपोट अदालत मे पढ कर सुनाई जाने लगी तो प्रधान जज ने शुरू मे ही उसे पढने से रोक दिया। यह रहा पहला नुक्ता।"

"लेकिन इसे पढने की माग तो सरकारी वकील न की थी," नेख्लूदोव ने हैरान हो कर पूछा।

"कोई बात नही। मुद्दालेह की ओर से भी इसे पढ कर सुनाने की माग की जा सकती थी। उसके भी उपयुक्त कारण हो सकते थे।"

"पर इसकी तो किसी को भी कोई जरूरत नहीं थी।"

"लेकिन अपील करने के लिए इसे आधार बनाया जा सकता है। आगे चले, नम्बर दो," वह पढता गया, "मुद्दालेह के वकील ने जब मास्लोवा की शख्सियत पर रोशनी डालने की कोशिश की और यह बताने लगा कि किन कारणो से उसका पतन हुआ तो प्रधान जज ने उसे रोक दिया और कहा कि इन बातो का विचाराधीन विषय के साथ कोई सम्बध नही। लेकिन मुजरिम के गुण-दोषो तथा उसके सामा य नैतिक दृष्टिकोण का स्पष्टीकरण फौजदारी मुकद्दमा मे बेहद महत्वपूण होता है। और नही तो इससे अपराधी का निणय करने मे मदद मिलती है। इस बात पर सेनेट ने बार बार बल दिया है। यह रहा दूसरा नुक्ता," नेख्लूदोव की ओर देख कर वकील ने कहा।

"पर मुद्दालेह का वकील इतने भद्दे ढग से जिरह कर रहा था कि किसी के कुछ भी पल्ले नही पड रहा था," नेख्लूदोव ने कहा। वह और भी हैरान हो उठा था।

"वह तो बेवकूफ है, काम की बात क्या कहेगा," फानारिन ने हस कर कहा, "फिर भी अपील के लिए इस नुक्त को आधार बनाया जा सकता है। नम्बर तीन प्रधान जज ने अपने भाषण मे, जब वह सारी बात का ब्योरा दे रहा था, जूरी को यह नही बताया कि कानून की दृष्टि से अपराध की परिभाषा क्या होती ह। इस तरह जाब्ता फौजदारी के भाग १, दफा ८०१ का उल्लघन हुआ ह। यह मान लिया गया है कि मास्लोवा ने स्मेल्कोव को जहर दिया। लेकिन इस बात का कोई सबूत नही कि वह जान बूझ कर स्मेल्कोव की हत्या करना चाहती थी। इसलिए जूरी को पूरा पूरा हक था कि वह मास्लोवा को हत्या का अपराधी नही ठहराये बल्कि उस पर केवल लापरवाही का दोष लगाये, जिस कारण स्मेल्कोव की मृत्यु हो गई, हालाकि मास्लोवा की कोई इच्छा उसे मारने की नही थी। प्रधान जज ने जूरी के इस अधिकार का उल्लेख नही किया। यह है सबसे बडा नुक्ता।"

"हा, लेकिन इसकी खबर हमे खुद होनी चाहिए थी। यह भूल तो हमारी है।"

"खैर। नम्बर चार," वकील कहता गया, "जो जवाब जूरी ने दिया है उसमे प्रत्यक्षत विरोधाभास पाया जाता है। मास्लोवा पर यह दोष लगाया गया है कि उसने लोभवश, अपनी इच्छा से स्मेल्कोव को जहर दिया। उसकी हत्या करने का यही एक हेतु बताया गया ह। जूरी ने अपने फैसले मे कहा है कि मास्लोवा का कोई इरादा चोरी करने का न था, या और लोगो के साथ मिल कर कीमती चीजे चुराने का न था। इस जुर्म से उसे बरी किया गया है जिसका मतलब यह है कि जूरी उसे इस जुर्म से भी बरी करना चाहते थे कि मास्लोवा हत्या करने का इरादा रखती थी। यदि जूरी अपने जवाब मे इस बात का स्पष्टतया कहना भूल गये तो गलतफहमी के कारण। और यह गलतफहमी इसलिए उठी कि प्रधान जज ने जो ब्योरा दिया वह अधूरा था। अत जब जूरी की ओर से इस किस्म का जवाब दिया जाता है तो उस पर जाब्ता फौजदारी की दफा ८१६ और ८०८ को लगाना जरूरी हो जाता है, जिसके अनुसार प्रधान जज का यह फर्ज हो जाता है कि वह जूरी को उनकी भूल समझाये, और मुजरिम के अपराध के बारे मे दोबारा जिरह की जाय और मुकद्दमे का फैसला फिर से हो।"

"तो प्रधान जज ने ऐसा क्यो नही किया?"

"मैं भी यही जानना चाहता हू कि उसने क्यो ऐसा नही किया," हसते हुए फानारिन ने कहा।

"तो यकीनन सेनेट इम भूल को ठीक कर देगी?"

"यह इस बात पर निभर करता है कि उस समय सेनेट की अध्यक्षता किसके हाथ मे है। खैर, आगे लिखा है," वह तेज तेज पढने लगा, "जब जूरी की ओर से इस किस्म का फैसला आया तो अदालत को कोई अधिकार नही था कि वह मास्लोवा को मुजरिम करार दे कर उसे सजा देती, और उसके मुकद्दमे पर जाब्ता फौजदारी की दफा ७७१, भाग ३ लागू करती। इस तरह अदालत ने हमारे कानून फौजदारी के मूलभत सिद्धान्तो का निश्चित तौर पर घोर उल्लघन किया है। उपरोक्त आधार पर मैं प्राथना करूगा कि जाब्ता फौजदारी की दफा ९०९, ९१०, ९१२ के भाग २ और ९२८ के अनुसार इस सजा को रद्द किया जाय वगैरा वगैरा इस मुकद्दमे की उसी अदालत के किसी दूसरे विभाग मे और जाच की जाय। यह रहा! जो मुमकिन है वह मैंने कर दिया है। पर सच कहू तो मुझे कामयाबी की उम्मीद कम है, हालाकि यहा सब कुछ इस बात पर निभर करता है कि उस समय सेनेट मे कौन कौन से सदस्य मौजूद होगे। वहा पर कोई असर रसूख हो तो जरूर लडाइये।

"कुछ सदस्यो का तो मैं जरूर जानता हू।"

"अच्छी बात है। लेकिन जो भी करना हो जल्दी कीजिये। वरना सब लोग अपनी बवासीर का इलाज कराने भाग जायेगे और आपको उनकी वापसी तक, पूरे तीन महीने इन्तजार करना पडेगा। अगर इसमे हम असफल रहे तो एक सभावना और भी है। हम जार से अपील कर सकते हैं। उसके लिए भी तिकडम लडानी पडेगी। उस हालत मे भी मैं सेवा करने के लिए हाजिर हू। मेरा मतलब है अपील लिखने के लिए, तिकडम लडाने के लिए नही।"

"धन्यवाद। और फीस "

"मेरा मुशी आपको दरख्वास्त भी दे देगा और इसके बार मे भी बता देगा।"

"एक बात और। इस मुजरिम को जेल मे मिलने के लिए मुझे सरकारी वकील ने पास दिया था। मगर वहा मुझे पता चला कि अगर मैं मुजरिम

को किसी दूसरे वक्त और किसी दूसरे कमरे मे मिलना चाहू तो उसके लिए मुझे गवनर से इजाजत लेनी होगी। क्या इसकी कोई जरूरत है?"

"हा, मैं सोचता हू जरूरत है। पर आजकल गवनर यहा पर नही है। उसकी जगह पर सहायक-गवनर है। लेकिन वह ऐसा बेवकूफ है कि उसके साथ आपके लिए बात करना मुश्किल हो जायेगा।"

"क्या उसका नाम मास्लेन्निकोव है?"

"हा।"

"मैं उसे जानता हू," नेख्लूदोव न कहा, और वहा से जाने के लिए उठ खडा हुआ।

ऐन उसी समय एक बेहद कुरूप स्त्री भागी हुई कमरे मे आई—नाटा कद, पतली सी, ऊपर को उठी हुई नाक, पीला जद चेहरा, हड्डिया निकली हुई। यह वकील की पत्नी थी। अपनी कुरूपता के कारण उसका मन तनिक भी विचलित नही हुआ था। न केवल उसकी पोशाक बेमिसाल भडकीली थी—रेशम भी और मखमल भी, सुख पीला और हरा भी सभी कुछ उस पर लदा हुआ था, उसके पतले-झीने बालो म कुण्डल भी बने हुए थे। बडे गव के साथ वह कमरे मे उडती चली आयी। उसके पीछे पीछे मटमैले रग के चेहरे वाला, रेशमी कॉलरो वाला कोट और सफेद नकटाई पहने एक लम्बा सा आदमी भी मुस्कराता हुआ चला आया। वह एक लेखक था। नेख्लूदोव ने उसे देखा हुआ था।

"अनातोल," दरवाजा खोलते हुए उसने कहा, "चलो, मेरे कमरे मे चलें। यह रहे सेम्योन इवानोविच। इन्होंने वादा किया है कि अपनी कविता जरूर पढ कर सुनायेंगे। और तुम्हे गाशिन के बारे मे पढ कर सुनाना होगा।"

नेख्लूदोव वहा से जाने लगा तो उसने अपने पति के कान मे कुछ फुसफुसा कर कहा फिर फौरन् नेख्लूदोव को सम्बोधन कर के बोली—

"क्षमा कीजिये, प्रिंस, मैं आपको जानती हू, इसलिए परिचय की कोई जरूरत नही। मैं चाहती हू कि आप भी हमारी साहित्यिक गोष्ठी मे भाग ले। थोडी देर के लिए रुक जाइये। गोष्ठी बहुत दिलचस्प होगी। अनातोल ऐसा बढिया कविता-पाठ करते है कि क्या कहू।"

"देखा आपने, मुझे क्या क्या करना पडता है," फानारिन ने अपने हाथ फैला दिये और मुस्करा कर अपनी पत्नी की ओर इशारा करते हुए

कहा मानो दिखाना चाहता हो कि ऐसी सुन्दर स्त्री की आज्ञा का पालन कौन नही करेगा।

इस सम्मान के लिए नख्लूदाव ने बडी विनम्रता से वकील की पत्नी को धन्यवाद दिया, लेकिन अपनी मजबूरी भी बताई कि वह रुक नही सकेगा। उसका चेहरा गभीर और उदास हो रहा था। उसने विदा ली और बाहर निकल आया।

"जाने अपने को क्या समझता है!" उसके चले जाने के बाद वकील की पत्नी ने टिप्पणी की।

ड्योढी मे मुशी ने उसके हाथ म तैयार दरख्वास्त दी और बताया कि वकील साहिब की फीस एक हज़ार रूबल होगी। साथ ही यह भी कहा कि मिस्टर फानारिन अक्सर इस तरह का काम नहीं करते, लेकिन इस बार केवल उसकी खातिर उन्होने यह काम सिर पर ले लिया है।

"इस दरख्वास्त को क्या करना है? इस पर कौन दस्तखत करेगा?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"अभियुक्ता स्वय दस्तखत कर सकती है, लेकिन अगर यह मुमकिन न हो तो मिस्टर फानारिन दस्तखत कर देंगे। उस हालत मे अभियुक्ता स वकालत नामा लाना होगा।'

"नही नही, मैं खुद जा कर दस्तखत करवा लाऊगा," नेख्लदोव ने कहा। वह खुश था कि निश्चित दिन से पहले उससे मिल पायेगा।

४६

नियमानुसार, ऐन वक्त पर जेलखाने के बरामदो म वाडर की सीटी की आवाज़ गूज गई। कोठरियो पर लगे लोहे के दरवाज़े खडखडा कर खुलने लगे। नगे पावो के चलने की आवाज आई। एडिया खनखनाइ। जिन कैदियो को मेहतरो का काम करना था वे बरामदो को लाघ कर जाने लगे। उनसे तीखी बदबू आ रही थी, जिससे हवा बोझल हो उठी। क़ैदियो ने मुह-हाथ धोया, कपडे पहने, जाच के लिए बाहर आये, और फिर चाय के लिए उबलता पानी लेने चले गये।

नाश्ते के समय सभी कोठरियो मे कैदी बडी सजीवता से बाते कर रहे थे। दो कैदियो को उस रोज़ कोडा से पीटा जाना था। उनमे से एक पढा-

लिखा युवक था जिसका नाम वासील्येव था। यह कोई क्लर्क था जिसने ईर्ष्या से पागल हो कर अपनी रखैल को मार डाला था। सभी कैदी उसे पसन्द करते थे क्योंकि वह दिल का उदार और हसमुख युवक था और जेलखाने के अधिकारियों के सामने टट कर खडा हो जाता था। वह कानून से वाकिफ था, इसलिए हर नियम का पालन जोर दे कर करवाता था। इसलिए अधिकारियों को वह बहुत बुरा लगता था। तीन हफ्ते पहले भोजन करते समय एक मेहतर से वाडर की नयी वर्दी पर शोरवा गिर गया था। वाडर ने ज़ोर से उसके मुह पर तमाचा दे मारा। वासीलयेव ने मेहतर का पक्ष लिया और कहा कि कैदी को पीटना कानून के खिलाफ है। "मैं तुम्हें कानून सिखाऊगा," वाडर बोला और गुस्से से वासील्येव को गालिया देने लगा। जवाब मे वासील्येव ने भी गालिया दी। वाडर उस पर भी हाथ चलाने के लिए आगे बढा लेकिन वासील्येव ने उसके दोनो हाथ पकड लिये, और थोडी देर तक पकडे रहने के बाद उसे घुमा कर दरवाज़े मे से बाहर निकाल दिया। वाडर ने जा कर इन्स्पेक्टर से शिकायत कर दी। और इस्पेक्टर ने हुक्म दे दिया कि वासील्येव को कैद-तनहाई मे रखा जाय।

कैद-तनहाई के लिए कैदियो को छोटी छोटी अधेरी कोठरियो मे बन्द कर दिया जाता था। एक के साथ एक ऐसी कोठरियो की एक लम्बी कतार थी। कोठरियो को बाहर से ताला चढा दिया जाता। अन्दर न खाट थी, न मेज़, न कोई कुर्सी। कैदी गन्दे फर्श पर बैठते और सोते। [illegible] चहे इतने निडर कि कैदियो की रोटी तक चुरा ले जाते। [illegible] कैदी हिलता-डुलता रहता तो वे दूर रहते, लेकिन ज्या [illegible] हिलना-डुलना बन्द कर देता तो उसे काटने तक के लिए [illegible]। [illegible] ने कैद-तनहाई मे जाने से इन्कार कर दिया, [illegible] कि [illegible] अपराध नही किया। लेकिन वे जबरदस्ती से उसे अन्दर [illegible]। [illegible] ने विरोध किया। दो और कैदी उसकी [illegible] गए और उसे वाडरो के हाथ से छुडा लिया। तब [illegible]। [illegible] नाम का एक वाडर था जिसमे [illegible] की। कैदियो [illegible] उन्होने नीचे गिरा दिया और [illegible] कर दिया। साथ ही गवनर को फौरन [illegible] मे कैदियो ने [illegible] कर दी है। गवनर ने [illegible] नेपोम्नियाश्ची की पीठ पर [illegible] जाय।

यह सज़ा उस कमरे मे दी जानी थी जिसमे स्त्री-कैदी अपने मुलाक़ातियों से मिलती थी।

यह खबर पिछली शाम को ही सब कैदियो को पता चल गई थी, इसी लिए कोठरिया मे इसकी बडी चर्चा थी।

अपने कमरे के कोने मे कोराब्ल्योवा, छबीली, फेदोस्या और मास्लोवा एक साथ बैठी चाय पी रही थीं। सभी के चेहरे वोद्का के कारण लाल हो रहे थे। सभी खुल खुल कर बात कर रही थी। मास्लोवा को अब बराबर शराब मिलती रहती थी, और वह अपनी साथिना को मुफ्त पिलाती रहती थी।

"उसने कोई दगा फसाद तो नही किया," हाथ मे चीनी की डली पकडे, अपने मजबूत दाता से उसे थोडा थोडा कर के कुतरते हुए कोराब्ल्योवा ने कहा। वह वासीलयेव की बात कर रही थी। "अपने साथी की पीठ पर खडा हुआ, बस। आजकल कैदी को पीटने का कोई कानून नही है।"

"मैंने सुना है वह बहुत अच्छा आदमी है," फेदोस्या बोली। वह एक लकडी के कुन्दे पर तख्ते के सामने बैठी थी जिस पर चायदानी रखी थी। बालो की लम्बी लम्बी चोटिया उसने सिर के इर्दगिर्द लपेट रखी थी।

"तुम्हे चाहिए कि तुम इस बारे मे उससे बात करो," चौकीदारिन ने मास्लोवा से कहा। "उससे" का मतलब था नख्लूदोव से।

"मैं जरूर कहूगी। वह मेरी कोई भी बात नही टालेगा," मास्लोवा ने सिर झटक कर मुस्कराते हुए कहा।

"हा, मगर वह आयेगा कब? ये लोग तो कैदियो को लाने भी चले गये है," फेदोस्या बोली, फिर ठण्डी सास भर कर कहने लगी, "कितनी भयानक बात है।"

"मैंने एक बार एक किसान को कोडे लगते देखा था। मेरे ससुर ने मुझे गाव के मुखिया के घर भेजा। वहा मैं गई और वहा " चौकीदारिन एक लम्बी कहानी सुनाने लगी, लेकिन उसी वक्त ऊपर वाले बरामदे से लोगा के चलने और बोलने की आवाज़े आने लगी। चौकीदारिन आगे नही कह पायी।

सभी स्त्रिया चुप हो गइ। उनके कान इन आवाज़ो की ओर लगे हुए थे।

"उसे खीचे लिये जाते है, शैतान के बच्चे!" छबीली बोली। "वे उसे मार डालेगे, जरूर मार डालेगे। सभी वाडर उसके दुश्मन है, क्योकि यह उनसे डरता नही है।"

ऊपर से आवाजे आनी बन्द हो गयी। चुप्पी छा गई। चौकीदारिन ने फिर अपनी कहानी कहनी शुरू की और अन्त तक सुनाती गई। कहने लगी कि जब वह खलिहान मे गई और किसान को पिटते देखा तो ऐसी डरी कि उसे मतली आने लगी। वगैरा वगैरा। छबीली सुनाने लगी कि उन्होंने एक बार श्चेग्लोव को कोडे लगाये तो उसने सी तक नही की। फिर फेदोस्या ने चाय के बरतन उठा दिये, और कोराब्ल्योवा और चौकीदारिन सिलाई ले कर बैठ गईं। मास्लोवा अपने घुटनो के इर्दगिर्द बाहे डाले, खिन्न और उदास, तख्ते पर बैठी रही। वह चाहती थी कि लेट जाय और सोने की कोशिश करे, लेकिन उसी वक्त स्त्री वाडर ने उसे बुलाया और कहा कि दफ्तर मे चलो, वहा कोई आदमी तुमसे मिलने आया है।

"अब भूलना नही, हमारे बारे मे जरूर कहना," बुढिया मेन्शोवा बोली। मास्लोवा उठ कर धुंधले से शीशे के सामने सिर का रुमाल ठीक करने लगी। "हमने घर को आग नही लगाई। उस शैतान ने खुद लगाई। उसके कारिन्दे ने अपनी आखो से उसे करते देखा। अब इन्कार करता है कि नही देखा। समझता है सच बोलेगा तो नरक मे जायेगा। उसे कहना कि मित्री से मिले। मित्री उसे सारी बात साफ साफ बता देगा। जरा सोचो तो, हमने सपने मे बुरा नही चेता और हम तो यहा जेल मे सड रहे है, और वह खुद किसी की बीवी को बगल मे ले कर शराबखाने मे बैठा गुलछर्रे उडा रहा होगा।"

"यह इसाफ नही है,' कोराब्ल्योवा ने हामी भरी।

"जरूर बताऊगी—सब कुछ बता दूगी," मास्लोवा ने जवाब दिया। "घूट भर और शराब दे दो। इससे मेरा साहस बना रहेगा," आख मारते हुए उसने कहा। कोराब्ल्योवा ने आधा प्याला वोदका डाल कर दे दी, जो मास्लोवा पी गई। फिर मुह पोछा और बार बार "साहस बना रहेगा, साहस बना रहेगा" कहती हुई, हसती, सिर झटकती, वाडर के पीछे पीछे बरामदे मे जाने लगी।

नेख्लूदोव हॉल मे बैठा बडी देर तक इन्तज़ार करता रहा।

जेलखाने पहुच कर उसने बाहर के दरवाज़े पर लगी घण्टी बजाई। जवाब वाडर ने दिया जो ड्यटी पर था। नेख्लूदोव ने पास उस के हाथ मे दिया जो बडे सरकारी वकील ने उसे दिया था।

"आप किसे मिलना चाहते हैं?"

"कैदी मास्लोवा को।"

"इस वक्त आप उसे नही मिल सकते। इन्स्पेक्टर साहब को फुसत नही है।"

"क्या वह दफ्तर मे हैं?"

"नही, मुलाकातियो के कमरे मे हैं," वाडर ने जवाब दिया। वह कुछ घबराया हुआ सा लग रहा था।

"क्यो, क्या आज मुलाकात का दिन है?"

"नही, उन्हे खास काम है।"

"तो उनसे कैसे मिला जाय?"

"अभी बाहर आयेंगे तो मिल लेना। थोडा इन्तज़ार कीजिये," वाडर बोला।

उसी वक्त एक सॉर्जेंट मेजर बगल वाले दरवाज़े मे से बाहर निकला, चिकना चुपडा चेहरा, मूछें तम्बाकू से पीली पडी हुई। उसकी वर्दी पर लगी सुनहरी डोरी चमक रही थी। आते ही वाडर पर बरस पडा—

"तुमने क्यो अन्दर आने दिया है? दफ्तर मे "

"मुझे बताया गया कि इन्स्पेक्टर साहब यहा पर है," नेख्लूदोव ने कहा। सॉर्जेंट-मेजर को इतना उत्तेजित देख कर वह हैरान हो रहा था।

उसी वक्त अन्दर का दरवाज़ा खुला और पेत्रोव बाहर निकला, पसीने से तर और हाफ्ता हुआ।

"याद रखेगा," उसने सॉर्जेंट मेजर को सम्बोधन करते हुए कहा।

सॉर्जेंट मेजर ने आख के इशारे से समझाया कि नेख्लूदोव खडा है। पेत्रोव तेवर चढाये, पीछे के दरवाज़े से बाहर निकल गया।

"कौन याद रखेगा? ये सब इतने घबराये हुए क्यो हैं? सॉर्जेंट मेजर ने इसे इशारा क्या किया?" नेख्लूदोव सोच रहा था।

सॉर्जेंट-मेजर ने फिर नेख्लूदोव को सम्बोधित किया—

"आप यहा पर किसी से नही मिल सकते। कृपा कर के इधर दफ्तर मे आ जाइये।"

नेख्लूदोव चलने ही वाला था कि पीछे का दरवाज़ा खुला और इन्स्पेक्टर अन्दर आ गया। वह सबसे ज्यादा घबराया हुआ था और बार बार ठण्डी सास ले रहा था। नेख्लूदोव को देखते ही वह वाडर से बोला—

"फेदोतोव, स्त्रियो की पाच नम्बर कोठरी मे से मास्लोवा को दफ्तर मे भेज दो।"

"मेरे साथ आइये," नेख्लूदोव की ओर घूमते हुए इन्स्पेक्टर ने कहा। वे सीढिया पर चढ कर एक छोटे से कमरे मे पहुचे जिसमे एक ही खिडकी, मेज और कुछ कुसिया थी। इन्स्पेक्टर बैठ गया।

"बहुत, बहुत मुश्किल काम है। ऐसी कडी जिम्मेदारिया है," सिगरेट निकालते हुए उसने फिर नेख्लूदोव से कहा।

"ज़ाहिर है, आप बहुत थक गये है," नेख्लूदोव बोला।

"मैं इस नौकरी से ही थक गया हू। मुझ पर बहुत कडी जिम्मेदारिया हैं। मेरी कोशिश तो रहती है कि इनका बोझ हल्का हो लेकिन उल्टे काम और भी खराब होता है। मैं तो सोचता हू कि किसी तरह इस काम से छुट्टी मिले। बहुत कडी जिम्मेदारिया हैं।"

नेख्लूदोव को मालूम नहीं था कि इन्स्पेक्टर को कौन सी खास मुश्किले पेश आ रही है, लेकिन आज वह खास तौर पर उदास और निराश था और चाहता था कि लोग अपनी सहानुभूति प्रकट करे।

"हा, मुझे भी यही लगता है, आपकी जिम्मेदारिया सचमुच बहुत कडी है," नेख्लूदोव ने कहा, "आप यह काम करते ही क्यो है?"

"क्या करू? घर है, परिवार है, आमदनी का और कोई जरिया नही।"

"लेकिन अगर इतना ही कडा काम है तो "

"फिर भी, आप जानते है, आदमी किसी हद तक उपयोगी हो सकता है। जहा तक मुझसे बन पडता है मैं नरमी बरतता हू। मेरी जगह कोई और होता तो दूसरी ही तरह का व्यवहार करता। आप जानते हैं, हमारे पास यहा दो हज़ार से भी ज्यादा कैदी है। और कैदी भी कैसे! उन्हे सभालने का ढग आना चाहिए। आखिर वे भी इन्सान हैं। उनके प्रति

अपने आप मन मे दया उठती है। पर फिर भी उन्ह् कावू मे तो रखना ही पडता है।"

और इन्स्पेक्टर नेख्लूदोव को बताने लगा कि कुछ ही दिन पहले कैदी आपस मे लडने लगे, जिससे एक कैदी मारा गया।

कहानी जारी रहती मगर उसी वक्त एक वार्डर मास्लोवा को कमरे मे ले आया।

मास्लोवा की नज़र अभी इन्स्पेक्टर पर नही पडी थी कि नेख्लूदोव ने दरवाज़े मे से उसे देख लिया। मास्लोवा का चेहरा लाल हो रहा था, और वार्डर के पीछे पीछे तेज़ तेज़ चलती हुई वह मुस्करा रही थी और बार बार अपना सिर झटक रही थी। परन्तु इन्स्पेक्टर को देखते ही वह डर गई और एकटक उसकी ओर देखने लगी। उसके चेहरे का भाव बिलकुल बदल गया। फिर फौरन् ही सभल गई, और बडी निडरता से, हसते हुए नेख्लूदोव से बोली—

"कहिये, आप कैसे हैं?" एक एक शब्द को लम्बा करते हुए वह बोल रही थी। फिर मुस्कराते हुए, खूब ज़ोर से नेख्लूदोव के साथ हाथ मिलाया। पहली बार जब नेख्लूदोव से मिली थी तो इस तरह हाथ नही मिलाया था।

"मैं यह एक दरख्वास्त लाया हू। इस पर दस्तखत कर दो," नेख्लूदोव ने कहा। जिस निडरता से आज मास्लोवा उसके साथ बात कर रही थी, उसे देख कर वह हैरान हो रहा था। "यह दरख्वास्त वकील ने लिखी है, तुम्हारा उस पर दस्तखत करना जरूरी है, फिर हम उसे पीटर्सबर्ग भेज देंगे।"

"बेशक, जो आप कहे मुझे मजर है," आख मार कर मुस्कराते हुए उसने कहा।

नेख्लूदोव ने जेब मे हाथ डाला और एक तह किया हुआ कागज़ बाहर निकाला और उसे लिये हुए मेज़ के पास गया।

"आपकी इजाज़त हो तो यहा बैठ कर यह इस पर दस्तखत कर दे," नख्लूदोव ने इन्स्पेक्टर से पूछा।

"हा, हा, बैठो। लो, यह कलम लो। लिखना जानती हो?" इन्स्पेक्टर ने कहा।

"किसी जमाने म तो जानती थी,' मास्लावा बोली, और अपना घाघरा और जाकेट की आस्तीनें ठीक कर के मेज़ के सामन बैठ गई।

फिर मुस्कराई और अपने छोटे से चुस्त हाथ मे बेढब से तरीके से कलम पकडी, और नेख्लूदोव की तरफ देख कर हस पडी।

नेख्लूदोव ने बताया कि क्या लिखना है और कहा पर दस्तखत करना है।

उसने कलम को स्याही मे डुबोया, बडे ध्यान से उससे कुछ कतरे स्याही के गिराये, और अपना नाम लिख दिया।

"बस?" उसने पूछा। वह कभी नेख्लूदोव की ओर और कभी इन्स्पेक्टर की ओर देखती और कलम को कभी कलमदान पर और कभी कागजो पर रखती।

"मुझे तुमसे कुछ कहना है," मास्लोवा के हाथ मे से कलम लेते हुए नेख्लूदोव ने कहा।

"अच्छी बात है, बताओ क्या कहना है," उसने कहा। फिर सहसा उसका चेहरा गभीर पड गया, मानो उसे कुछ याद हो आया हो या नीद आने लगी हो।

नेख्लूदोव को मास्लोवा के पास छोड कर इन्स्पेक्टर उठ कर कमरे मे से बाहर चला गया।

४८

जो वाडर मास्लोवा को साथ ले कर आया था, वह कुछ दूर हट कर, खिडकी के दासे पर जा बैठा। नेख्लूदोव के लिए निर्णायक क्षण आ पहुचा था। वह सारा वक्त मन ही मन अपने को धिक्कारता रहा था कि उसने पहली बार मास्लोवा से मिलने पर मुख्य बात नही कही। अब वह निश्चय कर के आया था कि उससे साफ कह देगा कि मैं तुमसे शादी करूगा। मास्लोवा मेज के एक सिरे पर बैठी थी। नेख्लूदोव उसके बिलकुल सामने बैठा था। कमरे मे रोशनी थी, और नेख्लूदोव को पहली बार उसका चेहरा नजदीक से नजर आ रहा था। उसने साफ साफ देखा कि उसकी आखो और मुह के आस-पास रेखाए थी, पलक सूजी हुई थी। नेख्लूदोव के हृदय मे उसके प्रति इतनी अनुकम्पा उठी जितनी पहले कभी नही थी।

वाडर कोई यहूदी लगता था। उसके मुह पर भूरे रग के गलमुच्छे थे। नेख्लूदोव ने मेज के ऊपर सामने की ओर झुक कर, फुसफुसा कर कहा ताकि वाडर न सुन सके—

"अगर इस दरख्वास्त से कुछ नहीं हुआ तो हम महाराज के नाम प्रार्थना-पत्र भेजेंगे। जो कुछ भी मुमकिन हुआ किया जायगा।"

"अगर शुरू में ही कोई ढंग का वकील किया होता तो यह नौबत ही न आती," वह बीच ही में बोल उठी। "मेरा वकील तो निरा बुद्धू था। सारा वक्त मेरी ही तारीफें करता रहता था," यह कह कर हंसने लगी। "अगर उस वक्त उन्हें मालूम होता कि मेरी तुमसे जान-पहचान है तो बात ही बदल जाती। सब यही सोचे बैठे हैं कि मैं चोर हूं।"

"आज यह कैसे अजीब ढंग से बातें कर रही है," नेख्लूदोव सोच रहा था। वह अपने मन की बात कहने जा ही रहा था जब मास्लोवा ने फिर बोलना शुरू कर दिया—

"हां, मुझे तुमसे एक बात कहनी है। हमारे यहां एक बूढ़ी औरत है। इतनी अच्छी, इतनी अच्छी कि क्या कहूं, सब हैरान होते हैं। उसने कोई जुर्म नहीं किया, फिर भी उसे पकड़ा हुआ है। उसके बेटे को भी। सभी जानते हैं कि उनका कोई दोष नहीं, उन पर जुर्म लगाया गया है कि उन्होंने किसी के घर को आग लगाई। जानते हो, जब उसे मालूम हुआ कि हमारी तुम्हारी जान पहचान है तो मुझसे कहने लगी—'उनसे कहो मेरे बेटे को मिलें। वह उन्हें सारी बात बता देगा।'" बातें करते हुए मास्लोवा कभी दायीं ओर कभी बायीं ओर सिर झुका कर नेख्लूदोव की ओर देखती। "उसका नाम मेन्शोव है। मिलोगे न उसे? इतनी अच्छी है वह बुढ़िया, तुम्हें क्या बताऊं। देखते ही पता चल जाता है कि उसका कोई दोष नहीं। यह काम करोगे न? तुम बड़े अच्छे हो!" यह कहते हुए मास्लोवा मुस्कराई, फिर उसकी ओर देख कर आंखें नीची कर लीं।

"अच्छी बात है, मैं पता करूंगा," नेख्लूदोव ने कहा। नेख्लूदोव मास्लोवा को यों खुल खुल कर बातें करते देख कर अधिकाधिक हैरान हो रहा था। "पर मैं तो तुम्हारे साथ अपने बारे में बात करने आया हूं। तुम्हें याद है जो कुछ मैंने पिछली बार तुमसे कहा था?"

"पिछली बार तुमने तो कितनी ही बातें कही थीं। क्या कहा था तुमने?" मास्लोवा बोली। वह अब भी मुस्कराये जा रही थी और सिर दायें से बायें घुमा रही थी।

"मैंने कहा था कि मैं तुमसे माफी मांगने आया हूं," नेख्लूदोव ने कहना शुरू किया।

"उसका क्या फायदा? माफी, माफी, उससे क्या होगा? इससे तो यही अच्छा है कि "

"मैं अपने पाप का प्रायश्चित करना चाहता हू। बातो से नही, बल्कि कर्म से। मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं तुमसे शादी करूगा।"

सहसा मास्लोवा के चेहरे पर भय छा गया। उसकी ऐंचीतानी आखें नेख्लूदोव के चेहरे पर गड गईं, मगर फिर भी ऐसा लग रहा था जैसे उसे देख नहीं रही हैं।

"यह किस लिए?" गुस्से से भौंह सिकोड कर उसने कहा।

"भगवान् के सामने मैं अपना कर्तव्य निभाना चाहता हू।"

"अब कौन सा भगवान तुम्हे मिल गया है? क्या ऊल-जलूल बोल रहे हो? भगवान? कौन सा भगवान्? तुम्हे उस वक्त भगवान को याद करना था," मास्लोवा ने कहा और उसका मुह खुला का खुला रह गया।

अब जा कर नेख्लूदोव को पता चला कि मास्लोवा की सास मे से शराब की गध आ रही है। वह मास्लोवा की उत्तेजना का कारण समझ गया।

"शान्त हो जाओ," वह बोला।

"मैं क्यो शान्त होऊ? तू समझता है मैं नशे मे हू? हा मैं नशे म हू, पर मैं फिर भी जानती हू मैं क्या कह रही हू," वह तेज़ तेज़ बोलने लगी। उसका चेहरा तमतमा उठा। "मैं तो मुजरिम हू, रण्डी हू। और तुम भले आदमी हो, एक प्रिंस हो। मुझे हाथ लगा कर तू अपने को नापाक नही कर। तू जा अपनी प्रिंसेसो के पास। मेरी कीमत तो दस रूबल है।"

"तुम बडी सख्त बात कर रही हो, लेकिन इस वक्त जो मेरे मन पर गुज़र रही है वह मैं ही जानता हू," नेख्लूदोव ने कहा। उसका शरीर काप रहा था। "तुम सोच भी नही सकती हो कि मैं तुम्हारे प्रति अपने को कितना बडा मुजरिम समझता हू।"

"मुजरिम समझता हू!" मास्लोवा ने गुस्से से नेख्लूदोव की नकल उतारते हुए कहा। "उस वक्त तो तू अपने को मुजरिम नही समझता था। उस वक्त तो सौ रूबल का नोट फेंक कर चलते बना था। यह ले—तेरी कीमत "

"जानता हू, जानता हू, पर अब क्या किया जाय?" नेख्लूदोव ने

कहा। "अब मैं तुम्हे छोड कर नही जाऊगा, मैंने निश्चय कर लिया है और मैं अपनी बात पूरी कर के रहूगा।"

"और मैं कहती हू कि तू कभी पूरी नहीं करेगा," मास्लोवा बोली और ज़ोर ज़ोर से हसने लगी।

"कात्यूशा!" उसके हाथ को छूते हुए नेख्लूदोव कहने लगा।

"चला जा यहा से। तू ठहरा प्रिंस, मैं मुजरिम। तेरा यहा क्या काम?" उसने हाथ छुडाते हुए चीख कर कहा। गुस्से से उसका चेहरा विकृत हो रहा था। "तू मेरे ज़रिए अपने आपको बचाना चाहता है?" वह कहे जा रही थी। उसके दिल मे तूफान उठ रहा था। आज वह अपने दिल का सारा गुबार निकाल देना चाहती थी। "इस लोक मे तूने मुझे भोगा और अब मुझसे ही अपना परलोक सुधारना चाहता है! मुझे तुझसे नफरत है— तेरी इन ऐनको से, तेरी इस मोटी गन्दी सूरत से मुझे नफरत है! चला जा यहा से, चला जा!" उसने चिल्ला कर कहा और ज़ोर से उठ खडी हुई।

वाडर भागा हुआ उनके पास आया।

"क्या शोर मचा रही हो? ऐसा करोगी तो "

"कृपया, रहने दीजिये," नेख्लूदोव ने कहा।

"शोर मचाने का क्या मतलब है!" वाडर बोला।

"मेहरबानी कर के थोडा इतज़ार कीजिये," नेख्लूदोव ने कहा। वाडर खिडकी के पास लौट गया।

मास्लोवा, आखे नीची किये, अपने छोटे छोटे हाथ कस कर एक दूसरे से पकडे, फिर बैठ गई।

नेख्लूदोव उसके पास खडा था। उसकी समझ मे नही आ रहा था कि क्या कहे।

"तुम्हे मुझ पर विश्वास नही है?" वह बोला।

"किस बात का, कि तुम मेरे साथ ब्याह करना चाहते हो! यह कभी नहीं होगा। मैं मर जाऊगी लेकिन तुम्हारे साथ ब्याह नही करूगी। बस, सुन लिया?'

"कोई बात नही। मैं फिर भी तुम्हारी सेवा करता रहूगा।"

"यह तुम जानो। पर यह समझ लो कि मुझे तुमसे किसी चीज़ की

भी जरूरत नही है। यह मैं सच कह रही हू। मर क्या नही गई मैं तभी।"
उसने कहा और बिलख बिलख कर रोने लगी।

नेम्लूदाव के मुह मे जबान नही थी। उसे रोता देख कर उसकी आखो म भी आसू आ गय।

मास्लोवा ने सिर उठा कर उसकी ओर देखा तो हैरान रह गई, फिर रूमाल से अपने आसू पोछने लगी।

वाडर ने फिर पास आ कर कहा कि मुलाकात का वक्त खत्म हो चुका है। मास्लोवा उठ खडी हुई।

"तुम इस वक्त बेचैन हो। हो सका तो मैं कल फिर तुमसे मिलन आऊगा। जो कुछ मैंने कहा है, उस पर विचार करना," नेम्लूदोव न कहा।

मास्लोवा ने कोई जवाब नही दिया, और बिना उसकी ओर देखे, वाडर के पीछे पीछे कमरे मे से बाहर चली गई।

"अब तो तुम्हारे मजे ही मजे हैं," कोठरी मे मास्लोवा के लौटने पर कोराब्ल्योवा कहने लगी। "जान पडता है वह तुम पर फिदा है। जब तक वह तुम्ह चाहता है, उसका पूरा पूरा फायदा उठा लो। उसने मदद की तो छूट जाओगी। अमीर लोग सब कुछ कर सकते ह।"

"ठीक है, बिलकुल ठीक कहती हो," चौकीदारिन अपनी सुरीली आवाज मे कहने लगी। "जब कोई गरीब आदमी ब्याह करना चाहे तो हजार झझट उठते हैं। पर अमीर आदमी के लिए तो बस कहने की देर है, उसका झट से ब्याह हो जाता है। मैं ऐसे एक अमीर जादे को जानती हू। जानती हो उसने क्या किया? "

"क्या तुमने मेरे बारे म उससे बात की थी?" बुढिया ने पूछा।

परन्तु मास्लोवा ने अपनी साथिना के किसी भी सवाल का जवाब नही दिया, और तख्ते पर जा कर लेट रही और शाम तक वही पडी रही। सारा वक्त वह अपनी एची आखो से छत के एक कोने की ओर देखती रही। उसकी आत्मा म एक कडा सघर्ष चल रहा था। नेख्लूदोव की बातो से उसे वह दूसरी दुनिया याद हो आयी थी जिसमे उसने यन्त्रणा भोगी थी। उस दुनिया को बिना समझे, उससे घृणा करती हुई वह उसमे से निकल आयी थी। सारा वक्त वह एक तन्द्रा की हालत म जीती रही

थी। आज उसकी तन्द्रा टूट गई थी। परतु उन दिनो की स्पष्ट स्मृतिया ले कर जीना असम्भव सा लगता था, वे स्मृतिया उसे असह्य वेदना पहचाती थी। शाम को उसने फिर वोदका मागी और अपनी साथिना के साथ जी भर कर पी।

४६

"हू, तो यह बात है," जेलखाने मे से निकलते हुए नेख्लदोव सोच रहा था। अब जा कर वह अपने अपराध की गभीरता को पूरी तरह से समझ पा रहा था। यदि उसने प्रायश्चित करने की कोशिश नही की होती तो उसे मालूम ही नही हो पाता कि उसने कितना बडा अपराध किया है। इतना ही नही, स्वय मास्लोवा भी नही समझ पाती कि उसके साथ कैसा जुल्म हुआ है। अब नेख्लूदोव को अपने पाप की भयकरता स्पष्टतया नज़र आने लगी थी। अब वह देख रहा था कि उसने इस स्त्री की आत्मा को किस तरह रौद डाला है। और अब मास्लोवा को भी नज़र आने लगा था, वह भी समझने लगी थी कि उसके साथ कितना बुरा व्यवहार हुआ है। आज तक तो नेख्लूदोव के मन मे आत्मश्लाघा की भावना उठती रही थी, और वह इसी भावना से जैसे खेलता रहा था। जब उसके मन मे पश्चाताप भी उठता तो उसका हृदय अपने प्रति श्रद्धा से भर उठता था। परन्तु अब वह भय से काप उठा। वह जानता था कि अब वह मास्लोवा से किनारा नही कर सकता। पर साथ ही उसकी समझ मे यह भी नही आ रहा था कि उनका एक दूसरे के साथ कैसा सम्बन्ध होगा, और ऐसे सम्बन्ध का क्या बनेगा।

वह बाहर निकल ही रहा था जब एक वाडर चलता हुआ उसके पास आया और बडे रहस्यपूर्ण अन्दाज़ से एक पुर्ज़ा उसके हाथ म दिया। वाडर के चेहरे पर बडा घिनौना सा भाव था, मानो वह जान बूझ कर नेख्लूदोव को उकसाने के लिए आया हो। उसकी छाती पर क्रॉस और तमगे चमक रहे थे।

"किसी ने आपके नाम यह पुर्ज़ा दिया है हुज़ूर," लिफाफा नेख्लूदोव के हाथ मे देते हुए उसने कहा।

"किसने?'

"आप पढेंगे तो आपको मालूम हो जायेगा। वह सियासी कैदी है। मैं उसी वाड मे काम करता हू। इसलिए उस औरत ने मुझी को यह पुर्जा देने को कहा। आप जानते है, यह है तो कानून के खिलाफ, मगर फिर भी, इन्सान का इन्सान स हमदर्दी होती है " वाडर का बात करने का लहजा वडा अस्वाभाविक था।

नेख्लूदोव हैरान हुआ। यह वाडर उसी वाड मे काम करता है, जिसमे सियासी कैदी रखे गये हैं, और खुद पुर्जे पहुचा रहा है, और वह भी जेल के अन्दर, खुल्लमखुल्ला, सबके सामने। नेख्लूदोव यह नही जानता था कि यह आदमी वाडर भी था और जासूस भी। उसने पुर्जा ले लिया और जेलखाने से बाहर आ कर पढा। पुर्जा चुस्त लिखावट मे लिखा था।

"यह जान कर कि आप यहा आते हैं और एक मुजरिम के मुकद्दमे म आपकी दिलचस्पी है, मेर दिल मे भी आपसे मिलने की ख्वाहिश उठी है। मुझसे मिलने के लिए इजाजत मागिये। आपको फौरन इजाजत मिल जायेगी। मिलने पर मैं आपको आपकी आश्रिता के बारे में बहुत कुछ बता सकूगी। साथ ही अपने दल के बारे मे भी। आपकी, कृतज्ञा, वेरा बोगोदूखोव्स्काया।"

वेरा बोगोदूखोव्स्काया नोवगोरोद गुबेनिया के एक दूरपार के गाव मे अध्यापिका का काम करती थी। एक बार जब नेख्लूदोव अपने मित्रो के साथ रीछ का शिकार खेलने गया तो वे उसी गाव मे ठहरे थे। वहा इस महिला ने नेख्लूदोव से आर्थिक सहायता की प्रार्थना की थी ताकि वह आगे अपनी पढाई जारी रख सके। नेख्लूदोव ने उसे कुछ पैसे दिये थे। उसके बाद यह महिला उसके मन से उतर गई थी। अब जान पडता था कि इस महिला ने सियासी जुर्म किये हैं, और जेल मे है (शायद जेल म ही उसे नेख्लूदोव की कहानी मालूम हुई है) और उसकी मदद करना चाहती है। उन दिनो जीवन कितना सरल और सुगम था, और अब कितना जटिल और कठोर हो उठा है! नेख्लूदोव को वे दिन याद हो आये, जिन दिनो उसका बोगोदूखोव्स्काया से परिचय हुआ था। उन्हे याद कर के उसके दिल मे खुशी की लहर दौड गई। बडी स्पष्टता से वह दृश्य उसकी आखो के आगे घूम गया। शीतकाल की समाप्ति के पर्व से कुछ ही दिन पहले की बात थी। वे एक ऐसी जगह पर थे जहा से रेल का स्टेशन ४० मील दूर था। उस दिन शिकार अच्छा हुआ था—उन्होंने दो रीछ मार

डाले थे, और वापस लौटने से पहले सभी लोग बैठे भोजन कर रहे थे। जिस घर मे वे बैठे थे उस घर की मालकिन उनके पास आ कर बोली था कि पादरी की बेटी प्रिंस नेख्लूदोव से बात करना चाहती है।

"क्या देखने म अच्छी है?" किसी ने पूछा था।

"ऐसी बात मत कहो," नेख्लूदोव ने कहा था और बडी गभीर मुद्रा धारण किये उठ खडा हुआ था। फिर मुह पोछ कर, यह सोचते हुए कि पादरी की बेटी को मेरे साथ क्या काम हो सकता है, वह मकान के उस हिस्से मे चला गया था जिसमे घर के लोग रहते थे।

वहा उसने एक लडकी को खडे देखा था, फेल्ट का टोप लगाये, वह कधो पर गरम कोट ओढे थी। लडकी शरीर की मजबूत थी लेकिन शक्ल की कुरूप थी। केवल कमान जैसी भौंहो के नीचे उसकी आखें बेहद सुदर थी।

"लो बेटी, यह है प्रिंस। जो कहना हो इनसे कह लो। मैं बाहर ठहरती हू," बुढिया मालकिन ने कहा था।

"मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हू? नेख्लूदोव ने पूछा।

"आप आप आप तो धनी हैं, अपना रुपया शिकार जमी फिजूल बातो पर बरबाद करते है," लडकी कहने लगी थी। वह बहुत घबरायी हुई थी। "मैं जानती हू मुझे केवल एक चीज की जरूरत है मैं लोगो की सेवा करना चाहती हू। पर मैं कुछ भी नही कर सकती, क्योंकि मैं बहुत कम जानती हू।"

लडकी की आखो से नजर आ रहा था कि वह बडी दयालु-स्वभाव की है, और जो कुछ कह रही है बिल्कुल सच होगा। जिस लहजे मे वह बात कर रही थी उसमे सकोच और दढता का भाव था जो हृदय को छूता था। नेख्लूदोव ने, जसा कि उसका स्वभाव था, मन ही मन लडकी की स्थिति म अपने को रख कर देखा। सहसा उसने लडकी की स्थिति को समझ लिया और उसका हृदय सहानुभूति से भर उठा।

"मैं आपके लिए क्या कर सकता हू?"

"मैं अध्यापिका का काम करती हू। मैं यूनीवर्सिटी म पढ़ना चाहती हू लेकिन इसकी मुझे इजाज़त नही मिलती। इजाज़त तो मिलती है लेकिन इसके लिए मेरे पास पैसे नही हैं। आप मुझे पसे दीजिये। कोर्स खत्म होने के बाद मैं यह रकम लौटा दूगी। मैं सोचती हू कि धनी लोग तो रीछ

का शिकार करते हैं और किसानो को शरावें पिलाते है। यह कोई अच्छी बात है? वे लोगो का भला क्यो नही करते? मुझे केवल ८० रुबल की जरूरत है   लेकिन अगर आप देना नही चाहते, तो न दें," उसने तनिक गुस्से से कहा।

"नही, नही, वल्कि मैं तो आपका कृतज्ञ हू कि आपने मुझे सेवा का यह अवसर दिया। मैं अभी पैसे लाता हू," नेख्लूदोव ने कहा।

वह गलियारे मे निकल आया जहा उसे अपना एक साथी मिला जो वहा खडा उनकी बाते सुन रहा था। वह नेख्लूदोव से मज़ाक करने लगा। उसके मज़ाक की कोई परवाह न करते हुए, नेख्लदोव ने अपने बटुए मे से पैसे निकाले और लडकी का दे दिये।

"नही, नही, मेरा धयवाद करने की कोई जरूरत नही। उल्टे मुझे आपका धयवाद करना चाहिए।"

इस वक्त ये सब बाते याद कर के मन को सुख पहुचता था। एक अफसर ने इस वात पर एक भद्दा सा मजाक किया था, और नख्लूदोव उससे झगड पडा था। उस झगडे का याद कर के भी आज मन को सुख पहुचता था। एक दूसरे दास्त ने नेख्लूदोव का पक्ष लिया था, और इसके फलस्वरूप वे वाद मे गहरे दोस्त हो गये थे। शिकार का वह अभियान कितना सफल रहा था। और उस रात जब वे रेलवे स्टेशन पर पहुचे थे तो वह मन ही मन कितना खुश था

जगल के वीच तग सा रास्ता। उस रास्ते पर स्लेजो की एक कतार चली जा रही है। हर स्लेज के आगे दो घोडे जुते हुए हैं। तज तेज जाते हुए कभी स्लेज ऊचे ऊचे वृक्षो के बीच मे से, कभी छोटे छोटे फर वृक्षो के वीच मे से गुजरने लगते है। फर वक्षो की शाखे वफ के वोझ मे, जिसके बडे बडे लोदे उन पर पडे हैं, भुक झुक जाती हैं। अधेरे मे सहसा लाल लाल रोशनी चमकती है। किसी न खुशबूदार सिगरेट सुलगाया है। रीछा का शिकारिया, ओसिप, कभी एक स्लेज मे जाता है कभी दूसरे म। वफ उसके घुटनो घुटनो तक आती है। शिकार का साज-सामान ठीक करते हुए वह कहानिया सुनाता जा रहा है। वारहसिघा की कहानिया, जो इस वक्त गहरी बरफ मे घूम रहे होगे, और ऐस्पन के पेडा पर स छाल खराच रहे होगे और रीछा की कहानिया, जा इस वक्त अपनी

गहरी गुप्त खोहो मे सोये पडे होगे और उनकी नाक मे से गरम गरम सासे निकल रही होगी।

सारा दृश्य नेख्लूदोव की आखो के सामने घूम जाता है। परतु जिस चीज़ की उसे सबसे अधिक याद आती है वह है स्वास्थ्य, शारीरिक बल, तथा निश्चिन्तता की अनुभूति। हवा म पाले की सर्दी है, और वह उसम लम्बी लम्बी सासे ले रहा है जिससे उसकी छाती फूल उठती है और फर का कोट तग महसूस होन लगता है। पेडो की निचली शाखो पर से हल्की हल्की बर्फ उसके चेहरे पर गिर रही है। उसके शरीर मे गर्मी है, चेहरे पर ताजगी है, और उसकी आत्मा पर न चिन्ता का, न आत्मग्लानि, भय अथवा लालसाओ का बोझ है जीवन कैसा सौन्दयमय था। और अब, हे भगवान्, कैसी यत्रणा है, कितना क्षोभ है!

जाहिर था कि वेरा बोगोदूखोव्स्काया कोई क्रान्तिकारी थी और इसी कारण उसे जेल मे भी रखा गया था। वह उससे जरूर मिलेगा, विशेषकर इसलिए भी कि उसने उसे मास्लोवा के बारे मे परामश देने का वचन दिया है।

५०

दूसरे दिन सुबह नेख्लूदोव जल्दी जाग गया। पिछले दिनो की बातो को याद करते ही उसे भय ने जकड लिया।

लेकिन इस भय के बावजूद, वह पहले से भी अधिक दढता स उस काम को जारी रखना चाहता था जो उसने शुरू किया था।

अपने कतव्य को समझते हुए वह घर से निकल पडा और सीधा मास्लेनिकोव को मिलने चल पडा। उससे वह जेल मे मास्लोवा से मिलने के लिए तथा, मेन्शोव, मा और बेटे से मिलने के लिए जिनका ज़िक्र मास्लोवा ने किया था इजाज़त लेना चाहता था। साथ ही, वह बोगोदूखोव्स्काया से मिलने की भी इजाजत लेना चाहता था। सभव है वह मास्लोवा की सहायता कर सके।

नेख्लूदोव का परिचय मास्लेनिकोव से काफी पुराना था। दोनों एक ही रेजिमेंट म रह चुके थे। उन दिनो मास्लेन्निकोव रेजिमेट मे बख्शी के पद पर नियुक्त था। वह बडा नेक दिल और उत्साही अफसर था। रेजिमेट

ग्रौर राजपरिवार को छोड कर उसे किसी तीसरी चीज मे रुचि न थी। अब जब नेख्लूदोव उससे मिला तो वह रेजिमेंट छोड कर प्रबन्धविभाग का एक पदाधिकारी बना हुआ था। उसकी शादी अमीर घर की एक चुस्त लडकी से हुई थी, जिसने उसे अपना धधा बदलने पर मजबूर किया था।

उसकी स्त्री उसका मज़ाक उडाती, साथ ही उससे लाड-प्यार भी करती, मानो उसने कोई जानवर पाल रखा हो। सर्दी के मौसम मे नेख्लूदोव एक बार उनसे मिलने गया। पति पत्नी दोनो इतने नीरस निकले कि दोबारा उनसे मिलने जाने की उसे इच्छा नही हुई।

नेख्लूदोव को देखते ही मास्लेन्निकोव का चेहरा खिल उठा। अब भी उसका मुह वैसा ही लाल ग्रौर फूला हुआ था, शरीर उसी तरह गदराया हुआ था जैसा कि फौज के दिनो मे हुआ करता था। पोशाक भी पहले ही की तरह बढिया थी। फौज के दिनो मे वह नये से नये फैशन की वर्दी पहना करता था, जो छाती ग्रौर कन्धो पर खूब चुस्त सिली होती। अब वह सिविल पोशाक डाटे हुए था। यह भी नये से नये चलन की थी, उसके मासल शरीर पर खूब फिट बैठती थी, ग्रौर इसमे उसकी चौडी छाती भी खूब उभर कर निकल आई थी। दोनो की उम्र मे काफी फर्क था (मास्लेन्निकोव ४० बरस का था)। इसके बावजूद दोनो मे अच्छी दोस्ती थी।

"कहो दोस्त, आज तो बडी कृपा की! चलो, पहले चल कर मेरी पत्नी से मिलो। मुझे एक मीटिंग मे पहुचना है। लेकिन अभी दस मिनट हैं। आजकल चीफ यहा नही है, मैं उसकी जगह गुबेर्निया प्रबन्ध का चीफ हू," उसने कहा। वह अपनी खुशी को छिपा नही पा रहा था।

"मैं एक काम से तुम्हे मिलने आया हू।"

"क्या काम है?" मास्लेन्निकोव ने सहसा सतर्क हो कर थोडी सहमी ग्रौर साथ ही सख्ती लिये आवाज़ मे पूछा।

"जेल मे एक कैदी है, उसमे मेरी गहरी दिलचस्पी है।" (जेल का नाम सुनते ही मास्लेन्निकोव का चेहरा कठोर पड गया)। "मैं उससे मिलना चाहता हू, लेकिन मुलाकाती कमरे मे नही, अलग, दफ्तर मे, ग्रौर केवल उस वक्त ही नही जब सब लोग मिलते हैं। मैंने सुना है कि इसकी इजाज़त तुमसे लेनी होगी।"

"ज़रूर, mon cher *यार, तुम्हारा काम नहीं करूंगा?" मास्लन्निकोव ने कहा और अपने दोनों हाथ नेख्लूदोव के घुटनों पर रख दिये, मानो अपना रोब दाब कम करना चाहता हो। "पर यह मत भूलो कि मेरा राज बस एक घण्टे के लिए है।"

"तो क्या तुम मुझे आर्डर लिख दे सकते हो, ताकि मैं उस औरत को मिल सकूं?"

"क्या वह कोई औरत है?"

"हां।"

"किस जुर्म के कारण क़ैद है?"

"ज़हर देने के कारण। लेकिन उसके साथ अन्याय हुआ है।"

"हां, देख लो, यही है जूरी का न्याय, ils n en font point d autres"** जाने क्यों उसने फ्रांसीसी में कहा। "मैं जानता हूं तुम मेरे साथ सहमत नहीं हो, पर चारा ही क्या है? C est mon opinion bien arretee"*** उसने अपनी राय ज़ाहिर करते हुए कहा। यह राय वह पिछले बारह महीने से एक प्रतिक्रियावादी अखबार में भिन्न भिन्न रूपों में पढ़ता आ रहा था। "मैं जानता हूं कि तुम उदारवादी हो।"

"मैं नहीं जानता उदारवादी हूं या कुछ और," नेख्लूदोव ने मुस्कराते हुए कहा। जब भी लोग उसे उदारवादी कह कर किसी राजनीतिक पार्टी के साथ उसका संबंध जोड़ते तो उसे बड़ी हैरानी होती। उसका तो केवल यही कहना था कि सज़ा देने से पहले मुजरिम को अपनी सफ़ाई देने की पूरी आज़ादी हो, कि कानून की नज़र में उस वक्त तक सब बराबर हैं जब तक कि किसी का जुर्म साबित नहीं हो जाता, कि किसी के साथ भी अनुचित व्यवहार, मार-पीट आदि नहीं होनी चाहिए, उन लोगों के साथ तो विशेषकर नहीं होनी चाहिए जिनका जुर्म अभी साबित नहीं हुआ हो। "मैं नहीं जानता कि मैं उदारवादी हूं या नहीं, लेकिन मैं इतना ज़रूर जानता हूं कि बुरी होते हुए भी मौजूदा अदालती प्रणाली पहली प्रणाली से बेहतर है।"

"तुमने वकील कौन सा किया है?"

---

*मेरे प्यारे [दोस्त]। (फ्रेंच)
**और कुछ तो वे करते ही नहीं। (फ्रेंच)
***यह मेरा दृढ़ मत है। (फ्रेंच)

"मैंने फानारिन से बात की है।"

"फानारिन से? अरे!" मास्लेनिकोव ने मुह बनाते हुए कहा। उसे याद हो आया कि साल भर पहले इसी फानारिन ने उसका मजाक उडाया था। एक मुकद्दमे मे वह गवाह बन कर पेश हुआ था। और फानारिन घण्टा भर बडी विनम्रता से उससे सवाल पूछता रहा, और सारा वक्त लोग हसते रहे थे। "मैं तुम्हे परामर्श दूगा कि इस फानारिन से कोई वास्ता न रखो। फानारिन तो est un homme tare"*

"मुझे एक और अर्ज भी करनी है," नेख्लूदोव ने कहा, "एक और लडकी भी है। मुद्दत हुई उससे मेरी जान पहिचान हुई थी। बडी निरीह सी लडकी है, अध्यापिका का काम करती थी। वह भी जेल मे है। उसने मुझसे मिलने की ख्वाहिश जाहिर की है। क्या उससे भी मिलने की मुझे इजाजत मिल सकती है?"

मास्लेनिकोव ने गर्दन थोडी टेढी की और सोचने लगा।

"सियासी कैदी है?"

"हा, मुझे तो यही बताया गया है।"

"सियासी कैदियो से मिलने की केवल सम्बन्धियो को इजाजत होती है। फिर भी कोई बात नही, मैं एक खुला प्रवेश-पत्र तुम्हे लिख देता हू। Je sais que vous n abuserez pas ** तुम्हारी इस रक्षिता का नाम क्या है? बोगोदूखोव्स्काया? Elle est jolie?"***

"Hideuse"****

मास्लेनिकोव ने इस तरह सिर हिलाया मानो उसे यह बात पसद नही थी और मेज़ के पास जा कर एक कागज लिया और प्रवेश पत्र लिखने बैठ गया। कागज़ पर मास्लेनिकोव का शिरोनामा छपा हुआ था।

"हामिल रुक्का प्रिस दमीत्री इवानोविच नेख्लूदोव को इजाज़त है कि वह जेलखाने के दफ्तर मे कैदी मास्लोवा तथा चिकित्सा-सहायिका

---

*बदनाम इन्सान है। (फ्रेंच)

**मैं जानता हू, तुम इसका दुरुपयोग नही करोगे। (फ्रेंच)

***वह अच्छी है? (फ्रेंच)

****बेहूदा। (फ्रेंच)

वोगोदूखोव्स्काया से भेंट कर सकता है।" और नीचे बड़ी शान के साथ अपना नाम लिख कर उसने पत्र को खतम किया।

"अब तुम्हें देखने का मौका मिलेगा कि हमारा इन्तज़ाम कितना अच्छा है। हालांकि बता दूं कि इन्तज़ाम करना आसान नहीं है। जेलखाना छोटा है, मगर कैदियों की संख्या बहुत ज्यादा है, विशेषकर उन कैदियों की जिन्हें जलावतन किया जायेगा। लेकिन मैं खूब कड़ी निगरानी रखता हूं। और अपना काम बड़ी लगन से करता हूं। तुम देखोगे कि कैदी वहां बड़े आराम से रहते हैं और खुश हैं। पर उन्हें हाथ में रखने का ढंग आना चाहिए। कुछ ही दिन पहले मामूली सी गड़बड़ हुई। कैदियों ने हुक्म-उदूली की। मेरी जगह कोई और होता तो इसे बग़ावत समझता, और बहुत लोगों को दुख देता। लेकिन हमारे यहां चुपचाप सब काम ठीक हो गया। ज़रूरत इस बात की है कि एक तरफ हितचिन्ता हो और दूसरी तरफ दृढ़ता और शक्ति," उसने अपने स्थूल सफेद हाथ से मुट्ठी भींचते हुए कहा, जो माड़ी लगी कमीज की आस्तीन में से निकल रहा था। एक उंगली पर फिरोज़े की अंगूठी थी, और कफ पर सोने का स्टड चमक रहा था। "हितचिन्ता के साथ साथ दृढ़ शक्ति की ज़रूरत है।"

"इस बारे में तो मैं कुछ नहीं जानता," नेख्लूदोव ने कहा, "मैं दो बार वहां जा चुका हूं, लेकिन दोनों ही बार मन बड़ा उदास हुआ।"

"जानते हो, तुम्हें काउंटेस पास्सेक से मिलना चाहिए," मास्लेन्निकोव बोला। वह अब बड़े जोश से बातें करने लगा था। "वह अपना सारा वक्त इसी काम को देने लगी है। Elle fait beaucoup de bien * यह उसी की कोशिशों का नतीजा है—और मैं अपनी तारीफ नहीं करता, किसी हद तक मेरी कोशिशों का भी—कि जेल की सारी व्यवस्था बदल गई है। जो भयानक बातें पहले हुआ करती थीं, वे कहीं तुम्हें देखने को नहीं मिलेंगी। कैदी सचमुच बड़े आराम से रहते हैं। यह सब तुम खुद देख लोगे। जहां तक फानारिन का सवाल है, वह सचमुच बहुत बुरा आदमी है। मैं उसे खुद नहीं जानता। मेरी सामाजिक पोजीशन के कारण हमारे रास्ते अलग अलग हैं। और फिर वह अदालत में ऐसी फिजूल बातें कह देता है, जो उसके मुंह में आता है बक देता है।"

---

*वह बहुत से भलाई के काम करती है। (फ्रेंच)

"अच्छा, तो धयवाद," कागज हाथ मे ले कर और बिना उसकी वातो की ओर ध्यान दिये नख्लूदोव ने अपने भूतपूव साथी अफसर से छुट्टी ली।

"तो क्या तुम मेरी पत्नी से मिल कर नही जाओगे?"

"माफ करना, मेरे पास इस समय वक्त नही है।"

"ओ हो, वह मुझ पर वेहद नाराज़ होगी," सीढिया उतरते हुए मास्लेनिकोव बोला। आधी सीढियो तक आ कर वह रुक गया। जो लोग बहुत रुतबे वाले हो उन्ह नीचे तक छोडने जाया करता था, जो उनसे कम रुतबे के हो उन्ह आधी सीढियो तक। नेख्लूदोव को वह दूसरे दर्जे मे रखता था। "और नही तो थोडी देर के लिए चले चलो।"

परन्तु नेख्लूदोव दृढ बना रहा। चोबदार ने भाग कर उसे छडी और ओवरकोट दिया, दरवान ने उसके लिए बाहर का दरवाजा खाला। सारा वक्त वह यही कहता रहा कि वह मजबूर है, रुक नही सकता। दरवाज़े के बाहर पुलिस का सिपाही ड्यूटी पर खडा था।

"अच्छी बात है, लेकिन बृहस्पतिवार को जरूर आना। मेरी पत्नी ने दावत दे रखी है। मैं उसे कह दगा कि तुम आ रहे हो," सीढियो पर से मास्लेनिकोव ने कहा।

५१

मास्लेनिकोव के घर से नेख्लूदोव सीधा बग्घी मे बैठ कर जेलखाने की ओर चल पडा, और वहा पहुच कर इन्स्पेक्टर के घर गया। वह अब जानता था कि इन्स्पेक्टर का घर कहा पर है। अब की बार फिर उसे उसी घटिया पियानो की आवाज़ सुनाई दी। लेकिन अब की रैप्सोडी नही बजाई जा रही थी, अब की क्लेमेंटी की कुछ लघुरचनाए बजायी जा रही थी। पर वादन उतना ही ओजपूण, स्पष्ट और तेज़ था। नौकरानी ने आ कर कहा कि इन्स्पेक्टर साहिब घर पर हैं और नेख्लूदोव को एक छोटी सी बैठक म ले गयी। वही नौकरानी थी, जिसकी एक आख पर पट्टी बधी थी। बैठक मे एक सोफा रखा था, और उसके सामने एक मेज़ थी जिस पर एक बडा सा लैम्प रखा था। लैम्प के ऊपर गुलावी रग के कागज़ का शेड लगा था, जो एक तरफ से जल गया था। लैम्प

के नीचे करोशिये के काम का छोटा सा रुमाल बिछा था। इन्स्पेक्टर ने कमरे मे प्रवेश किया। उसका चेहरा उदास और थका हुआ था।

"तशरीफ रखिये। मैं आपकी क्या खिदमत कर सकता हू?" वर्दी कोट का बीच वाला बटन बन्द करते हुए उसने कहा।

"मैं अभी अभी सहायक गवनर को मिल कर आ रहा हू। उन्होंने यह आडर दिया है। मैं कैदी मास्लोवा से मिलना चाहता हू।"

"मार्कोवा?" इस्पेक्टर ने पूछा। सगीत की वजह से वह नाम स्पष्टतया नही सुन पाया था।

"मास्लोवा!"

"हा हा, ठीक है।"

इस्पेक्टर उठ कर दरवाजे की ओर गया जहा से क्लेमेंटी के सगीत की धुने बराबर आ रही थी।

"मारीया, ज़रा दो मिनट के लिए तो इसे बन्द करो," उसने कहा। उसके लहजे से पता चलता था कि यह सगीत उसकी जान पर आफ्त बना हुआ है। "एक लफ्ज तक सुनाई नही देता।"

पियानो बन्द हो गया। लेकिन उसकी जगह नाराज कदमो की आवाज आने लगी। फिर किसी ने दरवाजे मे से झाक कर देखा।

सगीत बन्द होने से थोडी देर के लिए वातावरण शान्त हो गया। जान पडता था कि इससे इस्पेक्टर को कुछ चैन मिला है। उसने एक मोटा सा सिगरेट सुलगाया, जिसमे कोई हल्का सा तम्बाकू भरा था, और नेख्लूदोव को भी पीने के लिए कहा। नेख्लूदोव ने इकार कर दिया।

"मैं मास्लोवा से मिलने आया हू।"

"आज मास्लोवा से मिलना ठीक नही होगा।"

"क्यो?"

"क्या कहू, दरअसल कसूर आपका है," इस्पेक्टर ने कहा। उसके होठो पर हल्की सी मुस्कराहट थी। 'देखिये, प्रिंस, आप उसके हाथो मे पैसे मत दिया कीजिये। अगर देना भी चाहे तो मुझे दीजिये। मेरे पास वह रकम जमा रहेगी। कल आपने जरूर उसे कुछ पैसे दिये होगे। उनसे उसने शराब खरीदी—इस इल्लत को दूर करना हमारे लिए बडा मुश्किल है,—और आज वह नशे मे है, और लोगो से हाथापाई तक कर रही है।"

"क्या सच?"

"मैं ठीक कहता हू। मजबूर हो कर मुझे उसके साथ सख्ती का बर्ताव करना पड़ा। मैंने उसे दूसरे कमरे मे डाल दिया है। या तो वह शान्त स्वभाव की औरत है। पर कृपा कर के आप उसे पैसे न दिया कीजिये। ये लोग इतने "

कल की सारी घटना नेख्लूदोव की आखो के सामने उभर आयी, और उसे फिर भय ने जकड लिया।

"और सियासी कैदी बोगादूखोव्स्काया क्या मैं उससे मिल सकता हू?"

"हा हा, यदि आप मिलना चाहते है तो" इन्स्पेक्टर बोला। उसी वक्त एक छोटी सी पाच छ साल की लडकी कमरे मे आयी और भागती हुई अपने बाप की ओर जाने लगी, लेकिन सारा वक्त सिर टेढा किये नेख्लूदोव की ओर देखती आ रही थी। "क्या क्या है? देखो, सभल के, गिर पडोगी," इन्स्पेक्टर ने मुस्कराते हुए कहा। लडकी ने ध्यान नही दिया और उसका पाव फर्श पर बिछे कालीन मे अटक गया।

"अगर मिलना मुमकिन है तो मैं चलूगा।"

"जरूर मुमकिन है।'

इन्स्पेक्टर ने लडकी को बाहो मे भर लिया। लडकी अब भी नेख्लूदोव की ओर देखे जा रही थी। इन्स्पेक्टर उठ खडा हुआ और बडे प्यार से लडकी को एक तरफ को जाने का इशारा करते हुए ड्योढी मे चला गया।

ड्योढी मे खडी नौकरानी ने उसे ओवरकोट पहनाया, और दोनो बाहर जाने को हुए। दरवाजे के पास पहुचे ही थे कि क्लेमेंटी के सगीत की ध्वनिया फिर आने लगी।

"सगीत महाविद्यालय मे शिक्षा पाती रही है। लेकिन वहा इतनी बदइन्तजामी है कि क्या कहू। यो इसमे सगीत के लिए बडी योग्यता है," सीढिया उतरते हुए इन्स्पेक्टर कहने लगा, "वह कन्सर्टों मे भाग लेना चाहती है।"

इन्स्पेक्टर और नेख्लूदोव जेलखाने मे पहुचे। उन्हे देखते ही फाटक खोल दिये गये। वार्डरो ने सैल्यूट मारे और एकटक इन्स्पेक्टर की ओर देखते रहे। चार आदमी जिनके सिर आधे मुडे हुए थे, किसी चीज से भरे टब उठाये लिये जा रहे थे। इन्स्पेक्टर पर नजर पडते ही वे दुबक कर एक तरफ खडे हो गये। उनमे से एक विशेष रूप से झुक गया, उसके तेवर चढे हुए थे, और काली काली आखें चमक रही थी।

"जो अन्दर गुण हो तो जरूर सीखना चाहिए, गुण को मरने नहीं देना चाहिए। पर आप जानते हैं, छोटे घर में इससे जी तंग पड़ जाता है," इंस्पेक्टर अब भी बातें किये जा रहा था। कैदियों की ओर उसने कोई ध्यान नहीं दिया। थका मांदा, वह अपने पांव घसीटता, नेख्लूदोव के आगे हाल में दाखिल हुआ। "आप किस मिलना चाहते हैं?"

"बोगोदूखोव्स्काया से।"

"ओह, वह तो बुर्ज में है। आपको थोड़ा इन्तजार करना पड़ेगा," उसने कहा।

"तो इस बीच, यदि संभव हो, तो मैं उन दो कैदियों से मिल लूंगा—मां और बेटे से। उनका नाम मेन्शोव है। वही जिन पर आग लगाने का जुर्म था।"

"हां, २१ नम्बर कोठरी में हैं। उन्हें बुलाया जा सकता है।"

"क्या मैं मेन्शोव से उसकी कोठरी में ही नहीं मिल सकता?"

"लेकिन मैं सोचता हूं मुलाकाती कमरे में ज्यादा आराम रहेगा।"

"नहीं नहीं, मैं कोठरी में मिलना अधिक पसन्द करूंगा। वहां ज्यादा दिलचस्प रहेगा।"

"यहां भी दिलचस्पी की कोई चीज़ आपको नज़र आ गई।"

बगल वाले दरवाज़े में से उसका सहायक अफसर दाखिल हुआ। उसने खूब चुस्त कपड़े पहन रखे थे।

"सुनो, प्रिंस को २१ नम्बर कोठरी में मेन्शोव के पास ले जाओ," इंस्पेक्टर ने अपने सहायक से कहा। "इसके बाद इन्हें दफ्तर में ले आना। मैं जा कर दूसरे कैदी को बुलाता हूं। क्या नाम है उसका?"

"वेरा बोगोदूखोव्स्काया।"

सहायक इंस्पेक्टर एक गोरे रंग का युवक था, मूंछें चुपड़ कर ऐंठी हुई, कपड़ों से हल्की हल्की कोलोन के इत्र की खुशबू आ रही थी।

"इस तरफ तशरीफ ले चलिये,' एक मधुर मुस्कान के साथ उसने नेख्लूदोव से कहा। "हमारे जेलखाने में आपकी दिलचस्पी है?"

"हां हां, जरूर दिलचस्पी है। साथ ही मैं अपना फर्ज़ समझता हूं कि किसी इंसान की मदद करूं जो यहां बन्द है और जिसके बारे में कहते हैं कि बेगुनाह है।"

सहायक इन्स्पेक्टर ने कन्धे बिचका दिये।

"हा, ऐसे भी हो जाता है," उसने धीमे से कहा, और बडे तपाक से एक तरफ हट कर खडा हो गया ताकि मेहमान बरामदे म दाखिल हो सके। बरामदे म स दुगध की लपटें उठ रही थी। "पर कई बार ऐसा भी होता है कि ये लोग झूठ बालत ह। इधर तशरीफ ल चलिये।"

कोठरियो के दरवाज खुल थ। कुछेक कैदी बरामदे म खडे थे। वाडरो की सैल्यूट के जवाब म सहायक इस्पेक्टर ने हल्के से सिर हिलाया, और कनखिया से कैदिया की ओर देखा। कैदी दीवार के साथ सट कर खडे थे। इन्स्पेक्टर को देखते ही या तो व अपनी कोठरिया म सरक गये, या हाथ लटकाये सिपाहिया की तरह खडे हो गये और इन्स्पेक्टर की ओर एकटक देखने लगे। एक बरामदा लाघ कर सहायक इस्पेक्टर नेख्लूदोव को बायें हाथ एक दूसरे बरामदे म ले गया। दोनो बरामदो के बीच एक लोहे का दरवाज़ा था।

यह बरामदा पहले बरामदे स ज्यादा तग और अधियारा था। बदबू भी यहा पहले से कही ज्यादा थी। बरामदे के दोनो तरफ ताले लगे दरवाज़े थे जिनमे छोटे छोटे, एक एक इच व्यास के सूराख थे। यहा केवल एक ही बूढा वाडर ड्यूटी पर था। उसका चेहरा उदास और झुरियो भरा था।

"मेन्शोव कहा है?" सहायक इन्स्पेक्टर ने पूछा।

"बाये हाथ, आठवी कोठरी म।"

५२

"क्या मैं अदर झाककर देख सकता हू?"

"जरूर, जरूर," सहायक ने मुस्करा कर कहा और फिर वाडर से कुछ पूछने के लिए घूम गया। नेख्लूदोव ने एक छोटे से सूराख मे से अदर देखा। कोठरी म एक लम्बे कद का युवक, नीचे पहनने के कपडो म टहल रहा था। उसके मुह पर छोटी सी काली दाढी थी। दरवाज़े के बाहर किसी की आहट पाकर उसने सिर ऊपर उठाया और भौंह चढा कर देखा, लेकिन फिर भी टहलता रहा।

नेख्लूदोव ने एक दूसरे सूराख म से देखा। अदर झाकते ही उसने एक और आख को देखा, बडी सी आख थी और डरी हुई, जो सूराख मे से बाहर उसकी ओर देख रही थी। नेख्लूदोव झट से पीछे हट गया।

तीसरी कोठरी मे एक बहुत ही छोटा सा आदमी तख्ते पर पडा सो रहा था। सिर से पाव तक उसने अपने ऊपर कैदियो का लबादा ओढ रखा था। चौथी कोठरी मे एक आदमी, घुटनो पर कोहनिया रखें बैठा था। उसका चेहरा चौडा और पीला था और सिर बहुत नीचे को झुका था। बाहर कदमो की आवाज सुन कर उसने सिर उठाया और ऊपर को देखा। उसके चेहरे पर, विशेषकर उसकी बडी बडी आखो मे, घोर निराशा का भाव था। स्पष्ट था कि उसे इस बात मे कोई दिलचस्पी नही कि कौन उसकी कोठरी का निरीक्षण कर रहा है। कोई भी हो, कैदी को प्रत्यक्षत उससे किसी अच्छाई की आशा न थी। नेख्लूदोव घबरा उठा और बिना किसी और सूराख मे से झाके सीधा मेशोव की २१ नम्बर कोठरी की ओर जाने लगा। वाडर ने ताले मे चाभी लगाई और दरवाजा खोल दिया। एक युवक, सोने वाले तख्ते के पास खडा, जल्दी जल्दी अपना लबादा पहन रहा था। जब उसने आगन्तुको की ओर देखा तो उसके चेहरे पर भय छाया हुआ था। युवक की गर्दन लम्बी और पट्ठे मजबूत थे। मुह पर छोटी सी दाढी थी और आखें गोल गोल और सदभावना भरी थी। नेख्लूदोव का ध्यान खास तौर पर उन सद्भावना भरी गोल आखो की ओर गया। त्रस्त और प्रश्नसूचक नजरो से वे कभी नेख्लूदोव की ओर देखती, कभी वाडर की ओर, कभी सहायक इन्स्पेक्टर की ओर, और फिर नेख्लूदोव की ओर देखने लगती।

"ये सज्जन तुम्हारे मुकद्दमे के बारे मे तुमसे कुछ पूछना चाहते हैं।"

"बडी मेहरबानी जी।'

'हा, तुम्हारे बारे मे मुझे बताया गया है," कोठरी को लाघ कर खिडकी की ओर जाते हुए नेख्लूदोव ने कहा। खिडकी गदी थी और उसमे सीखचे लगे थे। "मैं सारी बात तुम्हारे मुह से सुनना चाहता हू।"

मेशोव भी खिडकी के पास आ गया, और झट से अपनी कहानी कहने लगा। शुरू शुरू मे तो वह झेंप से सहायक इन्स्पेक्टर की ओर देखता रहा, बाद मे धीरे धीरे उसका साहस बढता गया। जब सहायक इन्स्पेक्टर, कुछ आदेश देने के लिए कोठरी मे से निकल कर बरामदे मे चला गया, तब तो वह बिल्कुल ही निर्भीक हो कर बोलने लगा। बडे स्वाभाविक ढग से उसने अपनी कहानी सुनाई। उसके ढग और लहजे से ही पता लग रहा था कि यह युवक कोई साधारण, भोला भाला किसान

है। नेख्लूदोव हैरान हो रहा था कि यह कहानी उसे एक कैदी सुना रहा है जो हीन लिवास म जेलखान की कोठरी म खडा है। नेख्लूदोव उसकी बात सुन रहा था, पर साथ ही अपने आस-पास की चीजो को दख रहा था। सोन का तख्ता नीचा था, और उस पर फूस का गद्दा बिछा था। खिडकी पर लाहे के मोटे सीखचे लगे थ। दीवार गदी और गीली थी। और जेलखान का लवादा और बूट पहन इस अभागे, कुरूप किसान का चेहरा अतिदयनीय था। नख्लूदोव का हृदय अधिकाधिक उदास हो रहा था। उसका मन चाहता था कि जो कुछ यह भोला युवक कहे जा रहा है, वह ग़लत हा। क्या यह सभव है कि एक ऐसे आदमी का पकड कर, जिसका केवल यही दोष है कि उसके साथ स्वय बुरा व्यवहार किया गया है, उसे क़ैदिया के कपडे पहना कर ऐसी भयानक जगह पर रखा जाय? साच कर ही मन सिहर उठता है। इस युवक की कहानी सुनने म तो सच जान पडती थी। लडके क चेहरे स सरलता टपकती थी। लेकिन क्या मालूम जो कुछ यह कह रहा है झूठ हो, यह कहानी इसने ख द गढ रखी हा। यह साच कर तो मन और भी सिहर उठता है। जो कहानी उसन सुनाई वह यो थी। इस लडके ने शादी की। इनके गाव म एक सराय थी। शादी के फौरन ही वाद सराय के मालिक ने इसकी वीवी को लालच दे कर फसा लिया। यह लडका मारा मारा भटकता रहा कि कोई इसके साथ इन्साफ करे और इसकी वीवी इसे वापस दिला दे। पर यह जहा जाता वही पर सराय का मालिक अधिकारियो को रिश्वत दे कर साफ निकल जाता। एक वार यह जवरदस्ती अपनी वीवी को पकड लाया, लकिन दूसर ही दिन वह भाग गई। यह फिर उसके घर गया। लडकी घर म मौजूद थी। अन्दर जाते वक्त उसने उसे देखा भी था। लेकिन फिर भी सराय के मालिक ने कह दिया कि नही है और इस वहा स कल जाने को कहा। लडके ने जाने से इकार कर दिया जिस पर सराय .T मालिक और उसका नौकर इस पर पिल पडे और अधमरा कर के छोडा। दूसरे ही दिन सराय म आग लग गई। सराय के मालिक ने इस लडके और इसकी मा को मुजरिम कह कर पकडवा दिया। जिस वक्त आग लगी थी उस वक्त लडका वहा पर मौजूद ही नही था, वल्कि किसी दोस्त को मिलने गया हुआ था।

"सच कहते हो कि तुमन आग नही लगाई?"

"मुझे तो यह सूझा भी नही जनाव। आग ख ुद मेरे दुश्मन ने लगाई है। कोई जन कह रहा था कि उसने कुछ ही दिन पहले सराय का बीमा करवाया था। अब कहते है कि आग मेरी मा और मैंन लगाई है। यह भी कहते थे कि हमने उन्हे मारने की भी धमकी दी। यह तो सच है कि मैंने उस दिन उसे गाली दी थी। मैं और बरदाश्त नही कर सकता था। पर घर को मैंने आग नही लगाई। उसने ख ुद आग लगाई और जुर्म हमारे सिर मढ दिया। जब आग लगी तो मैं वहा पर था ही नही। लेकिन उसने ऐसा इतजाम कर के आग लगाई जब थोडी ही देर पहले मे और मा उधर स गुज़रे थे।"

"क्या तुम सच कह रहे हो?"

"भगवान देख रहा है, मैं सच कहता हू जी। आप मुझ पर दया कीजिये, हुजूर " वह झुक कर जमीन पर माथा रखने लगा। नेख्लूदोव बडी मुश्किल से उसे रोक पाया। "मुझ पर दया कीजिये मैंने कोई क़सूर नही किया, यहा तो मैं पडा पडा मर जाऊगा।"

सहसा उसके होठ कापने लगे। उसने लबादे की आस्तीना म मुह छिपा लिया और रोने लगा, और अपने आसू अपनी गन्दी कमीज़ की आस्तीन से पोछने लगा।

"क्या बात खत्म हो गई?" सहायक ने पूछा।

"हा। तुम बहुत चिन्ता नही करो। जो मुमकिन हुआ हम करेग," नेख्लूदोव ने कहा और बाहर निकल गया। मेन्शोव दरवाजे के ऐन पास खडा था, इसलिए वाडर ने दरवाजा बन्द करते हुए उसे धकेल कर हटा दिया। वाडर ने दरवाजे पर ताला चढाया। मेन्शोव छोटे से सूराख म से बाहर झाक झाक कर देखता रहा।

५३

चौडे बरामदे का लाघ कर व फिर वापस जान लगे। बरामदे म बहुत स बंदी खडे थे (खान का वक्त हो गया था और कोठरिया क दरवाज़े खुले थे)। हल्के पीले रग के लबाद, चौडी निकरें और कन्यिा के जूत पहन व बडी उत्सुकता से नख्लूदाव की भार देखे जा रहे थे।

नेम्लूदोव के मन म एक अजीब मिश्रित सा भाव उठ रहा था। कैदियो के प्रति दया उठती थी। पर उन लोगो के व्यवहार के प्रति जिन्होंने उन्ह यहा बन्द कर रखा था, भय और व्यग्रता का भाव उठता था। इतना ही नहीं, उसे अपने आप पर शर्म आ रही थी कि वह यह सब चुपचाप देखे जा रहा है, हालांकि इस शर्म का कारण वह नहीं जानता था।

एक बरामदे मे कोई आदमी भागता हुआ, जूते खटकाता, कोठरी के दरवाज़े पर आया। कोठरी मे से कुछेक आदमी बाहर निकले और नेख्लूदोव को सिर निवाने लगे और उसका रास्ता रोक कर खडे हो गये।

"कृपा कीजिये, हुजूर,–हम आपका शुभनाम नही जानते,–हमारा फैसला करवा दीजिये।"

"मैं सरकारी आदमी नही हू। मुझे तुम्हारे मामले का कुछ भी मालूम नही है।"

"फिर भी आप बाहर से आये हैं। किसी से बात कीजिये–ज़रूरत हो तो यहीं के किसी अफसर से बात कीजिये," किसी ने क्रुद्ध आवाज़ म कहा। "यह दूसरा महीना चल रहा है। हम बेकसूर यहा पडे है।"

"क्या मतलब? क्या?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"क्या? हम खुद नही जानते क्यो। पर हम दो महीने से यहा पर बद हैं।"

"ठीक है, यह ठीक कहता है। एक हादसा हो गया था, इसी लिए," सहायक इन्स्पेक्टर ने कहा। "इन लोगो के पास पासपोर्ट नही थे इस-लिए इन्ह पकडा गया। चाहिए तो यह था कि इन्ह इनके इलाक़े मे वापस भेज दिया जाता, लेकिन वहा के जेलखाने को आग लग गयी, और वहा के अधिकारियो ने हम लिख भेजा कि इन्ह अभी नही भेजें। और लोगो को तो जिनके पास पासपोर्ट नहीं थे, हमने अपने अपने ज़िले मे वापस भेज दिया है, लेकिन इनको यहीं पर रखे हुए हैं।"

"क्या? क्या इतने से कारण के लिए?" दरवाज़े के पास खडे होते हुए नेख्लूदोव ने कहा।

लगभग ४० आदमी, जेल के कपडे पहने हुए, नेख्लूदोव और सहायक इन्स्पेक्टर को घेर कर खडे हो गये। कइयो न एक साथ बोलना शुरू कर दिया। सहायक न उन्ह चुप करा दिया।

"एक आदमी बोले।"

एक ऊचा-लम्बा भलामानस सा किसान भीड म से निकल कर सामने आया। उसने नेख्लूदोव को बताया कि सबको जेल म इसलिए बन्द रखा जा रहा है कि उनके पास पासपोट नही हैं। वास्तव म नये पासपोट बनवाने मे उ ह केवल दो हफ्ते की दरी हुई। मगर यह कोई नई बात नहा है, हर साल नये पासपोट बनवाने मे उ ह थोडी बहुत देरी हो जाती रही है, और कभी किसी ने कुछ नही कहा। पर इस साल उ ह पकड लिया गया है और मुजरिमो की तरह जेलखाने मे रखा जा रहा है।

"हम सब थवई हैं और एक ही आर्तेल* के सदस्य हैं। हमे बताया गया है कि हमारे जिले के जेलखाने को आग लग गई है। मगर इसम हमारा क्या दोष है? कृपा कर के जरूर हमारी मदद कीजिये।"

नेख्लूदोव के कान मे तो उसकी बात पड रही थी मगर उसे वह समझ नही रहा था। उसकी आखें एकटक वृद्ध के चेहरे को देखे जा रही थी जिस पर एक मोटी सी जू रेंग रही थी। गहरे भूरे रग की जू थी, और कितनी ही उसकी टागें थी।

"ऐसा क्यो? क्या इतनी छोटी सी बात के लिए भी?" सहायक की ओर घूमते हुए नेख्लूदोव ने कहा।

"हा, इ हे अपने घरो को वापस भेज दिया जाना चाहिए था," सहायक ने कहा, "लेकिन जान पडता है इ ह वे भूल गये है, या कोई और बात हो गई है।"

अभी सहायक बोल ही रहा था कि भीड मे से एक छोटा सा आदमी आगे बढ आया। उसने भी जेल के कपडे पहन रखे थे और बेहद उत्तेजित था। अजीब ढग से मुह विचका कर वह कहने लगा कि उनका कोई कसूर नही फिर भी जेल मे उनके साथ बुरा सलूक किया जाता है।

"कुत्तो से भी बुरा " वह कह रहा था।

"बस, बस, बहुत कह चुके। जबान ब द करो वरना "

"वरना क्या?" नाटा आदमी अत्यत उत्तेजित हो कर चिल्लाया। "हमारा कसूर क्या है?"

"चुप रहो!" सहायक ने चिल्ला कर कहा और वह आदमी चुप हो गया।

---

*आर्तेल—श्रमिका का सघ।

"पर इस सब का मतलब क्या है?" बरामदे मे से जाते हुए नेख्लदोव सोच रहा था। कोठरियो के दरवाजो मे स अनगिनत आखें झाक झाक कर उसकी ओर देख रही थी। बरामदे मे खडे कैदी उसकी ओर एकटक देख रहे थे। उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे बरामदे के दोनो ओर कैदियो की कतारें खडी हो, और हर कैदी उसकी पीठ पर कोडे लगा रहा हो।

"क्या यह सभव है कि बिलकुल निर्दोष आदमियो को भी यहा रखा जाता है?" बरामदे मे से बाहर निकलते हुए नेख्लूदोव ने कहा।

"आप क्या चाहते हैं, हम क्या करें? लेकिन वे झूठ भी बहुत बोलते हैं। उनकी बात सुनो तो जैसे सबके सब मासूम हो," सहायक इस्पक्टर बोला।

"पर इन लोगो ने तो कोई कसूर नही किया।"

"ठीक है, यह तो मानना पडता है। पर ये लोग बेहद बिगडे हुए हैं। कोई कोई तो इनमे पल्ले दर्जे के दुष्ट होते हैं। उन पर हमे कडी निगरानी रखनी पडती है। कल ही हमे ऐसे दो आदमियो को सजा देनी पडी।"

"सजा? कैसे?"

"कोडे लगाने पडे। हुक्म हुआ था।"

"लेकिन शारीरिक दण्ड की तो कानूनी तौर पर मनाही कर दी गई है।"

"उन लोगो के लिए मनाही नही है जिन्हे अधिकारो से वचित कर दिया गया हो। उन्हे अब भी शारीरिक दण्ड दिया जा सकता है।"

नेख्लूदोव को कल का दृश्य याद हो आया जब वह हॉल म खडा इन्तजार कर रहा था। अब उसकी समझ मे आया कि उस समय सजा दी जा रही थी। कुतूहल, उदासी, हैरानी—ये सब भावनाए एक साथ उसके मन मे उठने लगी। उसकी आत्मा म एक घिन सी उठी, यहा तक कि उसे मतली होने लगी। पहले कभी भी वह इतना बेचैन नही हुआ था।

बिना सहायक इस्पक्टर की बात सुने, और बिना घूम कर देखे, वह जल्दी से बरामदे मे से निकल आया और दफ्तर की ओर जाने लगा। इस्पक्टर बरामदे मे ही था, लेकिन और काम मे व्यस्त हो जाने के कारण, बोगोदूखोव्स्काया को बुलाना तक भूल गया था। जब नेख्लूदोव

ने दफ्तर मे पाव रखा तब उसे अपना वचन याद आया कि मैं बोगोदूखोव्स्काया को पहले से बुलवा भेजूगा।

"आप तशरीफ रखिये। मैं अभी उसे बुलवाये लेता हू," उसने कहा।

५४

दफ्तर दो कमरो मे बटा हुआ था। पहले कमरे के एक कोने म एक काले रग का स्टड रखा था जिस पर कैदियो का कद मापा जाता था। कमरे मे एक टूटा-फूटा अलावघर और दो गन्दी सी खिडकिया थी। दूसरे कोने मे ईसा की एक बडी सी प्रतिमा टगी थी। जिन स्थानो पर लोगो को यत्रणा दी जाती हो, वहा अक्सर ईसा की प्रतिमा टाग दी जाती है। मानो उसके उपदेशो का मज़ाक उडाने के लिए ऐसा किया जाता हो। इस कमरे मे कुछेक वाडर खडे थे। साथ वाले कमरे म लगभग २० स्त्रिया और पुरुष थे, जो टोलियो मे या जोडो मे बैठे धीमी धीमी आवाज़ मे बाते कर रहे थे। खिडकी के पास एक दफ्तरी मेज़ रखी थी।

इन्स्पेक्टर मेज के सामने बैठ गया, और नेख्लूदोव को अपने पास एक कुर्सी पर बैठने को कहा। नेख्लूदोव बैठकर कमरे मे बैठे लोगो को देखने लगा।

सबसे पहले उसकी नज़र एक युवक पर पडी। इस युवक का चेहरा बडा प्यारा सा था और उसने छोटी सी जाकेट पहन रखी थी। वह एक स्त्री के सामने खडा बडे उत्साह से हाथ हिला हिला कर बात कर रहा था। स्त्री अधेड उम्र की थी, और उसकी भौंहे काली थी। उनके साथ ही एक बूढा आदमी, आखो पर नीले रग का चश्मा लगाये, एक लडकी का हाथ अपने हाथ म लिये बैठा था। लडकी ने कैदियो के कपडे पहन रखे थे और बूढे को कोई बात सुना रही थी। एक छोटा सा स्कूली लडका, सहमी हुई आखो से, एकटक बूढे के मुह की ओर देखे जा रहा था। एक कोने म दो प्रेमी बैठे थे। लडकी छोटी सी और काफी खूबसूरत थी, सिर पर सुनहरी कटे हुए बाल थे, और चेहरे से ओज टपकता था। बडे बढिया कपडे पहन हुए थी। लडके के नाक-नक्श सुन्दर, और बाल घुण्डलदार थे। रबड की जाकेट पहन हुए था। कोने म बैठे दोनो एक दूसरे से फुसफुसा कर बात कर रहे थे और दोनो प्रेम म बेसुध हो रहे थे।

मेज़ के सबसे निकट एक सफेद बालो वाली महिला बैठी थी, जिसने सिर से पाव तक काले रग के कपडे पहन रखे थे। उसके पास ही एक दुबला-पतला युवक बैठा था। इस युवक ने भी रबड की जाकेट पहन रखी थी और लगता था जैसे उसे दिक का रोग हो। ज़ाहिर था कि महिला इस लडके की मा है। महिला कुछ कहना चाहती थी लेकिन सिसकिया के कारण बोल न सकती थी। कई बार उसन कोशिश की लेकिन उसे बीच ही मे रुक जाना पडता। युवक की समझ मे नही आ रहा था कि क्या करे। हाथ मे एक कागज पकडे वह उसे बार बार गुस्से से कभी तह करता कभी मरोडता था। उनकी बगल मे एक मोटी-ताजी सुदर लडकी बैठी थी, जिसके चेहरे पर ताज़गी थी और आखें बडी बडी थी। इस लडकी ने भूरे रग की पोशाक पहन रखी थी और ऊपर केप लगाये थी। वह बडे स्नेह से अपनी सिसकिया भरती मा का कधा सहला रही थी। इस लडकी की हर चीज़ सुदर थी उसके बडे बडे सफेद हाथ, छोटे कुण्डलो वाले बाल नाक, होठ। पर उसके रूप का सबसे सुदर अग थी उसकी आखे, सहृदयता और सरलता से भरी, बादामी रग की गोल गोल आखें। जब नेख्लूदोव ने कमरे मे प्रवेश किया तो ये सुन्दर आखें मा पर से क्षण भर के लिए हट कर उसकी आखो से जा मिली। लेकिन वह फौरन घूम गई और मा से कुछ कहने लगी। प्रेमियो से थोडी ही दूरी पर एक सावला सा आदमी, अस्त-व्यस्त बाल, और उदास चेहरा, बडे गुस्से से एक आदमी से बाते कर रहा था जो उससे मिलने आया था। मुलाकाती के दाढी मूछ नही थी और शक्ल-सूरत से हिजडा लगता था।

इन्सपेक्टर की बगल मे बैठा नेख्लूदोव बडे कुतूहल के साथ अपने आस-पास के लोगो को देख रहा था। एक छोटा सा लडका, जिसने हाल ही मे बाल कटवाये थे, उसके पास चला आया और पतली सी आवाज मे उससे बातें करने लगा।

"तुम किसका इन्तज़ार कर रहे हो?"

सवाल सुन कर नेख्लूदोव हैरान हुआ। लेकिन लडके के नन्हे से चेहरे पर गभीरता का भाव देख कर, तथा उसकी चमकती, सतर्क आखो को देख कर जो एकटक उसके चेहरे पर जमी थी, गभीरता से जवाब दिया कि वह अपनी जान पहचान की एक स्त्री का इन्तज़ार कर रहा है।

"क्या वह तुम्हारी बहिन है?" लडके ने पूछा।

"नही, बहिन तो नही है," नेख्लूदोव ने हैरान हो कर ज
दिया। "और तुम, तुम यहा किसके साथ आये हो?" उसने ल
से पूछा।

"मैं? मा के साथ हू। वह सियासी कैदी है," उसने जवाब दि

"मारीया पाव्लोव्ना, आ कर कोल्या को ले जाओ," इस्पेक्टर
कहा। प्रत्यक्षत उसे नेख्लूदोव का लडके के साथ बाते करना नियम वि
लग रहा था।

मारीया पाव्लोव्ना वही सुदर गोल गोल आखो वाली लडकी
जिसकी ओर नेख्लूदोव का ध्यान आकर्षित हुआ था। ऊची लम्बी, सी
सतर, वह उठी और बडी दृढता से पुरुषो की तरह डग भरती
नेख्लूदोव तथा उस बालक के पास आई।

"यह आपसे क्या पूछ रहा है कि आप कौन है?" नेख्लूदोव की आ
सीधा देखते हुए उसने पूछा। उसके होठो पर हल्की सी मुस्कान थी, औ
बडी बडी सद्भावनापूर्ण आखो से विश्वास छलकता था। इस सादगी
उसने यह सवाल पूछा कि सहज ही यह विश्वास हो जाता था कि
युवती का हर किसी के प्रति बहिनो का सा स्नेह है। इससे भिन्न भाव
उसके हृदय मे उठ ही नही सकती। "यह हर बात जानना चाहता है
ये शब्द उसने लडके की ओर इतने प्यार और सद्भावना के साथ दे
हुए कहे कि लडका और नेख्लूदोव विवश हो कर जवाब मे मुस्कराने लगे

"यह मुझसे पूछ रहा था कि मैं किससे मिलने आया हू।"

"मारीया पाव्लोव्ना, तुम जानती हो बाहर के लोगो से बात कर
मना है," इन्स्पक्टर ने कहा।

"अच्छा, अच्छा,' कहते हुए उसने कोल्या का नन्हा सा हाथ अप
चौडे सफेद हाथ म लिया, और दिक के रोगी की मा के पास लौट गई
बालक उसके चेहरे की ओर बराबर देखे जा रहा था।

"यह नन्हा लडका कौन है?" नेख्लूदोव ने इस्पेक्टर से पूछा।

"इसकी मा सियासी कैदी है। यही जेल मे ही यह पैदा हुआ था,
इस्पेक्टर ने सन्तोषपूर्ण लहजे म कहा, माना वह यह बता कर खु
हो रहा हो कि देखो, यह हमारा जेलखाना कितनी विलक्षण सस्था है

"क्या यह मुमकिन हो सकता है?"

"जी, क्यो नही, और अब वह अपनी मा के साथ साइबेरिया जा रहा है।"

"और वह युवती?"

"मैं आपके सवाल का जवाब नही दे सकता," इस्पेक्टर ने कधे बिचकाते हुए कहा। "लीजिये, बोगोदूखोव्स्काया आ गई।"

५५

कमरे के पीछे एक दरवाजे मे से वेरा बोगोदूखोव्स्काया बल खाती हुई अन्दर चली आ रही थी। उसका चेहरा जर्द था, बाल कटे हुए थे, और शरीर दुबला पतला। बडी बडी आखो से सद्भावना टपकती थी।

"बहुत बहुत शुक्रिया, आप आये," नेख्लूदोव के साथ हाथ मिलाते हुए उसने कहा। "तो आप मुझे भूले नही हैं? आइये, कही बैठ जाय।"

"मुझे ख्याल भी न था कि मैं तुम्हे इस स्थिति मे देखूगा।"

"मैं तो बहुत खुश हू। इस स्थिति मे इतना सुख है, इतना सुख है कि मैं इससे बेहतर किसी चीज की इच्छा ही नही कर सकती," अपनी बेहद पतली गर्दन को घुमाते हुए और एकटक नेख्लूदोव की ओर देखते हुए उसने कहा। उसकी गोल, बडी बडी, सद्भावनापूर्ण आखो मे पहले की तरह आज भी भय छाया हुआ था। और पतली किन्तु मजबूत गर्दन को उसके ब्लाउज का फटा पुराना, मैला और मुचडा हुआ कॉलर ढके हुए था।

नेख्लूदोव के पूछने पर कि वह कैसे यहा आ पहुची, उसने बडे उत्साह से अपने अनुभवो की कहानी कहनी शुरू कर दी। उसके भाषण मे कुछेक विशेष शब्दो का बार बार प्रयोग होता, जैसे प्रापेगैण्डा, अव्यवस्था, दल, विभाग, उप विभाग, इत्यादि। उसका ख्याल था कि हर कोई इन शब्दो से परिचित होगा, लेकिन नेख्लूदोव ने उन्हे पहले कभी नही सुना था।

उसने नेख्लूदोव को 'नरोदनाया वोल्या'* के सभी भेद बता दिये। प्रत्यक्षत उसे यह विश्वास था कि नेख्लूदोव उन्हे जान कर खुश होगा। लेकिन नेख्लूदोव कभी उसकी पतली सी गर्दन को ओर देखता, कभी उसके विरले उलझे बालो की ओर और हैरान हो कर सोचता कि वह ऐसी

---

*'नरोदनाया वोल्या' (जनता की आजादी)—पिछली शती की आठवी दशाब्दी का एक क्रातिकारी सगठन।

बाते क्या करती रही है और अब मुझे उनके बारे म क्या सुना रही है। उसका दिल इस लडकी के प्रति अनुकम्पा से भर उठा, परन्तु यह दयाभावना उस दयाभावना से भिन्न थी जो उसके हृदय मे उस निर्जीव किमान मे शाव के प्रति उठी थी जो इस बदबूदार जेलखाने म पडा सड रहा था। इस लडकी की स्थिति दयनीय इसलिए थी कि उसके विचार बेहद उलझे हुए थे। यह तो स्पष्ट था कि वह अपने को एक वीरागना समझे बैठी थी जो अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिए जान हथेली पर लिए जी रही थी। परन्तु वह लक्ष्य क्या था और उसकी सिद्धि किस बात में है, यह उसके लिए बताना बडा कठिन था।

जिस काम के लिए वेरा बागोदूखोव्स्काया ने नेख्लूदोव से मिलने की इच्छा प्रकट की थी, वह इस प्रकार था। लगभग पाच महीने पहले शस्तोवा नाम की उसकी एक सहेली गिरफ्तार हुई थी और पीटर-पॉल किले म बन्द थी। यह लडकी निर्दोष थी, उस तथाकथित उप विभाग की सदस्या भी नही थी जिसमे बागोदूखोव्स्काया स्वय काम करती थी। उसे पकडा इसलिए गया था कि उसके पास अवैध साहित्य पाया गया था जो किसी और का देने के लिए उसने रखा हुआ था। अपनी उस मित्र की गिरफ्तारी के लिए वेरा किसी हद तक अपने को दोषी समझती थी, इसी लिए वह चाहती थी कि नेख्लदोव उसे रिहा करवाने की पूरी पूरी कोशिश करे। चूकि नेख्लूदोव का अधिकारियो से मेल-जोल था, इसलिए उसने सोचा कि यह सभव होगा। इसके अतिरिक्त उसने अपने एक दूसरे मित्र, गुर्केविच का भी जिक्र किया। वह भी पीटर-पॉल किले मे बन्द था। वह चाहती थी कि नेख्लूदाव उसे अपनी मा से मिलने की इजाजत ले दे, और उसके अध्ययन के लिए कुछेक विज्ञान-सम्बन्धी पुस्तको के पहुचाने का प्रबंध कर दे।

नेख्लूदोव ने उसे आश्वासन दिया कि जब भी वह पीटर्सबर्ग जायगा तो जो कुछ भी उससे बन पडा, करेगा।

जो कहानी उसने अपने बारे मे सुनाई वह यो थी। दाइयो का कोर्स पूरा करने के बाद उसका सम्पर्क 'नरोदनाया वोल्या' के अनुयाइयो के एक दल से हो गया। पहले तो सब काम सुभीते स चलता गया। वे लोग घोषणाए लिखते और फैक्ट्रियो मे प्रचार का काम करते। फिर एक दिन दल का एक प्रमुख सदस्य पकडा गया। अधिकारियो के हाथ जरूरी कागजात पड गये जिनसे सभी सम्बन्धित लाग गिरफ्तार कर लिये गये।

"मैं भी पकडी गई। अब मुझे भी निवासित कर दिया जायेगा। पर क्या हुआ? मैं तो बेहद खुश हू।" यह कहते हुए, उसने अपनी कहानी समाप्त की। उसके होठो पर दयनीय मुस्कान खेल रही थी।

नेख्लूदोव ने उससे उस बडी बडी आखो वाली लडकी के बारे मे पूछा। वेरा ने बताया कि वह एक जनरल की बेटी है और मुद्दत से क्रान्तिकारी पार्टी के सम्पर्क म है। अदालत म यह कबूल करने पर कि उसने राजनीतिक पुलिस के एक सिपाही पर गोली चलाई थी उसे जेलखाने मे बन्द कर दिया गया। वह कुछेक षडयन्त्रकारियो के साथ एक घर मे रहा करती थी। उसी घर मे उन्होंने छिपा कर एक छापाखाना रखा हुआ था। एक रात, पुलिस उस घर की तलाशी लेने आ पहुची। घर वालो ने उनका मुकाबिला करने की ठान ली और बत्तिया बुझा कर उन सब चीजो को नष्ट करना शुरू कर दिया जिनके कारण उन पर अभियोग चल सकता था। पुलिस दरवाजे तोड कर अन्दर घुस आई। किसी षडयन्त्रकारी ने गोली चला दी जिससे एक सिपाही को घातक चोट लगी। जब जाच शुरू हुई तो इस लडकी ने कहा कि गोली उसने चलायी थी, हालाकि वास्तव मे उसने कभी रिवाल्वर को हाथ तक नही लगाया था, और किसी पक्षी तक पर हाथ नही उठा सकती थी। पर वह अपने बयान पर डटी रही, और अब उसे कडी मशक्कत की सजा दे कर साइबेरिया भेजा जा रहा है।

"बडी परोपकारी लडकी है, बहुत अच्छी लडकी है," वेरा बोगादूखोव्स्काया ने उसकी सराहना करते हुए कहा।

तीसरी बात वह मास्लोवा के बारे मे कहना चाहती थी। मास्लोवा के जीवन के बारे मे, तथा नख्लूदोव के साथ उसके सम्बन्ध के बारे मे वह जानती थी—जेलखाने मे इस तरह की बाते सभी को पता चल जाती हैं। वेरा ने यह परामर्श दिया कि या तो नेख्लूदोव उसको सियासी कैदियो के वार्ड मे बदली करा दे, या उसे जेल के अस्पताल मे भिजवा दे जहा वह रोगियो की टहल-सेवा कर सके। इस समय अस्पताल मे रोगियो की सख्या बहुत ज्यादा थी जिस कारण नर्सों की बहुत जरूरत थी। इस परामर्श के लिए नेख्लूदोव ने उसका धन्यवाद किया और कहा कि वह जरूर इस पर अमल करने की कोशिश करेगा।

५६

यहां पहुंच कर उसकी बातचीत कट गई। इन्स्पेक्टर उठ खड़ा हुआ और बोला कि मुलाकात का वक्त खत्म हो चुका है, इसलिए कैदियों और उनके मिलनेवालों को एक दूसरे से विदा लेनी होगी। नेख्लूदोव ने वेरा से विदा ली और दरवाज़े पर जा कर खड़ा हो गया और वहां का दृश्य देखने लगा।

"सज्जनो, वक्त खत्म हो चुका है, वक्त खत्म हो चुका है!" इन्स्पेक्टर बार बार कह रहा था। वह कभी उठता और कभी बैठ जाता।

इन्स्पेक्टर का हुक्म सुन कर कमरे में लोग और भी अधिक उत्साह से बात करने लगे। कोई भी बाहर नहीं गया। कुछ लोग उठ खड़े हुए, और खड़े खड़े बातें करने लगे। कुछ बैठे बैठे ही बात करते रहे। कुछ ने रोना शुरू कर दिया और एक दूसरे से विदा लेने लगे। मां और उसके तपेदिक के रोगी बेटे की विदाई का दृश्य सचमुच मर्मस्पर्शी था। लड़का अब भी कागज़ के टुकड़े को मरोड़े जा रहा था, उसके चेहरे से लगता था कि वह बहुत क्रुद्ध है। वह भरसक कोशिश कर रहा था कि उसकी मां की भावना का उस पर असर न हो। जब मां ने यह सुना कि विदा लेने का वक्त आ गया है तो लड़के के कन्धे पर सिर रख कर फफक फफक कर रोने लगी। गोल गोल, सद्भावनाभरी आंखों वाली लड़की-नेख्लूदोव अनचाहे उसकी ओर देखे जा रहा था-सिसकती मां के सामने खड़ी उसे ढाढ़स बंधाने के लिए कुछ कह रही थी। नीली ऐनकों वाला वृद्ध, अपनी बेटी का हाथ पकड़े खड़ा था, और बेटी जो कुछ कहती उसके जवाब में बार बार सिर हिला रहा था। युवा प्रेमी उठ खड़े हुए थे, और एक दूसरे का हाथ पकड़े, चुपचाप एक दूसरे की आंखों में देख जा रहे थे।

"यहां पर केवल यही दो खुश हैं," प्रेमियों की ओर इशारा करते हुए, नेख्लूदोव की बगल में खड़े छोटा सा कोट पहने युवक ने कहा। वह भी जुदा होते लोगों को देखे जा रहा था।

जब प्रेमियों को-रबड़ की जाकेट वाले लड़के और सुन्दर युवती को-यह भास हुआ कि नेख्लूदोव और युवक उनकी ओर देख रहे हैं, तो उन्होंने बाहें फैला दीं और एक दूसरे का हाथ पकड़ कर गोल चक्कर में नाचने लगे।

"आज रात को इनकी शादी है। यही जेलखाने मे। उसके बाद लडकी उसके साथ साइबेरिया जायेगी," युवक ने बताया।

"वह क्या? "

"कैदी है। बडी मशक्कत की सजा हुई है। चलो, कम स कम इन दोना को तो कुछ ख़ुशी नसीब हो। यहा पर तो क्लेश ही क्लश है," तपेदिक के रोगी की मा की सिसकियो को सुनते हुए युवक ने कहा।

"अच्छा, भले लागो, अब कृपा करो और मुझे मजबूर न करो कि मैं कोई सख्त कदम उठाऊ," इन्स्पेक्टर न कहा और बार बार इन शब्दो को दोहराने लगा। "कृपा करो!" शिथिल, सकोचपूण आवाज़ म वह कहे जा रहा था, "वक्त कब का खत्म हो चुका है। आपका आखिर मतलब क्या है? इस तरह की बात नही चल सकेगी अब मैं आखिरी बार आपसे कह रहा हू," उसन थकी हुई आवाज़ मे कहा और अपनी सिगरेट बुझा कर दूसरी सिगरट जला ली।

अपने को ज़िम्मेवार न ठहराते हुए दूसरो को दुख पहुचाने का अधिकार रखने की लोगो की दलीलें भले ही कितनी भी कुशल, कितनी भी पुरानी, कितनी भी परिचित क्या न हो, फिर भी ज़ाहिर था कि इस कमरे म जो क्लेश लोगा को पहुच रहा था, उसके लिए इन्स्पक्टर अपने को चाहते हुए भी सवथा निर्दोष नही समझ सक्ता था। ज़ाहिर था कि उसे यह बात बेचैन किय हुए थी। वह जानता था कि इन लोगो का दुख पहुचाने वाला मे म वह भी एक है।

आखिर कैदी अपने अपने मुलाकातिया से जुदा हाने लगे। कैदी अदर वाले दरवाज़े से और मुलाकाती बाहर वाले दरवाज़ो से जाने लगे। रबड की जाकेटो वाले आदमी, और तपेदिक का रोगी लडका और वह आदमी जिसके बाल अस्त-व्यस्त थ, सब चले गय। मारीया पाव्लोना भी उस लडके के साथ चली जो जेल म पैदा हुआ था।

मिलने वाले भी चले गये। नेख्लूदोव के आगे आगे नीली ऐनका वाला वृद्ध, कदम घसीटता हुआ चला जा रहा था।

"सचमुच बडी विचित्र स्थिति है," नेख्लूदोव के साथ सीढिया उतरते हुए बातूनी युवक कह रहा था, माना टूटे हुए वार्तालाप की कडी फिर से जोड रहा हो। "फिर भी हम इन्स्पेक्टर के बडे कृतज्ञ हैं। बहुत अच्छा आदमी है, नियमो की बहुत परवाह नही करता। इन लोगो के लिए

इतना भी बहुत है कि थोडी देर के लिए एक दूसरे से बात कर ले। इससे इनके दिल का गुबार कुछ हल्का हो जाता है।"

"दूसरे जेलो मे क्या ऐसी मुलाकातो की इजाजत नही?"

"हा-हा! नाम भी मत लो। अकेले मे नही मिलना चाहते जनाब? वह भी जाली के आर पार?"

इस युवक ने अपना परिचय कराते हुए कहा था कि इसका नाम मेदिन्सेव है। इससे बातें करते हुए नेख्लूदोव हॉल मे पहुचा, जहा उसे इन्सपेक्टर मिला जो उसी तरह थका मादा उनकी ओर चला आ रहा था।

"यदि आप मास्लावा से मिलना चाहते हैं, तो कृपया कल आइये," प्रत्यक्षत नेख्लूदोव के प्रति विनम्रता दिखाने की इच्छा रखते हुए उसने कहा।

"अच्छी बात है," नेख्लूदोव ने जवाब दिया और जल्दी जल्दी वहा से निकल गया।

मेन्शोव की यन्त्रणा, जो प्रत्यक्षत निर्दोष था, बडी भयानक थी। परन्तु उसकी शारीरिक यन्त्रणा से भी बढ कर भयानक उसकी मानसिक व्यग्रता थी, भगवान तथा मनुष्य की अच्छाई मे अविश्वास था। यह व्यग्रता और अविश्वास बरबस उसके मन मे उठते जब वह इन लोगो की निर्दयता को देखता जो बिना किसी कारण के उसे यन्त्रणा पहुचा रहे हैं। बीसियो निर्दोष लोगो को भयानक तिरस्कार और यातना सहनी पडती, केवल इसलिए कि कागज़ो पर कोई बात जिस तरह लिखी जानी चाहिए थी वैसे नहीं लिखी गई थी। वार्डर भी भयानक थे जिनका स्वभाव ही बर्बर हो गया था। इनका काम ही अपने भाइयो को यन्त्रणा पहुचाना था। उन्हे विश्वास था कि वे अपना कर्तव्य निभा रहे है जो महत्वपूर्ण और उपयोगी है। परन्तु इन सबसे भयानक यह दुबला-पतला, ढलती उम्र का, नेक दिल इन्स्पेक्टर था, जिसे मजबूर हो कर मा को बेटे से, और बाप को बेटी से अलग करना पडता था। आखिर इन लोगो का भी तो सम्बन्ध वैसा ही था जैसा कि इन्सपेक्टर का अपने बच्चो से था।

"यह सब किस लिए?" नेख्लूदोव ने मन ही मन पूछा। जब भी वह जेलखाने मे आता तो उसकी आत्मा बेचैन हो उठती, और यह बेचैनी मतली का रूप ले लेती। आज तो पहले से भी बढ कर उसकी यह दशा हुई, और इस प्रश्न का कोई उत्तर उसे नहीं सूझ पाया।

दूसरे दिन नेख्लूदोव वकील से मिलने गया, और उससे मेन्शाव मा और बेटे की स्थिति के बारे मे बात की और उससे आग्रह किया कि उनके मुकद्दमे की पैरवी कर। वकील ने वचन दिया कि वह मुकद्दमे की जाच करेगा, और यदि नेख्लूदोव का कहना ठीक निकला—जैसा कि बहुत सभव जान पडता था—तो उसकी पैरवी मुफ्त करेगा। फिर नेख्लूदोव ने उन १३० आदमियो का जिक्र किया जिन्हे किसी भूल के कारण जेलखाने मे रखा जा रहा था।

"किसे यह फैसला करना है? किस का कसूर है?"

वकील क्षण भर के लिए चुप रहा। जाहिर है वह सवाल का ठीक ठीक जवाब देना चाहता था।

"किस का कसूर है? किसी का भी नही," उसने निश्चयपूर्वक कहा। "सरकारी वकील से पूछिये तो वह कहेगा गवनर का कसूर है, गवनर से पूछिये तो वह सरकारी वकील का कसूर बतायेगा। किसी का भी कसूर नही।"

"मैं अभी सहायक गवनर से मिलने जा रहा हू। मैं उससे बात करूगा।"

"इसका कुछ फायदा नही," वकील ने मुस्करा कर कहा, "वह तो, क्या कहू—कही वह आपका मित्र या सम्बन्धी तो नही?—वह तो निरा काठ का उल्लू है। फिर भी अपना काम साधना खूब जानता है।"

नेख्लूदोव को मास्लेन्निकोव के शब्द याद आ गये जो उसने वकील के बारे म कहे थे, और बिना कुछ भी जवाब म कहे उससे विदा ली और मास्लेन्निकोव को मिलने चल दिया।

मास्लेन्निकोव से उसे दो काम थे एक तो यह कि मास्लोवा को जेल के अस्पताल मे भेज दिया जाय, और दूसरा उन १३० आदमियो के बारे में जिन्हे बिना किसी कसूर के, पासपोर्ट न होने के कारण, जेलखाने मे रखा जा रहा था। एक ऐसे आदमी के सामने गिडगिडाना जिसके प्रति मन म कोई आदर भाव न हो, नेख्लूदोव के लिए बडा कठिन था, मगर वह क्या करता, अपना काम निकालने का यही एक तरीका था और वह उसे अपनाना पडा।

जब नेख्लूदोव बग्घी म बैठ कर मास्लेन्निकोव के घर पहुचा तो उसने

पाया कि बहुत सी गाडिया फाटक के सामने खडी हैं। उसे याद हो आया कि आज सहायक गवनर की पत्नी का दावत का दिन है जिस पर उसे भी आमन्त्रित किया गया था। जिस वक्त नेख्लूदोव की गाडी पहुची उसी वक्त दरवाजे के सामने एक गाडी खडी थी, और एक वावर्दी चोबदार, टापी म रिब्बन लगाये, एक महिला को घर की बाहरी सीढिया उतरवा रहा था। महिला ने अपने गाउन को हल्के से ऊपर उठा रखा था जिससे उसके नाजुक टखने, काले लम्बे मोजे और जूते नज़र आ रहे थे। गाडियो मे एक बन्दगाडी, लैण्डो, भी थी। नेख्लूदोव जानता था कि यह गाडी कोर्चागिन परिवार की है। गाडी पर उनका कोचवान बैठा था—सफेद बाल, लाल लाल गाल—उसने टोपी उतारी और सिर झुका कर बड़ अदब से, और साथ ही बडे मैत्रीपूर्ण ढग से अभिवादन किया, जैसे किसी सुपरिचित व्यक्ति का किया जाता है। नेख्लूदोव मास्लेनिकोव के बारे मे पूछने जा ही रहा था जब उसने देखा कि वह एक बहुत ही प्रतिष्ठित मेहमान के साथ साथ सीढिया उतरता हुआ चला आ रहा है। सीढियों पर कालीन बिछा था। मास्लेनिकोव उसे आधी सीढिया तक नही बल्कि नीचे तक छोडने जा रहा था। यह अति प्रतिष्ठित मेहमान कोई फौजी आदमी था, और फ्रासीसी भाषा मे किसी लॉटरी की चर्चा कर रहा था जिसके पैसे से शहर मे अनाथालय खोले जायेंगे। वह कह रहा था कि स्त्रियो के लिए लाटरियो के लिए काम करना बडा अच्छा है। "इससे उनका मनबहलाव होता है, और हमे पैसे मिलते हैं।"

"Qu elles s amusent et que le bon dieu les benisse * ओह, नेख्लूदोव! कहो कैसे हो? बहुत दिन हो गये, कभी नज़र नही आये?" नेख्लूदोव का अभिवादन करते हुए उसने कहा। Allez presenter vos devoirs a madame ** कोर्चागिन भी आये है, और नादीना बुक्सगेव्दन भी यही पर है। Toutes les jolies femmes de la ville *** प्रतिष्ठित मेहमान ने कहा और अपने बावर्दी कधे तनिक ऊपर को उठा दिये ताकि उसका नौकर

---

*इनका मनवहलाव हो और ईश्वर उन्हे आशीश दे (फ्रेंच)
**जाओ, गृह-स्वामिनी को अपना आदर प्रकट करो। (फ्रेंच)
***शहर की सभी सुदरिया, (फ्रेंच)

उसे फौजी बरानकोट पहना सके। नौकर ने भी बहुत बढ़िया वर्दी पहन रखी थी। "Au revoir, mon cher!"* और उसने मास्लेनिकोव का हाथ दबाया।

"आओ, अब चलो। मुझे बहुत खुशी है कि तुम आ गये," नख्लूदाव का हाथ अपने हाथ मे लेते हुए मास्लेनिकाव ने उत्तेजित स्वर मे कहा। मास्लेनिकाव मोटा था, फिर भी जल्दी जल्दी सीढ़िया चढने लगा।

मास्लेनिकोव खास तौर पर खुश था। इतने बडे आदमी ने उसके साथ बातें जो की थी। ऐसा सोचा जा सकता था कि स्वय जार की रेजिमेंट मे रह चुकने के बाद उसे राजपरिवार के लोगों से मिलने की आम आदत हो जानी चाहिए, लेकिन जान पडता है कि नीच की नीचता उसे पुचकारने से बढती ही जाती है और हर बार किसी बडे आदमी का ध्यान पा कर वह उसी तरह खुश होता जिस तरह कोई वफादार कुत्ता खुश होता है जब उसका मालिक उसे थपथपाये, सहलाये या उसके कान खुजलाये। वह अपनी दुम हिलाता है, कदमो म लोटता है, उछलता है, अपने कान दबा लेता है और ज़ोर ज़ोर से चक्कर लगाने लगता है। मास्लेनिकोव भी यही कुछ करने के लिए तत्पर था। नख्लूदाव का चेहरा गभीर हो रहा था, लेकिन मास्लेनिकोव ने नही देखा, न ही उसके शब्दो की ओर कोई ध्यान दिया, बल्कि उसे खीचता हुआ बैठक की ओर ले गया। पीछे पीछे चलते जाने के सिवाय नेख्लूदोव के सामने कोई चारा नही था।

"काम बाद म होता रहेगा। जो कहोगे कर दूगा," नाचने वाले हॉल मे से नेख्लूदोव को ले जाते हुए मास्लेनिकोव ने कहा। फिर बिना रुके अपने चोबदार से बोला, "अन्दर जा कर कहो कि प्रिंस नेख्लूदोव आये हैं।" चोबदार भागता हुआ उनके आगे निकल गया। "Vous n'avez qu'a ordonner"** पहले तुम्हे ज़रूर मेरी पत्नी से मिलना होगा। पिछली बार उसे बिना मिले चले गये तो उसने मेरी अच्छी गत बनाई।"

---

*अलविदा, मेरे प्रिय! (फ्रेंच)
**तुम्हे हुक्म भर देना होगा। (फ्रेंच)

उनकी बैठक तक पहुचने से पहले ही चोबदार ने अदर जा कर सूचना दे दी थी। सहायक गवनर की पत्नी आना इग्नात्येव्ना स्त्रिया से घिरी बैठी थी जिन्होंने बढिया बानेट लगा रखे थे। खिल कर मुस्कराते हुए उसने नेख्ल्दोव का स्वागत किया। बैठक के दूसरे सिरे पर कुछ स्त्रिया चाय की मेज़ के इदगिद बैठी थी। उनके नज़दीक ही कुछ फौजी और गैरफौजी आदमी खडे थे। स्त्रिया और पुरुष खब चहक चहक कर बातें कर रहे थे।

"Enfin! * हमने तो सोचा तुम हमे भूल ही गये हो! हमने क्या क्सूर किया है?"

इन शब्दो से आना इग्नात्येव्ना ने नवागन्तुक का स्वागत किया। वह दिखाना चाहती थी कि नेख्लूदोव के साथ उसकी गहरी घनिष्ठता है, हालाकि वास्तव मे उनमे कोई घनिष्ठता नही थी, न कभी रही था।

"तुम इन्हे जानते हो?—मदाम बेल्याव्स्काया, मि० चेर्नोव। ज़रा नज़दीक बैठो। मिस्सी, venez donc a notre table On vous apportera votre the ** और तुम," उसने एक अफसर से कहा जो मिस्सी के साथ बाते कर रहा था, जान पडता था जसे वह अफसर का नाम भूल गई हो, "इधर आ जाओ। चाय का प्याला बनाऊ प्रिस?"

"मैं तुम्हारे साथ बिल्कुल सहमत नही हू, बिल्कुल नही। सीधा सी बात है। वह उससे प्यार नही करती थी," किसी स्त्री की आवाज़ आ रही थी।

"पर उसे चाट मिठाइयो से तो प्यार था।"

"उफ! हमेशा ऐसे ही भाडे मज़ाक सूझते हैं," किसी दूसरी स्त्री ने हसते हुए कहा। स्त्री रेशमी कपडो, हीरे-सोने मे चमचमा रही थी।

"C'est excellent *** ये छोटी छोटी बिस्कुटें तो बहुत अच्छा हैं। कितनी हल्की हैं! मैं तो एक और लूगी।"

---

*अतत! (फ्रेंच)

**हमारी मेज पर आ जाओ। तुम्हारी चाय यहा आ जायेगी (फ्रेंच)

***लाजवाब, (फ्रेंच)

"क्या तुम जल्दी ही शहर से चली जाओगी?"

"हां, आज हमारा यहां आखिरी दिन है। इसी लिए हम आ गये हैं।"

"ठीक है। देहात मे तो बहुत अच्छा होगा। इस बार तो बसन्त कैसा खिल कर आया है!"

मिस्सी, टोप पहने और किसी गहरे रंग की चुस्त, धारीदार पोशाक पहने, बडी सुंदर लग रही थी। नेख्लूदोव को देखते ही वह शर्मा गई।

"ओह, मैंने तो सोचा था कि तुम चले गये हो," उसने नेख्लूदोव से कहा।

"बस जल्दी ही चला जाऊंगा। काम की वजह से शहर मे रुका हुआ हूं। यहां भी काम के ही कारण आया हूं।"

"Maman को मिलने नही आओगे क्या? वह तुम्हें मिल कर बहुत खुश होगी," उसने कहा। यह जानते हुए कि जो कुछ वह कह रही है, वह सच नही है, और नेख्लूदोव भी जानता है कि वह सच नही है, मिस्सी और भी शर्मा गयी।

"उमीद नही कि मुझे वक्त मिल सके," नेख्लूदोव ने गंभीरता से जवाब दिया यह दिखाने की कोशिश करते हुए कि उसने मिस्सी को शर्माते हुए नही देखा।

मिस्सी ने गुस्से से भौंह सिकोड़ी, कंधे बिचकाये और बांके अफसर की ओर घूम गई। अफ़सर ने मिस्सी के हाथ से खाली प्याला ले लिया, और बडे जवांमर्दों की तरह उसे उठाये हुए दूसरी मेज़ पर रखने के लिए चला गया। जाते हुए, जगह जगह उसकी तलवार कुर्सियों के साथ टकरा रही थी।

"तुम्हें ज़रूर अनाथालय के लिए दान देना चाहिए।"

"मैंने इन्कार तो नही किया। मैं तो केवल इतना चाहता हूं कि मैं यह दान लॉटरी के लिए तैयार रखूं। उस वक्त देने पर इसकी शान होगी।"

"अच्छा तो भूलना नही!" किसी ने कहा और उसके बाद हंसने की आवाज़ आई। हंसी प्रत्यक्षत बनावटी थी।

आन्ना इग्नात्येव्ना तो जैसे हवा में उड रही थी। उसकी पार्टी बेहद कामयाब रही थी।

मे से लोगो की आवाज़े आ रही थी। कोई स्त्री कह रही थी—"Jamais, jamais je ne croirais!!"* दूसरी ओर से किसी आदमी की आवाज़ आ रही थी, जो कोई वार्ता सुना रहा था जिसमे काउटेस वोरोन्त्सोवा और विक्तोर अप्राक्सिन का नाम बार बार आ रहा था। किसी तीसरी ओर से बातो की भनभनाहट और हसी की मिली-जुली आवाज़ें आ रही थी। मास्लेनिकोव एक कान से इन आवाजो को सुनने की कोशिश कर रहा था और दूसरे कान से नेख्लूदोव की बात को।

"मैं फिर उसी औरत के बारे मे तुमसे मिलने आया हू," नेख्लूदोव ने कहा।

"हा, हा, मैं जानता हू। वही न, जो बेकसूर है लेकिन उसे सज़ा दी गई है?"

"मैं चाहता हू कि उसे जेल के अस्पताल मे भेज दिया जाय। वहा पर वह कोई काम करे। मुझे मालूम हुआ है कि यह मुमकिन है।"

मास्लेनिकोव होठ भीच कर सोचने लगा।

"मुश्किल है," उसने कहा, "फिर भी मैं देखूगा, जो बन पडा कर दूगा। मैं कल तुम्हें इसका जवाब तार द्वारा भेज दूगा।"

"मुझे मालूम हुआ है कि वहा बीमारो की सख्या काफी ज्यादा है और सहायता की ज़रूरत है।"

"अच्छी बात है, अच्छी बात है। मैं ज़रूर तुम्हे इत्तला करूगा।"

"ज़रूर, बडी कृपा होगी," नेख्लूदोव ने कहा।

बडी बैठक मे से लोगो के हसने की आवाज आई। उनमे से कोई कोई स्वाभाविक हसी भी हस रहे थे।

"यह सब उस विक्तोर के कारण है। जब तरग मे हो तो किसी को सामने टिकने नही देता," मास्लेनिकोव बोला।

"दूसरी बात जो मैं तुमसे कहना चाहता था, वह यह थी," नेख्लूदोव कह रहा था, "जेल मे १३० आदमी महज़ इसलिए बन्द है कि उन्होंने अपने पासपोट नये नही बनवाये। एक महीने से ज्यादा अर्से से वे वहा पड़े हुए हैं।"

---

*कभी नही, कभी नही मान सकती! (फ्रेंच)

और उसने उनकी स्थिति का ब्योरा दिया।

"तुम्हे यह कैसे मालूम हुआ?" मास्लेनिकोव ने पूछा। उसके चेहरे पर असन्तोष और घबराहट नजर आने लगी।

"मैं एक कैदी को मिलने गया, और इन लोगो न बरामदे म मुझे घेर लिया और मुझसे पूछने लगे ..."

"तुम किस कैदी से मिलने गये थे?"

"एक किसान कैदी। वह भी निर्दोष है और उसे भी जेल म रखा हुआ है। इसका मुकद्दमा तो मैंने एक वकील को पैरवी करने क लिए दे दिया है। लेकिन सवाल यह नही है। मैं यह पूछना चाहता हू कि क्या यह मुमकिन है कि जिन लोगा ने कोई जुम न किया हो, उन्हे महज इसलिए जेल मे रखा जाय कि उन्होंने नये पासपोट बनवाने मे देर कर दी है? और ..."

"यह काम तो सरकारी वकील का है," गुस्से से बात काटते हुए मास्लेनिकोव ने कहा। "अब देख लिया तुमने! तुम कहते थे कि इस ढग से मुकद्दमे किये जाय तो फौरी फैसला होता है और इन्साफ से होता है। देख लिया नतीजा? यह फज़ सरकारी वकील का है कि जेलखाने मे जा कर जाच करे कि कैदियो को कानून के मुताबिक रखा जा रहा है या नहीं। लेकिन उन लोगो को ताश खेलने से फुसत मिले, तब न! वे तो यही कुछ करते हैं।"

"क्या मैं यह समझू कि तुम कुछ नही कर सकते?" नेख्लूदोव ने निराशा से कहा। उसे वकील के शब्द याद हो आये कि सहायक गवनर सरकारी वकील पर दोष मढेगा।

"नहीं, मैं कुछ न कुछ करूगा। मैं फौरन् इसकी जाच करूगा।"

"अपना ही बुरा करेगी। C'est un souffre-douleur"* बैठक मे से किसी स्त्री की आवाज़ आई। प्रत्यक्षत उसे इस बात की कोई परवाह नहीं थी कि वह क्या कहे जा रही है।

"और भी अच्छी बात है। मैं इसे भी ले लूगा," दूसरी ओर से एक आदमी की आवाज आई। फिर किसी स्त्री की चचल हसी की आवाज आई। ऐसा जान पडता था जैसे आदमी उससे कोई चीज़ छीनना चाहता हो और वह रोक रही हो।

---

*यह दुखिया, (फ्रेंच)

"नही नही, कभी नही," औरत कह रही थी।

"अच्छी बात है, मैं यह सब कर दूगा," मास्लेनिकोव ने कहा और अपनी सिगरेट बुझा दी जो उसने अपने गोरे चिट्टे हाथ मे पकड रखी थी, और जिसकी उगली मे फिरोज़े की अगूठी चमक रही थी। "और अब चलो, स्त्रिया इन्तज़ार कर रही होगी।"

"ज़रा ठहरो," बैठक के दरवाज़े पर रुकते हुए नेख्लूदोव ने कहा, "मुझे किसी ने बताया कि कल जेलखाने मे किसी कैदी को शारीरिक दण्ड दिया गया था। क्या यह ठीक है?"

मास्लेनिकोव का चेहरा लाल हो गया।

"ओ, वह! नही mon cher तुम्हे वहा जाने देना बहुत बडी भल है। तुम हर बात का पता लगाना चाहते हो। आओ, आओ, चले—आन्ना हमे बुला रही है," नेख्लूदोव को बाजू से पकडते हुए मास्लेनिकोव ने कहा। वह अब भी उसी तरह उत्तेजित हो उठा था जैसा कि प्रतिष्ठित मेहमान के साथ बाते करते वक्त हुआ था, केवल फर्क यह था कि यह उत्तेजना खुशी की नही थी, बल्कि घबराहट की थी।

नेख्लूदोव ने ज़ोर से बाजू खीच लिया, और बिना किसी से विदा लिये या कुछ कहे बैठक को लाघता हुआ नीचे हॉल मे चला गया। चोबदार लपक कर उसके पास आया, लेकिन नेख्लूदोव सीधा उसके पास से हो कर बाहर के दरवाज़े तक जा पहुचा। सारा वक्त उसका चेहरा गभीर बना हुआ था।

"इसे क्या हो गया है? तुमने उसे क्या कर दिया है?" आन्ना ने अपने पति से पूछा।

"यह तो बिल्कुल a la française* है," किसी ने टिप्पणी कसी।

"वाह, a la française नही, a la zoulou** है।"

"हा, वह सदा से ही ऐसा सनकी है।"

कोई उठ खडा हुआ, फिर उसकी जगह कोई दूसरा आ गया, और लोगो का चहकना उसी तरह जारी रहा। लोगो के लिए यही घटना

---

*फ्रासीसियो का अदाज़ (फ्रेंच)

**जुलुओ का अदाज (फ्रेंच)

वार्तालाप का विषय बन गई, और जितनी देर तक पार्टी चलती रही, इसी की चर्चा होती रही।

दूसरे रोज नेख्लूदोव को मास्लेनिकोव का खत मिला। खत मोटे, चमकीले कागज़ पर सुन्दर, दृढ लिखावट मे लिखा था। कागज़ के ऊपर राज चिन्ह छपा था और लिफाफे पर बाकाइदा मोहर लगी थी। उसमे लिखा था कि मैंने मास्लोवा के बारे मे अस्पताल के डाक्टर लिख दिया है, और आशा है तुम्हारी इच्छा के अनुसार कारवाई जायेगी। नीचे लिखा था बडे प्यार से, तुम्हारा पुराना साथी, दस्तखत बडे बडे, दृढ और कलापूर्ण अक्षरो मे, बडी शान के साथ कि गया था।

"गधा कही का!" बरबस नेख्लूदोव के मुह से निकल गया, विशेष "साथी" शब्द को पढ कर जिससे मास्लेनिकोव की उसके प्रति कृपालु का भास होता था। जो काम मास्लेनिकाव कर रहा था, वह नैतिक दृष्टि से घृणित और लज्जाजनक था। फिर भी वह समझे बैठा था कि बहुत बडा आदमी है। और नेख्लूदोव को यह दिखाना चाहता था कि देखो, इतना बडा आदमी होते हुए भी मैं तुम्हे साथी कह कर बुला रहा हू।

५६

यह मिथ्या विश्वास बहुत प्रचलित है कि हर मनुष्य मे कोई न कोई विशेष गुण होता है किसी मे दयालुता है, किसी मे निदयता, कोई बुद्धिमान है तो कोई बेवकूफ, कोई चुस्त है तो कोई सुस्त। लेकिन वास्तव मे लोग ऐसे नही होते। हम यह कह सकते है कि एक मनुष्य का व्यवहार अधिकतर दयालुता का होता है, निदयता का कम, वह अधिकतर सूझ बूझ से काम लेता है, बेवकूफिया कम करता है, अधिकतर चुस्त रहता है, सुस्त कम। या हम इसके उलट कह सकते है। लेकिन यह कहना गलत होगा कि एक आदमी दयालु या बुद्धिमान है और दूसरा बुरा या मूर्ख है। लेकिन फिर भी हम लोगो को हमेशा इसी तरह श्रेणियो म बाटते रहते हैं। और यह सवथा असत्य है। मनुष्य तो नदियो के समान होते है। सभी नदियो म एक सा ही जल बहता है। लेकिन प्रत्येक नदी का

पाट किसी जगह पर तग है, कही पर वह तेज बहने लगती है, कही पर सुस्त हो जाती है, कही अधिक चौडी, किसी जगह पर उसका पानी साफ है, तो किसी दूसरी जगह पर गदला, कही ठण्डा तो कही पर गरम। यही स्थिति मनुष्यो की भी है। प्रत्येक मनुष्य म मानव स्वभाव के सभी गुण बीजरूप म मौजद होते हैं। पर कभी एक गुण प्रकट होता है तो कभी दूसरा, कई बार उसका स्वभाव अपने सामान्य स्वभाव के प्रतिकूल हो उठता है, हालाकि मनुष्य वही रहता है। किसी किसी मनुष्य म यह स्वभाव-परिवतन चरम सीमा तक जा पहुचता है। नेख्लूदोव ऐसा ही मनुष्य था। उसमे ये परिवतन शारीरिक तथा मानसिक कारणो स हुआ करते थे। ऐसा ही एक परिवतन अब उसमे आया।

कात्यूशा के मुकद्दमे तथा उससे पहली बार मिलने के उपरान्त नेख्लूदोव को ऐसा भास हुआ था जैसे वह फिर से जी उठा है और उसका हृदय विजय और उल्लास से भर उठा था। लेकिन यह भावना अब बिल्कुल खत्म हो चुकी थी। आखिरी बार जब वह उससे मिल कर आया तो खुशी का स्थान भय और घृणा ने ले लिया था। वह अब भी इस निश्चय पर दृढ था कि वह उसे छोडेगा नही, और अगर वह मान गई तो उससे अवश्य विवाह करेगा, अपने इस फैसले को बदलेगा नही। लेकिन इस पर अमल करना उसे बडा कठिन लग रहा था, और इस कारण उसका मन दुःखी रहता।

मास्लेन्निकोव से मिलने के बाद, दूसरे दिन वह फिर उसे मिलने जेलखाने म गया।

इन्स्पेक्टर ने उसे मिलने की इजाजत तो दे दी लेकिन दफ्तर म नही, न ही वकील के कमरे मे बल्कि औरतो के मुलाकाती कमरे म।

इन्स्पेक्टर मेहरबान था लेकिन नेख्लूदोव के प्रति पहले से कुछ खिचा खिचा सा था। जो वार्तालाप नेख्लूदोव का मास्लेन्निकोव से हुआ था, उसके फलस्वरूप, जान पडता था कि इन्स्पेक्टर को अधिक सावधान रहने का हुक्म हुआ है।

"आप उसे मिल सकते है," इन्स्पेक्टर ने कहा, "लेकिन पैसे देने के बारे मे मैंने आपस जो कुछ कहा था, कृपया उस नही भूलिये। और उस अस्पताल म भेजने के बारे मे जनाब गवनर साहब ने मुझे लिखा है। यह काम हो जायेगा। डाक्टर मान जायेगा। लेकिन वह खुद वहा जाना

नही चाहती। वह कहती है 'और नही तो मैं उन गले-सडे भिखमगों को खाना खिलाऊ। मैं नही जाऊगी।' प्रिंस, आप इन लोगो को नही जानते।"

नेख्लूदोव ने कोई जवाब नही दिया, केवल उससे मिलने का प्रबन्ध करने के लिए कहा। इन्सपेक्टर ने एक वार्डर को भेजा, और नख्लूदोव उसके पीछे पीछे स्त्रिया के मुलाकाती कमरे मे दाखिल हुआ। वहा केवल मास्लोवा, अकेली बैठी इन्तजार कर रही थी। चुपचाप, सहमी हुई सी, वह जाली के पीछे से आई और उसके ऐन पास आ कर खडी हो गई। फिर, बिना उसकी ओर देखे कहने लगी—

"मुझे क्षमा करना, दमीत्री इवानोविच, परसो मैं बहुत अण्ट-सण्ट बोलती रही।"

"मैं क्या क्षमा कर सकता हू, मैं तो " नेख्लूदोव ने कहना शुरू किया।

"पर जो भी हो, तुम मुझे छोड दो," उसने बात काटते हुए कहा और अपनी ऐंची आखो से नेख्लूदोव की ओर देखा। नेख्लूदोव को लगा जैसे उनमे फिर वही पहले सा खिचाव और क्रोध झलक रहा है।

"क्यो छोड क्यो दू?"

"तुम्हे छोडना होगा।"

"परन्तु क्यो?"

मास्लोवा ने फिर नेख्लूदोव की ओर देखा। नेख्लदोव को उसकी नज़र मे फिर उसी क्रोध का भास हुआ।

"बस यही बात है," उसने कहा, "तुम्ह जरूर छोडना होगा। मैं जो कुछ कह रही हू बिल्कुल ठीक है। मैं यह नही कर सकती। तुम यह सब छोड दो।" उसके होठ कापने लगे और वह क्षण भर के लिए चुप हो गई। "मैं ठीक कहती हू। मैं मर जाऊगी लेकिन यह नही करूगी।"

मास्लावा के इन्कार करने मे नेख्लूदोव को घृणा और क्रोध का भान हुआ। वह उसे क्षमा नही करना चाहती जान पडती थी। लेकिन इसके साथ ही और भी कुछ था, कोई अच्छी और महत्वपूर्ण बात भी थी। पहले भी उसने इन्कार किया था। आज वह उसी इन्कार को दोहरा रही थी, लेकिन बडी स्थिरता के साथ। इससे नख्लूदोव के हृदय मे जितनी भी शकाए उठ रही थी, सब शात हो गईं, और फिर से उसमे उस

गभीर विजय भावना का सचार होने लगा जो कात्यशा के सम्बध म पहले उसके हृदय मे उठी थी।

"कात्यूशा, मैंने जो कुछ तुम्ह कहा था, अब फिर कहूगा," उसने बडी गभीरता से कहा, "मुझसे शादी कर लो। अगर तुम नही चाहती हो, तो मैं उस वक्त तक तुम्हारा साथ नही छोड़ूगा, जहा जाओगी, वही तुम्हारे पीछे पीछे जाऊगा जब तक कि तुम अपना इरादा बदल नही लेती हो।"

"यह तुम्हारा काम है। मैं और कुछ नही कहूगी," मास्लोवा ने जवाब दिया और उसके होंठ फिर कापने लगे।

नेख्लदोव भी चुप हो गया, उसके भी कहे कुछ नही कहा गया। जब उसका मन कुछ स्थिर हुआ तो बोला—

"अब मैं देहात म जाऊगा और उसके बाद पीटसबग मे। मैं पूरी पूरी कोशिश करूगा कि तुम्हारे मुकद्दमे पर   मेरा मतलब है हमारे मुकद्दम पर फिर विचार हो और भगवान् ने चाहा तो सजा मसूख हो जायेगी।"

"अगर मसूख नही हुई, तो तुम चिन्ता नही करना। मुझे अपने किये का फल मिल रहा है। इस वारदात मे न सही, और कई बाता म," मास्लोवा ने कहा। नेख्लूदोव ने देखा कि मास्लोवा के लिए अपने आसू रोकना बेहद कठिन हो रहा है। "क्या मेशोव से मिले थे?" अपने आसू छिपाने की चेष्टा करते हुए उसने झट स कहा, "वे निर्दोष है, क्यो, ठीक है न?"

"हा, मेरे ख्याल मे वे निर्दोष हैं।"

"वह बुढिया कितनी अच्छी है!"

जो जो बात नेख्लूदोव को मेशाव के बारे मे पता चली थी, उसने वह सुनाई और फिर पूछा कि उसे किसी चीज की जरूरत तो नही। मास्लावा ने सिर हिला दिया।

दोना फिर चुप हो गय।

"और, अस्पताल के बारे म,' अपनी ऐंची आखा से नेख्लूदोव की आर देखते हुए सहसा मास्लोवा बोली, "अगर तुम चाहते हो तो मैं वहा चली जाऊगी। और अब से शराब भी नही पियूगी।"

नेख्लूदोव ने उसकी आखो की ओर देखा। वे मुस्करा रही थी।

"वडी अच्छी वात है," यही शब्द वह कह पाया, और फिर विग ले कर वहा से चला आया।

"हा, हा, वह सचमुच वदल गई है," नेख्लूदोव सोच रहा था। उसका मन पहले सशयो से घिरा रहता था। लेकिन जो भावना अब उसके मन मे उठ रही थी, उसका अनुभव उसे पहले कभी नही हुआ था—उसे विश्वास हो रहा था कि प्रेम सचमुच अजेय है।

इस भेंट के बाद मास्लोवा अपनी वदबूदार कोठरी म लौट गई। उसने अपना लवादा उतारा और दोनो हाथ अपनी गोद मे रखे तख्ते पर बैठ गई। उस वक्त कोठरी मे केवल तपेदिक की बीमार स्त्री, जो व्लादीमिर से आई थी, उसका बच्चा मेंशाव की बुढिया मा, तथा चौकीदारिन और उसके बच्चे ही थे। पादरी की वेंटी को परसा यहा से अस्पताल मे ले गये थे। डाक्टरो ने कहा था कि उसका दिमाग खराब हो गया है। वाकी औरते कपडे धोने के लिए गई हुई थी। बुढिया सो रही थी, कोठरी का दरवाज़ा खुला था और चौकीदारिन के बच्चे बाहर बरामदे मे खेल रहे थे। दोनो स्त्रिया—व्लादीमिर वाली स्त्री, अपने बच्चे को उठाये हुए, और चौकीदारिन दोनो मास्लोवा के पास आ गयी। चौकीदारिन ने हाथ मे मोज़ा उठा रखा था जो वह अपनी चपल उगलियो से वुनती जा रही थी।

"बात कर आई हो?" उन्होंने पूछा।

मास्लोवा चुपचाप ऊचे तख्ते पर वैठी रही, और टागें झुलाती रही। तख्ता इतना ऊचा था कि उसके पैर ज़मीन पर नही लगते थे।

"रोने बिसूरने से क्या होगा?" चौकीदारिन बोली, "सबसे ज़रूरी यह बात है कि मन पक्का रखो। ए कात्यूशा, क्यो दुखी होती है?" अपनी उगलिया तेज तेज़ चलाते हुए वह बोली।

मास्लोवा ने कोई जवाब नही दिया।

"हमारी कोठरी की सब औरते कपडे धोने गयी हैं,' व्लादीमिर वाली स्त्री बोली, "कह रही थी कि आज बहुत खैरात आई है। बहुत सी चीजें आयी हैं।"

"फिनाश्का!" चौकीदारिन ने पुकार कर कहा, "कहा गया कलमुहा?"

उसने एक सिलाई ले कर ऊन के गोले और मोजे दोना मे खुभोई और बाहर बरामदे म चली गई।

इसी वक्त बरामदे मे औरतो के बाते करने की आवाजे आने लगी और स्त्रिया अपनी काठरी मे दाखिल हुई। सभी ने पावो मे जेलखाने के जूते पहन रखे थे, लेकिन मोजे नही पहने हुए थे। हरेक के हाथ मे पावरोटी थी। किसी किसी के हाथ मे दो भी थी। फेदोस्या सीधी मास्लोवा के पास आ गई।

"क्या है? क्या कोई बुरी बात हुई है?" अपनी स्वच्छ नीली आखो से, बडी स्नेहभरी दृष्टि से मास्लोवा की ओर देखते हुए उसने पूछा। "ये हमारी चाय के लिए है," और उसने पावरोटिया ऊपर तख्ते पर रख दी।

"क्या, वह शादी करने को कहता था, उसने अपना मन तो नही बदल लिया?" कोराब्ल्योवा ने पूछा।

"नही, उसने तो नही बदला, मगर मैं नही चाहती," मास्लोवा बोली, "और मैंने उसे वह भी दिया है।"

"है ना बेवकूफ," कोराब्ल्योवा अपनी गहरी आवाज मे बडबडाई।

"अगर एकसाथ रहना नही हो तो शादी करने का क्या फायदा है?" फेदोस्या बोली।

"तुम्हारा पति तो तुम्हारे साथ जा रहा है न?" चौकीदारिन ने कहा।

"हमारी बात दूसरी है, हमारी तो पहले से शादी हो चुकी थी," फेदोस्या बोली, "अगर उसे इसके साथ रहना नही है, तो शादी की रस्म करने का क्या लाभ?"

"वाह, क्या लाभ? पागलो की सी बाते मत करो। तुम तो जानती हो, अगर उसने शादी कर ली तो यह धन से खेलेगी," कोराब्ल्योवा बोली।

"वह कहता है 'ये लोग जहा कही भी तुम्हे ले गये, मैं तुम्हारे पीछे पीछे आऊगा,'" मास्लोवा ने कहा, "अगर उसने ऐसा किया तो

भी ग्रच्छा है, जो नही किया, तो भी ग्रच्छा है। मैं उसे कहूगी नहीं। ग्रब वह पीटसबग मे जा कर इस मामले के बारे मे कोशिश करेगा। वहां के सब मन्त्री उसके रिश्तेदार हैं। पर फिर भी, मुझे उसकी कोई जरूरत नही है," वह कहती गई।

"ठीक है," कोरान्त्रयावा ने सहसा सहमति प्रकट की। जाहिर है उसका ध्यान किसी दूसरी तरफ था। वह अपने बैग मे रखी चीजो की जाच पडताल कर रही थी। "ता कहो, एक एक घूट हो जाय?"

"तुम पियो, मैं नही पियूगी," मास्लोवा ने जवाब दिया।

पहला भाग समाप्त

१

लगभग दो हफ्ते के बाद मास्लोवा का मुकद्दमा सेनेट के सामने पेश होगा, ऐसी सभावना थी। नेख्लूदोव को उस समय पीटसबग मे मौजद होना था। और अगर सेनेट न अपील रद्द कर दी तो जार के सामने दरख्वास्त करनी होगी जैसा कि वकील ने कहा था। उसी ने दरख्वास्त भी तैयार की थी। वकील का कहना था कि यह दरख्वास्त देने के लिए तयार रहना चाहिए, क्योकि अपील के तक बहुत कमजोर हैं। कैदियो के जिस दल के साथ मास्लोवा को साइबेरिया भेजा जायेगा वह शायद जून महीने के शुरू म चल दे और चूकि नेख्लूदोव ने उसके पीछे पीछे साइबेरिया जाने का पक्का निश्चय कर लिया था, उस सूरत म यह जरूरी था कि वह अब अपनी जमीन-जायदाद पर जाय, और वहा पर आवश्यक बातो का निबटारा करे।

सबसे पहले नेख्लूदोव अपनी पास ही की काली मिट्टी वाली जागीर कुज्मिस्कोये गया। अपनी आमदनी का अधिकाश भाग उसे इसी जागीर से प्राप्त होता था। अपने बचपन और जवानी के दिनो मे नेख्लूदोव कई बार वहा गया था। उसके बाद भी दो बार जा चुका था। एक बार तो मा के कहने पर वह एक जमन कारिंदे को साथ ले कर गया था और वहा का हिसाब किताब किया था। इसलिए वहा की स्थिति से भली भाति परिचित था, तथा साथ ही किसानो के प्रबन्धक के साथ (अथात मालिक के साथ) सम्बन्धो को भी अच्छी तरह जानता था। मालिक किसान सम्बन्धो की व्याख्या यदि शिष्ट रूप मे करें तो हम कहेगे कि किसान मालिक पर पूणतया आश्रित थे, और यदि अशिष्ट रूप म करें तो कहेगे कि वे इस प्रबन्ध के गुलाम थ। यह वह जिन्दा गुलामी नही थी जिसे १८६१

मे खत्म कर दिया गया था। इसमे, समूचे तौर पर, सभी किसान जिनके पास या तो जमीन थी ही नही या बहुत कम थी सभी बडे बडे ज़मींदारों के गुलाम थे, या व्यक्तिगत तौर पर उन बडे बडे ज़मीदारो के गुलाम थे, जिनके बीच वे रहते थे। नेख्लूदोव इसे जानता था, यह जाने बिना वह रह भी नही सकता था, क्योकि उसकी ज़मीन-जायदाद का प्रबध ऐसी ही गुलामी पर निभर था। वह स्वय इस प्रबध को बनाये हुए था। इतना ही नही, वह यह भी जानता था कि यह प्रबध प्रणाली निर्दयी और अन्यायपूण है। यह वह उस समय से जानता था जब वह विश्वविद्यालय का छात्र था और हैनरी जाज के सिद्धान्तो को मान कर उनका प्रचार किया करता था। उन्ही सिद्धान्तो के आधार पर उसने अपनी वह ज़मीन किसानो मे बाट दी थी जो उसे अपने पिता की ओर से विरासत म मिली थी क्योकि वह भू स्वामित्व को आजकल वैसा ही पाप समझता था, जैसा कि पचास साल पहले भू-दासो पर स्वामित्व था। हा, यह ज़रूर सच है कि फौज मे नौकरी करने के बाद, जहा उसे एक साल में बीस हज़ार रूबल खच कर देने की आदत पड गई थी, वह अपने को उन पहले सिद्धान्तो से बाध्य नही समझता था, वे उसे भूल तक गये थे। और उसने न केवल यह पूछना छोड दिया था कि जो रुपया उसे मा भेजती है, वह कहा से आता है, बल्कि इस बारे मे सोचना तक छोड दिया था। पर मा की मत्यु हो जाने से, तथा अपनी विरासत की ज़मीन-जायदाद पर अधिकार ग्रहण करने और उसका प्रबध हाथ म लेने की आवश्यकता उठने पर यह सवाल उसके सामने फिर उठ खडा हुआ था कि भूमि के निजी स्वामित्व के प्रति उसकी स्थिति क्या है। महीना भर पहले यदि नेख्लूदोव से पूछा जाता तो वह जवाब देता कि मौजूदा व्यवस्था को बदलना उसके बस की बात नही, वह स्वय अपनी ज़मीन-जायदाद का प्रबध नहीं कर रहा है। और वह खुद ज़मीन-जायदाद से दूर रह कर, ज़रूरत के रुपये वहा से मगवाता रहता और इस तरह उसका ज़मीर साफ बना रहता। परन्तु अब बावजूद इसके कि नेख्लूदोव को निकट भविष्य म साइबेरिया जाना था, जहा जेलो की दुनिया के साथ कठिन और पचीदा सबधो से उसका वास्ता पडेगा और जहा पैसा की ज़रूरत होगी उसने निश्चय कर लिया था कि वह मौजूदा व्यवस्था को या नही छोड सकता बल्कि उस नुकसान उठा कर भी इसको बदलना होगा। इसके लिए उसने निश्चय

किया कि वह ज़मीन की खुद काश्त तो नही करवायेगा बल्कि उसे मामली लगान पर किसानो को दे देगा और इस तरह उन्हे ज़मीदार पर निर्भर हुए बिना जमीन की काश्त करते रहने का अवसर देगा। कई बार ज़मीदारा की स्थिति की तुलना भू-दासो के स्वामियो से करते हुए नेख्लूदोव ने यह सोचा था कि उनके द्वारा किसानो को ज़मीन लगान पर दे देना वैसा ही है जैसा कि किसी ज़माने मे भू-दासो के स्वामियो द्वारा अपने दासो से बेगार पर काम लेने की जगह उन्हे उन्मोचन भाटक पर खेती करने देना था। इससे समस्या का समाधान तो नही हो जाता, लेकिन उसे हम समाधान की ओर एक कदम ज़रूर कह सकते हैं। यह गुलामी की बबरता को कम करने मे सहायक है। और इसी के अनुसार अब वह आचरण भी करना चाहता था।

नेख्लूदोव लगभग दोपहर के समय कुज़िमस्कोये पहुचा। वह अपने जीवन को हर तरह से सादा बनाने की कोशिश कर रहा था, इसलिए उसने पहले तार नही दी और स्टेशन से भी दो घोडो वाले एक छकडे मे बैठ कर चला। गाडीबान—नौजवान छोकरा मोटे सूती कपडे का कोट पहने था, जिसे उसने लम्बी सी कमर के नीचे पेटी से कस रखा था। गाडीबान को साहब के साथ बाते करने मे मज़ा आ रहा था, विशेषकर इसलिए भी कि इस तरह उसका लगडा सफेद मरियल बिचला घोडा और बगल वाला दुबला-पतला थका-हारा घोडा—दोनो धीमी चाल से चल सकते थे, और उन्हे इसी चाल से चलना पसन्द भी था।

गाडीबान कुज़िमस्कोये जागीर के कारिन्दे के बारे मे बाते करने लगा। उसे मालूम नही था कि जागीर का मालिक उसके छकडे मे बैठा है। नख्लूदोव न जान बूझ कर उसे अपने बारे मे नही बताया था।

गाडीवान अपनी सीट पर तिरछा हो कर बैठ गया, अपनी लम्बी चाबुक पर ऊपर से नीचे तक हाथ फेरा और अपनी योग्यता दिखान की कोशिश करते हुए (वह शहर हो आया था और कुछेक उपन्यास पढ चुका था) बोला—।

"वह जमन बडा दिखावटी आदमी है! कही से तीन जवान, मुश्की घोडे ले आया है। जब वह अपनी औरत को बग़ल मे बैठाल कर सवारी का निकलता है, तो बाप रे, देखते बनता है! बडे दिन पर उसने ज़मीदार की कोठी मे क्रिसमस का पेड खडा किया। मैं कुछ मेहमाना को गाडी

ं बिठला कर वहा ले गया था। पेड में बिजली के कुमकुमे चमक रहे थे। सारे इलाके मे आपको ऐसी सजावट कहीं देखने को नहीं मिलेगी। मालिक के रुपये मार मार के उसने बहुत सा धन बटोर लिया है। और बटोरे भी क्यो नही? उसे रोकने वाला तो कोई है ही नहीं। सुनते हैं उसने एक बहुत बढिया जागीर मोल ले ली है।

नेख्लूदोव समझता था कि उसे इस बात की कोई परवाह नहीं कि कारिन्दा उसकी जमीन-जायदाद का कैसा प्रबन्ध करता है, और उसमें से अपने लिए क्या क्या लाभ निकालता है। फिर भी जो बातें इस लम्बी कमर वाले लडके ने कही, उसे अप्रिय लगी।

दिन बडा सुहावना था, उसे बहुत प्यारा लग रहा था। किसी किसी वक्त गहरे, अंधियारे बादलो की टुकडिया सूरज को ढक लेतीं। खेतों में किसान, चारो ओर ताजा जई की गुडाई कर रहे थे। मैदानों पर हरियावल बिछी थी और उनके ऊपर लार्क पक्षी पख फैलाये उड रहे थे। बलूत के कुछेक पेडो को छोड कर सभी पेड नये पत्तो की ओढनी ओढे हुए थे। चरागाहो मे जगह जगह ढोर और घोडे चर रहे थे। दूर दूर तक खेतो मे जोताई हो चुकी थी। समूचा दृश्य बहुत सुन्दर था, फिर भी किसी किसी वक्त उसे ऐसा भास होता जैसे कहीं कोई अप्रिय बात हुई है। जब वह मन ही मन पूछता कि यह अप्रिय बात क्या हो सकती है तो उसे गाडीबान की वार्ता याद हो आती, जो उसने कुज्मिस्कोये की जमीन के बारे मे की थी कि जमन उसका कैसे प्रबंध कर रहा है।

लेकिन जब वह अपने ठिकाने पर पहुच गया और काम मे जुट गया तो यह अप्रिय भावना जाती रही।

नेख्लूदोव ने हिसाब देखा। कारिन्दे से बाते की। कारिन्दे ने बडी सरलता से उसे समझाना शुरू किया कि किसानो के पास अपनी जमीन बहुत कम है, जो है भी तो वह जमीदार की जमीनों के बीच में है। इससे जमीदार को बहुत फायदा है। इन बातो से नेख्लूदोव का निश्चय और भी पक्का हो गया कि वह खेतीबारी छोड देगा और जमीन किसानों को लगान पर दे देगा।

दफ्तर मे रखे बही-खाते और कारिन्दे की बातो से नेख्लूदोव को पता चला कि सबसे अच्छी जमीन के दो तिहाई भाग पर बढिया औजारों द्वारा मजदूरो से काश्त करवाई जाती है, और मजदूरो को निश्चित पगार

दी जाती है। बाकी एक तिहाई जमीन की जोताई किसान करते हैं और उन्हें पाच रूबल फी देस्यातीना के हिसाब से पैसे मिलते है। इसका मतलब यह है कि किसान प्रत्येक देस्यातीना पर तीन बार हल चलाते है, तीन बार उस पर हेगी करते हैं, अनाज बाते और काटते हैं, उसके गट्ठर बना कर अनाज साफ करने वाले स्थान तक पहुचाते हैं, और इस सब काम के लिए उन्हें पाच रूबल मिलते है। यही काम अगर मजदूरो द्वारा पगार दे कर करवाया जाय तो इसके लिए कम से कम दस रूबल देने पडेंगे। किसान जो कुछ भी जमींदारी मे से उठाते हैं उसके लिए उन्हें श्रम के रूप मे बहुत अधिक मूल्य चुकाना पडता है। अपने ढोर चराने का, लकडी का, आलुओ के डठल-पत्तो का—इन सब चीजो का मूल्य उन्हें कडे श्रम द्वारा चुकाना पडता है। इस तरह अगर हिसाब लगा कर देखा जाय तो काश्त शुदा जमीनो से परे जो जमीनें किसानो को लगान पर दी गई है, अगर उनके मूल्य की रकम पाच प्रतिशत ब्याज पर लगायी जाय तो जो आमदनी उससे होगी, उससे चार गुना ज्यादा आमदनी जमींदार किसानो से वसूल कर लेता है।

नेख्लूदोव यह सब पहले से जानता था, लेकिन ये बाते अब उसे एक नयी रोशनी मे नजर आने लगी थी। वह इस बात पर हैरान हो रहा था कि उसे और उस जैसे अन्य जमींदारो को इस स्थिति की अस्वाभाविकता का बोध क्यो नही होता। कारिन्दे का यह तर्क था कि अगर जमीनें लगान पर चढा दी गईं तो खेतीबारी के औजारो से कुछ भी प्राप्त नही होगा, उनकी कीमत का एक चौथाई भी वसूल नही होगा, किसान जमीन खराब कर देंगे और नेख्लूदोव का बडा नुकसान होगा। ये तर्क सुन कर नेख्लूदोव का विश्वास और भी दृढ हो रहा था कि जमीन किसानो को लगान पर दे कर और इस तरह अपनी आय के बहुत बडे भाग से वचित रह कर वह बहुत ही शुभ काम कर रहा है। उसने निश्चय कर लिया कि इस बात का निबटारा अभी वह अपनी मौजूदगी म कर के जायगा। बाकी काम—अनाज की कटाई, बिक्री, खेतीबारी के औजारो का बेचना, अनुपयोगी मकानो का बेचना इत्यादि—वक्त आने पर कारिन्दा खुद करता रहेगा। परन्तु इस समय उसने कारिन्दे को उन तीन गावो के किसानो की मीटिंग बुलाने को कहा जो कुज्मिन्स्कोये जमींदारी

से घिरे थे। इस मीटिंग मे वह अपना इरादा साफ कर देना चाहता था
और लगान की शर्तो का फैसला कर देना चाहता था।

जब नेख्लूदोव दफ्तर मे से निकल कर बाहर आया तो वह मन ही
मन खुश था। कारिन्दे के तर्कों के सामने वह दृढ रहा था और स्वयं
नुक्सान उठाने के लिए तत्पर था। अपने अगले काम के बारे म सोचता
हुए वह घर के आस पास टहलने लगा। फूलो की क्यारिया उपेक्षित पड़ी
थी—अब की फल कारिंदे के घर के सामने लगाये गये थे। टेनिस
मैदान मे चिकोरी उग आई थी। इनके पास से टहलते हुए वह उस रा
पर जाने लगा जिसके दोना ओर लाइम वृक्ष लगे थे। किसी जमाने में
वह यहा पर सिगार पीने आया करता था। किरिमोवा ए
चुहले किया करता था। किरिमोवा एक बडी सुदर युवती थी जो उसकी
मा से मिलने आया करती थी। मन ही मन उसने सक्षेप रूप म अपना
भाषण तैयार कर लिया जो वह दूसरे रोज किसानो के सामने देना चाहता
था। इसके बाद वह कारिन्दे के पास गया और चाय पीते समय उसके
साथ एक बार फिर इस बात पर विचार विमश किया कि कैसे जमीन
जायदाद किसानो का दी जाय और इस ओर से बिल्कुल शात हो कर
अपने कमरे मे आराम करने के लिए चला गया। यह कमरा बडा बोस
मे उसके लिए तैयार किया गया था। पहले इस कमरे का एक फाल
सोने वाले कमरे के रूप मे इस्तेमाल किया जाता था।

कमरा छोटा सा और साफ-सुथरा था। दीवारो पर वेनिस नगर के
चित्र टगे थे। दो खिडकियो के बीच, दीवार पर आईना लटक रहा था।
बिस्तर बडा साफ था और उस पर कमानीदार गद्दा बिछा था। पलग
के पास ही एक छोटी सी मेज पर पानी की सुराही, दियासलाई और
मोमबत्ती बुझाने वाला उपकरण रखा था। आईने के नीचे एक मेज पर
उसका बक्स खुला पडा था। उसमे उसका साबुन-तेल का डिब्बा और कुछ
किताबें रखी थी। किताबो म से एक किताब रूसी भाषा म थी 'जाल
फौजदारी की जाच'। इसके अलावा एक किताब जर्मन भाषा म और
एक अग्रेजी मे थी। इन किताबो का भी विषय यही था। इन्हें यह दौरे
म सफर करते वक्त पढ़ने के लिए ले आया था। लेकिन आज पढ़ना सम्भव
नहीं था, बहुत देर हो गई थी। इसलिए वह सोने की तैयारी करने लगा
ताकि सुबह जल्दी उठ कर किसानो से भेंट करने के लिए तैयार हो सके।

कमरे के एक कोने मे एक आराम-कुर्सी रखी थी। पुराने ढग की, महागोनी की बनी कुर्सी थी, जिस पर पच्चीकारी का काम किया हुआ था। नेख्लूदोव को याद आ गया कि यही कुर्सी मा के सोने वाले कमरे मे रखी रहती थी। यह याद आने की देर थी कि उसके हृदय मे एक ऐसी भावना जाग उठी जिसकी उसे तनिक भी आशा न थी। वह सोचने लगा कि यह घर खण्डहर बन जायेगा, बाग मे झाड-झखाड उगने लगेंगे, जगल काट डाला जायेगा ये सब चौपाल, अस्तबल छप्पर, यन्त्र, घोडे, गौएं उपेक्षित पडे रह जायेंगे जिन्हे जुटाने मे और जिनकी सार-सभाल करने मे इतनी मेहनत करनी पडी थी – भले ही यह मेहनत नेख्लूदोव को नही करनी पडी हो। उसका हृदय अनुताप से भर उठा। इन सब चीजों का छोड देना पहले आसान लगता था, लेकिन अब मुश्किल हो रहा था। न केवल इन्हें त्यागना ही, बल्कि जमीन का लगान पर चढा देना भी, क्योकि उससे आमदनी आधी रह जायेगी। सहसा एक दूसरे तर्क ने इस भावना की पुष्टि की। किसानो को जमीन देने से उसकी सारी जागीर नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगी, ऐसा करना सर्वथा अनुचित होगा।

"जमीन का स्वामी बन कर मुझे नही रहना चाहिए। लेकिन अगर यह स्वामित्व न रहा तो इस सारी जायदाद को भी मैं सभाल नही सकता। इसके अलावा साइबेरिया जाना है, मुझे न घर की जरूरत होगी न जमीन की," उसके अन्दर एक आवाज उठती। पर जवाब मे दूसरी आवाज कहती – "यह सब ठीक है, लेकिन साइबेरिया मे तुम सारी जिन्दगी तो नही बैठे रहोगे। सभव है तुम शादी करो तुम्हारे बच्चे हो, तुम्हारा फर्ज हो जाता है कि यह जायदाद उतनी ही अच्छी हालत मे तुम उनके सुपुर्द करो जितनी अच्छी हालत मे तुम्हें स्वय प्राप्त हुई थी। जमीन के प्रति भी तुम्हारा वैसा ही कर्तव्य है। इसे छोड देना, हर चीज को नष्ट-भ्रष्ट कर देना आसान है, लेकिन फिर बनाना बहुत मुश्किल होगा। सबसे जरूरी बात यह है कि तुम अपने भविष्य के बारे मे सोचो, कि तुम क्या करोगे, और उसी के अनुसार जमीन-जायदाद का निबटारा करो। फिर यह तो बताओ क्या तुम यह त्याग सचमुच अपनी अन्तरात्मा के आदेश का पालन करते हुए कर रहे हो या महज दिखावा करने के लिए?" नेख्लूदोव ने मन ही मन अपने से ये सब सवाल किये। उसे स्वीकार करना पडा कि उस पर इस विचार का जरूर असर हुआ था कि लोग उसके

बारे मे क्या कहेगे। जितना अधिक वह इन प्रश्नो के बारे म सोचता, उतनी ही अधिक सख्या म प्रश्न उसके मन मे उठते, और उनने ही अधिक वे असाध्य जान पडते।

वह अपने साफ-सुथर बिस्तर पर लेट गया और मान की कोशिश करने लगा। सो जाऊगा ता ये विचार परशान नही करेंगे। सुबह क वक्त दिमाग साफ होता है, उस वक्त इन समस्याओ को सुलझाऊगा। लेकिन फिर भी उसे बडी देर तक नीद नही आयी। कमरे म ताजा हवा के झाके आ रहे थे और चाद की चादनी छन छन कर आ रही थी। बाहर मेढक टरा रहे थे। उनकी आवाज दा बुलबुला की आवाज से मिल कर सुनाई पड रही थी, एक बुलबुल बाग मे और दूसरी खिडकी के पास लिलक की फूलो से लदी झाडी मे बैठी गा रही थी। बुलबुला और मेढकों की आवाजो को सुनते हुए नेख्लदाव को सहसा इन्स्पेक्टर की बेटी का सगीत याद हा आया और फिर स्वय इस्पेक्टर भी। उससे उसे मास्लावा की याद आयी। मास्लोवा ने जब कहा था—"तुम्ह यह सब बिल्कुल छोड देना होगा," तो उसके होठ किस तरह काप रहे थे बिल्कुल उसी तरह जिस तरह ये मेढक हर्रा रहे हैं। फिर जमन कारिदा मढको क पास जाने लगा। उसे ज़बरदस्ती पीछे हटाया गया। लेकिन वह नही रुका, बल्कि मास्लोवा मे बदल गया और मास्लोवा धिक्कारने लगा—"तुम प्रिंस हो, मैं मुजरिम हू।" "नही, मैं हार कभी नही मानूगा," नेख्लूदाव ने सोचा, फिर जाग कर अपने से पूछा—"मैं जो कुछ कर रहा हू क्या यह ठीक है या गलत? मैं नही जानता। और मुझे इसकी कोई परवाह नही है। कोई फर्क नही पडता। मुझे सो जाना चाहिए।" और जिस ओर उसने कारिदे और मास्लोवा को नीचे उतरते देखा था, उसी ओर वह स्वय भी उतरने लगा। वही पर यह सब खत्म हो गया।

२

दूसर दिन सुबह नौ बजे नख्लूदाव की नीद टूटी। उसकी टहल-सेवा का काम एक युवक कर रहा था जो दफ्तर मे क्लर्क था। ज्यो ही उसन देखा कि मालिक बिस्तर पर हिल-डुल रहे हैं, तो वह उनके बूट ल आया।

बूट ऐसे चमक रहे थे जैसे पहले कभी नही चमके थे। साथ ही मुह हाथ धोने के लिए चश्मे का स्वच्छ ठण्डा जल भी लाया। और मालिक से कहा कि किसान अभी से जमा होने लगे हैं। नेख्लूदोव उठ कर खडा हो गया और स्थिरता से सोचने लगा। जो अनुताप उसे कल यह सोच कर होने लगा था कि अपनी जमीन-जायदाद दे कर वह उसे नष्ट-भ्रष्ट कर रहा है उसका लेशमात्र भी इस समय नही था। इस अनुताप को याद कर के वह हैरान हुआ। इस समय जो काम उसके सामने था उसके बारे मे सोचते हुए उसके हृदय मे उल्लास था, और अनजाने मे ही उसे गर्व का भास होने लगा था।

खिडकी मे से उसे टेनिस खेलने का मैदान नजर आ रहा था जिस पर चिकरी उग रही थी। वही पर किसान इकट्ठे हो रहे थे। पिछली रात जो मेढक टर्राते रहे थे तो किसी कारण ही। आज दिन साफ नही था, बादल छाये थे। हवा बन्द थी। सुबह सवेरे ही हल्की हल्की, स्निग्ध सी बूदाबादी होने लगी थी, और बारिश की बूदें पेडो की शाखा और पत्ता और घास पर लटक रही थी। खिडकी मे से ताजा हरियाली, और भीगी धरती की गध आ रही थी। जान पडता जैसे धरती और बारिश माग रही हैं।

कपडे पहनते हुए नेख्लूदोव ने कई बार किसानो की ओर देखा जो टेनिस के मैदान पर जमा हो रहे थे। एक एक कर के वे आ रहे थे। एक किसान आता, सिर पर से टोपी उतार कर, झुक कर सब का अभिवादन करता, अपनी जगह पर जा खडा होता। सभी लोग एक दायरे की शक्ल म खडे हो रहे थे, और अपनी अपनी लाठी की टेक ले कर खडे बाते कर रहे थे। कारिदा अन्दर आया और बोला कि सभी किसान पहुच गये हैं लेकिन आप पहले नाश्ता कर लीजिये, चाय और काफी दोनो हाजिर हैं, इतनी देर तक किसान इन्तजार कर सकते हैं। कारिदा हृष्ट-पुष्ट गठे हुए बदन का युवक था। उसने एक छोटी सी जाकेट पहन रखी थी जिस पर बडे बडे बटन लगे थे और हरे रग का खडा सा कालर था।

"नही, मैं सोचता हू मैं अभी उनसे मिलूगा," नेख्लूदोव ने कहा। सहसा यह सोच कर कि वह किसानो से क्या बाते करने जा रहा है, नेख्लूदोव को झेंप और शर्म महसूस होने लगी थी।

वह किसानो की इच्छा-पूर्ति करने जा रहा था, जिस इच्छा-पूर्ति की आशा तक करने का उन्हें साहस नही हो पाता था। वह मामूली से लगान पर अपनी ज़मीन उन्हे देने जा रहा था, उन पर बहुत बड़ा उपकार करने जा रहा था। फिर भी किसी बात पर उसे शर्म महसूस हो रही थी। नेख्लूदोव किसानो के पास पहुचा। किसानो ने सिर पर से टोपिया उतारी, कितने ही सिर उसके सामने नगे हो गये, किसी पर सुनहरे बाल थे किसी पर घुघराले, कोई सिर गजा था, किसी पर सब बाल सफेद हो चुके थे। उस समय घबराहट के कारण नेख्लूदोव के मह से एक शब्द भी नही निकल सका। हल्की हल्की बूदाबादी अब भी हो रही थी जिससे किसानो के बाल, उनकी दाढ़िया, उनके खुरदरे कोट के रोए भीग रहे थे। किसान इस इन्तज़ार मे थे कि कब मालिक बोलना शुरू करें, वे उनकी ओर देखे जा रहे थे, लेकिन नेख्लूदोव इस कदर शर्मा रहा था कि उसके मुह से एक शब्द भी नही निकल रहा था। एक झेंप भरी चुप्पी छाई हुई थी। आखिर इसे तोडा जमन कारिन्दे ने, जो धीर गभीर, आत्म विश्वासी आदमी था, और समझता था कि वह रूसी किसानो की रग-रग पहचानता है, और जो बहुत अच्छी तरह रूसी बोल सकता था। एक तरफ यह हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताज़ा आदमी खड़ा था। उसके साथ खड़ा नेख्लूदोव भी वैसा ही था। दूसरी ओर किसान थे, उनके दुबले पतले, झुर्रियो भरे चेहरे, मोटे मोटे कोटो मे से कधा की हड्डिया निकली हुइ। कितना अन्तर था!

"प्रिस तुम पर बहुत बड़ा उपकार करने वाले हैं, परन्तु तुम इस उपकार के योग्य नही हो। वह तुम्हे ज़मीन लगान पर दे देंगे,' कारिन्दे ने कहा।

"योग्य कैसे नही हैं वासीली कार्लोविच, क्या हम तुम्हारे लिए काम नही करते? जब कुवर जी की मा ज़िन्दा थी—भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति दें—तो हम बडे आराम से रहते थे। और हमे विश्वास है, कुवर जी भी हम बिसरायेंगे नही। हम इनके बहुत शुक्रगुज़ार हैं,' लाल बालो वाले एक वाक-पटु किसान ने कहा।

"हां इसी लिए मैंने आज तुम सबको बुलाया है। अगर तुम चाहो तो सारी की सारी ज़मीन मैं तुम्हें लगान पर दे दूगा।"

किसान कुछ नही बोले। ऐसा जान पडता था जैसे या तो बात उनकी समझ मे नही आयी या उस पर उन्हे विश्वास नही हो रहा था।

"ज़रा टहरो जी। ज़मीन हमे देंगे। क्या मतलब हुआ?" एक वयस्क आदमी बोला।

"ज़मीन तुम्हे देंगे ताकि तुम उस पर खेतीबारी कर सको। लगान तुम्हे बहुत कम देना पडेगा।"

"अच्छी बात है," एक बूढे ने कहा।

"बस, लगान हमारे बूते मे हा," एक दूसरा बोला।

"हा, हा, ज़मीन क्यो न ली जाय।"

"खेती कर के ही तो अपना पेट पालते है। बाप दादा से यही चल रहा है।"

"इससे तुमको भी आराम रहेगा। कोई काम नही करना पडेगा। घर बैठे बैठे लगान लेते रहोगे। सोचो तो आजकल तुम्हे कोई चैन नही। और कितना पाप तुम्हारे सिर पर है!" कुछेक के मुह से निकला।

"पाप सब तुम्हारे सिर है," जमन बोला, "अगर काम ठीक तरह करते और ढग से रहते "

"यह हम जैसो के लिए नामुमकिन है," तीखी नाक वाले एक बूढे ने कहा। "तुम हमसे कहते हा कि 'तुमने खेत मे क्यो घोडा घुसने दिया?' जसे मैंने ख़ुद उसे खेत के अन्दर डाल दिया हो। मैं इधर दिन भर अपने हाड तोडता रहा, हसिया चलाता रहा या कुछ और, लगे जैसे दिन कभी खत्म ही नही होगा। किसान का एक एक दिन एक एक साल बराबर होता है। रात को घोडो को चराने ले गया तो कही नीद आ गई। पता नही चला और घोडा तुम्हारी जई म घुस गया। और अब तुम मेरी चमडी उधेड रहे हो।"

"कहा तो, सब कुछ ढग से रखो।"

"तुम्हें तो क्या, कह दिया ढग से रखो। किसान के इतने हाड कहा।" अधेड उम्र के एक ऊचे-लम्बे आदमी ने कहा। उसके सिर और मुह पर काले बाल ही बाल थे।

"कहा नही था कि बाड लगाओ?"

"लाओ लकडी दो, हम बाड बना लेगे," एक नाटे कद के, सीधे सादे किसान ने कहा। "पिछले साल मैं बाड़ लगाने चला था। मैंने ज्योही

एक पेड पर कुल्हाडी चलायी तो तुमने मुझे तीन महीने के लिए जेल मे डाल दिया। बस, वाड बन गई।"

"यह क्या कह रहा है?" कारिन्दे की ओर घूम कर नेख्लूदोव ने पूछा।

"Der erste Dieb im Dorfe,"* कारिन्दे ने जर्मन भाषा मे उत्तर दिया, "हर साल यह आदमी जगल मे से लकडी चुराते हुए पकडा जाता है।" फिर किसान को सम्बोधित करते हुए बोला, "दूसर की बात को इज्जत से देखना चाहिए।"

"क्या हम तुम्हारी इज्जत नही करते?" बूढे ने कहा। "तुम्हारी इज्जत नही करेंगे तो जायेंगे कहा? हम तो तुम्हारे हाथ म हैं, तुम चाहो तो हमे बट कर रस्सी बना सकते हो।"

"उलटी बात कह रहे हो, भले आदमी। तुम्हारे साथ ऐसा करना नामुमकिन है। उलटे तुम हमारी गदन पर सवार रहते हो,' जमन बोला।

"हम सवार रहते है। भली कही। तुम्ही ने मेरा जबडा तोडा था न। मुझे क्या मिला। अमीरो के सामने भला गरीब की भी कभी चली है।"

"तुम्हे कानन के मुताबिक चलना चाहिए।"

तू-तू मैं मैं का मुकाबला चल रहा था। इसम भाग लन वाल भी नही जानते थे कि वे क्यो ऐसा कर रहे हैं। पर इतना जरूर नजर आ रहा था कि एक ओर कटुता है जिसे भय के कारण दवाने की कोशिश की जा रही है। दूसरी ओर अपनी ताकत और बडप्पन का घमण्ड है। इन बातो को सुनना नेख्लूदोव के लिए बहुत मुश्किल हो रहा था। इसलिए उसने लगान की फिर चर्चा शुरू कर दी कि यह निश्चय किया जाय कि लगान कितना हो और किन शर्तों पर हो।

"अच्छा, अब जमीन की बात करो। लेना चाहते हो? अगर मैं सारी की सारी तुम्हे दे दू तो कितना लगान दोगे?"

"माल तुम्हारा है, तुम्ही बताओ।"

नेख्लूदोव ने रकम बतायी। पास-पडोस म जो लगान लिया जाता था, उससे यह बहुत कम था। फिर भी किसाना न कहा कि यह बहुत

---

*गाव का एक नवर चोर है, (जमन)

ज्यादा है, और आदत के मुताबिक सौदाबाजी करने लगे। नेख्लूदोव का ख्याल था कि रकम सुनते ही उनके चेहरे खुशी से खिल उठेंगे, मगर वहा खुशी कही नजर नही आती थी। हा एक बात ऐसी हुई जिससे नेख्लूदोव को पता चल गया कि उसके प्रस्ताव से किसानो को लाभ पहुचेगा। जब उनके सामने यह सवाल रखा गया कि जमीन किसको दी जाय, सारे ग्राम-समुदाय को जिसमे सभी किसान शामिल है या किसी खास सोसाइटी को जिसमे केवल वही किसान शामिल होगे जो जमीन लेना चाहते है, तो झगडा खडा हो गया। कुछ किसान चाहते थे कि ऐसे किसानो को जो गरीब हैं और वक्त पर लगान नही चुका सकेंगे बाहर रखा जाय। जवाब मे वे लोग शिकवा शिकायत करने लगे जिन्हे डर था कि उन्हे इस कारण शामिल नही किया जायेगा। आखिर कारिन्दे ने स्थिति सभाल ली, लगान की रकम और शर्तें मुकरर की गईं। किसान ऊचा ऊचा बोलते हुए पहाडी उतर कर अपने अपने गावो को जाने लगे। नेख्लूदोव और कारिन्दा करारनामा तैयार करने के लिए दफ्तर मे चले गये।

हर बात का फैसला नेख्लूदोव की इच्छानुसार तथा आशानुसार हो गया। जिले भर मे जिस लगान पर किसानो को जमीन मिल सकती थी, उससे तीस प्रतिशत कम पर उन्हे यहा पर मिली। नेख्लूदोव के लिए जमीन से आमदनी पहले से आधी रह गई। पर अब भी यह रकम उसकी जरूरतो से ज्यादा थी विशेषकर इसलिए कि उसने एक जगल बेच दिया था और कुछ रकम खेतीबारी के औजार बेचने पर भी उसे वसूल होगी। हर बात का इन्तजाम बहुत बढिया ढग से हुआ था, फिर भी वह किसी कारण लज्जित सा अनुभव कर रहा था। किसानो ने उसका धन्यवाद तो किया था लेकिन वे सन्तुष्ट नही थे। उन्हे इससे भी अधिक लाभ की आशा थी। परिणाम यह निकला कि उसने अपने को बहुत सी रकम से वचित भी कर दिया और फिर भी किसान सन्तुष्ट नही हुए।

दूसरे दिन करारनामे पर दस्तखत हो गया। नेख्लूदोव, कुछेक वयोवृद्ध किसानो के साथ जिन्हे प्रतिनिधि चुना गया था, दफ्तर मे से बाहर निकला। उसका मन अब भी अशान्त था, मानो कोई बात अधूरी रह गई हो। दफ्तर मे से निकल कर वह कारिन्दे की रईसाना सवारी मे (स्टेशन से उसे लाने वाले गाडीवान के शब्दो मे) जा बैठा किसानो

से विदा ली और स्टेशन की ओर चल दिया। किसान अब भी खड़े सिर हिलाये जा रहे थे, मानो निराश और असन्तुष्ट हों। नेख्लूदोव मन ही मन अपने आपसे असंतुष्ट था। सारा वक्त, अनजाने में ही, वह बिना बात पर उदास और लज्जित अनुभव करता रहा।

३

कुज़िमस्कोये से नेख्लूदोव सीधा उस जागीर पर गया जो उसे फूफियों से विरासत में मिली थी। यह वही जगह थी जहां उसकी कात्यूशा से भेंट हुई थी। उसका इरादा यह था कि कुज़िमस्कोये की तरह यहां पर भी ज़मीन का वैसा ही प्रबन्ध कर दिया जाय। इसके अलावा वह कात्यूशा तथा अपने बच्चे के बारे में भी पता लगाना चाहता था। क्या बच्चा सचमुच मर गया था? और जो मर गया था तो किन परिस्थितियों में मरा?

वह सुबह सवेरे पानोवो पहुंच गया। घर पहुंचा तो देखा कि सभी इमारतें जर्जर और जीर्ण शीर्ण दशा में पड़ी हैं, विशेषकर रिहाइशी मकान। छत पर मुद्दत से रंग नहीं किया गया था, जिससे लोहे की चादरें ज़ंग के कारण लाल हो रही हैं। पहले उन पर हरा रंग किया जाता था। कुछ चादरें तो ऊपर को मुड़ी थीं, शायद अंधड़ और तूफ़ान के कारण। दिवारों पर मढ़े हुए तख्तों को लोग जगह जगह से उखाड़ ले गये थे। जिन जगहों पर कीलें ज़ंग खाकर कमज़ोर हो गयी थीं, वहीं उन्होंने तख्ते उखाड़ लिये थे। दोनों ओसारे टूट-फूट गये थे, विशेषकर बगल का ओसारा जिससे वह भली भांति परिचित था। केवल कड़ियां अब तक खड़ी थीं। कुछ खिड़कियों पर शीशों की जगह तख्ते मढ़े हुए थे। मकान का बगल वाला हिस्सा जिसमें कारिन्दा रह रहा था, बावर्चीखाना और अस्तबल—सभी कुछ गयी-गुज़री हालत में था और गल सड़ रहा था। अगर कोई स्थान जर्जर नहीं हुआ था तो वह बाग था। वह पहले से भी घना हो रहा था, और पूरे जोबन पर था। बाड़ के पीछे से ही चेरी, सेब और आलूबुखारे के पेड़ नज़र आ रहे थे। उन पर फूल आये हुए थे जिससे वे सफ़ेद बादलों के पुंज से लग रहे थे। लिलक की झाड़ियां खूब खिल

रही थी। बारह साल पहले भी वे इसी तरह खिल रही थी जब नेख्लूदोव ने कात्यूशा के साथ यहा नाम का खेल खेला था और इनके पीछे वह कटीले पौदे पर गिर पडा था, जिसस उसके हाथ छिल गये थे। तब कात्यूशा की उम्र सालह वप की थी। घर के निकट ही फूफी सोफिया इवानोव्ना ने लाच का पेड लगाया था। उन दिना वह एक छडी के समान छोटा सा था। अब वह एक पेड बन गया था। उसका तना इतना मोटा था कि उसमे से मकान की कडी निकल सकती थी। उसकी टहनियो पर कोमल, हरे रग की सुइया जैसी पत्तिया उग रही थी ऐसे लगता था जसे रोयें निकल आये हो। नदी का प्रवाह, अपने दोनो किनारा मे सीमित, पनचक्की के बाध पर से ठाठें मारता हुआ बहे जा रहा था। नदी के पार घास का मैदान था जिसमे जगह जगह किसानो के मिले-जुले ढोर चर रहे थे।

आगन मे ही उसे कारिन्दा मिला जो खडा मुस्करा रहा था। वह कोई विद्यार्थी था जो विद्यालय की शिक्षा पूरी करने से पहले ही चला आया था। जब उसने नेख्लूदोव से दफ्तर मे चलने को कहा तब भी उसके होठो पर मुस्कराहट थी। अदर पहुचते ही मुस्कराते हुए वह पार्टीशन के पीछे चला गया, मानो उसकी मुस्कराहट के पीछे कोई भेद छिपा हो, वह कोई बहुत ही बढिया चीज़ नेख्लदोव को भेंट करना चाहता हो। कुछ देर तक पार्टीशन के पीछे फुसफुसा कर बाते करने की आवाज़ें आती रही। इसके बाद वह गाडीवान जो नेख्लूदोव को स्टेशन पर से लाया था, बख्शीश ले कर अपनी गाडी हाक ले गया। चलती गाडी से घटियो की आवाज़ आती रही। फिर सब चुप हो गया। उसके बाद खिडकी के सामने से एक लडकी गाढे की कामदार कमीज पहने, नगे पावो भागती हुई निकल गई। उसने कानो मे बुदो के स्थान पर रेशम के फुनगे लटका रखे थे। फिर एक किसान सामने से गुज़रा। उसके बूटो के नीचे कील लगे थे जिससे बाहर पगडण्डी पर चलते हुए उसके बूटो से खटखट की आवाज़ आ रही थी।

छोटी सी खिडकी के पास बैठ कर नेख्लूदोव बाहर बाग की ओर देखने लगा। उसके कान बाहर की ओर लगे हुए थे। खिडकी मे से वसन्त की ताजा हवा के हल्के हल्के झोंके आ रहे थे, उनमे धरती की गध थी जिसे हाल ही मे खोदा गया हो। हवा के झोके उसके पसीने से

माथे पर लटक आये बालो के साथ और चाकू से कटे फटे दासे पर रखे कागज़ो के साथ खिलवाड करते वह रहे थे।

"त्रा-पा-तप! त्रा-पा-तप!" नदी पर से स्त्रियो के कपडे धोने की आवाज़ आ रही थी। सभी एकलय मे लकडी के बल्लो से कपडो को पीट रही थी। पनचक्की का तालाब झिलमिल कर रहा था। ऐसा जान पडता जैसे यह आवाज़ छितर कर तालाब पर फैल रही हो। पनचक्की पर से गिरते पानी की लयबद्ध आवाज़ आ रही थी। नेख्लूदोव के कान के पास से एक डरी हुई मक्खी जोर जोर से भिनभिनाती हुई उड गई।

और सहसा नेख्लूदोव को याद आया जैसे बरसो पहले, जब वह भोला भाला युवक था, पनचक्की पर से यही लयबद्ध शब्द सुनाई दिया करता था और उस पर से स्त्रियो के कपडा पीटने की आवाज़ इसी तरह आया करती थी। इसी तरह वसन्त समीर के झोके उसके गीले माथे पर लटकन बालो को सहलाते थे तथा खिडकी के कटे फटे दासे पर रखे कागज़ो को उडाते थे। इसी तरह एक मक्खी भिनभिनाती हुई उसके कान के पास से उड कर गई थी। यह कहना गलत होगा कि नेख्लूदोव को उन दिनो की बात याद हो आयी थी जब वह अठारह वर्ष का युवक था। लेकिन इस समय वह ऐसा ही महसूस कर रहा था जैसे वह अठारह वर्ष का युवक हो, वही ताज़गी और स्वच्छता ऐसी मानसिक स्थिति जब भविष्य की महान तथा असीम सभावनाए उसके सामने खुल रही हो। पर साथ ही वह यह भी महसूस कर रहा था—जैसा कि सपना देखते समय होता है—कि यह सब अब नही रहेगा, और इससे उसका हृदय बेहद उदास हो उठा।

'आप भोजन किस समय करना चाहते हैं?" कारिन्दे ने मुस्कराते हुए पूछा।

"जब भी तुम कहो। मुझे भूख नही है। मैं पहले गाव मे थोडा टहलने जाऊगा।'

"क्या आप घर के अन्दर नही चलना चाहते? सब चीज़ें बड ढग से रखी हैं। कृपया अन्दर चलिये। यदि बाहर "

'इस समय नही धन्यवाद बाद मे चलूगा। मेहरबानी कर के यह तो बताओ, क्या यहा कोई मत्योना खारिना नाम की औरत रहती है?" (यह कात्यूशा की मौसी का नाम था।)

'जी हा, गाव मे रहती है। उसने अपने घर मे शराबखाना खोल

रखा है, जहा लोग लुक छिप कर शराब पीने जाते हैं। मुझे मालूम है, मैंने कई बार उसे समझाया, पिडवा भी है कि तुम जुर्म कर रही हो, लेकिन उसे पकडने को तो दिल नही मानता, बूढी ग्रौरत है, नाती पोते हैं उसके," कारिन्दे ने कहा। वह ग्रब भी मुस्करा रहा था। वह मालिक को खुश भी करना चाहता था, ग्रौर ग्रपना यह विश्वास भी व्यक्त करना चाहता था कि इन बातो के प्रति नेख्लूदोव का ग्रौर उसका एक ही मत है।

"वह किस जगह रहती है? मैं चाहता हू कि ग्रभी टहलते हुए चला जाऊ ग्रौर उससे मिल लू।"

"गाव के दूसरे सिरे पर रहती है। उस तरफ से तीसरा झोपडा है। बायें हाथ पहले एक पक्का, ईंटो का मकान ग्राता है, उसके ग्रागे उसका झोपडा है। लेकिन मैं ग्रापको ले चलूगा," खुशी से मुस्कराते हुए कारिन्दे ने कहा।

"नही, शुक्रिया, मैं खुद ढूढ लूगा। तुम एक बात करो। कृपया किसानो की एक मीटिंग बुला लो। उनसे कहो कि मैं उनसे जमीन के बारे मे बात करना चाहता हू," नेख्लूदोव ने कहा। उसका इरादा यह था कि यहा के किसानो के साथ भी वह वैसा ही करारनामा कर ले जैसा कि उसने कुज्मिस्कोये के किसानो के साथ किया था। ग्रौर ग्रगर हो सके तो वह उसी दिन शाम को इस काम से निबट जाना चाहता था।

४

नेख्लूदोव फाटक मे से बाहर निकला तो उसे फिर वही लडकी मिली जिसने कानो मे रेशमी फुनगे लटका रखे थे। वह उसी पुरानी पगडण्डी पर चरागाह की ग्रोर से लौट रही थी जिस पर तरह तरह के झाड-पात उग रहे थे। उसने शोख रग का, लम्बा सा एप्रन पहन रखा था। उसके गुदगुदे पाव ग्रब भी नगे थे। भागते हुए वह ग्रपना बाया बाजू तेज तेज झुला रही थी। दायें बाजू से वह एक मुर्ग को पेट के साथ चिपकाये हुए थी। मुर्ग चुपचाप बैठा था, उसकी लाल कलगी हिल रही थी। बस कभी कभी वह ग्राखें घुमाता ग्रौर ग्रपनी काली टाग को कभी बाहर निकाल देता ग्रौर कभी वापस खीच लेता। उसका पजा बार बार लडकी के एप्रन से ग्रटक रहा था। जब लडकी मालिक के ग्रधिक नजदीक पहुची तो उसने

अपनी रफ्तार धीमी कर दी और दौडने के बजाय चलने लगी। उसके सामने पहुच कर वह खडी हो गई और एक बार अपना सिर पीछे की ओर झटका, और झुक कर अभिवादन किया। जब नख्लूदोव आगे निकल गया तो वह फिर मुग को लिये घर की ओर भागने लगी। कुए की ओर जाते हुए नख्लूदोव को एक बुढिया मिली। उसने गाढे की मोटी सी कमीज पहन रखी थी, और बहगी पर दो बल्टिया पानी की लटकाये चली जा रही थी। बहगी के नीचे उसकी पीठ बैठी जा रही थी। बुढिया ने बडे ध्यान से दोनो बाल्टिया जमीन पर रखी, उसी तरह सिर को पीछे फटका और फिर झुक कर अभिवादन किया।

कुए के पास से हो कर नख्लूदोव ने गाव मे प्रवेश किया। सूरज चमक रहा था, और हवा मे घुटन और गर्मी थी, हालांकि अभी दिन के केवल दस ही बजे थे। आकाश मे बादल घिर रहे थे जो किसी किसी वक्त सूरज को ढक लेते। गाव की गली मे पहुचा तो हवा मे गोबर की तीखी गध छाई हुई थी, परतु यह गध अप्रिय नही लगती थी। यह गध कुछ तो उन छकडो मे से आ रही थी जो खाद से लदे पहाडी पर चढ रहे थे लेकिन मुख्यतया यह गध घरो के आगनो मे लगे खाद के ढेरो मे से आ रही थी। ढेरो मे से खाद निकालने पर गध उडती थी। जिस जिस घर के सामने से नख्लूदोव गुजरा उसका दरवाजा खुला था। किसान घूम घूम कर इस ऊचे लम्बे, हृष्टपुष्ट धनी आदमी को देखते, जो भूरे रग का टोप पहने और उसमे छम छम करता रेशमी फीता लगाये, हाथ मे बढिया, चमकती मूठ वाली छडी पकडे, जिसे वह हर दूसरे कदम पर जमीन से छुआता हुआ गाव की सडक पर चला जा रहा था। किसानो के पाव नगे थे और जो कमीजे और पतलूने उन्होने पहन रखी थी, उन पर जगह जगह गोबर लगा हुआ था। कुछ किसान अपने खाली छकडो मे बैठे दुलकी चाल मे चलते, हिचकोले खाते खेतो से लौट रहे थे। सिर पर से अपनी टोपिया उठा उठा कर वे नख्लूदोव का अभिवादन करते और फिर विस्मित आखो से इस विलक्षण आदमी को देखते रह जाते जो गाव की सडक पर चला जा रहा था। औरते घरो के फाटको से बाहर आ खडी होती या घरो के ओसारो के नीचे खडी, एक दूसरी से नेख्लूदोव की ओर इशारा करती हुई आखें फाड फाड कर देखे जा रही थी।

चौथे घर के सामने से जाते हुए नेख्लूदोव को रुक जाना पड़ा। फाटक मे से एक छकडा निकल रहा था। पहिये चीची कर रहे थे। छकडे पर ढेरो खाद रखी थी, और ऊपर से दबा कर उस पर चटाई बिछा दी गई थी ताकि बैठा जा सके। छकडे के पीछे पीछे एक छोटा सा छ साल का लडका चला आ रहा था। इस आशा से कि छकडे म सवारी मिलेगी, वह बडा उत्तेजित हो रहा था। एक किसान युवक, छाल के जूते पहन, लम्बे लम्बे डग भरता हुआ घोडी को हाक कर बाहर ला रहा था। फाटक मे से एक भूरे रग का बछेडा लम्बी लम्बी टागो वाला, कूद कर निकला परन्तु नेख्लूदोव पर नजर पडते ही वह छकडे के पास दुबक गया। उसकी टागें गाडी के पहियो के साथ रगडने लगी। अपने पीछे भारी बोझ को खीचते हुए घोडी उत्तेजित हो रही थी और हल्के हल्के हिनहिना रही थी। फिर बछेडे ने एक छलाग लगाई और अपनी मा से आगे निकल गया। दूसरे घोडे को एक बूढा आदमी हाक कर बाहर लाया। वह दुबला-पतला मगर बडा फुर्तीला था। पावो से नगा, कधो की हड्डिया बाहर को निकली हुई वह एक मैली कमीज और धारीदार पतलून पहने हुए था।

जब दोनो घोडे पक्की सडक पर पहुच गये जहा जगह जगह सूखी भूरे रग की खाद बिखरी पडी थी, तो बूढा लौट कर फाटक के पास आ गया और झुक कर नेख्लूदोव का अभिवादन किया।

"आप तो हमारी मालकिनो के भतीजे हैं न?"

"हा, मैं उनका भतीजा हू।"

"आप हमे देखने आये हैं? बडी किरपा की।" बूढा आदमी बडा बातूनी जान पडता था।

"हा, तुम्हे देखने आया हू। कहो तुम्हारे कैसे हाल चाल हैं?" नेख्लूदोव ने पूछा। उसे कुछ सूझ नही रहा था कि क्या कहे।

"हाल चाल कैसे है? बहुत बुरे," बूढे ने लटका लटका कर कहा, मानो इस तरह बोलने से उसे खुशी मिलती हो।

"बहुत बुरे क्या?" फाटक के अन्दर कदम रखते हुए नेख्लूदोव ने पूछा।

"हमारी जिन्दगी क्या है जी, बहुत बुरी," बूढे ने कहा और नेख्लूदोव के पीछे पीछे आगन के उस हिस्से मे जा खडा हुआ जो ऊपर से छना हुआ था।

नेख्लूदोव छत के नीचे जा कर खड़ा हो गया।

"यह देखो, पूरे बारह जन हैं खाने वाले," उन दो औरतों की ओर इशारा करते हुए बूढ़े ने कहा, जो हाथों में तंगली उठाये, खाद के बचे खुचे ढेर के पास पसीने से तर खड़ी थीं। उनके सिर पर के रूमाल खिसक आये थे, घाघरे उन्होंने ऊपर को चढ़ा रखे थे जिससे उनकी नंगी, मैली पिंडलियां नज़र आ रही थीं। "एक महीना गुज़रे न गुज़रे छ: पूड अनाज खरीद दो इन्हें। इतने पैसे कहां से आवें?"

"तुम्हारा अपना अनाज काफ़ी नहीं होता?"

"हमारा अपना?" बूढ़े ने दोहरा कर कहा। उसके होंठों पर तिरस्कार भरी मुस्कराहट थी। "मेरे पास ज़मीन ही कितनी है—तीन आदमियों के लिए। पिछले साल तो इतना भी अनाज नहीं हुआ कि बड़े दिन तक गुज़र चल सके।"

"फिर तुम क्या करते हो?"

"क्या करते हैं? एक बेटे को मज़ूरी करने भेज दिया है। फिर हुज़ूर की कोठी से भी मैंने उधार ले रखा है। यह सब पैसे लेंट से पहले ही चुक गये। और टैक्स अभी तक नहीं दिया गया।"

"टैक्स कितना है?"

"हमारे घर को साल में तीन बार सत्रह-सत्रह रूबल देने होते हैं। हे भगवान, यह भी कोई ज़िन्दगी है! मालूम नहीं हम जी कैसे रहे हैं।"

"मैं तुम्हारे घर के अन्दर जा सकता हूं?" नेख्लूदोव ने पूछा और आंगन पार करने लगा। आंगन में खाद के ढेर पर से उतारी हुई पीली मटमैली परतें रखी थीं, जिन्हें तंगली से उतारा गया था। उनके कारण गोबर की तीखी गंध उठ रही थी।

"ज़रूर ज़रूर, चलिये!" बूढ़े ने कहा और गोबर पर अपने नंगे पांव रखता हुआ, जिससे उसकी पांवों की उंगलियों से गोबर का पानी चू रहा था, वह नेख्लूदोव के पास से हो कर आगे गया और घर का दरवाज़ा खोल दिया।

औरतों ने सिर पर रूमाल ठीक कर लिये, घाघरे ठीक किये, और बड़े विस्मय और आदर से इस साफ़-सुथरे कुलीन की ओर देखने लगीं जिसकी आस्तीनों पर सोने के स्टड लगे थे और जो उनके घर के अन्दर जा रहा था।

घर के अन्दर से दो छोटी छोटी लडकिया भाग कर निकली। उन्होंने केवल नीचे की कुर्तिया ही पहन रखी थी। दरवाज़ा छोटा था। नेख्लूदोव ने अन्दर जाने के लिए सिर पर से टोप उतारा और सिर झुका कर बरामदे मे दाखिल हुआ, और बरामदे मे से होकर घर के अन्दर गया। घर तग और गदा था और उसमे से खट्टे खाने की गध आ रही थी। बहुत सी जगह को खड्डियो ने घेर रखा थी। झोपडे के अन्दर, चूल्हे के पास एक वृद्धा स्त्री आस्तीनें चढाये खडी थी। उसकी सवलाई हुई बाहें पतली लेकिन मजबूत थी।

"मालिक आये हैं," बूढे ने कहा।

"धन्नभाग हमारे," बुढिया ने स्नेह भरे स्वर मे कहा, और आस्तीनें उतारने लगी।

"मैं देखना चाहता था कि तुम लोग कैसे रहते हो।"

"बस, ऐसे ही रहते हैं जैसे देख रहे हो। झोपडा आज गिरा कि कल गिरा। किसी की जान जरूर लेगा। मगर मेरा घर वाला कहता है कि यह चगा भला है, इसलिए हम बादशाहो की तरह रहते हैं," बुढिया ने सिर झटकते हुए कहा। बुढिया चुस्त औरत थी। "अब खाना लगाने लगी हू, अपने मजूरो का पट भरूगी।"

"भोजन के लिए क्या दोगी?"

"भोजन? हमारा भोजन बहुत अच्छा होता है। सबसे पहले डबलरोटी और क्वास*, उसके बाद क्वास और डबलरोटी" बुढिया ने अपने दात दिखाते हुए कहा, जो आधे से ज्यादा घिस चुके थे।

"नही नही सच सच बताओ, तुम लोग क्या खाओगे?"

"क्या खायेंगे?" बूढे ने हसते हुए कहा। "हमारी खुराक सीधी सादी है। इन्हें दिखा दो, बीबी।"

बुढिया ने सिर हिला दिया।

"हम किसान क्या खाते हैं, यह देखना चाहते हो? बडी खोज-बीन करने वाले आदमी जान पडते हो। सब बात जानना चाहते हो, क्यो? मैंने कहा नही, डबलरोटी और क्वास खायेंगे। इसके पीछे शोरवा पियेंगे।

---

*एक खट्टा पेय।

एक औरत हमारे लिए मछली लेती आयी थी। उसी का शाखा बनाया है। उसके बाद आलू खायेंगे।"

"बस इतना ही?"

"और क्या चाहते हो? थोडा सा दूध भी होगा," हसती हुई आखों से दरवाजे की ओर देखते हुए बुढिया ने कहा।

दरवाजा खुला था, और बरामदे मे लोगो की भीड इकट्ठी हो गई थी—लडके, लडकिया, औरत जिहाने गोद म बच्चे उठा रखे थे—सभी भीड बनाय इस विचित्र आदमी की ओर देख रहे थे जो किसानो की ख रात देखना चाहता था। बुढिया का इस बात पर बडा गव था कि वह कुलाना के साथ व्यवहार करना जानती है।

"हा, हुजूर, बहुत ही खराब जिदगी है हमारी, कहना ही क्या,' बूढा बोला। "ऐ, कहा चले आ रहे हो!" बरामदे म खडे लोगो की ओर देखत हुए उसने चिल्ला कर कहा।

"अच्छा, तो मैं अब चलूगा " नख्लूदाव न कहा। वह फिर बचन और लज्जित सा अनुभव करने लगा था, हालाकि इसका कारण वह नही जानता था।

"बडी किरपा की हुजूर, जो हमारी खोज-खबर ली,' बडे न कहा।

बरामदे म खडे लाग एक दूसरे के साथ सट कर खडे हो गय ताकि नेख्लूदोव का निकल जाने दें। नेख्लूदोव बाहर निकल आया और फिर पहल की तरह सडक पर जान लगा। दो नगे पाव लडके उसके पीछे पीछे बरामदे म से निकल कर आ गय। दोनो न कमीजे पहन रखी थी। बडे लडके की कमीज किसी जमान म सफेद रग की रही होगी। दूसरे की फटी-पुरानी कमीज गुलाबी रग की थी, मगर उसका भी रग फीका पड गया था। नख्लूदाव ने मुड कर उनकी ओर देखा।

"अब आप कहा जाआगे?' सफेद कमीज वाल लडके न पूछा।

'मत्र्याना ग्वारिना के घर,' नेख्लदोव न जवाब दिया, 'क्या तुम उस जानत हो?

गुलाबी कमीज वाला लडका किसी बात पर हसन लगा। लकिन बडे लडके न गभीरता स पूछा—

कौन सी मत्र्याना? वह जा बूढी है?

हा, वही।

"ग्रा–ह! वह वाली!" उसने नम्रता कर के कहा "वह गाव के दूसरे सिरे पर रहती है। चल फेदका, हम इह ले चले।'

"चल, मगर घाडा का क्या करेगे?"

"उनकी काई फिक्र नही।"

फेदका मान गया, और ताना सडक पर जाने लगे।

५

नख्लूदोव को वडी उम्र के लागा के साथ वात करने से वच्चा के साथ वाते करना कही ग्रामान लगा और वह रास्ते मे लडका के साथ खुल कर बात करने लगा। छोटे लडके ने हसना वद कर दिया, और वडे लडके की तरह ही हर वात का जवाब ठीक ठीक ग्रौर गभोरता से दने लगा।

"यहा पर सवसे गरीव लाग कौन हैं, क्या तुम वता सकते हो?" नख्लूदोव न पूछा।

"सबसे गरीब? मिखाइल गरीव हैं, सम्यान माकारोव ग्रौर मार्फा गरीव है।"

"ग्रौर ग्रनीसिया, वह उनमे भी ज्यादा गरीव है। उसके पास ता गाय भी नही। वे लाग तो माग कर खाते है," नन्हे फेदका ने कहा।

"उसके पास गाय तो नही है, मगर उसके घर म केवल तीन जने हैं। मार्फा के घर म तो पाच जन हैं," वडे लडके ने आपत्ति की।

"लेकिन ग्रनीसिया तो विधवा है," गुलावी कमीज वाले लडके ने ग्रनीसिया का पक्ष लेते हुए कहा।

"ग्रनीसिया विधवा है तो मार्फा कौन सी उससे ग्रच्छी है? वह भी विधवा जैसी ही है" वडे लडके ने कहा 'उसका भी तो घर वाला कोई नही।"

"कहा है उसका घर वाला?" नेख्लदोव ने पूछा।

"जेल मे उसे कीडे खा रहे हैं," वडे लडके ने किसाना के प्रचलित शब्दो मे जवाब दिया।

"दो साल हुए उसने जमीदार के जगल म स दो बर्च के पेड काट डाले थे," गुलावी कमीज वाला छाटा लडका झट से बोल उठा, "वस,

उसे जेल मे डाल दिया। अब वह छ महीने से वही पडा है, और उसकी घर वाली भीख मागती है। घर मे तीन बच्चे हैं और एक बूढी नानी है," ब्योरा देते हुए उसने कहा।

"रहती कहा पर है?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"इसी घर मे," एक झापडे की ओर इशारा करते हुए लडके ने कहा। झोपडे के सामने, जिस रास्ते पर नेख्लूदोव जा रहा था, एक नन्हा सा लडका, पटुए के से पीले बाल, अपनी पतली, टेढी, घुटनो पर बाहर को मुडी हुई टागो पर खडा था, और लगता था कि अभी गिरा कि गिरा।

"वास्का! कहा गया कम्बखत?" एक स्त्री ने चिल्ला कर कहा, जो घर मे से बाहर दौडी आ रही थी। उसने भूरे रग का मैली सी कमीज पहन रखी थी। त्रस्त आखो से देखती हुई वह भागी हुई आयी, और नेख्लूदोव के पहुचने से पहले ही उसे उठा कर अन्दर ले गई, मानो डर रही हो कि नेख्लूदोव उसके बच्चे को पीट डालेगा।

यही वह स्त्री थी जिसका पति नेख्लूदोव के वन-वृक्षो के कारण जेल भुगत रहा था।

"और मात्योना? क्या वह भी गरीब है?" मात्योना के घर के सामने पहुचते हुए नेख्लूदोव ने पूछा।

'वह गरीब क्यो होगी, वह तो शराब बेचती है," गुलाबी कमीज वाले, दुबले-पतले लडके ने निश्चय से जवाब दिया।

झोपडे के पास पहुच कर नेख्लूदोव ने लडके को बाहर ही रुकने को कहा और बरामदा लाघ कर अन्दर चला गया। झोपडा चौदह फुट लम्बा था। झोपडे मे एक बडा सा अलावघर लगा था, जिसके पीछे एक खाट थी। खाट लम्बाई मे इतनी छोटी थी कि लम्बे कद का आदमी उस पर नहीं सो सकता था। "इसी खाट पर," नेख्लदोव सोच रहा था, "कात्यूशा ने बच्चे को जन्म दिया था, और बाद मे बीमार पडी रही थी।" झोपडे मे बहुत सी जगह खड्डी ने घेर रखी थी। जब नेख्लूदोव ने झोपडे मे प्रवेश किया उस समय बुढिया अपनी सबसे बडी पोती के साथ उस पर ताना ठीक कर रही थी। दरवाज़ा नीचा था जिस कारण नेख्लूदोव का माथा उससे टकरा गया। नेख्लूदोव के पीछे पीछे और दो पोते भागते हुए अन्दर आये, लेकिन दरवाज़े पर ही रुक गये और चौखटा पकड कर खडे हो गये।

"क्या चाहिए?" रूखी आवाज़ मे बुढिया ने पूछा। उसका मिज़ाज

बिगडा हुआ था, एक तो इसलिए कि ताना ठीक नही बैठ रहा था, दूसरे इसलिए कि अवैध शराब बेचने के कारण जब भी कोई अजनबी उसके झोपडे मे आता तो वह डर जाती थी।

"मैं यहा का जमीदार हू। तुम्हारे साथ बात करना चाहता हू।"

बुढिया चुप हो गई और उसकी ओर बडे ध्यान से देखने लगी, फिर सहसा उसके चेहरे का भाव बदल गया।

"अरे लाला, तुम आये हो! मैं भी कैसी पगली हू, मैं सोच रही थी कि कोई राह-जाता आदमी अन्दर घुस आया है। छिमा करना, लाला, भगवान के वास्ते," बुढिया ने स्नेह का स्वाग भरते हुए कहा।

"मैं तुम्हारे साथ अकेले मे बात करना चाहता हू," नेख्लूदोव ने दरवाज़े की ओर देखते हुए कहा, जहा बच्चो के पीछे एक स्त्री क्षीणकाय, पीले बच्चे को गोद मे लिये खडी थी। बच्चे के सिर पर टुकडे जोड कर बनायी टोपी रखी थी, और होठो पर जीण मुस्कान थी।

"क्या देख रहे हो? लाओ तो ज़रा बैसाखी मेरी, मैं इन्हे सीधा करू," दरवाज़े पर खडे लोगो की ओर देख कर वह चिल्लायी। "दरवाज़ा बद कर दो, सुनते हो?"

बच्चे भाग गये और बच्चे वाली औरत ने दरवाज़ा बन्द कर दिया।

"मैं सोच रही थी 'यह आदमी कौन है?' मुझे क्या मालूम कि खुद मालिक आये हैं, मैं वारी वारी जाऊ, तुम पर लाला," बुढिया बोली, "आज तो चीटी के घर भगवान आये हैं, आओ, आओ मालिक, यहा बैठो," अपने एप्रन से एक तख्ता साफ करते हुए वह बोली। "मैं सोच रही थी, 'यह कौन कलमुहा अन्दर घुसा आ रहा है' और निकला कौन, हाय, हाय, खुद मालिक, हमारे सिर के स्वामी, साधु-सज्जन, हमारा रक्षक। छिमा करना, मैं तो बुढा गई हू, मैं तो अधी हो गई हू।"

नेख्लूदोव बैठ गया, और बुढिया उसके सामने खडी हो गई। दाया हाथ उसका गाल पर था, और बायें हाथ से दायें बाजू की कोहनी थामे हुए थी। फिर गाती हुई आवाज़ मे कहने लगी—

"मैं वारी वारी जाऊ, मालिक, तुम्हारे तो अब बाल पकने लगे। तुम्हारा तो चेहरा ऐसा खिला खिला होता था जैसे सदाबहार का फूल। और अब देखो! बहुत चिन्ता करते होगे?"

"मुझे तुमसे यह पूछना था कात्यूशा मास्लोवा तुम्हे याद है?"

"येकातेरीना, क्या नहीं। वह तो मेरी भाजी रही। उम कम भन सकती हू? मुझे सब मालम है। ओह, मालिक, कौन है जिसकी चादर साफ हो? कौन है जिसने राजा का कानून नहीं ताडा हो? जवानी मनमानी हाती है। तुम दोनो चाय-कॉफी मिल कर पीते थे न, बस, शनान ने तुम्हें वस म कर लिया। कभी कभी उसने आगे किसी की नहा चलती। अब करते तो क्या करते? उस छोड दते, तो? मगर नहीं, तुमने ता उसकी झोली भर दी, उमे पूर एक सौ रूबल दे डाले। और वह? जानत हो उसने क्या किया? उसन कोई भी बात समझदारी की नहीं की। मरा कहा मानती ता सुख से रहती। मैं तो सच्ची बात कहती हू, भल ही वह मेरी भाजी है वह लडकी अच्छी नही है। मैंन उसे इतनी अच्छी नौकरी दिलवायी। वहा मालिक की उसने नहीं मानी, उलटे उस गालिया दी। हम जैसे लोग क्या भले आदमिया को गालिया देंगे? उन्होंने उस निकाल बाहर किया। फिर जगलात वाले के घर। वहा आराम से रह सकती थी, मगर नही वहा से भी चली आयी।"

"मैं बच्चे के बारे मे जानना चाहता हू। बच्चा तुम्हारे ही घर म हुआ था न? वह कहा है?'

"अब बच्चे की सुनो। उस वक्त मैंन उसके बारे म बहुत सोचा। कात्यूशा की एक सास ऊपर एक नीचे, मैं सोच यह तो जीती नहीं बचेगी। मैंने बच्चे का बपतिस्मा करवाया और उसे यतीमखाने म भेज दिया। अब मा मर रही हो तो बच्चे को ता बचाना चाहिए। उस बेचारे ने क्या कुसूर किया है। और लोग तो बस, बच्चे को छोड देते हैं खाने को कुछ नहीं देते, वह अपने आप सूख कर खत्म हो जाता है। पर मैं सोच हाय नहीं, मैं थोडा कष्ट सह लूगी, मगर इसे यतीमखाने म जरूर भेजूगी। पैसे थे, बस मैंने उसे भिजवा दिया।

"ता यतीमखाने के अस्पताल से रसीद ली होगी। उसका नबर तो हागा तुम्हारे पास?

"हा नबर तो था, मगर बच्चा मर गया,' वह बोली, 'वह औरत बता रही थी कि व ला के पहुची ही कि मर गया।"

'औरत कौन औरत?

"वही जा स्कोरोद्नो म रहती थी। उसका यही धधा था। मालानिया नाम था उसका। अब तो वह मर गई है। बडी समझदार औरत थी।

जानते हो वह क्या करती थी? लोग उसके पास कोई बच्चा ले जाते तो वह उसे अपने पास रख लेती, उसे खिलाती पिलाती। जब काफी बच्चे हो जाते—तीन या चार— तो उन्हें सीधे यतीमखाने मे दे आती। उसने बहुत बढिया इतजाम कर रखा था—एक बडा सा पालना बना रखा था दोहरा पालना। उसमे वह बच्चो को एक तरफ से या दूसरी तरफ से लिटा देती थी। उसके साथ हैडल भी लगा था। उसमे वह चारो बच्चो को लिटा देती—एक के पाव दूसरे के साथ जुडे होते, मगर सिर दूर दूर रखती ताकि एक दूसरे के साथ टकराये नही। इस तरह वह चारो बच्चो को एक साथ ले जाती थी। वह उनके मुह म चीथडा के चुचक बना कर दे देती जिससे वे बेचारे चुप बने रहते।"

"कहो, आगे कहो।"

"बस, येकातरीना के बच्चे को चौदह दिन तक अपने पास रखा। फिर उसी तरह उसे भी ले गई। मगर बच्चा उसी के घर म बीमार पडने लगा था।"

"क्या बच्चा सुदर था?" नख्लदोव न पूछा।

"ऐसा सुदर, ऐसा सुन्दर, हाथ लगाओ तो मैला होता था। बिल्कुल तुम्हारी सूरत थी" बुढिया न आख मार कर कहा।

"बीमार क्यो होने लगा था? क्या खुराक अच्छी नही थी?"

"खुराक कहा थी, खुराक का तो नाम ही था। बात भी ठीक है, अपना बच्चा न हो तो कोई क्यो पाले। इतना भर देती थी कि यतीमखाने पहुचने तक बचे रहे। कहती थी,' किसी तरह मैंने उसे मास्को पहुचाया। मगर वहा पहुचते ही वह मर गया। वह वहा से सार्टीफिकेट भी ले आयी थी—बिल्कुल कायदे के मुताबिक। इतनी समझदार औरत थी वह।'

बस, अपने बच्चे के बारे मे नेख्लदोव को यही कुछ पता चल पाया।

६

नेख्लूदोव बाहर सडक पर आ गया। अब की बार फिर बाहर निकलते हुए उसका सिर दोनो दरवाजो से टकराया। सडक पर सफेद और गुलाबी कमीजो वाले दोनो लडके उसका इन्तजार कर रहे थ। कुछेक अन्य लोग

भी उनके पास आ खडे हुए थे। स्त्रियो मे से कई एक की गोद म बच्चे थे। इनमे वह दुबली-पतली स्त्री भी थी जिसने अपने बच्चे के सिर पर चीथडो की बनी टोपी पहना रखी थी। बच्चा दुबला था, और उसके सूखे हुए पतले चेहरे पर एक अजीब सी मुस्कान खेल रही थी। बार बार वह अपना टेढा सा अगूठा हिलाने लगता। नेख्लूदोव जानता था कि इस मुस्कान मे यन्त्रणा छिपी है। उसने लडको से उस औरत के बारे में पूछा।

"यही तो अनीसिया है। मैंने आपको बताया था न?" बडे लडके ने कहा।

नेख्लूदोव ने अनीसिया को सम्बोधित कर के पूछा—

"तुम्हारी गुजर कैसे होती है? क्या काम करती हो?"

"क्या काम करती हू—भीख मागती हू," अनीसिया ने कहा और रोने लगी।

बच्चे के सूखे हुए चेहरे पर फिर मुस्कान खेल गई और वह लात मारने लगा। उसकी टागे सूख कर काटा हो रही थी।

नेख्लदोव ने जेब मे से बटुआ निकाला और दस रूबल का एक नोट उस औरत के हाथ मे दे दिया। वह दो एक कदम ही आगे बढ पाया होगा जब एक और औरत उसके पास आ पहुची। उसकी गोद मे भी बच्चा था। उसके पीछे पीछे एक बूढी औरत चली आई, और उसके बाद एक और जवान स्त्री आ पहुची। सभी अपनी गरीबी का रोना रोने लगी और नेख्लूदोव के आगे हाथ फैला दिये। नेख्लूदोव के पास कुल मिला कर साठ रूबल थे। उसने सबके सब उन्हें दे डाले, और कारिन्दे के घर की ओर लौट पडा। उसका हृदय व्याकुल हो उठा।

कारिदा अब भी मुस्करा रहा था। कहने लगा कि किसान शाम के वक्त मीटिंग के लिए इकट्ठे हो जायेंगे। नेख्लूदोव ने धन्यवाद किया और सीधा बाग मे जा कर टहलने लगा। सेव के पेडो पर बूर आया हुआ था, और फलो की पत्तियां घास-पत्तर मे भरी रविश पर छितरी हुई थी। आज जो कुछ नेख्लूदोव ने देखा था वह उस पर विचार करना चाहता था।

पहले तो चारो ओर मौन छाया रहा लेकिन फिर सहसा कारिन्दे के घर के पिछवाडे से आवाजें आने लगी। दो औरतें गुस्से से बोल रही थीं, और एक दूसरी की बात बार बार काट रही थी। बीच म कभी कभी

मुस्कराते कारिन्दे की भी आवाज सुनाई पड जाती। नेख्लूदोव कान लगा कर सुनने लगा।

"मुझमे अब और सक्त नही है। तुम क्या कर रहे हो, मेरे गले का क्रॉस छीन रहे हो," एक औरत की क्रुद्ध आवाज़ आयी।

"मेरी गाय तो ज़रा सी देर के लिए घुसी थी," दूसरी औरत बोली। "मुझे मेरी गाय वापस कर दो। पशु पर तो जुल्म नही करो। मरे बच्चे क्या करेंगे, उन्हें दूध कैसे मिलेगा?"

"गाय चाहती हो तो पैसे निकालो, या पैसे के बदले काम करो" कारिन्दे की आवाज़ आई।

नेख्लूदोव बाग मे से निकल कर सायबान मे आ गया। उसी के पास दो फटेहाल स्त्रिया खडी थी और उनमे से एक गभवती थी, लगता था जसे उसके दिन पूरे होने वाले हैं। कारिन्दा, सायबान की सीढियो पर, दोनो हाथ अपने हॉलैंड-कोट की जेबो मे डाले, खडा था। मालिक को देखते ही स्त्रिया चुप हो गयी और सिर पर से फिसल आये रूमाल ठीक करने लगी, कारिन्दा भी जेबो म से हाथ निकाल कर मुस्कराने लगा।

जो कुछ हुआ था वह यह था। कारिन्दे का कहना था कि किसान लोग अक्सर अपने बछडे, और कभी कभी गौए भी, ज़मीदार के मैदान म चरने के लिए छाड देते हैं। इन दो औरतो के घरा की दो गौए मैदान म चरती पायी गयी। उन्हे हाक कर बाडे मे ले जाया गया। कारिन्दे ने औरता पर फी गाय तीस तीस कोपेक जुर्माना कर दिया, और कहा कि अगर पसे नही देना चाहती हो तो दो दो दिन काम करो। औरतो ने जवाब दिया कि गौए खुद मैदान मे चली गयी, इसमे हमारा कोई दोष नही। हमारे पास पसे नही हैं। गौए वापस कर दो, उन पर दया करो, देखो, वे सुबह से भूखी खडी डकार रही है। जो कहोगे तो हम बाद मे जुर्माना भी दे देंगी।

"मैं बार बार तुम्हारी मिन्नते कर चुका हू कि जब दोपहर को अपने ढोर घर वापस ले जाया करो, तो उन पर नज़र रखा करो" नेख्लूदोव की ओर देखते हुए कारिन्दा मुस्करा कर कहने लगा मानो उसे अपना गवाह बना रहा हो।

"मैं अपने नन्हे को पकडने के लिए उसके पीछे भागी। मरी पीठ हुई कि वे मैदान म घुस गयी।"

"जब ढोर देखने का जिम्मा लिया है तब भागना तो नहीं चाहिए।"

"मेरे बच्चे को कौन दूध पिलाता? क्या तुम पिलाते?"

"अगर गौएं मैदान मे नुकसान करती तब तो कोई बात था, पर वे तो मिनट भर के लिए अन्दर गई थी," दूसरी औरत बोली।

"सभी मैदान चौपट हो गये है," नेख्लूदोव की ओर देखते हुए कारिन्दे ने कहा। "मैं जुर्माना नही करूं तो घास का तिनका भी नहीं बचेगा।"

"यह पाप मत करो, झूठ नही बोलो। मेरी गौएं कभी भी पहले वहां गई हैं?" गर्भवती स्त्री ने चिल्ला कर कहा।

"आज तो गई थी। बस, जुर्माना अदा करो या बदले मे मजूरी करो।"

"अच्छी बात है, मैं मजूरी कर दूंगी। अब गाय मेरे हवाले करो। उसे भूखा तो नही मारो," उसने गुस्से से कहा। "या मैं कौन सा सुखी हूं न दिन को चैन है न रात को। सास बीमार और घर वाला शराबी। सारा काम मुझे करना पडता है, और शरीर मे ताकत नहीं। भाड़ मे जाओ तुम और तुम्हारे जुर्माने!"

नेख्लूदोव ने कारिन्दे को गौएं लौटा देने को कहा और खुद बाग मे वापस लौट गया, ताकि फिर अपनी समस्या पर विचार कर सके। पर सोचने के लिए बाकी रह ही क्या गया था? उसे हर बात इतनी स्पष्ट जान पडती थी कि वह हैरान था कि सब लोग उसे क्या नही देख पाते, और वह स्वय भी उस बात को पहले क्यो नही देख पाया, जो अब इतनी स्पष्ट लग रही है।

'लोग मर रहे हैं। मरने का एक क्रम चल रहा है, और वे उनके अभ्यस्त हो गये हैं। इसी के अनुसार उन्होने अपने जीवन को भी ढाल लिया है। अनगिनत बच्चे मर जाते हैं, स्त्रियां काम के बोझ के नीचे पिस रही है, लोगों को भर-पेट खाना नहीं मिलता, विशेष रूप से बूढ़ों को। धीरे धीरे लोगों की यह स्थिति हो गई है कि वे इसकी बीभत्सता को नहीं देख पाते, और कोई शिकवा शिकायत नहीं करते। इसलिए हम भी यह समझते हैं कि उनकी स्थिति स्वाभाविक और न्यायोचित ही है।" अब यह बात उसके लिए सर्वथा स्पष्ट हो गई थी कि जनता के घोर दारिद्र्य का मुख्य कारण यही है कि जिस जमीन से उनका पालन-पोषण हो सकता था, उसे जमींदारों ने हथिया लिया है। किसान स्वयं यह बात जानते हैं

और हमेशा इसकी ओर सकेत भी किया करते थे। बात बिल्कुल स्पष्ट थी कि बच्चे और बूढ़े इसलिए मर रहे ह कि उन्हे दूध मुयस्सर नही होता। और दूध इसलिए मुयस्सर नही होता कि उनके पास गोचर भूमि नही है, न ही जमीन है जिस पर वे अनाज या चारा पैदा कर सके। लोगो के सभी क्लेशो का स्वत स्पष्ट कारण यही है—या कम स कम उनके सारे दुख दर्द का मुख्य कारण यही है कि जो जमीन उनका पेट पाल सकती है, वह उनके अपने हाथ म नही ह। इसके विपरीत वह उन लोगो के हाथ म ह जो भूमि के स्वामित्व का लाभ उठाते हुए इन लोगो की मेहनत पर जीते हैं। यह भूमि लोगो के लिए अत्यावश्यक ह। उससे वचित हो जान पर व मरा लगते हैं। उसी भूमि पर भूखे पेट रह कर ये लोग काश्त करते हैं ताकि अनाज विदेश मे जा कर बिके और भूमि के स्वामी टोप और छडिया, घोडे-गाडिया और कास की मूर्तिया खरीद सके। नेख्लूदोव के लिए यह सारी बात कम ही स्पष्ट हो गयी थी, जैसे कि यह स्पष्ट था कि बाडे म बद घोडे अपने पैरो तले की घास खा चुकने के बाद दुबल होने लगेंगे और भूखो मरने लगेंगे जब तक कि उन्ह उस जमीन पर न जाने दिया जाय, जहा व अपने लिए चारा ढूढ सकते हो वर्तमान स्थिति अत्यन्त भयानक है और उसे कायम नही रहने देना होगा। उसे बदलने के साधन ढूढने होगे। यदि ऐसा नही कर सकते तो कम से कम उसम भाग नही लेना होगा। 'मैं उन्ह अवश्य ढूढूगा" बच के पेडो के नीचे टहलते हुए नेख्लूदोव सोच रहा था। "वैज्ञानिक क्षेत्रो, सरकारी दफ्तरो, और अखबारो इत्यादि म हम लोगो की दरिद्रता के कारणो की चर्चा करते हैं तथा उसे दूर करने के साधनो पर विचार करते ह। परतु उनकी स्थिति को सुधारने का जो एक मात्र निश्चित साधन है—उन्हे जमीन लौटा देना जिसकी उन्ह बेहद जरूरत है—उसकी चर्चा कभी नही करते।"

नेख्लूदोव को हैनरी जार्ज का मूल सिद्धान्त याद हो आया। कोई जमाना था जब इस सिद्धान्त स वह बेहद प्रभावित हुआ था। वह हैरान था कि उसे भूल कैसे गया। "भूमि पर किसी का स्वामित्व नही हो सकता। जिस भाति जल, वायु तथा धूप का क्रय विक्रय नही किया जा सकता, उसी भाति जमीन को भी खरीदा और बेचा नही जा सकता। इससे प्राप्त होने वाले लाभ पर सभी का समान अधिकार ह।' अब उसकी समझ मे आया कि कुजिमिन्स्कोय के प्रबन्ध म उसे क्या लज्जा का अनुभव हो

रहा था। वह अपने को धोखा देता रहा था। यह जानते हुए कि ज़मीन के स्वामित्व का अधिकार किसी का भी नही होना चाहिए, फिर भी उसने अपने लिए इस अधिकार को स्वीकार किया था, और किसानों को एक ऐसी चीज़ का एक भाग दिया था जिस पर स्वय उसका कोई अधिकार नही था। उसका अन्ततम इस बात को जानता था। यहा पर वह वही बात नही दोहरायेगा, बल्कि, कुज़िमस्कोये वाले प्रबध को भी बदल देगा। उसने मन ही मन एक योजना तैयार की, जिसके अनुसार वह ज़मीन किसानो को लगान पर दे देगा, और उनके सामने यह स्वीकार करेगा कि जो लगान वे देंगे उस पर उन्ही का अधिकार रहेगा, और वे उस टैक्स अदा करने तथा सामूहिक हित के कामो के लिए ही इस्तेमाल करेंगे। यह Single tax* तो नही होगा, परन्तु आधुनिक परिस्थितियो में यह उस प्रणाली के निकटतम अवश्य होगा। मुख्य बात यह थी कि वह भू-स्वामित्व का लाभ उठाने से इन्कार कर रहा था।

जब नेख्लदोव लौट कर आया तो कारिन्दे ने उसे भोजन करने को कहा। इस समय भी वह मुस्करा रहा था, और यह मुस्कान विशेषतया हर्षपूर्ण थी। उसकी पत्नी ज़ियाफ़त तैयार कर रही थी, और इसमे उस लडकी की मदद ले रही थी जिसके कानो मे रेशमी फुनगे थे। कारिन्दे को डर था कि यदि भोजन करने मे देरी हो गयी, तो भाजिया बहुत ज़्यादा उबल जायेंगी।

मेज पर गाढे का मेज़पोश बिछा था। नैप्किन की जगह एक तौलिया रखा हुआ था जिस पर कढाई का काम हुआ था। एक पुराने सस्ते बर्तन म जिसका दस्ता टूटा हुआ था आलुओं का शोरबा रखा था। शोरबे मे मुर्ग के टुकडे तैर रहे थे। यह वही मुर्ग था जिसने फडफडा कर अपनी काली टाग खीची थी। अब उसे काट डाला गया था, या यो कहें कि टुकडे कर डाले गये थे, और किसी किसी टुकडे पर अब भी उसके बाल मौजूद थे। शोरबे के बाद फिर यही बालो वाला मुर्ग परोसा गया। इस की दूसरी टुकडे भून कर रखे गये थे। उसके बाद दही म तैयार की गयी पञ्जिया रखी गयीं, उनमे से घी चू रहा था, और वे शक्कर डाली गई थीं। इस भोजन या खाने मे किसी की तनिक भी रुचि नहीं हो सकती

*एकीकृत कर (अंग्रेज़ी)

थी, लेकिन नेख्लूदोव इसे खाता गया। इसके जायके की ओर उसका ध्यान तक नही गया। जब वह गाव मे से लौट कर आया था तो वह उदास था, लेकिन एक विचार ने उस सारी उदासी को छिन्न भिन्न कर दिया था। और भोजन करते समय यही विचार उसके मन मे घूम रहा था।

मेज पर वही सहमी हुई लडकी भोजन ला रही थी जिसने कानो मे फुनगे लटका रखे थे। कारिन्दे की पत्नी बार बार दरवाजे पर आ कर अन्दर झाक जाती, और कारिन्दा बराबर मुस्कराये जा रहा था, वह फूला नही समा रहा था, और मन ही मन इस बात पर गर्व कर रहा था, कि उसकी पत्नी कैसी अच्छी रसोई बना लेती है।

भोजन समाप्त हुआ, और नेख्लदोव आखिर किसी तरह कारिन्दे को अपने पास बिठा पाया। उसे बिठाना आसान नही था। नेख्लूदोव अपनी योजना पर फिर एक बार विचार करना चाहता था और किसी को सुनाना चाहता था। इस कारण उसने किसानो को जमीन देने की अपनी योजना कारिन्दे को सुनाई और उससे उसकी राय पूछी। वह मुस्कराता रहा, मानो मुद्दत से उसने स्वय यही बात सोच रखी हो और अब उसे नेख्लूदोव के मुह से सुन कर खुश हो रहा हो। लेकिन वास्तव मे उसके पल्ले कुछ भी नही पडा था। इसलिए नही कि नेख्लूदोव ने अपने विचार स्पष्टता से नही समझाये थे, बल्कि इसलिए कि नेख्लूदोव दूसरो के लाभ के लिए अपना लाभ त्याग कर रहा था। कारिन्दे के दिमाग मे यह धारणा जड पकड चुकी थी कि हर व्यक्ति को केवल अपने लाभ का और दूसरो के नुक्सान का ही ख्याल होता है। इसलिए जब नेख्लूदोव ने बताया कि भूमि से प्राप्त होने वाली सारी आय से किसानो की सामूहिक पूजी तैयार की जायेगी तो उसने सोचा कि यह बात उसकी समझ म नही आ रही है।

"जी, समझा, तो आपको इस पूजी मे से हिस्सा मिलता रहेगा," कारिन्दे ने कहा। उसका चेहरा खिल उठा।

"अरे नही भाई, नही, जमीन व्यक्तिगत रूप से अलग अलग व्यक्तियो की मिलकियत नही हो सकती। आया समझ मे?"

"जी आ गया।"

"इस तरह जमीन की सारी उपज पर सबका अधिकार होगा।"

"तो फिर आपको कुछ नही मिलेगा?" कारिन्दे ने कहा। उसकी हंसी उड गई थी।

"नही, उसे मैं छोड रहा हू।"

कारिंदे ने ठण्डी उसास भरी, और फिर मुस्कराने लगा। अब बात उसकी समझ मे आ गयी थी। जाहिर है नेख्लदोव का दिमाग ठीक नहीं है। वह फौरन इस बात पर विचार करने लगा कि नेख्लूदोव की नई योजना से, जिसके अनुसार वह अपनी ज़मीन सौंप देगा, वह अपने लिए क्या लाभ निकाल सकता है। वह इस योजना को अपने लाभ की दृष्टि से देखने लगा।

पर जब उसने देखा कि यह भी सभव नही तो उसका चेहरा लटक गया, योजना मे उसकी रुचि जाती रही। अब भी जो वह मुस्करा रहा था तो केवल मालिक को खुश करने के लिए। यह देख कर कि कारिन्दे की समझ मे उसकी बात नही आ रही है, नेख्लूदोव ने उसे वहा से भेज दिया, और स्वय मेज के सामने बैठ कर अपनी योजना को कागज पर लिखने लगा। मेज़ जगह जगह से कटी-छिली थी और स्याही के धब्बो से गन्दा हो रही थी।

लाइम-वृक्षो के पीछे, जिन पर नयी हरियावल छायी थी, सूरज डूब गया। कमरे मे धडाधड मच्छर आने लगे, और नेख्लूदाव को काटने लगे। ज्यो ही उसने अपनी टिप्पणियो को लिखना समाप्त किया तो उस गाव की ओर से आती आवाज़े सुनाई दी। ढोर डकार रहे थे और फाटक चर्रा कर खुल रहे थे। इसके अतिरिक्त किसानो की आवाज़ें थी जो मीटिंग के लिए इकट्ठे हो रहे थे। नेख्लूदोव ने कारिंदे को कह रखा था कि वह किसानो को दफ्तर मे नही बुलाय, क्योकि वह स्वय गाव मे जा कर उसी स्थान पर उनसे मिलना चाहता था जहा पर वे इकट्ठे हुए थे। जल्दी जल्दी एक प्याला चाय पी कर, जो कारिन्दे ने उसे ला कर दिया, नेख्लूदोव गाव की ओर चल पडा।

७

गाव के मुखिया के घर के सामन भीड खडी थी, और लोगो के बतियाने की आवाजें आ रही थी। पर ज्यो ही नेख्लूदोव वहा पहुचा तो सब चुप हो गये। किसानो ने सिर पर से टोपिया उतार ली, उसी तरह

जिस तरह कुज्मिस्कोये के किसानो ने किया था। यहा के किसान कुज्मिस्कोये के किसानो से भी अधिक गरीब थे। लडकिया और स्त्रिया कानो मे सिर्फ रेशमी फुनगे लटकाये हुए थी, पुरुषो ने पावो मे छाल के जूते पहन रखे थे और बदन पर गाढे के कुर्ते और कोट लगाये थे। कुछेक ने केवल कुर्ते पहन रखे थे और पावो से नगे थे। जिस तरह वे काम पर से लौटे थे उसी तरह सीधे यहा चले आये थे।

नेख्लूदोव ने भाषण देने की कोशिश की, और कहने लगा कि मैं अपनी ज़मीन पूर्णतया आप लोगो को सौंप देना चाहता हू। किसान चुपचाप सुनते रहे, उनके चेहरो पर कोई भाव-परिवर्तन नही आया।

"मैं यह मानता हू, और मेरा यह दृढ विश्वास है," नेख्लूदोव ने लजाते हुए कहा, "कि जो आदमी ज़मीन पर काम नही करता, उसे ज़मीन का मालिक बनने का कोई अधिकार नही। और हर इन्सान का हक है कि वह ज़मीन का इस्तेमाल करे।"

"ठीक बात है, बिल्कुल सच है," कुछेक लोगो की आवाज़ें आयी।

नेख्लूदोव ने कहा कि ज़मीन से जो आमदनी होगी उसे सबमे बाट देना चाहिए। मैं तुम्हे ज़मीन देता हू, और मेरी राय है कि तुम लोग खुद ज़मीन का मोल लगा कर उस पर लगान का निश्चय करो। और यह लगान की रकम सबके साझे इस्तेमाल के लिए एक जगह जुडती जायेगी। भीड मे से समर्थन की आवाज़ें अब भी आ रही थी, लेकिन किसानो के गभीर चेहरे और भी गम्भीर हो गये थे। जो लोग पहले ज़मीदार की ओर देख रहे थे, उन्होने आखें नीची कर ली, मानो ज़मीदार की कपट चाल को समझ गये हो और उसे यह दिखा कर कि वे उसके जाल मे नही फसेगे, उसे शरमिन्दा नही करना चाहते हो।

नेख्लूदोव ने अपनी बात बडे स्पष्ट शब्दो मे कही थी। किसान भी समझदार थे। लेकिन फिर भी वे उसकी बात को नही समझे, और न ही समझ सकते थे। कारण वही रहा होगा जिस कारण कारिन्दा अभी तक उसकी बात को नही समझ पाया था। उन्हे पूर्ण विश्वास था कि प्रत्येक मनुष्य स्वभावत अपने ही हित की बात सोचता है। कई पुश्तो के अनुभव ने उन पर यह बात सिद्ध कर दी थी कि ज़मीदार सदा अपने हित का सोचते हैं और उनसे सदा किसानो का अहित होता है। इसलिए आज जो ज़मीदार ने मीटिंग बुलाई है जिसमे वह कोई नई तजवीज़ उनके सामने

रखना चाहता है, तो उसका एक ही अभिप्राय हो सकता है कि वह पहले से भी अधिक धूतता के साथ उन्हें ठगना चाहता है।

"तो बोलो जमीन का क्या लगान लगाओगे?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"हम कैसे मोल लगा सकते हैं? हम नही लगा सकते। जमीन आपकी है, और ताकत भी आपके हाथ मे है," जवाब मे भीड म से कुछक आवाजें आयी।

"नही, नही, जो रकम इकट्ठी होगी उसे तुम सब साझे खच के लिए उठा सकोगे।"

"हम ऐसा नही कर सकते। ग्राम-समुदाय एक बात है, और यह बिल्कुल दूसरी बात है।"

"क्या तुम यह नही समझते," कारिन्दे ने मुस्कराते हुए कहा (वह मीटिंग मे नेख्लूदोव के पीछे पीछे चला आया था) "कि प्रिंस लगान पर तुम्हे जमीन दे रहे हैं, और लगान की रकम तुम्ही को वापस भी लौटा रहे हैं ताकि उस रकम से ग्राम-समुदाय की साझी पूजी बनती जाय?"

"हम खूब समझते हैं," आखें ऊपर उठाये बिना एक बूढा बोला, जिसके मुह मे दात नही थे। "यह भी बैंक ही की तरह की चीज है, और क्या? हमे मुकरर वक्त पर पैसे देने होगे। हम यह नही चाहते। पहले ही हमारे लिए मुश्किले कम नही है, इससे तो हम बिल्कुल तबाह हो जायेंगे।"

"यह नही चलेगा। हमारे लिए वही रास्ता ठीक है जिस रास्ते हम चलते आये है," कई एक लोगो की आवाजें आयी। उनकी आवाज मे असन्तोष और धृष्टता थी।

और जब नेख्लूदोव ने कहा कि वह एक करारनामा तैयार करेगा जिस पर उसे और सब किसाना को दस्तखत करना होगा तब तो किसानो का विरोध और भी तीव्र हो उठा।

"दस्तखत किस बात का? हम जिस तरह पहले काम करते रहे हैं, उसी तरह अब भी करते जायेंगे। इस सबका क्या मतलब है? हम कुछ जानते-समझते नही।"

"हमे यह मजूर नही। हमारे लिए यह बिल्कुल नयी चीज है। जैसे पहले चलता रहा है वैसे ही अब भी चलने दीजिये। हा, हम चाहते हैं कि हम बीज नही देना पडे।"

इसका मतलब यह था कि मौजूदा प्रबंध मे बीज किसानो को देना पडता था, अब वे चाहते थे कि बीज जमीदार दे।

"तो क्या मैं यह समझ् कि तुम लोग जमीन लेने से इन्कार करते हो?" नेख्लूदोव ने एक वयस्क किसान से पूछा जो चेहरे से समझदार लगता था। उसके पावो मे जूते नही थे, एक फटा-पुराना कोट पहने वह बायें हाथ मे फटी-पुरानी टोपी उठाये इस अन्दाज़ से सीधा खडा था जिस अन्दाज़ मे सिपाही खडे होते हैं जब उन्हे टोपी उतारने का हुक्म होता है।

"जी, ठीक है," किसान बोला। प्रत्यक्षत उस पर से फौज की नौकरी का जादू अभी तक नही उतरा था।

"क्या इसका मतलब यह है कि तुम्हारे पास काफी जमीन है?" नेख्लूदोव ने कहा।

"नही, हुजूर, हमारे पास काफी जमीन नही है," भूतपूर्व फौजी ने जवाब दिया। उसके चेहरे पर बनावटी खुशी का भाव था, और वह अपनी फटी-पुरानी टोपी सामने की ओर किये हुए खडा था, मानो कह रहा हो कि जिसे जरूरत हो, ले ले।

"फिर भी जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, उस पर विचार करना," नेख्लूदोव ने हैरान हो कर कहा और फिर एक बार अपनी तजवीज़ दोहरा कर सुना दी।

"हमे विचार करने की कोई ज़रूरत नही है। जो कुछ हमने कहा है, वही होगा," दतहीन, गुस्सैल बूढे ने बडबडा कर कहा।

"मैं कल तक यही पर रहूगा। अगर तुम्हारा ख्याल बदल जाय तो तुम मुझे इत्तला करना।"

किसानो ने कोई जवाब नही दिया।

इस तरह इस भेट द्वारा किसी भी परिणाम तक पहुचने म नेख्लूदोव सफल नही हुआ।

जब नेख्लूदोव घर पहुचा तो कारिदा उससे कहने लगा—

"इजाजत हो तो मैं एक बात कहू, प्रिस। इस तरह आप किसानो के साथ किसी भी फैसले पर नही पहुच पायेंगे। ये लोग बडे ज़िद्दी होते है। मीटिंग मे ये लोग एक बात पर अड जाते है और उससे टस से मस नही होते। कारण यह है कि इन्हे हर बात से डर लगता है। लेकिन यही किसान—जैसे वह सफेद बालो वाला, या वह सावले रग वाला किसान—

समभदार लोग हैं। जब इन्ही मे से कोई दफ्तर मे आता है, और हम उसके आगे चाय का प्याला रखते हैं, तो उसका मन इस तरह चलने लगता है जैसे वह कोई राजनीतिज्ञ हो," उसने मुस्कराते हुए कहा। "हर बात पर वह ठीक तरह से विचार करेगा। लेकिन मीटिंग मे वह बदल जाता है, वह आदमी नही रहता। यहा वह एक ही बात की रट लगाए रहता है।"

"जो लोग इनम से ज्यादा समझदार हैं, क्या उन्ह यहा पर नहा बुलाया जा सकता?" नेख्लूदोव ने कहा, "मैं अपनी तजवीज़ ज्यादा ध्यान से उन्ह समझाऊगा।"

"यह हो सकता है," मुस्कराते हुए कारिन्दे ने कहा।

"ठीक है, तो उन्ह कल बुला लो।"

"ज़रूर, मैं ज़रूर बुला लूगा," कारिन्दे ने कहा और पहले से भी अधिक खुशी के साथ मुस्कराया। "मैं उन्ह कल बुला लूगा।"

"उसकी बात सुनो तुम। बडा सीधा बनता है," दो घोडा पर साथ साथ जाते दो किसानो मे से एक किसान ने कहा। सिर पर काले बाल, अस्त व्यस्त दाढी, वह अपनी मोटी-ताज़ी घोडी की पीठ पर बैठा दायें से बायें हिचकोले खा रहा था। जिस आदमी से वह बात कर रहा था वह बूढा था और फटा हुआ कोट पहने था। रात का वक्त था और ये दोनो आदमी किसाना के घोडो के एक झुण्ड को घास चराने के लिए ले जा रहे थे। प्रत्यक्षत तो वे उन्ह बडी सडक के किनारे किनारे घास चरा रहे थे लेकिन उनका अभिप्राय यह था कि लुक छिपकर ज़मीदार के जगल मे चरने के लिए ले जायेंगे।

"हम मुफ्त मे तुम्ह ज़मीन दे देंगे, बस इधर दस्तखत कर दो—ये पहली बार थोडे ही हमे झासा देने की कोशिश कर रहे हैं। हम उनके साथ पहले भी कई बार यह दाव खेले जा चुके हैं। नहीं, भले आदमी, अब हम तुम्हारे झासे मे नही आने के। अब हमे कुछ अक्ल आ गई है," उसने कहा और एक बछेडे को हाक लगाने लगा जो भटक कर पीछे रह गया था।

उसन अपना घोडा रोक लिया और आस-पास देखने लगा। बछेडा पीछे नही रह गया था, वास्तव मे वह सडक के किनारे एक चरागाह म घुस गया था।

"देखो उस बदजात को, जमीदार की चरागाहो मे घुसने लगा है," सावले रग वाला किसान बोला जिसकी दाढी के बाल बिखरे हुए थे। बछेडा हिनहिनाता हुआ महकती चरागाह मे चके के डण्ठना को रौंदता भागा चला जा रहा था। उसके पावो के नीचे डण्टल चरमरा रहे थे।

"यह चरमर सुन रहे हो? किसी छुट्टी के दिन औरता को चरागाह मे भेजना होगा कि आ कर यहा से मोथा साफ कर जाय," पतले किसान न कहा जिसने फटा हुआ कोट पहन रखा था, "वरना यहा हमारी दरातिया टूट के रहेंगी।"

"कहता है 'दस्तखत करो' " जमीदार के भाषण पर टिप्पणी कसते हुए बिखरी दाढी वाला किसान कहने लगा, "'दस्तखत करो', जी जरूर ताकि तुम हमे जिन्दा ही हडप कर जाओ!"

"यह तो पक्की बात है," बूढे ने जवाब दिया।

फिर दोनो चुप हो गये। बडी सडक पर केवल घोडा के चलने की आवाज आने लगी।

८

नेख्लूदोव ने लौट कर देखा कि दफ्तर मे ही उसके सोने का प्रबध कर दिया गया है। कमरे मे एक ऊचा पलग बिछाया गया है, जिस पर पखो का बिस्तर और दो बडे बडे तकिये लगा दिये गये हैं। बिस्तर के ऊपर गहरे लाल रग का बडा सा रेशमी लिहाफ रखा है। लिहाफ को बडी बारीकी से और बडे परिश्रम के साथ तागा गया था, प्रत्यक्षत कारिन्दे की जब शादी हुई थी तो उसकी पत्नी दहेज मे इसे अपने साथ लाई थी। कारिन्दे ने नेख्लूदोव से फिर भोजन करने को कहा। वह दिन के भोजन से बची हुई चीजें उसके सामने रखना चाहता था। लेकिन नेख्लदोव ने इकार कर दिया, जिस पर कारिन्दा अपने गरीबाना दस्तरखान और गरीबाना रहन-सहन के लिए माफी मागने के बाद नेख्लूदोव से विदा ले कर बाहर चला गया।

किसाना ने जमीन लेने से इकार कर दिया था लेकिन इससे नेख्लूदोव के मन को तनिक भी क्लेश नही पहुचा। कुज्मिस्कोये मे किसाना ने उसका प्रस्ताव स्वीकार किया था और उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट की थी। इसके

विपरीत यहा पर उसे सन्देह और विरोध का सामना करना पडा था। फिर भी उसका हृदय सन्तुष्ट और उल्लासित था।

दफ्तर बहुत साफ नही था, और उसमे घुटन महसूस होती थी। नेख्लूदोव बाहर आगन मे चला गया। वहा से वह बाग की ओर जा रहा था जब उसे वह रात याद आ गयी—दासियो के कमरे की वह खिडकी, और बगल वाला सायबान—और उसका मन विचलित हो उठा। वह उस स्थान के पास से हो कर नही जाना चाहता था, जिसके साथ इतना अनुतापपूर्ण स्मृतिया जुडी हुई थी। वह दरवाज़े के बाहर सीढियो पर बैठ गया और बाग के अधेरे मे देखने लगा। हल्की हल्की स्निग्ध हवा बह रही थी, और उसमे बर्च-वृक्षो के नये नये पत्तो की महक फैली हुई थी। पनचक्की की आवाज़ बराबर आ रही थी, बुलबुले गा रही थी, और नज़दीक ही किसी झाडी मे कोई पक्षी नीरस आवाज़ मे निरन्तर सीटी बजा रहा था। कारिन्दे के कमरे की खिडकी मे से रोशनी बुझ गई। पूर्व की ओर, खलिहान के पीछे, आकाश नवोदित चाद की ज्योत्स्ना से भरने लगा। बार बार बिजली चमकने लगी जिसकी रोशनी मे टूटा-फूटा घर और फूलो से लदा तथा झाड-झखाड से भरा बाग नज़र आने लगे। दूर से बादलो का गर्जन सुनाई देने लगा, और एक तिहाई आकाश मे घन बादल छा गये। बुलबुले और अन्य पक्षी चुप हो गये। पनचक्की मे से पानी की गडगडाहट सुनाई देती, किन्तु उससे भी अधिक कलहसो की चू चू सुनाई देने लगी। इसके बाद गाव मे तथा कारिन्दे के आगन मे मुर्ग बाग देने लगे। गर्मी के मौसम मे जब बादल गरजते हैं तो मुर्ग वक्त से पहले बाग देने लगते हैं। कहावत है कि अगर मुर्ग बाग जल्दी दें तो रात अच्छी गुज़रती है। नेख्लूदोव के लिए रात सुखद ही नही, उल्लसित और आह्लादपूर्ण भी हो उठी थी। उसकी कल्पना जाग उठी और उसे वे दिन याद आने लगे जब लडकपन मे उसने यहा गर्मियो का मौसम व्यतीत किया था। वे दिन कितने खुशियो से भरे थे, और वह कितना सरल बालक हुआ करता था! मन ही मन वह फिर अपने को वैसा ही महसूस करने लगा, न केवल उस समय ही बल्कि ऐसे सब अवसरो पर जिन्हे वह अपने जीवन की सर्वोत्कृष्ट घडिया समझता था। उसे वह दिन याद हो आया—याद ही नही, वह वैसा ही महसूस भी करने लगा—जब चौदह वर्ष की उम्र मे उसने भगवान् से प्रार्थना की थी कि मुझे सत्य के दर्शन कराइये।

या वह घडी जब मा से विदा होते समय वह उसकी गोद मे सिर रख कर रोया था और उसे वचन दिया था कि मैं कभी भी कोई बुरा काम नही करूगा, और कभी आपको क्लेश नही पहुचाऊगा। उसके हृदय मे फिर वही भावनाए जाग उठी, जब निकोलेका इर्तेनेव के साथ मिल कर उसने शपथ ली थी कि स्वच्छ, सदाचारी जीवन व्यतीत करने मे सदा एक दूसरे की मदद करेंगे और सबको खुश रखने की कोशिश करेंगे।

उसे याद आया कि किस तरह कुज्मिस्कोये मे वह प्रलोभन मे फसने लगा था, और उसे अपना घर, जगल, खेत और ज़मीन त्यागते हुए अफसोस होने लगा था। उसने मन ही मन पूछा कि क्या अब भी मुझे उनके लिए अफ्सोस हो रहा है? उसे यह सोच कर ही हैरानी हो रही थी कि उसे कभी अफसोस हुआ था। फिर आज की सब घटनाए उसकी आखो के सामने घूम गयी। बच्चो वाली वह मा जिसके पति को इसलिए जेलखाने मे ठूस दिया गया था कि उसने नेख्लूदोव के जगल मे से पेड काटा था। फिर उसे वह भयानक औरत मात्र्योना याद आई जो यह समझती थी—कम से कम उसकी बातो से तो ऐसा ही लगता था—कि कुलीन लोग यदि उस जैसी स्थिति की औरतो से व्यभिचार करना चाहे तो उन्हे विरोध नही करना चाहिए। बच्चो के प्रति उसका कैसा रुख था, किस तरह बच्चो को यतीमखाने मे पहुचाया जाता था। उसे वह अभागा चिथडो की टोपी वाला बच्चा याद हो आया जिसके सूखे हुए चेहरे पर मुस्कान खेल रही थी, और जो भूख के कारण धीरे धीरे मर रहा था। उसे वह दुबली-पतली, गर्भवती स्त्री याद आयी, जिसे विवश हो कर उसके लिए मज़दूरी करनी पडेगी, क्योकि कमर-तोड काम के कारण वह अपनी भूखी गाय की ओर ध्यान नही दे पायी थी। फिर सहसा उसे वह जेलखाना याद हो आया, बदियो के मुडे हुए सिर, कोठरिया, दुर्गन्ध, बेडिया-हथकडिया, और दूसरी तरफ शहर मे अमीरो की ऐशो इशरत से भरी ज़िन्दगी, जिसमे वह भी शामिल था। हर चीज़ नग्न स्पष्टता मे उसकी आखो के सामने घूम गइ।

खलिहान के ऊपर चाद उभर कर आ गया—लगभग पूर्णिमा का चाद, चमकता हुआ। आगन मे लम्बे लम्बे साये पडने लगे। उजडे हुए घर की लोहे की छत चमकने लगी।

बुलबुल फिर गाने लगी, मानो वह इस रोशनी का पूरा पूरा लाभ उठाना चाहती हो।

बुदिमिस्कोये मे उसका मन उलझन मे पड गया था। जो कदम वह उठाने जा रहा था उसका निश्चय करते समय उसे अपने जीवन का चिन्ता होने लगी थी। उसके लिए निश्चय करना कठिन हो गया था, एक एक सवाल पर कितनी ही कठिनाइया उठ खडी होती थी। उसने वहा सवाल अब फिर अपने से पूछे और देख कर हैरान रह गया कि सारी बात कितना सरल है। अब वह यह नही सोच रहा था कि इन कार्यों का परिणाम उसके अपने हित मे कैसा होगा, वह केवल अपने कर्तव्य का सोच रहा था। इसी लिए सारी बात सरल हो उठी थी। और अजीब बात यह था कि उसके लिए अपने हित की बात का निश्चय करना कठिन था, लेकिन जब वह सोचता कि उसे औरो के लिए क्या करना चाहिए तो उसके मन में कोई सशय नही रहता। उसे यकीन हो गया था कि उन किसानो को जरूर जमीन दे देनी चाहिए, क्योकि यदि वह नही देगा तो यह शर्म होगी। वह निश्चित तौर पर जानता था कि उसे कात्यूशा को कभी भी नही छोडना चाहिए, बल्कि उसकी निरन्तर सेवा करनी चाहिए तथा उसके प्रति किये गये अपने पाप का प्रायश्चित करना चाहिए। वह पक्के तौर पर जानता था कि मुकद्दमो और दण्डो के इस प्रश्न पर उसे अध्ययन करना चाहिए, इस सवाल का स्पष्टीकरण करना तथा उसे समझना चाहिए क्योकि उसका ख्याल था कि इसके प्रति उसका दृष्टिकोण और लोगो के दृष्टिकोण से भिन्न है। इस सबका क्या परिणाम होगा, वह नही जानता था, परन्तु इतना वह निश्चय जानता था कि यह काम उसे जरूर करना होगा। और इस दृढ आश्वासन से उसका हृदय उल्लास से भर उठता था।

सारा आकाश काले बादलो से ढक गया। चकाचौंध करने वाली बिजली बार बार चमकती, जिससे आगन तथा पुराना घर और उसके टूटे-फूटे सायबान स्पष्ट हो उठते। सिर पर बादल गरज रहे थे। पक्षी चुप थे, लेकिन पेडो के पत्ते सरसरा रहे थे, और जिन सीढियो पर नेख्लूदोव बैठा था, वहा हवा के झोके आने लगे थे और नेख्लूदोव के बालो सरसराने लगे थे। पहले बारिश की एक बूंद गिरी फिर दूसरी और तत्पश्चात बरडाक के बडे बडे पत्तो और लोहे की छत पर टपाटप बूंदें पडने लगी।

सारा वातावरण आलोकित हो उठा। और पलक मारने की देर थी कि सिर के ऊपर बिजली कड़की और उसकी भयानक कड़क दूर तक आकाश में गूंजती हुई सुनाई दी।

नेख्लूदोव अन्दर चला गया।

"ठीक है ठीक बात है," वह सोच रहा था "जीवन द्वारा कौन सा काम सिद्ध होता है, यह सारा काम, इसका अर्थ, यह सब मैं नहीं समझता, न ही समझ सकता हू। मेरी फूफियां किस लिए ससार म आयी थी? निकोलेंका इर्तेनेव की मृत्यु हो गई, और मैं जी रहा हू, यह क्यो? कात्यूशा के जीवन का प्रयोजन क्या था? और मेरा पागलपन? और उस जग का प्रयोजन? बाद मे मैं क्या वैसा अनियन्त्रित जीवन व्यतीत करने लगा? इसे समझना, भगवान् की इच्छा की पूरी थाह पाना मेरे बस की बात नही। परन्तु मेरे अन्त करण मे भगवान की जो इच्छा व्याप रही है, मैं उसका पालन करने म समर्थ हू। और इस इच्छा को मैं भली भाति जानता हू। और इस इच्छा का पालन करते समय मेरी आत्मा म शान्ति होती है।"

मूसलाधार बारिश होने लगी और छत पर से बह बह कर नीचे बने एक हौज़ म गिरने लगी। अब बिजली कम चमकने लगी थी, जिससे घर और आगन पर रोशनी कम पड़ती थी। नेख्लूदोव अन्दर चला गया और कपड़े उतार कर लेट गया। दीवार पर लगा हुआ कागज गन्दा हो रहा था और जगह जगह से फट रहा था जिस कारण उसे डर था कि यहां पर खटमल होगे।

"हा, मुझे स्वय को मालिक नही, सेवक समझना चाहिए," वह सोच रहा था और इस विचार से खुश हो रहा था।

वही बात निकली। बत्ती बुझाने की देर थी कि खटमल आ पहुंचे और उसे काटने लगे।

"ज़मीन दे दू और साइबेरिया चला जाऊ—पिस्सू, खटमल, गन्दगी! तो क्या हुआ? यदि यह अनिवार्य है तो मैं इसे सहन करूगा।" परन्तु अपने नेक इरादो के बावजूद भी वह सहन नही कर पाया। वह उठ कर खुली खिड़की के सामने बैठ गया। बादल छितरने लगे थे और चांद फिर निकल आया था। नेख्लूदोव मुग्ध नेत्रो से उनकी ओर देखने लगा।

६

सुबह जा कर यही नेख्लूदोव को नींद आयी, इसलिए जब वह उ
तो काफी देर हो गई थी।

दोपहर के समय किसानो के सात प्रतिनिधि, जिन्हें कार्ल्दे ने ब
कर बुला लिया था, फलो के बाग़ मे आ पहुचे। सेवा के पेडो के नीचे
ज़मीन मे छोटे छोटे खम्भे गाड कर और उन पर तख्ते रख के कार्ल
ने एक मेज़ और बेंचो का प्रबन्ध कर दिया था। बडी देर के बाद किसा
इस बात पर रजामद हो पाये कि वे अपनी टोपिया सिर पर पहन क
और बेंचो पर बैठ जायेंगे। सबसे ज्यादा हठ तो भूतपूर्व फौजी ने कि
जो आज छाल के जूते पहन कर आया था। वह तन कर खडा था औ
हाथ मे अपनी टोपी इस तरह उठाये हुए था जिस तरह फौज म अर्थी
समय उठाने का नियम है। उनमे से एक बूढ़े किसान ने जो शक्ल-सूरत
से बडा रोबदार लगता था, सिर पर अपनी बडी सी टोपी रख ली
और अपने इर्दगिर्द कोट लपटता हुआ मेज़ के पीछे आ कर बैठ गया।
चौडे कन्धे, उसकी दाढी में कुण्डल पडते थे जैसे मिकेल अजेलो द्वारा बनाई
गई तस्वीर म मोज़िस की दाढी मे हैं, और मवलाये ऊचे माथे पर सफे
घुघराले बालो की लट गिरती थी। उसे बैठते देख कर बाक़ी किसानो ने
भी सिर पर टोपिया रखी और बैठने लगे।

जब सब बैठ गये तो उनके सामने नेख्लूदोव भी आ कर बैठ गया।
मेज़ पर उसके सामने एक कागज रखा था जिस पर उसने अपनी योजना
लिख रखी थी। तनिक आगे की ओर झुकते हुए नेख्लूदोव ने अपनी बात
समझानी शुरू की।

अब की बार नेख्लूदोव के मन मे कोई उलझन नहीं थी। उसका
कारण शायद यह रहा हो कि आज किसानो की सख्या बहुत कम थी,
या शायद यह कि उसका ध्यान अपने काम की ओर ज्यादा था, और अपने
अह की ओर कम। उसने अपने आप ही उस चौडे कन्धो और घुघराली
दाढी वाले वृद्ध को सम्बोधित करना शुरू कर दिया। उसका ख्याल था
कि उसी की ओर से अनुमोदन अथवा आपत्ति के शब्द सुनने को मिलेगे।
लेकिन नेख्लूदोव का अनुमान गलत निकला। यह रोबदार आदमी, जो
वयोवृद्ध कुलपति लगता था, किसी किसी वक्त स्वीकृति मे अपना खूबसूरत

सिर हिला देता, और जब कोई किसान आपत्ति करता तो यह भी भौंहें चढा कर सिर हिलाता। लेकिन इसके बावजूद, उसे समझने मे प्रत्यक्षत बडी कठिनाई हो रही थी। जब और लोग नेख्लूदोव के शब्दो को अपने शब्दो मे दोहरा कर कहते तब कही कुछ उसके पल्ले पडता। इसी कुलपति के साथ ही एक टुइया सा बूढा आदमी बैठा था, जो इससे बेहतर समझ रहा था। उसने नेनकिन का कोट पहन रखा था जिस पर जगह जगह पैवद लगे थे। पावो मे पुराने बूट थे। एक आख से काना था, और दाढी खस्ता हो रही थी। बाद मे नेख्लूदोव को मालम हुआ कि यह आदमी भट्ठी बनाता है। यह आदमी अपनी भौंहे बडी तेज तेज हिलाता, बडे ध्यान से नेख्लूदोव के शब्द सुनता और सुनते ही उन्हें अपने शब्दो मे दोहरा लेता था। एक और आदमी भी बातो को उतनी ही जल्दी समझ रहा था। गठीले बदन का बूढा आदमी था, सफेद दाढी, पैनी आखें, व्यग करने का कोई मौका हाथ से नही जाने देता था। प्रत्यक्षत दिखावे के लिए ठिठोली करता था। भतपूर्व फौजी भी, जान पडता था कि बातो को समझ रहा है, लेकिन चूकि उसे केवल फौजियो का बकवाद सुनने की आदत थी, इसलिए वह उलझन मे पड जाता था। लेकिन जो आदमी बातो को सबसे अधिक गभीरता और ध्यान से सुन रहा था, वह था एक ऊचे-लम्बे कद का किसान, छोटी सी दाढी, लम्बी नाक और गहरी आवाज वाला। उसने घर के कते-बुने मगर साफ-सुथरे कपडे पहन रखे थे और छाल के नये जूते पहन कर आया था। इस आदमी के दिमाग मे हर बात बैठ रही थी, और वह तभी बोलता था जब जरूरत होती थी। इनके अलावा दो वृद्ध पुरुष और थे। एक तो वही बूढा था जिसके मुह मे दात नही थे और जो पहली मीटिंग में नेख्लूदोव की हर तजवीज को रद्द करता रहा था। दूसरा एक ऊचे-लम्बे कद का गोरा चिट्टा आदमी था जिसके चेहरे से सदभावना टपकती थी। यह आदमी लगडा था, और उसने अपनी पतली पतली टागो पर कस कर पट्टिया बाध रखी थी। वे दोनो बोलते बहुत कम थे, हालाकि हर बात को बडे ध्यान से सुन रहे थे।

नेख्लदोव ने सबसे पहले भूमि पर निजी स्वामित्व के बारे मे अपने विचार बताये।

"मेरे विचार मे भूमि का क्रय विक्रय नही हो सकता। यदि यह हो सकता हो तो जिस आदमी के पास पर्याप्त धन राशि होगी वह सारी की

सारी ज़मीन खरीद लेगा, और जिनके पास भूमि नही है, उन्हे इस्तेमाल के लिए दे कर उनसे मनमानी रकम ऐंठेगा। यहा तक कि वह ज़मीन पर खडा तक होने के पैसे ले सकेगा," स्पेंसर का तर्क दोहराते हुए उसने कहा।

"एक ही उपाय रह जायेगा—पख जोड लो और उडो," मफ्फ दाढी और हसोड आखो वाला बूढा बोला।

"सच है," लम्बी नाक वाले ने अपनी गहरी आवाज म कहा।

"बिल्कुल ठीक है," भूतपूर्व फौजी बोला।

"एक औरत अपनी गाय के लिए मुट्ठी भर घास उखाडता है, उसे पकड कर जेल मे ठूस देते है," नेकदिल लगडे आदमी ने कहा।

"हमारी अपनी ज़मीन तो यहा से पाच वेर्स्ता दूर है। लगान पर ज़मीन लेने के लिए हमारी तौफीक नही है लगान इतना बढा देते हैं कि उससे हमारे लिए कुछ बचता ही नही है," चिडचिडे, दतहीन बूढे ने कहा, "वे हमारे सरीर की रस्सिया बनाते हैं। यह तो ज़मीन-गुलामी से भी बुरा है।"

"मेरे भी वही विचार हैं जो तुम्हारे हैं। मैं ज़मीन की मिल्कियत को पाप समझता हू। इसलिए मैं उसे दे देना चाहता हू," नख्ल्यूदोव ने कहा।

"बडी अच्छी बात है," मिकेल अजेलो के मोज़िस के से घुघराले बालो वाले बूढे ने कहा। प्रत्यक्षत वह यह समझ रहा था कि नख्ल्यूदोव अपनी ज़मीन लगान पर देना चाहता है।

'मैं यहा इसलिए आया हू कि मैं ज़मीन का मालिक नही बने रहना चाहता। अब आइये इस बात पर विचार करे कि ज़मीन का कैसे बटवारा किया जाय।"

"किसानो के हवाले कर दीजिये, बस, चिडचिडे, दतहीन बूढे ने कहा।

क्षण भर के लिए नेख्लूदोव लज्जित सा अनुभव करने लगा। उसे महसूस होने लगा कि इस टिप्पणी का मतलब है इन लोगो को मेरे इरादों पर शक है। पर वह फौरन् सभल गया और इसी टिप्पणी का प्रयोग करते हुए अपना मतलब साफ करने लगा।

"मैं तो खुशी से दे दू," वह बोला, "मगर किसे दू और कैसे दू?

किस गाव के किसानो को दू? तुम्हारे गाव को क्यो दू और द्योमिस्कोये के किसानो को क्यो नही दू?" (यह पडोस मे एक गाव का नाम था जहा बहुत कम जमीन थी।)

सब चुप रहे, केवल भूतपूर्व फौजी ने कहा—

"बिल्कुल ठीक है।"

"अच्छा," नेख्लूदोव ने कहा, "तो अगर जार कहे कि जमीदारो से सारी की सारी जमीन ले कर किसानो मे बाट दी जायेगी, तो इसे आप कैसे करेगे?"

"कोई अफवाह है क्या?" उसी बूढे ने पूछा।

"नही, जार ने कुछ नही कहा है। मैं वैसे ही अपनी ओर से कह रहा हू अगर जार कहे जमीदारो से सारी जमीन ले कर किसानो मे बाट दी जाय, तो तुम लोग यह कैसे करोगे?"

"कैसे करेगे? बस, बराबर बराबर बाट लेगे। इतनी इतनी जमीन हर आदमी के लिए, चाहे वह किसान हो या जमीदार," भट्ठी बनाने वाले ने कहा। वह जब बात करता तो अपनी भवे बडी तेजी से उठाता और गिराता था।

"और कौन सा तरीका है? बस फी आदमी इतना इतना दे दो," दयालुस्वभाव लगडा बोला, जिसने टागो पर सफेद पट्टिया बाध रखी थी।

सबने इस बात का समर्थन किया, सबको यह सन्तोषजनक लगी।

"फी आदमी इतना दे दो? तो क्या घर के नौकरो को भी हिस्सा दोगे?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"नही हुजूर," भूतपूर्व फौजी बोला। वह बडा लापरवाह और खुशमिजाज नजर आने की कोशिश कर रहा था।

लेकिन ऊचे कद का समझदार आदमी उससे सहमत नही हुआ।

"अगर बाटना हो तो सबको एक जैसा हिस्सा मिलना चाहिए," थोडी देर सोचते रहने के बाद वह अपनी गहरी आवाज मे बोला।

"यह नही हो सकता," नेख्लूदोव ने कहा। उसने अपना जवाब पहले से तैयार कर लिया था। "अगर सबका एक जैसा हिस्सा मिले तो जो लोग काम नही करते, खुद हल नही चलाते, वे अपना हिस्सा अमीर लोगो को बेच देंगे—जैसे, मालिक और नौकर, बावर्ची, अधिकारी, क्लर्क, सभी शहरी लोग। नतीजा यह होगा कि जमीन फिर अमीर लोगो के हाथ

मे चली जायेगी। जमीन पर काम करने वालो की सख्या बढती ही जायेगी और जमीन का मिलना मुश्किल होता जायेगा। इस तरह श्रमा लोगो का फिर उन लोगो पर अधिकार हो जायगा जिन्हे जमीन की जरूरत होगी।"

"बिल्कुल ठीक है," भूतपूर्व फौजी बोल उठा।

"जमीनो को बेचने की मनाही कर दो। जमीन केवल उसी को मिले जो उस पर हल चलाता हो," भट्ठी बनाने वाला झल्ला कर बीच मे बोल उठा।

इसका जवाब नेख्लूदोव ने यह दिया कि यह जानना असभव है कि कौन आदमी अपने लिए हल जोत रहा है, और कौन किसी दूसरे के लिए।

ऊचे कद वाले समझदार आदमी ने सुझाव दिया कि ऐसा व्यवस्था की जाय जिससे सब मिल कर हल जोते। जो जोतें उन्हे जमीन मिले, और जो नही जोते उन्हे कुछ नही मिले।

इस साम्यवादी योजना का जवाब भी नेख्लूदोव के पास तयार था। वह कहने लगा कि ऐसी व्यवस्था के लिए जरूरी होगा कि सबके पास हल हो, सबके पास बराबर सख्या मे घोडे हो, ताकि कोई पीछे न रह जाय। हल, घोडे, अनाज निकालने की मशीनें तथा बाकी सब औजार साझे होने चाहिए। लेकिन ऐसा आप तभी कर सकते हैं जब सभी लोग सहमत हो।

"हमारे लोगो को मनाना कौन सा आसान काम है। मरते दम तक सहमत नही होगे," चिडचिडे स्वभाव वाला बूढा बाला।

"रोज लडाइया होगी," हसोड आखो वाले बूढे ने कहा। "औरतें एक दूसरी की आखें नोच डालेगी।"

"जमीन की समानता के बारे मे फिर क्या कहते हो?" नेख्लूदोव ने पूछा, "एक आदमी को उपजाऊ जमीन मिले और दूसरे को ऐसी जिसमें रेता और कीच हो, ऐसा क्यो?"

"यह बात है तो जमीन के छोटे छोटे टुकडे बनाये जायें, और सबका हिस्से मे बराबर बराबर टुकडे मिले," भट्ठी बनाने वाला बोला।

इसके जवाब मे नेख्लूदोव ने कहा कि वह केवल एक ही ग्राम म जमीन के बटवारे की बात नही सोच रहा है, बल्कि अलग अलग गुबेर्नियाओं में जमीन के व्यापक बटवारे की। यदि जमीन किसानो मे मुफ्त बाटी जायेगी

तो फिर कुछ किसानो को अच्छी और कुछ को बुरी जमीन क्या मिले? सभी की इच्छा होगी कि उन्हें अच्छी जमीन मिले।

"बिल्कुल ठीक है," भूतपूर्व फौजी ने कहा।

बाकी लोग चुप रहे।

"इसका मतलब है कि यह बात इतनी आसान नही है जितनी कि नजर आती है," नेख्लूदोव ने कहा। "पर इस सवाल के बारे में केवल हम ही नही बल्कि बहुत से लोगो ने विचार किया है। मसलन हैनरी जार्ज नाम का एक अमरीकी है, मैं उससे सहमत हूं। उसका विचार यह था कि "

"आप तो मालिक हो, जैसे चाहो जमीन दे सकते हो। आपको कौन रोक सकता है? ताकत आपके हाथ में है," चिड़चिड़े स्वभाव वाले बूढ़े ने कहा।

इस वाक्य को सुन कर नेख्लूदोव सकपका गया। मगर उसे यह देख कर खुशी हुई कि केवल वही इस बाधा पर नाराज नही हुआ था।

"बीच मे नही बोलो, चाचा सेम्योन, उन्हें बात कर लेने दो," समझदार आदमी ने अपनी गहरी, रोबीली आवाज मे कहा।

इससे नेख्लूदोव को हौसला हुआ और वह हैनरी जार्ज द्वारा प्रतिपादित उस पद्धति की व्याख्या करने लगा जिसके अनुसार जमीन पर एक ही कर लगाया जाना चाहिए।

"धरती भगवान् की है, धरती किसी आदमी की नही है," वह कहने लगा।

"ठीक है, बिल्कुल ठीक है," एक साथ कई आवाजें आयी।

"जमीन सबकी साझी है। सभी को उस पर समान अधिकार है। पर जमीन अच्छी भी है और बुरी भी है, सभी चाहेंगे कि उन्हें अच्छी जमीन मिले। अब यह किस भांति किया जाय ताकि बटवारा इन्साफ के साथ हो? तरीका यह है जो अच्छी जमीन का प्रयोग करे वह उस जमीन की लागत उन लोगो को अदा करे जिनके पास कोई जमीन नही है।" अपने ही प्रश्न का उत्तर देते हुए नेख्लूदोव कहने लगा, लेकिन यह कहना मुश्किल है कि कौन किसको पैसे दे, और सामूहिक जरूरतो को पूरा करने के लिए भी पैसे की जरूरत है, इसलिए प्रबन्ध ऐसा हो कि जो अच्छी जमीन का प्रयोग करे वह उस जमीन की कीमत ग्राम-समुदाय को उसकी

जरूरतों के लिए दे दे। इस तरह सब को बराबर बराबर हिस्सा मिलेगा। अगर तुम जमीन को इस्तेमाल करना चाहते हो तो उसका दाम चुकाओ —अच्छी जमीन के लिए ज्यादा, बुरी के लिए कम। अगर जमीन का इस्तेमाल नहीं करना चाहते तो कुछ भी मत दो, जो लोग जमीन का इस्तेमाल करेंगे वे तुम्हारी जगह टैक्स तथा सामूहिक खर्च अदा करेंगे।"

"यह ठीक है," भट्ठी बनाने वाले ने भौंह हिलाते हुए कहा, "जिसके पास अच्छी जमीन हो वह ज्यादा पैसे दे।"

"वाह भाई वाह, बडा सियाना आदमी था यह जाज," घुंघराले बालो वाला बुजुर्ग बोला।

"बस, जो पैसे हमे देने पड़ें वे अगर हमारी तौफीक के बाहर न हो तो सब ठीक है," गहरी आवाज वाले लबे कद के आदमी ने कहा। प्रत्यक्षत वह समझ गया था कि इस योजना का लक्ष्य क्या है।

"जो रकम तुम्हे देनी पडेगी वह न बहुत ज्यादा होनी चाहिए और न ही बहुत कम। अगर बहुत ज्यादा होगी तो कोई भी नही देगा, नतीजा यह होगा कि नुकसान होगा। अगर बहुत कम हुई तो लोग जमीन की खरीद-फरोख्त करने लगेंगे। जमीन का व्यापार होने लगेगा," नेख्लदोव ने कहा। "मैं तुम्हारे लिए इसी बात का प्रबंध करना चाहता हू।"

"बडी इन्साफ की बात है, बिल्कुल ठीक है, यह बिल्कुल ठीक रहेगा," किसानो ने कहा।

"बडा सियाना आदमी था, वह जाज," चौडे कधो और घुंघराले बालो वाले बूढे ने कहा, "वाह, कैसी बात सोच निकाली है!"

"और यदि मैं कुछ जमीन लेना चाहू, तो?" मुस्कराते कारिन्दे ने कहा।

"कोई टुकडा खाली हो तो उसे ले कर काश्त करो," नेख्लदोव ने कहा।

"तुम्हे जमीन की क्या जरूरत है? तुम तो वैसे ही खाते-पीते हो," हसोड आखो वाले बूढे ने कहा।

इस पर मीटिंग समाप्त हो गई।

नेख्लूदोव ने अपना प्रस्ताव फिर एक बार समझाया। उसने कहा कि मैं आप लोगो से इसी वक्त कोई जवाब देने को नही कह रहा हू। आप

इस पर विचार करे, गाव के बाकी लोगो से सलाह-मश्विरा करे, और फिर जिस नतीजे पर पहुचे मुझे आ कर बताए।

किसानो ने कहा कि वे आपस मे बात करेगे, और जो जवाब हुआ ला कर देगे, और बडी उत्तेजना मे वहा से विदा हुए। सडक पर जाते हुए भी उनके ऊचा ऊचा बातन की आवाज आ रही थी। और गहरी रात गये तक भी नदी के पास, गाव म से उनकी आवाज आती रही।

किसान लोग दूसरे दिन काम पर नही गये। व जमीदार के प्रस्ताव पर विचार करते रहे। किसानो की कम्यून मे दो पार्टिया बन गई। एक ने थे जिन्ह इस प्रस्ताव में फायदा नजर आता था, और जो समझते थे कि इसे मजूर करने मे कोई खतरा नही। दूसरे वे थे जिनकी समझ म यह प्रस्ताव बैठा ही नही, इसलिए वे डरते थे और शक करते थे। मगर तीसरे दिन सभी सहमत हो गये, और अपने कुछ प्रतिनिधि भी नेख्लूदोव के पास यह कहने के लिए भेज दिये कि हम आपका प्रस्ताव मजूर है। उनके इस निर्णय पर पहुचने का एक कारण था। एक बुढिया ने उन्ह कहा कि मालिक तो बहुत भला आदमी है, उसे अपनी आत्मा की चिन्ता होने लगी है, वह यह काम इसलिए कर रहा है कि उसे मोक्ष मिले। इस बात का उन पर बहुत असर हुआ और उनके दिल मे से यह भय जाता रहा कि उनके साथ धोखा होने जा रहा है। इसके बाद जब लोगो को पता चला कि मालिक पानोवा म बहुत दान पुण्य कर रहे हैं तो इस बात की पुष्टि भी हो गई। वास्तव मे नेख्लूदोव ने पहले कभी इतनी घोर दरिद्रता तथा जीवन मे इतनी साधनहीनता नही देखी थी, जितनी कि यहा उसे अपने किसानो में नजर आयी। वह इसे देख कर सिहर उठा था, और यह जानते हुए कि इस तरह पैसे देना उचित नही, वह देता रहा। पैसे दिये बिना वह रह नही सकता था, और उसके पास पैसे थे भी बहुत। पिछले साल ही उसने एक जगल बेचा था, उससे बहुत सी रकम मिली थी। इसके अतिरिक्त हाल ही म कुज्मिन्स्कोये जमीदारी के पशु और औजार बेचने का बयाना उसे मिला था।

यह पता चलने की देर थी कि मालिक दान दे रहे हैं कि धडाधड लोग विशेषतया औरतें, मागने के लिए आ पहुची। नख्लूदोव को कुछ भी मालूम नही था कि दान कैसे दिया जाता है, अथवा यह निश्चय कैसे किया

जाता है कि किसको कितना देना चाहिए। एक तरफ तो उसको जब म पैसे थे, और उसके सामने लोगो का घोर दारिद्रय था, वह अपना हाथ कैसे रोक सकता था। दूसरी तरफ वह यह भी समझता था कि इस तरह ऊनजलूल पैसे देना बुद्धिमत्ता नही है। इस स्थिति म उसे एक ही रास्ता सूझ रहा था, और वह यह कि यहा से भाग चले और यही उसने किया भी।

पानावो मे नेख्लूदोव का आखिरी दिन था। वह अपनी फूफिया का साज-सामान देख रहा था। वहा एक महागनी की कपडा की आलमारी रखी थी जिस पर ताबे के बने शेरा के मुह लगे थे जिनम गोल गोल रिंग डले हुए थे। इस आलमारी के निचले दराज म उसे बहुत सी चिट्ठिया मिली जिनमे एक तसवीर भी पडी थी। यह तसवीर एक ग्रुप की थी जिसमे उसकी फूफिया—सोफिया इवानाव्ना तथा मारीया इवानोव्ना, स्वय नेख्लूदोव और कात्यूशा शामिल थे। उस जमाने की तसवीर थी जब वह विद्यार्थी था और कात्यूशा पवित्र, सुदर और जीवन के उल्लास स छलछला रही थी। घर की सभी चीजो मे से केवल ये चिट्ठिया और तसवीर ही उसने उठायी। बाकी सब पनचक्की के मालिक के हवाले कर दी। मुस्कराते कारिदे की सिफारिश पर पनचक्की के मालिक ने मकान और उसका सारा सामान असल लागत का केवल दसवा हिस्सा दे कर खरीद लिया था। नेख्लूदोव के चले जाने पर मकान गिरा दिया जायेगा और सामान छकडा पर लाद कर यहा से ले जाया जायेगा।

कुजिमस्कोये म अपनी जमीन-जायदाद छोडते हुए नेख्लूदोव को अफसोस हुआ था। आज वह हैरान हो रहा था कि क्योकर उसके मन म उस दिन पश्चात्ताप की भावना उठी थी। आज इस मुक्ति पर उसके हृदय म निरन्तर उल्लास की भावना थी। आज उसे नवीनता का भास हो रहा था, उस यात्री की तरह जो नये नये स्थलो तथा देश देशान्तरा का पहली बार दर्शन कर रहा हो।

१०

जब नेख्लूदोव वापस लौटा तो उसे अपना शहर नये और विचित्र रग मे नजर आया। वह शाम के वक्त लौटा था जब बत्तिया जल चुकी थी, और रलवे-स्टेशन से सीधे घर आया। कमरो म अब भी फीनाइल की बू छायी हुई थी। आग्राफेना पत्नोव्ना और कार्नेई दोनो थके हुए और

असन्तुष्ट लग रहे थे। उनकी आपस मे झडप भी हो चुकी थी, इन चीजो को ले कर, जिन्हे, जान पडता है, केवल बाहर टागने हवा लगवाने और फिर तह कर के बक्सा मे बद कर देने के लिए ही बनाया गया हो। नेख्लूदोव का कमरा खाली, लेकिन अव्यवस्थित था। दरवाजे मे टक पडे थे, जिस कारण रास्ता रुका हुआ था। प्रत्यक्षत उसके आ जाने से उस काम में बाधा पड गई थी, जो एक अजीब परपरा के अनुसार इस घर मे चल रहा था। किसानो के दीन-हीन जीवन का जो प्रभाव उसके मन पर पडा था, उसके बाद यह काम प्रत्यक्षत उसे फिजूल लग रहा था, जिसमे वह स्वय भी किसी जमाने मे भाग लेता रहा था। अब उसे यह इतना अरुचिकर लगने लगा कि उसने दूसरे ही दिन किसी होटल जा कर रहने का निश्चय कर लिया, और चीजो के सभालने का काम आग्राफेना पेत्रोव्ना पर छोड दिया कि वह जैसा ठीक समझे इन्हे ठिकाने लगा दे। नेख्लूदोव की बहिन बाद मे आ कर घर के साज-सामान का जैसा चाहेगी निबटारा कर देगी।

दूसरे दिन नेख्लूदोव जल्दी ही घर से निकल पडा और एक होटल मे दो कमरे किराये पर ले लिये। साधारण सी जगह थी, और बहुत साफ भी नही थी। जेलखाने के नजदीक थी। फिर कुछेक चीजो के बारे म आदेश दे कर कि उन्हे वहा भिजवा दिया जाय, वह स्वय वकील को मिलने चला गया।

बाहर सर्दी थी। कुछ दिन तक बारिश और अधड रहने के बाद सर्दी हो गई थी, जैसा कि वसन्त ऋतु म अक्सर होता है। नेख्लूदोव ने हल्का ओवरकोट पहन रखा था, फिर भी सर्दी इतनी अधिक थी और हवा इतनी तीखी कि बदन को काटती थी। नेख्लूदोव तेज तेज चलने लगा ताकि शरीर म कुछ गरमी आ जाय।

उसके मन म अब भी किसानो की आकृतिया घूम रही थी—स्त्रिया, बच्चे, बूढे—उनकी गरीबी और थकान जिसे उसने मानो पहली बार देखा हो। विशेषकर उसकी आखो के सामने उस नन्हे बच्चे का सूखा हुआ चेहरा घूम जाता जिसके होठो पर मुस्कान थी और जो बार बार पतली टागें मरोडता। ऐसा जान पडता जैसे उन टागो म पिडलिया नही हैं। बरबस वह इस जीवन की तुलना शहरी जीवन म करने लगा। गोश्त मछली और कपडे इत्यादि की दूकानो के सामने से जाते हुए उसे फिर यही भास हुआ जब

१४

वह इस दृश्य को पहली बार देख रहा है। लगभग सभी दूकानदार कितने साफ-सुथरे और मोटे-ताज़े लग रहे थे। उन जैसे डील-डौल का एक भी किसान ढूढने से नही मिलेगा। इनका काम लोगो को धोखा देना था जो इनकी चीज़ो का वास्तविक मूल्य नही जानते थे। और इस पर वे बड़ी मेहनत करते थे। इसे वे निरर्थक काम नही समझते थे। इसके विपरीत उन्हे पूर्ण विश्वास था कि वे बड़ा महत्त्वपूर्ण काम कर रहे हैं। सड़क पर जो भी लोग उसे नजर आये, सभी खाते-पीते और मोटे-ताज़े लग रहे थे। बड़े बड़े नितबो वाले कोचवान, जिनकी पीठो पर बटन चमक रहे थे और सुनहरी डोरी वाली टोपिया पहने दरवान, एप्रन पहने कुन्ला वाली दासिया—सभी ऐसे ही खाते-पीते नजर आते थे। और विशेष कर हृष्ट पुष्ट तो गाड़ीवान नजर आ रहे थे, गर्दन पीछे से मुडी हुई, अपनी बग्घियो मे आराम से टेक लगाये बैठे थे और आने-जाने वालो को देखे जा रहे थे। उनकी आखो से घृणा और दुर्वासना का भाव टपकता था। इन सब लोगो मे उसे अनचाहे ही वे किसान नजर आ रहे थे जो जमीनें न होने के कारण गाव छोड कर शहरो मे आ गये थे। कुछेक को तो शहरी जीवन की स्थिति से लाभ उठाने का अवसर मिल गया था, और अब वे भी अपने मालिको की तरह ही हो गये थे और अपनी स्थिति से सन्तुष्ट थे। लेकिन बाकी लोगो की हालत तो गाव से भी बदतर थी। उनकी दशा तो किसानो की दशा से भी अधिक दयनीय थी। मिसाल के तौर पर ऐसे ही लोग थे वे जूते बनाने वाले मोची जिन्हे नेख्लूदोव ने एक मकान के तहखाने मे काम करते देखा था। या वे धोबिनें जो खुली खिड़कियो मे अपनी पतली पतली बाहो से कपडे इस्त्री करती हुई नजर आती है—चेहरे पीले बाल अस्त-व्यस्त, खिड़कियो मे से साबुन से भरी भाप निकलती हुई। या वे दो रगसाज जिन्हे नेख्लूदोव ने सड़क पर देखा था। एप्रन लगाये और हाथो मे रग से भरी बाल्टी उठाये वे एक दूसरे से झगड़ते चले जा रहे थे। पावो मे उनके मोज़े तक न थे, ऊपर से नीचे तक रग ही रग पुता हुआ था। दोनो आस्तीनें चढ़ाये थे जिससे बाहनियो तक उनकी दुबली-पतली और सवलाई बाहें नज़र आ रही थीं। उनके चेहरे थके-माँदे और चिड़चिड़े लग रहे थे। यही भाव छकड़े चलाने वालो के साँवले चेहरो पर भी नजर आ रहा था जो हिचकोले खाते छकडो पर चले जा रहे थे। और उन मर्दों और औरतो के चेहरो पर भी जो चिथड़े पहने

सडको के नाको पर खडे भीख माग रहे थे। ऐसे ही चेहरे उसे ढाबा की खिडकियो मे से भी नजर आये, जिनके सामने से हो कर नेख्लूदोव जा रहा था। गन्दे मेजो पर चाय के बरतन और बोतल रखी थी, और मेजो के बीच सफेद कमीजें पहन वेटर इधर-उधर भाग रहे थे। और मेजो के सामने लोग बैठे चिल्ला रहे थे या गा रहे थे। उनके चेहरे लाल और पसीने से तर हो रहे थे और उन पर मढता छाई हुई थी। ऐसा ही एक आदमी एक खिडकी के सामने बैठा था भौंह चढी हुई, होठ फूले हुए, और आखें एकटक देखती हुई, मानो कोई बात याद करने की कोशिश कर रहा हो।

"ये लोग यहा पर क्या जमा हैं?" नेख्लूदोव ने मन ही मन पूछा। ठण्डी तेज हवा के कारण सडक पर धूल उड रही थी। धूल के अतिरिक्त हवा मे जले तेल और ताजा रोगन की गन्ध छाई हुई थी।

एक सडक पर चलता हुआ वह किसी छकडा की कतार के पास जा पहुचा जिन पर किसी प्रकार का कोई लोहे का सामान लदा था। सडक में जगह जगह खड्डे थे जिस कारण लोहे की इतनी खडखड हो रही थी कि नेख्लूदोव के कान फटने लगे और सिर-दर्द होने लगा। उसने कदम तेज कर दिये ताकि छकडा की कतार मे आगे निकल जाय। सहसा इस शोर मे उसे अपना नाम सुनाई दिया। कोई उसे बुला रहा था। नेख्लूदोव खडा हो गया और देखा कि एक छैल गाडीवान की बग्घी मे एक फौजी अफसर बैठा मुस्करा रहा है और उसकी ओर बडे दोस्ताना ढग से हाथ हिला रहा है। अफसर की पतली नोकदार मूछें खूब चुपडी हुई थी, चेहरा चमक रहा था, और दात बेहद सफेद थे।

"नेख्लूदोव! अरे, तुम यहा?"

उसे देख कर नेख्लूदोव को पहले तो बडी खुशी हुई।

"वाह शेनबोक!" उसने बडे उत्साह से कहा, परन्तु दूसरे ही क्षण उसे ख्याल आया कि खुश होने का कोई मतलब नही है।

यह वही शेनबोक था जो उस दिन उसकी फूफिया के घर आया था। मुद्दत से नेख्लूदोव ने उसे नहीं देखा था, मगर उसने इतना सुन रखा था कि कर्जों के बावजूद अब भी शेनबोक किसी तरह रिसाले मे अपने पद पर कायम है और अमीरो मे अपना स्थान बनाये हुए है। उसके दमकते, सन्तुष्ट चेहरे को देख कर नेख्लूदोव समझ गया कि जो कुछ उसने सुन रखा था वह गलत नही था।

"बहुत अच्छा हुआ जो मुलाकात हो गई। शहर म कोई भी नहीं है। अरे, यार, तुम तो बडे हो चले हो," बग्घी मे से निकल कर कधे फलाते हुए उसने कहा। "मैं तो तुम्हारी चाल से ही तुम्हें पहचान गया। अच्छा सुनो, आज खाना इकट्ठे खायेंगे। यहा कोई अच्छा होटल-वोटल भी है जहा ढग का खाना मिल सकता हो?"

"माफ करना, मेरे पास तो वक्त नही होगा," नेख्लूदोव न कहा। वह चाहता था कि किसी तरह इस आदमी से पिण्ड छूट जाय, परन्तु एस ढग स कि वह नाराज़ न हो। "कहो, तुम्हारा यहा कसे आना हुआ?"

"काम पर आया हू, दोस्त। अभिभावक के काम पर। आजकल मैं अभिभावक बना हुआ हू। समानोव को जानते हो न? वही लखपती? उसके मामलो की देख रेख करता हू। उसका दिमाग कुछ सठिया गया है, लेकिन चौवन हज़ार देस्यातीना ज़मीन का मालिक है," उसने विशेष गर्व के साथ कहा मानो यह सारी ज़मीन उसकी अपनी कमाई हो। "उसके मामले बुरी तरह उलझे हुए थे, कोई देखने वाला न था। सारी की सारी ज़मीन किसानो को लगान पर चढा दी गई थी, मगर उन्होंने एक कौडी लगान नहीं दिया। इधर अस्सी हज़ार रूबल से भी ज्यादा कर्ज़ चढ़ा हुआ था। मैंने साल भर मे सब बदल के रख दिया, और सत्तर फीसदी मुनाफा भी निकाल दिखाया। कहो, क्या कहते हो?" उसने गर्व स पूछा।

नेख्लूदोव को याद आया, किसी ने उससे कहा था कि शेनबोक अपनी सारी दौलत लुटा चुका है और उस पर बडा कर्ज़ है, लेकिन किसी आदमी के खास असर-रसूख से वह किसी जायदाद का अभिभावक बना दिया गया है। जायदाद किसी बढे धनी की है जो उसके हाथ से निकली जा रही है। प्रत्यक्षत अब इसी अभिभावकता पर शेनबोक का गुज़र चल रहा—।

"इस आदमी से कैसे पीछा छुडाऊ ताकि यह नाराज़ भी न हो?" शेनबोक के चमकते चेहरे और ऐंठी हुई मूछो की ओर देखत हुए नेख्लूदोव सोच रहा था। यह आदमी बडे दोस्ताना ढग से हस हस कर बतिया रहा है कि कहा पर सबसे अच्छा खाना मिल सकता है, और अभिभावक के नाते उसने क्या क्या कारनामे किये है।

"अच्छा तो कहो, कहा पर भोजन करे?'

'सच मानो मेर पास वक्त नही है,' अपनी घडी की ओर देखते हुए नेख्लूदोव न कहा।

"अच्छा तो यह बताओ आज शाम को घुड़दौड़ पर जाओगे?"
"नही, मैं नही जा पाऊगा।"
"जरूर आना। मेरे पास अपने घोडे तो नही हैं, लेकिन मैं ग्रीशा के घोडा पर खेलता हू। तुम्ह याद है न, उसके पास बहुत बढिया घाडे हैं। तो आओगे न? शाम का खाना मिल कर खायेंगे।"
"नही, मैं तुम्हारे साथ शाम का खाना भी नही खा पाऊगा," नेख्लूदोव ने मुस्करा कर कहा।
"उफ ओ! यार यह तो बहुत बुरी बात है। कहो, इस वक्त कहा जा रहे हो? मेरे साथ बग्घी मे बैठ चलो।"
"मैं एक वकील से मिलने जा रहा हू। वह नजदीक ही, इसी सडक के मोड पर रहता है।"
"हा, हा, याद आया। तुम जेलखाना के बारे मे कुछ कर रहे हो न? कैदिया के मध्यस्थ बन गय हो, मैंने सुना है," शेनबोक ने हस कर कहा, "मुझे कोर्चागिना के घर से पता चला था। वे तो अभी से शहर छोड कर चले गये हैं। इस सबका क्या मतलब है, कुछ समझाओ तो?"
"हा, हा, बिल्कुल ठीक है," नख्लूदोव न जवाब दिया, "मगर यहा सडक पर मैं तुम्ह क्या बता सकता हू?"
"ठीक है, ठीक है, तुम हमेशा से सनकी रहे हो। मगर घुडदौड पर तो आओगे?"
"नही, मैं नही आ सकूगा, और आना चाहता भी नही हू। देखो, नाराज नही होना।"
"नाराज? अरे नाराज किस बात पर? बताओ रहते कहा हो?" सहसा उसके चेहरे पर गभीरता आ गई, आखें एकटक देखने लगी, और भौह सिकुड गइ। जान पडता था जैसे कुछ याद करन की कोशिश कर रहा हो। नेख्लूदोव का उसके चेहरे पर वही जडता का भाव नजर आया जो उसे उस आदमी के चेहरे पर नजर आया था जो भौह चढाये और होठ फुलाये ढाबे की खिडकी मे बैठा था।
"आज कितनी सर्दी है, क्यों?"
"हा बहुत सर्दी है।"
'सामान तेरे पास है ना?" गाडीबान की ओर घूम कर शेनबोक ने पूछा।

"अच्छा तो गुड लक, फ़ानारिन! तुम्हें मिल कर सचमुच बड़ी खुशी हुई।" और बड़े तपाक से ग्रिनदार्न के साथ हाथ मिला कर उछल कर बग्घी में जा बैठा और मुस्कराता हुए हाथ हिलाने लगा। हाथ पर उसने सफ़ेद दस्ताना पहन रखा था। हाथ के पीछे उसका चमकता चेहरा और चमकते सफ़ेद दांत नज़र आ रहे थे।

"क्या यह संभव है कि मैं भी इसी आदमी जैसा था?" वकील के घर की ओर जाते हुए नेख्लूदोव सोच रहा था। "हां, मैं उस जैसा बनना चाहता था, हालांकि मैं बिल्कुल उस जैसा नहीं था। मैं उसी की तरह का जीवन बिताने की सोचा करता था।"

११

नेख्लदोव के पहुचते ही वकील ने उसे अन्दर बुला लिया हालांकि बहुत से लोग बाहर बैठे इतजार कर रहे थे, और छूटते ही मेन्शोव के मुकद्दमे की चर्चा करने लगा। उसने मुकद्दमे की मिसाल पढी थी और पढ़ कर उसे बेहद गुस्सा आया था क्योंकि जो अभियोग लगाया गया था वह बिल्कुल असगत था।

"इस मुकद्दमे के बारे मे पढ कर तो सचमुच रोगटे खडे हो जाते हैं," वह कहने लगा, "ऐन मुमकिन है कि घर के मालिक ने खुद आग लगाई हो ताकि उसे बीमे के पैसे मिल सके। पर मुख्य बात तो यह है कि मेन्शोव का दोष साबित नही हुआ। कोई शहादत ही वहा पर नही है। यह सब जाचकर्ता के बढे-चढे जोश और सरकारी वकील की इतनी ही बडी लापरवाही का नतीजा है। अगर यह मुकद्दमा इस अदालत मे पेश हो—प्रान्तीय अदालत मे नही—तो मैं यकीन से कह सकता हू कि वे बरी हो जायेंगे, और मैं पैरवी का कुछ भी नही लूगा। अब दूसरे मुकद्दमे की सुनिये—फेदोस्या बिरयुकोवा वाले मुकद्दमे की जार के नाम अपील मैंने लिख दी है। जब आप पीटर्सबर्ग जायें तो उसे साथ लेते जाइये, और खुद दाखिल करवा आइये। उसके लिए खुद वहा बात भी कीजिये वरना वे लोग मामूली तफ्तीश कर के मामला खत्म कर देंगे, बने-बनायेगा कुछ नही। और आप कोशिश कीजिये ऊपर तक पहुच निकालने की।"

"जार तक?" नेख्लदोव ने पूछा।

वकील हस पडा।

"यह तो सबसे ऊपर की पहुच होगी। ऊपर का मतलब अपील कमेटी का सेक्रेटरी या अध्यक्ष वगैरा तक किसी की सिफारिश ढूढिये। सो, जनाब अब बस?"

"नही, एक बात और। मुझे यह खत मिला है। किसी धार्मिक सम्प्रदाय के लोगो न मुझे लिखा है," जेब म स चिट्ठी निकालते हुए नेख्लदोव ने कहा। "जो कुछ उन्होने खत म लिखा है अगर वह ठीक है, तो सचमुच उनका मुकद्दमा बहुत दिलचस्प है। आज मैं उन्ह खुद मिल कर पता लगाऊगा।"

"आप तो एक तरह से जेल का चोगा बने हुए हैं या नल कह लीजिये, जिसके जरिये कैदियो की शिकायते बाहर पहुचने लगी हैं," वकील ने मुस्करा कर कहा, "यह बहुत बडा काम है, आप इसे सभाल नही पायेंगे।"

"लेकिन यह एक खास ही किस्म का मुकद्दमा है," नेख्लूदोव ने कहा और मुकद्दमे का सक्षिप्त सा ब्योरा देने लगा। कुछ किसान इजील पढने के लिए अपने गाव में इकट्ठे हुए, लेकिन पुलिस ने आ कर उन्ह उठा दिया। अगले इतवार को वे फिर इकट्ठे हुए। अब की बार पुलिस का एक अफसर आया और उन्हे पकड कर कचहरी मे ले गया। मेजिस्ट्रेट न जिरह की, और सरकारी वकील ने अभियोग लगाया और जजो ने उन्ह अदालत के सुपुर्द किया। सरकारी वकील ने उन पर वह अभियोग लगाया जिसके लिए ठोस शहादत मौजूद थी—इजील। बस, उन्ह देश-निकाला दे दिया गया। कितनी भयानक बात है," नेख्लूदोव ने कहा, "क्या सचमुच ऐसी बाते हो सकती हैं?"

"इसमे हैरान होने की बात क्या है?"

"क्या, मैं तो सोचता हू इसकी हर बात विचित्र है। पुलिस के अफसर का रवैया तो मेरी समझ म आ सकता है, क्योकि वे लोग तो केवल हुक्म की तामील करना जानते ह, लेकिन सरकारी वकील तो एक पढा-लिखा आदमी होता है वह ऐसी नालिश लगाये"

"बस, यही हम लोग भूल कर जाते हैं। हम समझते हैं कि सरकारी वकील और सामान्यतया जज वगैरा उदार विचारो वाले लोग होगे। एक

जमाना था जब वे उदार हुआ करते थे, लेकिन अब वह बात नहीं रही। अब तो वे केवल सरकारी अफसर हैं, इससे ज्यादा कुछ नहीं, उन्हें तो केवल अपनी तनख्वाह से मतलब है। उन्हें तनख्वाहें मिलती हैं, मगर वे इससे भी ज्यादा पैसे चाहते हैं। बस, सिद्धान्त तो वहीं खत्म हो जाते हैं। जिस पर चाहें आप उनसे मुकद्दमा चलवा सकते हैं, अदालत में पेश करवा सकते हैं, सज़ा दिलवा सकते हैं।"

"हां, मगर ऐसा तो कोई कानून नहीं कि कुछ आदमी मिल कर इंजील पढ़ना चाहते हैं तो आप उन्हें पकड़ कर साइबेरिया भिजवा दें।"

"हां, कड़ी मशक्कत की सजा दिलवा कर साइबेरिया भेज सकते हैं। बस, केवल इतना भर साबित करने की ज़रूरत है कि इंजील की व्याख्या करते समय ऐसी बातें कही गईं जो चर्च द्वारा दी गई व्याख्या से पृथक हैं। यदि लोगों के सामने आप प्राचीन यूनानी चर्च की आलोचना करते हैं तो धारा १९६ के अनुसार आपको साइबेरिया में निर्वासित किये जाने की सज़ा होगी।"

"नामुमकिन है!"

"मैं ठीक कहता हूं, आप यकीन मानिये। मैं तो इन सज्जनों को, अपने जज भाइयों को हमेशा कहा करता हूं," वकील कहता गया, "कि मैं आपका एहसान माने बिना नहीं रह सकता क्योंकि मैं अभी तक जेलखाने से बाहर हूं। अगर हम और आप, और सब लोग जेलखाने से बाहर हैं तो उन्हीं की मेहरबानी से। वरना उनके इशारे भर की देर है कि हमारे अधिकार छीन कर हमें ये साइबेरिया भेज दें। दूर नहीं सही, साइबेरिया के नज़दीकी इलाकों में तो भेज ही देंगे।"

"अगर सब बात सरकारी वकील और उस जैसे अन्य अफसरों पर ही निर्भर है कि उनका मन आये तो कानून की पैरवी कराए, वरना उन्हें भूले रहें तो फिर मुकद्दमे चलाने का मतलब ही क्या है?"

वकील ठहाका मार कर हंस पड़ा।

"आप भी अजीब सवाल पूछते हैं! भले आदमी, यह तो फिलासफी है, दर्शनशास्त्र की बात है। इस पर भी हम विचार कर सकते हैं। क्या आप शनिवार को हमारे यहां आ सकते हैं? वहां आपको वैज्ञानिक, साहित्यकार और कलाकार मिलेंगे। वहां पर हम इन आम विषयों पर विचार कर सकते हैं," वकील ने आम विषयों पर बल देते हुए कहा, मानो

व्यंग से एक आडम्बरपूर्ण शब्द का प्रयोग कर रहा हो। "आप मेरी पत्नी से तो मिल चुके हैं न? जरूर आइये।'

"शुक्रिया, मैं कोशिश करूंगा," नेख्लूदोव ने कहा, मगर वह जानता था कि झूठ कह रहा है। अगर वह कोशिश करेगा तो इस बात की कि वकील की साहित्यिक गोष्ठी से तथा उसकी वैज्ञानिकों, साहित्यिकों और कलाकारों की मित्रमण्डली से दूर रहे।

जब नेख्लूदोव ने कहा कि अगर कानून की पैरवी कराने में जज लोग मनमानी कर सकते हैं तो फिर मुकद्दमे करने का कोई मतलब ही नहीं रह जाता तो जिस ढंग से वकील ठहाका मार कर हंसा था, और जिस लहजे में वह 'दर्शनशास्त्र' और "आम विषय" शब्दों का उच्चारण कर रहा था, उसी से पता चल जाता था कि नेख्लूदोव, वकील और उसकी मण्डली से कोसों दूर है। नेख्लूदोव का शेनबाक जैसे अपने भूतपूर्व साथियों से भी अब कोई मेल नहीं रह गया था लेकिन उनसे भी उसकी भिन्नता इतनी अधिक नहीं होगी जितनी कि वकील तथा उसकी मित्रमण्डली से।

१२

जेलखाना यहां से दूर था, और काफी देर हो चुकी थी इसलिए नेख्लूदोव बग्घी में बैठ गया। गाड़ीवान अधेड़ उम्र का आदमी था और शक्ल-सूरत में समझदार और दयालुस्वभाव का जान पड़ता था। एक सड़क पर एक बहुत बड़ी इमारत बन रही थी। जब बग्घी उसके पास से गुजरी तो गाड़ीवान उसकी ओर इशारा करते हुए नेख्लूदोव को बोला—

"देखिये हुजूर कितनी शानदार इमारत बन रही है," उसने इस तरह गर्व से कहा मानो इमारत में उसका भी हाथ हो।

इमारत सचमुच बहुत बड़ी थी, और उसकी बनावट पेचीदा और मौलिक थी। इमारत के चारों तरफ देवदार की मजबूत बल्लियों की मजबूत मचान लग रही थी जिन्हें लोहे के शिकंजों से एक दूसरे के साथ बांधा गया था। सड़क से इमारत को अलग रखने के लिए सड़क के किनारे लकड़ी की एक दीवार खड़ी कर दी गई थी। मचान के तख्तों पर कामगार चींटियों की तरह इधर उधर आ जा रहे थे। उनके कपड़े गारे में पुते हुए थे। उनमें से कुछ ईंटें लगा रहे थे, कुछ उन्हें तराश रहे थे, कुछ तसले

श्रौर बाल्टिया ढो ढो कर उपर ले जा रहे थे श्रौर उन्ह खाली कर कर के नीचे ला रहे थे।

मचान के पास ही एक मोटा-ताज़ा श्रादमी, बढ़िया कपडे पहने छत ऊपर की श्रोर इशारा करता हुश्रा किसी ठेकेदार का कुछ समझा रहा था। यह श्रादमी शायद गृहशिल्पी था। ठेकेदार व्लादीमिर गुर्वेनिया का रहने वाला था श्रौर बडे श्रादर के साथ उसकी बातो को सुन रहा था। पास ही फाटक मे से इमारती सामान से लदे हुए छकडे अन्दर जा रहे थे श्रौर खाली छकडे बाहर निकल रहे थे।

"इन लोगो को पूरा पूरा विश्वास है—जो काम कर रहे है उन्हें भी श्रौर जो दूसरो से काम करवा रहे हैं, उन्ह भी—कि यह बडा शानदार काम हो रहा है। घर मे इनकी श्रौरते, गर्भ मे बच्चे लिए, जी तोड मेहनत करती हैं, इनके बच्चे, सिर पर चिथडो की टोपिया पहने, भूख से बेबस, धीरे धीरे मौत के मुह मे जा रहे है, वे हसते भी हैं तो बूढ़ो की तरह श्रौर बार बार उनकी टागें ऐंठ जाती हैं। लेकिन यहा इन लोगो को उम्र महल खडा करना है, एक बिल्कुल फिज़ूल श्रौर मूर्खतापूर्ण महल, किसी उतने ही फिज़ूल श्रौर बेसमझ श्रादमी के लिए, वैसे ही किसी श्रादमी के लिए जो इन्ह लूटता श्रौर बरबाद करता है।"

"ठीक कहते हो, यह घर बनाना हिमाकत है," नेख्लूदोव ने अपने मन की बात खुल कर कह दी।

"हिमाकत क्यो साहिब?" गाडीवान ने नाराज़ हो कर कहा, "इससे लोगो को रोज़गार मिलता है, यह हिमाकत क्या है?"

"लेकिन इस काम का कोई फायदा नही।"

"फायदा न हो तो ये करे ही क्यो?" गाडीवान बोला। "लोगो को इससे रोटी मिलती है।"

नेख्लूदोव चुप हो गया। यो भी गाडी के पहियो की खडखड इतनी ज्यादा थी कि बाते करना मुश्किल हो रहा था। लेकिन जब वे जलखाने के नज़दीक पहुचे श्रौर गाडी गोल पत्थरो वाली सडक से हट कर समतल सडक पर चलने लगी तो बात करना श्रासान हो गया। गाडीवान ने फिर नेख्लूदोव को सबोधित किया—

"शहर मे इतने लोग बाहर से चल श्रा रहे हैं कि क्या कहूं," उसने कहा श्रौर श्रपनी सीट पर घूम कर किसान मज़दूरो के एक दल की श्रोर

इशारा किया जो उनकी ओर चला आ रहा था। मजदूरो ने हाथो मे आरे और कुल्हाडिया उठा रखी थी और कन्धा पर अपने खाल के कोट और थैले बाधे हुए थे।

"क्या पिछले साला स भी ज्यादा?" नेम्लूदोव न पूछा।

"कोई मुकाबिला नही, साहिब। शहर म काई जगह खाली नही मिलती। पूछिये मत क्या हा रहा है। मालिक लोग यो मजदूरा को इस तरह काम से बरखास्त करते हैं मानो चोकर साफ कर रहे हा। कही काम नही मिलता।"

"क्या?"

"आदमी बहुत ज्यादा आ गये हैं। इतन आदमिया के लिए गुजाइश नही है।"

"इतने ज्यादा लोग क्या आ गये है? वे अपने गावो म क्या नही रहते?"

"गावा म क्या करेंगे। उन्ह जमीन ही जो नही मिलती।'

नेम्लदोव को ऐसा लगा जैसे गाडीवान ने उसकी दुखती रग छेड दी हो। जिस अग पर हम चाट लगी हो, हमे लगता है जसे उसी पर सदा ठोकर लगती रहती है। लेकिन यह इसलिए कि अग दुखता है और उस पर लगी ठोकर को हम अधिक महसूस करते है, इसी कारण ऐसा सोचते हैं।

"क्या यह सभव है कि सब जगहो पर यही कुछ हो रहा है?" नेख्लूदोव सोचने लगा और गाडीवान स पूछन लगा कि उसके गाव म कुल जमीन कितनी है, उसके अपने पास कितनी जमीन है, और वह गाव छाड कर क्यो चला आया है।

"हमारे गाव म फी किसान एक देस्यातीना जमीन है, हुजूर, और हमारे घर वालो के पास तीन दस्यातीना हैं, तीन आदमिया का हिस्सा," गाडीवान बडे शौक से सुनाने लगा, "मेरा बाप और भाई गाव मे रहते हैं और खेती करते हैं, मेरा एक दूसरा भाई फौज मे है। पर खेती म कुछ हो तब न। मेरा भाई भी मास्को चले आने की सोच रहा है।"

"क्या जमीन लगान पर नही मिल सकती?"

"आजकल लगान पर कस मिलेगी? जमीदारो ने तो अपनी जमीनें लुटा दी, और वे अब आ गई हैं व्यापारियो के हाथ। उनसे लगान पर जमीन नही मिल सकती, वे खुद काश्त करते है। हमारे गाव म एक

फ्रासीसी साहिब की हुकूमत है। हमारे पहले जमीदार से उसने सारी ज़मीन जायदाद खरीद ली, अब वह आगे किसी को लगान पर नहा देता। बस, किस्सा खत्म हुआ।"

"यह फ्रासीसी कौन है?"

"दुफार है साहिब, इस फ्रासीसी का नाम। शायद आपने कहा सुना हो। बडे थियेटर मे ऐक्टरो के लिए बनावटी बालो की टोपिया बना बनाकर बेचता है। काम अच्छा है इसलिए उसने खूब पैसे बनाये हैं। हमारी मालकिन से उसने सारी की सारी जायदाद माल ले ली, अब हमें लताडता है, जैसे उसका मन चाहे। खुद आदमी बुरा नही है, शुक्र है भगवान का, मगर उसकी घर वाली, क्या कहू, ऐसी जालिम है वह कि भगवान बचाये। रूसी औरत है वह। लोगो को तो बस लूटती है। बहुत बुरी हालत है। लीजिये साहिब, यह रहा जेलखाना। फाटक तक ले चलू? मगर मुझे डर है, वहा तक हम जाने नही देंगे।"

१३

बाहर के दरवाजे के पास पहुच कर नेख्लूदोव ने घण्टी बजायी। मगर यह सोच कर उसका दिल बैठ गया कि न मालूम आज मास्लोवा किस हालत म होगी। उसे मास्लोवा मे और जेल के सभी लोगा म किसी गूढ रहस्य का भास होता था, और उस रहस्य के बारे मे सोच कर उसका साहस टूट जाता था।

वाडर के दरवाजा खोलने पर नेख्लूदोव ने कहा कि वह मास्लोवा से मिलना चाहता है। वाडर ने अन्दर जा कर कुछ पूछ-ताछ की और फिर लौट कर कहा कि मास्लोवा अस्पताल मे है। नेख्लूदोव अस्पताल गया। वहा पर एक नेकदिल बूढा आदमी दरवाजे पर पहरी का काम कर रहा था। उसने फौरन् नख्लूदोव को अन्दर जाने दिया और यह पूछ कर कि वह किससे मिलना चाहता है, उसे सीधा बच्चो के वाड का रास्ता बता दिया।

गलियारे म पहुचा तो एक युवा डाक्टर बाहर निकल आया और बड रूखे ढग से नेख्लूदोव से पूछा कि क्या चाहता है। उससे कार्बोलिक एसिड की तीखी गध आ रही थी। यह युवा डाक्टर कैदियो का सहूलियत दिया करता था, इसी कारण उसकी जेल के अधिकारियो से, यहा तक कि बड

डाक्टर तक से मुठभेड होती रहती थी। उसे डर था कि नेख्लूदोव कोई नाजायज माग पेश करने आया है। वह उसे दिखाना चाहता था कि वह किसी का भी लिहाज नही करता, इसी लिए वह उसके साथ रुखाई से पेश आया।

"यहा पर औरतें-वौरतें नही हैं। यह बच्चों का अस्पताल है।"

"हा, मैं जानता हू, लेकिन एक कैदी-औरत को यहा पर सहायक नर्स के काम पर रखा गया है।"

"हा, ऐसी दो औरतें यहा पर काम करती है। आप क्या चाहते है?"

"उनमे से एक—मास्लोवा—के साथ मेरा नजदीक का सम्बध है," नेख्लूदोव ने जवाब दिया, "मैं उससे मिलना चाहता हू। मैं सेनेट के दफ्तर मे उसके मुकद्दमे की अपील दाखिल करने पीटर्सबर्ग जा रहा हू। साथ ही मुझे उसको यह भी देना है। केवल एक तसवीर है, और कुछ नही," जेब मे से एक लिफाफा निकालते हुए नेख्लूदोव ने कहा।

"अच्छी बात है, दे दो," डाक्टर ने पसीजते हुए कहा और एक बुढिया को सम्बोधित करते हुए जिसने सफेद एप्रन पहन रखा था कैदी मास्लोवा को बुलाने के लिए कहा। "आप यहा बैठेंगे या वेटिंग रूम म?" उसने पूछा।

"शुक्रिया," नेख्लूदोव ने कहा, फिर यह देख कर कि डाक्टर का रुख बदल गया है, उसने अवसर का लाभ उठाते हुए पूछ लिया कि मास्लोवा काम कैसा करती है क्या वे उसके काम से सन्तुष्ट हैं।

"अच्छा काम करती है, जिस तरह की जिन्दगी वह पहले बिताती रही है उसे देखते हुए तो मैं कहूगा कि काफी अच्छा काम करती है। लीजिये वह आ गई।"

एक दरवाजे मे से बढी नर्स निकल कर आई और उसके पीछे मास्लोवा चली आ रही थी। मास्लोवा ने धारीदार पोशाक पहन रखी थी और उसके ऊपर सफेद एप्रन लगा रखा था। सिर पर रूमाल था, जिससे उसके बाल प्राय बिल्कुल ढक गये थे। नेख्लूदोव को देखते ही वह लजा गई, और खडी हो गई मानो सकोच कर रही हो। फिर उसने भौह सिकोडी, और नीचे की ओर देखते हुए गलियारे के बीचाबीच जहा छोटी सी दरी बिछी थी तेज तेज चलती हुई सीधी उसकी ओर आने लगी। पास पहुचने पर पहले तो नेख्लूदोव से हाथ नही मिलाना चाहती थी, फिर

मिला भी लिया, और उसका चेहरा लज्जा से और भी लाल हो गया।

नेख्लूदोव को उससे मिले काफी दिन हो गये थे। आखिरी बार उस दिन मिला था जब मास्लोवा ने उससे माफी मागी थी कि वह गुस्से मे आ कर अट-सट बोलती रही थी। नेख्लूदोव का ख्याल था कि आज भी उसकी मन स्थिति वैसी ही होगी। मगर नही, आज वह बहुत कुछ बदली हुई थी। उसके चेहरे पर एक नया ही भाव नजर आ रहा था, एक प्रकार का सकोच और लज्जा का भाव और साथ ही, उसे लगा, जैसे उसके प्रति एक प्रकार का वैमनस्य का भाव भी है। नेख्लूदोव ने मास्लोवा से भी वही बात कही जो उसने डाक्टर से कही थी कि वह पीटर्सबर्ग जा रहा है। फिर उसने तसवीर वाला लिफाफा निकाल कर उसके हाथ मे दिया जिसे वह पानोवो से लाया था।

"पानोवो मे मुझे यह तसवीर मिली—पुरानी तसवीर है—मै साथ लेता आया। शायद तुम्हे अच्छी लगे। इसे ले लो।"

मास्लोवा ने भौहे उठा कर नेख्लूदोव की ओर देखा। उसकी ऐंचाताना आखें आश्चर्य से उसकी ओर देख रही थी, मानो पूछ रही हो—"यह किस लिए?" बिना कुछ कहे उसने तसवीर ले ली और उसे अपने एप्रन की जेब मे रख लिया।

"वहा मैं तुम्हारी मौसी से मिला था," नेख्लूदोव बोला।

"अच्छा?" मास्लोवा ने उपेक्षा से कहा।

"यहा रहना अच्छा लगता है?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"हा, अच्छा है," मास्लोवा ने जवाब दिया।

"काम बहुत मुश्किल तो नही?"

"नही, मगर मुझे इस काम की अभी आदत नही है।"

"चलो, अगर तुम खुश हो तो मैं भी खुश हू। वहा से तो बेहतर है।"

"वहा से—कहा से?" वह बोली, और उसका चेहरा फिर लाल हो गया।

"वहा से—जेलखाने से," नेख्लूदोव ने फौरन जवाब दिया।

"बेहतर क्या?" मास्लोवा ने पूछा।

"मैं सोचता हू कि यहा पर ज्यादा अच्छे लोग मिलते होगे। जिस तरह के लोग वहां पर थे वैसे यहां पर नही होगे।"

"वहा पर भी कई लोग बहुत अच्छे थे," वह बोली।

"मैं मेन्शोव मा-बेटे के मुकद्दमे के बारे मे कोशिश कर रहा हू। ख्याल है उन्हें छोड दिया जायेगा," नेख्लदोव न कहा।

"भगवान् करे छूट जाय। वह बुढिया इतनी भली औरत है," बुढिया के बारे मे फिर एक बार मास्लोवा ने अपनी राय दोहरा दी। उसके होठो पर हल्की सी मुस्कान आ गई।

"मैं आज पीटसबर्ग जा रहा हू। जल्दी ही तुम्हारी अपील की सुनाई होगी, और मेरा ख्याल है कि सजा मसूख हो जायेगी।"

"मसूख हो या न हो अब कोई फरक नही पडता," वह बोली।

"अब क्यो?"

"यो ही," उसने कहा और झट से नेख्लूदोव की आखो मे देखा, मानो कुछ पूछ रही हो।

इस शब्द से और उसकी आखो के भाव से नेख्लूदोव ने यह मतलब निकाला कि मास्लोवा जानना चाहती है कि क्या मैं अपने निश्चय पर अब भी दृढ हू या मैं उसके इन्कार कर देने पर चुप हो गया हू।

"तुम कहती हो कि कोई फर्क नही पडता। मैं नही समझ सकता कि क्या," वह बोला, "जहा तक मेरा सम्बन्ध है, मुझे सचमुच कोई फर्क नही पडता कि तुम्हे छोडते है या नही। मैं तो हर हालत मे वही करूगा जो मैंने कहा था," उसने निश्चय से कहा।

मास्लोवा ने सिर ऊचा किया। उसकी काली ऐंचदार आखें एकटक नेख्लूदोव के चेहरे को देखने लगी चेहरे को ही नही, मानो उससे आगे भी कुछ देख रही हो। उसका चेहरा खुशी से चमक उठा। लेकिन जो भाव उसकी आखो मे था, वह उसके शब्दो से लक्षित नही हुआ।

"यह तुम व्यर्थ ही कह रहे हो," वह बोली।

"मैं तो इसलिए कह रहा हू कि तुम्हे पता चल जाय।"

"सब कुछ कहा जा चुका है, और कुछ कहने की कोई जरूरत नही है," बडी मुश्किल से अपनी मुस्कराहट दबाते हुए उसने कहा।

सहसा अस्पताल के अन्दर से शोर सुनाई दिया, फिर एक बच्चे के रोने की आवाज आई।

"शायद मुझे बुला रहे हैं," वह बोली और बेचैनी से मुड कर देखा।

"अच्छा, तो खुदा हाफिज," नेख्लूदोव ने कहा।

नेख्लूदोव ने हाथ आगे बढाया, लेकिन मास्लोवा बिना हाथ मिलाए घूम कर वापस जाने लगी, मानो उसने नेख्लूदोव का हाथ बढ़ाते देखा ही न हो। उसका दिल बल्लियां उछल रहा था जिसे वह छिपाने की कोशिश कर रही थी। वह तेज़ तेज़ चलती हुई उसी छोटी सी दरी पर वापस जाने लगी।

"इसके दिल मे क्या है? वह क्या महसूस करती है? क्या वह मेरा इम्तहान लेना चाहती है या सचमुच वह मुझे माफ नही कर सकती? क्या अपने दिल की बात वह बता नही पा रही है, या बताना चाहती ही नही? उसका दिल पसीजा है या और भी कडा हो गया है?" नेख्लूदोव मन ही मन सोचने लगा, मगर इन प्रश्नो का उसे कोई उत्तर नही मिला। वह केवल इतना ही जानता था कि मास्लोवा बदल गई है, उसकी आत्मा की गहराइयो मे कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहा है। और यह परिवर्तन उसे न केवल मास्लोवा के साथ ही परन्तु भगवान के साथ भी मिलाता था, उसी की दया से यह परिवर्तन हो रहा था। इस संयोग से उसका रोम रोम पुलकित हो रहा था।

मास्लोवा अपने वार्ड मे लौट कर आयी जहां आठ छोटी छोटी खाटें बिछी थी। नर्स ने उसे एक खाट का बिस्तर ठीक करने को कहा। बिस्तर की चादर ठीक करते समय वह बहुत ज्यादा आगे की ओर झुक गई जिस कारण उसका पांव फिसल गया और मुश्किल से गिरते गिरते बचा।

एक नन्हा सा लडका जिसके गले पर पट्टी बंधी थी, और जो बीमारी से अभी अभी उठा था, यह देख कर हंस पडा। मास्लोवा भी अपने को रोक न सकी और ठहाका मार कर हंस पडी। उसे हंसते देख कर कुछेक और बच्चे भी हंसने लगे। नर्स गुस्से से डांटने लगी—

"क्या हुआ है जो खी खी कर रही हो। क्या इसे भी चकला समझ रखा है? जाओ और जा कर खाना लाओ।"

मास्लोवा चुप हो गई और बर्तन उठा कर बाहर जाने लगी। लेकिन जाते हुए उसकी नजर फिर उसी पट्टी वाले लडके से जा मिली जिसे हंसने की मनाही थी और वह फिर मुंह दबा कर हंस दी।

जब कभी मास्लोवा अकेली होती तो वह लिफाफे में से तसवीर का थोडा सा खींच कर देख लेती और खुश हो लेती। लेकिन पूरी की पूरी तसवीर को वह केवल शाम के ही वक्त देख पायी जब ड्यूटी से फ़ारिग़

हो कर, वह अपने सोने वाले कमरे मे गई जिसमे वह बुढिया नस के साथ रहती थी। उसने लिफाफे मे से तसवीर निकाली और चुपचाप बैठ कर निहारने लगी, उसकी आखे तसवीर की एक एक चीज़ का सहलाने लगी—चेहरे, कपडे, वरामदे की सीढिया, पीछे की झाडिया जिनके आगे वह और नेख्लूदोव और उसकी फफियो के चेहरे थे। तसवीर पुरानी हो कर फीकी पड गई थी। वडी देर तक वह उसे दखती रही। उसकी आखें विशेषकर अपनी आकृति पर वार वार जाती। कितना प्यारा चेहरा था मेरा बचपन के दिनो मे! माथे पर घुघराले वाल बला करते थे। वह उसे देखने म इतनी खो गई कि जब उसकी साथिन-नस कमरे मे आयी तो उसे पता ही नही चला।

"क्या दे गया है तुम्हे?" फोटो को झुक कर दखते हुए नस ने पूछा। नस मोटी-ताज़ी और अच्छे स्वभाव की थी। "यह कौन है? क्या तुम हो?"

"और कौन होगा?" मुस्करा कर अपनी साथिन के चेहरे की ओर देखते हुए मास्लोवा ने कहा।

"और यह कौन है—क्या वह है? और यह कौन है उसकी मा है?"

"नही, फूफी है। क्या तसवीर देख कर तुम मुझे पहचान पाती?'

"कभी नही। तुम्हारी शक्ल ता बिल्कुल बदल गई है। वक्त भी ता बहुत हो चुका है दस साल हो गये होगे?"

"दस साल क्या, जिन्दगी बीत गई है।" सहसा मास्लोवा का दिल मसोस उठा, चेहरा उदास हो गया और भौहो के बीच एक गहरी रेखा खिच गइ।

"क्या भला? तुम्हारे दिन तो बडे आराम से कटते रहे होगे?"

"आराम से जरूर," आखें बन्द कर सिर हिलाते हुए मास्लोवा ने दोहराया। "नरक से भी बुरी जगह थी।'

"क्यो?"

"क्या? शाम के आठ बजे स लेकर सुबह चार बजे तक, हर रोज।"

"तो औरत यह धधा छोड क्या नही देती?"

"छोडना चाह भी तो नही छोड सकती। लेकिन इन बाता मे क्या रखा है?" मास्लोवा ने कहा और फोटो को मेज़ के दराज़ मे फेंकती हुई उठ खडी हुई। वह क्षुब्ध हो उठी और बडी मुश्किल से अपन आसू रोकत हुए अपन पीछे दरवाज़ा ज़ोर से बन्द करती हुई भाग कर बाहर बरामदे मे चली गई।

तसवीर मे खडे सभी लोगा को देखते हुए वह अपने को उन जैसी महसूस करने लगी थी। मन ही मन कल्पना करने लगी थी कि वह उन दिनो कैसी हुआ करती थी, कितनी खुश थी वह तब और अब भी उसके साथ उसका जीवन सुखी हो सकता था। उसकी साथिन के शब्दो ने उसे याद दिला दिया कि वह क्या है और "वहा" क्या रही थी और उसकी आखो के सामने अपने जीवन की सभी वीभत्सताए साकार हो गई, जिनका धूमिल भास तो उसे हमेशा रहता था परन्तु जिनके बारे मे कभी भी उस ध्यान से सोचने का साहस नही हुआ था। केवल आज वे भयानक रातें उसे स्पष्टता से याद आने लगी। उनमे से एक रात तो खास तौर पर भयानक थी। शीत-समाप्ति पर्व की रात थी और वह एक विद्यार्थी का इतजार कर रही थी। उसने उसे वचन दिया था कि वह पैसे दे कर उसे चकले मे से छुडा ले जायेगा। उसे याद आया—रात के दो बजे का वक्त होगा जो लोग उसके साथ हमबिस्तरी करने आये थे, जा चुके थे। उसने नीचे गले का रेशमी फ्रॉक पहन रखा था, जिस पर जगह जगह शराब के धब्बे थे। बाल उलझे हुए थे और उनमे लाल फीता बधा हुआ था। थकी मादी, अग अग मे शिथिल, और कुछ कुछ नशे मे बसुध वह अपनी आसामियो को विदा कर आयी थी और पियानो बजाने वाली के पास जा बैठी थी। उस वक्त नाच थोडी देर के लिए थम गया था। पियानो बजाने वाली औरत बडी दुबली पतली थी और उसके चेहरे पर दाग थे। वह पियानो पर वायलिन बजाने वाले का साथ देती थी। मास्लोवा अपने असह्य कठोर जीवन की बात करने लगी थी। पियानो बजाने वाली औरत ने भी यही कहा, कि मैं भी परेशान हू और इस तरह की जिन्दगी को बदलना चाहती हू। सहसा क्लारा भी उनसे आ मिली, और तीनो ने अपनी जिन्दगी बदलने का निश्चय कर लिया। वे सोच रही थी कि अब चकले मे और कोई नही आयेगा, रात खत्म हो चुकी है। वे अपने कमरो मे जाने ही वाली थी कि ड्योढी मे से कुछेक शराबियो की आवाजें आने लगी। वायलिन पर फिर धुन बजने लगी और पियानो बजाने वाली ने उसका साथ देते हुए क्वाड्रिल नाच की धुन बजानी शुरू कर दी। यह धुन किसी जोशीले रूसी गीत की थी। एक नाटा सा आदमी डुमदार कोट पहने और सफेद नकटाई लगाये मास्लोवा की तरफ बढ आया। पसीने से तर, उसके मुह से शराब की बू आ रही थी। हिचकिया लेता हुआ

वह उसके पास आया और उसे बगल में भर कर नाचने लगा। जब नाच का पहला भाग खत्म हुआ तो उसने अपना कोट भी उतार दिया। इसी तरह एक मोटे से, दाढ़ी वाले आदमी ने बनारा को पकड़ लिया। उसने भी डेम-कोट पहन रखा था (ये लोग सीधे एक नाच पर से आ रहे थे), बड़ी देर तक वे नाचते, उछलते, चीखते चिल्लाते और शराब पीते रहे और इस तरह एक साल गुजर गया, फिर दूसरा साल, फिर तीसरा। उसका चेहरा बदलता नहीं तो क्या होता? और इस सब का मूलकारण नेख्लूदोव था! सहसा उसका मन नेख्लूदोव के विरुद्ध फिर पहली सी कटुता से भर उठा। उसका जी चाहा कि उसे जी भर कर गालियां दे, उसे बुरा भला कहे। उसे अफसोस होने लगा कि आज उसे क्या कुछ नहीं कहा। मुझे चाहिए था मैं उससे कहती कि मैं तुम्हें अच्छी तरह जानती हूं अब तुम्हारे पास मैं नहीं आऊंगी। तुमने मेरे शरीर का तो उपभोग किया है, पर अब मैं तुम्हें अपनी आत्मा का उपयोग नहीं करने दूंगी, तुम कभी भी मुझे अपनी उदारता का पात्र नहीं बना सकोगे। मास्लोवा को अपने आप पर तरस आने लगा। उसका जी चाहा कि कहीं से दो घूंट शराब मिल जाय ताकि दिल में यह उठती हुई आत्मानुकम्पा की भावना तथा नेख्लूदोव के प्रति निरर्थक भर्त्सना की भावना दब जाय। जेलखाने में होती तो वह जरूर अपना वचन तोड़ देती, लेकिन यहां शराब मिलती नहीं थी। उसे हासिल करने के लिए छोटे डाक्टर से दरख्वास्त करनी पड़ती थी। मगर मास्लोवा उससे डरती थी क्योंकि वह उससे छेड़छाड़ करने लगता था। पुरुषों के साथ अब किसी प्रकार का भी घनिष्ठ सम्पर्क रखने में उसे घृणा होती थी। थोड़ी देर तक वह बरामदे में एक बेंच पर बैठी रही फिर अपने छोटे से कमरे में लौट आयी। उसने अपनी साथिन के शब्दों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया और बड़ी देर तक अपने बर्बाद जीवन के बारे में सोचती हुई आंसू बहाती रही।

१४

पीटसबर्ग में नेख्लूदोव को तीन काम करने थे सेनेट में मास्लोवा की दरख्वास्त देना, अपील कमेटी में फेदोस्या बिर्युकोवा का मामला पेश करना, वेरा बोगोदूखोव्स्काया का काम उसकी मित्र शूस्तोवा को जेल

से रिहा करवाना, और जेंडामरी के दफ्तर मे जा कर इस बात की इजाजत हासिल करना कि एक मा को अपने बेटे से जेल में मिलने दिया जाए। इन दो बातों को जिनके बारे मे वेरा ने उसे लिखा था, वह मन म एक ही समझता था। और चौथा मामला उस मण्डली का था जिन्हे अपने परिवारों से अलग कर के काकेशस मे निर्वासित किया जा रहा था क्योंकि उसके सदस्य इकट्ठे बैठ कर इंजील पढते और उस पर विचार करते थे। इस मामले को निबटाने की उसने मन ही मन शपथ ले ली थी, हालांकि उस मडली को उसने काई ऐसा वचन नही दिया था।

आखिरी बार मास्लेनिकोव को मिलने के बाद और गावा का दौरा करने के बाद नेख्लूदोव का मन उस समाज के प्रति घृणा से भर उठा था जिसमे वह आज तक रहता आया था। यह वह समाज था जो करोड़ो इसानो की यन्त्रणा को बडी सावधानी से छिपाये रहता है ताकि कुछ लोग ऐश आराम की जिन्दगी बसर कर सकें। इस समाज मे रहने वाले लोग इन यन्त्रणाओ को नही देखते, न ही देख सकते हैं, न ही वे अपने जीवन की क्रूरता तथा दुष्टता को ही देख पाते हैं। समाज के प्रति नेख्लूदोव की यह भावना थी हालाकि इस सम्बन्ध मे उसने काई निश्चय नही किया था। अब इस समाज मे रहते हुए नेख्लूदोव को झेंप होती थी और उसका मन आत्मभर्त्सना से भर उठता था। फिर भी वह बार बार इसी समाज की ओर खिचा जाता था, क्योकि उसके मित्र और सम्बन्धी इसी समाज के रहने वाले थे, और उसे स्वय इस समाज म रहने की आदत पड गई थी। इस समय उसका सारा ध्यान एक ही बात पर केन्द्रित था कि वह किसी भाति मास्लोवा तथा अन्य दुखी जना की सहायता कर सके। इस काम को करने के लिए भी यह जरूरी हो जाता था कि वह इसी समाज के लागा से मिले और उनसे मदद मागे, हालाकि उनके प्रति उसके मन म कोई आदर का भाव नही उठता था। आदर ही क्या, उन्हें मिल कर उसके मन म क्रोध और घृणा पैदा होती थी।

पीटर्सबर्ग म पहुच कर नेख्लूदोव अपनी मौसी के यहा ठहरा। उसकी मौसी काउटेस चार्स्काया एक भूतपूर्व मन्त्री की पत्नी थी। वहा पहुचते ही नेख्लूदाव ने फिर अपने को उसी कुलीन समाज म पाया जिससे वह मन ही मन दूर होता जा रहा था। यह उसे बडा अप्रिय लगा मगर करना ही तो पडा। अगर किसी होटल म रहता तो मौसी नाराज होती। इसके

अतिरिक्त उसकी मौसी का बडे बडे लोगो से सम्पर्क था, और जो काम नेख्लूदोव यहा करने आया था उनमे उसे मौसी से बडी मदद मिल सकती थी।

"जरा बताओ तो यह मैं क्या सुन रही हू। यह तुम क्या घोडे दौडाने लगे हो," नेख्लूदोव के पहुचने के फौरन ही बाद अपने भाजे को काफी पिलाते हुए काउटेस येकातेरीना इवानोव्ना चार्स्काया ने कहा। "Vous posez pour un Howard! * मुजरिमो की मदद करते फिरते हो, जेलखाना के चक्कर काटते हो, सुधार का काम करने लगे हो।"

"नही नही, मैं सुधार क्या करूगा।"

"क्यो नही। बडी अच्छी बात है। पर मैं सुनती हू इस काम से कोई प्रेम कहानी भी जुडी हुई है। सुनाओ मुझे सारा किस्सा क्या है।"

मास्लोवा के साथ अपने सम्बध की सारी कहानी नेख्लूदोव ने अपनी मौसी को सच सच सुना दी।

"हा मुझे याद है। तुम्हारी मा बेचारी ने मुझे बताया था। यह उन दिनो की बात है जब तुम उन बुढिया औरतो के पास रहते थे। उनकी जरूर यह इच्छा रही होगी कि तुम उनकी नौकरानी से शादी कर लो।' (काउटेस येकातेरीना इवानोव्ना को नेख्लदोव की फूफियो से नफरत थी)। "तो यह वह लडकी है। Elle est encore jolie? '**

येकातेरीना इवानोव्ना साठ साल की हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ फुर्तीली और बातूनी औरत थी। कद की ऊची लम्बी और मजबूत थी, और होठो पर उसके हल्की सी काली मूछ थी। नख्लूदोव उसे बहुत चाहता था। बचपन से ही वह उसके हसमुख स्वभाव और ओजस्विता की ओर आकर्षित हुआ था।

"नही ma tante *** वह बात तो खत्म हो चुकी है। अब तो मैं केवल उसकी मदद करना चाहता हू क्योकि बिना किसी जुर्म के उसे जेल म डाल दिया गया है। यह मेरे कारण हुआ है मैं ही उसके दुर्भाग्य का कारण हू। मैं सोचता हू यह मेरा कर्तव्य है कि जो भी उसके लिए कर सकू, करू।"

---

*तुम बडे हावर्ड बनने फिरते हो। (फ्रेंच)

**वह अभी भी सुदर है? (फ्रेंच)

***मौसी, (फ्रेंच)

"पर मैंने तो सुना है कि तुम उसके साथ शादी करने की सोच
हो। क्या यह सच है?"

"हा, मेरा इरादा था, लेकिन वह शादी करना नहीं चाहती
यकातेरीना इवानोव्ना आश्चर्यचकित रह गई। चुपचाप, भौंह चढाये
आखे नीची किये वह अपने भाजे के चेहरे की ओर देखती रही। फिर
उसके चेहरे का भाव बदल गया। वह अधिक खुश नज़र आने लगा
बोली—

"तो वह तुमसे ज्यादा समझदार है। तुम तो निरे पागल हो। क्या
सचमुच उसके साथ शादी कर लेते?"

"जरूर।"

"यह जानते हुए भी कि उसकी जिन्दगी कैसी रही है?"

"यह जान कर तो और भी निश्चय से शादी करता, क्योंकि
उसका कारण था।"

"तुम बहुत भोले हो," होठो पर आयी मुस्कान दबाते हुए मौसी
कहा। "बहुत ही भोले हो, और इसी कारण मुझे इतने प्यार भी
हो' उसने "भोले" शब्द को दोहराते हुए कहा, प्रत्यक्षत इसे बार
कहना उसे अच्छा लग रहा था। ऐसा जान पडता था जैसे इस एक
से उसे अपने भाजे की नैतिक स्थिति का ठीक ठीक पता चल रहा
"क्या तुम जानते हो एलीन एक बहुत अच्छा आश्रम चला रही
मैंग्डेलीन गृह। यह तो बडा अच्छा हुआ जो मुझे तुमने यह बात
दी। मैं एक बार वहा गई थी। उनमे जो लोग रहते हैं, उफ! क्या ब
बेहद गदे है! घर लौट कर मुझे बार बार नहाना पडा। पर एलीन
मन से इस काम मे जुटी हुई है। हम उसे उसी आश्रम मे रख दें
मेरा मतलब है, तुम्हारी उस लडकी को। अगर कहीं उसका सुधार
सकता है तो एलीन के ही आश्रम मे, और कहीं नहीं।"

"पर उसे तो कडी मशक्कत की सजा मिल चुकी है। उसी की अ
करने तो मैं यहा आया हूँ। इसके लिए मैं आपसे भी प्रार्थना करना चा
हूँ।'

"अरे, और अपील कहा करोगे?"

"सेनेट मे।'

"आह, सेनट मे। मेरा चचेरा भाई लेव सेनेट म ही है लेकिन

ता बेवकूफो के विभाग–हैरल्डी डिपाटमट–मे है। वहा के किसी अमली अधिकारी का तो मैं नही जानती। सनट मे जमन ही जमन भरे पडे है–गे, फ़े, डे–tout l alphabet,* या सभी तरह के इवानोव, सेम्योनोव, निकीतन, और या फिर इवानेको, सिमोनको, निकीतेका pour varier** भरे पडे हैं। Des gens de l autre monde*** फिर भी मैं तुम्हारे मौसा जी स बात करूगी। वह उन्हे जानते हैं। वह सब तरह के लोगो को जानते है। मैं उनसे जिक्र तो कर दूगी, लेकिन समझाना तुम्ही। वह मेरी बात कभी नही समझते। मैं कुछ भी कहू, वह यही रट लगाये रहते हैं कि उनके पल्ले कुछ नही पडा। C'est un parti pris**** बाकी सबके पल्ले पड जाता है, केवल इन्ही के पल्ले कुछ नहीं पडता।"

ऐन उसी वक्त मोजे पहने एक चोबदार ने कमरे म प्रवश किया और चादी की रकाबी मे एक चिट्ठी ला कर मालकिन के सामने पेश की।

"लो, खुद एलीन की ही चिट्ठी है। तुम्हें कीज़ेवेतेर का भाषण सुनन का भी मौका मिल जायेगा।"

"कीज़ेवेतेर कौन है?"

"कीज़ेवेतर? आज शाम मेरे साथ चलना, तुम्ह पता चल जायेगा कीज़ेवेतेर कौन है। उसकी वाणी म ऐसी शक्ति है कि बडे से बडा मुजरिम भी उसके सामने घुटना के बल बैठ कर रोने लगता है और अपने पापो का प्रायश्चित्त करने लगता है।"

काउटेस येकातेरीना इवानोव्ना उन लोगा के मत की अनुयायी थी जा यह मानत हैं कि अपने पाप कबलन म ईसाई धम का सार निहित है। यह बडी अजीब बात थी क्योकि यकातेरीना इवानोव्ना का यह विश्वास उसके स्वभाव से मेल नही खाता था। उन दिनो इस मत का फैशन सा चल पडा था। जहा कही भी, जिस किसी सभा मे इसका प्रचार होता, येकातरीना इवानोव्ना वहा जा पहुचती। और इस मत के "अनुयाइया" की अपने घर म भी सभाए करती। इस मत मे हर प्रकार की धामिक विधिया देव प्रतिमाओ, अनुष्ठाना इत्यादि का निषेध था, परन्तु यकातेरीना

---

*पूरी वणमाला, (फ्रेंच)

**विविधता के लिए। (फ्रेंच)

***दूसरी सोसाइटी के लोग। (फ्रेंच)

****यह तो उसने पहले स ही निश्चित कर रखा है। (फ्रेंच)

इवानोव्ना ने अपने सभी कमरो मे देव प्रतिमाए लटका रखी थी, यहा तक कि सोने वाले कमरे मे पलग के ऐन ऊपर भी दीवार पर एक देव प्रतिमा लटक रही थी। साथ ही वह चर्च की सभी विधिया अनुष्ठाना का पालन भी करती थी। उसे इसमे कोई असगति नजर नही आती थी।

"अगर तुम्हारी वह मैग्डेलीन उसका भाषण सुन पाये तो सचमुच उसके पाप धुल जायेंगे। वह बदल जायेगी," काउटेस ने कहा। "आज रात जरूर घर पर ही रहना। तुम उसका भाषण सुन पाओगे। वह बडा विलक्षण आदमी है।"

"मुझे इसमे कोई दिलचस्पी नही ma tante"

"लेकिन मैं जो तुम्हे कहती हू कि वह बडा दिलचस्प होगा। जरूर घर पहुच जाना। इसके अलावा तुम्हे मेरे साथ कौन सा काम है? Videz votre sac"*

"एक काम मुझे किले मे करवाना है।"

"किले मे? उसके लिए मैं तुम्हे बैरन क्रीगस्मथ के नाम चिट्ठी दे सकती हू। C'est un tres brave homme** लेकिन तुम भी तो उसे जानते हो, वह तुम्हारे पिता का अच्छा मित्र था। Il donne dans le spiritisme*** पर कोई फर्क नही पडता, वह अच्छा आदमी है। वहा तुम्हे क्या काम है?"

"एक स्त्री के लिए इजाजत लेनी है कि वह जेलखाने म अपने बेटे से मिल सके। लेकिन मुझे मालूम हुआ है कि यह काम क्रीगस्मथ के बस का नही है केवल चेर्व्यान्स्की ही इसकी इजाजत द सकता है।"

'दो कौडी का आदमी है चेर्व्यान्स्की। पर मेरियेट उसी की बीवी है न। मेरे कहने पर वह जरूर यह काम कर देगी। Elle est tres gentille"****

"मुझे एक दूसरी औरत के लिए भी अर्जी करना है। वह भी जेल म बद है, उस यह मालूम तक नही कि उसे क्या कैद किया गया।'

"रहन दो जी, उसे ख ब मालूम होगा। य बाल-कटी छोकरिया सब

---

*बता दो गम कुछ। (फ्रेंच)

**वह बहुत नेक आदमी है। (फ्रेंच)

***उसे प्रेतवाद म रुचि है। (फ्रेंच)

****वह बहुत भली है। (फ्रेंच)

अच्छी तरह जानती हैं कि इन्हें क्या कहा रखा हुआ है। जो हुआ है ठीक हुआ है। उन्हें अपने किये की मिल रही है।"

"यह तो मैं नहीं जानता कि ठीक हुआ है या नहीं, लेकिन वे बड़े कष्ट में हैं। आप तो मौसी ईसाई धर्म को मानने वाली हैं और इंजील के सदुपदेशों में विश्वास रखती हैं, फिर भी आपके दिल में दर्द नहीं है।"

"उसका इसके साथ क्या सम्बन्ध है? इंजील इंजील है और जो चीज बुरी है वह बुरी है। मैं तो दिखावे के लिए भी यह नहीं कह सकती कि मुझे नकारवादी अच्छे लगते हैं। खास तौर पर ये कटे बालों वाली नकारवादी छोकरियां तो मुझे फूटी आंख नहीं सुहातीं।'

"क्यों नहीं सुहातीं?"

"पूछते हो क्यों? पहली मार्च के किस्से के बाद यह पूछते हो?"*

"हर किसी ने तो उसमें भाग नहीं लिया था।"

"भले ही न लिया हो। जो काम उनका नहीं उसमें वे क्यों नाक घुसेड़ती हैं? ये काम औरतों के नहीं हैं।"

"पर आप मेरियेट के बारे में तो समझती हैं कि वह काम कर सकती है।"

"मेरियेट? हां, मेरियेट आखिर मेरियेट ठहरी। ये छोकरियां भगवान जाने क्या हैं। हर किसी को सीख देती फिरती हैं।"

"सीख नहीं, वे तो जनता की मदद करना चाहती हैं।"

"उनके बिना भी हम जानती हैं किसकी मदद करें और किसकी न करें।"

"पर जनता की हालत तो बहुत बुरी है। मैं अभी देहात से आ रहा हूं। कितना अन्याय है कि किसान तो खून-पसीना एक करते रहें और फिर भी उन्हें भर-पेट खाना न मिले। और हम लोग गुलछर्रे उड़ाते रहें," नेख्लूदोव बोला। उसकी मौसी का स्वभाव बहुत अच्छा था। नेख्लूदोव निःसंकोच अपने मन की बात कहने लगा।

"तुम क्या चाहते हो? मैं भी काम करूं और मेरे पास भी खाने पीने को कुछ न हो?"

---

*पहली मार्च, १८८१ को (पुराने कैलेंडर के अनुसार) ज़ार अलेक्सांदर द्वितीय की हत्या की गई थी।

"नहीं, मैं यह नहीं चाहता," नेख्लूदोव बरबस मुस्करा उठा, "मैं तो चाहता हूँ कि हम सभी काम करें और सभी आराम से रहें।"

मौसी ने फिर पहले की तरह भौंह चढ़ायी, आँखें नीची कीं, और अनोखे ढंग से उसकी ओर देखा।

"Mon cher, vous finirez mal,"* वह बोली।

"पर क्यों?"

ऐन उसी वक्त काउंटेस चास्काया के पति ने कमरे में प्रवेश किया। ऊँचा-लम्बा, चौड़े कन्धों वाला जनरल, जो पहले मन्त्री के पद पर था।

"ओह दमीत्री, कहो कैसे हो?" उसने कहा और चुम्बन के लिए अपना गाल नेख्लूदोव के सामने कर दिया। वह अभी अभी दाढ़ी बना कर आया था।

"तुम कब आये?" और काउंट ने चुपचाप अपनी पत्नी को माथे पर चूमा।

Non, il est impayable"** पति को सम्बोधित करते हुए काउंटेस ने कहा। 'वह चाहता है कि मैं कपड़े धोया करूँ और आलू खा कर गुजर करूँ। कैसा मूढ़ है। लेकिन फिर भी इसका काम कर देना। बड़ा भोला है," उसने लहजा बदल कर कहा। "तुमने सुना? कामेन्स्की की माँ बहुत कष्ट में है। लोग कहते हैं कि वह बचेगी नहीं," उसने अपने पति से कहा, "तुम्हें जा कर मिलना चाहिए।"

'हाँ, बहुत बुरी बात है," पति ने कहा।

"अब मुझे कुछ चिट्ठियाँ लिखनी हैं। तुम जाओ और इनसे बात करो।

नेख्लूदोव ने बैठक में से निकल कर साथ वाले कमरे में कदम रखा ही था कि मौसी की आवाज आयी—

"तो फिर मेरियट को खत लिख दूँ?"

"जरूर, ma tante

"मैं खत में थोड़ी जगह खाली रख दूँगी। बाल-कटी छोकरी के बारे में जो कुछ लिखवाना चाहोगे मैं बाद में लिख दूँगी। मेरियेट के हुक्म देर की देर है कि उसका पति तुम्हारा काम कर देगा। क्या तुम मुझे बुरी

---

*मेरे प्रिय तेरा अन्त बुरा होगा, (फ्रेंच)

**नहीं, यह बिल्कुल लाजवाब है, (फ्रेंच)

औरत समझते हो? जिन बाल-कटी छोकरियो की तुम मदद करना चाहते हो बडी भयानक होती है। पर je ne leur veux pas de mal * भगवान उनका मालिक है! अच्छा जाओ। मगर शाम का घर पर रहना, भूलना नही, कीज़ेवेतेर का उपदेश होगा, और हम प्रार्थना करेंगे। अगर वही तुम यो हठ न करो, पर ça vous fera beaucoup de bien ** पर मैं जानती हू, तुम्हारी मा और तुम भी इन मामलो मे बहुत पिछडे हुए थे। अच्छा, अब जाओ।"

१५

काउट इवान मिखाइलोविच मन्त्री रह चुका था और विश्वास का बडा पक्का आदमी था।

एक तो उसे इस बात का दृढ विश्वास था कि जिस भाति पक्षी स्वभावत कीडे खाता है, मुलायम परो से अपने को ढके रहता है, हवा मे उडाने भरता है उसी भाति उसके लिए भी यह स्वाभाविक है कि वह सबसे लजीज और सबसे बढिया व्यजनो से भोजन करे, जिन्हे ऊची तनख्वाह पाने वाले बावर्चियो ने तैयार किया हो, सबसे उमदा और सबसे बढिया कपडे पहने, उसकी गाडी म सबसे सुदर और सबसे तेज भागने वाले घोडे जुते हो। अत उसका यह अधिकार है कि य सब चीजें उसके लिए जुटाई जाय। इसके अतिरिक्त काउट इवान मिखाइलोविच का विचार था कि सरकारी खजाने मे से उसे ज्यादा से ज्यादा रुपया बटोरना चाहिए, जसे भी बटोरा जा सके, ज्यादा से ज्यादा उपाधिया प्राप्त करनी चाहिए, यहा तक कि वह अधिकार चिन्ह भी, जिसमे हीरे जडे होते हैं, और ज्यादा से ज्यादा राज परिवार के लोगो—स्त्रियो और पुरुषो—के सम्पर्क म रहना चाहिए। इन धारणाओ की तुलना म बाकी सब चीजो को काउट इवान मिखाइलोविच तुच्छ और निरर्थक समझता था। बाकी चीजे वैसी की वैसी रहें या बदल जाए, उसे इनसे कोई सरोकार न था। इन्ही धारणाओ का अनुसरण करते हुए काउट इवान मिखाइलोविच पीटर्सबर्ग मे पिछले चालीस

---

*मैं उनका बुरा नही चाहती। (फ्रेंच)

**तुम्हें इससे बहुत लाभ होगा। (फ्रेंच)

वप से रह रहा था और इस लम्बे अर्से के अन्त म मन्त्री के पद पर पहुचा था।

वे कौन से प्रधान गुण थे जिनके बल पर वह इस पद पर पहुचा? सबसे पहले तो यह गुण कि उसमे सभी सरकारी दस्तावेजा और कागजा को समझने, तथा सरकारी दस्तावेज तयार करने की योग्यता थी। इन दस्तावेजो की भाषा भले ही भोडी हो, मगर समझ म आ जाती थी और शब्दो के जोड ठीक होते थे। दूसरे, उसकी रोबीली चाल-ढाल। इसके बल पर वह जरूरत पडने पर बेहद गर्वीला और शाहाना नजर आ सकता था, एक ऐसा व्यक्ति जिसके पास तक पहुचना कठिन हो। और वक्त का तकाजा होने पर वह चापलूसी और कमीनेपन की सभी सीमाए तोड सकता था। तीसरे, उसके कोई सामान्य नैतिक सिद्धान्त अथवा नियम नही थे-न शासकीय, न व्यक्तिगत। इस गुण के बल पर वह जमाने का रुख देख लेता था और उसी के अनुसार लोगो से या तो सहमत होता या उनका विरोध करता था। इस तरह का आचरण करते समय वह एक बात का ख्याल रखता शिष्टता का आवरण बना रहे, और लोगो को यह पता न चले कि उसके व्यवहार मे अस्थिरता है। उसे इस बात की कोई परवाह नही थी कि उसका आचरण अपने आप मे नतिक है अथवा अनतिक, और वह लोगो के लिए हितकर होगा अथवा समूचे रूसी साम्राज्य के लिए घोर हानि का कारण।

वह मन्त्री बना। लोगो ने समझा कि वह बडा चतुर राजनेता है। इनमे केवल वे लोग ही शामिल नही थे जो उस पर निभर हो (उनकी सख्या भी कम नही थी) अथवा उसके सम्पक मे हो, बल्कि कई अजनबी लोगा न भी यही समझा। उसे स्वय भी अपने बारे मे यही विश्वास था। फिर वक्त गुजरा। इस बीच उसने कोई बडा काम नही कर दिखाया, न ही उसके द्वारा किसी महत्वपूण बात का स्पष्टीकरण हुआ। अब यहा पर उस जसे और भी कई रोबीले अफसर मौजूद थे जिनका जीवन म कोई उसूल नही था। इन लोगो ने भी दस्तावेज लिखना और पढना सीख लिया था। जीवन के सघष नियम के अनुसार काउट का धकेल कर उन्होने उसकी जगह सभाल ली। तब सब लोग समझ गये कि इस आदमी मे कोई चतुराई नही। बल्कि वह बडा ओछा, अशिक्षित और दभी आदमी है, और उसके विचारो का स्तर मुश्किल से उन सम्पादकीय लेखा के स्तर तक पहुच पाता

है जो सबसे घटिया, कट्टरपन्थी अखबारो मे छपते रहते हैं। पता चल गया कि इस आदमी मे कोई विशेषता नही। यह भी उन अशिक्षित और दभी अफसरो जैसा ही है जिन्होने उसकी जगह सभाल ली है। उसे स्वय भी इस बात का पता चल गया। पर फिर भी उसकी यह धारणा ज्यो की त्यो बनी रही कि उसे हर साल सरकारी खजाने मे से बहुत सी रकम खीचनी है और अपनी पोशाको के लिए नये नये पदक प्राप्त करते रहना है। उसकी यह धारणा इतनी दृढ थी कि किसी म भी यह साहस न था कि इह देने से इन्कार कर सके। इस तरह वह हर साल हजारों रूबल वसूल कर लेता था। इनमे कुछ रकम तो उसकी पेंशन की थी, और कुछ किसी सरकारी सस्था के सदस्य होने के नाते तथा तरह तरह की कमेटियो और परिषदो का अध्यक्ष होने के नाते। इसके अतिरिक्त उसे यह अधिकार भी प्राप्त था—और इसे वह बहुत बडा अधिकार समझता था—कि वह तरह तरह की डोरी कधो और पतलूनो के साथ लगाता रहे और अपने कपडो को फीतो और इनेमल के सितारो से सजाता रहे। इस कारण काउट इवान मिखाइलोविच की बडे ऊचे पदाधिकारियो तक पहुच थी।

काउट इवान मिखाइलोविच ने नेख्लूदोव की बात उसी ढग से सुनी जिस ढग से वह अपने विभाग के स्थायी सेक्रेटरी की रिपोर्टें सुनने का आदी था। जब सुन चुका तो कहने लगा कि वह उसे दो चिट्ठिया लिख कर देगा, एक तो अपील विभाग के सेनेटर वाल्फ के नाम।

"उसके बारे मे तरह तरह की बातें सुनने मे आती हैं, लेकिन dans tous les cas c est un homme tres comme il faut,"* वह बोला, "लेकिन मैंने उस आदमी पर बहुत एहसान किये हैं, इसलिए मेरी बात नही टालेगा। जो भी उससे बन पडा जरूर कर देगा।"

दूसरी चिट्ठी काउट ने अपील कमेटी के एक सदस्य के नाम लिख दी जिसका बडा असर-रसूख था। नेख्लूदोव ने फेदोस्या विर्युकोवा की कहानी सुनाई जिसे काउट ने बडी दिलचस्पी से सुना। नेख्लूदोव ने कहा कि मैं इसके बारे मे सीधे महारानी को दरख्वास्त देना चाहता हू। सुन कर काउट बोला कि कहानी सचमुच बडी दर्दनाक है, और मौका मिलने पर महारानी को सुनाई भी जा सकती है, लेकिन मैं इसका वचन नही

---

*जो भी हो वह आदमी बिल्कुल अच्छा है। (फ्रेंच)

दे सकता। बेहतर यही है कि दरख्वास्त जाब्ते के मुताबिक दाखिल कर दी जाय। मन ही मन उसने सोचा कि अगर मौका मिला, और अगर बृहस्पतिवार को ही petit comite* मे उसे बुलाया गया तो महाराजा से इस बारे मे बात हो जायेगी।

नेख्लूदोव ने दोनो चिट्ठिया ले ली। साथ ही एक चिट्ठी मेरियेट के नाम अपनी मौसी से भी ले ली और इन लोगो को मिलने के लिए निकल पड़ा।

सबसे पहले वह मेरियेट के घर गया। किसी जमाने मे नेख्लूदोव का उससे परिचय रहा था। तब वह १६ १७ वरस की लडकी थी। मेरियेट ऊचे खानदान की थी लेकिन उसके मा-बाप अमीर नही थे। उसकी शादी एक ऐसे आदमी से हुई थी जो नौकरी मे तो बडे ऊचे ओहदे तक जा पहुचा था लेकिन यो उसकी इज्जत नही थी। नेख्लूदोव ने उसके बारे मे बहुत कुछ सुन रखा था—विशेषकर यह कि वह राजनीतिक कन्दियो पर जरा भी रहम नही करता था। सैंकडो-हजारो उसके अधीन थे जिन पर जुल्म करना वह अपना सरकारी फर्ज समझता था। हमेशा की तरह अब भी नेख्लूदोव को यह बात नागवार गुजरी कि पीडितो की मदद करने के लिए उसे उत्पीडको का पक्ष लेना पड रहा है। अब जब वह उनके पास दरखास्त भी करने जाता कि कम से कम कुछ व्यक्तियो पर जुल्म कम करें तो उसे लगता जैसे वह उनके काम का समथन कर रहा है। जुल्म करने की अब उन्हे आदत पड गई थी, और सभवत इसका उन्हे आभास तक न होता था। ऐसी स्थिति मे उसके अन्दर द्वन्द्व होने लगता और उसका मन खिन्न हो उठता। वह द्विविधा मे पड जाता कि फरमाइश करे या न करे, पर अन्त मे हमेशा फरमाइश करने का ही निश्चय करता था। आखिर बात तो यही है न कि इस मरियेट और उसके पति के यहा जाना उसके लिए अप्रिय है कि उनके यहा वह घबराया हुआ सा और शर्मिदा महसूस करेगा, लेकिन इस सब के बदले हो सकता है एक अभागी, एकाकी कारावास में पडी लडकी रिहा हो जाय और उसकी तथा उसके घर वालो की यातनाएं समाप्त हो जाय। अपने को अब वह इन लोगो की श्रेणी का नही समझता था, इसलिए इनके साथ उठना-बैठना उसे असगत और अभद्र लगता था। लेकिन ये लोग उसे अब भी अपना ही समझते थे। इसलिए भी नेख्लूदोव

---

*अतरग बैठक (फ्रेंच)

को महसूस होने लगता कि वह पुराने ही ढर्रे पर चला जा रहा है और अपनी धारणाओं के बावजूद उन्ही के से भाडे और अश्लील लहजे मे बातें करने लगता है। यह उसने अपनी मौसी के घर पर भी महसूस किया था। आज सुबह जब अत्यन्त गभीर बातो की चर्चा हो रही थी वह स्वय छिछले, मजाकिया लहजे मे बात करने लग गया था।

बडी मुद्दत के बाद वह पीटसबर्ग आया था। इस बार भी यहा के वातावरण का वही आम प्रभाव उस पर पडा था। वह एक ओर तो शारीरिक स्फूर्ति, परतु दूसरी ओर नैतिक जडता का अनुभव कर रहा था। यहा पर हर चीज साफ-सुथरी, आरामदह थी, हर बात मे करीना था। आचार सम्बन्धी बातो मे लोग उदार थे जिससे जीवन बडा सुभीते से चलता हुआ जान पडता था।

जिस गाडीवान की गाडी मे वह बैठा था, वह बडा साफ-सुथरा, चिकना चुपडा और मीठी मीठी बाते करने वाला आदमी था। वहा खडे सिपाही बडे चिकने-चुपडे, साफ-सुथरे और मधुरभाषी थे। जिन सडको पर उसकी गाडी बढ चली, वे भी बडी नफीस, साफ-सुथरी, पानी से धुली सडके थी। सडको के किनारो पर के घर भी बढिया और साफ सुथरे थे। इन्ही मे से एक घर मे मेरियेट रहती थी।

फाटक के सामने एक फिटन खडी थी जिसमे दो अग्रेजी घोडे जुते थे। उन पर लगा साज भी अग्रेजी था। बावर्दी कोचवान भी जो हाथ मे छाटा लिये अपनी सीट पर बडे गर्व से बैठा था, अग्रेजी जान पडता था। उसने बडे बडे गलमुच्छे लगा रखे थे जो उसकी आधी गालो को ढके हुए थे।

जिस दरबान ने ड्योढी का दरवाजा खोला, उसने भी बेहद साफ वर्दी पहन रखी थी। ड्योढी के अन्दर चोबदार खडा था। उसकी वर्दी दरबान की वर्दी से भी ज्यादा साफ थी और उस पर सुनहरी डोरी लगी थी। मुह पर बडे रोबीले गलमुच्छे थे जिन्हे उसने खूब कघी कर रखा था। उसके साथ एक अरदली खडा था। अरदली ने भी बढिया नई वर्दी पहन रखी थी।

"आज जनरल साहब किसी से नही मिलेगे। मेम साहब भी नही मिल सकेगी। वे अभी बाहर जा रही हैं।"

नेख्लूदोव ने येकातेरीना इवानोव्ना की चिट्ठी चोबदार को दे दी। एक मेज पर मुलाकातियो का रजिस्टर रखा था। नेख्लूदोव वहा जा बैठा

श्रौर अपना कार्ड निकाल कर उसके पीछे लिखने लगा कि खेद है घर में किसी से भी भेंट नही हो पायी। इतने मे चोबदार सीढियो की ओर बढ गया, दरवान वाहर जा कर कोचवान को पुकारने लगा, श्रौर अर्दली तन कर खडा हो गया है। अ्रदली की आखें सीढियो पर गडी था जिन पर से एक छोटी सी महिला तेज़ तेज कदम रखती हुई नीचे उतर रही थी। उसकी शान शौकत को देखते हुए उसका या तेज़ तेज उतरना बडा अजब लग रहा था।

मेरियेट ने काले रग की पोशाक पहन रखी थी, ऊपर काले ही रग का केप था, सिर पर वडा सा टोप जिसमे पख लगे थे श्रौर हाथों में नये काले रग के दस्ताने थे। चेहरे पर एक हल्की सी जाली लटक रही थी।

नेख्लूदोव को देख कर उसने चेहरे पर से जाली उठा दी, उसके पीछे से चमकती आखो वाला उसका सुन्दर चेहरा निकला, बडे कुतूहल से उसने नेख्लूदोव की श्रोर देखा।

"श्रोह, प्रिंस दमीत्री इवानोविच," कोमल, मधुर आवाज मे उसने कहा, "मैं ज़रूर पहचान जाती "

"अच्छा, आपको मेरा नाम भी याद है?"

"क्यो नही। मेरी बहिन श्रौर मैं तो तुमसे प्रेम भी करती थीं," उसने फ्रासीसी भाषा मे कहा। "लेकिन तुम तो बडे बदल गये हो। चच्च, मुझे खेद है कि मुझे कही जाना है। मगर कोई बात नही, चलो आओ, ऊपर चले।" कहते हुए वह खडी हो गई श्रौर फिर द्विविधा में पड गई। फिर उसने घडी की ओर देखा। "नही, नही, मैं नही रुक सकती। मुझे कामेन्स्की के घर जाना है, वहा मृतक की आत्मा के लिए प्रार्थना होगी। मा बेचारी का बुरा हाल है।"

"कामेन्स्की कौन है?"

"क्या तुमने नहीं सुना? उनका बेटा द्वन्द्व युद्ध में मारा गया था। पोज़ेन के साथ उसकी लडाई हुई थी। मा-बाप का इकलौता बेटा था। बडा जुल्म हुआ है! मा बेचारी का तो बुरा हाल है।"

"हां, मैंने कुछ कुछ सुना है।"

"तो मैं चलूंगी। तुम कल या आज शाम को ही आ जाना," उसने कहा और हल्के हल्के, तेज़ तेज कदम रखती हुई दरवाजे की ओर जाने लगी।

"आज शाम को तो मैं नहीं आ सकूंगा," उसके पीछे पीछे बाहर निकलते हुए वह बोल रहा था, "पर मैं तो आपके पास एक काम से आया था।" लाखी घोडों को फाटक के सामने लाये जाते देख कर उसने कहा।

"क्या, क्या हुआ?"

"यह मौसी ने आपके नाम एक चिट्ठी दी है," एक छोटा सा लिफाफा उसके हाथ मे देते हुए नेख्लूदोव ने कहा। लिफाफे पर बडी सी वंश चिन्ह समेत सील थी। "चिट्ठी में सब कुछ लिखा है।"

"काउंटेस येकातेरीना इवानोव्ना सोचती हैं कि मेरे पति मेरी बात सुनते हैं, कि काम-काज के मामलो मे मैं उनसे कुछ करवा सकती हूं। यह उनकी सरासर भूल है। मैं कुछ भी नहीं कर सकती। न ही मैं उनके मामला मे दखल देना चाहती हूं। पर कोई बात नहीं, तुम्हारी खातिर और काउंटेस की खातिर, मैं अपना असूल तोड दूंगी। काम क्या है?" उसने कहा और अपना नन्हा सा हाथ जिस पर काला दस्ताना चढा था जेब मे डालने का विफल प्रयास करने लगी।

"क़िले मे एक लडकी कैद है। वह बीमार है, और बेगुनाह है।"

"उसका नाम क्या है?"

"शूस्तोवा, लीदिया शूस्तोवा। चिट्ठी मे लिखा है।"

"अच्छी बात है। मुझसे जो बन पडा मैं करूंगी।" कहते हुए मेरियेट उछल कर अपनी गाडी मे जा बैठी। गाडी छोटी सी और ऊपर से खुली थी और उसमे नरम नरम गद्दे बिछे थे। गाडी के मडगार्ड खूब पालिश किये हुए थे और धूप मे चमक रहे थे। गाडी मे बैठते ही उसने अपनी छोटी छतरी खोल ली। चोबदार बॉक्स पर चढ गया और कोचवान को गाडी चलाने का इशारा किया। गाडी चलने लगी। लेकिन सहसा उसने छतरी की नोक कोचवान की पीठ मे खोसी। पतली पतली टांगो वाली सुन्दर लाखी घोडियां फौरन खडी हो गई। लगाम खिंच जाने से उनकी गर्दनें कमान की तरह तन गई थीं, और वे खडी खडी बार बार पांव बदलने लगी थीं।

"मिलने जरूर आना, पर अपना स्वार्थ ले कर नहीं," उसने कहा और नेख्लूदोव की ओर मुस्करा कर देखा। अपनी मुस्कान का प्रभाव वह जानती थी। इसके बाद उसने अपने चेहरे पर फिर जाली गिरा ली।

मानो अभिनय समाप्त हो गया हो और नाटक पर पर्दा गिराने का वक्त आ गया हो। "अच्छा, चलो।" और उसने फिर छतरी की नोक कोचवान की पीठ मे खोभी।

नेख्लूदोव ने सिर पर से टोप उतार कर अभिवादन किया। नन्ही घोडिया हल्के से फडफडायी, फिर सडक के पत्थरो पर अपने खुर खरखराती हुई चल निकली। गाडी नये रबड के टायरो पर तेज तेज और समतल गति से जाने लगी। केवल किसी किसी जगह, सडक ऊची-नीची होने के कारण गाडी हल्का सा हिचकोला खाती थी।

१६

मेरियेट की मुस्कराहट के जवाब मे नेख्लूदोव भी मुस्कराया था। उसे याद कर के नेख्लूदोव ने सिर हिला दिया।

"इस तरह की जिन्दगी मे से निकलने की अभी सोच ही रहा होता हू कि पाव फिर उसी की ओर खिच जाते हैं," वह सोचने लगा। उसके अन्दर फिर द्वन्द्व छिड गया और सशय उठने लगे। जब कभी उसे ऐसे लोगो की चापलसी करनी पडती जिनके लिए उसके दिल मे कोई इज्जत न थी, तो उसका मन इसी तरह की भावनाओ से विचलित हो उठता था।

यह सोचते हुए कि पहले कहा जाया जाये, कहा बाद मे, ताकि चक्कर न लगाना पडे नेख्लूदोव सबसे पहले सेनेट की ओर चला। उसे अन्दर दफ्तर तक ले जाया गया, जहा उसने आलीशान इमारत मे बडी सख्या मे बहुत ही सलीकेदार और साफ-सुथर क्लर्को को बैठे पाया।

मास्लोवा की दरख्वास्त पहुच चुकी थी और उसी सेनेटर वोल्फ के पास उस पर विचार करने और रिपोट देने के लिए भेज दी गई थी, जिसके नाम नेख्लूदोव अपने मौसा से सिफारिशी चिट्ठी लाया था।

"सेनेट की एक बैठक इसी हफ्ते मे होगी," एक अफसर ने नेख्लूदोव से कहा। "पर मास्लोवा का मुकद्दमा इस बैठक म पेश नही होगा। हा, अगर खास तौर पर इसके लिए फरमाइश की जाय तो मुमकिन है बुधवार को ही इस पर विचार किया जा सके।"

मास्लोवा के मुकद्दमे के कागजात वगैरा निकलवाने म कुछ देर लगी।

नेख्लूदोव दफ्तर म बैठा रहा। सेनेट के दफ्तर मे सभी लोग उसी द्वन्द्व युद्ध की चर्चा कर रहे थे, जिसमे युवा कामेन्स्की मारा गया था। उनकी बाते सुनते सुनते उसे इस घटना की पूरी तफसील मालूम हो गई। सारा पीटसबर्ग उसी की बात कर रहा था। बात यो हुई थी कुछ अफसर एक शराबखाने मे बैठे थे ऑयस्टर और शराब के दौर चल रहे थे। जैसा कि अवसर होता है सबने खूब पी रखी थी। किसी ने कामेन्स्की की रेजिमेंट के बारे म कुछ ऊंच-नीच कह दिया। जवाब मे कामेन्स्की ने कहा कि तुम झूठ बकते हो। कहने वाले ने कामेन्स्की को घूसा दे मारा। बस दूसरे दिन दोनो का द्वन्द्व युद्ध हो गया। कामेन्स्की को पेट म गोली लगी और दो घण्टे के बाद प्राण निकल गये। हत्या करने वाला और दोनो के सहायक पकड लिये गये। उन्हे हिरासत म तो रखा गया लेकिन सुनने म आ रहा था कि दो हफ्ते तक म उन्हे रिहा कर दिया जायेगा।

सेनेट म से निकल कर नेख्लूदोव अपील कमेटी के एक सदस्य बैरन वोरोब्योव को मिलने गया। वह बडे शानदार मकान म रहता था जो ज़ार की ओर से मिला हुआ था। दरबान ने बडे रूखे लहजे म नेख्लूदोव को जवाब दे दिया कि बैरन हर रोज़ नही मिल सकते, केवल मुलाकातो के दिन ही मिल सकते हैं। इस समय वह ज़ार से मिलने गये हैं और कल उन्हे कोई रिपोर्ट पढनी है। नेख्लूदोव ने वह चिट्ठी दरबान के हाथ म दी जो वह अपने मौसा से लाया था और सीधा सेनेटर वोल्फ से मिलने चला गया।

जब नेख्लूदोव अन्दर दाखिल हुआ तो वोल्फ उसी वक्त भोजन कर के हटा था, और आदत के मुताबिक सिगार सुलगाये कमरे म टहल रहा था। उसका विचार था कि इससे भोजन पचाने मे सहायता मिलती है। व्लादीमिर वासील्येविच वोल्फ सही मानो मे un homme tres comme il faut था। इस गुण को वह अपनी बहुत बडी विशेषता समझता था, और इसी लिए वह औरो के साथ बडप्पन का व्यवहार भी करता था। यो इस गुण को विशेषता देना उसके लिए स्वाभाविक भी था, क्योकि केवल इसी की बदौलत वह ऊचे ओहदे पर पहुचा था। जीवन मे वह चाहता भी यही कुछ था। जिस जगह उसने ब्याह किया वहा से उसे ऐसी सम्पत्ति हाथ लगी जिससे अठारह हज़ार रूबल सालाना की आमदनी होती थी। अपनी कोशिश से उसने सेनेटर का पद ग्रहण किया। वह अपने को केवल

un homme tres comme il faut ही नही समझता था बल्कि सही मानो मे ईमानदार भी मानता था। ईमानदारी से मतलब वह यह निकालता था कि स्वय किसी से भी चोरी छिपे रिश्वत नहा लेता था। लेकिन सरकार से आग्रह कर के तरह तरह के भत्ते, किराये, सफ़रखर्च इत्यादि ऐंठने को वह बेईमानी की बात नही समझता था। और अन्त मे जिस तरह का भी काम सरकार करने को कहे, बडी तत्परता से करता था। पहले वह पोलैण्ड के एक प्रान्त का गवनर हुआ करता था। उस समय उसने सैंकडो बेगुनाहो का सवनाश किया। उन्हे जेलो मे ठसा, तथा जलावतन करवाया, इसलिए कि वे अपनी जनता तथा अपने पुरखाओ के धर्म से प्रेम करते थे। उसे वह बेईमानी की बात नही समझता था बल्कि उत्कृष्ट, वीरोचित तथा देशभक्ति का काम समझता था। वह अपनी पत्नी (जो उससे प्रेम करती थी) तथा उसकी बहिन की सारी सम्पत्ति हडप कर गया। इसे भी वह बेईमानी की बात नही समझता था। इसके विपरीत, उसका विचार था कि उसने बडे अच्छे ढग से अपने घरेलू मामलो की व्यवस्था कर दी है।

उसके परिवार के सदस्य थे उसकी सहमी हुई पत्नी, उसकी साली तथा बेटी। साली की सारी ज़मीन-जायदाद बेच कर जितना भी रुपया वसूल हुआ उसने अपने नाम पर जमा करवा लिया था। उसकी बेटी देखने मे साधारण, भीरु और विनीत स्वभाव की थी। उसका जीवन बिल्कुल एकाकी और नीरस था, अत मन बहलाने के लिए उसने हाल ही मे इवैंजेलिकल मत मे दिलचस्पी लेना शुरू कर दिया था और एलीन तथा काउटेस येकातेरीना इवानोव्ना के यहा प्राथना-सभाओ मे जाने लगी थी।

वोल्फ के एक बेटा भी था। लापरवाह तबीयत का यवक पन्द्रह बरस की उम्र मे ही उसने दाढी रख ली, पीना पिलाना शुरू कर दिया और हर तरह के व्यसनो मे पड गया। बीस बरस की उम्र तक वह यही कुछ करता रहा और अन्त मे पिता ने उसे घर से निकाल दिया। वह पढाई पूरी नही कर सका था और बुरे लोगो की सोहबत मे घूमता और कर्ज चढाता हुआ अपने पिता की इज्जत पर दाग लगाता रहा था। एक बार पिता ने उसका दो सौ तीस रूबल कर्ज अदा किया, दूसरी बार छ सौ रूबल। पर इस बार उसे चेतावनी दे दी कि इसके बाद वह कोई क़र्ज अदा नहीं करेगा। बेटे को डराया धमकाया कि सभल जाओ तो ठीक वरना घर से

बाहर निकाल दूगा और घर के साथ कोई सबध नही रहने दूगा। लडका नही सुधरा, बल्कि अब की एक हज़ार रूबल कर्ज चढा आया और पिता को साफ साफ कह दिया कि घर मे रहना उसके लिए नरक भोगने के बराबर है। वोल्फ ने घोषणा कर दी कि आज से तुम मेरे बेटे नही हो, जहा जाना चाहो जा सकते हो। उस दिन से वोल्फ लोगो से यही कहता था कि उसके कोई बेटा नही है। घर मे भी बेटे के बारे म उसके साथ बात करने का किसी को साहस नही होता था। और व्लादीमिर वासील्येविच वोल्फ को पक्का विश्वास था कि उसने अपनी गृहस्थी सर्वोत्कृष्ट ढग से सभाली हुई है।

जब नेख्लूदोव अन्दर पहुचा तो वोल्फ चलते चलते रुक गया और मैत्रीपूर्ण ढग से मुस्करा कर नेख्लूदोव का स्वागत किया। इस मुस्कराहट मे व्यग का भी हल्का सा पुट था। इस तरह मुस्कराते हुए वह मानो लोगो को जताना चाहता था कि वह कितना comme il faut है, और अधिकाश लोगो से कितना ऊचा है। उसने वह चिट्ठी बडे ध्यान से पढी जो नेख्लूदोव न उसके हाथ मे दी थी।

"तशरीफ रखिये। आपकी इजाज़त हो तो मैं कमरे मे टहलता रहू," कोट की जेबो मे हाथ डालते हुए और हल्के हल्के कदम रख कर टहलना जारी रखते हुए उसने कहा। यह उसका पढने का कमरा था जो काफी बडा और बिल्कुल मुनासिब ढग से सजाया गया था। "आपसे मिल कर बडी ख़ुशी हुई। और जो काउट इवान मिखाइलोविच ने करने का हुक्म दिया है सिर आखो पर," मुह मे से सिगार का ख़ुशबूदार नीला धुआ छोडते हुए वह बोला, फिर सिगार को बडे ध्यान से मुह मे से निकाल लिया ताकि राख नीचे न गिरने पाये।

"मेरी केवल यही प्रार्थना है कि इस मुकद्दमे की सुनवाई जल्दी हो जाय, ताकि अगर कैदी को साइबेरिया भेजे जाना है तो वह जल्दी रवाना हो सके," नेख्लूदोव ने कहा।

"ज़रूर, ज़रूर, नीज्नी नवगोरोद से जो पहला जहाज़ जाय उसी म जा सकती है," बडप्पन के अन्दाज़ से मुस्कराते हुए वोल्फ ने कहा। उसे लोगो की फरमाइश का पहले ही पता चल जाता था। "कैदी का नाम क्या है?"

"मास्लोवा।"

वोल्फ मेज के पास गया और फाइल मे, काम-काज के अन्य कागजो मे से एक कागज उठा कर देखने लगा।

"हा, मास्लोवा, ठीक है। मैं और सदस्यो से बात करूगा। हम बुधवार के दिन इस मुकद्दमे पर विचार करेंगे।"

"तो क्या मैं वकील को तार दे दू?"

"ओह, आपने वकील कर रखा है? इसकी क्या जरूरत थी? पर खैर, अगर आप चाहते हैं तो बेशक तार दे दें।"

"अपील के तक शायद काफी न हो," नेख्लूदोव ने कहा, "पर मैं समझता हू मुकद्दमे की फाइल देखने पर पता चल जायगा कि सजा गलतफहमी के कारण दी गई थी।"

"हा, हो सकता है। लेकिन सेनेट मुकद्दमे का फैसला गुण-दोष के आधार पर नही कर सकती।" वोल्फ ने रुखाई के साथ कहा। उसकी आखें सिगार की राख पर अटकी थी। "सेनेट केवल यह देखती है कि कानून ठीक तरह से लागू किया गया है या नही, और उसका ठीक ठीक मतलब निकाला गया या नही।"

"लेकिन मैं समझता हू कि यह असाधारण मुकद्दमा है।'

"मुझे मालूम है, मालूम है। सभी मुकद्दमे असाधारण होते हैं। हम अपना फर्ज निभायेंगे। बस।' सिगार के सिरे पर राख अब भी अटकी हुई थी, हालाकि उसमे दरार पड गयी थी, और डर था कि कहा नीचे गिर न पडे। "आप पीटसबर्ग बहुत कम आते है, क्या?" सिगार को इस ढग से पकडे हुए कि राख गिरे नही, वोल्फ ने पूछा। पर राख हिलने लगी थी। वोल्फ ध्यान से चलते हुए उसे राखदानी तक ले आया, जरा पहुचते ही वह ढेर हो गई। "कामेन्स्की वाली घटना कितनी भयानक है!" वह बोला। 'कितना अच्छा लडका था! इकलौता बेटा। मा की हालत पर तो सचमुच रहम आता है।" उसके मुह से भी वही शब्द निकल रहे थे जो इस समय कामेन्स्की के बारे मे पीटसबर्ग म हर किसी की जबान पर थे।

कुछेक शब्द वोल्फ न काउटेस येकातेरीना इवानोव्ना के बारे म तथा उसके नये धम अनुराग के बारे म भी कहे। लेकिन सहमति अथवा विरोध प्रकट नही किया। इसकी जरूरत भी नही थी क्योकि वह तो comme il faut था। इसके बाद उसन घण्टी बजाई।

नेख्लूदोव ने झुक कर विदा ली।

"अगर तक्लीफ न हो तो बुधवार के दिन भोजन मेरे साथ कीजिये। मैं इस बारे म पक्का जवाब भी दे सकूगा," अपना हाथ बढाते हुए वोल्फ ने कहा।

दर हो चुकी थी, इसलिए नेख्लूदोव सीधा अपनी मौसी के घर लौट गया।

१७

काउटेस यकातेरीना इवानोव्ना के घर शाम के भोजन का समय साढे सात बजे था। खाना परोसने का ढग नया था, जिसे नेख्लूदोव पहली बार दख रहा था। चोबदारो ने मेज पर प्लेटें वगैरा रखी, खाने का पहला व्यजन भी और फौरन् कमरे म से निकल गय, सो खाने वाले खुद ही खाना ले रहे थे। पुरुष स्त्रियो को किसी तरह का कष्ट नही उठाने देना चाहते थे और इसलिए खुद बडी मर्दानगी से उनके लिए और अपने लिए प्लेटो मे खाना डालने और जाम उडेलने का भार उठा रहे थे। मेज के साथ ही एक बिजली की घटी का बटन लगा था। जब एक व्यजन समाप्त हो जाता तो काउटेस बटन दबाती, चोबदार फिर हौले हौले चलत हुए कमरे मे आते, प्लेटें बदल देते, दूसरा व्यजन मेज पर रख देते और फिर पहले की तरह कमरे मे से निकल जाते। भोजन अत्यन्त स्वादिष्ट और शरावें बेहद महगी थी। एक फ्रासीसी सफेद लबादे पहन दो छोटे बावर्चियो के साथ खुले, रोशन रसोईघर मे काम कर रहा था। छ व्यक्ति भोजन कर रहे थे काउट तथा काउटेस, उनका बेटा, सदा नाराज सा रहने वाला एक आदमी जो गाड रजिमेंट मे अफसर के पद पर था और इस समय मेज पर कोहनिया चढाये बैठा था, नेख्लूदोव, एक फ्रासीसी अध्यापिका, और काउट का मुख्य कारिंदा जो देहात से आया हुआ था।

यहा पर भी वार्तालाप द्वन्द्व युद्ध के ही बारे मे चल रहा था, और सभी अपनी अपनी राय दे रहे थे कि जार के इस सम्बन्ध म क्या विचार होगे। इतना तो सब को मालूम था कि जार की बेचारी मा के साथ बडी हमदर्दी है, सभी को उससे हमदर्दी थी। साथ ही लोगो को यह भी मालूम था कि जार हत्या करने वाले को भी कडी सजा नही देना चाहते, क्योंकि

जो विचार नेख्लूदोव के मन मे उठ रहे थे, उसने वह डाले। पहले तो ऐसा जान पडा जैसे उसकी मौसी येकातेरीना इवानोव्ना उससे सहमत है। पर फिर वह भी और लोगो की तरह बिल्कुल चुप हो गई, और नेख्लूदोव को भास होने लगा जैसे उसने कोई अनुचित बात कह दी हो।

शाम के समय, भोजन के फौरन् ही बाद, लोग कीज़ेवेतेर का भाषण सुनने आने लगे। नाचने वाले कमरे मे ऊची पीठ वाली कामदार कुर्सिया लाइनो की शक्ल मे जोड दी गई थी जैसा कि किसी मीटिंग के समय किया जाता है। एक ओर, एक छोटे से मेज पर वक्ता के लिए पानी का जग रखा गया था, और उसके साथ ही एक आराम कुर्सी रख दी गई थी।

बडी बडी शानदार गाडिया फाटक पर खडी थी। कमरे की सजधज चकाचौंध करती थी। स्त्रिया रेशमी और मखमली कपडे पहने, गोटे किनारी से सजी, सिर पर मसनूई बाल लगाये, बदन को गदराया दिखाने के लिए जगह जगह कपडो के अन्दर गद्दिया लगाये और नाजुक कमर को कस कर बाधे बैठी थी। उनके साथ आये पुरुष वर्दियों मे या शाम के कपडो मे लैस थे। इनके अतिरिक्त आधी दजन के करीब साधारण लोग भी थे दो घर के नौकर, एक दूकानदार, एक चोबदार, और एक कोचवान।

कीज़ेवेतेर हट्टा-कट्टा, पके बालो वाला आदमी था। वह अपना भाषण अग्रेजी म दे रहा था। साथ मे एक पतली सी छोटी उम्र की लडकी, जिसने आख पर बिना डण्डी के चश्मा चढा रखा था, उसके वाक्यो का फ़ौरन रूसी भाषा मे अनुवाद करती जाती थी। अनुवाद अच्छा था।

वह कह रहा था कि हमने घोर पाप किये हैं, और उनकी हम बडी सजा मिलेगी। कोई छुटकारा नही। इस आने वाली सजा के बारे मे सोच कर जीना असभव हो जाता है।

"प्यारे भाइयो तथा बहिनो, जरा सोचिये तो कि हम कर क्या रहे हैं, कैसा जीवन व्यतीत कर रहे हैं, दयामय भगवान् की आज्ञा का किस भाति उल्लघन कर रहे हैं, यीसु को कितना दुखी कर रहे हैं। और हम यह समझे बिना नही रह सकते कि हम क्षमा के अधिकारी नही हैं, हमारे लिए कोई छुटकारा नही, कोई मुक्ति नही। हमारा सर्वनाश अनिवार्य है। हम पर भयानक दुर्भाग्य—अनन्त दुर्भाग्य टूटेगा," वह कापती हुई, रोनी आवाज़ मे कह रहा था। "भाइयो, हम कैसे बच सकते हैं? इस भयानक आग से हम कैसे बच सकते हैं जो किसी के भी बुझाये बुझ

उसने अपनी वर्दी की इज्जत की रक्षा के लिए द्वन्द्व युद्ध लडा था। तब भी उस अफसर के प्रति दयावान थे क्योकि उसने अपनी वर्दी की इज्जत के लिए द्वद्व युद्ध लडा था। केवल काउटेस येकातेरीना इवानोव्ना ही इसका विरोध कर रही थी—

"पहले शराब पीते रहते हैं फिर भोले भाले युवको को मार डालते हैं। ऐसे लोगो को मैं किसी सूरत मे भी माफ नही करू," उसने कहा।

"अब यह बात मेरी समझ मे नही आ सकती " काउट बोला।

"मेरी बात तो तुम्हारी समझ मे कभी आ ही नही सकती। यह तो मैं जानती हू," काउटेस कहने लगी, फिर नेख्लूदोव की ओर घूम कर बोली, "सब को मेरी बात समझ आ जाती है, लेकिन मेरे पति को समझ नही आती। मुझे मा के साथ दिली हमदर्दी है, और मैं नही चाहती कि हत्यारा पहले तो कत्ल करे और फिर उसे कुछ कहा भी न जाय।"

इस पर उनका बेटा जो अब तक चुप बैठा था, हत्यारे का पक्ष ले कर बडी गुस्ताखी से मा का विरोध करने लगा। कहने लगा कि हत्यारे के लिए और कोई चारा ही न था, अगर वह लडता नही तो उसके साथी अफसर उसकी लानत मलामत करते और उसे रेजिमेट मे से निकाल देते। नेख्लदोव कान लगा कर वार्तालाप सुन रहा था लेकिन स्वय उसमे भाग नही ले रहा था। वह खुद फौज मे अफसर रह चुका था, इसलिए वह चार्स्की के तर्क को समझता था, हालाकि उसके साथ सहमत नहीं था। साथ ही उसे रह रह कर ख्याल आ रहा था कि इस अफसर के भाग्य से उस युवक का भाग्य कितना पृथक् है जिसे उसने जेल मे बन्द देखा था। उस पर भी यही इलजाम था कि उसने किसी आदमी से लडाई की थी और उसे मार डाला था। उसे बडी मशक्कत की सजा दी गई थी। दोनों ने शराब के नशे मे हत्या की थी। पर उस किसान को, जिसने आवेश मे आ कर आदमी को मार डाला था, अब बीवी-बच्चो से अलग कर के पावो म बेडिया पहना कर, और सिर मूड कर बडी मशक्कत करने साइबेरिया भेजा जा रहा है। और अफसर गार्ड-हाउस म एक सजे-सजाये कमरे म रखा गया है, उसे बढिया भोजन और शराब मिलती है, किताब पढता है और दो-एक दिन मे उसे छोड भी दिया जायगा, ताकि वह फिर उसी तरह रह सके जैसे पहले रहा करता था। इस घटना की बदौलत लोगो की नजरो मे यह और भी रोचक व्यक्ति होगा।

जो विचार नेख्लूदोव के मन मे उठ रहे थे, उसने कह डाले। पहले तो ऐसा जान पडा जैसे उसकी मौसी येकातेरीना इवानाव्ना उससे सहमत है। पर फिर वह भी और लोगो की तरह बिल्कुल चुप हो गई, और नेख्लूदोव को भास होने लगा जैसे उसने कोई अनुचित बात कह दी हो।

शाम के समय, भोजन के फौरन् ही बाद, लोग कीज़ेवेनर का भाषण सुनने आने लगे। नाचने वाले कमरे मे ऊची पीठ वाली कामदार कुर्सिया लाइनो की शक्ल मे जोड दी गई थी जैसा कि किसी मीटिंग के समय किया जाता है। एक ओर, एक छोटे से मेज पर वक्ता के लिए पानी का जग रखा गया था, और उसके साथ ही एक आराम कुर्सी रख दी गई थी।

बडी बडी शानदार गाडिया फाटक पर खडी थी। कमरे की सजधज चकाचौंध करती थी। स्त्रिया रेशमी और मखमली कपडे पहने गोटे किनारी से सजी, सिर पर मसनूई बाल लगाये, बदन को गदराया दिखाने के लिए जगह जगह कपडो के अन्दर गद्दिया लगाये और नाजुक कमर को कस कर बाधे बैठी थी। उनके साथ आये पुरुष वर्दियो मे या शाम के कपडो मे लैस थे। इनके अतिरिक्त आधी दर्जन के करीब साधारण लोग भी थे दो घर के नौकर, एक दूकानदार, एक चोबदार और एक कोचवान।

कीज़ेवेनर हट्टा-कट्टा, पके बालो वाला आदमी था। वह अपना भाषण अंग्रेज़ी मे दे रहा था। साथ मे एक पतली सी छोटी उम्र की लडकी, जिसने आख पर बिना डण्डी के चश्मा चढा रखा था, उसके वाक्यो का फौरन् रूसी भाषा मे अनुवाद करती जाती थी। अनुवाद अच्छा था।

वह कह रहा था कि हमने घोर पाप किये हैं, और उनकी हमे कडी सज़ा मिलेगी। कोई छुटकारा नही। इस आने वाली सज़ा के बारे मे सोच कर जीना असभव हो जाता है।

"प्यारे भाइयो तथा बहिनो, ज़रा सोचिये तो कि हम कर क्या रहे हैं, कैसा जीवन व्यतीत कर रहे हैं, दयामय भगवान् की आज्ञा का किस भाति उल्लघन कर रहे हैं, यीसु को कितना दुखी कर रहे हैं। और हम यह समझे बिना नही रह सकते कि हम क्षमा के अधिकारी नही हैं, हमारे लिए कोई छुटकारा नही, कोई मुक्ति नहीं। हमारा सर्वनाश अनिवार्य है। हम पर भयानक दुर्भाग्य—अनन्त दुर्भाग्य टूटेगा," वह कापती हुई, रोनी आवाज़ मे कह रहा था। "भाइयो, हम कैसे बच सकते हैं? इस भयानक आग से हम कैसे बच सकते हैं जो किसी के भी बुझाये बुझ

नही सकती। घर मे से आग के शोले निकल रहे हैं, इसम स भाग क
कोई नही निकल सकता।"

कुछ देर तक वह चुप रहा। सचमुच के आसू उसके गालो पर बह र
थे। पिछले आठ साल से जब भी वह भाषण करता हुआ इस स्थल प
पहुचता तो उसका गला रुधने लगता और नाक मे खुजली सी होने लगत
और अपने आप आखो मे आसू आ जाते। भाषण का यह अश उसे स्व
भी बहुत अच्छा लगता था। इन आसुओ से उसका हृदय और भी द्रवि
हो उठता। कमरे म लोग सिसकिया लेने लगे। अपने सामने जडाऊ म
पर दोनो कोहनिया रखे, हाथो पर सिर रखे, काउटेस येकातेरीना इवानोव्न
झुकी हुई थी, और सिसकियो के कारण उसके मोटे मोटे कधे हिल रहे थे
कोचवान भयातुर तथा विस्मयपूर्ण आखो से जमन वक्ता की ओर देख र
रहा था। उसे लग रहा था जैसे उसकी गाडी आगे बढ रही है और उस
बम से यह आदमी खदेडा जायेगा, मगर यह विदेशी आगे से हटने का नाम
नही लेता। सभी लोग काउटेस की सी मुद्रा मे बठे थे। वोल्फ की ब
हाथो मे मुह ढापे घुटनो के बल बैठी थी। दुबली-पतली सी लडकी थी और
बडे फैशनेबुल कपडे पहने हुए थी। उसकी शक्ल-सूरत अपने बाप से बहु
कुछ मिलती थी।

वक्ता ने सहसा चेहरे पर से हाथ हटाया और मुस्कराने लगा। उसक
मुस्कान सच्ची जान पडती थी, ऐसी मुस्कान जिससे नाटक के अभिनेत
खुशी का भाव दर्शाते हैं। फिर बडी मधुर, विनम्र आवाज म कहने लगा-

"लेकिन बचाव का उपाय है। और यह उपाय आसान भी है और
उल्लासपूर्ण भी। भगवान के इकलौते बेटे ने हमारी खातिर घोर यातनाएं
सही, हमारी मुक्ति उस खून म है जो उसने बहाया। उसकी यातनाए,
उसका खून हमारी रक्षा करेगा। बहिनो तथा भाइयो," उसकी आवाज
फिर कापने लगी, "आओ हम उस भगवान् की आराधना करें, जिसने
अपना एक मात्र बेटा ससार को उबारने के लिए अर्पण कर दिया। उसका
पवित्र रुधिर '

नेख्लूदोव के मन मे ऐसी घिन उठी कि वह चुपचाप उठ खडा हुआ
और दबे पाव बाहर निकल गया और सीधा अपने कमरे म चला गया।
उसकी भौंह तनी थी और लज्जावश उसके मुह स एक आह सी निकलने
जा रही थी जिसे वह बडी मुश्किल स रोक पाया।

दूसरे दिन प्रातः नेख्लूदोव ने कपड़े पहन और नीचे जाने ही वाला था जब चोबदार ने आ कर उसे एक कार्ड दिया। कार्ड मास्को के वकील की ओर से था। वकील अपने काम पर पीटर्सबर्ग आया था, और उसका ख्याल था कि अगर उसी समय मास्लोवा का मुकद्दमा भी पेश हो गया तो वह सेनेट में उपस्थित हो सकेगा। जब नेख्लूदोव ने तार भेजी तो वह मास्को से चल चुका था। जब नेख्लूदोव से उसे पता चला कि मास्लोवा का मुकद्दमा कब पेश होने वाला है और सेनेट के कौन कौन से सदस्य उस पर विचार करेंगे तो वह मुस्कराने लगा।

"तीनों प्रकार के सेनेटर वहां मौजूद होंगे," वह बोला, "वोल्फ पीटर्सबर्ग का अफसर है, स्कोवोरोद्निकोव कानून का विद्वान, और बे व्यावहारिक दृष्टि से विचार करने वाला, इसी लिए वह सबसे अधिक जानदार आदमी है," वकील ने कहा, "उसी से हमें सबसे ज्यादा उम्मीद हो सकती है। अब अपील कमेटी के बारे में कुछ बताइये।"

"आज मैं बैरन वोरोब्योव से मिलने जा रहा हूं। कल उनसे भेंट नहीं हो सकी," नेख्लूदोव ने बैरन शब्द पर बल देते हुए कहा। सेनेटर का नाम रूसी था मगर खिताब विदेशी।

"क्या आपको मालूम है उसे 'बैरन' का खिताब कहां से मिला?" नेख्लूदोव की आवाज में हल्के से व्यंग का भास पा कर वकील बोला, "उसके दादा को जार पावेल ने यह खिताब इनाम में दिया था। मेरा ख्याल है वह दरबार में चोबदार था। जार उससे किसी बात पर खुश हुआ था इस-लिए उसे बैरन बना दिया। 'मेरी यही इच्छा है, इसका विरोध मत करो!' उसने कहा, और लीजिये आज यह 'बैरन' वोरोब्योव भी मौजूद हैं, जो इस खिताब पर इतना अकड़ते हैं। एकदम चालाक धूर्त है यह बूढ़ा!"

"आज मैं उसे मिलने जा रहा हूं," नेख्लूदोव बोला।

'अच्छी बात है, हम एक साथ चलेंगे। मैं अपनी गाड़ी में आपको वहां तक ले चलूंगा।"

वे घर से निकल ही रहे थे जब ड्योढ़ी में एक चोबदार ने नेख्लूदोव को एक चिट्ठी ला कर दी। चिट्ठी मेरियेट की ओर से थी—

"Pour vous faire plaisir, j'ai agi tout a fait contre mes principes, et j ai intercede aupres de mon mari pour votre protegee Il se trouve que cette personne peut etre relachee immediatement Mon mari a ecrit au commandant Venez donc, पर अपना स्वार्थ ले कर नही। Je vous attend* मे०।"

"देखा आपने?" नेख्लूदोव ने वकील से कहा। "कितनी भयानक बात है! सात महीने से एक लडकी को यह कैद-तनहाई मे रखे रहे हैं। और वह बेगुनाह निकली। बस कहलवाने भर की देर थी कि उसे रिहा कर दिया गया।"

"यही कुछ हमेशा होता है। चलिये, आप अपने काम म सफल तो हो गये।"

"ठीक है, पर इस सफलता से मेरा मन और भी क्षुब्ध हो उठा है। जरा सोचो तो वहा पर कैसे कैसे काड होते होगे। सरकार उसे क्यों कैद किये हुए थी?"

"इन बातो पर ज्यादा नही सोचा करते। कोई लाभ नही। तो चलिये, मेरी गाडी मे चलेगे न?" घर से बाहर कदम रखते हुए वकील ने कहा। एक बढिया गाडी जो वकील ने किराये पर ले रखी थी, फाटक के सामने आ कर खडी हो गई। "आप बैरन वोराब्योव से ही मिलने जा रहे हैं न?"

वकील ने गाडीवान से कह दिया कि कहा चलना है। दोनो घोड़े बहुत बढिया थे। शीघ्र ही गाडी बैरन के घर के सामने जा पहुचा। बैरन घर पर ही था। बाहर वाले कमरे मे एक वावर्दी युवा अफसर और दो स्त्रिया थी। युवक की गरदन पतली और लम्बी थी और टेटुआ बहुत को बढा हुआ था। जब चलता तो बडे हल्के हल्के कदम रखते हुए।

"आपका शुभनाम?" बडे बाकेपन से स्त्रियो के पास से हौले हौले आगे बढ कर उसने नेख्लूदोव से पूछा।

---

*आपकी खुशी के लिए मैंने अपना नियम तोड कर अपने पति से आपकी सरक्षिता की सिफारिश की है। इनका कहना है कि उसे फ़ौरन रिहा किया जा सकता है। इन्होंने क़िले के कमाडेंट को लिख दिया है। सो, अब तो मानो आपका इतजार करूगी। (फ्रेंच)

नेख्लूदोव ने अपना नाम बताया।

"बैरन आपका जिक्र कर रहे थे। जरा ठहरिये " युवक ने कहा और भीतर के एक दरवाजे मे से निकल गया। जब वह लौट कर आया तो उसके साथ साथ एक स्त्री भी रोती हुई आयी जिसने मातमी कपडे पहन रखे थे। अपने आसू छिपाने के लिए वह महिला अपनी पतली सूखी हुई अगुलियो से चेहरे पर की जाली नीचे खीचने की कोशिश कर रही थी। जाली उलझी हुई थी।

"तशरीफ लाइये," युवक ने नेख्लूदोव से कहा और तनिक आगे बढ कर कमरे का दरवाजा खोल कर खडा हो गया।

जब नेख्लूदोव अन्दर पहुचा तो कमरे म एक मझोले कद का गठीला सा आदमी बडी सी मेज के पीछे आराम कुर्सी पर बैठा था। सिर पर छोटे छोटे बाल थे और फ्रॉक-कोट पहने हुए था। चेहरे का भाव बडा हसमुख था। सिर के बाल, मूछें तथा दाढी सब सफेद पड गये थे, लेकिन इसके विपरीत, चेहरा गुलाब की तरह लाल था और आखो से दयालुता टपक रही थी। दोस्तो की तरह मुस्कराते हुए उसने नेख्लूदोव को सम्बोधित किया—

"तुमसे मिल कर बडी खुशी हुई। तुम्हारी मा से मेरी अच्छी जान-पहचान थी, अच्छी मैत्री थी। मैंने तुम्हें उस वक्त देखा था जब तुम छोटे से लडके थे। बाद मे भी तुम्हे देखा जब तुम अफसर बन गये थे। आओ बैठो। बताओ क्या काम है   हा, हा," जब नेख्लूदोव ने फेदोस्या की कहानी सुनानी शुरू की तो अपने सिर के छोटे छोटे सफेद बाल झटकते हुए कहने लगा, "कहो, कहो, कहते जाओ। ठीक कहते हो कहानी बडी ददनाक है। क्या तुमने दरख्वास्त दाखिल कर दी है?"

"दरख्वास्त मैं साथ लेता आया हू," जेब मे से दरख्वास्त निकालते हुए उसने कहा, "पर मैंने सोचा आपसे पहले बात कर लू, इस आशा से कि इस तरह मुकद्दमे की ओर विशेष ध्यान दिया जायेगा।"

"तुमने ठीक ही किया। मैं खुद इसकी रिपोर्ट दूगा," अपने हसमुख चेहरे पर अनुकम्पा का भाव लाने का विफल प्रयास करते हुए बैरन ने कहा। "बडी ददनाक कहानी है। साफ मालूम होता है कि वह बच्ची थी। पति ने उसके साथ बुरा व्यवहार किया जिससे उसके दिल मे घृणा उठी, पर ज्यो ज्यो वक्त गुजरता गया वे एक दूसरे के निकट आने लगे और एक दूसरे से प्यार करने लगे। ठीक है, मैं इसकी रिपोर्ट दूगा।"

"काउट इवान मिखाइलोविच कह रहे थे कि वे महारानी स इ
बारे मे बात करेंगे।"

नेख्लूदोव के मुह मे ये शब्द निकलने की देर थी कि बरन क चहरे
का भाव बदल गया।

"तुम दरख्वास्त दफ्तर मे दे दो, फिर जो मुमकिन होगा किया
जायेगा," उसने कहा।

इसी वक्त युवा अफसर फिर कमरे मे दाखिल हुआ। जाहिर था कि
वह अपनी बाकी चाल दिखाना चाहता है।

"वही महिला फिर आपसे मिलना चाहती है। कहती है थोडी सी
बात और कहनी है।"

"भेज दो। ओह, mon cher, कितने लोगो की विपदा हमे देखनी
पडती है। *काश कि हम सभी के आसू पोछ पाते।* जो हमसे बन पडता
है, हम करते है।"

महिला अन्दर दाखिल हुई।

"मैं आपसे यह कहना भूल गई थी। मैं चाहती हू कि उस आदमी
बेटी को छोड देने की इजाजत नही दी जाय। वह तो तैयार है कि "

"मैंने आपसे पहले ही कह दिया है कि मुझसे जो कुछ भी बन पडा
कर दूगा।"

"भगवान् के लिए, बैरन, आप एक मा की रक्षा करेंगे।"

स्त्री ने बैरन का हाथ पकड लिया और उसे बार बार चूमने लगी।

"हर मुमकिन कोशिश की जायेगी।"

महिला के चले जाने पर नेख्लूदोव भी रुखसत लेने लगा।

"जो बन पडा किया जायेगा। मैं न्यायमन्त्रालय मे इस सम्बन्ध में
बात करूगा। उनका जवाब आने पर जो कुछ भी सभव हुआ जरूर किया
जायेगा।"

कमरे म से निकल कर नेख्लूदोव फिर दफ्तर मे गया। वडा ठाटदार
दफ्तर था, और उसमे भी, सेनेट के दफ्तर की तरह बाके अफसर बैठे
थे—साफ-सुथरे, मधुरभाषी, हर बात नियमानुकूल करने वाले। उनके
लिबास से, उनकी बोल-चाल से, शिष्टता टपकती थी।

"इन अफसरो का कोई अन्त नही, अनगिनत अफसर हैं। और सभी
कितने मोटे-ताजे हो रहे हैं। कमीजें कितनी साफ-सुथरी पहन रखी हैं,

कैदी दस साल के अन्दर ही अन्दर खत्म हो जाते थे, कुछ पागल हो जाते, कुछ तपेदिक का शिकार हो जाते, कुछ आत्महत्या कर लेते-भूखे रह कर, काच के टुकडो से अपनी नाडिया काट कर या अपने को आग लगा कर।

बूढा जनरल सब जानता था। ये बाते उसकी आखो के सामने घटती थी। पर इनका उसकी अन्तरात्मा पर कोई असर नही होता था। वह इन्हे उतना ही महत्व देता था जितना कि दुर्घटनाओ को जो आधी-तूफान या बाढ आने पर घट जाती हैं। "ऊपर से" जार के नाम से जो नियम बन कर आते थे, वह उनका पालन करता था, और उन्ही के फलस्वरूप ये घटनाए हो जाती थी। इन नियमो का पालन करना अनिवार्य था, इसलिए उनके पालन के परिणामस्वरूप होने वाली घटनाओ पर विचार करना व्यर्थ था। बूढा जनरल इसे एक सैनिक का देशभक्तिपूर्ण कर्तव्य समझता था कि वह इन बातो के बारे मे सोचे तक नही, क्योंकि बहुत सोचने से उसके सकल्प मे शिथिलता आ सकती थी जिससे वह अपनी जिम्मेवारिया ठीक तरह से नही निभा पायेगा।

हफ्ते मे एक दिन बूढा जनरल कैदियो की कोठरियो का दौरा करता था। यह भी उसका काम था। उस समय वह कैदियो से पूछता कि अगर कोई फरमाइश करनी हो तो कर सकते हो। कैदी तरह तरह की फरमाइश करते। वह चुपचाप उन्हे सुनता रहता। इस चुप्पी की कोई थाह नहीं पा सकता था। और सब सुन चुकने के बाद वह किसी एक फरमाइश को भी पूरा नही करता था। कारण, सभी फरमाइशें नियमो की दृष्टि से असगत होती थी।

नेख्लूदोव गाडी मे बूढे जनरल के मकान पर जा पहुचा। ऐन उसी वक्त मीनार पर के घटाघर से घटियो की सुरीली धुन बजी-"भगवान्, तेरी महिमा अपार है!" और उसके बाद घडी ने दो बजाये। घण्टियों की यह धुन सुन कर नेख्लूदोव को दिसम्बरवादियो* के सस्मरण याद हो

---

*दिसम्बरवादी-अभिजात वर्ग के रूसी क्रातिकारी, उन्होंने सामतशाही और स्वेच्छाचारी शासन का विरोध किया। १४ दिसम्बर, १८२५ को उन्होंने सशस्त्र विद्रोह छेड दिया।

श्राये जो उसने किसी जमाने मे पढ थे। उनमे लिखा था कि जिन लोगो को उम्र भर कैद भोगनी हो, उनके दिल मे किस भाति एक एक घण्टे के बाद बजने वाली यह मधुर धुन बार बार गूजती है।

इस समय बूढा जनरल अपनी बैठक मे एक जडाऊ मेज के सामने बैठा था। कमरे मे अधेरा किया हुआ था। मेज पर एक कागज के ऊपर एक चाय की तश्तरी रखी थी। कमरे मे उसके साथ एक युवा कलाकार भी था जो जनरल के नीचे काम करने वाले एक अफसर का छोटा भाई था। कलाकार की पतली, नम, दुबल उगलिया बूढे जनरल की कक्श, झुरिया भरी, जोडो पर मस्स पड गयी उगलिया मे गुथी हुई थी और ये जुडे हुए हाथ तश्तरी को लिये हुए झटको के साथ कागज पर चल रहे थे, जिस पर वर्ण-माला के सभी अक्षर लिखे थे। तश्तरी जनरल के प्रश्न के उत्तर मे बता रही थी कि मृत्यु के बाद आत्माए किस भाति एक दूसरी को पहचानती हैं।

एक अर्दली बाहर खडा चोबदार का काम कर रहा था। उसके हाथ जिस समय नेख्लदोव ने अपना कार्ड अन्दर भेजा उस समय तश्तरी के माध्यम से जोन ऑफ आर्क की आत्मा बोल रही थी। एक एक अक्षर जोड कर जोन ऑफ आर्क की आत्मा ने ये शब्द बना डाले थे—"उनके पहचानने का माध्यम " और ये शब्द बाकाइदा नोट कर लिये गये थे। जब अर्दली अन्दर आया उस समय तश्तरी "हो" और "गी" पर आ कर अटक गई थी, और इसके बाद कभी एक तरफ को और कभी दूसरी तरफ को हिचकोले खाने लगी थी। इन हिचकोलो का कारण यह था कि जनरल चाहता था कि तश्तरी "आ" की ओर मुडे, कि जोन आफ आर्क को यह कहना चाहिए कि आत्माओ के पहचानने का माध्यम होगी आन्तरिक शुद्धता, जो वे लौकिक जीवन के कलुष को धो कर प्राप्त करेंगी, या ऐसा ही कुछ। परन्तु कलाकार का यह मत नही था। वह चाहता था कि अगला अक्षर "ज्यो" हो, अर्थात आत्माए "ज्योति" द्वारा एक दूसरी को पहचानेंगी जो उनके अलौकिक प्रतिस्पा से फूट रही होगी। जनरल की सफेद, घनी भौहे चढी हुई थी, और वह एकटक तश्तरी पर रखे हाथो की ओर देख रहा था। उसका ख्याल था कि तश्तरी अपने आप चल रही है, पर वास्तव मे वह उसे "आ" की ओर खीच रहा था। दुबला-पतला कलाकार, जिसने अपने पतले पतले बालो को

कानो के पीछे कघी कर रखा था, अपनी कान्तिहीन नीली आखो से कमरे के एक अधेरे कोने की ओर देखे जा रहा था, और तश्तरी को "ज्यो" अक्षर की ओर खीचे जा रहा था। उत्तेजना मे उसके हाठ फडफडा रहे थे।

अदली के या बीच मे आ टपकने पर जनरल ने मुह बनाया, लेकिन क्षण भर बाद उसके हाथ से कार्ड ले लिया। फिर चश्मा लगा, बडबडाते हुए उठ खडा हुआ। उसकी पीठ मे दद था, फिर भी वह सीधा-सतर खडा हो गया, और अपनी ठिठुरती अगुलियो को एक दूसरी के साथ रगडने लगा।

"उन्ह पढने वाले कमरे मे ले चलो।"

"हुजूर की आज्ञा हो तो मैं अकेले ही इस सन्देश को प्राप्त कर लू" कलाकार ने कहा, "मुझे भास हो रहा है कि आत्मा उतर रही है।"

"अच्छी बात है, अकेले ही प्राप्त कर लो," जनरल ने दृढ़ता से सख्ती भरी आवाज मे कहा, और बडे बडे, नपे-तुले कदम रखते हुए, चुस्ती से पढने वाले कमरे की ओर चला गया।

"आपसे मिल कर बडी खुशी हुई," जनरल ने नेख्लूदोव से कहा, और मेज़ की बगल मे रखी आराम-कुर्सी की ओर बढने का इशारा किया। जनरल के शब्द तो मैत्रीपूर्ण थे लेकिन आवाज़ रूखी थी। "पीटसबर्ग में आये बहुत दिन हो गये?"

नेख्लूदोव ने जवाब दिया कि नही, अभी अभी आया हू।

"आपकी मा, प्रिंसेस, कैसी हैं?"

"मा का तो देहान्त हो चुका है।"

"क्षमा करना। मुझे बडा अफसोस है। मेरे बेटे ने मुझे बताया था कि वह आपसे मिला था।"

जनरल का बेटा भी नौकरी मे बाप की ही तरह आगे बढ़ता जा रहा था। फौजी अकादमी मे से निकलने के बाद वह अब गुप्त विभाग मे काम करता था, और उसे अपने काम पर बडा गव था। सरकारी गुप्तचर उसी के अधीन काम करते थे।

"मैं और आपके पिता एक साथ फौज म रहे। हमारी बडी गाढी दोस्ती थी, हम कॉमरेड थे। और आप क्या नौकरी म हैं?"

"जी नही।"

जनरल ने असम्मति प्रकट करते हुए अपना सिर एक तरफ को झुका दिया।

"मुझे आपसे एक दरख्वास्त करनी है।"

"बड़ी खुशी से, कहिये। मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?"

"यदि मेरी दरख्वास्त नामुनासिब हो तो क्षमा कीजियेगा। मैं मजबूर हो कर आपके पास आया हूं।"

"कहिये क्या है?"

"किले म एक गुर्केविच कैद है। उसकी मा चाहता है कि उसे बेटे से मिलने की इजाजत मिल जाय। और नहीं तो कम से कम उसे कुछ किताबें भेजन की इजाजत मिल जाय।"

नेख्लूदोव की प्राथना पर जनरल ने न तो सन्तोप प्रकट किया न असन्तोप ही। सिर एक ओर को टेढा कर के उसने आखें बन्द कर ली, मानो उस पर विचार कर रहा हो। लेकिन वास्तव म वह किसी बात पर भी विचार नहीं कर रहा था। न ही उसे नेख्लूदोव की दरख्वास्त मे काई दिलचस्पी थी। वह भली भाति जानता था कि जवाब वही होगा जिसकी क्रानन इजाज़त देता है। वह तो केवल अपने दिमाग को आराम दे रहा था और कुछ भी नही सोच रहा था।

"देखिये," वह आखिर बोला, "यह मेरे बस की बात नही है। मुलाकातो के बारे में स्वय ज़ार द्वारा अनुमोदित एक नियम है, और जिस बात की उसमे इजाज़त है, उसी की इजाज़त मिल सकती है। जहा तक किताबो का सवाल है, हमारे पास पुस्तकालय है। जो जो किताबें पढने की इजाज़त है, वे मिल सकती हैं।"

"ठीक है, परन्तु वह विज्ञान की किताबें मगवाना चाहता है। वह पढाई करना चाहता है।"

"उसकी बातो मे न आइये," जनरल ने कहा और थोडी देर के लिए चुप हो गया। "वह पढाई करना नही चाहता। यह केवल बेचैनी है।"

"पर किया क्या जाय? उनका जीवन इतना कडा है कि वक्त काटने के लिए कुछ तो करना ही पडता है," नख्लूदोव ने कहा।

"ये लोग हमेशा शिकायत करते रहते हैं," जनरल बोला, "हम उन्हे अच्छी तरह जानते हैं।" वह कैदियो के बारे मे इस तरह बात कर

रहा था जैसे वे किसी खास, बहुत बुरी जाति के लोग हो। "जो आराम उन्हें यहा पर है वह शायद ही किसी दूसरे जेलखाने मे मिले," जनरल कहता गया।

और अपनी सफाई सी देते हुए वह उन सुविधाओ को गिनाने लगा जो कैदियो को प्राप्त थी, मानो इस सस्था का उद्देश्य कदियों को आरामदेह घर बना कर देना हो।

"किसी जमाने मे जरूर वे तकलीफ मे थे, लेकिन अब तो उनका बडी अच्छी तरह से ख्याल रखा जाता है," वह कह रहा था। "खाने के लिए उन्हे हमेशा तीन व्यजन मिलते है, और उनमे से एक जरूर गोश्त होता है, चाहे कटलेट के रूप मे हो या रिस्सोल के रूप मे। इतवार के दिन चार व्यजन दिये जाते हैं, एक मीठी चीज भी उन्हें मिलती है। भगवान् करे हर रूसी को ऐसा खाना नसीब हो जो इन कदियो को मिलता है।"

वद्ध पुरुष जब भी अपने प्रिय विषय पर बाते करने लगते हैं तो उनके लिए रुकना कठिन हो जाता है। जनरल भी, एक के बाद एक, तरह तरह के सबूत दे रहा था, यह सिद्ध करने के लिए कि कैदियो की मागें कितनी अनुचित है और वे कितने कृतघ्न लोग हैं। ये सबूत वह पहले भी कई बार दे चुका था।

"उन्हे धार्मिक पुस्तके तथा पुराने रसाले दिये जाते हैं। हमने मुनासिब पुस्तकालय खोल रखा है। लेकिन वे लोग बहुत कम पढते हैं। शुरू शुरू मे ता वे बडी दिलचस्पी दिखाते हैं, लेकिन बाद मे नई किताबें ज्या की त्यो पडी रहती है, उनके आधे पन्ने काटे तक नही जाते। और पुरानी किताबो के पन्ने कोई उलटता ही नही। हमने यह आजमा कर देख लिया है," बढे जनरल ने कहा, और उसके चेहरे का भाव कुछ बदला, मानो हल्की सी मुस्कान आई हो। "किताबो मे हम जान बूझ कर कागज की छोटी छोटी निशानिया रख देते थे। और वे ज्या की त्यो वही पडी रहती। लिखने की भी कोई मनाही नही है," वह कहता गया, "वहा एक स्लेट रख दी गई है और साथ म स्लेट-पेंसिल भी। मनबहलाव के लिए जी भर कर लिख सकते हैं। जब स्लेट भर जाय तो उसे पोछ कर फिर लिख सकते हैं। मगर उन्ह लिखने का कोई शौक नहीं है। जल्दी ही वे शात हो जाते हैं। शुरू शुरू मे वे बेचैन होते हैं, लेकिन बाद में

तो वे मोटे होने लगते हैं और बडे चुपचाप रहते हैं।" इस तरह की बातें जनरल कहे जा रहा था। वह सोच तक न सकता था कि उसके शब्दों का कितना भयानक अर्थ है।

नेख्लूदोव उसकी जीर्ण फटी हुई आवाज़ को सुन रहा था, उसके कठोर पड गये अवयवों, सफेद भौहों के नीचे कान्तिहीन आंखों, तथा बूढे, सफाचट, लटकते गालों को जिन्हें उसकी फौजी वर्दी का कॉलर ऊपर उठाये हुए था, देखे जा रहा था। उसकी छाती पर सफ़ेद क्रॉस लटक रहा था जिस पर उसे बेहद गर्व था, मुख्यतया इस कारण कि इसे प्राप्त करने के लिए उसने बडे विस्तृत पैमाने पर कत्ले आम किया था और जुल्म ढाये थे। नेख्लूदोव समझ गया था कि बूढे की बातों का जवाब देना या उसे यह बताना कि उसके शब्दों के पीछे कैसे भयानक अर्थ छिपे हैं, सर्वथा निरर्थक था। उसने फिर एक बार प्रयास किया और कैदी शूस्तोवा के बारे में पूछा जिसकी रिहाई का हुक्म जारी हो चुका था, जैसा कि उसे उसी दिन प्रात मालूम हुआ था।

"शूस्तोवा—शूस्तोवा? कैदी इतने ज्यादा हैं कि मुझे हरेक का नाम कैसे याद रह सकता है?" उसने कहा मानो उनकी संख्या के लिए उनकी भर्त्सना कर रहा हो। उसने घण्टी बजायी और अपने सेक्रेटरी को बुलवा भेजा। जितनी देर सेक्रेटरी नहीं आया, वह नेख्लूदोव को समझाता रहा कि उसे सरकारी नौकरी करनी चाहिए, क्योंकि ईमानदार और कुलीन लोगों की (जिनमें वह अपने को भी शामिल करता था) ज़ार को, तथा देश को बहुत जरूरत है। ज़ाहिर था कि अन्तिम शब्द उसने केवल वाक्य का सुगठित रूप देने के लिए ही कहे थे।

"मैं बूढा हो चला हूं, फिर भी यथाशक्ति सेवा किये जा रहा हूं।"

सेक्रेटरी आया। क्षीण, दुबला चेहरा, आंखों में बुद्धिमत्ता तथा बेचैनी झलकती थी। उसने रिपोर्ट दी कि शूस्तोवा किसी अजीब सी जगह पर बन्द है, और उसके बारे में अभी तक कोई आर्डर नहीं मिला।

"जिस दिन आर्डर मिला, हम उसी दिन उसे रिहा कर देंगे। हम उन्हें रखना नहीं चाहते। उन्हें अपने पास रखने की हमें बहुत चाह नहीं है," फिर एक बार चेहरे पर मीठी मुस्कान लाने की चेष्टा करते हुए जनरल ने कहा। लेकिन इस मुस्कराहट से उसका वृद्ध चेहरा और भी कुरूप हो उठा।

नेख्लूदोव उठ खडा हुआ। उसके मन मे इस भयानक वद्ध पुरुष के प्रति घृणा और अनुकम्पा की मिश्रित सी भावना पैदा हा गई थी। लेकिन वह इस कोशिश मे था कि उसे जबान पर न लाये। दूसरी तरफ वृद्ध जनरल यह महसूस कर रहा था कि नेख्लूदोव के साथ बहुत रखाइ से पेश नही आना चाहिए। जाहिर है कि यह गुमराह, लापरवाह यवक है, लेकिन आखिर उसके साथी का बेटा है, इसलिए उसे सीधा रास्ता दिखाये बिना नही जाने देना चाहिए।

"अच्छा, तो चलते हो? मेरे कहे का बुरा नही मानना। मेरे दिल मे तुम्हारे लिए प्यार है इसी लिए कह दिया। इन लोगा का सग नहीं करो। इनमे कोई भी निर्दोष नही है। सबके सब बहुत गिरे हुए हैं। हम उन्हे खब जानते हैं," उसने इस लहजे मे कहा जिसमे शक की कोई गुजाइश ही न थी।

और उसके मन मे कोई सशय नही था। इसलिए नही कि यह बात सच थी, वरन इसलिए, कि यदि यह सच न होती, तो उसे मानना पडता कि वह कोई वीर नायक नही है जो अपने उत्कृष्ट जीवन के अन्तिम दिन व्यतीत कर रहा है, बल्कि एक महानीच आदमी है जिसने अपना ईमान बेच डाला है, और इस बुढापे म भी इसे बेचे जा रहा है।

"सबसे अच्छी बात तो यह है कि तुम सरकारी नौकरी कर लो," वह कहता गया। "जार को ईमानदार लोगों की जरूरत है—और देश को भी" उसने जोडा। "अगर मैं और अन्य लोग भी तुम्हारा तरह सेवा करना छोड दें तो क्या होगा? पीछे रह कौन जायेगा? यहा हम बैठे सरकार के प्रबन्ध की आलोचना कर रहे हैं, लेकिन सरकार की कोई मदद नही करना चाहते।"

नेख्लूदोव ने एक भरपूर ठण्डी सास ली, और झुक कर नमस्कार किया, फिर उसके बडे से, कर्कश हाथ से हाथ मिलाया, जो जनरल ने बडी कृपालुता से आगे बढा दिया था, और कमरे म से बाहर निकल आया।

जनरल ने भर्त्सना म सिर हिलाया, और पीठ मलते हुए बठक म वापस लौट गया जहा कलाकार उसका इन्तजार कर रहा था। उसने जोन ऑफ आर्क की आत्मा का पूरा उत्तर लिख दिया था। जनरल ने

चश्मा लगाया और पढने लगा। लिखा था–"उनके पहचानने का माध्यम होगी वह ज्योति जो उनके अलौकिक प्रतिरूपो से फूट रही होगी।"

"ओह्," जनरल ने समर्थन की आवाज़ मे कहा और आखे बन्द कर ली। "लेकिन यदि सबकी ज्योति एक जैसी हुई तो वे एक दूसरी को कैसे पहचान पायेंगी?" उसने पूछा और फिर तश्तरी पर कलाकार की अगुलियो मे अपनी अगुलिया गूथ कर बैठ गया।

गाडीवान ने गाडी चलाई और नेख्लूदोव को फाटक मे से बाहर ले आया।

"यहा पर बहुत ऊब उठती थी, हुजूर," नेख्लूदोव की ओर घूम कर वह कहने लगा। "मेरा तो जी चाहता था कि आपका इन्तज़ार किये बिना यहा से चल दू।"

"हा, जरूर ऊब उठती है," नेख्लूदोव ने सहमति प्रकट की और एक गहरी सास ली। आकाश मे भूरे रग के बादल उड रहे थे। नेवा नदी की सतह पर जहाज़ और किश्तिया चल रही थी जिनसे पानी मे उठती हुई हल्की हल्की लहरें सूरज की रोशनी में झिलमिला रही थी। इनकी ओर देखते हुए नेख्लूदोव के मन को कुछ चैन मिला।

२०

दूसरे दिन सेनेट मे मास्लोवा के मुकद्दमे की सुनाई थी। सेनेट भवन के शानदार फाटक के सामने बहुत सी गाडिया खडी थी। यही पर नेख्लूदोव और वकील एक दूसरे से मिले, और एक साथ सीढिया चढते हुए पहली मजिल पर पहुचे। इस भवन की सीढ़िया इतनी बढिया थी कि देखते आखें नही थकती थी। फानारिन इस घर के कोने कोने से वाकिफ था। ऊपर पहुच कर वे बाईं ओर घूम गये और एक दरवाज़े मे से अन्दर दाखिल हुए जिसके ऊपर बडे बडे अक्षरो मे वह तारीख लिखी थी जिस दिन से जाब्ता-कानून लागू हुआ था।

एक तग से कमरे मे फानारिन ने अपना ओवरकोट उतारा। वहा बडे कर्मचारी से उसे पता चला कि सभी सेनेटर पहुच चुके हैं। आखिरी सेनेटर को आये कुछ ही मिनट हुए थे। फानारिन ने अपना दुमदार कोट

पहन रखा था और सफेद कमीज़ पर सफेद नकटाई लगाये हुए था। उसके होठो पर आत्मविश्वास की मुस्कान खेल रही थी। वहा से निकल कर वह साथ वाले कमरे मे चला गया जहा दायें हाथ एक बडी सी अलमारी और एक मेज रखी थी और बायी ओर एक घुमावदार सीढी ऊपर को चली गयी थी। एक बाका सा सरकारी अफसर, बगल मे बस्ता दबाये, सीढी पर से नीचे उतर रहा था। इस कमरे मे एक वयोवृद्ध पुरुष खडा था, जिसके सिर पर लम्बे लम्बे सफेद बाल थे। एक छोटा सा कोट और भूरे रग की पतलून पहने हुए, वह सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। उसके पास दो नौकर बडे अदब से खडे थे।

वयोवृद्ध पुरुष उस अलमारी के अन्दर चला गया और अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लिया।

फानारिन को एक साथी-वकील नज़र आ गया, जिसने उसी की तरह सफेद नकटाई और ड्रेस-कोट पहन रखे थे और फौरन उसके साथ बडी गमजोशी से बाते करने लगा। इस बीच नेख्लूदोव कमरे मे बैठे लोगो की जाच करने लगा। वहा पर लगभग पन्द्रह व्यक्ति बाहर के थे, जिनमें से दो स्त्रिया थी—एक तो छोटी उम्र की थी जिसने कमानीदार चश्मा लगा रखा था और दूसरी स्त्री बडी उम्र की थी, और उसके बाल सफेद हो रहे थे।

उस दिन किसी अखबार मे छपे एक लेख के सबध मे मानहानि के मुकद्दमे की सुनाई थी, जिसे सुनने के लिए बाहर से लोग अधिक सख्या मे आये हुए थे। इनमे से अधिकाश पत्रकारिता के धन्धे से सम्बन्ध रखते थे।

अदालत का पेशकार हाथ मे एक कागज़ उठाये फानारिन के पास आया। पेशकार लाल लाल गालो वाला एक सुन्दर आदमी था और बहुत बढिया वर्दी पहने हुए था। फानारिन के पास पहुच कर उसने उसका काम पूछा और यह सुन कर कि वह मास्लोवा के मुकद्दमे के सम्बन्ध मे आया है, कागज़ पर कुछ नोट कर के वहा से चला गया। इतने में अलमारी का दरवाजा खुला और लम्बे लम्बे सफेद बालो वाले वृद्ध ने बाहर कदम रखा। अब वह छोटा कोट पहने हुए नहीं था। उसने ऊपर से एक दूसरी पोशाक पहन रखी थी जिस पर सुनहरी गोटा लगा था और छाती पर धातु के चमकते पतरे लगे थे। इस लिबास मे वह पक्षी सा लगता था।

यह अजीब सी पोशाक पहन कर वृद्ध को स्वय झेंप होने लगी थी। अपनी आम रफ्तार से तेज चलता हुआ वह जल्दी जल्दी सामने के दरवाजे म से वाहर निकल गया।

"यह वे था। उसकी वडी इज्जत है," फानारिन ने नेख्लूदोव से कहा, फिर उसे अपने सहकर्मी से मिलाया और उस मुकद्दमे की चर्चा करने लगा जो अभी पेश होने जा रहा था। कहने लगा कि वह बडा दिलचस्प मुकद्दमा है।

कुछ ही देर बाद मुकद्दमे की सुनवाई शुरू हो गई, और नेख्लूदोव, अन्य लोगो के साथ बाईं ओर अदालत के कमरे मे चला गया। अन्दर जा कर फानारिन समेत, सभी एक डण्डहरे के पीछे बैठ गये। केवल पीटसबर्ग का वकील डण्डहरे के सामने एक मेज पर जा बैठा।

आकार मे सेनेट का अदालती कमरा इतना वडा नही था जितना कि जिला-कचहरी। इसकी साज-सज्जा भी अधिक साधारण थी। हा, सेनेट के सामने रखे मेज का कपडा हरे रग का होने के बजाय गुलाबी मखमल का था और उसके किनारो पर सुनहरी गोटा लगा था। पर यहा पर भी वही चीजें रखी थी जो सभी न्यायालयो मे रखी रहती हैं बडा शीशा, देव प्रतिमा तथा ज़ार की तसवीर। उसी तरह गभीर आवाज म पेशकार ने पुकारा—"जज साहिबान तशरीफ ला रहे हैं।" उसी तरह सभी लोग खडे हो गये। वर्दी पहने सेनेटरो ने उसी तरह प्रवेश किया और ऊची पीठ वाली कुर्सिया पर बैठ कर, स्वाभाविक लगने की कोशिश मे मेज पर झुक गये।

वहा पर चार सेनेटर बैठे थे—निकीतिन, जो प्रधान की कुर्सी पर बैठा था, सफाचट, पतले चेहरे और कठोर आखो वाला आदमी था। दूसरा वोल्फ था। उसके होंट एक विचित्र अर्थपूर्ण ढग से भिचे हुए थे। अपने छोटे छोटे सफेद हाथो से वह मुकद्दमो के कागजात के पन्ने उलट रहा था। तीसरा स्कोवोरोदनिकोव था, मोटा, बोझल सा व्यक्ति जिसके मुह पर चेचक के दाग थे। यह कानून का बडा विद्वान था। और चौथा बे था, लम्बे लम्बे सफेद बालो वाला आदमी जो सबसे आखिर मे पहुचा था।

सेनेटरो के साथ ही मुख्य सेक्रेटरी और सरकारी वकील भी अन्दर आ गया था। सरकारी वकील दुबला-पतला, मझोले कद का युवक था,

जिसने दाढी मूछ मूड रखी थी। चेहरा सावला और आखें स्याह तथा उदास सी थी। नेख्लूदोव ने उसे देखते ही पहचान लिया, हालाकि वह बडी अजीब सी वर्दी पहने हुए था और नेख्लूदोव को उससे मिले छ साल का अर्सा हो चुका था। पढाई के ज़माने मे वह नेख्लूदोव के सब से गहरे मित्रो मे से था।

"क्या सरकारी वकील का नाम सेलेनिन है?" नेख्लूदोव ने वकील से पूछा।

"हा, क्यो, क्या बात है?"

"मैं उसे बहुत अच्छी तरह जानता हू। बहुत ही भला आदमी है।"

"अपने काम मे भी अच्छा है। इधर-उधर की बाते नही करता, मतलब की बात करता है। आपको इस आदमी से मिलना चाहिए था।"

"कोई डर नही, वह अपने जमीर के खिलाफ कोई काम नही करेगा, बडा ईमानदार आदमी है," नेख्लूदोव ने कहा। उसे सेलेनिन के साथ अपने घनिष्ठ सम्बध तथा मैत्री याद आ रही थी। और उसके व्यक्तित्व के विशेष गुण याद आ रहे थे। सेलेनिन बडे सच्चे दिल का, ईमानदार तथा शिष्ट युवक हुआ करता था।

"ठीक है, अब तो समय भी नही है," फानारिन ने फुसफुसा कर कहा। मुकद्दमा शुरू हो गया था और उसकी रिपोट पढी जाने लगी थी। फानारिन का ध्यान रिपोट की तरफ था।

मुकद्दमे मे अपील-न्यायालय के एक फैसले के विरुद्ध अपील की गई थी जिसमे उसने ज़िला-कचहरी के निणय की पुष्टि की थी।

नेख्लदोव भी ध्यान से सुनने और मामले को समझने की कोशिश करने लगा। लेकिन यहा पर भी उसे वही कठिनाई पेश आ रही थी जो ज़िला-कचहरी मे पेश आई थी। यहा पर भी असल बात को छोड कर इधर-उधर की गौण बातो पर विचार किया जा रहा था। मुकद्दमा एक अखबार के बारे मे था जिसमे एक लेख छपा था। अखबार मे किसी ज्वाइट स्टॉक कम्पनी के डायरेक्टर की पोल खोली गयी थी जिसने कोई प्रपच रचा था। जान पडता था कि इस मुकद्दमे मे एक ही बात महत्व की है, यह देखना कि डायरेक्टर अपनी स्थिति का नाजायज़ फायदा उठा रहा है या नही, और यदि उठा रहा है तो उसे ऐसा करने से रोकना। लेकिन यहा पर और ही बातो पर विचार किया जा रहा था क्या अखबार के

सम्पादक को इस लेख के छापने का कानून की दृष्टि से अधिकार था या नहीं, और उसे छाप कर उसने कौन सा जुर्म किया है—मिथ्या निन्दा का या दोषारोप का—और कहा तक मिथ्या निंदा मे दोषारोप का अश शामिल है, अथवा दोषारोप मे मिथ्या निंदा का। इसके अतिरिक्त तरह तरह के कानूनो तथा फैसलो पर विचार किया जा रहा था जो किसी सार्वजनिक विभाग द्वारा पास किये गये थे लेकिन जो साधारण लोगो की समझ से बाहर थे।

नेख्लदोव की समझ म एक ही बात आई। बावजूद इस बात के कि एक ही दिन पहले वाल्फ बडे जोर से यह कह रहा था कि सेनेट किसी मुकद्दमे की जाच गुण-दोष के आधार पर नही कर सकती, यहा, प्रत्यक्षत इस मुकद्दमे मे वह न्यायालय के निर्णय को रद्द करने के हक म था। और सेलेनिन, जो स्वभावत सयम से काम लेता था, यहा अप्रत्याशित रूप से बडे जोश-खरोश से इसके विरुद्ध बोल रहा था। आत्मानुशासी सेलेनिन के इस तरह जोश से बोलने का एक कारण था हालाकि उसे यो बोलते देख कर नेख्लदोव हैरान हो रहा था। एक तो उसे मालूम हो गया था कि पैसे के मामले म डायरेक्टर साफ नही है। दूसरे, उसके कानो मे अचानक यह खबर पड गई थी कि कुछ ही दिन पहले इस धोखेबाज के घर मे एक बहुत बडी डिनर पार्टी हुई थी और उसम वोल्फ भी शरीक हुआ था। मुकद्दमे पर अपनी रिपोर्ट देते समय वोल्फ एक एक शब्द तौल तौल कर बोला, लेकिन इसके बावजूद साफ जाहिर हो रहा था कि वह डायरेक्टर का पक्ष ले रहा है। इससे सेलेनिन उत्तेजित हो उठा और बडे गुस्से से जिरह करने लगा। स्पष्टतया, सेलेनिन के भाषण से वोल्फ नाराज हो गया। उसका चेहरा तमतमा उठा, बार बार वह अपनी कुर्सी मे हिलने लगा, चुपचाप बैठे बैठे भी वह इस तरह के इशारे कर रहा था मानो हैरान हो रहा हो, और जब अन्य सेनेटरो के साथ वह उठ कर विचार-कक्ष मे गया तो बडे रोब के साथ और नाराज दिखते हुए।

"आप किस मुकद्दमे के सिलसिले मे यहा आये हैं?" फानारिन को सम्बोधित करते हुए पेशकार ने फिर पूछा।

"मैंने आपको बतला तो दिया है। मास्लोवा के मुकद्दमे के सिलसिले मे।"

"हा, ठीक है। उसकी सुनाई तो आज ही होगी, लेकिन "

"लेकिन क्या?" वकील ने पूछा।

"बात यह है कि सेनेटरो का विचार था कि उस मुकद्दमे पर कोई जिरह नही होगी। इसलिए, इस मौजूदा मुकद्दमे पर अपना निणय देने के बाद सेनेटर शायद फिर बाहर नही आयेंगे। लेकिन मैं जा कर उन्हें इत्तला किये देता हू।"

"क्या मतलब?"

"मैं उन्हे इत्तला किये देता हू। अभी इत्तला किये देता हू।" और पेशकार ने फिर अपने कागज पर कुछ लिख लिया।

सेनेटरो का यही इरादा था। वे चाहते थे कि दोषारोप के मुकद्दमे का फैसला सुनायेंगे और उसके बाद विचार-कक्ष मे ही बठे बैठे, चाय सिगरेट पीते हुए बाकी काम—जिसमे मास्लोवा का मुकद्दमा भी शामिल था—निबटा देंगे।

२१

बहस के कमरे मे गोल मेज के इदगिद सभी सेनेटर बैठ गये। उनके बैठते ही वोल्फ बडी गमजोशी से तक पेश करने लगा कि सजा रद्द कर दी जानी चाहिए।

प्रधान चिडचिडे मिजाज का आदमी था। आज तो वह और दिना से भी ज्यादा बदमिजाज हो रहा था। अदालत मे सुनवाई के दौरान ही उसने इस केस पर अपनी राय तय कर ली थी और वोल्फ की बातो पर कोई ध्यान न देता हुआ वह अपने विचारो मे खोया बैठा था। उसे एक महत्वपूण पद पर नियुक्त किया जाना चाहिए था, लेकिन विल्यानोव को नियुक्त कर दिया गया था। इस घटना की चचा करते हुए जो शब्द कल उसने अपने सस्मरणो मे लिखे थे, वे अब उसके मन म बार बार घूम रहे थे। बडी मुद्दत से इस पद का उसे इन्तजार रहा था। प्रधान निकोतिन ऐसे पदाधिकारियो के सम्पक मे था जो सबसे ऊचे दो दर्जों म रखे गये थे। उसे सच्चे दिल से यह विश्वास था कि उन पदाधिकारियो के बारे मे उसकी राय भावी इतिहासकारो के लिए अमूल्य सामग्री का काम देगी। एक ही दिन पहले उसने एक अध्याय लिखा था जिसम उन

विशेष पदाधिकारियो की जी खोल कर भर्त्सना की थी और कहा था कि जब रूस के वर्तमान शासक देश को सर्वनाश की ओर ले जा रहे थे, उस समय इन पदाधिकारियो ने स्थिति को बचाने की कोई चेष्टा नही की, मतलब कि उसे ऊची तनख्वाह पर नियुक्त नही होने दिया। अब उसका विचार था कि आने वाली पीढ़ियो के लिए यह अध्याय घटनाओ पर एक नयी रोशनी डालेगा।

"हा, जरूर," वोल्फ के सवाल के जवाब मे, बिना उसका एक भी शब्द सुने, उसने कह दिया।

बे का मुह लटका हुआ था। वह वोल्फ की बात सुन रहा था, लेकिन साथ ही सामने रखे कागज पर एक हार बना रहा था। बे पक्का उदारवादी था। इस शताब्दी की सातवी दशाब्दी की उदारवादी परम्पराओ को वह पवित्र मानता था। आम तौर पर वह तटस्थ रहता, लेकिन जब कभी वह तटस्थता की दृढ सीमाओ को लाघता तो उदारवाद की ही दिशा मे। इस मुकद्दमे मे भी उसने ऐसा ही किया। एक तो धोखेबाज डायरेक्टर जिसने अपील कर रखी थी बडा दुष्ट आदमी था। इसके अलावा एक पत्रकार पर लिखित दोषारोप के जुर्म मे मुकद्दमा चलाना प्रेस स्वातन्त्र्य को सीमित करना था। इन्ही कारणो से बे की इच्छा थी कि अपील को रद्द कर दिया जाय।

वोल्फ ने अपना तर्क समाप्त किया। इस पर बे ने तसवीर बनाना बन्द कर दिया और बडी उदास और विनम्र आवाज मे, बडे स्पष्ट, सरल तथा विश्वासोत्पादक शब्दो मे यह साबित करने लगा कि अपील निराधार है (वह उदास इसलिए था कि उसे इन स्वत सिद्ध वचनो का समझाना पड रहा था)। इसके बाद उसने अपना सिर झुका लिया, जिस पर के बाल सफेद हो चुके थे और फिर से हार की तसवीर बनाने लगा।

स्कावारादनिकोव वोल्फ के ऐन सामने बैठा था और अपनी मोटी मोटी अगुलियो से दाढी और मूछो के बाल मुह मे घुसेड रहा था। बे के बोल चुकने पर उसने दाढी के बाल चबाना बन्द कर दिया और ऊची, कर्कश आवाज मे अपनी राय देने लगा। अपील करने वाला बडा दुष्ट आदमी है, उसने कहा, लेकिन इसके बावजूद मैं उसकी सजा मनसूख करने को कहता यदि अपील किसी कानूनी आधार पर खडी होती। लेकिन चूकि कानूनी आधार बिल्कुल कोई नही है, इसलिए मैं बे की राय का समर्थन

करता हूँ।" वापस के रास्ते में खड़ा अटकाते हुए स्कोवोरोदनिकोव मन ही मन खुश था। प्रधान ने स्कोवोरोदनिकोव की राय का समर्थन किया और अपील रद्द कर दी गई।

वोल्फ असन्तुष्ट था, विशेषकर इसलिए कि उसे लग रहा था जैसे उसे हाथों पकड़ा गया हो, कि पक्षपात या कपट करते हुए लोगों ने देख लिया हो। इसलिए यह दिखाने की कोशिश करते हुए कि उसे इस मामले से कोई सरोकार नहीं, उसने मास्लोवा के मुकद्दमे की दस्तावेज़ निकाली और उसे पढ़ने में मगन हो गया। इस बीच सेनेटरों ने घण्टी बजाई और चाय लाने का आर्डर दिया। उन दिनों पीटर्सबर्ग में द्वन्द्व युद्ध की चर्चा सबकी जबान पर थी। साथ ही एक दूसरा विषय भी लोकप्रिय हो चला था। किसी सरकारी विभाग के अध्यक्ष ने धारा ६६५ के अन्तर्गत कोई जुर्म किया था।

"कितनी गन्दी बात है" बे ने घृणा से कहा।

"वाह, इसमें क्या बुराई है? मैं तुम्हें एक किताब दिखा सकता हूँ जिसमें एक जर्मन लेखक ने इस सम्बन्ध में अपनी योजना दे रखी है। उसने बिना लाग-लपेट के यह सुझाव पेश किया है कि पुरुषों के बीच इस प्रकार के सम्बन्ध को जुर्म करार नहीं दिया जाना चाहिए, पुरुषों को पुरुषों के साथ विवाह करने की इजाजत होनी चाहिए," बड़े लाभ से सिगरेट का कश लेते हुए स्कोवोरोदनिकोव ने कहा और जोर जोर से हँसने लगा। सिगरेट तुड़-मुड़ चुका था लेकिन उसने उसे अपनी मोटी मोटी अंगुलियों में, हथेली के नज़दीक, दबा रखा था।

"नामुमकिन है!" बे बोला।

"मैं तुम्हें ला कर दिखा दूंगा," स्कोवोरोदनिकोव ने कहा और किताब का नाम, यहां तक कि उसके प्रकाशन का स्थान और तिथि तक बता दी।

"मैंने सुना है कि उसे साइबेरिया में किसी शहर का गवर्नर बना कर भेज दिया गया है।"

"यह तो बड़ी अच्छी बात है! लाट पादरी बड़े ठाठ से उसका स्वागत करेगा। बस लाट पादरी भी कोई ऐसा ही आदमी होना चाहिए," स्कोवोरोदनिकोव ने कहा। "मैं एक पादरी की सिफारिश भी कर सकता हूँ।" उसने सिगरेट चाय की तश्तरी में फेंक

दिया और फिर मूछों और दाढी के जितने भी बाल ठूसे जा सकते थे, मुह मे ठूम कर उन्हे चबाने लगा।

पेशकार अन्दर आया और बोला कि नेख्लूदोव और वकील मास्लोवा के मुकद्दमे की जाच के समय मौजूद होना चाहते है।

"यह मामला भी बडा रोमांटिक है," वोल्फ बोला, और जो कुछ उसे मास्लोवा और नेख्लूदोव के सम्बन्ध के बारे मे मालूम था वह सुनाया।

थोडी देर तक वे इसकी चर्चा करते रहे। फिर चाय सिगरेट पी चुकने पर वे उठे और अदालत के कमरे मे चले गये, पहले दापाराप के मुकद्दमे का फैसला सुनाया और फिर मास्लोवा की अपील सुनने लगे।

वोल्फ अपनी पतली सी आवाज मे मास्लोवा की अपील पर रिपोर्ट देने लगा। रिपोर्ट पूरी की पूरी थी पर इसमे भी पक्षपात की झलक मिलती थी और साफ जाहिर था कि वोल्फ चाहता है कि सजा मनसूख कर दी जाय।

"क्या तुम्हे कुछ कहना है?" फानारिन को सम्बोधित करते हुए प्रधान ने कहा।

फानारिन उठा और अपनी चौडी सफेद छाती फैला कर, जिरह करने लगा। एक एक नुक्ते को ले कर उसने बडे यथार्थ और आकर्षक ढंग से यह साबित किया कि न्यायालय ने छ स्थानो पर कानून का गलत मतलब निकाला है। इसके अतिरिक्त, सक्षेप मे उसने मुकद्दमे के गुण-दोष की भी चर्चा की और कहा कि यह सजा दे कर न्यायालय ने घोर अन्याय किया है। उसका भाषण सक्षिप्त किन्तु युक्तियुक्त था। जिस लहजे मे वह बोला उसमे सेनेटरो के प्रति अनुनय का भाव पाया जाता था, मानो कह रहा हो कि आप कुशाग्र बुद्धि तथा न्याय के पारगत विद्वान है आप मुझसे अधिक इस मामले को देख-समझ सकते है, मैं तो यहा जिरह कर के केवल अपना कर्तव्य पूरा कर रहा हू।

फानारिन के भाषण के बाद ऐसा जान पडता था जैसे शक की कोई गुजाइश ही न रह गई हो, कि सेनेट जरूर न्यायालय के निर्णय को रद्द कर देगी। भाषण समाप्त करने के बाद फानारिन ने विजयोल्लास मे मुस्कराते हुए आस पास देखा। उसे देख कर नेख्लूदोव को यकीन हो गया कि मामला जीत लिया। परन्तु जब उसने गर्दन घुमा कर सेनेटरो की ओर देखा तो उसे लगा जैसे फानारिन अकेला ही अपनी विजय पर मुस्करा रहा हो। सेनेटर और सरकारी वकील के चेहरे पर विजय की मुस्कान

नही थी। इसके विपरीत सेनेटर तथा सरकारी वकील थके हुए से लग रहे थे। उनके चेहरे के भाव से लग रहा था मानो सोच रहे हो–"हमने तुम जैसे लोगो के बहुत भाषण सुने है–पर यह सब व्यर्थ है।" उसके भाषण की समाप्ति पर ऐसा जान पडा जैसे उन्होंने चैन की सास ली हो, कि अब ज्यादा देर यहा नही रुकना पडेगा। वकील का भाषण समाप्त होने के फौरन् ही बाद प्रधान ने सरकारी वकील को बोलने के लिए कहा। सेलनिन थोडे से शब्दो मे बडी स्पष्टता से न्यायालय के फैसले को बरकरार रखने के पक्ष मे बोला। उसने कहा कि फैसला रद्द करने के लिए जितने भी तर्क पेश किये गये हैं, सभी अपर्याप्त है। इस जिरह के बाद सभी सेनेटर बहस के कमरे मे चले गये। उनके मत अलग अलग थे। वोल्फ इस हक मे था कि अपील मजूर की जानी चाहिए। बे ने, मामला समझने के बाद, वाल्फ के पक्ष की बडे ज़ोर से हिमायत की, और अपने साथियो के सामने न्यायालय के सारे दृश्य का सजीव वर्णन किया, जिस भाति वह उसे अपनी कल्पना मे साफ नजर आ रहा था। निकीतिन ने दूसरा पक्ष लिया, क्योकि सदा ही उसे दृढता और नियमिक्ता पसन्द थी। अब सारा मामला स्कोवोरोदनिकोव की वोट पर निर्भर था, और उसने अपना मत अपील को रद्द कर देने के हक मे दिया। इसका मुख्य कारण यह था कि नेख्लूदोव का यह निश्चय कि वह नैतिक कारणो से प्रेरित हो कर मास्लोवा से शादी करेगा, उसे अत्यन्त घृणास्पद लगा।

स्कोवोरोद्निकोव भौतिकवादी था और डारविन के सिद्धान्त का अनुयायी था। इसलिए नैतिकता के प्रत्यक्ष भावात्मक रूप को–और इससे भी बुरा यह कि धर्म को–घृणास्पद मूर्खता समझता था। इतना ही नही इसे वह अपना अपमान समझता था। उसे यह निहायत बुरा लग रहा था कि एक वेश्या के मामले को ले कर इतना बावैला खडा किया गया है, और स्वय नेख्लूदोव और एक प्रतिष्ठित वकील सेनेट मे आ पहुचे है। इसलिए उसने दाढी के बाल मुह मे खोसे और तरह तरह के मुह बनाता रहा, और बडी चालाकी से यह दिखाते हुए कि इस मामले के बारे मे उसे केवल इतना ही मालूम है कि अपील के लिए जो आधार प्रस्तुत किये गये है वे अपर्याप्त है, उसने प्रधान के मत का समर्थन किया कि न्यायालय के निर्णय को बरकरार रखा जाय।

इस तरह मास्लोवा को दी गयी सजा बरकरार रही।

"घोर अन्याय है!" वकील के साथ वेटिंग रूम म जाते हुए नम्नदोव ने कहा। वकील अपने बस्ते मे कागजात ठीक कर रहा था। "एक ऐसे मामले म जो बिल्कुल साफ है, वे केवल नियमो को महत्व दिये जा रहे हैं, और दखल देने से इन्कार कर रहे हैं। उफ, कैसा घोर अन्याय है!"

"मुकद्दमा जो खराब हुआ है ता फौजदारी अदालत म" वकील बोला।

"और ला और, सेलेनिन भी इस हक मे था कि अपील को रद्द कर दिया जाय। उफ कैसा घोर अन्याय है!" नेख्लूदोव न फिर दोहराया। "अब कहो, क्या करना चाहिए?"

"हम जार से अपील करेंगे। आप खुद आजकल पीटसबर्ग मे हैं, यह दरख्वास्त दाखिल करते जाइये। मैं इसे तैयार कर दूगा।"

इसी समय वोल्फ—छोटा सा कद, वर्दी चढाये हुए जिस पर सितारे चमक रहे थे—वेटिंग रूम म दाखिल हो कर नेख्लूदोव की ओर चला आया।

"हम लाचार थे, प्रिंस, अपील के लिए दिये गये आधार काफी नही थे,' अपने मकरे कन्धे बिचका कर, आखे बन्द करते हुए उसने कहा और फिर वहा से चला गया।

वोल्फ के बाद सेलेनिन भी बाहर आया। उस सेनेटरो स मालूम हो गया था कि उसका पुराना दोस्त नम्नूदोव यहा पर मौजूद है।

"मुझे तो ख्वाब-ख्याल भी न था कि तुम्हारे साथ यहा मुलाकात होगी, नम्नूदोव की ओर आते हुए उसने कहा। वह मुस्करा रहा था लेकिन उसकी मुस्कान केवल होठो तक ही थी। आखो म अब भी उदासी का भाव था। "मुझे तो मालम ही नही था कि तुम पीटसबर्ग म हो।"

'मुझे भी मालम नही था कि तुम सेनट में सरकारी वकील के पद पर हो।"

"मैं सहायक सरकारी वकील हू" सेलेनिन ने गलती ठीक करते हुए कहा यहा सेनेट म कैसे आना हुआ? मुझे इतना तो मालूम हो गया था कि तुम पीटसबर्ग म हो। लेकिन यहा किस काम पर आये हो?"

"यहा ? यहा मैं न्याय की आशा ले कर आया था, ताकि एक वेगुनाह औरत को वचा सकू जिसे वडी सजा द दी गई है।'

"कौन सी औरत ?"

"वही जिसके मुकद्दमे का अभी अभी फैसला हुआ है।'

"ओह, मास्लोवा का मुकद्दमा," सेलेनिन को मुकद्दमे की याद आ गई। "अपील का तो कोई आधार ही नही था।"

"मैं अपील की नही, औरत की वात करता हू वह निर्दोप है, फिर भी उसे सज़ा दी जा रही है।"

सेलेनिन ने ठण्डी सास भरी।

"मुमकिन है, लेकिन "

"मुमकिन नही, सचमुच निर्दोप '

"तुम्हे कैसे मालूम है ?"

"क्याकि मैं जूरी मे था। मुझे मालूम है हमसे क्से भूल हुई।"

सेलेनिन सोच मे पड़ गया।

"तुम्हे उस वक्त एक वयान देना चाहिए था,' उसने कहा।

"मैंने वयान दिया था।"

"उसे सरकारी रिपोट मे दज करवाना चाहिए था। अपील की दरख्वास्त के साथ अगर वह जोड दिया गया होता ता '

सेलेनिन को अपन काम से सिर उठाने की फुसत नही होती थी, इसलिए वह सभा सोसाइटी मे वहुत कम आया जाया करता था। प्रत्यक्षत उसे नेख्लूदोव के प्रेम का कुछ भी मालूम नही था। नख्लूदोव न यह देख लिया, और मन ही मन निश्चय किया कि उसे मास्लोवा के साथ अपने निजी सबध के बारे मे वताने की कोई जरूरत नही।

"हा, फिर भी फैसला विल्कुल वेहूदा दिया गया था। और यह आज भी जाहिर था।'

"सेनेट को यह कहन का काई अधिकार नही है। अगर सनट अपने मतानुसार यह दख कर कि अदालतो के फैसले जायज़ हैं या नाजायज, उन्ह वदलन लगे, ता जूरी के फैसले का कोई मूल्य नही रह जायगा। यही नही, सेनट का कोई मतलव ही नही रहगा। यह सस्था न्याय का समथन करने के वजाय न्याय का उल्लघन करने लगेगी," जिस मुकद्दमे की अभी अभी सुनाई हुई थी, उसे याद करत हुए सेलनिन न कहा।

"मैं तो केवल इतना जानता हूं कि यह औरत बिल्कुल निर्दोष है। और अब इस अनुचित दण्ड से उसे बचाने की एक मात्र आशा भी जाती रही है। सर्वोच्च न्यायालय ने घोर अन्याय का समर्थन किया है।"

"समर्थन नहीं किया है। सेनेट ने मुकद्दमे के गुण-दोष की जांच नहीं की, न ही कर सकती है," सेलेनिन ने आंखें मिचकाते हुए कहा। "अपनी मौसी के पास ठहरे हो न?" उसने पूछा। जाहिर था कि वह वार्तालाप का रुख बदलना चाहता था। "उन्होंने कल मुझे बताया कि तुम यहां पर हो। और मुझे शाम को घर पर भी आने के लिए कहा, कि कोई विदेशी उपदेशक भाषण देने के लिए आयेंगे, और वहीं पर तुमसे भी मुलाकात हो सकेगी" सिर्फ होंठों में मुस्कराते हुए सेलेनिन ने कहा।

'हां, मैं था, लेकिन मुझे बड़ी नफरत हुई और मैं वहां से उठ गया' नेख्लूदोव ने खीज कर कहा। उसे इस बात का गुस्सा था कि सेलेनिन ने वार्तालाप का विषय ही बदल दिया है।

'क्या नफरत क्या हुई? आखिर यह भी धार्मिक भावना को व्यक्त करने का एक रूप है। हां, इतना मैं मानता हूं कुछ एकांगी और संकीर्ण जरूर है," सेलेनिन ने कहा।

"छि, यह केवल सनक और मूर्खता है, और कुछ नहीं।"

"अरे नहीं भाई, नहीं। विचित्र बात यह है कि हमें अपने ही चर्च के उपदेशों के बारे में बहुत कम जानकारी है। इसलिए जब हमारी ही मूल धारणाओं को किसी नये रूप में व्यक्त किया जाता है तो हम समझने लगते हैं कि यह कोई नया दैविक सन्देश है," सेलेनिन ने कहा। ऐसा लगता था मानो वह जल्दी से जल्दी अपने मित्र को अपनी नयी धारणाओं के बारे में बता देना चाहता हो।

नेख्लूदोव ने बड़े गौर और हैरानी से सेलेनिन की ओर देखा। सेलेनिन ने आंखें नीची नहीं कीं। इन आंखों में न केवल उदासीनता का ही बल्कि वैमनस्य का भी भाव झलकता जान पड़ता था।

'तो क्या तुम चर्च के सिद्धान्तों को मानते हो?' नेख्लूदोव ने पूछा।

"हां, जरूर मानता हूं," सेलेनिन ने अपनी कान्तिहीन आंखों से नेख्लूदोव की आंखों में सीधा देखते हुए जवाब दिया।

नेख्लूदोव ने ठण्डी सांस ली।

"अजीब बात है," वह बोला।

"हम इस बार म फिर किसी वक्त बात करेंगे," सेलेनिन न कहा। इसी बीच पशवार उसके पास आ कर बड़े अदब से खड़ा था। "मैं आ रहा हू," उसने पशवार से कहा। "ता हम जरूर फिर मिलना चाहिए," उसने ठण्डी उसास छोडते हुए कहा। "पर तुम मिलाग भी? मैं ता राज शाम का सात बजे भाजन के समय घर पर हाता हू। मेरा पता नोट कर ला। नादेज्दिस्काया।" उसने मकान का नम्बर बताया। "उफ, वक्त किसी का इन्तजार नही करता।' और वह घूम कर जाने लगा। अब भी उसकी मुस्कान केवल होठो तक ही सीमित थी।

"हा सका ता तुम्ह मिलने आऊगा," नेख्लूदाव न कहा। उसे महसूस हो रहा था कि यही आदमी जो एक दिन इतना निकट और प्यारा था आज सहसा अजनबी, दूर-पार का और अगम्य, यहा तक कि किसी हद तक विरोधी सा बन गया है।

२३

पढाई के दिनो मे, जब नेख्लूदोव और सेलेनिन एक दूसरे के मित्र थे, सेलेनिन का आचार-व्यवहार घर म सुपुत्र सा और बाहर सच्चे मित्र का सा था। उसकी अवस्था को देखते हुए वह एक सुशिक्षित युवक था। और साथ ही एक सुदर कमनीय तथा व्यवहार-कुशल युवक था, दिल का सच्चा और बेहद ईमानदार। पढाई मे उसने बडी प्रगति की, लेकिन बिना बहुत माथापच्ची किये और बिना किसी पर अपना पाडित्य बघारे। अपने निबधा पर सोने के तमगे प्राप्त करता रहा।

युवावस्था मे वह जन-सेवा को अपने जीवन का लक्ष्य मानता था, और वह भी केवल शाब्दिक सदभावना के रूप मे नही, क्रियात्मक रूप मे। उसने देखा कि यदि मानवजाति की सेवा करनी हो ता राज्य की सेवा करनी चाहिए। इसलिए पढाई खत्म करने के बाद उसने बडे क्रमबद्ध तरीके से एक एक धधे की जाच की और अन्त मे फैसला किया कि वह चासलरी के द्वितीय विभाग म, जहा कानून बनाये जाते हैं, सबसे उपयागी सिद्ध हो सकता है। अत वह लोक-सेवा के इस विभाग मे नौकर हो गया। बडी ईमानदारी और सुतथ्यता से अपना काम करने लगा, एक एक बात की ओर ध्यान देता, लेकिन इसके बावजूद उसे आतरिक सन्तोष नहा

मिला, उसकी यह इच्छा पूरी नही हो सकी कि वह मानवजाति के लिए उपयोगी हो सके, न ही उस विश्वास हो पाया कि वह ठीक रास्ते पर जा रहा है। जिस अफसर के अधीन उसे काम करना पडा वह इतना छोटे दिल का और दम्भी आदमी था, कि आये दिन सेलेनिन की उसके साथ छोटी मोटी झडपें हो जाती। इससे उसका असन्तोष और भी बढ गया और सेलेनिन चासलरी छोड कर सेनट मे काम करने लगा। यहा पर स्थिति कुछ बेहतर थी लेकिन उसका असन्तोष फिर भी दूर नही हुआ। उसे महसूस होता रहता कि यह स्थिति भी उसकी आशाओ के अनुरूप नही और जैसा होना चाहिए था, वैसा नही हुआ।

सेनेट मे काम करते हुए, सम्बन्धियो की मदद से उस जेंटलमैन आफ बैडचैम्बर का पद मिल गया। नियुक्ति के बाद वह कामदार वर्दी पहने और ऊपर सफेद रग का एप्रन लगाये, गाडी मे बैठकर तरह तरह के लोगो के घर जा कर उनका धन्यवाद करता फिरा, जिन्होंने उसे पिट्ठू के पद पर बिठा दिया था। हजार कोशिश करने पर भी उसकी समझ मे नही आया कि इस पद की उपयोगिता क्या है। और इस कारण सेनेट की नौकरी से भी अधिक असतुष्टि उसे हो रही थी और वह समझ रहा था कि "यह तो वह नही" है, जिसकी जीवन म उसे खोज है। पर वह इस पद को छोड भी नही सकता था। उसे डर था कि ऐसा करने मे वे लोग नाराज़ हो जायेंगे जो यह समझे बैठे थे कि इस पद पर बिठा कर उन्होंने उसे असीम आनन्द पहुचाया है। साथ ही इस पद से उसकी निम्न कोटि की वत्तियो की तृप्ति होती थी। जब वह सुनहरी कढाई की वर्दी पहने शीशे के सामने खडा होता तो उसका दिल बाग बाग हो जाता। और कुछ लोगो से अदब और इज्जत पा कर भी वह खुश होता जो इसी पद के कारण उसका मान करते थे।

इसी तरह की बात उसके ब्याह के समय भी हुई। दुनियादारी की दृष्टि से उसके लिए एक बहुत बढिया लडकी चुनी गयी। और उसने शादी कर ली, मुख्यतया इस कारण कि यदि इन्कार कर देता तो एक तो उस लडकी को सदमा पहुचता जो उसके साथ शादी करना चाहती थी, और साथ ही वे लोग भी मायूस होते जिन्होंने इसकी व्यवस्था की थी। इसके अलावा कुलीन घराने की एक सुमुख लडकी से व्याह करने से उसकी शान बढती थी और उसका दिल खुश होता था। पर शीघ्र ही उसे महसूस

होने लगा कि यहा पर भी "यह तो वह नही" है। बल्कि सरकारी नौकरी तथा न्यायालय के पद से भी कम सन्तोष इससे मिलता था।

उनके एक बच्चा हुआ। पत्नी ने निश्चय कर लिया कि उस और बच्चा नही चाहिए और इसके बाद वह ऐश आराम और दुनियावी तडक भडक की जिन्दगी म पड गई। इस प्रकार के जीवन मे उस भी शरीक होना पडता था भले ही उसे पसन्द हो या न हो। सौन्दर्य की दृष्टि से उसकी पत्नी म कोई विशेषता नही थी, हा, वह पतिव्रता जरूर थी। उसे इस प्रकार के जीवन से थकावट के अलावा हाथ कुछ न लगता था। पर वह फिर भी ऐसे जीवन से बडे यत्न से चिपटी हुई थी और उसमे से निकलना नही चाहती थी, यह जानते हुए भी कि इससे उसके पति का जीवन नरक बन रहा था। पति ने उसकी जीवन चर्या बदलने की बडी कोशिश की लेकिन नाकाम रहा, मानो उसके सामने पत्थर की दीवार खडी हो जाती हो। पत्नी की धारणाए गहरी जड पकड चुकी थी। उसके रिश्तेदार भी उसकी पीठ ठोकते थे कि उस ऐसा ही जीवन व्यतीत करना चाहिए।

अपनी बेटी के साथ उसे कोई लगाव न था, क्योकि जिस ढग से उसका लालन-पालन हो रहा था वह उसे पसन्द न था। छोटी सी लडकी जिसकी टागे उघडी उघडी रहती और सिर पर लम्बे सुनहरी बाल थे। पति पत्नी के बीच वही गलतफहमिया उठने लगी जो अक्सर उठती रहती है, दोनो तरफ से एक दूसरे का दृष्टिकोण समझने की कोई कोशिश नही की जाती, फिर अन्दर ही अन्दर वैमनस्य की आग सुलगने लगी जो बाहर के लोगो को नजर नही आती थी, लेकिन जो शिष्टाचार के आवरण के नीचे और भी तेज होती जा रही थी। इन कारणो से घर के अन्दर उसका जीना दूभर हो उठा था। इस तरह पारिवारिक जीवन म सरकारी नौकरी और दरबार की नियुक्ति से भी अधिक असतुष्ट वह अनुभव करने लगा कि 'यह तो वह नही है'।

परतु सबसे अधिक असतुष्टि की बात धर्म के प्रति उसका दृष्टिकोण था। वह धार्मिक अन्धविश्वासो के वातावरण मे पला था। लेकिन होश सभालते ही अपने समय के अन्य हमजोलियो की तरह बिना किसी विशेष प्रयास के उसने इन अन्धविश्वासो की बेडिया काट डाली और आज़ाद हो गया। उसे यह भी मालूम न था कि किस समय उसने यह मुक्ति प्राप्त

की। जवानी के दिनो मे, जब वह नेट्लूदोव का गहरा मित्र हुआ करता था वह इतना शुद्ध हृदय और ईमानदार युवक था कि किसी से यह बात नही छिपाता था कि राजकीय धम मे उसे कोई विश्वास नही रहा। पर ज्या ज्या वक्त गुज़रने लगा और वह सरकारी नौकरी मे तरक्की करन लगा तो यह मानसिक स्वतत्रता उसकी तरक्की के रास्ते मे रुकावट बनन लगी। यह विशेषकर उस समय हुआ जब समाज मे रूढिवाद की ओर प्रतिक्रिया हुई। एक तो उस पर घर वाला ने दबाव डाला, विशेषकर उस समय जब उसके पिता की मत्यु हुई, और मतक की आत्मा के लिए सम्मिलित उपासना का आयोजन हुआ। इसके अतिरिक्त उसकी मा की बडी इच्छा थी कि वह व्रत रखे। साथ ही समाज और सरकारी नौकरी का यह तकाजा था कि वह हर प्रकार की उपासनाओ, कासिक्रेशन तथा स्तुतिगान इत्यादि मे शामिल हो। आय दिन कोई न कोई धामिक उपचार निभाना पडता। इन उपासनाओ के सम्बध मे वह दो मे से एक ही रास्ता अपना सकता था। या तो वह सच को छिपा जाय, ऊपर स यह दिखावा करे कि मैं धम को मानता हू, और अन्दर ही अदर न माने। ऐसा वह नही कर सकता था क्योकि वह दिल का बडा सच्चा आदमी था। या फिर दिल मे यह धारणा पक्की करन के बाद कि सभी बाहरी उपचार आडम्बर मात्र है, वह अपनी जीवन चर्या को ऐसी दिशा मे ढाल कि उसे इन धामिक सस्कारो म उपस्थित न होना पडे। बात तो सीधी सी नजर आती थी लेकिन उसे निभाने मे बहुत बडी कीमत चुकानी पडती। एक तो निकट सम्बधियो का निरन्तर विरोध सहन करना पडता। दूसरे अपन सार पद गौरव को तिलाजलि देनी पडती। नौकरी छोडनी पडती और ऐसा करन स वह मनुष्यजाति की जो उपयोगी सवा कर रहा था (उस यही लगता था), और जो वह भविष्य म और भी बडे पैमान पर करना चाहता था, वह नही कर पायगा। यह कुर्बानी मनुष्य तभी कर सकता है जब उसके मन म यह पक्का विश्वास हो कि उसकी धारणाए सच्ची है। और उसे यह विश्वास था। हमारे ज़मान का काई भी पढा-लिखा आदमी जिसन इतिहास का कुछ भी पठन-पाठन किया है जा यह जानता है कि आम तौर पर धर्मों का प्रादुर्भाव कसे हुआ, और विशेषकर गिरजा वाले ईसाई धम का प्रादुर्भाव किस भाति हुआ और विघटन किस भाति हुआ वह अपने सामान्य बोध की सचाई म विश्वास किये बिना

रह भी नही सकता। वह यह स्वीकार करने पर विवश था कि गिरजे के उपदेशो को ठुकरा कर उसने ठीक ही किया है।

परन्तु दैनिक जीवन के दबाव म श्रा कर इस सच्चे श्रादमी न एक छोटे से झूठ को मन मे प्रवेश करने की इजाजत द दी। उसने मन ही मन कहा कि इन्साफ का तकाजा है कि एक श्रनुचित चीज का भी ठुकरान म पहले उसे देख-परख लिया जाय। बस, इतना सा झूठ था लेकिन वह उसे एक श्रौर बडे झूठ म धकेल ले गया, जिसम श्राज वह डूब-उतरा रहा था।

वह रूढिवादी धम के वातावरण मे पल कर बडा हुश्रा था। सभी लाग यह श्राशा करते थे कि वह इसे मानेगा। इसे माने बिना वह श्रपना काम भी नही कर सकता था जिसे वह मानवजाति क लिए इतना उपयोगी समझता था। क्या यह रूढीवादी धम सच्चा है? यह सवाल श्रपने मन से पूछने से पहल ही उसन इसका उत्तर स्थिर कर लिया था। श्रत इस प्रश्न का समाधान करन के लिए वह वाल्तयर, शोपिनहार, हर्बट स्पेंसर श्रथवा कोत की रचनाए पढने के बजाय हेगेल के दार्शनिक ग्रन्थ तथा विनत श्रौर खोम्याकोव के धार्मिक ग्रन्थ पढने लगा। श्रौर जो बात वह ढूढ रहा था वह स्वभावत उसे इन ग्रन्थो म मिल गई। वह मानसिक शान्ति चाहता था, वह उसे यहा पर मिल गई। जो धार्मिक शिक्षा उसे बचपन म दी गयी थी, उसे उसकी बुद्धि ने स्वीकार नही किया था परन्तु उसके बिना उसका सारा जीवन कटुता से भर गया, श्रौर इन ग्रन्थो मे उस धार्मिक शिक्षा को सच्चा बताया गया था जिसे मान लेन स सारी कटुता एकदम दूर हो जाती थी। इस तरह वह ऐसे कुतर्कों को मानने लगा जो श्राम तौर पर पेश किये जाते है कि एक श्रकेले इन्सान की बुद्धि सत्य को नही समझ सकती कि सत्य का दशन मनुष्यो के समूह को हो सकता है, श्रौर वह भी केवल श्राकाशवाणी द्वारा, यह दैविक सन्देश चच के पास मौजूद है, इत्यादि। बस उसके बाद उसका मन शान्त हो गया श्रौर यह भावना जाती रही कि यह सब झूठ है। श्रौर वह मतक के लिए श्रायोजित प्रार्थनाश्रो पर जाने लगा, पादरी के सामन श्रपने पाप कबूलने लगा, देवप्रतिमाश्रो के सामने खडे हो कर क्रास के चिह्न बनाने लगा, श्रौर निश्चिन्त हो कर सरकारी नौकरी करने लगा, जिसे करते हुए उसे महसूस होता था कि वह मानवजाति की सेवा कर रहा है श्रौर

जिससे वह अपने पारिवारिक जीवन की कटुता को भूले रहता था। वह सोचता था कि वह धम और भगवान मे विश्वास करता है, किन्तु अपनी अतरात्मा मे वह बिल्कुल स्पष्टतया यह अनुभव कर रहा था कि और सब बातो से भी अधिक उसका यह विश्वास तो "वह नही है', और इसी कारण उसकी आखो मे उदासी छायी रहती थी।

आज नेख्लूदोव को मिलने पर उसे याद आ गया कि वह पहले क्या हुआ करता था। नेख्लूदोव से उसकी जान-पहचान उस समय से थी जब उसके मन मे ये झूठ जड नही पकड पाये थे। आज नखनूदोव से मिलन पर जब जल्दी जल्दी मे उसने अपनी वतमान धामिक धारणाओ का सकेत किया तो उसे पहले से भी अधिक कटुता के साथ यह अनुभव हुआ कि यह सब तो "वह नही है," और वह बेहद उदास हो गया। और जब अपने मित्र को मुद्दत के बाद मिलने की खुशी कुछ ठण्डी पडी तो नख्लूदोव को भी यह महसूस हुआ।

दोनो ने एक दूसरे से मिलने का वादा किया, लेकिन न एक न न दूसर ने मिलने की कोई कोशिश की। जितने दिन नेख्लूदोव पीटसबग म रहा, वे एक दूसरे से नही मिले।

२४

सेनेट मे से निकल कर वकील और नेख्लूदोव एक साथ पैदल जान लगे। वकील ने अपने गाडी वाले को पीछे पीछे चले आने को कह दिया। वकील उसे उस आदमी का किस्सा सुनाने लगा जिसकी चर्चा सेनेटर लोग कर रहे थे, और जो आदमी एक सरकारी विभाग का चीफ था। वकील ने बताया कि बात कैसे पकडी गई, और जिस आदमी को कानून के मुताबिक कडी सजा मिलनी चाहिए थी, उसे साइबेरिया के एक शहर का गवनर बना कर भेज दिया गया है। उसने यह कहानी मजा ले ले कर और गन्दी तफसीला के साथ सुनाई। इसके बाद वह एक स्मारक की चचा करने लगा जिसके पास से हो कर उसी दिन प्रात वे सेनेट भवन मे गये थे। वह स्मारक कब से बन रहा था और अभी तक मुकम्मल नही हो पाया था। स्मारक के लिए बहुत सा धन इकट्ठा किया गया लेकि

वडे ग्रोहदो वाले लोग इस धन का बहुत सा हिस्सा ऊपर ही ऊपर स उड़ा गये। फिर सुनाने लगा कि अमुक व्यक्ति की रखैल ने स्टाक ऐक्सचेंज पर लाखो रूबल बनाये हैं, और अमुक ने अपनी बीवी का सौदा किया है और अमुक ने बीवी खरीद ली है। वकील और भी तरह तरह की ठगी और जुर्मो की कहानिया सुनाता रहा जो उन लोगा ने किय है जो बडे बडे ग्रोहदा पर बैठे है। और उन्ह जेल मे भेजना तो दूर रहा वे आज भी विभिन सरकारी सस्थाग्रा मे अध्यक्षा की कुसिया पर बैठे हैं।

जान पडता था जैसे वकील ने इन कहानियो का जो जखीरा इकट्ठा कर रखा है वह कभी खत्म नही होगा। और वह बडा रस ल ले कर इन्हे सुना रहा था। उनसे साफ जाहिर हो रहा था कि पीटसवग के वड वडे अफ्सरो की तुलना मे वकील का पैंसे बनाने का ढग वडा न्यायसगत और निर्दोष है। लेकिन अभी वकील बाते कर ही रहा था कि नख्लूदोव ने एक गाडी रोकी और झट से विदा ले कर उसमे बैठ गया। वकील हैरान रह गया।

नेख्लूदोव का मन उदास हो उठा। उदासी का सबसे बडा कारण तो यह था कि सेनेट ने अपील मसूख कर दी थी और इस तरह निर्दोष मास्लोवा को जो यातनाए बिना किसी प्रयोजन के भुगतनी पड रही थी, उनका समथन कर दिया था। इस कारण भी वह उदास था कि इस नामजूरी के बाद उसके लिए मास्लोवा के जीवन के साथ अपना जीवन जोडना और भी कठिन हो गया था। आज की कुरीतिया की जो कहानिया वकील ने इतना मजा ले ले कर सुनाई थी, उनस उसकी उदासी ग्रार भी बढ गई थी। साथ ही, सेलेनिन की ग्राखा म छाया निमम उपेक्षा का भाव देख कर भी वह उदास हो उठा था और बार बार वह उस याद ग्रा रहा था। जमाना था जब यही सेलेनिन मदु स्वभाव निष्कपट और श्रेष्ठ व्यक्ति हुआ करता था।

घर पहुचा तो दरबान ने उसके हाथ म एक रुक्का दिया और बाना कि काई औरत आयी थी और डयोढी मे बठ कर यह रुक्का लिख गई थी। दरबान के लहजे मे कुछ कुछ घिन का ग्राभास होता था। रुक्का शूस्तावा की मा की ग्रोर से था। उसन रुक्के म अपनी बेटी के सहायक तथा रक्षक का धन्यवाद किया था और साग्रह अनुराध किया था कि वह उन्ह इस पते पर मिलने जरूर ग्राय वासील्येव्स्की, पाचवी कतार, घर

का नम्बर—। मेरा बोगादुखोव्स्काया की खातिर उन्हें जरूर मिलना चाहिए। खत में इस बात का आश्वासन दिया गया था कि हम मिलने पर आपको बार बार धन्यवाद कह कर परेशान नहीं करेंगी। हम कुछ भी नहीं कहेंगी केवल आपसे मिलना चाहती हैं। क्या यह सम्भव होगा कि आप कल शाम हमारे घर पधारें?

एक रुक्का बोगातिर्योव की ओर से भी था। बोगातिर्योव नेख्लूदोव का पुराना साथी अफसर था और अब जार का एडिकांग था। जो दरख्वास्त नेख्लूदोव धार्मिक सम्प्रदाय की ओर से जार के नाम लाया था, वह उसने बोगातिर्योव को दे दी थी कि वह इसे जार के हाथ में दे दे। बोगातिर्योव ने मोटे मोटे अक्षरों में—जैसा कि उसका लिखने का ढंग था—यह लिख कर उसे विश्वास दिलाया था कि वह जरूर जार को उसकी दरख्वास्त दे देगा, पर साथ ही उसका ख्याल था कि बेहतर होगा अगर नेख्लूदोव जा कर पहले उस व्यक्ति से मिल ले जिस पर यह काम निर्भर था।

जिस तरह के प्रभाव पिछले कुछ दिनों से उसके मन पर पड़ रहे थे उन्हें देखते हुए नेख्लूदोव बिल्कुल निराश हो उठा था, और सोचता था कि कोई भी काम पूरा नहीं हो पायेगा। मास्को में जो योजनाएं वह बनाता रहा था, आज वे उस जवानी के स्वप्नों सी लग रही थीं जो जीवन से आगात करने पर अनिवार्यतः छिन्न भिन्न हो जाते हैं। फिर भी उसने निश्चय किया कि चूंकि मैं पीटर्सबर्ग में मौजूद हूं मेरा फर्ज है कि जो जो काम यहां पर करने का इरादा कर के आया था, उसे पूरा करूं। इसलिए कल ही बोगातिर्योव को मिल कर, उसके परामर्शानुसार वह उस व्यक्ति को मिलने जाऊंगा जिस पर धार्मिक सम्प्रदाय के लोगों का मुकद्दमा निर्भर है।

उसने अपने बस्ते में से सम्प्रदाइयों की दरख्वास्त निकाली और पढ़ने लगा। उसी वक्त दरवाजे पर दस्तक हुई और एक चोबदार ने आ कर कहा कि काउंटेस येकातेरीना इवानोव्ना बुला रही है, और कह रही है कि चाय का प्याला हमारे साथ आ कर पीजिये।

नेख्लूदोव ने कहा कि वह अभी आ रहा है। उसने कागजों को वापस बस्ते में रखा और सीढ़ियां चढ़ कर मौसी की बैठक की ओर जाने लगा। रास्ते में एक खिड़की में से बाहर नजर डाली और देखा कि घर के सामने

मेरियट के लाखी घाडा की जाडी खडी है। देखते ही उसका मन खिल उठा और उसके होठो पर एक हल्की सी मुस्कान दौड गई।

काउटेस की आराम-कुर्सी की बगल म ही मेरियट बैठी थी, सिर पर टोप लगाय, और हाथ मे चाय का प्याला पकडे थी। आज उसन काल रग की पोशाक नही पहन रखी थी, बल्कि विविध रगो की कोई हल्की सी पोशाक पहने थी। वह किसी विषय पर काउटेस के साथ बतिया रही थी, और उसकी चमकती, सुदर आखो म से हसी फट रही थी। अन्दर पहुचन ही नेख्लूदाव ने देखा कि उसकी मौसी—मोटी-ताजी, नक्लिन, हल्की हल्की मूछो वाली मौसी—हसी से लोटपोट हो रही है। और मेरियट चुपचाप मुस्कराती हुई उसके चेहरे की ओर देखे जा रही है। मेरियट के मुस्कराते होठ एक ओर का खिचे हुए थे और गदन तनिक एक ओर को झुकी थी। मेरियट के सजीव हसते चेहरे पर एक अजीब शरारत का सा भाव था। जाहिर था कि मेरियेट न काउटेस को कोई मजाकिया बात सुनाई थी जो कुछ कुछ अश्लील भी थी, जिसका अन्दाजा नेख्लूदाव का उस हसी से ही लग गया था, जो उसन कमरे के अदर प्रवेश करते समय सुनी थी।

कुछ शब्द नेख्लूदोव के कान म भी पड गये थे, और उसन समझ लिया था कि बात साइबेरिया के नये गवनर के बारे मे चल रही है, जो आजकल पीटसबग मे चर्चा का दूसरा लोकप्रिय विषय बना हुआ था। इसी के बारे मे मेरियेट ने कोई ऐसी मजाकिया बात कही थी कि बडी देर तक काउटेस अपनी हसी को नही दबा पायी थी।

"तुम तो मुझे हसा हसा कर मार डालोगी," काउटेस न खासते हुए कहा।

नख्लूदाव अभिवादन कर के बैठ गया। वह मन ही मन इस उच्छृखलता के लिए मेरियट की भत्सना करने जा रहा था जब मरियेट की नज़र उसके गभीर तथा कुछ कुछ असन्तुष्ट चेहरे पर पडी, और सहसा उसने चेहरे का भाव बदल लिया। चेहरे का भाव ही नही, अपनी मन स्थिति भी बदल ली। उसने यह इसलिए किया कि जब से उसने नेख्लदोव को देखा था, तब से मन ही मन वह उसे भाने को व्याकुल थी। उसने सहसा गभीर मुद्रा धारण कर ली, अपने जीवन से असन्तुष्ट, मानो वह किसी चीज को ढूढने तथा पाने के लिए व्याकुल हो। वह बन नही

रही थी, उसने सचमुच अपने मन को नेख्लूदोव की मन स्थिति के अनुरूप ढाल लिया था, हालांकि उस समय नेख्लूदोव के मन की क्या स्थिति थी इस शब्दों म व्यक्त करना उसके लिए असभव होता।

मरियेट न नख्लूदोव म उन कामो क बारे म पूछा, जो वह पीटर्सबग म करन क लिए आया था। उसने सेनेट का किस्सा और सेलेनिन से अपनी भेंट के बारे म बताया।

"कितना नेक आदमी है! वह तो सचमुच a chevalier sans peur et sans reproche* है। बडा नक आदमी है," दोनो स्त्रियो ने एक साथ कहा। पीटर्सबग की सोसाइटी म सेलेनिन के लिए इसी विशेषण का प्रयोग किया जाता था।

"उसकी पत्नी कैसी औरत है?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"पत्नी? किसी क बारे म अच्छा या बुरा कहने का मेरा कोई अधिकार नही है लेकिन इतना जरूर कहूगी कि उसकी पत्नी उसे समझ नही पाई। क्या यह मुमकिन है कि उसने भी यही राय दी हो कि अपील नामजूर कर दी जाय?" मेरियेट ने सच्ची सहानुभूति से पूछा। "बडी भयानक बात है। मुझे सचमुच उस लडकी पर दया आती है," उसने ठण्डी सास भर कर कहा।

नख्लूदोव की भौहे चढ गई और वह बात बदल कर शूस्तोवा की चर्चा करने लगा। शूस्तोवा किले म कद काट रही थी लेकिन मेरियट की मदद से उसे रिहा कर दिया गया था। नख्लूदोव ने इस सहायता के लिए मरियेट का धन्यवाद किया। वह कहने जा ही रहा था कि इस स्त्री को तथा उसके सारे परिवार का कितनी यातना सहनी पडी है, केवल इस कारण कि किसी न भी उनके बार म अधिकारियो को याद नही कराया। लेकिन मेरियेट बीच मे ही बात काट कर अपना रोष प्रकट करने लगी—

"इसकी बात ही न करो,' वह कहने लगी। "जब मेरे पति ने मुझे कहा कि उस लडकी को रिहा किया जा सकता है, तो झट उसी वक्त मेरे मन मे ख्याल आया, अगर वह निर्दोष है तो उसे जेल मे रखा ही क्या गया था? मेरियेट ने मुह से वही शब्द निकाले जो नेख्लूदोव कहने जा रहा था। "कितनी घृणित बात है, घृणित!"

---

*निडर और निष्कलक वीर। (फ्रेंच)

मेरियेट का नेख्लूदोव के साथ चुहले करते देख, काउटेस के मन ने चुटकी ली। जब दोनो चुप हो गये तो कहने लगी–

"सुना, कल तुम एलीन के घर क्या नही चलते? कीज़ेवेतर भी वहीं पर होगा।" फिर मरियेट की ओर मुड कर बोली, "और तुम भी चलना।"

"Il vous a remarque,"* उसने अपने भाजे से कहा। "जो कुछ तुमने मुझे कहा था मने कीज़ेवेतर को सुनाया। सुन कर वह कहने लगा कि यह बडा अच्छा लक्षण है, तुम अवश्य ईसा की शरण म आओगे। तुम्ह ज़रूर चलना चाहिए। इसे कहो, मेरियेट, और खुद भी ज़रूर आना।"

"काउटेस, पहली बात तो यह कि प्रिस को किसी किस्म की नसीहत करने का मुझे कोई अधिकार नही है" मेरियेट बोली, और साथ ही इस नज़र से नेख्लूदोव की ओर देखा जिससे यह बात एक तरह से तय हो गई कि दोनो की काउटेस के शब्दो के प्रति तथा सामान्यतया इवजेलिकल मत के प्रति एक ही राय है, "दूसरे, आप तो जानती हैं कि इसमे मेरी कोई रुचि नही है"

"हा, हा, मैं जानती हू, तुम हर बात गलत ढग से करती हो, हमेशा तुम्हारे विचार अनोखे रहे हैं।'

"अनोखे? मेरे तो वही विचार हैं जो साधारण से साधारण किसान स्त्री के होगे," मेरियेट ने मुस्करा कर कहा। "और तीसरे यह कि कल रात मैं फ्रासीसी नाटक देखने जा रही हू।"

"ओह! क्या तुमने उसे देखा है–क्या नाम है उसका?" काउटेस येकातेरीना इवानोव्ना ने नेख्लूदोव से पूछा। मेरियेट ने एक विख्यात फ्रासीसी अभिनेत्री का नाम बताया।

"तुम्ह ज़रूर देखना चाहिए। हर हालत मे। वह कमाल का अभिनय करती है।"

"मैं किसके शब्द पहले सुनू ma tante, अभिनेत्री के या उपदेशक के?" नख्लूदोव ने मुस्कराते हुए पूछा।

"वाक्छल मत करो।"

---

*उसका ध्यान तुम पर पडा है। (फ्रेंच)

"मैं सोचता हूँ पहले उपदेशक का व्याख्यान सुनूँ और बाद में अभिनेत्री का अभिनय देखूँ नहीं तो व्याख्यान सुनने के लिए मन में इच्छा ही नहीं रहेगी।'

'नहीं पहले मासीसी नाटक देखो और बाद में प्रायश्चित्त करो।'

सुनो सुनो, मेरे साथ ठिठोली मत करो। उपदेशक अपनी जगह है और नाटक अपनी जगह। आत्मा की रक्षा के लिए जरूरी नहीं कि मनुष्य मुँह लटका कर रोता रहे। मन में विश्वास हो तो मनुष्य को जरूर खुशी मिलती है।"

'तुम तो ma tante उपदेशकों से भी अच्छा व्याख्यान देती हो।

"सुनो विकारों में पार्टी आई सी मरियट वाली "कल तुम मेरे ही बॉक्स में आ कर बैठना।

"मैं तो कल नहीं '

ऐन उसी वक्त चोबदार ने आ कर वार्तालाप में विघ्न डाल दिया। कोई आदमी मिलने आया है, उसने कहा। वह गर्ग जन कल्याण संस्था का सेक्रेटरी था। काउंटेस उस संस्था की प्रधान थी।

उफ! बड़ा उबाऊ है। मैं सोचती हूँ मैं बाहर ही उससे मिल लूँगी। मरियट नेख्लूदोव को चाय पिलाना। मैं अभी लौट कर आती हूँ।'

और डगमगाती हुई तेज तेज कदमों से वह बाहर निकल गई।

मेरियट ने दस्ताना उतारा। उसका हाथ खूब गठा हुआ किन्तु कुछ स्थूल था। चौथी अंगुली अंगूठियों से भरी थी।

"पियोगे?' उसने चाँदी की केतली उठाते हुए कहा जिसके नीचे स्पिरिट लैम्प जल रहा था। केतली उठाते हुए उसने अपनी छोटी अंगुली को अजीब अन्दाज से अलग सा रखा।

मरियट का चेहरा उदास और गंभीर सा था।

मुझे इस बात का बड़ा खेद है कि वही लोग जिनकी राय की मैं कद्र करती हूँ मेरी स्थिति को मेरा असली रूप समझते हैं।"

अन्तिम शब्द कहते कहते तो जैसे उसका रोना निकलने लगा था। ध्यान से इन शब्दों का विश्लेषण करो तो कोई मतलब न निकलता था, कम से कम कोई स्पष्ट मतलब नहीं निकलता था। लेकिन नेख्लूदोव पर मरियेट की चमकती आँखें ऐसा जादू कर रही थीं कि इस बनी ठनी युवा सुन्दरी के मुँह से निकले शब्द उसे बेहद सारपूर्ण, गहरे तथा उत्कृष्ट लगे।

नेख्लूदोव चुपचाप उसकी ओर देखे जा रहा था। उसकी आँखें उसके चेहरे पर से हटाये न हटती थी।

क्या तुम सोचते हो मैं तुम्हें या तुम्हारी मन स्थिति को नही समझती ? सभी जानते हैं तुमने क्या कुछ किया है। C'est le secret de polichinelle * और तुम्हारे काम को देख कर मेरा मन बडा प्रसन्न होता है, मैं उसका पूरा पूरा समर्थन करती हूं।'

"नही, इसमे प्रसन्नता की कोई बात नही। मैंने तो अभी तक कुछ खास किया ही नही।"

"कोई बात नही। मैं तुम्हारी भावनाओं को समझती हूं। और उस लडकी को भी समझती हूं। ठीक है, ठीक है। मैं इस बारे मे और बात नही करूंगी,' नेख्लूदोव के चेहरे पर नाराजगी की झलक देख कर उसने कहा। "पर मैं यह भी समझ सकती हूं कि तुमने जेल के नरक कुड को देखा है और उसमे अभागे लोगों को जलते देखा है।" मेरियेट ने अपनी स्त्री-सुलभ अत प्रेरणा से बूझ लिया कि नेख्लूदोव के लिए कौन सी चीज प्रिय और महत्वपूर्ण है, और उसी की चर्चा करते हुए उसके मन मे सिर्फ एक इच्छा थी–उसे अपनी ओर आकर्षित करना। "जो लोग बडी यातनाएं भोग रहे हैं तुम उनकी मदद करना चाहते हो। यह स्वाभाविक ही है। वे बेचारे और लोगों के अत्याचार और उपेक्षा के शिकार बनते हैं। तुम उनके लिए अपनी जिन्दगी तक कुर्बान करना चाहते हो। मैं इस भावना को समझती हूं। इतने महान उद्देश्य के लिए, यदि मेरा बस चले तो मैं भी अपना जीवन दे दू, पर हर आदमी का अपना अपना भाग्य होता है।"

'क्या तुम अपने भाग्य से सन्तुष्ट नही हो?"

"मैं?" मेरियेट ने कहा, मानो इस अप्रत्याशित सवाल पर वह हैरान हो उठी हो। "मुझे सतोष करना पडता है, और मैं सतुष्ट हूं। पर कभी कभी, अन्दर ही अन्दर कोई जीव है जो जाग उठता है "

"उस जीव को जगाये रखना चाहिए, उसे फिर सोने नही देना चाहिए, उसकी आज्ञा का पालन करना चाहिए,' नेख्लूदोव ने जाल मे फसते हुए कहा।

---

*यह तो अब कोई रहस्य नही रहा। (फ्रेंच)

बाद म कई बार इस वार्तालाप का याद कर के नेम्लूदोव ने लज्जा का अनुभव किया। उसे मेरियेट क शब्द याद आते। वह न केवल झूठ ही बोल रही थी, उससे भी अधिक, वह नेम्लूदोव की नकल उतार रही थी। उस मेरियट का चेहरा याद आता। जेलो की भयानक स्थिति की चर्चा करते समय, या यह बताते समय कि देहात म उसने क्या कुछ देखा, नेम्लूदोव को लगता जैसे मेरियेट के चेहरे म महानुभूति और उत्सुकता टपक रही है।

जब काउटेस लौट कर आई तो दोनो आपस म ऐसे घुलमिल कर बात कर रहे थे मानो वे पुराने मित्र ही नही, एक दूसरे के अनन्य मित्र हो, मानो आस-पास के लोग उन्ह समझने म असमर्थ थे और उनके दिन पूर्णतया एक दूसरे को समझ पाते हैं।

शासको का अन्याय, अभागे लोगो का उत्पीडन, जनता की गरीबी— उनकी जबान पर तो इनकी चर्चा थी, लेकिन वार्तालाप के बीचोबीच उनकी आखे एक दूसरी से कुछ और ही पूछ रही थी—"क्या मुझे तुम्हारा प्यार मिल सकता है?' और जवाब मिलता, "हा, जरूर।" काम वासना, तरह तरह के अनोखे और आकर्षक रूप ले ले कर उन्ह एक दूसरे की ओर खीच रही थी।

विदा लेते वक्त मेरियेट कहने लगी कि मैं हर तरह से तुम्हारी सेवा करने के लिए तैयार हू। फिर कहने लगी कि कल जरूर मुझे थियेटर मे आ कर मिलना। भले ही क्षण भर के लिए आओ, मगर आना जरूर, मुझे तुमसे एक बहुत जरूरी बात कहनी ह।

"कौन जाने, फिर कब मुलाकात हो," मेरियेट न ठण्डी सास ले कर कहा, और अगूठियो से चमकते अपने हाथ पर दस्ताना चढाने लगी। "वचन दो कि तुम आओगे।"

नेख्लूदोव ने वचन दे दिया।

उस रात जब नेम्लूदोव अपने कमरे मे अकेला रह गया तो उसने बत्ती बुझाई और सोने की चेष्टा करने लगा। मगर उसे नीद नही आयी। मास्लोवा, सेनेट का निर्णय, मास्लोवा के साथ साइबेरिया जाने का निश्चय, जमीन जायदाद का त्याग—ये बाते उसके मन म चक्कर काट रही थी लेकिन अचानक, इस सबके उत्तर म मेरियेट का चेहरा, उसकी ठडी सास और उसकी नजर, जब उसने कहा था—"कौन जाने, फिर कब मुलाकात

हो" और उसकी मुस्कान—सब कुछ इतनी स्पष्टता से उसकी आंखों के सामने घूम गया, मानो वह उसे प्रत्यक्षतः देख रहा हो और मुस्करा दिया। "क्या मैं साइबेरिया जा कर भूल तो नहीं कर रहा? क्या ज़मीन-जायदाद त्यागना गलती तो नहीं होगी?" उसने अपने आपसे पूछा।

पीटर्सबर्ग की उस रजत रात में, जिसका प्रकाश बारीक पर्दों में से छन छन कर आ रहा था, इन सवालों के बड़े अस्पष्ट से जवाब उसे मिले। उसे सारी स्थिति उलझी हुई सी लग रही थी। उसे याद आया कि पहले उसके मन की कैसी स्थिति थी, क्रमानुसार एक एक विचार याद आया जो उसके मन में उठा करते थे पर इन विचारों में अब पहले सी शक्ति न थी, न ही वे न्यायसंगत जान पड़ते थे।

"फ़र्ज़ करो कि यह सब मेरी कल्पना हो, और मैं उसे कार्यरूप न दे पाऊं? या ठीक काम भी करूं और बाद में मुझे पछतावा हो?" नेख्लूदोव को इन प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं सूझ रहा था। उसका मन दुखी और निराश हो उठा। कभी पहले वह इतना बेचैन नहीं हुआ था। वह इन बातों के बारे में सोच ही रहा था जब उसे बोझिल नींद ने आ घेरा जैसी पहले दिनों में कभी जुए में बहुत बड़ी रकम हार जाने पर आया करती थी।

२५

दूसरे दिन जब नेख्लूदोव उठा तो उसे ऐसा लगा जैसे पिछले दिन उसने कोई बड़ी गंदी बात कर दी हो।

वह सोचने लगा। उसे याद नहीं आया कि उसने कोई गंदी बात की हो। उसने कोई बुरा काम नहीं किया था। परन्तु उसके मन में बुरे विचार आये थे। उसने सोचा था कि कात्यूशा से शादी करना, और ज़मीन जायदाद का त्याग करना—जितने भी निश्चय उसने इस समय किये थे, सभी स्वप्न मात्र हैं, जिन्हें व्यावहारिक रूप नहीं दिया जा सकता। उस प्रकार का जीवन उससे सहन नहीं हो सकेगा। यह बनावटी है, अस्वाभाविक है, इसलिए यही उचित है कि वह उसी तरह रहता जाय जिस तरह आज तक रहता आया है।

उसने कोई बुरा काम तो नहीं किया था, पर जो बात उसने की वह बुरे काम से भी बुरी थी। उसने मन में बुरे विचारों को प्रोत्साहन दिया

था, और उन्ही से सभी बुरे कम जन्म लेते हैं। सभव है कि एक बार किया गया बुरा काम दोबारा न किया जाय, उसका पछतावा भी हो। परन्तु सभी बुरे कम बुरे विचारो से ही पैदा होते हैं।

एक बुरा काम और बुरे कामो के लिए रास्ता साफ करता है। बुरे विचार मनुष्य को उस रास्ते पर चलने के लिए विवश कर देते हैं।

जो विचार पिछले रोज नेख्लूदोव के मन म उठे थे, उन्हे याद कर के, उसे इस बात की हैरानी हुई कि वह उन पर यकीन कैसे कर पाया। जो काम करने का उसने निश्चय किया है, वह कितना ही अनोखा और दुष्कर क्या न हो, परन्तु फिर भी वही उसके जीवन का अब एकमात्र रास्ता होगा। फिर से पहला सा जीवन बिताना भले ही बडा आसान और स्वाभाविक हो, पर वह रास्ता मौत का रास्ता है। कई बार गहरी नीद सो चुकने के बाद हम थोडी देर और बिस्तर मे पडे रहना चाहते हैं। हम जानते हैं कि हम नीद पूरी कर चुके हैं, और अब उठ कर अपने काम म जुट जाना चाहिए, पर फिर भी आराम से लेटने का लोभ सवरण नही कर सकते। कुछ ऐसी ही भावना पिछले दिन के प्रलोभन ने नेख्लूदोव के मन म पैदा की थी।

पीटसबर्ग मे आज नेख्लूदोव का आखिरी दिन था। सुबह के वक्त वह वासील्यव्स्की द्वीप की ओर शूस्तोवा को मिलने चल पडा।

शूस्तोवा पहली मजिल पर रहती थी। चौकीदार ने नेख्लूदोव को घर के पीछे की सीढिया दिखा दी, और उन्हे चढकर वह सीधा रसोईघर म जा पहुचा। रसोईघर के अन्दर बडी गर्मी थी और खाने-पीने की चीजो की तेज गध आ रही थी। एक बडी उम्र की औरत अगीठी के पास खडी बर्तन म कुछ बना रही थी। बर्तन मे से उफन उफन कर भाप निकल रही थी। औरत ने आखो पर चश्मा लगा रखा था, और एप्रन लगाये थी, और आस्तीनें चढा रखी थी।

"किसे मिलना चाहते हैं?" चश्मे के ऊपर से झाकते हुए उसने रुखाई से पूछा।

नेख्लूदोव अभी ठीक तरह से अपना नाम भी नही बतला पाया था जब औरत के चेहरे पर सहसा भय और उल्लास का भाव छा गया।

'ओह प्रिंस!" एप्रन पर हाथ पोछते हुए उसने चिल्लाकर कहा। "पर आप पीछे के रास्ते से क्यो आये? आप तो हमारे रक्षक हो। शूस्तोवा

मरी वेटी है। अधमरी पर ने उन्हान मेरी वेटी का छोडा है। आपन हम हाथ द कर वचा लिया है," नम्लदोव का हाथ पकड कर उम चूमन की चेष्टा करते हुए उसन कहा। "मैं कल आपमे मिलन गई थी। मरी वहिन ने मुझे भेजा था। वह भी यही पर है। उधर चलिय, उधर स," शूस्तोवा की मा न कहा और आगे आगे चलती हुई नम्लूदोव का अपन साथ ले जान लगी। एक तग से दरवाजे म से निकल कर वे एक अधर वरामद मे पहुचे। शूस्तावा की मा कभी अपन वाला को ठीक करती कभी स्कट को जिमका किनारा उसने मोड रखा था। "मेरी वहिन का नाम कर्नीलोवा है। आपन जरूर उमका नाम सुना होगा," एक वन्द दरवाज के वाहर रुक कर उसने नेख्लदोव से फुमफुमा कर कहा। "किसी राज नीतिक मामले म वह फस गई थी। वडी चतुर है!"

शूस्तोवा की मा ने दरवाजा खाला। एक छाटे से कमर मे, मज के सामने सोफे पर एक गोल मटोल और ठिगनी सी लडकी बैठी थी। सिर पर सुनहरी रग के घुघराले वाल थे जो उसके पीले, गोल चेहरे के आस पाम फैले हुए थे। उसका चेहरा अपनी मा से वहुत मिलता था। वह सूती कपडे का धारीदार ब्लाउज पहन थी। उमके ऐन सामन एक आराम कुर्सी पर एक युवक दोहरा हो कर आगे की ओर झुका बैठा था। हल्की सी काले रग की दाढी और मूछ थी और वह रूमी ढग की कामदार कमीज पहने था। वे दोना बाते करने मे इतने मशगूल थे कि उन्हे नेख्लूदाव के आने का उस वक्त पता चला जव वह कमरे मे प्रवेश कर चुका था।

"लीदिया, प्रिंस नेख्लूदाव! इन्होने ही ' मा ने कहा।

लडकी उछल कर खडी हो गई और घवरा कर वाला की लट कान के पीछे दबाने लगी। उसकी वडी वडी भूरे रग की आखे नवागन्तुक के चेहरे पर टिकी थी और उनमे भय छाया था।

"तो तुम वह खतरनाक औरत हो जिसके लिए वेरा ने मुझे सिफारिश करने के लिए कहा था?" नख्लूदोव ने मुस्कराते हुए कहा।

"हा, मैं ही हू," लीदिया शूस्तोवा ने कहा और उसके मुह पर बच्चो की सी सरल मुस्कान खिल उठी जिससे उसके खूबसूरत दाता की लडी नजर आने लगी। "मेरी मौसी आपसे मिलने के लिए बडी बेताब थी। मौसी!" उसने एक दरवाजे मे से पुकारा। उसकी आवाज बडी मृदुल और मधुर थी।

"तुम्हारे जेल जाने पर वेरा को बहुत क्लेश हुआ," नेख्लूदोव ने कहा।

"यहा बैठिये। नही, बेहतर होगा इस कुर्सी पर बैठ जाइये," एक टूटी फूटी आराम-कुर्सी की ओर इशारा करते हुए लीदिया ने कहा, जिस पर से युवक अभी अभी उठा था। "यह मेरा चचेरा भाई, जखारोव है" लीदिया ने कहा, जब उसने देखा कि नेख्लूदोव युवक की ओर देखे जा रहा है।

युवक ने नेख्लूदोव का अभिवादन किया। उसके चेहरे पर भी वैसी ही सदभावनापूर्ण मुस्कान थी जैसी कि लीदिया के चेहरे पर। जब नेख्लूदोव बैठ गया वह अपने लिए एक कुर्सी उठा लाया और नेख्लूदोव के पास आ कर बैठ गया। लगभग सोलह बरस का सुनहरी बालो वाला एक स्कूली लडका भी अन्दर आ गया और चुपचाप खिडकी के दासे पर बैठ गया।

"वेरा बोगोदूखोव्स्काया मेरी मौसी की बडी गहरी मित्र है। मैं तो उसे बहुत कम जानती हू," शूस्तोवा ने कहा।

इसके बाद साथ वाले कमरे में से एक स्त्री ने प्रवेश किया। उसका चेहरा खिला हुआ और बडा प्यारा सा था। वह सफेद रग का ब्लाउज पहने थी और कमर में पेटी लगाये थी।

"नमस्कार! आपने बडी कृपा की," सोफे पर लीदिया के साथ बैठते ही उसने कहना शुरू किया। "वेरा कैसी है? आप उससे मिले हैं? अपनी हालत से परेशान तो नही?"

"वह शिकायत नही करती," नेख्लूदोव ने कहा, "कहती थी डटी हुई हू।"

"वेरा यही कहेगी। मैं उसे जानती हू" मुस्करा कर सिर हिलाते हुए मौसी ने कहा। "बहुत ऊचे चरित्र की लडकी है। उसे नजदीक से देखने पर ही उसे आदमी पहचान सकता है। औरो के लिए जान भी वार देगी, अपने लिए कुछ नही करेगी।"

"हा उसने अपने लिए कुछ भी करने को नही कहा। उसे केवल आपकी भाजी की चिन्ता थी। कहती थी निर्दोष लडकी को जेल में ठूस दिया गया है। इसी बात का उसे सबसे अधिक क्लेश होता था।"

"हा, ठीक बात है। जो कुछ हुआ बहुत भयानक हुआ है। वास्तव में इसे मेरे कारण इतनी यातना सहनी पडी।"

"नही मौसी, यह बात नही। अगर तुम न भी होती तो भी मैं वह कागजात पहुचाने जाती।"

"मैं तुमसे ज्यादा जानती हू, बेटी," मौसी कहने लगी। "सारी बात हुई ही इस कारण कि एक आदमी ने मुझे कुछ देर के लिए अपने कागज रखने के लिए दिये। मेरा उस समय कोई घर-घाट नही था। मैं वे कागज उठा कर इसके पास ले आयी। उसी रात पुलिस ने इसके कमरे की तलाशी ली, कागजात भी उठा कर ले गई और इसे भी हिरासत मे ले लिया। और आज तक इसे बन्द रखा। उनसे बार बार यही पूछते थे कि बताओ किस आदमी ने तुम्हे ये कागज दिये हैं।"

"मगर मैंने नही बताया," लीदिया झट से बोल उठी। घबराहट मे उसने एक और लट खीच ली जो पहले अच्छी भली अपनी जगह पर थी।

"मैंने कब कहा है कि तुमने बता दिया?" मौसी ने कहा।

"अगर उन्होने मीतिन को पकडा है तो मेरे द्वारा नही," लीदिया ने कहा। शर्म से उसका चेहरा लाल हो गया और वह विचलित हो कर इधर-उधर देखने लगी।

"इसकी चर्चा ही नही करो, लीदिया" मां ने कहा।

"क्या नही करू? मैं बता देना चाहती हू," लीदिया बोली। अब उसके चेहरे पर से मुस्कान गायब हो गई थी। उसका चेहरा अधिकाधिक लाल होता जा रहा था। अब की, बालो की लट सभालने के बजाय वह उसे अपनी अगुली के इर्दगिर्द लपेटे जा रही थी।

"याद है न, कल इसकी बात करने पर क्या हुआ था?"

"नही नही, मुझे कुछ मत कहो, मा। मैंने नही बताया। मैं केवल चुप बनी रही। जब उसने मीतिन और मौसी के बारे मे पूछताछ की तो मैं कुछ नही बोली, बल्कि मैंने कह दिया कि मैं जवाब नही दूगी। उसके बाद यह पेत्रोव "

"पेत्रोव जासूस है, राजनीतिक पुलिस का आदमी है और बेहद नीच है," मौसी ने बीच मे कहा ताकि नेख्लूदोव लीदिया की बात को स्पष्टतया समझ सके।

"फिर उसने मुझ पर डोरे डालने शुरू किये," लीदिया ने घबरा कर जल्दी जल्दी कहना शुरू किया। "वह मुझसे कहने लगा, 'जो कुछ

भी तुम मुझे बताओगी उससे किसी को नुक्सान नही पहुच सकता। इसके विपरीत यदि तुम हमे बता दोगी तो हम बहुत से निर्दोष लोगो को रिहा कर सकेंगे जिन्हे व्यर्थ मे हम परेशान कर रहे हैं।' इस पर भी मैंने कह दिया कि मैं नही बताऊगी। फिर वह बोला—'अच्छा कुछ भी मत बताओ, पर मैं अगर किसी का नाम लू तो तुम उसका निषेध नही करना।' और उसने मीतिन का नाम लिया।"

"इस बारे मे कुछ मत कहो," मौसी ने कहा।

"बीच मे नही बोलो, मौसी " और वह इधर-उधर देखती हुई अपन बालो की लट खीचती रही। "और उसके बाद दूसरे ही दिन, आप ख्याल कीजिये, उन्होंने मेरी कोठरी की दीवार खटखटा कर बताया कि मीतिन को पकड लिया गया है। मैं सोचती हू मैंने मीतिन के साथ विश्वासघात किया है। इस कारण मैं इतनी व्याकुल रहती, इतनी व्याकुल कि मैं पागल हो चली थी।"

"बाद मे पता चला कि तुम्हारे कारण उसे नही पकडा गया था," मौसी ने कहा।

'हा, पर मुझे तो मालूम नही था। मैं तो यही सोचती थी 'लो मैंने उसे धोखा दे दिया है।' मैं अपनी कोठरी मे चक्कर काटती रहती और बरबस यही सोचती, 'मैंने उसके साथ दगा की है।' मैं तख्ते पर लेट जाती, ऊपर से कम्बल ओढ लेती, फिर भी कोई आवाज़ मेरे कान म फुसफुसाती—'विश्वासघात! तुमने मीतिन के साथ विश्वासघात किया है! मीतिन के साथ विश्वासघात किया है!' मैं जानती थी कि यह मतिभ्रम है, पर फिर भी मेरे कानो म ये शब्द गजते रहते थे। मैं सोना चाहती थी लेकिन सो नही पाती। मैं इसके बारे मे कुछ भी सोचना नही चाहती थी, लेकिन फिर भी यही बात मेरे दिमाग म चक्कर लगाती रहती। कितनी भयानक बात है!" बाते करते करते लीदिया अधिकाधिक उत्तेजित होती जा रही थी अगुली पर कभी बालो की लट चढाती कभी उतार देती, और बार बार इधर उधर देखती।

"बस लीदिया, अपना मन शान्त करो," उसके कधे पर हाथ रखते हुए लीदिया की मा न कहा।

लेकिन शूस्तोवा के लिए रुकना असभव हो रहा था।

"इससे भी भयानक बात यह थी " वह कहने लगी, लकिन आगे

नही वह पायी, और सिसकी भरती हुई उठी और भागती हुई कमरे मे से बाहर चली गई। उसकी मा उसके पीछे पीछे बाहर जाने लगी।

"इन पाजियो को फासी लगा देना चाहिए," खिडकी के दासे पर बैठे स्कूली लडके ने कहा।

"क्या कहा?" मा ने पूछा।

"मैंने केवल यही कहा है कि नही, नही, कुछ नही," लडके ने जवाब दिया, और मेज पर से एक सिगरेट उठा कर पीने लगा।

२६

"छोटी उम्र वालो के लिए कैद-तनहाई जैसी भयानक चीज और कोई नही। यह ठीक बात है," मौसी ने सिर हिलाते हुए कहा। वह भी एक सिगरेट उठा कर सुलगाने लगी।

"जवानो के लिए ही क्या, मैं तो कहूगा सभी के लिए भयानक है," नेख्लूदोव ने जवाब दिया।

"नही, सबके लिए नही," मौसी बोली। "मैंने सुना है कि सच्चे क्रातिकारी तो कैद-तनहाई मे बडे सुख चैन से रहते है। जिस आदमी के पीछे पुलिस पडी हो, उसे तो हर वक्त चिंता रहती है, अपनी चिन्ता, अपने सगे-सम्बधियो की चिंता, यह चिन्ता कि वह अपना फर्ज पूरा नही कर रहा है। उधर पैसे की तगी उसे परेशान किये रहती है। आखिर जब वह पकडा जाता है तो एक तरह से उसका छुटकारा हो जाता है, सारी जिम्मेवारी उस पर से हट जाती है वह चैन से कुछ देर आराम कर सकता है। मैंने तो यहा तक सुना है कि पकडे जाने पर वे सचमुच खुश होते हैं। लेकिन युवा लोग जो निर्दोष हो जैसे लीडिया—उनके लिए तो पकडे जाने का सदमा ही बहुत भयानक होता है। इसलिए नही कि जेल मे आजादी नही होती, या खुराक बुरी मिलती है या हवा गन्दी होती है यह कोई बडी बात नही। असल बात तो यह है कि पहली बार पकडे जाने पर उनकी आत्मा को धक्का लगता है। अगर यह नैतिक सदमा न हो तो भले ही इससे तिगुना यातनाए उन्हे सहनी पडे, वे हसते हसते बर्दाश्त कर लेगे।'

"तो क्या आपको इसका अनुभव हो चुका है?"

"मुझे? मैं दो बार जेल जा चुकी हू" मौसी ने कहा। उसके होठो पर एक मधुर, उदास सी मुस्कान आ गयी। "जब पहली बार मैं गिरफ्तार हुई तो मैंने कोई अपराध नही किया था। उस वक्त मेरी उम्र २२ बरस की रही होगी, सर एक बच्चा था और दूसरा होने वाला था। इसमे शक नही कि अपनी आजादी छिन जाने से, और अपने पति और बच्चे से बिछुड जाने का मुझे बेहद शोक हुआ। पर जो शोक मुझे यह जान कर हुआ कि अब मैं इसान नही रही बल्कि एक चीज़ बना दी गई हूं, वह असह्य था। मैं अपनी नन्ही बच्ची को आखिरी बार चूमना चाहती थी। मुझे कहा गया कि जाओ और जा कर गाडी मे बैठ जाओ। मैंने पूछा कि मुझे कहा ले जाया जा रहा है? जवाब मिला कि जब वहा पहुचोगी तो अपने आप पता चल जायेगा। मैंने पूछा कि मेरा अपराध क्या है। कोई जवाब नही मिला। फिर मेरी पूछताछ हुई, मेरे कपडे उतार कर उन्होने मुझे कैदियो के कपडे पहना दिये जिन पर नम्बर लगे होते है। इसके बाद वे मुझे एक महराबदार तहखाने की ओर ले गये, और एक दरवाजा खोल कर मुझे अन्दर धकेल दिया, फिर दरवाज़े पर ताला चढा कर वहा से चले गये। मैं अकेली रह गई। दरवाज़े के बाहर एक सन्तरी, बन्दूक उठाये, पहरा दे रहा था। किसी किसी वक्त वह रुक कर दरार मे से अन्दर झाक कर देखता। मैं बेहद दुखी हो उठी। एक बात मुझे बहुत अजीब लगी। राजनीतिक पुलिस के जिस अफसर ने मेरी जाच की थी, उसी ने मुझे एक सिगरेट भी पीने के लिए दिया था। इसका मतलब है कि उसे मालूम था कि लोगो को सिगरेट पीने की चाह होती है। अगर यह मालम था तो यह भी मालूम होगा कि उन्हे आज़ादी और दिन के उजाले की भी चाह होती है, माताओ को अपने बच्चो की और बच्चो को अपनी माताओ की चाह होती है। तो फिर क्या कारण है उन लोगो ने इतनी बेरहमी के साथ मुझे उन सब चीज़ो से वचित कर के जो मुझे प्रिय थी, एक जगली जानवर की तरह जेल की कोठरी मे बन्द कर दिया? लाजिमी था कि इस प्रकार के अनुभव का बुरा असर मुझ पर पडता। जिस किसी का भी भगवान् तथा इनसान मे विश्वास हो और वह मानता हो कि मनुष्यो का एक दूसरे से प्रेम होता है, ऐसे अनुभव के बाद उसका विश्वास टूट जायेगा। उस दिन के बाद मेरा मानवीयता पर से ही विश्वास

उठ गया है और मन म घट्टुता आ गई है," उसने अ त म मुस्करा कर कहा।

लीदिया की मा उसी दरवाज़े म म लौट कर आई जिसमे स लीदिया भाग कर गयी थी, और आ कर कहन लगी कि लीदिया वेहद परेशान है और लाट कर यहा नही आ पायगी।

"इस तरुण जीवन का क्या नष्ट किया गया है?" मौसी न कहा। "मुझे सबसे बढ कर इस बात का दुख है कि अनजाने म मैं ही इसका कारण बनी।"

"इसे गाव भेज देगे। भगवान की दया स वहा चगी हो जायेगी," लीदिया की मा ने कहा। "वहा इसका बाप है।"

"अगर आपने मदद न की होती तो यह तो मर मिट जाती," मौसी ने कहा। "हम पर आपने बहुत बडा एहसान किया है। पर जिस काम के लिए मैने आपको तक्लीफ दी है, वह कुछ और है। में एक चिट्ठी वेरा के नाम भेजना चाहती हू, क्या आप यह चिट्ठी उस तक पहुचा सकेगे?" यह कहते हुए उसने जेब मे स एक लिफाफा निकाला। "मैंने लिफाफे को ब द नही किया है। आप इसे पढ ले, और मन आये तो उसके हाथ मे दे दें और जो मन न आये तो इसे फाड डाले जसा भी आप ठीक समझे," उसने कहा, "इसमे काई भी ऐसी वात नही है जिससे किसी को खतरा पहुच सके।"

नेख्लदोव ने चिट्ठी ल ली और आश्वासन दिया कि वह उस वेरा को दे देगा। इसके बाद वह विदा लेकर वहा से चला गया।

रास्ते मे उसने चिट्ठी को बिना पढे वन्द कर दिया, और निश्चय किया कि उसे जरूर पहुचा देगा।

२७

पीटसवग म नेख्लूदोव के सब काम समाप्त हो चुके थे, केवल एक ही काम करना बाकी रह गया था, वह था सम्प्रदाइया की दरख्वास्त ज़ार तक पहुचाना। यह काम वह अपने भूतपूर्व साथी अफ्सर, एड डि-कप बोगातिर्योव के द्वारा करवाना चाहता था। सुबह हाने ही वह बोगातिर्योव

के घर जा पहुचा। बोगातिर्योव बाहर जाने के लिए तैयार था और उस समय नाश्ता कर रहा था। यह व्यक्ति ऊचा लम्बा तो नही था लेकिन इसका शरीर खूब गठा हुआ और बेहद मज़बूत था (यह घोडे की नाल को हाथो से मोड सकता था)। स्वभाव का दयालु ईमानदार, निष्कपट और उदार पुरुष था। इन गुणो के बावजूद राज-दरबार से उसका घनिष्ठ सम्बध था और ज़ार तथा ज़ार के परिवार से बडा प्रेम था। इतनी ऊची सोसाइटी मे रहते हुए भी उसने ऐसा दृष्टिकोण अपना रखा था जिससे उसे इस सोसाइटी की अच्छाइया ही अच्छाइया नज़र आती थी। इसकी बुराइयो और भ्रष्टाचार से दूर रहता था। यह अपने म एक विचित्र स्थिति थी। वह कभी भी किसी व्यक्ति अथवा किसी भी कारवाई की निन्दा नही करता था। या तो चुप रहता, या फिर बडी ऊची, गूजती आवाज़ मे जो भी इसे कहना होता वह डालता। हसता भी तो इसी अन्दाज से, खब ठहाका मार कर। इसका यह व्यवहार कटनीतिज्ञ होने के कारण नही था बल्कि उसका स्वभाव ही ऐसा था।

"बहुत अच्छा किया जो चले आये। नाश्ता करोगे? आओ बैठो, बीफस्टेक बहुत अच्छे बने हैं। नाश्ता करते वक्त मैं सबसे पहले जरूर कोई ठोस चीज़ खाता हू। और आखिर मे भी। हा हा हा! और नही तो थोडी शराब पी लो," क्लैरेट शराब की सुराही की ओर इशारा करते हुए उसने ऊची आवाज मे कहा। "मैं तुम्हारे बारे म सोचता रहा हू। मैं दरख्वास्त दे दूगा, मैं खुद ज़ार के हाथ मे दगा, विश्वास रखो। हा, पर मुझे यह ख्याल आया कि अगर तुम पहले तोपोरोव से मिल लो तो बहुत अच्छा होगा।"

तोपोरोव का नाम सुनते ही नेख्लूदोव की भवें चढ गयी।

"सारी बात उसी पर निभर करती है। ज़ार उससे परामश जरूर करेंगे। और क्या मालूम वह अपने आप ही तुम्हारा काम कर दे।"

"अगर तुम्हारी यही सलाह है तो मैं उससे जा कर मिल लेता हू।"

"मै तो यही ठीक समझता हू। अच्छा अब बताओ पीटसबग तुम्हे कैसा लगा?' बोगातिर्योव ने अपनी अखड, ऊची आवाज़ म पूछा, 'बताओ, बताओ।"

"लगता है मैं तो होश म नही हू," नेख्लूदोव ने जवाब दिया।

"होश म नही हो!" बोगातिर्योव ने दोहरा कर कहा और ठहाका

मार कर हस पडा। "तुम कुछ भी नही खाओगे क्या? जैसी तुम्हारी मर्जी," और उसने नैप्किन से अपनी मूछे पोछी। "तुम तोपारोव से मिलोग न? अगर वह तुम्हारा काम नही करे तो दरख्वास्त मुझे दे जाना, और मैं कल ही जार के हाथ मे दे दूगा," खूब ऊची आवाज़ म उसने कहा और उठ खडा हुआ। फिर उसने छाती पर क्रास का चिन्ह बनाया—उसी लापरवाही से जिस लापरवाही से उसने अपना मुह पाछा था—और कमर म तलवार बाधने लगा। "तो खुदा-हाफ़िज़, मुझे जाना है।"

"मुझे भी जाना है," नख्लूदोव ने कहा और उसके साथ साथ चलता हुआ घर के बाहर निकल आया, और दरवाज़े पर उससे हाथ मिला कर अलग हो गया। बोगातिर्योव के चौडे, मजबूत हाथ से हाथ मिलाकर नेख्लूदोव को खुशी हुई, मानो किसी ताजा और स्वस्थ चीज़ के साथ उसका सम्पर्क हुआ हो।

तापोरोव से मिलने का कुछ लाभ होगा, नेख्लदोव को ऐसी कोई उमीद न थी। पर बागातिर्योव के परामश का अनुकरण करते हुए वह तोपारोव के घर की ओर चल दिया। सम्प्रदाइया का भाग्य इसी आदमी पर निभर था।

तोपोराव के पद पर केवल वही आदमी बठ सकता था जो मन्दबुद्धि और नीच प्रकृति का हो क्योकि उस पद के उद्देश्य म ही विरोधाभास पाया जाता था। ये दोना नकारात्मक गुण तोपोरोव मे विद्यमान थे। विरोधाभास यह था चच की अपनी घोपणा के अनुसार चच की स्थापना स्वय भगवान् ने की है। अत इसे न इसान की शक्ति और न शतान की ताकत अपनी जगह से हिला सकती है। इसी चच को कायम रखना और उसकी रक्षा करना तोपाराव का काम था और इस फज को निभाने के लिए वह कोई भी साधन इस्तेमाल कर सकता था, हिसा तक का प्रयाग कर सकता था। भगवान द्वारा स्थापित इस दवी तथा अविकल सस्था का कायम रखना तथा उसकी रक्षा करना एक मानवी सस्था के हाथ मे था जिसे पावन सिनाड कहत हैं। और इस सस्था का सचालन तोपाराव तथा उसके कमचारी करत थे। यही विरोधाभास था और यह तोपाराव को नज़र नही आता था न ही वह इसे देखना चाहता था। अत उसे सदा इस बात की चिन्ता रहती कि कोई रामन कैथालिक पादरी, कोई गिरजे का अध्यक्ष-पादरी या कोई सम्प्रदायवादी इस चच का नाश

न कर दे जिसका नारकीय शक्तियाँ भी कुछ बिगाड नही सकती थी। धर्म का सार इस भावना मे निहित है कि सब मनुष्य एक समान हैं और एक दूसरे के भाई-भाई हैं। परन्तु तापोरोव को यह भावना छू तक न गई थी। अपने ही जैसे और लोगो की तरह उसे पूर्ण विश्वास था कि उसमे और साधारण लोगो मे आकाश-पाताल का अन्तर है। जिन चीजो की उन्हें जरूरत है, उनकी उसे कोई जरूरत नही। पर सच तो यह है कि उसे किसी चीज मे भी विश्वास नही था और इस स्थिति म वह बडे चैन और सुख से रह रहा था। पर उसे डर था कि कही और लोग भी उस जैसी स्थिति मे न पहुच जाय। इसलिए उनकी आत्मा की रक्षा करना वह अपना परम धर्म समझता था।

पाक-कला की किसी पुस्तक मे लिखा है कि केकडो को यदि जिन्दा उबाल कर पकाया जाय तो उन्हे बडा अच्छा लगता है। ऐसी ही तोपोरोव का भी मत था। उसका भी यही कहना था कि जनता को अन्धविश्वास के गर्त म रहना अच्छा लगता है। भेद केवल यह था कि पाक-कला की पुस्तक मे यह लाक्षणिक अर्थ मे लिखा था और तोपोरोव इसे वास्तविक सत्य समझता था।

जिस धर्म की रक्षा तोपोरोव कर रहा था, उसके प्रति उसका रवैया वैसा ही था, जैसा एक मुर्गी पालक को मुर्गियो को खिलाये जाने वाले मुर्दा पशुओ के मास के प्रति होता है मुर्दा पशुओ के मास से उसे घिन होती है, लेकिन मुर्गियाँ उसे शौक से खाती ह, इसलिए उसे वह मास उन्ह खिलाना चाहिए।

नि सन्देह माता मरियम की इबेरियाई, कजान तथा स्मालेन्स्क की प्रतिमाओ की आराधना करना मूर्तिपूजा है, और कुछ नही, लेकिन लोगो को मूर्तिपूजा अच्छी लगती है, उनका इसमे विश्वास है, इसलिए लाजिमी है कि इस अन्धविश्वास को कायम रखा जाय। तोपोरोव का यही तर्क था। वह यह नही सोचता था कि लोगो को यदि अन्धविश्वास मे रहना पसन्द है तो उसका एक कारण है। ससार म हमेशा से ऐसे जालिम आदमी रहते चले आये ह, और अब भी हैं—और तोपोरोव उन्ही मे से एक था—जो स्वय रोशन दिमाग होते हुए भी और लोगो को अज्ञान के गर्त म से नही निकालते। बल्कि इसके विपरीत उन्ह इस गर्त मे और भी गहरा धकेलते हैं।

जिस समय नेख्लूदोव ने प्रतीक्षा कक्ष मे कदम रखा उस समय तापोरोव अपने दफ्तर मे बैठा मठ की प्रधान महन्तिन से बातें कर रहा था। यह महिला किसी कुलीन घराने की स्त्री थी और स्वभाव की बडी सजीव। पश्चिमी रूस मे ऑर्थोडॉक्स धर्म का प्रचार कर रही थी। इस क्षेत्र के लोगो को जबरन् ऑर्थोडॉक्स धर्म का अनुयायी बनाया जा रहा था।

प्रतीक्षा-कक्ष म एक कर्मचारी बैठा था। उसने नेख्लूदोव से पूछा कि वह किस काम से मिलने आया है। जब उसे पता चला कि नेख्लूदोव के पास ज़ार के नाम एक दरख्वास्त है तो उसने पूछा कि क्या वह इस दरख्वास्त को पढने के लिए दे सकता है। नेख्लूदोव ने दरख्वास्त उसके हाथ मे दे दी, और कर्मचारी उसे अन्दर ले गया। प्रधान महन्तिन सिर पर कनटोप और बदन पर महन्तिनो का लम्बा जामा पहन जो उसके पीछे पीछे फर्श पर घिसटता जा रहा था, और गोरे गोरे हाथो मे (जिन के नाखनो को खूब बनाया सवारा गया था) पुखराज के मनको की माला पकडे दफ्तर मे से निकली, और चलती हुई सीधी घर से बाहर चली गई। नेख्लूदोव को उसी समय अन्दर नही बुलाया गया। दफ्तर के अन्दर बैठा तोपोरोव दरख्वास्त पढ रहा था और बार बार सिर हिला रहा था। दरख्वास्त बडे स्पष्ट और प्रभावशाली शब्दो म लिखी थी। इससे उसे हैरानी भी हुई, और कुछ कुछ अप्रिय भी लगा।

"अगर यह ज़ार के हाथ मे चली गई तो इससे कई प्रकार की गलतफहमिया पैदा हो सकती है, कई आडे सवाल पूछे जा सकते है," वह पढते पढते सोच रहा था। उसने दरख्वास्त को मेज पर रखा, घण्टी बजाई और नेख्लूदोव को अन्दर भेजने का हुक्म दिया।

उसे सम्प्रदाइयो के मुकद्दमे का पता था। उनकी ओर से पहले भी उसे एक दरख्वास्त मिली थी। मामला इस तरह था। ये सम्प्रदाई ईसाई धर्म के मानने वाले थे लेकिन आर्थोडॉक्स मत पर से उनका विश्वास उठ गया था। पहले तो उन्हे वापस लाने का यत्न किया गया, उन्हे बडे उपदेश दिये गये, लेकिन जब वे न माने तो उन पर मुकद्दमा चलाया गया। लेकिन वे बरी हो गये। इसके बाद लाट-पादरी और गवर्नर ने परामर्श किया, और इस मिथ्या तर्क के आधार पर कि उनकी शादिया गैर-कानूनी हैं, इन सम्प्रदाइयो—पतियो, पत्नियो और बच्चो को—अलग अलग स्थानो पर निर्वासित कर दिया। इस तरह ये आदमी अपने बीवी

बच्चा स अलग कर दिये गय। अब पत्निया और पति दरख्वास्त क
रहे थे कि उन्हें या एक दूसर से अलग न किया जाय। तापोरोव को
याद आया कि पहले जब उसे इस मामले का पता चला तो इसकी इच्छा
हुई थी कि इसे वही पर रोक दिया जाय, लेकिन वह द्विविधा म पड
गया था। फिर उसने यही ठीक समझा कि इस निणय का समथन कर
देन का और इस तरह एक एक परिवार के लोगो का एक दूसरे से अलग
कर क निर्वासित कर देने का कोई दुष्परिणाम नही होगा। इसके विपरीत
यदि इन्हें निर्वासित नही किया गया तो इसका बहुत बुरा प्रभाव उन
लोगा पर पडेगा जो इन्ही किसान-सम्प्रदाइयो के आस-पास रहते है। वे
लाग आर्थोडॉक्स मत स विमुख होने लगेगे। साथ ही इस मामले म लाट-
पादरी ने अपना धर्मानुराग दिखाया था। इसलिए तोपोरोव ने हस्तक्षेप
नही किया और जैसा निणय हुआ था उसी के अनुसार इसे चलने दिया।

पर अब स्थिति कुछ और हो गई थी। तोपोरोव ने देखा कि नेख्लूदोव
ने इन सम्प्रदाइयो का पक्ष ल लिया है और इस आदमी का पीटसबग
म काफी रसूख है। सम्भव है जार के कान म यह बात कही जाय कि
बहुत बडा जुल्म हुआ है, या इस मामले की रिपोट विदेशी अखबारा मे
जा छपे। इसलिए तोपोराव ने फौरन अपना निश्चय बदल लिया, जिसकी
पहले आशा नही की जा सकती थी।

"नमस्ते " उसन खडे हो कर नेख्लूदाव को इस ढग से स्वागत
किया मानो बहुत ही व्यस्त रहन वाला आदमी हो और उसे सिर उठाने
की फुसत न हो, और सीधा काम की बात करने लगा।

"मुझे यह मामला मालूम है। ज्या ही मैंने दरख्वास्त म लिखे नाम
पढे तो मुझे सारा किस्सा याद आ गया। बडी अफसोसनाक बात है,"
दरख्वास्त नख्लूदोव को दिखाते हुए तोपोरोव ने कहा। "मैं आपका आभारी
हू कि आपने मुझे यह बात याद करा दी। इस मामले म प्रान्तीय
अधिकारिया न जरूरत से ज्यादा उत्साह से काम लिया है।" नेख्लूदोव
चुपचाप खडा तोपोरोव के चेहरे की ओर देख रहा था। चेहरा पीला
और गतिहीन था मानो नकाब हो। नेख्लूदोव के मन म इस आदमी के
प्रति कोई सदभावना नही थी। 'मैं हुक्म जारी कर दूगा कि इस निणय
को रद्द किया जाय और लोगा को फिर से अपने अपने घरा म बसा दिया
जाय।

२५

"इसका मतलब है मुझे दरख्वास्त देने की कोई जरूरत नही रहेगी?"

"मैं आपको यकीन दिलाता हू और इस बात का वचन देता हू," मैं शब्द पर जोर देते हुए तोपोरोव ने कहा। ज़ाहिर है उसे इस बात का विश्वास था कि उसकी ईमानदारी और उसके वचन से बढ कर विश्वसनीय कुछ नही हो सकता। "सबसे अच्छा यही होगा कि इसे मैं अभी लिख दू। आप तशरीफ रखिये।'

वह एक मेज़ के सामने जा कर बैठ गया और आदेश लिखने लगा। नेख्लूदोव कुर्सी पर नही बैठा, बल्कि खडे खडे सकरी, गजी खोपडी की ओर तथा उस स्थूल हाथ की ओर देखने लगा जिसकी नीली नीली शिराए साफ नज़र आ रही थी और जो तेज़ तेज कागज पर कलम चला रहा था। नेख्लूदोव मन ही मन सोच रहा था कि क्या कारण है यह पत्थर दिल आदमी यह काम करने लगा है, और वह भी इतनी सावधानी के साथ।

"लीजिये, यह रहा,' लिफाफे पर मोहर लगाते हुए तोपोरोव ने कहा, "आप बेशक अपने मुवक्किलों को इसकी सूचना दे दीजिये।" और उसने अपने होठ फैलाए, मानो मुस्कराने की चेष्टा कर रहा हो।

"इन लोगो को इतने दुख क्यो झेलने पडे हैं?" हाथ मे लिफाफा लेते हुए नेख्लूदोव ने पूछा।

तोपोरोव ने सिर ऊपर उठाया और मुस्करा दिया, मानो नेख्लूदोव का सवाल सुन कर उसे खुशी हो रही हो।

"यह मैं नही बता सकता। मैं इतना कह सकता हू कि धार्मिक मामलो मे अत्यधिक उत्साह दिखाना इतना खतरनाक या हानिकारक नही जितना कि उदासीनता जो आजकल इतनी फैल रही है। आप समझ सकते हैं कि जनता की हित रक्षा का हमारे लिए बडा महत्व है।"

"परन्तु क्या कारण है कि धर्म के नाम पर सदाचार के सर्वोपरि नियमो को भग किया जाता है—परिवार के सदस्यो को एक दूसरे से अलग किया जाता है?'

तोपोरोव मुस्कराये जा रहा था, एक कृपालुता भरी मुस्कान, ज़ाहिर है वह यही सोच रहा था कि नेख्लूदोव के ख्यालात बडे अजीब है। जो कुछ भी नेख्लूदोव कहता उसी के बारे मे तोपोरोव की यही राय होती कि ख्याल है तो बडा अजीब और एक-तरफा, परतु बातो को ठीक समझने के

लिए एक विस्तत राजनीतिक दृष्टिकोण की ज़रूरत है जो कि उसी आदमी का हो सकता है जो मेरी तरह बुलन्दी पर खड़ा हो।

"व्यक्तिगत रूप से एक अलग आदमी को बात या नज़र आ सकती है," वह कहने लगा, 'लेकिन राज्य की दृष्टि से देखने पर बात और बन जाती है। अच्छा, तो माफ कीजिये मैं ज्यादा देर आपको रोकना नहीं चाहता," तोपोरोव ने कहा और सिर झुका कर हाथ आगे बढ़ा दिया।

नेख्लूदोव ने चुपचाप हाथ मिलाया और तेज़ तेज़ कदम रखता हुआ बाहर निकल आया। उसे अफसोस हो रहा था कि उस शख्स के साथ क्या हाथ मिलाया।

"जनता के हित!" उसने तोपोरोव के शब्द दोहराये। 'सब तेरे हित है, अकेले तेरे हित।" बाहर जाते हुए नेख्लूदोव मन ही मन कह रहा था।

एक एक कर के नेख्लूदोव की आखो के सामने वे व्यक्ति आने लगे जिनकी हित रक्षा उन संस्थाओं द्वारा हुई है जो न्याय पालन करती हैं और धर्म तथा शिक्षा की अलम्बरदार हैं। वह स्त्री जिसे गैरकानूनी शराब बेचने की सज़ा दी गई। उस लड़के को चोरी करने की, उस आवारा आदमी को आवारा घूमने की, आग लगाने वाले को आग लगाने की बैंकर को गबन की और उस बदनसीब लीदिया शूस्तोवा को महज़ इसलिए सज़ा दी गई कि शायद इससे कोई ज़रूरी सूचना मिल सके। फिर उसे सम्प्रदाइयो का ख्याल आया जिन्हें इसलिए सज़ा दी गई कि उन्होंने ऑर्थोडॉक्स मत छोड़ दिया गुर्केविच को इसलिए कि वह चाहता था कि देश में सांविधानिक सरकार हो। नेख्लूदोव को साफ नज़र आ रहा था कि इन लोगों को जो तरह तरह की सज़ाएं दी गईं—जेल, हिरासत, निर्वासन—तो इसलिए नहीं कि इन्होंने न्याय का उल्लंघन किया था या अवैध व्यवहार किया था बल्कि केवल इसलिए कि ये उन सरकारी अफसरों और धनी लोगों के रास्ते में रुकावट डाल रहे थे, जो उस सम्पत्ति का उपभोग करना चाहते हैं जो उन्होंने जनता के हाथ से छीन रखी है।

वह स्त्री जो लाइसेंस के बिना शराब बेचती है, वह चोर जो शहर में भटकता फिरता है, लीदिया शूस्तोवा जो घोषणापत्र छिपाये फिरती है, सम्प्रदायवादी जो अंधविश्वास तोड़ रहे हैं, और गुर्केविच जो संविधान चाहता है, ये लोग सचमुच रुकावट डालने वाले हैं। नेख्लूदोव को साफ

नजर आ रहा था कि सभी अफसर—उसके अपने मौसा से ले कर, सनटरा, तोपोरोव, तथा उन साफ-सुथरे, रोबदार कर्मचारियों तक जो मन्त्रालयों में मेजों के सामने बैठे होते हैं—इन सब लोगों को इस बात की कोई परवाह नहीं थी कि बेगुनाह लोग दुख झेल रहे हैं, उन्हें केवल इस बात की चिन्ता थी कि सचमुच के खतरनाक लोगों को किस तरह रास्ते में से हटाया जाय।

नियम तो यह है कि किसी हालत में भी किसी निर्दोष आदमी को सजा न मिले, भले ही इससे दस मुजरिम बच निकलें। मगर यहां तो इसके उलट हो रहा है। एक सचमुच के खतरनाक आदमी से पिण्ड छुड़ाने की खातिर दस ऐसे आदमियों को सजा दी जाती है जो बिल्कुल निर्दोष हैं। यह तो वैसा ही हुआ जैसे किसी चीज का गला-सड़ा भाग काटते समय, आप चंगे भले हिस्से को भी साथ में काट डालें।

प्रश्न की यह व्याख्या नेख्लदोव को बड़ी सीधी-सादी और स्पष्ट जान पड़ी। लेकिन इसकी अत्यधिक सरलता और स्पष्टता के ही कारण वह उसे स्वीकार करने से हिचकिचा रहा था। क्या यह सम्भव है कि इतनी उलझी हुई स्थिति की इतनी सीधी-सादी और भयानक व्याख्या हो? क्या यह सम्भव है कि न्याय, कानून, धर्म, भगवान् के बारे में जो इतना कुछ कहा जाता है वह केवल मात्र शब्दाडम्बर है, और उसके पीछे घृणित धन लोलुपता तथा अत्याचार छिपा हुआ है?

२८

नख्लूदोव उसी दिन शाम को पीटर्सबर्ग से चला जाता लेकिन उसने मेरियेट को वचन दे रखा था कि वह उसे थियेटर में मिलने जरूर आयेगा। अतः यह जानते हुए भी कि उसे यह वचन नहीं निभाना चाहिए वह मन ही मन यह कह कर अपने को धोखा देता रहा कि दिये गये वचन का पालन करना उसका कर्तव्य है।

"क्या मुझमें इन प्रलोभनों का मुकाबला करने की क्षमता है?" उसने अपने आपसे पूछा। लेकिन यह सवाल सच्चे दिल से नहीं पूछा गया था। "मैं अन्तिम बार आज अपना इम्तहान लूंगा।

शाम का लिबास पहन वह थियेटर जा पहुचा। उस समय नाटक का दूसरा ऐक्ट चल रहा था। वही नाटक था—"Dame aux camelias" जो हमेशा दिखाया जाता था जिसमे एक विदेशी अभिनेत्री फिर एक बार और नये ढग से यह दिखाने की चेष्टा करती थी कि तपेदिक की रोगी स्त्रिया कैसे जान देती है।

थियेटर काफी भरा हुआ था। नेख्लूदोव के पूछने पर फौरन और बडे अदब से उसे मेरियेट का बॉक्स दिखा दिया गया।

बॉक्स के बाहर, बरामदे म, एक बावर्दी नौकर खडा था। नख्लूदोव को देख कर उसने झुक कर अभिवादन किया मानो नेख्लूदोव को जानता हो, और बॉक्स का दरवाजा खोल दिया।

हॉल के दूसरी तरफ लोग बॉक्सो मे बैठे या खडे थे। इसी तरह हाल मे भी, और स्टेज के नजदीक भी। तरह तरह के लोग थे—किसी के सिर के बाल सफेद, किसी के खिचडी, कोई गजा, किसी के बाल घुघराले—सभी तल्लीन हा कर स्टेज पर आखें गाडे ये जिस पर दुबली पतली अभिनेत्री रेशमी और जालीदार कपडा म सजी धजी, और बडी अस्वाभाविक आवाज मे बोलती हुई स्टेज पर इधर-उधर ऐंठती हुई आ जा रही थी।

दरवाजा खुलन पर किसी न "श श श!" का शब्द किया। उसी वक्त हवा के दो झोके एक साथ नेख्लूदोव के मुह पर आ लगे—एक गरम और दूसरा ठण्डा। बाक्स मे मरियट और उसके जनरल पति के अलावा दो व्यक्ति और बठे थे—एक स्त्री और एक पुरुप। स्त्री ने लाल रग का केप पहन रखा था और मिर पर बोझल सा केश विन्यास बनाये थी। नेख्लूदोव उसे नही जानता था। पुरुप गोरे रग का था, जिसन मुह पर घने गल-मुच्छे उगा रखे थे, और गल-मुच्छो के बीच ठोडी की छाटी सी जगह मुडी हुई थी। जनरल ऊचा-लम्बा रुपवान पुरुप था, चेहरे से कठोरता तथा अगम्यता झलक रही थी, नाक रोमन ढग का और वर्दी म छाती के आस पास का हिस्सा गद्दिया दे कर फुलाया हुआ था।

नेख्लूदाव के अदर पहुचने पर मेरियेट न फौरन मुड कर उसकी ओर देखा, और मुस्करा दी। इस मुस्कराहट मे स्वागत तथा कृतज्ञता का भाव था, और साथ ही, नेख्लूदोव का लगा, जैसे उसमे एक और इशारा भी छिपा था। छरहरा, सुडौल वदन, कमनीय भाव भगिमा, मेरियेट नीचे गले की पोशाक पहने हुए थी, जिससे उसके सुडौल, गठे हुए, ढलुए कन्धे

तथा गदन के पास एक छोटा सा काला तिल नज़र आ रहे थे। हाथ म उसने पखा उठा रखा था जिससे उसने नेख्लूदोव को अपने ऐन पीछे की कुर्सी पर बैठ जाने का इशारा किया।

मेरियेट का पति हर काम चुपचाप करने का आदी था। नेख्लूदाव की ओर भी उसने चुपचाप देखा और झुक कर अभिवादन किया। पति पत्नी की आखें मिली। पति की आखो मे वही भाव था जो एक ऐसे पुरुष की आखो मे होता है जो एक सुन्दर स्त्री का मालिक हो।

स्टेज पर अभिनेत्री का एकालाप समाप्त हुआ। हॉल तालिया से गज उठा। मेरियेट उठ खडी हुई और हाथो से अपनी रशमी स्कट को पकडे हुए बाक्स के पिछले हिस्से मे गई और नेख्लूदोव का अपने पति से परिचय कराया। जनरल की आखें अब भी मुस्करा रही थी। उसने कहा कि वह बहुत ख ुश है और फिर उसके चेहरे पर वही पहले सी दुर्बोध चुप्पी छा गई।

"मैं तो आज ही पीटसबग से जाने वाला था, लेकिन मैंने आपको वचन दे रखा था," नेख्लूदोव ने मेरियेट से कहा।

"अगर मुझे मिलने का शौक नही है तो कम से कम एक अच्छी अभिनेत्री को तो देख पाओगे," नेख्लूदोव के शब्दो का मतलब समझ कर उनका जवाब देते हुए मेरियेट बोली। "पिछले सीन म उसने कितना बढिया काम किया है?" अपने पति का सम्बोधित करते हुए उसने कहा।

पति ने सिर हिला कर समथन किया।

"इस तरह के दश्यो का मुझ पर कोई असर नही हाता," नख्लूदाव ने कहा। *"मैंने असल यातनाओं के इतने हृदयविदारक दृश्य देखे है कि "*

"बैठो, बैठो, बताओ मुझे।"

पति भी कान लगा कर सुनने लगा। उसकी आखे अब भी मुस्करा रही थी, और उनम व्यग का भाव उत्तरोत्तर बढ रहा था।

"आज मैं उस औरत से मिलने गया था जिसे रिहा किया गया ह। बडी मुद्दत तक उसे जेल मे रखा गया था। उसका उन्हाने बुरा हाल किया है।"

"यह वही औरत है जिसका मैंन आपस जिक्र किया था ' मेरियेट न अपन पति स कहा।

"हा हा, मुझे इस बात की बडी ख ुशी है कि उस रिहा किया जा

सका," पति ने सिर हिलाते हुए, धीमी आवाज म कहा। मूछो के नीचे उसके होंठ मुस्करा रहे थे और नेख्लूदोव का लगा जैसे उस मुस्कराहट म व्यग भरा हो। "मैं बाहर जा कर जरा सिगरेट पी आऊ।"

नेख्लूदोव इस इन्तजार म था कि कब मेरियेट वह महत्वपूर्ण बात उसे बतायेगी जिसका कल उसने जिक्र किया था। पर मेरियेट ने कुछ नही कहा, उसकी चर्चा तक नही की, बल्कि सारा वक्त हस हस कर अभिनय की ही बाते करती रही। कहने लगी कि इस अभिनय का तो जरूर नेख्लूदोव के दिल पर असर होना चाहिए था।

नेख्लूदोव को पता चल गया कि मेरियेट को कुछ भी नही बताना है। वह तो केवल अपनी पोशाक की सज धज से उसे प्रभावित करना चाहती थी, जिसे पहन कर वह अपने कधे और नन्हा सा तिल दिखा सकती थी। नेख्लूदोव के मन को यह अच्छा भी लगा और इससे घृणा भी हुई।

इस प्रकार के व्यवहार का पहले तो एक रगीन पर्दा सा ढके रहता था जो नेख्लूदोव को सुन्दर लगता था। आज भी वह पर्दा मौजूद था लेकिन नेख्लूदोव को उसके पीछे की असलियत नजर आ गई थी। मेरियेट के सौदय से वह अब भी अभिभूत हुआ जाता था, लेकिन साथ ही उसे इस बात का भी एहसास था कि वह एक झूठी औरत है। उसका पति सैकडो-हजारो लागो को खून के आसू रुला कर एक बडे ओहदे से दूसरे बडे ओहदे पर तरक्की करता जा रहा था, और मेरियेट इसके प्रति बिल्कुल उदासीन थी। जो कुछ भी उसने कल रोज नेख्लूदोव से कहा था वह झूठा दिखावा था। वह केवल एक ही बात चाहती थी कि नेख्लूदाव उसके प्रेम-जाल मे फस जाय—और इस इच्छा का कारण न वह खुद जानती थी, न नेख्लूदोव जानता था। नेख्लूदोव इस व्यवहार के प्रति आकर्षित भी हुआ पर साथ ही उसका मन घृणा से भी भर उठा। कई बार उसने विदा लेने के लिए अपनी टोपी उठायी, मगर फिर भी बैठा रहा।

मेरियेट का पति लौट कर आया। उसकी घनी मूछो से तम्बाकू की तेज गध आ रही थी। अन्दर आ कर उसने नेख्लूदोव की ओर इस नजर से देखा मानो उसे पहली बार देख रहा हो। उसकी आखो म कृपालुता और घृणा दोनो का भाव था। आखिर नेख्लूदोव उठ खडा हुआ और बॉक्स का दरवाजा बन्द होने से पहले ही बाहर निकल आया, अपना ओवरकोट लिया और थियेटर म से बाहर हो गया।

नेव्स्की सडक के रास्ते नेख्लूदोव पैदल अपने घर की ओर जाने लगा। चौडी पटरी पर चलते हुए उसकी नज़र एक लम्बे, छरहरे बदन की औरत पर गई जो शोख भडकीले कपडे पहने चुपचाप उसके आगे आगे चली जा रही थी। औरत के चेहरे से तथा अग अग से पता चल रहा था कि उसे अपनी घृणित शक्ति का ज्ञान है। जो कोई भी उसके पास से हो कर जाता या सामने से आता, जरूर उसकी ओर देखता। नेख्लूदोव की रफ्तार उस स्त्री की रफ्तार से तेज़ थी, और उसके पास से गुज़रते हुए उसकी भी आखें अपने आप उठ कर उसके चेहरे पर गयी। औरत का चेहरा खूबसूरत था, शायद उसने पाउडर-सुर्खी भी लगा रखे थे। औरत नेख्लूदोव की ओर देख कर मुस्कराई और उसकी आखें चमक उठी। उस समय, अकारण ही, नेख्लूदोव को मेरियेट याद आ गई। यहा पर भी वही कुछ हुआ जैसा कि थियेटर म हुआ था। नेख्लूदोव आकर्पित भी हुआ और उसका मन घृणा से भी भर उठा।

तेज़ तेज़ चलता हुआ नेख्लूदोव उससे आगे निकल गया। उसे अपने आप पर क्रोध आने लगा था। इस सडक पर से हट कर वह मोर्स्काया की ओर घूम गया, और बध पर जाने लगा। वहा पर वह रुक गया और सडक की पटरी पर टहलने लगा। इस अप्रत्याशित व्यवहार से ड्यूटी पर खडा सन्तरी भी कुछ हैरान सा हो गया।

"उस दूसरी औरत ने भी मेरी ओर इसी तरह मुस्करा कर देखा था, जिस वक्त मैंने बॉक्स के अन्दर कदम रखा था" वह सोच रहा था। "दोनो मुस्कराहटो का मतलब एक ही था। फरक केवल इतना है कि इसने अपनी बात सीधे दो-टूक शब्दो में कह दी—'तुम मुझे चाहते हो? मैं हाज़िर हू। अगर नही चाहते तो अपना रास्ता पकडो।' दूसरी स्त्री दिखावा तो इस बात का करती थी कि उसे इसका ख्याल तक नही है, और वह बडे ऊचे और सुसस्कृत स्तर पर रहती है, लेकिन मूल म बात वहा पर भी यही थी। यह कम से कम सच तो बोलती थी उस दूसरी का तो एक एक शब्द सफेद झूठ था। इसके अतिरिक्त यदि यह औरत ऐसा काम करती है तो विवश हो कर, ज़रूरत ने इसे मजबूर किया है। लेकिन दूसरी औरत अपने मनबहलाव के लिए उस वासना के साथ खिलवाड करती है, जो इतनी आकर्षक है कि मनुष्य को वशीभूत कर लेती है, पर साथ ही घृणित, और भयानक भी है। सडको पर भटकने वाली यह वेश्या उस गन्दे जल

की तलैया के समान है जिस पर वे लाग पानी पीने जाते हैं जिनकी प्यास उनकी घृणा से प्रबल हैं। वह दूसरी औरत जो थियेटर मे बैठी है, विष के समान है जो अदृश्य रूप से जिस चीज को भी छूती है उसी को विषैला वना देती है।" नेख्लूदोव को अभिजातो के प्रधान की पत्नी के साथ अपना वह मामला याद आ गया, और उसकी आखा के सामने लज्जाजनक स्मृति चित्र घूम गये। "मनुष्य की पाशविक वृत्ति अत्यन्त घृणास्पद चीज है," वह सोच रहा था। "पर जब तक यह नग्न रूप मे हमारे सामने आती रहती है हम आध्यात्मकता के ऊचे स्तर से इसकी ओर देखते हुए इससे घणा करते है। और मनुष्य उस पर काबू पाने मे समथ हो या उसकी वेगवती लहर मे बह जाय, अपने मे वह वही कुछ रहता है जो पहले था। परन्तु जव यही पाशविक वत्ति कविता तथा ललित भावना की ओढनी ओढ कर हमारे सामने आती है, और हमसे यह आशा करती है कि हम उसकी पूजा करे, तब हम पूणतया इसमे डूब जाते है, और काम वासना की पूजा करते है, और हम अच्छाई और बुराई का अन्तर नही देख सकते। वह स्थिति अत्यन्त भयानक होती है।"

यह तथ्य नख्लदोव को उतनी ही स्पष्टता से नजर आ रहा था जिस स्पष्टता से उसे अपन सामने राज प्रासाद, सन्तरी, किला, नदी, किश्तिया तथा स्टॉक एक्स्चेज की इमारत नजर आ रहे थे।

उत्तरी प्रदेशो मे गर्मी के मौसम मे राते अधेरी नही हुआ करती। आज की रात वैसी ही थी। सृष्टि पर रात्रि का शान्तिप्रद और सुखद अधकार नही था। एक तरह की उदास, मद सी रोशनी, न मालूम कहा से आ कर, आकाश म छायी थी। यही स्थिति नेख्लूदोव की आत्मा की थी। इस पर से भी अज्ञान का शान्तिप्रद अधकार उठ गया था। सब वात साफ थी। स्पष्ट था कि हर वह चीज जिसे महत्वपूण और श्रेष्ठ माना जाता था, नगण्य और घृणित हो उठी थी। यह भी स्पष्ट था कि इस चमक-दमक और ऐशो आराम के पीछे वही पुराने चिरपरिचित अपराध *छिपे हुए हैं, जिनकी कोई सजा न थी, अपितु जिनकी जय-जयकार हाती* है और जिह लोग अपनी समस्त कल्पना शक्ति से मनोहरतम रूप देते आये है।

वह चाहता था कि यह सव भूल जाय, इसकी आर आख तक न उठाय लेकिन रह रह कर उसकी नजर उसी आर जाती थी। वह उस

प्रकाश के स्रोत को नही देख सकता था जिसने इस सच्चाई का उसकी आत्मा के सामने प्रकट किया था, ठीक उसी तरह जिस तरह वह उस प्रकाश के स्रोत को नही देख पा रहा था जो इस समय पीटर्सबर्ग शहर पर छाया हुआ था। यह प्रकाश उसे मन्द, उदास तथा अस्वाभाविक लगता था फिर भी जिन जिन चीजो को यह प्रकाश उदभासित कर रहा था, उन्हें देखे बिना वह न रह सकता था। इसी कारण वह मन ही मन खुश भी था और चिन्तित भी।

२६

मास्को लौट कर नेख्लूदोव सीधा जेल के अस्पताल की ओर चल दिया। वह मास्लोवा को यह बुरी खबर सुना देना चाहता था कि सेनेट ने न्यायालय के निर्णय का समर्थन किया है और अब उसे साइबेरिया जाने के लिए तैयार रहना चाहिए।

जार के नाम वकील ने एक दरख्वास्त तो तैयार कर दी थी और उसे नेख्लूदोव अपने साथ लेता भी आया था, ताकि उस पर मास्लोवा का दस्तखत करवा ले, लेकिन उसे इससे कोई आशा न थी। और अजीब बात यह थी कि मन ही मन वह चाहता भी नही था कि वह मजूर हो। कल्पना मे वह बहुत दिनो से यही सोच रहा था कि वह साइबेरिया में जायेगा और वहा जलावतन और सजायाफ्ता लोगो के साथ रहेगा। इस तरह सोचने की उसे आदत सी पड गई थी। अब उसके लिए ऐसी स्थिति की कल्पना करना कठिन हो रहा था कि अगर मास्लोवा बरी हो गई तो दोनो के जीवन का रुख क्या होगा। जिन दिनो अमरीका मे दास प्रथा प्रचलित थी, वहा के एक लेखक थोरो ने लिखा था जिस देश मे गुलामी को कानून की छत्रछाया प्राप्त हो, वहा के किसी भी ईमानदार नागरिक के लिए एकमात्र शोभनीय स्थान जेल ही है। नेख्लूदोव को थोरो के ये शब्द याद आ गये। उसका भी यही विचार था, विशेषकर पीटर्सबर्ग का दौरा करने के बाद जहा उसने बहुत कुछ देखा था।

"ठीक है, रूस में भी इस समय एक ईमानदार आदमी के लिए एकमात्र शोभनीय स्थान जेल ही है," वह सोच रहा था। गाडी में जेल के पास पहुचते हुए और उसकी दीवारो के अदर जाते हुए नेख्लूदोव इस बात का स्पष्टत अनुभव भी कर रहा था।

अस्पताल के दरवाजे पर खड़े दरबान ने नेख्लूदोव को पहचान लिया, और झट कहने लगा कि मास्लोवा अब यहा पर नही है।

"तो कहा पर है?"

"उसे वापस जेल म भेज दिया गया है।"

"उसे यहा से क्यो हटा दिया गया है?"

"हुजूर क्या बताऊ, इन लोगो को तो आप जानते है " दरबान बोला। उसके होठो पर घृणा भरी मुस्कान थी। "छोटे डाक्टर से आखें लडाने लगी थी। इसलिए डाक्टर ने वापस भिजवा दिया।"

नेख्लूदोव को अब तक इस बात का भास नही हुआ था कि मास्लोवा और उसकी मन स्थिति का उसके लिए कितना महत्व है। खबर सुनते ही वह सुन सा खडा रहा। उसे गहरा आघात पहुचा, जिस तरह किसी अप्रत्याशित और विकट दुर्भाग्य की खबर मिलने पर होता है। सबसे पहले तो उसने लज्जा का अनुभव किया। वह इस भ्राति म था कि मास्लोवा का चरित्र-परिवर्तन हो रहा है, और वह बेहद खुश था। अब उसकी स्थिति उसकी अपनी नजरो म ही उपहासजनक लगने लगी थी। मास्लोवा कहा करती थी कि मैं तुमसे कोई कुर्बानी नही मागती हू, मेरी भर्त्सना किया करती थी, रोया करती थी। नेख्लूदोव को लगा जैसे ये सब एक नीच औरत का तिरिया चरित्र था। वह इन हथकण्डो से उसे अपने हाथ मे नचाना चाहती थी और अपना उल्लू सीधा करना चाहती थी। पिछली बार जब वह उससे मिलने आया था तो मास्लोवा मे उसे ढिठाई का भास हुआ था। यन्त्रवत् सिर पर टोपी रखते हुए जब वह अस्पताल से बाहर जाने लगा तो यह विचार उसके मन मे कौंध सा गया।

"अब मैं क्या करू? क्या मैं अब भी उसके साथ बधा हुआ हू? उसकी इस करतूत के बाद क्या मैं आजाद नही हो गया हू?" उसने अपने आपसे पूछा।

मन ही मन वह मास्लोवा को उसके किये की सजा देना चाहता था। लेकिन जब ये सवाल उसके मन मे उठे तो वह फौरन् समझ गया कि अगर वह अपने को आजाद समझे और मास्लोवा से किनारा कर ले तो वह उसे नही, अपने को सजा दे रहा होगा। यह सोच कर उसका मन त्रस्त हो उठा।

"नही, इस घटना से मेरा निश्चय शिथिल पडने के बजाय और भी

दढ होना चाहिए। उसकी मन स्थिति उसे जिस ओर ले जाना चाहती है, ले जाय। अगर वह छोटे डाक्टर से आखें लडाना चाहती है तो लडाये, यह उसका अपना काम है, मेरा इसके साथ कोई वास्ता नही। मुझे अपनी अतरात्मा के आदेश का पालन करना होगा। और मेरी अन्तरात्मा का यह आदेश है कि मैं अपने पाप का प्रायश्चित करने के लिए अपनी आजादी कुर्बान कर दू। उसके साथ शादी करने का मेरा निश्चय—भले ही वह शादी औपचारिक रूप मे ही क्या न हो—और जहा वह जाय, उसके साथ जाने का निश्चय अब भी ज्यो के त्यो कायम हैं। उनमे कोई तबदीली नही हो सकती," बडी ढिठाई और कटुता के साथ उसने अपने आपसे कहा और अस्पताल मे से निकल कर, जेल के बडे फाटक की ओर दढता से जाने लगा।

फाटक पर एक वार्डर ड्यूटी दे रहा था। नेख्लूदोव ने उसे जा कर इन्स्पेक्टर को यह खबर देने को कहा कि वह मास्लोवा से मिलना चाहता है। वार्डर नेख्लूदोव को जानता था और एक जाने पहचाने आदमी के नाते उसे जेल की महत्वपूर्ण खबर सुना दी कि पहला इन्स्पेक्टर बदल गया और उसकी जगह एक नया अफसर आया है जो स्वभाव का बडा कठोर है।

"बहुत कडाई करने लगे ह, साहिब, क्या बताऊ आपको।" वार्डर कहने लगा, "नये इन्स्पेक्टर दफ्तर म हैं, मैं अभी उन्हें खबर किये देता हू।

नया इन्स्पेक्टर जेल के अन्दर था, और शीघ्र ही नेख्लूदोव से मिलने बाहर आ गया। उसका कद लम्बा और नाक-नक्श लम्बतरे थे, गालो की हड्डिया उभरी हुई थी, चाल-ढाल बहुत सुस्त और सूरत मनहूस थी।

"भेंट मुलाकाती कमरे मे ही की जा सकती है, और उसके लिए दिन मुकरर हैं," बिना नेख्लूदोव की ओर देखे उसने कहा।

"लेकिन जार के नाम मेरे पास एक दरख्वास्त है जिस पर मुझे दस्तखत करवाना है।"

"दरख्वास्त आप मुझे दे सकते है।"

"मैं कैदी से खुद मिलना चाहता हू। पहले मुझे कभी किसी ने नही रोका।"

"हा, मगर यह पहले की बात है,' इन्स्पेक्टर ने कहा और कनखिया से नेख्लूदोव की ओर देखा।

"मुझे गवर्नर की तरफ से इजाजत मिल चुकी है," नेम्लूदाव ने जोर दे कर कहा, और जेब मे से अपना बटुआ निकाला।

"लाइये," इन्स्पेक्टर ने कहा और अपना हाथ बढा कर, जिसकी तर्जनी पर सोने की अगूठी थी, नेम्लूदाव म इजाजतनामा ले लिया। इसपक्टर के हाथ की अगुलिया लम्बी लम्बी, गोरी और कठोर थी। वह धीरे धीरे इजाजतनामा पलटता रहा। "दफ्तर म तशरीफ ले चलिय" उसने कहा।

अब की बार दफ्तर मे कोई नही था। इस्पेक्टर अपन मेज के सामने बैठ गया और उम पर रखे कागजो को छाटने लगा। प्रत्यक्षत, भेंट के दौरान उसका इरादा वही बैठे रहने का था। नेख्लूदाव ने राजनीतिक कैदी बोगोदूखोव्स्काया से मिलने के लिए कहा। इस्पेक्टर ने छूटते ही इकार कर दिया।

"राजनीतिक बैंदिया म भेंट करने की इजाजत नही है," उसने कहा और फिर अपने कागजो की ओर देखने लगा।

बोगोदूखोव्स्काया की चिट्ठी नेम्लूदोव के जेब म थी। उस लगा जैसे उसने कोई जुर्म किया और अब उसका भण्डाफोड हो गया हो और मनसूबे खाक मे मिला दिये गये हो।

मास्लोवा अदर आई। इस्पेक्टर ने सिर उठा कर ऊपर देखा, फिर बिना नेम्लदोव या मास्लोवा की ओर देखे बोला–

"तुम लोग बाते कर सकते हो," और फिर अपने कागजो को छाटने लगा।

अब की बार भी मास्लोवा ने सफेद जाकेट और स्कट पहन रखी थी और सिर पर रूमाल बाध रखा था। वह पास आई। नेम्लूदाव की आखो मे कठोरता तथा उपेक्षा का भाव देख कर मास्लोवा का चेहरा शर्म से लाल हो गया। हाथो म जाकेट का किनारा मरोडते हुए उसने आखें नीची कर ली। उसकी घबराहट देख कर नेम्लूदोव का शक और भी पक्का हो गया कि जो कुछ दरबान ने कहा था वह जरूर ठीक होगा।

नेख्लूदोव का इरादा तो मास्लोवा से पहले ही की तरह मिलने का था, लेकिन फिर भी उसके साथ हाथ मिलाने को उसका मन नही माना। उसके प्रति नेख्लूदोव का मन घृणा से भर उठा था।

"मैं तुम्हे बुरी खबर सुनाने आया हू" उसने समतल, नीरस आवाज

म कहा। नेख्लूदोव ने न ही मास्लोवा से हाथ मिलाया और न ही उसकी ओर आख उठा कर देखा। "सेनेट ने अपील खारिज कर दी है।"

"मैं तो पहले से ही जानती थी यही कुछ होगा," मास्लोवा न अजीब सी आवाज मे कहा, मानो उसका सास फूल रहा हो।

अगर पहले कभी ऐसी चर्चा हुई होती तो नेख्लदोव उससे ज़रूर पूछता कि तुम्हे कैसे मालूम था यही कुछ होगा। पर अब वह कुछ नही बोला, और केवल उसके चेहरे की ओर देखा। मास्लोवा की आखें डबडबा आई थी।

यह देख कर भी नख्लूदोव का मन नही पसीजा। बल्कि उसकी खीज और भी बढ गई।

इन्स्पेक्टर उठ खडा हुआ और कमरे म टहलने लगा।

नेख्लूदोव के मन म मास्लोवा के प्रति तीव्र घृणा उठ रही थी। फिर भी उसने यही ठीक समझा कि सेनेट के निणय पर अपना अफसोस जाहिर करे।

"तुम्ह निराश नही होना चाहिए,' वह बोला, "क्या मालम जार के नाम दी गयी दरख्वास्त का अच्छा परिणाम निकले। और मुझे आशा है "

"मैं इसके बारे मे नही सोच रही हू," उसने दीनता भरी नज़र से नेख्लूदोव की ओर देखते हुए कहा। उसकी ऐंची आखें आसुओ से भरी थी।

"तो फिर क्या सोच रही थी?"

"तुम शायद अस्पताल गये होगे और वहा उन लोगो ने मेरे बारे म तुमसे कहा होगा कि '

"तो क्या हुआ? यह तुम्हारा काम है," नख्लूदोव ने उपेक्षापूर्ण आवाज़ मे कहा और उसकी त्यौरिया चढ गइ।

नेख्लूदोव के आत्म-गौरव को धक्का लगा था, लेकिन अब तक वह चुप रहा था। जब मास्लोवा ने अस्पताल का नाम लिया तो वह भावना और अधिक क्रूरता के साथ उसके हृदय मे भभक उठी। "आखिर मेरी भी कोई हैसियत है। अच्छे से अच्छे घर की लडकी मेरे साथ व्याह करना अपना फखर समझेगी। लेकिन मैंने इस औरत को अपनी पत्नी बनाने का प्रस्ताव किया। इधर यह है कि इन्तज़ार तक नही कर सकी और छोटे डाक्टर से आखें लडाने लगी है।" यह सोच कर नख्लूदोव न बडी नफरतभरी निगाह स मास्लोवा की ओर देखा।

"इस दरख्वास्त पर दस्तखत कर दो," नेख्लूदोव ने जेब मे से एक बड़ा सा लिफाफा निकाला, और दरख्वास्त मास्लोवा के सामने रख दी। सिर पर बंधे रूमाल के एक कोने से मास्लोवा ने अपनी आखें पोछी और पूछा कि कहा पर क्या लिखना है।

नेख्लूदोव ने बताया। बायें हाथ मे दायें बाजू की आस्तीन ठीक करते हुए मास्लोवा लिखने बैठी। नेख्लूदोव उसके पीछे खड़ा चुपचाप उसकी पीठ की ओर देख रहा था जो अवरुद्ध रुदन के कारण कभी कभी काप उठती थी। नेख्लूदोव के मन मे नेकी और बदी की भावनाओ के बीच संघर्ष उठ खड़ा हुआ। एक ओर आहत आत्माभिमान की भावना थी, दूसरी ओर इस दुखी स्त्री के प्रति अनुकम्पा की भावना। अन्त म अनुकम्पा की विजय हुई।

उसे याद नही था कि पहले क्या हुआ—उसके हृदय मे दया की भावना पहले उठी या उसे अपने पाप पहले याद आये—वसे ही घृणित कुकर्म जिनके लिए आज वह मास्लोवा को दोष दे रहा था? कुछ भी रहा हो, वह अपने को अपराधी महसूस करने लगा और उसके प्रति दयार्द्र हो उठा।

मास्लोवा ने दरख्वास्त पर दस्तखत किया, फिर अपनी अगुली को, जिस पर स्याही लग गई थी, अपनी स्कर्ट के साथ पोछ कर नेख्लूदोव की ओर देखा।

"कुछ भी हो जाय, इस दरख्वास्त का कुछ भी परिणाम निकले, मैं अपना निश्चय नही बदलूगा," नेख्लूदोव ने कहा।

यह सोच कर कि उसने मास्लोवा को क्षमा कर दिया है, उसका हृदय और भी अधिक अनुकम्पा और दयालुता से भर उठा। उसका मन चाहा कि उसे ढाढस बधाये।

"मैं अपने कहे पर अमल करूगा। वे लोग तुम्हे जहा कही भी ले गये, मैं तुम्हारे साथ जाऊगा।"

"इसका क्या लाभ?" वह जल्दी मे बीच मे बोल उठी। लेकिन उसका चेहरा खिल गया।

"तुम मुझे सोच कर बताओ कि तुम्हे रास्ते के लिए क्या दरकार होगा।"

"मेरे ख्याल म तो कुछ नही चाहिए। बहुत शुक्रिया।'

इस्पेक्टर उनके सामने आ खडा हुआ। पेश्तर इसके कि वह कुछ कहे, नेख्लूदोव ने विदा ली और बाहर निकल आया। उस समय उसका हृदय शांति, आह्लाद तथा सकल प्राणीमात्र के प्रति अकथनीय वात्सल्य स भर उठा था। ऐसा उसने पहले कभी महसूस नही किया था। इस विश्वास स कि मास्लोवा कुछ भी करे, उसके प्रति उसके प्रेम मे रत्तमात्र भी फरक नही आयगा, उसका हृदय उल्लसित हो उठा। उसे ऐसा महसूस हुआ जस वह ऊपर उठ आया हो और ऐसे स्तर पर खडा हो जिस स्तर पर वह पहले कभी नही पहुच पाया था। उसका मन चाहे तो बेशक छोटे डाक्टर से आखे लडाये। यह उसका अपना काम है। वह अपनी खातिर मास्लोवा से प्रेम नही करता था बल्कि उसकी, मास्लोवा की खातिर, और भगवान की खातिर।

यह मामला क्या था, जिसके लिए मास्लोवा को अस्पताल म स बाहर निकाल दिया गया था, और जिसके बारे मे नेख्लूदोव को विश्वास था कि वह सचमुच दोषी है? मामला इस तरह हुआ—अस्पताल की बडी नर्स ने मास्लोवा को दवाईखाने से जडी-बूटियो की चाय लाने को कहा। यह दवाईखाना बरामदे के एक सिरे पर था। मास्लोवा गई, लेकिन वहा पर पहुची तो वहा छोटे डाक्टर के अलावा और कोई भी मौजूद न था। छोटा डाक्टर कद का ऊचा-लम्बा आदमी था, और उसका चेहरा मुहासों से भरा था। यह आदमी बहुत दिनो से मास्लोवा को परेशान कर रहा था। वह फिर उसके पास आ धमका। उससे पीछा छुडाने के लिए मास्लोवा ने उसे इतने ज़ोर से धक्का दिया कि उसका सिर पीछे तख्ते पर जा टकराया, और दवाई की दो बोतलें गिर कर टूट गयीं।

ऐन उसी वक्त अस्पताल का बडा डाक्टर उधर से गुज़रा, और काच टूटने की आवाज़ उसके कान म पडी। इधर मास्लोवा, घबराई हुई भाग कर बाहर निकली। उसे देखते ही डाक्टर न गुस्से स पुकार कर कहा—

"भली औरत, अगर यहा पर भी तुमने बदकारियां शुरू कर दी तो मैं कान पकड कर बाहर निकाल दूगा क्या बात हुई है?" अपने चश्मे के ऊपर स छोटे डाक्टर की ओर बडी कठोरता से देखते हुए उसने पूछा।

छोटा डाक्टर मुस्कराया और अपनी सफाई देने लगा। डाक्टर ने उसकी बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, और सिर ऊचा उठाये—और अब की बार ऐनको के बीच म से देखते हुए—वार्ड के अन्दर चला गया।

इसी दिन उसने इंस्पेक्टर को कह दिया कि मास्लोवा के स्थान पर किसी दूसरी सहायक नर्स को भेज दे जो ज्यादा ठहरी हुई तबीयत की हो।

बस, यही वह "भ्रामें लडाना" था जो मास्लोवा का छोटे डाक्टर के साथ हुआ। मुद्दत से मास्लोवा के मन में पुरुषों से सभोग-सम्पर्क रखने के प्रति घिन उठने लगी थी। और नेख्लूदोव से मिलने के बाद तो उसे यह और भी बुरा लगता था। इसलिए जब दुराचार का दोष लगा कर उसे बाहर निकाल दिया गया तो उसे बेहद दुख हुआ। वह सोचती कि हर किसी का ध्यान मेरे पिछले जीवन और वर्तमान स्थिति की ओर ही जाता है, और हर आदमी मेरा अपमान करना अपना हक समझता है। अगर मैं इन्कार कर दूं तो उसे अचम्भा होने लगता है। मुहासों वाला यह छोटा डाक्टर भी यही समझता है। उसका हृदय तीव्र वेदना से भर उठता, उसे अपने आप पर तरस आने लगता और आंखों से झरझर आंसू बहने लगते। जब वह नेख्लूदोव से मिलने आयी तो यह इरादा कर के कि मैं सारी बात उसे साफ साफ बता दूंगी ताकि उसे पता चल जाय कि मुझ पर झूठा इलजाम लगाया गया है। उसने जरूर इसके बारे में पहले से सुन रखा होगा। पर जब वह अपनी सफाई देने लगी तो उसने देखा कि नेख्लूदोव को उसकी बात पर विश्वास नहीं हो रहा, और अगर वह और दलीलें देती गई तो उसका संशय और भी पक्का होता जायेगा। इस पर उसे रुलाई आ गई, उसका गला रुंध गया और वह चुप हो गई।

मास्लोवा अब भी अपने मन को इस बात का भुलावा दिये जा रही थी कि उसने नेख्लूदोव को क्षमा नहीं किया और उससे घृणा करती है। दूसरी बार जब नेख्लूदोव उससे मिलने आया था तो उसने उसे कह भी दिया था। लेकिन सच तो यह था कि वह उसे फिर से प्रेम करने लगी थी। और इसी प्रेमवश वह अपने आप वही काम करने लगती जो नेख्लूदोव चाहता था। उसने शराब, तम्बाकू पीना छोड़ दिया, चुहलबाजी छोड़ दी। अस्पताल में भी इसी लिए काम करने लगी क्योंकि वह जानती थी कि नेख्लूदोव को यह पसन्द है। लेकिन नेख्लूदोव जब भी उससे शादी करने का जिक्र करता तो वह बड़ी दृढ़ता से इन्कार कर देती। इसका कारण यह था कि वह अपने वे गर्वीले शब्द दोहराना चाहती थी जो उसने पहली बार कहे थे। साथ ही वह यह भी जानती थी कि उसके साथ शादी कर के नेख्लूदोव दुख ही पायेगा। उसने पक्का निश्चय कर लिया था कि नेख्लूदोव

के आत्मबलिदान को स्वीकार नही करगी। परन्तु यह देख कर कि नेख्लूदोव उससे घृणा करता है, और अब भी उसे वही कुछ समझता है जो वह पहले थी, और उसम जो परिवतन हुआ ह उसे वह देख नही पाता मास्लोवा अत्यन्त दुखी हुई। सेनेट ने उसकी सज़ा पक्की कर दी, उसे यह जान कर इतना दुख नहीं हुआ, जितना इस बात से कि नेख्लूदोव शायद अब भी यही सोचता है कि अस्पताल की घटना मे उसी का कसूर था।

३०

सभव है मास्लोवा को कैदियो की पहली टोली के साथ ही साइबेरिया भेज दिया जाय, यह सोच कर नेख्लूदोव ने अपनी रवानगी की तयारी शुरू कर दी। परन्तु जाने से पहले उसे बहुत सा काम निबटाना था और उसने देख लिया कि सारा का सारा काम निबटाना असभव है, चाहे जितना भी समय वह उसमे लगाये। पहले से अब स्थिति बहुत कुछ बदल गई थी। पहले उसे अपने लिए काम ढूढ कर निकालने पडते थे और सभी कामो मे एक ही व्यक्ति का हित अभीष्ट रहता था और वह था—दमीत्री इवानोविच नेख्लूदोव। जीवन की सभी रुचिया आत्मतुष्टि पर केन्द्रित था। परन्तु ऐसा होते हुए भी ये सब काम उसके लिए अत्यन्त बोझल और नीरस हो उठते थे। अब स्थिति यह थी कि उसके सभी कामो का सम्बध, दमीत्री इवानोविच से न रह कर, और लोगो से हो गया था। अब ये सभी काम रुचिकर और आकर्षक हो उठे थे, और गणना म इनका कोई अन्त न था।

इतना ही नही, पहले अपने कामो से नख्लूदोव के मन में खीज उठा करती थी और वह क्षुब्ध हो उठता था। अब उसे अपने कामो से खुशी मिलती थी।

इस समय जो काम नेख्लूदोव कर रहा था उसे तीन हिस्सो मे बाटा जा सकता था। उसकी आदत थी कि छोटे से छोटा काम भी बडी बारीकी और नियमानुसार करता था। इसी आदतवश अब भी उसने स्वय अपने कामो को यो बाट रखा था और तदनुसार, प्रत्येक काम से सम्बधित कागजो को भी तीन अलग अलग बस्तो मे रखा था।

इनमे सबसे पहले काम था सम्बन्ध मास्लोवा मे था। इसम मुख्य काम ज़ार के नाम दी गई दरख्वास्त के लिए सहायता प्राप्त करना था और साथ ही सभावित साइबेरिया-यात्रा के लिए तैयारी करना था।

दूसरा काम ज़मीन जायदाद के मामलो की व्यवस्था से सम्बन्धित था। नेख्लूदोव ने अपनी पानोवो वाली ज़मीन किसानो को इस शत पर दी थी कि जो रकम वे लगान के रूप में देंगे उसे उन्ही के सामूहिक हित के कामो पर खच किया जायेगा। परन्तु एक कानूनी दस्तावेज़ द्वारा इस प्रबन्ध को पक्का करना ज़रूरी था। इसी के अनुसार उसे अपना दान-पत्र भी तैयार करना था। कुज़मिन्स्कोये म अब भी वही व्यवस्था थी जिसे उसन पहले चालू किया था, कि वह लगान वसूल करेगा। लेकिन इस सम्बन्ध मे शर्तों का फैसला अभी नही हुआ था। यह भी निश्चय करना बाकी था कि वसूली के रुपय मे से कितनी रकम वह अपने जीवन निर्वाह के लिए निकाला करेगा और कितनी किसानो के हित के लिए अलग रख देगा। उसने सारी की सारी आय को छोड दने का अभी फैसला नही किया था, क्योकि उसे मालम नही था कि साइबेरिया की यात्रा पर कितना खच होगा। लेकिन उसने इस आय म आधे की कमी कर देने का ज़रूर निश्चय कर लिया था।

तीसरे उन कैदियो की मदद करना था जिनकी ओर से उसे अधिकाधिक सख्या म दरख्वास्ते आ रही थी।

पहले पहल जब वह कैदियो से मिला और व उससे मदद के लिए याचना करने लगे तो नेख्लूदोव फौरन् हर कैदी का काम करने के लिए चल पडता, ताकि उसके जीवन की कठिनाइया कुछ कम हो सकें। लेकिन शीघ्र ही इतनी अधिक सख्या मे दरख्वास्त आने लगी कि उन सबकी ओर ध्यान देना उसकी सामथ्य से बाहर की बात हो गयी। इसी स्थिति के परिणामस्वरूप वह एक नये प्रकार के काम मे हाथ लगाने लगा और इसम उसकी रुचि उत्तरोत्तर बढने लगी, यहा तक कि पहल सभी कामो मे भी इतनी नही हो पायी थी।

यह नया काम था इन प्रश्नो का समाधान करना कि ज़ाब्ता फौजदारी नाम की यह अनोखी सस्था वास्तव म है क्या जिसके कारण यह जेलखाना बना, जिसके बहुत से कैदियो के बारे मे वह कुछ न कुछ जान गया था। यह जेलखाना ही नही, अन्य कितने ही ऐसे स्थानो के—पीटसबग मे स्थित

पीटर-पॉल के किले से लेकर सखालिन द्वीप तक जहा इस जान्ता फौजदारी के शिकार, सैकडा-हज़ारो कैदी अपनी जान ताड रहे थे। उम यह सस्था वडी विचित्र लगती थी। यह क्याकर वनी? इसका उदगम कहा म हुआ?

कैदियो के साथ उसका व्यक्तिगत मम्पर्क था। उसन कैदिया का फेहरिस्ते देखी थी। इस विपय पर वकील से, जेलखाने क पादरी तथा इस्पेक्टर से कई सवाल पूछे थे। इस तरह जितनी भी जानकारी उसे प्राप्त हुई थी उसके आधार पर वह इस नतीजे पर पहुचा कि कैदिया को—तथाकथित मुजरिमो का—पाच श्रेणिया मे वाटा जा सकता है।

पहली श्रेणी मे वे मुजरिम शामिल थे जो सवथा निर्दोष थे, लेकिन जिन्ह अदालती भूलो के कारण सजा दे कर यहा वन्द कर रखा था। इन्ही मे मेशोव मा वेटा, मास्लोवा तथा अन्य कैदिया की गणना की जा सकती थी। ऐसे कैदियो की सख्या बहुत नही थी—पादरी के अनुमानानुसार सात प्रतिशत से अधिक न होगी—लेकिन उनकी स्थिति विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करती थी।

दूसरी श्रेणी मे वे कैदी आते थे जिन्होने विशेप परिस्थितिया म जसे उन्माद, ईर्ष्या या नशे की हालत मे जुर्म किये थे। ऐसी परिस्थितिया थी जिनमे वे न्यायाधीश भी जरूर जुर्म कर सकते थे जिन्होने इन्ह सजा दे कर यहा डाल दिया था। अपने निरीक्षण के आधार पर नेख्लूदोव कह सकता था कि कुल कैदियो मे से ५० प्रतिशत इसी श्रेणी के अन्तर्गत आ जाता था।

तीसरी श्रेणी मे वे कैदी शामिल थे जिन्होने जुर्मो को जुर्म समझ कर नही किया, वल्कि यह समझ कर कि वे पूर्णतया स्वाभाविक तथा उचित काम थे। परन्तु कानून वनाने वालो की दष्टि मे उन्ह जुर्म समझा जाता था। इन कैदियो म ऐसे लोगो की गणना की जा सकती थी जो लाइसेंस के विना शराब वना कर बेचते, बिना महसूल अदा किये, छिप-लुक कर माल बेचते, वडी बडी जागीरो तथा सरकारी जगला म से घास और लकडी काट लाते पहाडा पर रहने वाले डाकू तथा ऐसे नास्तिक लोग जो गिरजो को लूटा करते ह।

चौथी श्रेणी म व कैदी शामिल थ जिन्ह केवल इसलिए जेल म डाल दिया गया था कि वे नैतिक दृष्टि से जनसाधारण स ऊचे थे। इनम धार्मिक सम्प्रदाई, पोलैंड तथा चेर्केसिया के देशभक्त शामिल थे जो अपने अपने

देश के लिए पुन स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए विद्रोह कर रहे थे। इन्ही म राजनीतिक बंदी, समाजवादी तथा हडताले करने वाले लोग शामिल थे। नख्लूदोव के निरीक्षण के आधार पर इस व्यक्तियों की सख्या काफी अधिक थी, इनम कुछ तो ऐसे थे जिन्ह समाज क सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति कहा जा सकता है। इन लोगो को इसलिए सजा दी गई थी कि उन्होने अधिकारियो का विरोध किया था।

पाचवी श्रेणी उन लोगो की थी जिनक अपन पाप इतन बडे नही थ जितने वे पाप जो समाज न उन पर किये थे। ये वे लोग थ जिन्ह समाज ने ठुकरा दिया था, जो निरन्तर उत्पीडन तथा प्रलोभन क चगुल म उद्भ्रान्त से घूमते थे, जसे वह लडका जिसन चटाइया चुरायी थी। इस जसे सैकडो लोगो को नेख्लूदोव न न केवल जेलखान र अन्दर बल्कि बाहर भी देखा था। जिन परिस्थितियो म य लोग रहत थ वही उन्ह क्रमश ऐसे काम करने पर बाध्य करती थी जिन्ह जुर्म का नाम दिया जाता है। नख्लूदोव का अनुमान था कि इस श्रेणी म बहुत सी सख्या म चोर कार ह त्यार इत्यादि शामिल हैं। इनम स कुछेक हाल ही म उसक सम्पक म आये थे। इसी श्रेणी म वह उन लोगो की भी गणना करता था जिन्ह अपराध शास्त्र की नयी प्रणाली के अनुसार पतित तथा आचार-भ्रष्ट व्यक्ति कहा जाता है। मुख्यत इन्ही लोगो की उपस्थिति का हवाला द कर ही यह साबित करने की कोशिश की जाती थी कि जाब्ता फौजदारी तथा सजा आवश्यक हैं। नेख्लूदोव का विचार था कि यही वे तथाकथित पतित आचार भ्रष्ट तथा विकार-ग्रस्त लोग हैं जो समाज के पापो का शिकार बनत हैं। केवल अन्तर इतना ही था कि उन पर सीधा अत्याचार करने क बजाय समाज न इनके माता पिताओ तथा पुरखाओ पर अत्याचार किये थे।

इस पाचवी श्रेणी के लोगो म जिस आदमी न विशेष तौर पर नेख्लूदोव का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया वह था ओखोतिन नाम का एक पुराना चोर। किसी वेश्या का अवैध बालक, यह आदमी सरायो मे पल कर बडा हुआ था और तीस वष की उम्र तक प्रत्यक्षत इसे कोई ऐसा आदमी नही मिला था जिसके आचार विचार किसी पुलिस के सिपाही स बेहतर हो। छोटी उम्र म ही वह चोरो के एक दल म जा मिला था। इस आदमी मे हास्य भावना कूट कूट कर भरी थी, और इसी कारण उसका व्यक्तित्व बेहद आकषक था। इस आदमी ने भी नख्लूदोव से मिल कर बीच-बचाव

की प्रार्थना की और सारा वक्त वकीलो, जेलखान, तथा लौकिक और अलौकिक, सभी प्रकार के नियमो का और स्वय अपने आपका मजाक उडाता रहा। इसके अतिरिक्त फयोदोरोव नाम के एक दूसर आदमी ने भी नेख्लूदोव का ध्यान आकृष्ट किया। यह आदमी बेहद सुदर था, डाकुओ के एक दल का सरदार था, और अपने दल के अन्य डाकुओ के साथ एक वयोवद्ध सरकारी अफसर की हत्या कर चुका था। यह आदमी एक किसान का बेटा था, जिससे उसका घर बडे अवैध ढग से छीन लिया गया था। बाद में वह फौज मे भर्ती हो गया, और वहा पर भी अपने अफसर की रखल के साथ प्रेम करन के कारण उसे बहुत कष्ट झेलने पडे। यह आदमी स्वभाव से ही रसिक था। जीवन का आनन्द भोगन की इसम उन्मत्त अभिलाषा थी। जीवन मे उसे कभी कोई ऐसा आदमी नही मिला था जो आत्मनियन्त्रण मे विश्वास रखता हो, न ही उसने कभी सुना था कि जीवन मे आनन्दभोग के अलावा कोई दूसरा उद्देश्य भी हो सकता है। जिस भाति पौधा की देखभाल न करने से वे गल-सड जाते है, उसी भाति ये व्यक्ति भी उपेक्षा के कारण पगु बन गये थे, हालाकि प्रकृति ने इन्हे बडी योग्यता दे कर भेजा था। नेख्लूदोव की भेट एक आवारा आदमी से भी हुई और उसी जैसी एक औरत से भी। दोनो परले दर्जे के जड-बुद्धि और देखने मे क्रूर थे—यहा तक कि नेख्लदोव को उनसे घणा होने लगी थी। पर इनमे भी उसे ऐसे कोई लक्षण नजर नही आये जिन्हे देख कर वह कह सकता कि वे "स्वभाव से ही अपराधी" है, और इस तरह इतालवी चिंतको के मत का समर्थन कर पाता। उसे वे केवल व्यक्तिगत रूप से घृणास्पद लगे उसी तरह जिस तरह जेल से बाहर अपन मिलने वाला म उसे वे आदमी घणास्पद लगते थे, जो दुमदार बढिया कोट पहने कधो पर झब्बे लगाये, और गोटा किनारी से सजे घूमते थे।

क्या कारण है कि विभिन्न प्रकार के इन व्यक्तियो को तो जेल मे डाल दिया गया है, और इन जैसे ही अन्य लोग बाहर स्वतन्त्र घूमते रहते हैं स्वतन्त्र ही नही, इनके ऊपर न्यायाधीश बन कर बैठते हैं? नेख्लूदोव इनकी तह म छिपे कारणो की खोज करना चाहता था। यह चौथा काम था जिसे उसने अपन ऊपर ले रखा था।

उसे आशा थी कि इस प्रश्न का उत्तर उस पुस्तको म मिल जायगा। अत इस विषय पर जितनी भी किताब उसे मिल सकी, वह खरीद लाया।

लोम्ब्रोसो, गेरोफालो, फेर्री, लिस्त, मॉडस्ले, ताद, इत्यादि लेखको के ग्रथ वह उठा लाया और बडे ध्यान से उन्हे पढने लगा। पर जितना ही अधिक वह उन्ह पढता, उतना ही अधिक निराश हो उठता। वह इन वैज्ञानिक पुस्तको को इसलिए नही पढ रहा था कि वह खुद विज्ञान मे कोई भमिका अदा करना चाहता था कुछ लिखना चाहता था, या वाद-विवाद करना चाहता था, या किसी को सिखाना चाहता था। वह तो केवल रोजमर्रा के जीवन से सम्बन्धित एक साधारण से प्रश्न का उत्तर खोज रहा था। इसी कारण उसे निराशा भी हुई। विज्ञान से जाब्ता फौजदारी से सम्बन्ध रखने वाले हजारो अन्य प्रश्नो के उत्तर मिल सकते हैं, जो अपने मे बडे जटिल और बारीक ह परन्तु जिस प्रश्न का उत्तर ढूढने की वह कोशिश कर रहा था वह उसे नही मिला।

प्रश्न बडा सीधा-सादा था क्या कारण है, कि कुछ लोग अन्य लोगो को जेल मे ठूसते हैं, उन्ह यन्त्रणाए पहुचाते हैं, कोडे लगाते हैं, उन्ह मौत के घाट उतारते है, जब कि वे स्वय उन जैसे ही होते है? उन्हे ऐसा करने का क्या अधिकार है? जवाब मे उसे लम्बे लम्बे प्रबन्ध पढने को मिलते कि मनुष्य मे सकल्प-स्वातन्त्र्य है या नही। मनुष्य की खोपडी को अगर मापे तो क्या पता चल सकता है कि अमुक व्यक्ति अपराधी है? अपराध मे वशानुगत गुणो का क्या हाथ होता है? क्या दुराचार की प्रवृत्ति वशानुगत हो सकती है? नैतिकता किसे कहते है? पागलपन क्या होता है? अध पतन क्या है? स्वभाव की क्या परिभाषा है? किस भाति जलवायु, खुराक, अज्ञानता, नकल करने की इच्छा सम्मोहन अथवा उन्माद से अपराध करने की प्रेरणा मिलती है? समाज और उसके कर्तव्य क्या हैं? इत्यादि।

इन प्रबन्धो को पढते हुए नेख्लूदोव को एक छोटे से बालक की बात याद आ गई। एक बार एक छोटा सा लडका स्कूल से घर लौट रहा था जब रास्ते म नेख्लूदोव की उससे भेंट हो गई। नेख्लूदोव ने उससे पूछा कि क्या तुमने हिज्जे करना सीख लिया है? "हा, कर सकता हू," लडके ने जवाब दिया। "अच्छा बताओ ता, 'टाग' के हिज्जे क्या ह?" "किसकी टाग के, कुत्ते की टाग के?" शरारत भरी नजर से नेख्लूदोव की ओर देखते हुए उसन पूछा। बस, अपने बुनियादी सवाल के जवाब म इन वैज्ञानिक पुस्तको से इसी तरह के उत्तर, प्रश्नो के रूप म नेख्लूदोव को मिले।

इनमे वेशक बहुत सी ऐसी बात थी जा विवेकपूण, विद्वत्तापूण तथा राचक थी। लेकिन मुख्य प्रश्न का उत्तर कि "कुछ नोगो का अय लोगो को सजा देने का क्यो अधिकार प्राप्त है?" इस प्रश्न का उत्तर उस नहा मिला। न केवल इसका उत्तर ही नही मिला, बल्कि जितने भी तर्क उसे पढने को मिले वे सभी सजा के हक मे सफाई देने और उस न्यायसगत बताने के लिए दिय गये थे। सजा की आवश्यकता को तो स्वत सिद्ध माना गया था।

नेख्लूदाव ने बहुत कुछ पढा, लकिन थाडा थाडा और अश अश कर के, और अपनी असफलता का कारण भी वह यही समझा कि ऊपरी ढग से पढता रहा है। उसे आशा थी कि बाद म उसे अपने प्रश्न का उत्तर मिल जायेगा, यही कारण था कि जो उत्तर उस दिन प्रतिदिन नजर आने लगा था, उसकी सत्यता मे विश्वास करने से वह हिचकिचा रहा था।

३१

सजायाफ्ता मुजरिमा की जिस टोली के साथ मास्लोवा का जाना था, उसे ५ जुलाई को रवाना हो जाना था। नेख्लूदोव ने भी उसी दिन चल पडने की तैयारी कर ली।

उससे एक दिन पहले नेख्लूदोव की बहिन, अपने पति के साथ, शहर मे उसे मिलने आ पहुची।

नेख्लूदोव की बहिन, नताल्या इवानोव्ना रागाजिन्स्काया, अपन भाई से दस साल बडी थी। बचपन मे किसी हद तक उसी क प्रभाव के नीचे वह बडा हुआ था। बहिन को अपने छोटे भाई से बडा प्यार था, और बाद मे, जब वह बडा हुआ तो वे एक दूसरे के और भी निकट आ गये मानो वे एक-समान हो। यह बहिन की शादी से पहले की बात है। बहिन की उम्र पचीस की थी और भाई पद्रह साल का था। उन दिना नेख्लूदोव का एक मित्र हुआ करता था जिसका नाम था निकोलका इर्तेनेव। बहिन का उससे प्रेम हो गया था। लेकिन यह लडका मर गया। दानो निकोलका को बडा चाहते थे। निकोलका मे, तथा एक दूसरे म उन्हे जो अच्छाई नजर आती थी उसमे वे प्रेम करते थे। इस अच्छाई मे प्रेम ही मनुष्या को एक दूसरे से मिलाता है।

परन्तु उसके बाद दोना ही चरित्रहीन हो गये थे। नेख्लूदोव फौज मे चला गया और वहा भ्रष्टाचार म डूब गया, बहिन ने विषय भोग की लालसा से प्रेरित हो कर एक ऐसे आदमी से शादी कर ली जिसे नैतिक श्रेष्ठता तथा लोक-सेवा जैसी महत्वाकाक्षाओ मे कोई रुचि न थी और न ही वह उनका मूल्य जानता था। किसी जमाने म यही भावनाए उसे और उसके भाई को अत्यन्त प्रिय थी, और वे इन्हे पवित्र मानते थे। लेकिन उसका पति यह समझता था कि ये केवल दिखावे के लिए तथा समाज मे आगे बढने की उत्कट आकाक्षा से प्रेरित हैं। उनकी यही एक व्याख्या उसकी समझ मे आ सकती थी।

नताल्या के पति के पास न तो धन-दौलत थी, और न ही उसे कोई जानता था। लेकिन अपने काम म वह बडा चतुर और मझा हुआ आदमी था। हवा का रुख पहचानता था। उदारवाद और रूढिवाद, दोनो मे से देख लेता था कि किस प्रवृत्ति का पक्ष किस समय और किस अवसर पर लेना चाहिए, और इस तरह बडी सफाई से अपना उल्लू सीधा कर लेता था। साथ ही स्त्रियो को वश म करने का उसम विशेष आकर्षण था। इस तरह वह काफी हद तक कामयाब वकील बन गया था। नेख्लूदोव से उसका परिचय विदेश म हुआ। तब वह यौवन पार कर चुका था। नताल्या पर उसने ऐसे डोरे डाले कि वह उस पर मुग्ध हो उठी। नताल्या की अपनी उम्र भी उस समय काफी ज्यादा हो चुकी थी। इस तरह दोनो की शादी हुई, हालाकि इस विवाह का नताल्या की मा ने विरोध किया क्योकि वह समझती थी कि यह mesalliance* है। नेख्लूदोव को अपने बहनोई से नफरत थी, हालाकि इस भावना को वह अपने आपसे भी छिपाता रहता था और उसे मन म से निकालने का भरसक प्रयत्न करता रहता था।

रागोजिन्स्की बडी नीच प्रकृति का आदमी था। कुछ इस कारण और कुछ उसकी दभपूर्ण सकीर्णता के कारण, नेख्लूदोव को उससे घृणा हो गई थी। पर घृणा का मुख्य कारण स्वय उसकी बहिन नताल्या थी। नेख्लूदोव समझ नही पा रहा था कि उसकी बहिन, यह जानते हुए भी कि उसका पति सकीर्ण प्रकृति का आदमी है, क्योकर उसके पीछे उन्मत्त हो उठी है, और क्योकर उसका प्रेम इतना स्वार्थी और इतना पाशविक हो उठा है। उसकी

---

*बेमेल विवाह (फ्रेंच)

खातिर वह अपनी आन्तरिक श्रेष्ठता का गला घोट रहा था। रागोजिन्स्की की चाद ऊपर से गजी हो रही थी और बदन पर बाल ही बाल थे। यह सोच कर ही कि उसकी बहिन इस दभी आदमी की पत्नी है, उसका हृदय क्षुब्ध हो उठता। यहा तक कि जब उनके बाल-बच्चे हुए तो वह उनसे भी घृणा किये बिना नही रह सका। और हर बार जब उसे मालूम होता कि उसकी बहिन के फिर बच्चा होने वाला है तो उसका हृदय शोकाकुल हो उठता। उसे ऐसा जान पडता जैसे फिर एक बार इस गैर आदमी ने उसकी बहिन को छूत की बीमारी दे दी है।

रागोजिन्स्की दम्पती अकेले मास्को आये थे। अपने दोनो बच्चो—एक लडका और एक लडकी—को वे घर छोड आये थे। मास्को म वे सबसे बढिया होटल मे आ कर ठहरे। पहुचते ही नताल्या अपनी मा के पुराने घर की ओर चल पडी। लेकिन वहा उसे आग्राफेना पेत्रोव्ना से पता चला कि उसका भाई घर छोड गया है और किराये पर कमरा ले कर रह रहा है। इस पर, गाडी मे बैठ वह उस ओर चल दी। एक अधेरे, घुटन भरे बरामदे मे जिसमे एक लैम्प दिन भर टिमटिमाता रहता था उसे एक मला कुचैला नौकर मिला। उससे उसे पता चला कि प्रिस घर पर नही है।

नताल्या ने भाई के कमरे देखने की इच्छा प्रकट की और कहा कि वह उसके लिए एक चिट्ठी लिख कर छोड जाना चाहती है। नौकर उसे नेख्लूदोव के कमरो मे लिवा ले गया।

दो छोटे छोटे कमरो म उसका भाई रहता था। नताल्या ने बडे ध्यान से उनमे रखी एक एक चीज को देखा। हर चीज साफ-सुथरी और करीने से रखी थी। नताल्या जानती थी कि उसके भाई को स्वच्छता और व्यवस्था से विशेष प्रेम है। लेकिन जिस चीज ने सबसे अधिक उसे प्रभावित किया वह एक प्रकार की अनूठी सादगी थी, जिसकी झलक हर चीज मे मिलती थी। लिखने के मेज पर वही पुराना कागज-दाब रखा था जिसे वह अच्छी तरह जानती थी, जिसके ऊपर कासे का कुत्ता बना हुआ था। लिखने का सामान तथा वस्तु उसी तरह, सुपरिचित व्यवस्था के साथ रखे थे। फासीसी भाषा म लिखी, ताद की एक किताब मे उसका जाना-पहचाना हाथी दात का लम्बा तिरछी नोक वाला चाकू निशानी के तौर पर रखा था। इसी पुस्तक के साथ दण्ड के विषय पर बहुत सी किताबें रखी थी, और हैनरी जार्ज की एक अग्रेजी पुस्तक भी थी।

मेज के सामने बैठ कर उसने भाई को पत्र लिखा कि आज ही मुझे मिलने के लिए आओ, भूलना नही। फिर कमरो को एक नजर से देख कर, आश्चय से सिर हिलाती हुई, वह अपने होटल वापस चली गई।

अपने भाई के सम्बध मे नताल्या का ध्यान इस समय दो प्रश्नो पर केंद्रित था, एक तो कात्यूशा के साथ उसके विवाह के प्रश्न पर। इसकी खबर उसे अपने शहर मे मिल गई थी—सभी लोग इसकी चर्चा करने लगे थे। दूसरा, किसानो को अपनी जमीन दे देने के बारे म। इसकी भी चर्चा लोगो मे चल रही थी, और कई लोगो को इसमे राजनीति की गध आती थी, और इसलिए वे इसे बडी खतरनाक हरकत समझते थे। कात्यूशा के साथ उसके शादी करने पर तो वह एक तरह से खुश थी। इससे नेख्लूदोव की जिस दृढता का पता चलता था, वह भाई-बहिन दोनो के आचार म पाई जाती थी, विशेषकर उन हसी-खुशी के दिनो मे जब अभी नताल्या का ब्याह नही हुआ था। परन्तु जब वह कात्यूशा के बारे मे सोचती तो उसका मन सिहर उठता, कि भाई कैसी भयानक औरत से शादी करने जा रहा है। इन दोनो भावनाओ मे से पिछली भावना अधिक प्रबल थी, और उसने निश्चय कर लिया कि भाई को इस ब्याह से दूर रखने के लिए वह एडी-चोटी का जोर लगा देगी, हालाकि मन ही मन वह जानती थी कि इसमे सफलता प्राप्त करना आसान नही होगा।

जहा तक दूसरे मामले का सवाल था—किसानो को जमीन देने का—नताल्या ने इसकी बहुत परवाह नही की। परन्तु उसके पति का यह बहुत बुरा लगा था और वह चाहता था कि उसकी पत्नी अपने भाई को यह कदम उठाने से रोके। रागोजिन्स्की का कहना था कि इस हरकत से नेख्लूदोव की अस्थिरता, सनकीपन और दम का पता चलता है, कि वह यह काम दिखावे के लिए कर रहा है, ताकि लोग उसकी चर्चा कर और कह कि देखो कितना असाधारण आदमी है।

"इसमे क्या तुक है कि जमीन किसानो को इस शत पर दी जाय कि वे लगान की अदायगी खुद को करे?" उसने कहा। "अगर वह जमीन देना चाहता ही है तो किसान बैंक की मार्फत उनको बेच ही क्यो नही देता? इसका तो कुछ मतलब भी होता। इससे तो पता चलता है कि वह सचमुच नीम-पागल हो गया है।"

अब रागोजिन्स्की बडी सजीदगी के साथ यह सोचने लगा था कि उसे

नेख्लूदोव का अभिभावक बन जाना चाहिए, और इसलिए अपनी पत्नी से अपेक्षा करता था कि वह अपने भाई से इस विचित्र योजना के बारे में पूरी गंभीरता से बात करे।

३२

शाम को घर लौटने पर जब नेख्लूदोव को अपनी बहिन का चिट्ठा मिली तो वह उसी वक्त उसे मिलने चल पड़ा। जब से मां की मृत्यु हुई थी वे एक दूसरे से नही मिले थे। नताल्या कमरे मे अकेली बैठी थी, उसका पति बगल वाले कमरे मे आराम कर रहा था। नताल्या ने काले रंग की चुस्त रेशमी पोशाक पहन रखी थी, और गले पर लाल "बो" लगा रखी थी। उसके बाल काले थे और नये से नये फैशन के मुताबिक कुण्डल बना कर काढे हुए थे। उम्र मे वह अपने पति जितनी थी। इसलिए साफ दिख रहा था कि उसे खुश रखने के लिए वह बन-सवर कर रहने की अत्यधिक कोशिश करती है।

भाई को देखते ही वह उछल कर खडी हो गई और भाग कर उसे मिलने के लिए आगे बढ आई। उसकी रेशमी पोशाक सरसरा उठी। दोनो ने एक दूसरे को चूमा और मुस्करा कर एक दूसरे की ओर देखते रहे। इस रहस्यपूर्ण नजर मे एक ऐसा तत्व, एक ऐसी सचाई छिपी थी जो बयान से बाहर है। इसके बाद होठो पर शब्द आये, परन्तु इनमे वैसी सचाई न थी।

"तुम तो पहले से भी अधिक स्वस्थ और छोटी नजर आती हो!" नेख्लूदोव ने कहा।

खुशी से बहिन ने होठ सिकोडे।

"तुम कुछ दुबले हो गये हो।"

"और सुनाओ, तुम्हारे पति कैसे है?" नेख्लूदोव ने पूछा।

'वह आराम कर रहे है। रात भर सो नही पाये।"

कहने को कितना कुछ था। पर दिल की बात होठो पर नही आ पाती थी। लेकिन आखो ही आखो से वे बहुत कुछ एक दूसरे को कह रहे थे।

'मैं तुम्हारे यहा गई थी।"

"हा, मुझे मालूम है। मैंने अपना घर छोड दिया क्योंकि मेरे लिए वह बहुत बडा था। मैं बिल्कुल अकेला वहा रहता था, और मुझे बडी ऊब उठनी थी। वहा जो कुछ भी रखा है, अब मेरे किसी काम का नही। तुम सब ले लो, मेरा मतलब है, फर्नीचर और ऐसी चीज़े।'

"हा, आग्राफेना पेत्राव्ना ने मुझसे कहा था। मैं वहा गई थी। शुक्रिया, लेकिन "

उसी वक्त होटल का बेरा चादी के सैट म चाय ले कर आया।

जितनी देर वह मेज़ पर चाय लगाता रहा, दोनो चुप रहे। उसके चले जाने के बाद नताल्या मेज पर गई और चुपचाप चाय बनाने लगी। नेख्लूदोव भी चुप था।

आखिर नताल्या ने दढता से बात शुरू की—

"दमीत्री, मुझे सारी बात का पता चल गया है।" कह कर वह उस के चेहरे की ओर देखने लगी।

"तो क्या हुआ? मुझे इस बात की ख़ुशी है कि तुम्हे पता चल गया है।"

"उसका जैसा जीवन रहा है, क्या उसके बाद भी तुम उसे सुधारने की आशा करते हो?" उसने पूछा।

नेख्लूदोव छोटी सी कुर्सी पर सीधा बैठा था, और बडे ध्यान से अपनी बहिन की बात सुन रहा था, ताकि उसे ठीक ठीक समझ सके और उसका ठीक ठीक उत्तर दे सके। मास्लोवा से आखिरी मुलाकात के बाद उसका मन शान्त और आह्लादपूर्ण हो उठा था, और सकल प्राणीमात्र के प्रति सद्भावना से भर उठा था। वह मन स्थिति अभी तक बनी हुई थी।

"मैं उसका नही, अपना सुधार करना चाहता हू," उसने जवाब दिया।

नताल्या ने उसास भरी।

"तो यह शादी के बिना भी किया जा सकता है।"

"पर मेरे विचार मे शादी सबसे अच्छा तरीका है। इसके अलावा, मैं ऐसे लोगो के बीच रहने लगूगा जिनकी मैं कुछ सेवा कर सकता हू।"

"मुझे विश्वास है कि इससे तुम्हे सुख नही मिलेगा," नताल्या ने कहा।

"मेरे सुख का यहा कोई सवाल ही पैदा नही होता।"

"बेशक, लेकिन यदि उस औरत के सीने मे दिल है, तो वह सुखी नही हो सकती। वह इसकी इच्छा तक नही कर सकती।"

"वह शादी करना नही चाहती।"

"मै समझ सकती हू। परन्तु जीवन "

"हा तो, जीवन?"

"जीवन की कुछ और ही माग होती है।"

"जीवन की एक ही माग होती है और वह यह कि हम ठीक काम करे," नताल्या के चेहरे की ओर देखते हुए नेख्लूदोव न कहा। नताल्या का चेहरा अब भी ख़ूबसूरत था, हा, आखो और मुह के आस पास हल्की हल्की रेखाए पडने लगी थी।

'मै तुम्हारा मतलब नही समझी," उसन उसास भरते हुए कहा।

"हाय, यह मेरी प्यारी बहिन कितनी बदल गई है," नेख्लूदोव सोच रहा था। उसे वे दिन याद आ गये जब अभी नताल्या की शादी नही हुई थी। तब यह कैसी हुआ करती थी। उसका दिल मधुर भावनाओ स भर उठा जिसमे बचपन की कितनी ही स्मृतिया गुथी थी।

उसी वक्त रागोजिन्स्की ने कमरे मे प्रवेश किया। छाती फुलाए, सिर पीछे को फेंके हुए वह अपनी आदत के मुताबिक हल्के हल्के, और धीमे धीमे कदम रखता हुआ चला आ रहा था। उसकी आखें, चश्मा, गजी चाद, स्याह दाढी, सभी चमक रहे थे।

"कहो भाई मिज़ाज तो अच्छा है?" "मिज़ाज तो अच्छा है?" शब्दो पर विशेष बल देत हुए उसने कहा।

दोनो ने हाथ मिलाये। बिना किसी किस्म की आहट किये रागोजिन्स्की आराम-कुर्सी मे धस कर बैठ गया।

"मैं आप लोगो की बातो मे खलल तो नही डाल रहा हू?"

"नही, मैं किसी से भी छिपा कर कुछ कहना या करना नही चाहता।"

नेख्लूदोव की नज़र उसके हाथो पर गई जिन पर बहुत अधिक बाल उग रहे थे। साथ ही कानो म उसकी कृपालुता और दभपूर्ण आवाज़ पडी। उसी क्षण नेख्लूदोव का दब्बूपन जाता रहा।

"हा, हम यही बाते कर रहे थे कि भाई क्या करना चाहता है,' नताल्या बोली, "आप चाय लेगे न?' चायदानी पर हाथ रखते हुए उसने पूछा।

"हा। कौन सी खास बात यह करना चाहते हैं?"

"मेरा इरादा कैदियो की एक टोली के साथ साइबेरिया जाने का है। इस टोली म एक औरत है जिसके साथ मैंने बडा अन्याय किया है," नख्लूदोव ने कहा।

"मैंने तो कुछ और भी सुना है। तुम उसके साथ जाना ही नही चाहत हो बल्कि कुछ और भी करने का इरादा रखते हो।"

"हा, यदि उसकी इच्छा हुई तो उसके साथ शादी भी करूगा।"

"खूब! लेकिन अगर बुरा न मानो तो क्या मैं इसका कारण जान सकता हू? मेरी समझ मे यह बात बैठ नही रही है।"

"कारण यही है कि इस स्त्री ... इस स्त्री का अध पतन जब शुरू हुआ ..." नख्लूदोव को उपयुक्त शब्द नही मिल रहे थे, और उसे अपने आप पर गुस्सा आ रहा था, "कारण यह है कि वास्तव म अपराधी मैं हू, लेकिन सजा उसे दी जा रही है।"

"यदि उसे सजा दी जा रही है तो वह भी निर्दोष नही हो सकती।"

"वह बिल्कुल निर्दोष है।"

और नेख्लूदोव ने अनावश्यक उत्तेजना के साथ सारा किस्सा कह सुनाया।

"हा, प्रधान जज न इस मामले मे लापरवाही की, और नतीजा यह हुआ कि जूरी ने भी उलटा-सीधा जवाब दे दिया। पर इस किस्म के मामले सेनेट तक ले जाये जा सकते है।"

"सेनेट न अपील खारिज कर दी है।"

"अगर सेनेट ने अपील खारिज कर दी है तो जाहिर है अपील कमजोर होगी।" प्रत्यक्षत और लोगो की तरह रागोजिन्स्की का भी यही मत था कि सचाई का जन्म अदालती फैसलो से होता है। "सेनेट का काम मुकद्दमे के गुण-दोष पर विचार करना नही है। अगर सचमुच कोई भूल हुई है तो जार के सामने दरख्वास्त देनी चाहिए।"

"दरख्वास्त दी गई है लेकिन सफलता की कोई आशा नही। वे लोग मन्त्रालय से पूछेगे और वे लोग सेनेट से पूछेंगे और सेनेट अपना निर्णय दोहरा देगा, और जसा हमेशा होता है, निरपराध लोगो को सजा मिल जायेगी।"

"पहली बात तो यह कि मन्त्रालय वाले सेनेट की सलाह नही लगे,"

कृपालुता भरी मुस्कराहट के साथ रागोजिन्स्की ने कहा। "वे अपीलत से असल कागजात मगवाने का हुक्म देगे, और अगर देखेगे कि सचमुच भूल हुई है तो वह उसी के अनुसार अपना फैसला देगे। दूसरी बात यह कि निर्दोष लोगो को कभी भी सजा नही दी जाती। या मिनती भी है तो बहुत ही विरले, किसी विशेष स्थिति मे। हमेशा अपराधियो को सजा दी जाती है," रागोजिन्स्की ने जोर दे कर कहा और उसके होठो पर आत्मतुष्टि की मुस्कान खेलने लगी।

"और मैं पक्की तरह से जानता हू कि बात इसके बिल्कुल उलट है," नेख्लूदोव ने कहा। उसके हृदय मे अपने बहनोई के प्रति द्वेष की भावना उठ रही थी। "मुझे यकीन है कि जितने लोगो को सजा मिलती है, उनमे से अधिकाश निर्दोष होते हैं।"

"किन मानो मे निर्दोष होते ह?"

"इस शब्द के असल मानो मे। जिस तरह इस औरत न किसी को जहर नही दिया और निर्दोष है उसी तरह वे भी निर्दोष होते हैं। जिस तरह उस किसान ने, जिसे मैं अभी अभी मिला हू, किसी की हत्या नही की और निर्दोष है, उसी तरह वे भी निर्दोष होते हैं। एक मा और बेटे को आग लगाने के जुर्म मे सजा मिलने जा रही है। सच यह है कि आग घर के मालिक ने खुद लगाई। जिस तरह इन लोगो का कोई दोष नही, वे लोग भी निर्दोष होते है।"

"इसमे क्या है, अदालतो मे हमेशा गलतिया होती रहती हैं और होती रहगी। हुआ क्या, आखिर इन्सान ही इन सस्थाओ मे काम करते है, य पूणतया निर्दोष कैसे हो सकती है।"

"यही नही, बहुत से ऐसे लोगो को सजा दी जाती है जिन्होने अनजाने मे जुर्म किये होते हैं। दरअसल जिन लोगो के बीच वे रहते है, उनमे ऐसे कामो का बुरा नही समझा जाता।"

"माफ करना यह तुम बिल्कुल गलत बात कह रहे हो। चोर को अच्छी तरह *मालूम होता है कि चोरी करना बुरा है, कि हम* चोरी नही करना चाहिए, यह पाप है," रागोजिन्स्की ने कहा। उसके होठो पर वही पहले सी शात, दभपूर्ण, कुछ कुछ घृणा भरी मुस्कान आई, जो खास तौर पर नेख्लूदोव को बुरी लगी। वह खीज उठा।

"नही, वह नही जानता। उसे कहा जाता है 'चोरी मत करो' लेकिन

वह देखता है कि फक्टरी का मालिक उसे कम पगार दे कर उसकी मेहनत चुराता है। सरकार, सारा वक्त तरह तरह के टैक्स लगा कर, अपने अफसरा द्वारा उसका धन चुराती रहती है।"

"यह ता अराजकतावाद है," रागाजिस्की न उसी तरह धीमी आवाज म अपने साले क शब्दा को व्याख्याबद्ध करते हुए कहा।

"मैं नही जानता इसे क्या कहत हैं, मै ता इतना जानता हू कि होता क्या है," नस्लूदाव कहता गया। "उस मालूम है कि सरकार उसका धन लूट लेती है। वह जानता है कि हम जमींदार लाग उस मुद्दत स लूट रहे है, हमने उसकी ज़मीन चुरा ली है, वह ज़मीन जिसे सबकी साझी मिल्कियत होना चाहिए। अगर बाद म, उसी ज़मीन पर से जा हथिया ली गई है अगर वह कभी लकडी की खपच्चियां और टुकडे बटोर कर ले आता है ताकि उनसे आग जला सके तो उस जेल म डाल दिया जाता है, और उसे समझान की काशिश की जाती है कि वह चोर है। वह बेशक जानता है कि वह चोर नही है, कि वास्तव म वे लोग चोर हैं जिन्हान उसकी ज़मीन उससे लूट ली है। अगर वह अपनी ही ज़मीन पर से कुछ उठा कर ले आता है ता यह उसका अपन परिवार के प्रति कर्तव्य है।"

"मैं तुम्हारी बात नही समझ सकता। और यदि समझता भी हू ता उससे सहमत नही हो सकता। ज़मीन का काई ता मालिक हागा? अगर तुम उस बाट दो " रागाजीस्की ने धीमे धीमे कहना शुरू किया। उसे विश्वास था कि नस्लूदोव समाजवादी है, और समाजवाद के अनुसार ज़मीन का समान रूप स बटवारा किया जाता है। और ऐसा करना निपट मूर्खता होगी। इसे वह बडी आसानी से साबित कर सकता है। "आज अगर तुम ज़मीन को बराबर बराबर हिस्सो मे बाट भी दा तो कल फिर ज़मीन उन लोगा के हाथ म चली जायगी जा सबमे अधिक मेहनती तथा कुशल हैं।"

"ज़मीन को बराबर हिस्सा म बाटने की बात काई नही सोच रहा है। ज़मीन किसी की भी मिल्कियत नही होनी चाहिए। यह ऐसी चीज नही है जिस बेचा या खरीदा जाय या लगान पर दिया जाय।"

'सम्पत्ति का अधिकार मनुष्य का जन्मजात अधिकार है। अगर यह न होगा ता खेती करने की प्रेरणा ही न रहगी। सम्पत्ति अधिकार का आप हटा दें तो हम फिर बबरता के स्तर पर जा पहुचेंगे," बडे अधिकारपूण

स्वर म रागोजिन्स्की ने कहा। भूमि के निजी स्वामित्व के पक्ष म यही तक बार बार दिया जाता है। और समझा जाता है कि यह अकाट्य तक है। यह तक इस अनुमान पर आधारित है कि चूंकि मनुष्य म सम्पत्ति ग्रहण करने की इच्छा होती है इसलिए यह मानिम हुआ कि मनुष्य का सम्पत्ति ग्रहण करने का अधिकार है।

"नही नही, बल्कि स्थिति इसके उलट होगी। जब जमीन किसी की मिल्कियत म नही रहेगी तो वह खाली भी नही रहेगी, जसे कि आजकल पडी रहती है। जमीदार लोग ज द तो काश्त करना जानते नहीं, जो लोग जानते ह उ ह भी हाथ नही लगाने देते। न करना, न करने देना।"

"कैसी बहकी हुई बात कर रहे हो, दमीत्री इवानोविच! क्या आज के जमाने मे भूस्वामित्व को तुम खत्म कर सकते हो? मुझे मालूम है कि मुद्दत से यह सनक तुम्हारे सिर पर सवार है। लेकिन मैं साफ साफ तुम्हें कह देना चाहता हू " रागाजिन्स्की का चेहरा पीला पड गया और होठ कापने लगे। प्रत्यक्षत इस सवाल ने उसे निजी तौर पर उद्वेलित कर रखा था। "मैं यह जरूर कहूगा कि इसे व्यावहारिक रूप देन से पहले तुम इस सवाल पर अच्छी तरह सोच लो।"

"क्या आप मेरे निजी मामलो के बारे मे कह रहे हैं?"

"हा। जिन विशेष परिस्थितियो म हम लोग रहत हैं, उनकी जिम्मेवारिया भी हम पर आयद होती हैं। जिस स्थिति मे हमारा जन्म हुआ है वह हमारे पुरखाओ की देन है। हमारा कतव्य है कि हम अपनी विरासत सभाल कर रखे और जाते समय अपने बच्चो को सौप कर जायें।"

"मेरा कतव्य "

"माफ करना," रागोजिन्स्की ने नेख्लूदोव को बीच मे बोलने की मनाही करते हुए कहा। "मैं अपनी या अपने बच्चो की खातिर यह बात नही कह रहा हू। मेरे बच्चो की स्थिति सुरक्षित है। मेरी आमदनी अच्छी खासी है जिससे हम आराम से ज़िन्दगी बसर कर सकत हैं। और मुझे उमीद है कि मेरे बच्चे भी इसी तरह रहते रहेंगे। मैं जो तुम्हारे इस काम के बारे मे चिन्तित हू तो किसी निजी लाभ की खातिर नही। माफ करना, तुम यह कदम सोच-समझ कर नही उठा रहे हो। मेरा सिद्धान्तत तुमसे मतभेद है। तुम्ह इस बारे मे और सोचना विचारना चाहिए, पढना चाहिए "

"माफ कीजिये, मैं अपने काम मे किसी का हस्तक्षेप नही चाहता।

मुझे क्या पढना चाहिए और क्या नही पढना चाहिए, इसका फैसला मैं खुद कर सकता हू," नेख्लूदोव ने कहा। उसका चेहरा पीला पड गया। उसे महसूस हुआ जैसे उसके हाथ ठण्डे पडने लगे हैं और उसका मन बेकाबू होता जा रहा है। वह चुप हो गया और चाय पीने लगा।

३३

"कहो, बच्चे कैसे है?" मन कुछ स्थिर हुआ तो नेख्लूदोव ने बहिन से पूछा।

बहिन ने बताया कि बच्चे अपनी दादी के पास हैं। उसने चैन की सास ली कि दोनो मे बहस खत्म हो गई है। वह सुनाने लगी कि उसके बच्चे भी बिल्कुल वही खेल खेलते है जो बचपन म नेख्लूदोव खेला करता था—वह भी एक बगल मे एक गुडिया दबा लिया करता था और दूसरी म दूसरी, एक हबशी की और दूसरी जिसे वह फ्रासीसी औरत कहा करता था, और दोनो को ले कर कहता था कि मैं सफर पर जा रहा हू।

"क्या सचमुच तुम्ह यह सब याद है?" नख्लूदोव न मुस्करा कर पूछा।

'हा तो। और ख्याल करो, वे खेलते भी बिल्कुल तुम्हारी तरह है।"

अप्रिय वाद विवाद समाप्त हो चुका था, और नतात्या आश्वस्त अनुभव करन लगी थी। लकिन वह अपने पति की उपस्थिति मे भाई के साथ ऐसी बातो की चर्चा नही करना चाहती थी, जिन्ह केवल वही समझ सकता हो। इसलिए किसी ऐसे विषय पर बात शुरू करने की इच्छा से, जिसम सबकी रुचि हो उसने कामेन्स्की की मा का जिक्र छेड दिया कि बेचारी कितनी दुखी है। उसका इकलौता बेटा द्वन्द्व युद्ध म मारा गया था। पीटसबग का यह लोकप्रिय विषय अब मास्को तक पहुच गया था।

रागोजिन्स्की कहने लगा कि मुझे यह स्थिति कतई पसन्द नही है कि एक आदमी द्वन्द्व युद्ध म किसी को मार डाले और उसे साधारण मुजरिम न करार दिया जाय।

नख्लूदोव ने फौरन इसका प्रतिवाद किया और दोनो म फिर उसी विषय को ले कर बहस छिड गई। बहस म किसी बात का भी खोल कर नही समझाया गया। प्रतिद्वन्द्वियो के मन म क्या है, वह भी उन्होने पूरी तरह नही बताया केवल अपन अपने विश्वास पर अडे रहे और एक दूसर के मत की निन्दा करते रहे।

रागोजिन्स्की को महसूस हुआ जैसे नेख्लूदोव उसकी निन्दा कर रहा है, जैसे उसके कामकाज से उसे घृणा है। वह उसे दिखा देना चाहता था कि उसके विचार सर्वथा अन्यायपूर्ण हैं। दूसरी तरफ नेख्लूदोव इस बात से खीज उठा था कि उसका बहनोई ज़मीन के मामले में दखल दे रहा है (अन्दर ही अन्दर वह जानता था कि उसकी बहिन, बहनोई और उनके बच्चे उसकी जमीन-जायदाद के उत्तराधिकारी हैं, और इस नाते उनका एतराज़ करना असंगत नहीं है)। उसे गुस्सा था कि यह संकीर्ण मन का आदमी किस आत्मविश्वास के साथ उन बातों को बार बार न्यायपूर्ण और उचित कहे जा रहा है जब कि नेख्लूदोव निश्चित तौर पर जानता है कि वे सर्वथा अनुचित और अन्यायपूर्ण हैं। उसके स्थिर आत्मविश्वास को देख कर नेख्लूदोव मन ही मन कुढ़ रहा था।

"कानून क्या कर सकता था?" उसने पूछा।

"कानून यह कर सकता था कि द्वन्द्व युद्ध लड़ने वालों में से एक को कड़ी मशक्कत की सज़ा दे कर खानों में भेज देता, जिस तरह साधारण हत्यारे को भेजा जाता है।"

नेख्लूदोव के हाथ फिर ठण्डे पड़ने लगे।

"उसका क्या लाभ होता?" उसने तुनक कर पूछा।

"यह इन्साफ होता।"

"जैसे इन्साफ करना कानून का मकसद हो," नेख्लूदोव बोला।

"अगर यह नहीं तो और कौन सा मकसद है?"

"कानून का मकसद वर्ग हितों की रक्षा करना है। मैं समझता हूं कि कानून केवल एक साधन मात्र है जिसके द्वारा हम मौजूदा व्यवस्था को बनाये रखना चाहते हैं, ताकि इससे हमारे वर्ग हितों को लाभ पहुंचता रहे।"

"यह अनोखा विचार है," रागोजिन्स्की ने कहा। उसके होठों पर आश्वस्त मुस्कान खेल रही थी। "सामान्यतया कानून का एक बिल्कुल ही दूसरा मकसद माना जाता है।"

"हां, लेकिन किताबों में, व्यवहार में नहीं। मैंने देख लिया है। कानून का केवल एक ही लक्ष्य है और वह यह कि मौजूदा व्यवस्था को बनाये रखे। इसलिए जो लोग इस व्यवस्था को हटाना चाहते हैं, जो योग्यता में जनसाधारण से ऊंचे होते हैं—तथाकथित राजनीतिक अपराधी—

उन्हें तंग करता है और फासी पर लटकाता है। इसी तरह उन लोगो को भी जो साधारण स्तर से नीचे के है तथाकथित अपराधी कोटि के लोग।"

"मैं तुमसे सहमत नही हू। अव्वल तो मैं यह नही मान सकता कि राजनीतिक अपराधियो का इसलिए सजा दी जाती है कि वे असाधारण योग्यता के लोग होते है। उनमे से अधिकाश ऐसे होते हैं जिन्हे हम समाज का कचरा कह सकते हैं, उतने ही विकारग्रस्त जितने कि अपराधी कोटि के लोग जिन्हे तुम साधारण से निचले स्तर का कह कर पुकारते हो।"

"पर मैं ऐसे व्यक्तियो को जानता हू जो नैतिक दृष्टि मे उन लोगो से बहुत ऊचे हैं जो उन पर न्यायाधीश बन कर बैठते है। सभी सम्प्रदाई सदाचारी, दृढता "

परन्तु रागोजिन्स्की उन लोगो म से था जो किसी का बीच मे बोलना बर्दाश्त नही कर सकते। नख्लदोव की बात का बिना सुने ही वह बोलता गया। नतीजा यह हुआ कि नेख्लूदोव और भी चिढ उठा।

"मैं यह भी नही मान सकता कि कानून का मकसद मौजूदा व्यवस्था को बनाये रखना है। कानून का लक्ष्य सुधार करना "

"वाह, क्या खूब सुधार है जो जेलो म हो रहा है!" नेख्लूदोव बोल उठा।

" या उन विकार-ग्रस्त तथा वहशी लोगो को हटाना है," रागोजिन्स्की अब भी धृष्टता से बोले जा रहा था, "जिनसे समाज को खतरा है।"

"बस, यही काम तो वह नहीं करता। समाज के पास साधन ही नही हैं।"

"यह तुम कैसे कह सकते हो? मैं नही समझ सकता," रागोजिन्स्की ने बनावटी हसी हसते हुए कहा।

"मेरा मतलब है कि केवल दो प्रकार का ही दण्ड ऐसा है जिसे हम उचित दण्ड कह सकते हैं और इसका प्रयोग पुराने जमाने म किया जाता था। एक, शारीरिक दण्ड और दूसरा प्राण-दण्ड। हम देखते है कि ज्यो ज्यो रीति रिवाज मे अधिकाधिक मानवीयता आती गई, इनका प्रयोग कम होता गया," नेख्लदोव ने कहा।

'तुम्हारे मुह से यह नयी बात सुन कर सचमुच मुझे अचम्भा हो रहा है।"

"यदि कोई आदमी बुरा काम करता है, तो उसे शारीरिक कष्ट देना मैं तकसगत मानता हू, ताकि भविष्य मे वह ऐसा काम नही करे। इसी तरह यदि किसी आदमी से समाज को नुकसान पहुचता है, या समाज को उससे खतरा है तो उसका सिर कलम कर देना मैं तकसगत मानता हू। इन सजाओ का मतलब समझ म आ सकता है। लेकिन यदि आरामतलबी के कारण या किसी बुरे आदमी की देखादेखी कोई आदमी बुरे काम करने लगता है तो उसे जेलखाने मे बन्द कर देने मे क्या तुक है? वहा आप उसे खाना देते है, जबरदस्ती उसे निठल्ला बिठाये रखते हैं, और बुरे से बुरे लोगो के सग रखते है। इसे कौन समझदारी कहेगा? इसमे क्या तुक है कि सरकारी खच पर, और यह खच फी आदमी पाच सौ रूबल से अधिक बैठता है, एक आदमी को तूला से इर्कूत्स्क गुबेनिया तक, या कूर्स्क से "

"हा, लेकिन फिर भी लोग इन यात्राओ पर ले जाये जाने से डरते है भले ही यह सरकारी खच पर है। और अगर इस प्रकार की यात्राए और जेलखाने न होते तो हम लोग भी आज यहा न बठे होते।"

"जेलखानो से हमारी सुरक्षा सुनिश्चित नही हो सकती क्योकि कैदी हमेशा के लिए कैद नही रहते, उन्हे बाद मे छोड दिया जाता है। इसके विपरीत इन सस्थाओ मे लोग अत्यधिक भ्रष्ट और दुराचारी बनते हैं, इस तरह समाज के लिए खतरा बढता है।"

"तुम्हारा क्या मतलब है कि जेल पद्धति मे सुधार होना चाहिए?"

"इसमे सुधार नही हो सकता। जेलखाना को बेहतर बनाने पर इतना खच बैठेगा जितना लोगो की तालीम पर भी खच नही होता। ऐसा करने से जनता पर और भी बोझ पडेगा।"

"लेकिन अगर जेल पद्धति मे त्रुटिया रह गई हैं तो इससे कानून तो गलत नही हो जाता," अपने साले की बात पर ध्यान दिये बिना रागोजिन्स्की कहता गया।

"इन त्रुटियो का कोई इलाज नही है," नेख्लूदोव ने चिल्ला कर कहा।

"तो क्या हुआ? क्या हम कैदियो को मार डाले? या जैसा किसी राजनीतिज्ञ ने सुझाव दिया था इनकी आखे निकालनी शुरू कर दें?" विजयी मुस्कान के साथ रागोजिन्स्की बोला।

"हा, है तो निदयता लेकिन इसका असर होगा। जो कुछ आज किया

जा रहा है उसमें भी निदयता है, लेकिन न केवल यह कि उसका कोई असर नही होता, बल्कि वह इतना मूर्खतापूर्ण है कि हम समझ नही सकते कि सूझ-बूझ रखने वाले लोग ज़ाब्ता फौजदारी जैसे बेहूदा और ज़ालिमाना काम में भाग कैसे ले सकते है।"

"मैं खुद इसमें भाग लेता हूं," रागोजिन्स्की ने कहा और उसका चेहरा पीला पड गया।

"आप जानें और आपका काम। मगर यह बात मेरी समझ के बाहर है।"

"यही नही, बहुत सी बातें है जो तुम्हारी समझ के बाहर हैं' रागोजिन्स्की ने कहा। उसकी आवाज काप रही थी।

"मैंने अपनी आखो से देखा, कि एक सरकारी वकील एक बदनसीब लडके को सज़ा दिलवाने की भरसक कोशिश कर रहा था। उस लडके को देख कर किसी भी आदमी को रहम आ जाता। हा, जिन लोगो का मन दूषित हो उठा है, उनकी बात और है। मैंने एक दूसरे सरकारी वकील को एक सम्प्रदाई के विरुद्ध जिरह करते सुना। इंजील के पाठ को उसने सगीन जुर्म बना कर दिखा दिया। सच तो यह है कि कचहरियो मे इसी किस्म के मूढ और ज़ालिमाना काम होते रहते हैं।"

"अगर मुझे ये काम इस तरह के लगते तो मैं कचहरी मे काम नही करता।"

नेख्लूदोव ने देखा कि उसके बहनोई की ऐनकों नीचे से, अजीब तरह से चमकने लगी थी। "क्या ये आसू तो नही?" उसने सोचा। वे सचमुच आसू ही थे—आहत स्वाभिमान के आसू। रागोजिन्स्की उठ कर खिडकी के पास चला गया और जेब मे से रूमाल निकाल कर पहले खासने लगा और फिर ऐनका के शीशे पोछने लगा, और पोछ चुकने के बाद रूमाल से अपनी आखें पोछता रहा। फिर वह सोफे के पास लौट आया और सिगार सुलगा लिया। इसके बाद वह बिल्कुल चुप हो गया।

नेख्लूदोव बडा लज्जित और क्षुब्ध महसूस करने लगा कि मैंने नाहक अपने बहनोई और बहन को इतना अधिक नाराज कर दिया, विशेषकर जब मैं कल ही यहा से जा रहा हू और फिर उन्हे नही मिल पाऊगा।

विदा लेते समय उसे बडी झेंप हो रही थी। वहा से वह सीधा घर लौट आया।

"सभव है मैंन जो कुछ कहा वह ठीक हो। उसमे भी मरी बाता का कोई जवाब नहीं बन पडा। लेकिन मेरे कहने का ढग गलत था। इसका मतलब है कि मुझमे कोई भी तबदीली नही आई जो मैं एक आत्मा स इतना द्वेष कर सकता हू कि उसे नाराज कर द और उसकी भावनाओं को ठेस पहुचाऊ। मैंने बेचारी नताशा को भी दुखी किया है," वह मनही मन सोच रहा था।

३४

बँदिया की जिस टोली म मास्लोवा शामिल थी उसे स्टेशन स तीन बजे दोपहर की गाडी से रवाना हो जाना था। टोली को जेल म स निकलते देखन के लिए, तथा बँदियो के साथ ही स्टेशन तक जा पान के लिए नेख्लूदाव न निश्चय किया कि वह बारह बजे तक जरूर जेल म पहुच जायेगा।

पिछली रात अपना सामान बाधते तथा कागजात समेटते समय उसकी नजर अपनी डायरी पर पडी और वह उसमे इधर उधर लिखे कुछ अश पढने लगा। पीटसबग के लिए रवाना होन से पहले डायरी म आखिरी शब्द ये थे—"कात्यूशा को मेरी कुबानी मजर नहीं। वह स्वय कुर्बानी देना चाहती है। उसकी जीत हुई है, और मेरी भी। यह देख कर कि उसम एक आतरिक परिवतन हो रहा है, मुझे बेहद खुशी होती है, हालाकि इस पर विश्वास करते डरता हू। विश्वास करते डर लगता है लेकिन फिर भी उसका पुनजम हो रहा है।" आगे चल कर एक जगह उसने पढा— "हाल ही मे मुझे अत्यन्त कठोर पर साथ ही अत्यन्त सुखद अनुभव हुए है। मुझे पता चला कि मास्लोवा का अस्पताल म बहुत बुरा व्यवहार रहा है। यह सुन कर सहसा मुझे बेहद दुख हुआ। जब मैं उससे मिला तो मैं उसके साथ बडी घृणा तथा द्वेष से पेश आया। फिर सहसा मुझे ख्याल आया कि जिस अपराध के लिए मैं उससे इतनी घृणा कर रहा हू वह मैं स्वय कितनी बार कर चुका ह। आज भी मैं यह जुम करता हू, भल ही वह चिन्तन तक सीमित हो। यह सोचत ही मैं अपनी नजरो म गिर गया, मुझे अपने आपस घृणा होन लगी। उसके प्रति मेरा हृदय अनुकम्पा स भर उठा। इस तरह फिर मेरे मन म खुशी का सचार हुआ। काश कि हम अपन दोष देख पाये, तो हम कितन दयालु हो उठेंगे।' इतना पढ चुकने

के बाद नेख्लूदोव ने डायरी में लिखा—"मैं नताल्या से मिलने गया था। आत्मसन्तोष ने मुझे फिर अनदार और द्वेषपूर्ण व्यवहार करने पर उकसाया। मेरे मन पर इस बात का बहुत बडा बोझ है। अब कोई चारा नही। कल मैं एक नये जीवन मे पदार्पण कर रहा हू। पुराने जीवन को अन्तिम बार विदा! मन मे तरह तरह के अनगिनत प्रभाव घूम रहे है। अभी उन्हे एकबद्ध करना मेरे लिए सभव नही।"

दूसरे दिन प्रात जब नेख्लूदोव जागा तो उसका मन भारी था। बहनोई के साथ अपने व्यवहार पर उसे पश्चात्ताप हो रहा था।

"मुझे जरूर जा कर उन्हे मना लेना चाहिए," उसने सोचा, "मैं बिना मिले कैसे जा सकता हू।"

परन्तु घडी देखी तो पता चला कि कोई वक्त नही है। अगर टोली के चलने से पहले पहुचना है तो उसे जल्दी जल्दी तैयार हो जाना चाहिए। जल्दी जल्दी उसने तैयारी कर ली, सामान अपने नौकर और फेदोस्या के पति तारास के हाथ स्टेशन पर भेज दिया—फेदोस्या का पति भी साथ चल रहा था—और फिर जो भी घोडा गाडी पहले नजर आई, उसी पर चढ कर जेल की ओर चल पडा।

जिस गाडी मे वह खुद जा रहा था, उससे दो ही घण्टे पहले कैदियो की गाडी छूटती थी। इसलिए नेख्लूदोव ने कमरो का किराया चुकाया और वहा से निकल आया।

जुलाई का महीना था। बडी तेज गर्मी पड रही थी। सडक के पत्थर तप रहे थे, दीवारो और लोहे की छतो से तपश बन्द हवा मे मानो बह बह कर गिर रही थी। पिछली रात की उमस मे भी ये ठण्डी नही हो पाई थी। किसी किसी वक्त कभी कोई हवा का हल्का सा झोका उठता लेकिन वह भी गर्म और गर्द से भरा होता, और उससे रोगन की बू आ रही होती। सडको पर बहुत कम लोग आ जा रहे थे, और वे भी एक तरफ साये मे रहने की कोशिश कर रहे थे। केवल सडक की मरम्मत करने वाले किसान धूप मे बैठे तपते बालू मे पत्थर कूट रहे थे। उनके तप हुए चेहरो का रग कासे का सा हो रहा था। पावो मे वे छाल के जूते पहने थे। सडक के बीचोबीच पुलिस के सिपाही, छोटा कोट पहने और नारगी रग की डोरी से रिवाल्वर लटकाये, उदास और निराश, मुह लटकाये

खड़े थे। कभी एक पांव पर अपना बोझ डालते कभी दूसरे पर। धूप से चमचमाती सड़क पर घोड़ा-ट्राम, घंटियां बजाती आ-जा रही थी। घोड़ों के सिरों पर सफेद हुड लगे थे जिनमें कानों के लिए छेद किये हुए थे।

जब नेख्लूदोव गाड़ी में बैठा जेलखाने के सामने पहुंचा तो टोली अभी जेल के आगन में से बाहर नहीं निकली थी। सुबह चार बजे से कैदियों की सुपुर्दगी और वसूली का काम चल रहा था। काम बेहद बड़ा था और अभी तक समाप्त नहीं हो पाया था। टोली में ६२३ पुरुष और ६४ स्त्रियां थीं। एक एक कर के सभी को गिनना, फिर रजिस्ट्री-फहरिस्त से मिलाना, बीमार और कमज़ोर कैदियों को अलग करना, फिर सबको कॉनवाय के सुपुर्द करना था। नया इन्स्पेक्टर, उसके दो सहायक, डाक्टर, छोटा डाक्टर, कॉनवाय का अफसर और क्लर्क, सभी जेल के आगन में, एक दीवार के साये में मेज लगा कर बैठे थे। मेज पर कागज़ और लिखने का सामान रखा था। एक एक कर के वे कैदियों को बुलाते, उनकी जांच करते, उनसे सवाल पूछते और कागज़ों पर अपने टिप्पण लिखते जाते।

सूरज की किरणें धीरे धीरे मेज तक भी जा पहुंची थीं। हवा बन्द थी, कुछ इस कारण और कुछ पास में खड़ी कैदियों की भीड़ के श्वासों के कारण गर्मी असह्य हो उठी थी।

"हे भगवान, यह काम कभी खत्म भी होगा या नहीं!" कॉनवाय अफसर बोला। यह आदमी कद का ऊंचा-लम्बा और मोटा था, चेहरा लाल, कंधे ऊंचे और बाजू छोटे छोटे थे। बराबर सिगरेट पिये जा रहा था और धुआं अपनी घनी मूंछों में छोड़े जा रहा था। एक लम्बा कश खींच कर बोला—"तुम लोग मुझे मार डालोगे। कहां से पकड़ लाये हो इन्हें? और कितने रह गये हैं?"

क्लर्क ने लिस्ट देखी।

"औरतों को छोड़ कर २३ आदमी अभी और बाकी हैं।

"वहां किस लिए खड़े हो? चलो इधर," कॉनवाय अफसर ने चिल्ला कर उन कैदियों को पुकारा जो अभी तक जांच के लिए नहीं आये थे, और जो एक के पीछे दूसरा भीड़ बना कर खड़े थे। पिछले तीन घण्टे से कैदी लाइनें बांधे, चुनचुनाती धूप में खड़े अपनी अपनी बारी का इन्तज़ार कर रहे थे।

जहां आंगन में, जेल के अन्दर यह काम हो रहा था, वहां जेल के

बाहर, फाटक के सामने, जहा बन्दूक उठाये सन्तरी रोज़ की तरह खडा पहरा दे रहा था, बीसेक छकडे खडे थे। ये कैदियो का सामान ढोने के लिए तथा ऐसे कैदियो को ले जाने के लिए खडे थे जो कमजोरी के कारण स्वय चल कर नही जा सकते थे। एक कोने मे कैदियो के भाई-बन्द इस उमीद मे खडे थे कि जब कैदी बाहर निकलेगे तो मौका देख कर ये उनसे दुआ-सलाम कर सकेगे और छोटी मोटी चीज़ें उन्हे दे सकेगे। इन्ही लोगो के बीच नेख्लूदोव भी जा खडा हुआ।

घण्टा भर वहा खडा रहने के बाद उसके थाना मे तरह तरह की आवाज़ें पडने लगी—बेडिया खनकने, लोगो के चलने, अफसरो की आवाजें, खासने खाखने तथा एक बहुत बडी भीड मे लोगो के बुदबुदाने की आवाज़ें आने लगी। लगभग पाच मिनट तक यही चलता रहा। इस बीच कुछेक वाडर फाटक मे से बाहर और अन्दर आते-जाते रहे। अन्त मे हुक्म सुनाया गया।

बडे शोर के साथ फाटक खुले। बेडिया-ज़जीरो की आवाज़ और भी ऊची हो उठी। कॉनवाय के सिपाही, सफेद वर्दी कोट पहन और कन्धो पर बन्दूके रखे बाहर सडक पर आ गये और फाटक के सामने पूरा गोल चक्र बना कर खडे हो गये। प्रत्यक्षत इस तरह रस्मी तौर पर आ कर खडे होने का उन्हे काफी अभ्यास था। इसके बाद एक और आदेश दिया गया और दो दो कर के कैदी बाहर आने लगे। उनके घुटे हुए सिरो पर गोल चपटी टोपिया थी और कन्धो पर बोरिया थी। कैदियो के पावो मे बेडिया पडी थी। एक हाथ से बोरी को थामे, दूसरी बाह झुलाते हुए, वे पाव घसीटते चल आ रहे थे। सबसे आगे वे कैदी बाहर निकले जिन्हे कडी मशक्कत की सजा दी गई थी। सभी ने भूरे रग की पतलूनें और कुर्ते पहन रखे थे जिनकी पीठ पर नम्बर लिखे थे। सभी कैदी तेज़ तेज़ कदम रखते हुए बेडिया खनखनाते और बाहे झुलाते बाहर निकले मानो किसी लम्बे सफर पर जाने के लिए तैयार हो कर आये हो। इनमे जवान भी थे और बूढे भी, पतले भी थे और मोटे भी, पीले चेहरो वाले, लाल चेहरो वाले और सवलाये चेहरो वाले भी थे, दाढी वाले और बिना दाढी के भी थे, रूसी, तातार और यहूदी—सभी तरह के लोग शामिल थे। तेज़ तेज़ चलते हुए वे बाहर निकले लेकिन दस कदम चलने के बाद वे सहसा रुक गये और बडी आज्ञाकारिता के साथ चार चार की लाइन बना कर एक दूसरे के पीछे खडे होने लगे। इसके बाद फौरन् ही और आदमी बाहर

निकलने लगे। उनके सिर भी मुडे हुए थे। इन्होंने भी उसी तरह के कपड़े पहन रखे थे। इनके पावो मे बेडिया नही थी, लेकिन इनके हाथ आपस म हथकडियो के साथ बधे हुए थे। ये वे कैंदी थे जिन्हे निर्वासन की सज़ा दी गई थी। ये कैंदी भी तेज तेज़ चलते हुए आय और उसी तरह सहसा रुक गय और चार चार की लाइन बना कर खडे हो गय। इनके बाद व कैंदी बाहर निकले जिन्हे उनकी ग्राम-पचायतो ने निवासित कर दिया था। इसके बाद, इसी ढग से, औरते बाहर आयी। सबसे पहले वे औरत जिन्हें कडी मशक्कत की सज़ा दी गई थी। इन्होंने भूरे रग के लबादे और सिर पर रूमाल बाध रखे थे। इनके पीछे वे औरते जिन्हे निर्वासन की सज़ा मिली थी, और अन्त मे वे जो स्वेच्छा से अपने पतियो के साथ साइबेरिया जा रही थी। इन औरतो ने अपन नगर या गाव की पोशाके पहन रखी थी। कुछेक औरते अपने लबादो के अगले हिस्सो मे अपन बच्चो को लपेटे साथ लिये आ रही थी।

जिस भाति घोडो के एक झुण्ड म बछेरे अपनी माओ की टागो के साथ सट कर भागे चले आते है, इसी तरह इन औरतो के साथ इनके बच्चे, लडके और लडकिया भी थी।

आदमी चुपचाप खडे थे। केवल किसी किसी वक्त खास दते या छोटी मोटी बात कह देते। औरते अनवरत बोले जा रही थी। जब व बाहर निकल रही थी तो नेख्लूदाव को लगा जैसे उसन मास्लोवा को देखा हो, लेकिन शीघ्र ही मास्लोवा भीड मे खो गई, और उसे अपन सामन भूरे रग के कपडे ही कपडे नजर आने लगे—यह नही लगता था जसे वे इन्सान हैं, या कम से कम औरतो वाली उनमे कोई बात न थी। पीठ पर बोरिया उठाये, उनके बच्चे उनकी टागो स चिपकते हुए, वे आयी और मर्दों के पीछे आ कर खडी हो गयीं।

जेल मे से कैदी गिन कर भेजे गये थे। लकिन बाहर पहुचने पर कॉनवाय वाला ने उन्हे फिर गिना और फहरिस्त मे दर्ज हुए नम्बरो के साथ नम्बर मिलाने लगे। इसम बहुत देर लगी, खास कर इसलिए कि कुछ कैंदी अपनी जगह छोड कर आगे-पीछे हो जाते थे जिसस कॉनवाय वालो की गणना मे गडबड हो जाती थी। कॉनवाय के सिपाही चिल्ला रहे थे और कैंदियो को धकेल रह थे। कैंदी बडबडाते लेकिन फिर भी जहा कहते, खडे हो जात थे। जब सभी गिन जा चुके तो कॉनवाय अफसर न आज्ञा

दिया। आदेश देन की देर थी कि भीड म खलबली मच गई। मद, औरत और बच्चे, जो लोग शरीर से दुरुस्त थे, छकडा की ओर भाग कर जान लगे, एक दूसरे से आगे निकलने की कोशिश करते हुए। छकडा म वे अपनी अपनी बोरिया फेंक ऊपर चढने लगे। औरतें, अपन रोते चिल्लाते बच्चा को लिये, हुसोड लडके छकडा म अपन लिए जगह बनाने क लिए छीना झपटी करते हुए, तथा सुध-बुध खोये, उदास कैदी छकडा म जा बैठे।

कुछेक कैदी चलते हुए कॉनवाय अफसर के पास आये और सिर पर से टोपिया उतार कर उससे कोई दरख्वास्त की। नेख्लूदोव को बाद म पता चला कि वे छकडो मे बैठने की इजाजत माग रहे थे। उस वक्त उसन इतना ही देखा कि अफसर न बिना कैदिया की ओर देखे सिगरेट का कश लिया और फिर सहसा एक कैदी की ओर घूसा दिखाते हुए अपने छोटे से बाजू का झटका। कैदी न झट स अपना मुडा हुआ सिर कधो म छिपा लिया, मानो डर रहा हो कि अफसर उसे घूसा मार बैठेगा, और उछल कर पीछे हट गया।

"छकडा मे तुम्हे ऐसा बिठाऊगा कि उम्र भर याद रखोगे। चलो हटो यहा से, तुम्हे पैदल जाना होगा," अफसर चिल्लाया।

केवल एक आदमी को छकडे मे बठने की इजाजत दे दी गई। यह कोई बूढा आदमी था जिसके पावो म बेडिया पडी थी। नेख्लूदोव ने उसे छकडा की ओर जाते हुए देखा। उसने सिर पर से गोल चपटी टोपी उतार रखी थी और बार बार छाती पर क्रॉस का चिन्ह बना रहा था। बेडियो के कारण उसके लिए छकडे पर चढना मुश्किल हो रहा था, वह अपनी जीर्ण, दुबल टागो को ऊपर नही उठा पा रहा था। आखिर एक औरत ने, जो पहले से छकडे मे बैठी थी, उसका हाथ पकड कर उसे ऊपर खीच लिया।

जब छकडो पर बोरिया लद गइ और जिन लोगो को उनम बैठना था, बैठ गये, तो अफसर ने सिर पर से टोपी उतारी, अपने माथे, गजे सिर, और मोटी लाल गदन को पोछा और छाती पर क्रॉस का चिन्ह बनाया।

"मार्च।" उसने हुक्म दिया।

सिपाहियो की बदूके खडखडायी। कैदिया न सिरो पर स टोपिया उतारी और क्रास का चिन्ह बनाने लगे। जो लोग उन्हे छोडने आये थ उन्होने पुकार कर कुछ कहा। कैदिया न जवाब मे कुछ पुकार कर कहा।

औरतों के बीच बड़ी उत्तेजना थी। इस तरह टोली आगे बढ़ने लगी। उन्हें सारा भार गर्द से गाटा यान सिपाही घेरे हुए थे। कैदियों के पांवों में पड़ी बेड़ियों से झनझन ध्वनि उठने लगी। सबसे आगे सिपाहियों की टोली था। उनके पीछे वे कैदी थे जिन्हें कड़ी मशक्कत की सजा दी गई थी। उनके पांवों में बेड़ियां खनखना रही थीं। उनके पीछे निर्वासित कैदी तथा वे कैदी थे जिन्हें उनकी ग्राम-पंचायतों ने जलावतन कर दिया था। दो-दो करके इनकी कलाइयों पर हथकड़ियां लगी थीं। इनके पीछे औरतें थीं। उनके पीछे गाड़ियों में लदे छकड़ों पर दुर्बल और कमजोर कैदी बैठे थे। एक छकड़े में, गठरियों के ढेर के ऊपर एक औरत बैठी, जोर जोर से रो रही थी और सिसकियां भर रही थी। उसने अपने बच्चे को कपड़े में लपेट रखा था।

३५

कैदियों का जुलूस इतना लम्बा था कि जब छकड़ों की बारी आयी, जिनमें सामान लदा था तथा कमजोर कैदी बैठे थे, तो जुलूस का अगला सिरा आंखों से ओझल हो चुका था। जब आखिरी छकड़ा भी चल निकला तो नेख्लूदोव अपनी गाड़ी में आ बैठा जो खड़ी इन्तजार कर रही थी और गाड़ीवान को गाड़ी बढ़ा कर सबसे आगे चलने वाले कैदियों तक ले चलने को कहा। वह यह देखना चाहता था कि इस टोली में उसके कोई परिचित कैदी भी है या नहीं, साथ ही मास्लोवा से मिल कर यह पूछना चाहता था कि उसे वे चीजें मिल गई थीं या नहीं जो उसने भेजी थीं।

गर्मी बहुत थी। हवा बन्द थी। जुलूस सड़क के ऐन बीचोबीच चल रहा था। हजारों कदमों से उठती गर्द और धूल सारी वक्त टोली को ढके हुए थी। कैदी तेज तेज चल रहे थे, इसलिए नेख्लूदोव की गाड़ी को आगे तक पहुंचने में काफी वक्त लगा, क्योंकि घोड़ा बहुत आहिस्ता चल रहा था। एक एक कर के, वह इन विचित्र, भयानक दिखने वाले जीवों की पंक्तियां पीछे छोड़ता चला जा रहा था। इनमें से किसी को भी नेख्लूदोव नहीं जानता था।

जुलूस आगे बढ़ता गया। सभी कैदियों ने एक से जूते और कपड़े पहन रखे थे। हजारों कदम एक साथ चल रहे थे। सभी कैदी अपना स्वतन्त्र

बाज़ ख़ूब झुलाते हुए चल रहे थे, मानो वे अपना हौसला कायम रखना चाहते हों। अनगिनत कैदी, सभी एक जैसे, सभी की स्थिति एक जैसी, अजीब और असाधारण—नख्लूदोव को लग रहा था जैसे ये लोग इसान नहीं हैं, बल्कि किसी प्रकार के अनोखे, भयानक जीव हैं। उसे ऐसा ही प्रतीत होता रहा जब तक कि कैदियों की भीड़ में उसने दो-एक आदमी पहचान नहीं लिये। एक तो उनमें से फ्योदोरोव था जिसने हत्या की थी, दूसरा ओखोतिन, मसखरा, जो जलावतनों की लाइन में चल रहा था। एक तीसरा आवारा सड़क-सवार भी था जिसने नेख्लूदोव से सहायता की प्रार्थना की थी। लगभग सभी कैदियों ने घूम कर गाड़ी की ओर तथा गाड़ी में बैठे अमीर आदमी की ओर देखा। फ्योदोरोव ने नेख्लूदोव की ओर देख कर अपना सिर पीछे की ओर झटक दिया, जिसका मतलब यह दिखाना था कि मैंने आपको पहचान लिया है। ओखोतिन ने आंख मारी। पर दोनों में से किसी ने भी झुक कर अभिवादन नहीं किया, क्योंकि उनका ख्याल था कि इसकी इजाज़त नहीं होगी।

औरतों के नज़दीक पहुंचते ही नेख्लूदोव ने झट मास्लोवा को पहचान लिया। वह दूसरी लाइन में चल रही थी। लाइन के सिर पर एक बड़ी कुरूप सी औरत चल रही थी, जिसकी टांगें छोटी छोटी, और आंखें काली थीं, और जिसने अपना लबादा कमरबन्द में खोंस रखा था। यह छबीली थी। उसके साथ वाली स्त्री गर्भवती थी, और बड़ी मुश्किल से पांव घसीटती चली जा रही थी। तीसरे नम्बर पर मास्लोवा थी। उसने अपनी बोरी को कंधे पर उठा रखा था और सीधे आगे की ओर देख रही थी। चेहरे से शान्ति तथा दृढ़ता झलक रही थी। लाइन में चौथे नम्बर पर एक ख़ूबसूरत छोटी उम्र की औरत थी जो तेज़ तेज़ कदम रखती हुई चली जा रही थी। उसने छोटा सा लबादा पहन रखा था, और सिर पर इस ढंग से रूमाल बांध रखा था जिस ढंग से किसान औरतें बांधती हैं। यह फ़ेदोस्या थी।

नेख्लूदोव गाड़ी में से उतर कर औरतों की ओर बढ़ गया। वह मास्लोवा से पूछना चाहता था कि उसे चीज़ें मिलीं या नहीं, साथ ही यह भी कि उसका हाल चाल कैसा है। लेकिन कानवाय के सार्जेंट ने देख लिया जो इसी तरफ़ लाइन के साथ साथ चल रहा था और भागा हुआ नेख्लूदोव के पास आ गया।

31—420

"आप ऐसा नही कर सकते। टोली के कैदियो से बात करने की इजाजत नही है," पास आते हुए सार्जेंट ने चिल्ला कर कहा।

फिर सहसा उसने नेख्लूदोव को पहचान लिया (जेल मे सभी लोग उसे जानते थे) और सलाम करते हुए पास आ कर बोला—

"इस वक्त नही जनाब, स्टेशन पर बात कर लीजिये। यहा पर बात करने की इजाजत नही है। पीछे मत रहो, चलो आगे, ए! मार्च!" उसने कैदियो से कहा और चुस्ती दिखाते हुए भाग कर अपनी जगह पर आ गया, हालांकि गर्मी बहुत थी, और उसने नये, बढिया बूट पहन रखे थे।

नेख्लूदोव पटरी पर चढ गया और गाडी वाले को पीछे पीछे गाडी ले आने को कह पैदल चलने लगा ताकि टोली को देखता रह सके। जिधर से भी टोली गुजरती लोग मुड मुड कर उसकी ओर देखते, और उनकी आखो मे दया तथा भय के भाव छा जाते। जो लोग गाडियो म बैठे पास से गुजरते वे गाडिया मे से सिर निकाल निकाल कर कैदियो की ओर देखते। पैदल जाने वाले आदमी रुक जाते और इस भयानक दृश्य को हैरान तथा भयातुर आखो से देखने लगते। कुछ लोग आगे बढ आते और कैदियो को भीख देते, लेकिन इसे कॉनवाय के सिपाही वसूल करते थे। कुछ लोग तो मन्त्रमुग्ध की भाति टोली के पीछे पीछे चलने लगते, फिर सहसा रुक जाते, सिर हिलाते, और वही खडे खडे कैदियो की ओर देखते रहते। जिस तरफ से भी यह भयानक जुलूस गुजरता, लोग फाटको और दरवाजो मे से बाहर निकल आते, और अन्य लोगो को भी बाहर आने के लिए कहते, या खिडकियो मे से बाहर सिर निकाले, चुपचाप, मूर्तिवत खडे इनकी ओर देखते रह जाते। एक चौराहे पर जुलूस के कारण एक बढिया गाडी को रुक जाना पडा। गाडी के बॉक्स पर एक स्थूलकाय कोचवान बैठा था जिसका चेहरा दमक रहा था और पीठ पर बटनो की दो पक्तिया लगी थी। गाडी के अन्दर एक दम्पती बैठे थे। पत्नी, पीतवर्ण, पतली सी औरत थी जिसने सिर पर हल्के से रग का टोप पहन रखा था और हाथ मे भडकीले रग का छाता पकडे हुए थी। पति ने टॉप हैट और हल्के रग का चुस्त, हल्का सा ओवरकोट पहन रखा था। उनके सामने वाली सीट पर उनके बच्चे बैठे थे। एक लडकी और एक आठेक साल का लडका। लडकी ने बहुत खूबसूरत कपडे पहन रखे थे, उसके सुनहरी बाल कधो पर गिर रहे थे और वह एक नयी खिली कली की तरह सुदर लग रही

थी। उसके हाथ मे भी भडकीले रग का छाता था। लडके की गरदन पतली थी और कधो के दोनो तरफ की हड्डिया नज़र आ रही थी। उसने सिर पर जहाज़िया की टोपी पहन रखी थी, जिसके साथ लम्बे लम्बे फीते लटक रहे थे।

बाप कोचवान को फटकारने लगा कि जब मौका था तो तुम जुलूस के आगे से क्यो नही निकल गये। मा ने भौह चढायी, और घृणा से अपनी आखें कुछ कुछ बन्द कर ली, और गद और धूप से अपने को बचाने के लिए अपना रेशमी छाता मुह के आगे कर लिया।

मालिक के इन अन्यायपूर्ण शब्दो पर मोटे नितब वाले कोचवान ने गुस्से से भौह चढायी—मालिक ने खुद ही तो इस रास्ते से गाडी ले चलने का हुक्म दिया था। बडी मुश्किल से वह घोडो को काबू मे कर पा रहा था जो आगे बढने के लिए बेचैन थे। उनके मुह से झाग निकल रही थी। घोडे काले रग के थे और उनकी पीठ खूब चमक रही थी।

पुलिस का सिपाही जी-जान से इस बढिया गाडी के मालिक को खुश करना चाहता था। वह चाहता तो था कि टोली को रोक दे ताकि गाडी निकल जाये। लेकिन जिस भयानक सजीदगी से कैदियो का जुलूस चला जा रहा था, उसमे बाधा डालने की सिपाही को भी हिम्मत नही हुई। इसलिए चाहते हुए भी वह इस अमीर आदमी को खुश नही कर सका। उसने हाथ उठा कर सलाम किया ताकि धन ऐश्वय के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त कर सके, और घूर कर कदियो की ओर देखा, मानो गाडी म बैठे अमीरजादो को इस बात का वचन दे रहा हो कि हर हालत मे मैं इन लोगो से आपकी रक्षा करूगा। सो गाडी को उस वक्त तक खडे रहना पडा जब तक कि सारा का सारा जुलूस निकल नही गया और आखिरी छकडे, बोरिया और कैदिया से लदे, खडखडाते गुज़र नही गये। जो औरत छकडे मे बैठी पहले चीख चिल्ला रही थी, अब शान्त हो गई थी। लेकिन इस अमीराना गाडी को देख कर वह फिर चीखने और सिसकिया भरने लगी। उसके बाद कोचवान ने रासो को हल्का सा झटका दिया और काले घोडे आगे को बढ निकले। उनके नाल गोल पत्थरा की बनी सडक पर ठनखने लगे। गाडी के पहिया पर रबड के टायर चढे थे, हल्के हल्के झूलती हुई वह देहात की ओर जाने लगी जहा पति, पत्नी, लडकी और लडका—जिसके कधा की हड्डिया नजर आ रही थी—छुट्टी मनाने जा रहे थे।

"आप ऐसा नहीं कर सकते। टोली के कैदियों से बात करने की इजाज़त नहीं है," पास आते हुए सार्जेंट ने चिल्ला कर कहा।

फिर सहसा उसने नेख्लूदोव को पहचान लिया (जेल में सभी लोग उसे जानते थे) और सलाम करते हुए पास आ कर बोला –

"इस वक्त नहीं जनाब, स्टेशन पर बात कर लीजिये। यहां पर बात करने की इजाज़त नहीं है। पीछे मत रहो, चलो आगे, ए! मार्च!" उसने कैदियों से कहा और चुस्ती दिखाते हुए भाग कर अपनी जगह पर आ गया, हालांकि गर्मी बहुत थी, और उसने नये, बढ़िया बूट पहन रखे थे।

नेख्लूदोव पटरी पर चढ़ गया और गाड़ी वाले को पीछे पीछे गाड़ी ले आने को कह पैदल चलने लगा ताकि टोली को देखता रह सके। जिधर से भी टोली गुज़रती लोग मुड़ मुड़ कर उसकी ओर देखते, और उनकी आंखों में दया तथा भय के भाव छा जाते। जो लोग गाड़ियों में बैठे पास से गुज़रते वे गाड़ियों में से सिर निकाल निकाल कर कैदियों की ओर देखते। पैदल जाने वाले आदमी रुक जाते और इस भयानक दृश्य को हैरान तथा भयातुर आंखों से देखने लगते। कुछ लोग आगे बढ़ आते और कैदियों को भीख देते, लेकिन इसे कॉनवाय के सिपाही वसूल करते थे। कुछ लोग तो मन्त्रमुग्ध की भांति टोली के पीछे पीछे चलने लगते, फिर सहसा रुक जाते, सिर हिलाते, और वहीं खड़े खड़े कैदियों की ओर देखते रहते। जिस तरफ से भी यह भयानक जुलूस गुज़रता, लोग फाटकों और दरवाज़ों में से बाहर निकल आते, और अन्य लोगों को भी बाहर आने के लिए कहते, या खिड़कियों में से बाहर सिर निकाले, चुपचाप, मूर्तिवत खड़े इनकी ओर देखते रह जाते। एक चौराहे पर जुलूस के कारण एक बढ़िया गाड़ी को रुक जाना पड़ा। गाड़ी के बॉक्स पर एक स्थूलकाय कोचवान बैठा था जिसका चेहरा दमक रहा था और पीठ पर बटनों की दो पंक्तियां लगी थीं। गाड़ी के अन्दर एक दम्पती बैठे थे। पत्नी, पीतवर्ण, पतली सी औरत थी जिसने सिर पर हल्के से रंग का टोप पहन रखा था और हाथ में भड़कीले रंग का छाता पकड़े हुए थी। पति ने टाप-हैट और हल्के रंग का चुस्त, हल्का सा ओवरकोट पहन रखा था। उनके सामने वाली सीट पर उनके बच्चे बैठे थे। एक लड़की और एक आठेक साल का लड़का। लड़की ने बहुत खूबसूरत कपड़े पहन रखे थे, उसके सुनहरी बाल कंधों पर गिर रहे थे और वह एक नयी खिली कली की तरह सुन्दर लग रही

थी। उसके हाथ मे भी भडकीले रग का छाता था। लडके की गरदन पतली थी और कधा में दोना तरफ की हड्डिया नजर आ रही थी। उसने सिर पर जहाजिया की टोपी पहन रखी थी, जिसके साथ लम्बे लम्बे फीते लटक रहे थे।

बाप कोचवान को फटकारने लगा कि जब मौका था तो तुम जुलूस के आगे से क्यो नही निकल गये। मा ने भौह चढायी, और घृणा म अपनी आखें कुछ कुछ बन्द कर ली, और गद और धूप से अपने को बचाने के लिए अपना रेशमी छाता मुह के आगे कर लिया।

मालिक के इन अन्यायपूर्ण शब्दो पर मोटे नितब वाले कोचवान ने गुस्से से भौह चढायी—मालिक न ख द ही तो इस रास्ते म गाडी ले चलने का हुक्म दिया था। बडी मुश्किल से वह घोडो को काबू म कर पा रहा था जो आगे बढने के लिए बेचैन थे। उनके मुह स झाग निकल रही थी। घोडे काले रग के थे और उनकी पीठ ख ब चमक रही थी।

पुलिस का सिपाही जी-जान से इस बढिया गाडी के मालिक का ख श करना चाहता था। वह चाहता तो था कि टोली को रोक दे ताकि गाडी निकल जाये। लेकिन जिस भयानक सजीदगी म कैदियों का जुलूस चला जा रहा था, उसम बाधा डालने की सिपाही को भी हिम्मत नही हुई। इसलिए चाहते हुए भी वह इस अमीर आदमी को ख श नही कर सका। उसने हाथ उठा कर सलाम किया ताकि धन ऐश्वय के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त कर सके, और घर कर कैदियो की ओर देखा, मानो गाडी म बैठे अमीरजादा को इस बात का वचन दे रहा हो कि हर हालत में मैं इन लोगो से आपकी रक्षा करूगा। सो गाडी को उस वक्त तक खडे रहना पडा जब तक कि सारा का सारा जुलूस निकल नही गया और आखिरी छकडे, कारियो और कैदियो से लदे, खडखडाते गुजर नही गये। जो औरत छकडे म बैठी पहले चीख चिल्ला रही थी, अब शात हो गई थी। लेकिन इस अमीराना गाडी को देख कर वह फिर चीखने और सिसकिया भरने लगी। उसके बाद कोचवान ने रासो को हल्का सा झटका दिया और काले घोडे आगे को बढ़ निकले। उनके नाल गोल पत्थरो की बनी सडक पर झनझने लगे। गाडी के पहियो पर रबड के टायर चढे थे, हल्के हल्के झूलती हुई वह देहात की ओर जाने लगी जहा पति, पत्नी, लडकी और लडका—जिसके कधो की हड्डिया नजर आ रही थी—छुट्टी मनाने जा रहे थे।

लडके और लडकी दोना ने यह अनोखा दृश्य देखा। लेकिन न तो मा ने और न ही उनके बाप ने इसके बारे मे उन्हे कुछ बताया। अत बच्चो को स्वय अपनी समझ के अनुसार इसका कुछ न कुछ मतलब निकालना पडा।

लडकी ने मा-बाप के चेहरे का भाव देखा और इस समस्या का समाधान यह सोच कर कर लिया कि ये बिल्कुल भिन्न प्रकार के लोग हैं जिनका उसके मा-बाप तथा अन्य परिचित लोगा से कोई मेल नहीं। ये बुरे लाग हैं, इसी लिए उनके साथ ऐसा सुलूक किया गया है। यही कारण था कि लडकी इन्हे देख कर डर गई थी, और जब वे नज़र से दूर हुए तो उसने चैन की सास ली।

परन्तु लडके की प्रतिक्रिया इससे भिन्न हुई। लम्बी पतली गर्दन वाला यह लडका भी जुलूस को एकटक देखता रहा था। उसे इस बात का दृढ विश्वास था, और स्वय भगवान ने उसके हृदय मे यह बात डाली थी कि ये लोग भी वैसे ही हैं जसा कि वह खुद है, जैसे ससार मे अन्य लोग हैं। किसी ने इनके साथ कोई ऐसा अन्याय किया है जो नही करना चाहिए था। उसे इनकी स्थिति पर रहम आ रहा था। उनके मुडे हुए सिर और बेडिया-हथकडिया देख कर वह डर गया। और उन लोगा के बारे मे सोच कर भी वह डर गया जिन्होंने उनके सिर मुडे थे और उनके पावा मे बेडिया डाली थी। इसी कारण इस दृश्य को देखते हुए उसके होठ अधिकाधिक फडफडाने लगे। परन्तु यह सोच कर कि इसे देख कर रोने लगना बडी लज्जा की बात होगी, वह अपनी रुलाई दबाने की भरसक चेष्टा करने लगा।

३६

कैदियो के साथ साथ नेख्लदोव भी तेज़ रफ्तार से चलता गया। हवा बन्द थी, और चिलचिलाती धूप मे वायुमण्डल धूल से अटा हुआ था। नेख्लूदोव ने बहुत कपडे तो नही पहन रखे थे लेकिन उसे बेहद गर्मी लग रही थी और इस हवा मे सास लेना असम्भव हो रहा था।

लगभग दो फर्लांग चलते रहने के बाद वह गाडी म बैठ गया। लेकिन सडक के बीचोबीच गाडी मे बैठ कर जाते हुए उसे और भी गर्मी लगी।

उसे वह वार्तालाप याद हो आया जो गत रात बहनोई के साथ हुआ था, लेकिन इस वक्त उसके बारे म सोच कर उसका मन विचलित नही हुआ जैसा कि सुबह उठने वक्त हुआ था। टोली के जेलखाने से निकलने तथा उसके साथ साथ जाने से जो प्रभाव उसके मन पर अकित हुए थे व अधिक प्रबल थे। पर मुख्य बात यह थी कि इस तेज गर्मी के कारण वह सब कुछ भूला हुआ था।

पटरी पर एक जगह, वृक्षो के पेडा के साये म, जो एक बाड पर से बाहर की ओर झाक रहे थे, दो स्कूली लडके एक बरफ बेचने वाले के पास खडे थे। बरफ़ बेचने वाला घुटनो के बल झुका हुआ था। एक लडका पहले ही हाथ मे सीग का चम्मच पकडे उसे चूस रहा था और आइसक्रीम का मजा ले रहा था। दूसरे के लिए खोंचे वाला गिलास म कोई पीले रग का रस डाल रहा था।

नेख्लूदोव को बेहद प्यास लग रही थी। उसन अपने गाडी वाले से पूछा—

"क्या यहा पीने के लिए कुछ मिल सकेगा?"

"यहा नजदीक ही एक अच्छी जगह है," गाडीवान ने जवाब दिया और मोड मुड कर एक ढाबे के सामने गाडी खडी कर दी, जिसके दरवाजे के ऊपर बडा सा बोर्ड लगा था।

काउटर के पीछे एक मोटा सा बारमैन केवल एक कमीज़ पहने खडा था। बैरे मेज़ो के सामने कुर्सियो पर बैठे थे (उस वक्त दूकान म कोई इक्का-दुक्का ही ग्राहक आये तो आये)। किसी ज़माने मे बैरो की वर्दिया सफेद रही होगी, लेकिन इस वक्त तक वे काफी मैली हो चुकी थी। इस असाधारण ग्राहक के अन्दर चले आने पर वे बडे कुतूहल से उसकी ओर देखने लगे और सेवा करने के लिए उठ खडे हुए। नेख्लूदोव ने सोडा-वॉटर की एक बोतल लाने को कहा और खिडकी से थोडा हट कर एक छोटे से मेज़ के सामने बैठ गया जिस पर गन्दा सा कपडा बिछा था।

एक और मेज पर दो आदमी बैठे बडे दोस्ताना ढग से कोई हिसाब जोड रहे थे। बार बार वे अपना माथा पोछते। उनके सामने, मेज़ पर, चाय का सामान और एक सफेद रग की बोतल रखी थी। उनम स एक काले बालो वाला था, जिसकी चाद गजी हो रही थी। केवल सिर के पीछे बालो की हल्की सी झालर उग रही थी, जिस तरह की रागाजिन्स्की के

सिर पर थी। उसे देख कर नेख्लूदोव को फिर बहनोई के साथ हुआ वार्तालाप याद आ गया और उसकी फिर इच्छा हुई कि उसे और अपनी बहिन स जा कर मिले।

"गाडी छूटने मे इतना कम समय रह गया है कि यह मुमकिन नहा हो सकेगा," वह सोचने लगा, "इससे बेहतर यही होगा कि मैं चिट्ठी लिख दू।" उसने कागज मागा, साथ ही लिफाफा और टिकट भी, और ठण्डे ठण्डे सोडा-वॉटर के घूट भरते हुए वह सोचने लगा कि क्या लिखे। लेकिन बार बार उसका मन भटक जाता और उसे सूझ न पडता कि किन शब्दो मे पत्र लिखे।

"प्रिय नताल्या, कल तुम्हारे पति के साथ जो वातालाप हुआ उससे मन बडा उदास हो उठा है। इस मन स्थिति म मेरे लिए यहा से चल जाना मुश्किल हो रहा है," उसने लिखा। "आगे क्या लिखू? जो कुछ कल मैंने उससे कहा, उसके लिए माफी मागू? पर मैंने वही कुछ कहा जो मैं महसूस करता हू। वह समझेगा कि मैं अपने शब्द वापस ले रहा हू। इसके अलावा उसका मेरे निजी मामलो मे दखल देना नही, नही यह मुझसे न हो सकेगा।" और फिर उसके मन मे उस आदमी के प्रति घृणा उठने लगी, जो उससे इतना विभिन्न था। वह चिट्ठी को खत्म नहीं कर पाया और कागज को तह कर के जेब मे डाल लिया। फिर बिल अदा कर के बाहर निकल आया और गाडी मे बैठ कदियो की टोली की आर जाने लगा।

गर्मी और भी बढ गई थी। ऐसा जान पडता था जैसे सडक के पत्थरो और दीवारो मे से आग निकल रही हो। पटरी पर चलते हुए महसूस होता था जैसे पाव झुलस रहे हो। गाडी पर चढते समय जब उसने अपना हाथ गाडी के वानिश हुए मड-गाड पर रखा तो उसे ऐसा जान पडा जैसे उसने आग को छू लिया हो।

घोडा धीरे धीरे चला जा रहा था मानो थका हुआ हो। सडक ऊबड खाबड और धूल से भरी थी। घोडे के खुर एक ही नीरस लय मे सडक पर पड रहे थे। गाडीबान बार बार ऊघ जाता था। नेख्लूदोव भावशून्य आखो से सामने की ओर देखे जा रहा था। वह किसी चीज के बारे म भी नही सोच रहा था।

ढलुवा सडक के एक बडे से घर के फाटक के सामन कुछ लोग जमा

थे, पास ही मे एक कॉनवाय का सिपाही खडा था। नेख्लूदोव ने गाडीबान को रुकने के लिए कहा।

"क्या हुआ है?" उसने चौकीदार से पूछा।

"किसी कैदी को कुछ हो गया है।"

नेख्लूदोव गाडी पर से उतर पडा, और उन लोगो के पास जाने लगा। सडक के नुकीले पत्थरा पर एक बडी उम्र का कैदी पडा था—चौडे कधे, लाल दाढी, चिपकी नाक। उसके पाव ऊचाई पर थे और सिर नीचे की ओर लुढका हुआ था। उसका चेहरा बहुत लाल हो रहा था। भूरे रग का कुर्ता और पतलून पहने वह पीठ के बल लेटा था और चित्ती भरे हाथ जमीन के साथ लगे थे। उसकी लाल लाल आखें आकाश पर लगी थी। बडी बडी देर के बाद उसकी चौडी, ऊची छाती फूल उठती और वह कराह उठता। उसके पास एक चिडचिडा सा सिपाही, एक फेरीवाला, एक डाकिया, एक क्लर्क, छाता उठाये एक बुढिया औरत, और एक लडका जिसके हाथ मे खाली टोकरी थी, खडे थे। लडके के सिर पर छोटे छोटे बाल थे।

"ये लोग दुबले हो जाते हैं। जेलखाने मे बन्द पडे रहते हैं, इसलिए कमजोर हो जाते हैं। इन्हे जब बाहर भी लाते है तो ऐसी जलती धूप मे," क्लर्क ने नेख्लूदोव को सम्बोधित कर के कहा जो अभी अभी वहा पहुचा था।

"यह शायद बचेगा नही, मर जायेगा," छाते वाली बुढिया ने दर्द भरी आवाज मे कहा।

"इसके गले पर के फीते खोल देने चाहिए," डाकिया बोला।

सिपाही अपनी स्थूल, कापती उगलियो से, बडे भद्दे ढग से लाल, मासल गर्दन पर फीते खोलने लगा। प्रत्यक्षत वह उत्तेजित और घबराया हुआ था, फिर भी उसे यही ठीक लगा कि लोगो को वहा से हट जाने के लिए कहे—

"यहा भीड क्या लगा रखी है? इस आदमी की हवा रोक रहे हो, पहले ही गर्मी क्या कम है?"

"इन्हे भेजने से पहले इनकी डाक्टरी जाच की जानी चाहिए थी। और कमजोर कैदियो को नही लाना चाहिए था। अधमरा कर के इसे बाहर निकाला है," कानून की जानकारी बघारते हुए क्लर्क ने कहा।

पुलिस के सिपाही ने फीते खोल दिये और फिर सीधा हो कर इधर उधर दखने लगा।

"जाते क्या नही हो, मैं पूछता हू? तुम्हारा यहा क्या काम है? यहा कोई तमाशा हो रहा है, क्या?" उसने कहा और इस आशा स नेख्लूदोव की ओर देखा कि वह उसका समथन करेगा। लेकिन नेख्लूदोव स जब सहानुभूति प्राप्त नही हुई तो कॉनवाय के सिपाही की ओर घूम गया।

लेकिन कॉनवाय के सिपाही ने भी उस व्यग्रता की ओर कोई ध्यान नही दिया। वह अपने बूट की एडी उठा कर देख रहा था जो काफी घिस गई थी।

"जिन लोगो का यह काम है उन्ह कोई परवाह ही नही क्या लोगो को इस तरह् जान से मार डालना चाहिए "

"मान लिया कैदी है, पर फिर भी इनमान है," भीड मे से लोगो की आवाजें आ रही थी।

"इसका सिर ऊचा उठा दो और इसके मुह म थोडा पानी डालो," नेख्लदोव ने कहा।

"पानी मगवा भेजा है," पुलिस के सिपाही ने कहा, फिर कैदी की बगलो के नीचे से हाथ दे कर, उसने बडी मुश्किल से उसके शरीर को खीच कर थोडा ऊपर किया।

"यह भीड यहा क्या बना रखी है?" एक दृढ, अफ्सराना आवाज सुनाई दी। और एक पुलिस अफसर बेहद साफ-सुथरा, चमकता कोट पहने और उससे भी ज्यादा चमकते टॉप-बूट लगाये भीड के पास आने लगा।

"चलो, चलो यहा से। यहा खडे रहने का कोई मतलब नहा है," उसने भीड मे खडे लोगो को चिल्ला कर कहा। लेकिन अभी उसे स्वय यह मालूम नही था कि भीड किस कारण वहा जमा थी।

जब नजदीक पहुचा और देखा कि एक कैदी मर रहा है तो उसने इस तरह सिर हिलाया मानो जो कुछ हो रहा है ठीक है और इसकी उसे पहले से ही आशा थी। फिर पुलिस के सिपाही को सबोधित कर के बोला—

"यह कैसे हुआ है?"

पुलिस के सिपाही ने रिपोट दी कि जब कैदियो का काफिला जा रहा था, तो एक कैदी लुढक कर गिर पडा। कॉनवाय अफ्सर ने उसे वही छोड जाने का हुक्म दिया।

"तो ठीक है। इसे थाने में पहुंचाना होगा। एक गाडी बुलाओ।"

"एक चौकीदार गाडी लाने गया है," सैलूट मारते हुए सिपाही ने जवाब दिया।

क्लर्क ने तपिश के बारे में कुछ कहना शुरू किया।

"तुम्हारा क्या दखल है जी इस मामले में? चलो, भागो यहां से," पुलिस अफसर ने कहा और इस कठोरता से उसकी ओर देखा कि क्लर्क अपना सा मुंह ले कर रह गया।

"इसे थोडा पानी देना चाहिए," नेख्लूदोव ने कहा।

पुलिस अफसर ने उसी कठोरता से नेख्लूदोव की ओर भी देखा मगर कहा कुछ नहीं। जब चौकीदार पानी का एक भरा हुआ जग उठा लाया तो पुलिस अफसर ने सिपाही को हुक्म दिया कि थोडा पानी कैदी को पिला दो। सिपाही ने कैदी का झुका हुआ सिर ऊपर को उठाया और उसके मुंह में पानी डालने की कोशिश की, लेकिन कैदी निगल नहीं सकता था इसलिए पानी मुंह में से निकल कर उसकी दाढी से नीचे बहने लगा जिससे उसकी जॅकेट और गाढे की मैली कमीज भीग गई।

"इसके सिर पर डाल दो" अफसर ने हुक्म दिया। इस पर सिपाही ने कैदी के सिर पर से गोल, चपटी टोपी उतारी और उसके घुंघराले लाल बालों तथा सिर के उस हिस्से पर जहां से बाल उडे हुए थे, पानी उंडेलने लगा।

कैदी की आंखें और अधिक खुल गई, मानो वह भयभीत हो उठा हो, लेकिन उसकी स्थिति वैसी की वैसी ही बनी रही। उसके गर्द भरे चेहरे पर से मैल की धारा बह निकली, पर उसका मुंह अब भी पहले की तरह सांस खींचने के लिए खुलता और इससे उसका सारा शरीर छटपटाने लगता।

"सुनते हो! इधर आओ, इस आदमी को ले चलो," पुलिस अफसर ने नेख्लूदोव के गाडीवान को पुकार कर कहा। "इधर लाओ गाडी।"

"मेरी गाडी लगी हुई है," बिना सिर उठाये उदास आवाज में गाडीवान ने जवाब दिया।

"यह गाडी मैंने ले रखी है। पर आप बेशक इसे इस्तेमाल कीजिये। मैं तुम्हें पैसे दे दूंगा," मुड कर गाडीवान को सम्बोधित करते हुए नेख्लूदोव ने कहा।

"खडे देख क्या रहे हो?" अफसर ने चिल्ला कर कहा, "उठाओ इसे।"

सिपाही, चौकीदार और कॉनवाय के सिपाही ने हाथ दे कर मृतप्राय कैदी को उठाया और उसे गाडी की सीट पर बिठाने लगे। लेकिन वह बैठ नही सकता था। उसका सिर पीछे की ओर लटक गया और शरीर सीट पर से लुढक कर नीचे आ पडा।

"इसे लिटा दो," अफसर ने हुक्म दिया।

"चिन्ता नही कीजिये हुजूर। मैं इसी तरह इसे थाने तक पहुचा दूगा," पुलिस के सिपाही ने कहा और खुद सीट पर बैठ कर, मरते कैदी को अपनी बगल मे बिठा लिया और अपनी मजबूत दायी बाह उसकी कमर मे डाल दी।

कानवाय के सिपाही ने कैदी के पैर उठा कर गाडी के अन्दर कर दिये। पैरो मे मोजे नही थे, केवल जेलखाने के जूते पडे थे।

पुलिस अफसर ने इधर उधर देखा। उसकी नज़र कैदी की गोल टोपी पर पडी। वह उसे उठा लाया और कैदी के सिर पर रख दी जिस पर से टप-टप पानी बह रहा था।

"चलो, जाओ!" उसने हुक्म दिया।

गाडीबान ने घूम कर गुस्से से देखा, सिर हिलाया और गाडी मोड कर धीरे धीरे वापस थाने की ओर जाने लगा। सीट पर बैठा पुलिस का सिपाही बार बार कैदी को ऊपर की ओर खीचता परन्तु बार बार वह फिर नीचे की ओर फिसल जाता था। उसका सिर दायें-बायें चल रहा था। कॉनवाय का सिपाही जो गाडी के साथ साथ चल रहा था, बार बार कैदी के पाव उठा कर गाडी के अन्दर करता। नेख्लदोव भी गाडी के पीछे पीछे जाने लगा।

३७

थाने के फाटक पर फायर ब्रिगेड का एक सिपाही सतरी की ड्यूटी दे रहा था। उसके पास से हो कर गाडी थाने के अहाते के अन्दर जा पहुची और एक दरवाज़े के सामने जा कर रुक गई।

अहाते मे फायर ब्रिगेड के कुछ सिपाही, आस्तीनें चढाये, छकडे जैसी

किसी चीज़ को धो रहे थे, और ऊंची ऊंची आवाज़ म बनिया और हस रहे थे।

गाडी के अन्दर आने पर कुछेक सिपाही उसके आस-पास आ कर खडे हो गये, और कैंदी की निर्जीव देह को बगला के नीचे से हाथ दे कर गाडी मे मे निकालने लगे। उनके बोझ के नीचे गाडी की एक एक चूल चरमरा उठी।

जो सिपाही उसे थाने मे ले कर आया था, वह नीचे उतरा, पहले अपने सुन्न हुए बाज़ू को झटकता रहा फिर सिर पर से टोपी उतार कर क्रॉस का चिन्ह बनाया। लाश को दरवाज़े मे से ले जा कर सीढियो पर ले जाया गया। नेख्लूदोव भी पीछे पीछे जाने लगा। वे उसे एक मैले कुचैले कमरे म ले गये जिसमे चार खाटें बिछी थी। दो खाटो पर ढीला-ढाला लबादा पहने दो मरीज़ बठे थे। एक का मुह टेढा हो रहा था और गदन पर पट्टी बधी थी, दूसरा तपदिक का रोगी था। दो खाटें खाली पडी थीं। उनमे से एक पर क़ैदी को लिटा दिया गया। एक छोटे स कद का आदमी, जिसकी आखें चमक रही थी और जो बार बार भौंहें हिला रहा था, तेज़ तेज़ मगर हल्के हल्के क़दम रखते हुए उनके पास चला आया। उसने पहले कैदी की ओर देखा, फिर नेख्लूदोव की ओर और सहसा ज़ोर से ठहाका मार कर हसने लगा। यह आदमी पागल था जिसे थाने के अस्पताल म रखा हुआ था।

"वे मुझे डराना चाहते हैं, लेकिन वे मुझे कभी भी नही डरा पायेंगे," उसने कहा।

लाश उठाने वाले सिपाहियो के पीछे पीछे वही पुलिस अफसर और एक सहायक डाक्टर अन्दर चले आये।

सहायक डाक्टर ने पास आ कर कैंदी का चित्ती भरा हाथ उठाया। हाथ अब भी नरम था, हालाकि बेहद पीला और ठण्डा पड चुका था। क्षण भर तक उसने उसे अपने हाथ मे उठाये रखा, फिर छोड दिया। निर्जीव मास की लोथ की तरह वह मृतक के पेट पर जा गिरा।

"खत्म हो गया," सहायक डाक्टर ने कहा, फिर भी औपचारिकता निभाने के लिए उसने उसकी पानी से सनी, अलधुली कमीज़ के फीते खोल, फिर अपने घुघराले बाल पीछे को झटक कर कैंदी की छाती पर कान लगा कर उसके दिल की धडकन सुनने लगा। कैंदी की चौडी छाती पीली,

शिथिल पड गई थी। सब आदमी चुपचाप खडे थे। सहायक डाक्टर फिर उठा, सिर हिलाया और अपनी अगुलियो से एक एक कर के कैदी की पलको को छुआ। नीली आखें खुली थी और एकटक देख रही थीं।

"मैं नही डरता, मैं नही डरता," पागल बार बार कहे जा रहा था और सहायक डाक्टर की ओर थूक रहा था।

"कहो?" पुलिस अफसर ने पूछा।

"कहना क्या है?" सहायक डाक्टर ने जवाब दिया, "इसे मुर्दाखाने मे ले जाना होगा।"

"ठीक तरह जानते हो न?" अफसर ने पूछा।

"अब तक भी नही जानता?" लाश की छाती पर कमीज़ नीचे खीचते हुए सहायक डाक्टर ने कहा। "फिर भी मैं मात्वेई इवानोविच को बुला भेजता हू। वह भी आ कर देख ले। पेत्रोव, जा कर उन्हे बुला लाओ।" और सहायक डाक्टर लाश के पास से हट गया।

"इसे मुर्दाखाने मे ले जाओ," पुलिस अफसर ने हुक्म दिया, "उसके बाद सीधे दफ्तर मे पहुचो, वहा तुम्हे दस्तखत करना होगा," उसने कॉनवाय के सिपाही से कहा, जो घडी भर के लिए भी लाश से अलग नही हुआ था।

"जी, जनाब," सिपाही ने जवाब दिया।

पुलिस के सिपाही फिर लाश को उठा कर नीचे ले चले। नेख्लूदोव उनके पीछे पीछे जाना चाहता था लेकिन पागल ने उसे रोक लिया।

"तुम मेरे खिलाफ साजिश मे नही हो, मैं जानता हू। इसलिए तुम मुझे एक सिगरेट दे दो।"

नेख्लूदोव ने अपना सिगरेट-केस निकाल कर एक सिगरेट दे दिया। पागल सारा वक्त बडी तेज़ी से अपनी भौहे हिला रहा था। वह नेख्लूदोव को अपनी वार्ता सुनाने लगा कि किस तरह विचार-सकेत द्वारा वे उसे यातना पहुचा रहे है।

"सब मेरे खिलाफ ह, सभी नये नये तरीको से मुझे सताते है, मुझे परेशान करते हैं।"

"माफ कीजिये," नेख्लूदोव ने कहा और बिना कुछ और सुने कमरे मे से निकल कर बाहर अहाते म चला गया। वह देखना चाहता था कि लाश को कहा रखा जायेगा।

सिपाही अपना बोझ उठाये अहाता पार कर चुके थे और एक तहखाने के दरवाज़े म से अन्दर जा रहे थे। नेख्लूदोव उनके पास जाना चाहता था लेकिन पुलिस अफ़सर ने उसे रोक दिया—

"क्या काम है?"

"कुछ नही।"

"कुछ नही? तो जाओ यहा से।"

नेख्लूदोव चुपचाप अपनी गाडी के पास वापस चला आया। गाडीवान बैठा ऊघ रहा था। नेख्लूदोव ने उसे उठाया और वे फिर स्टेशन की ओर जाने लगे।

अभी वे सौ गज़ तक का फासला भी तय नही कर पाये होगे जब उन्होंने एक छकडा आते देखा। उसके साथ साथ भी एक कॉनवाय का सिपाही, बन्दूक उठाये चला आ रहा था। छकडे के ऊपर एक और कैदी लेटा था। प्रत्यक्षत वह अभी तक मर चुका था। छकडे मे वह पीठ के बल लेटा था। हर हिचकोले पर उसका मुडा हुआ सिर, जिस पर से गोल, चपटी टोपी खिसक कर नाक तक आ गई थी, झटकता और छकडे से टकराता। गाडीवान, मोटे मोटे बूट पहने, रासे हाथ म पकडे, छकडे के साथ साथ पैदल चल रहा था। पीछे पीछे पुलिस का एक सिपाही भी चला आ रहा था। नेख्लूदोव ने अपने गाडीवान के कधे को छुआ।

"देखिये ये लोग क्या कर रह हैं," घोडा खडा करते हुए गाडीवान ने कहा।

नेख्लूदोव नीचे उतर पडा, और छकडे के पीछे जाते हुए फिर एक बार सन्तरी के पास से हो कर थाने के फाटक मे स अन्दर चला गया। आग बुझाने वाले सिपाही छकडा धो चुके थे, और अब उनकी जगह एक ऊचा-लम्बा, दुबला-पतला फायर ब्रिगेड का कप्तान जेबो मे हाथ डाले खडा था और बडी कठोर नज़रो से एक लाल भूरे रग के मोटे-ताज़े, खूब पले हुए घोडे को देखे जा रहा था, जिसे एक फायरमैन अहाते मे ऊपर-नीचे चला रहा था। यह आदमी फायर-ब्रिगेड का कप्तान था, इसकी टोपी पर नीले रग का फीता लगा था। घोडे का एक अगला पाव लगडा रहा था। पास मे ही एक सलोतरी खडा था, जिसे कप्तान बडे गुस्से से कुछ कह रहा था।

पुलिस अफसर भी वही पर खडा था। एक और मुर्दे को अन्दर लाते देख कर वह कॉनवाय के सिपाही के पास गया।

"इसे कहा से उठा लाये हो?" झुझलाहट से सिर हिलाते हुए उसने पूछा।

"गोर्वातोव्स्काया पर से," सिपाही ने जवाव दिया।

"कैंदी है?" फायर ब्रिगेड के कप्तान ने पूछा।

"जी।"

"आज यह दूसरी लाश है," पुलिस अफसर ने कहा।

"अजीब इतजाम है इन लोगो का! मगर आज गर्मी भी तो वहुत पड रही है," कप्तान ने कहा, फिर फायरमैन को सम्बोधित करते हुए जो लगडे घोडे को चला रहा था, चिल्ला कर वोला,—

"इसे ले जाओ और कोने वाले कटघरे मे बाध दो। और, तुम, सुअर के बच्चे, मैं तुम्हे अच्छी तरह सिखाऊगा किस तरह चगे भले घोडो को लगडा करते है। शैतान कही के, इनकी कीमत तुमसे ज्यादा है।"

सिपाहियो ने छकडे मे से लाश निकाली, उसी तरह जसे पहली लाश निकाली गई थी और सीढिया चढ कर अस्पताल मे ले गये। मन्त्रमुग्ध की तरह नेख्लूदोव भी उनके पीछे पीछे हो लिया।

"क्या काम है?" एक सिपाही ने पूछा।

लेकिन नेख्लदोव ने कोई उत्तर नही दिया और उसी तरफ चलता गया जिधर लाश को ले जाया जा रहा था।

पागल खाट पर बैठा, वडे चाव से सिगरेट के कश लगा रहा था जो नेख्लूदोव ने उसे दिया था।

"ओह, तुम फिर आ गये हो!" उसने कहा और हसने लगा। जब उसकी नजर लाश पर गई तो उसने मुह बनाया और कहने लगा, "फिर ले आये! उफ, मैं तग आ गया हू! पर मैं अब वच्चा तो नही हू, क्यो?" और प्रश्नसूचक मुस्कान के साथ वह नेख्लूदोव की ओर देखने लगा।

नेख्लूदोव मृतक के चेहरे को ओर देखे जा रहा था जो पहले टोपी के कारण नजर नही आ रहा था। जितना ही पहला कैंदी कुरूप था उतना ही यह कैंदी रूपवान था। उसका चेहरा और शरीर दोनो सुन्दर थे। उसका शरीर पूरे जोवन पर था। सिर आधा मुडा होने के कारण उसकी आकृति कुछ विगड गई थी, लेकिन फिर भी, काली निर्जीव आखो के ऊपर उसका ललाट जो वहुत चौडा नही था और हल्का सा खम खाता था, बडा सुन्दर था। इसी तरह काली काली मूछो के ऊपर उसकी पतली

नाक बडी सुन्दर लगती थी। होठ नीले पडने लगे थे, मगर अब भी उन पर हल्की सी मुस्कान खेल रही थी। चेहरे के निचले हिस्से पर छोटी सी दाढी थी। जिस जगह सिर मुडा हुआ था, वहा उसका एक कान नजर आ रहा था जिसका आकार सुगठित और सुदर था। उसका चेहरा शान्त, गभीर तथा दयालुता का भाव लिये हुए था।

इस मनुष्य मे आत्मोत्सग की सभी सभावनाओ को कुचल दिया गया था। उसके सुगठित हाथो और बेडी लगे पावो को देखते हुए तथा उसके सुडौल शरीर के एक एक अग की मजबूत मासपेशियो को देखते हुए साफ नजर आ रहा था कि यह कितना सुदर, शक्तिशाली तथा फुर्तीला मानव-जन्तु रहा होगा, और एक जन्तु के रूप मे वह उस भूरे घोडे से कही अधिक सम्पूण था जिसके लगडे हो जाने पर फायर ब्रिगेड का कप्तान इतना झुझला रहा था। फिर भी उन्होंने इसे मार मिटाया था। एक इसान मार डाला गया था, इसका तो उह अफसोस क्या होगा, उह तो इस बात का भी अफसोस नही था कि एक काम करने वाला पशु मारा गया था। अगर किसी के दिल मे कोई भावना उठी भी थी ता झुझलाहट की, कि एक और बखेडा खडा हो गया, और किसी तरह इस लाश को गलने-सडने से पहले किनारे लगाना हागा।

थाने के इन्स्पेक्टर के साथ डाक्टर तथा सहायक डाक्टर अस्पताल म आये। डाक्टर गठीले बदन का आदमी था, जिसने बढिया पागी सिल्क का सूट पहन रखा था। उसकी पतलून उसकी मासल जाघा के साथ चिपकी हुई थी। इस्पेक्टर छोटे कद का स्थूलकाय आदमी था, चेहरा गेंद की तरह गोल और लाल। उसकी एक आदत थी कि वह गालो म हवा भर कर धीरे धीरे उसे छोडता था, जिससे उसका चेहरा और भी गोल और लाल हो उठता था। डाक्टर मतक के साथ खाट पर बैठ गया, उसी ढग से उसके हाथ उठा कर देखे जिस तरह पहले सहायक डाक्टर ने देखे थे, मृतक के दिल पर कान रखा और फिर अपनी पतलून ठीक करते हुए उठ खडा हुआ।

"इससे अधिक मरा हुआ क्या होगा," वह बोला।

इस्पेक्टर ने मुह म हवा भरी और धीरे धीरे उसे बाहर निकालने लगा।

"किस जेलखाने का कैदी है?" उसने कॉनवाय के सिपाही से पूछा।

सिपाही ने नाम बताया, साथ ही याददहानी के लिए कहा कि कैदी के पावो मे अब भी बेडिया पडी है।

"मैं अभी उतरवा देता हू। भगवान की कृपा से लोहार तो हैं ही," इन्स्पेक्टर ने कहा। उसने गालो मे फिर हवा भर ली थी और धीरे धीरे उसे निकालता हुआ दरवाजे की ओर जाने लगा।

"यह क्याक्र हुआ है?" नेख्लूदोव ने डाक्टर से पूछा।

डाक्टर ने ऐनका मे से नेख्ल्दोव की ओर देखा।

"क्या हुआ है? तुम जानना चाहते हो कि लू लग जाने से ये क्यो मरते है? सुनो। सर्दी का सारा मौसम यह बिना रोशनी के और बिना व्यायाम के पडे रहते है। फिर किसी आज के से दिन सहसा इह बाहर धूप मे निकाल लाया जाता है। बहुत बडी भीड मे ये चलते हैं जिससे इह ताज़ा हवा नही मिलती। नतीजा होता है कि लू लग जाती है।"

"यह बात है तो क्यो इन्हे इस तरह बाहर निकाला जाता है?"

"यह पूछना हो तो उन लोगो से जा कर पूछो जो इह भेजते हैं। पर क्या मैं पूछ सकता हू कि तुम कौन हो?"

"मैं, यो ही, इधर से गुज़र रहा था।"

"ओह, तो नमस्ते, मेरे पास वक्त नही है," डाक्टर ने चिढ कर कहा। फिर पतलून को नीचे की ओर खीचते हुए वह मरीज़ो की खाटो की ओर जाने लगा।

"कहो कसी तबीयत है?" उसने पीले चेहरे वाले मरीज़ से पूछा जिसका मुह टेढा हो रहा था और गदन पर पट्टी बधी थी।

इस बीच, पागल आदमी ने सिगरेट खत्म कर दिया था और अब खाट पर बैठा डाक्टर की दिशा मे बराबर थूके जा रहा था।

नेख्लूदोव नीचे उतर कर अहाते मे आ गया, जहा आग बुझाने वाला के घोडे और कुछ मुर्गिया घूम रही थी। फिर पीतल की टोपी वाले सन्तरी के पास से हो कर फाटक के बाहर हो गया और गाडी म जा बैठा। गाडीवान फिर सो गया था।

३८

जब नेख्लूदोव स्टेशन पर पहुचा तो सभी कैदी गाडी मे बैठ चुके थे। गाडी के डिब्बो की खिडकियो म सीखचे लगे थे। कुछ लोग जो कदियो से मिलने आये थे प्लेटफाम पर खडे थे, मगर उन्ह डिब्बो के नज़दीक जान की इजाज़त नही थी।

कॉनवाय के सिपाही उस दिन बडे परेशान थे। जेलखाने से स्टेशन को जाते हुए रास्ते मे तीन और कैदी लू लग जाने से गिर कर मर गये थे। ये उन दो कैदियो के अलावा थे जिनकी लाशे खुद नेख्लूदोव ने देखी थी। एक कैदी की लाश नजदीक वाले थाने म पहुचा दी गयी थी। दो कैदी स्टेशन पर मरे थे।* कॉनवाय के सिपाहियो को इसकी कोई चिन्ता नही थी कि पाच आदमी जो उनके दायित्व म थे, जिन्दा रह सकते थे, लेकिन वे मर गये। इसकी तो उन्हे कोई परवाह नही थी, हा, इस बात की चिन्ता जरूर थी कि कानूनी कार्यवाही करने मे, जिसकी इन मामलो मे जरूरत रहती है, कोई भूल न हो। लाशो को ठीक जगह पर पहुचाना, कैदियो के कागजात और सामान हवाले करना, फहरिस्त मे से उनके नाम काटना—जिस फहरिस्त के मुताबिक उन्हे नीज्नी नोवगोरद सौंपना था—ये सब काम परेशानी के थे, विशेषकर ऐसे दिन जब कि इतनी तेज गर्मी पड रही थी।

इसी काम मे कॉनवाय के आदमी व्यस्त थे। और जब तक यह सब खत्म नही हो जाय वे नेख्लूदोव तथा उन लोगो को जो कैदियो से मिलने की इजाजत माग रहे थे डिब्बो के नजदीक नही जाने दे सकते थे। लेकिन नेख्लूदोव न एक सार्जेंट के हाथ गर्म किये और उसने फौरन् जाने दिया। सार्जेंट ने जाने तो दिया मगर साथ ही कह दिया कि जितनी जल्दी हो सके, अपनी बात खत्म कर ले ताकि कही अफसर उन्हे देख न ले। कुल मिला कर अठारह डिब्बे थे। इनमे अफसरो के एक डिब्बे को छोड कर, बाकी सभी डिब्बे कैदियो से भरे पडे थे। डिब्बो के सामने से गुजरते हुए नेख्लूदोव कान लगा कर सुनने लगा कि कैदी क्या बाते कर रहे है। सभी डिब्बो से शोर-गुल और गाली-गलोच के बीच बेडियो के खनकने की आवाज आ रही थी। लेकिन कही भी उसने कैदियो को अपने मृत साथियो की चर्चा करते नही सुना। बाते चल रही थी तो बोरियो की, पीने के लिए पानी की, बैठने की जगह की कि कौन किस सीट पर बैठे।

नेख्लूदोव ने एक डिब्बे मे झाक कर देखा। दो कानवाय सिपाही कैदियो

---

*सन १८८० के आस-पास मास्को मे एक दिन म पाच कैदी लू लग जाने से मर गये थे, जब उन्हे बुतीर्स्काया जेल से नीज्नी नोवगोरोद लाइन के स्टेशन तक ले जाया जा रहा था। (लेव तोलस्तोय)

की कलाइयों पर से हथकड़ियाँ उतार रहे थे। कैदी अपने बाजू आगे को बढ़ाते, एक सिपाही चाबी से हथकड़ी खोल देता, दूसरा हथकड़ियाँ संभाल रहा था।

मर्द कैदियों के डिब्बे पीछे छूट गये। अब स्त्रियों के डिब्बे शुरू हुए। इनमें से दूसरे डिब्बे में से एक औरत के कराहने की आवाज आ रही थी—"उफ, उफ, उफ! हे भगवान! उफ, ओह! हे भगवान!"

इस डिब्बे को लाघ कर नेख्लूदोव तीसरे डिब्बे की सिपाही द्वारा दिखायी खिड़की के पास जा खड़ा हुआ। खिड़की के पास मुंह ले जाते ही उसे अन्दर से आती, पसीने की गन्ध से बोझल गरम गरम हवा महसूस हुई और औरतों की ऊंची ऊंची चीखती चिल्लाती आवाजें साफ सुनाई देने लगी।

सभी सीटों पर औरतें बैठी थीं, उनके चेहरे लाल और पसीने से तर हो रहे थे और सभी ऊंची ऊंची आवाज में बातें कर रही थीं। सभी ने कैदियों के लबादे और सफेद रंग के जाकेट पहन रखे थे। खिड़की पर नेख्लूदोव का खड़े देख कर सभी का ध्यान उसकी ओर खिंच गया। जो औरतें सबसे नज़दीक बैठी थीं उन्होंने बोलना बन्द कर दिया और उसके पास आ गयीं। मास्लोवा सामने वाली खिड़की के पास बैठी थी। उसने सफेद जाकेट पहन रखी थी और सिर नंगा था। गोरी चिट्टी फेदोस्या, जो हर वक्त मुस्कराती रहती थी, नेख्लूदोव से थोड़ा नजदीक बैठी थी। उसे पहचानते ही उसने मास्लोवा को कोहनी मारी और खिड़की की ओर इशारा किया।

मास्लोवा झट उठ खड़ी हुई और अपने काले बालों पर रूमाल बांधती हुई खिड़की के पास आ गई और एक सीखचे को पकड़ कर खड़ी हो गई। उसका चेहरा गर्मी के कारण लाल हो रहा था।

"आज बड़ी गर्मी है," खुशी से मुस्कराते हुए उसने कहा।

"तुम्हें चीजें मिल गईं?"

"हां, शुक्रिया।"

"किसी और चीज की ज़रूरत तो नहीं?" नेख्लूदोव ने पूछा। डिब्बे में से ऐसी गर्म हवा आ रही थी, मानो आग की भट्टी में से आ रही हो।

"मुझे किसी चीज की ज़रूरत नहीं, शुक्रिया।"

"अगर पानी मिल सके तो," फेदोस्या बोली।

"हा, अगर पानी मिल जाय तो बहुत अच्छा हो," मास्लोवा ने भी कहा।
"क्या, क्या तुम्हारे डिब्बे म पानी नही है?"
"था, मगर चुक गया है।"
"मैं अभी किसी कॉनवाय के आदमी से कहता हू। हम अब नीज्नी नोवगोराद पहुच कर ही मिल पायेंगे।"
"क्या, क्या तुम भी चल रहे हो?" मास्लोवा न कहा, मानो उसे मालूम ही न हो, और नेख्लूदोव की ओर देखा। उसका चेहरा ख ुशी से चमक रहा था।
"मैं दूसरी गाडी से आऊगा।"
मास्लोवा कुछ नही बोली, केवल एक ठण्डी सास भरी।
"जनाब, क्या यह ठीक है कि बारह कैंदी मार गये हैं?" एक बुढिया कदी ने पूछा जिसका चेहरा बडा कठोर और आवाज आदमियो की आवाज की तरह गहरी थी।
यह कोराब्ल्योवा थी।
"मैंने बारह आदमियो का ता नही सुना। हा, दा कैदिया का मैंने मरे देखा है," नेख्लूदोव ने कहा।
"लोग कहते हैं कि बारह आदमियों को मार डाला है। क्या मारने वालो को सजा नही मिलेगी? जरा सोचो तो! शैतान कही के!"
"क्या कोई भी औरत बीमार नही पडी?" नेख्लूदोव ने पूछा।
"औरतें ज्यादा मजबूत होती हैं," एक ठिगने से कद-बुत की औरत ने जवाब दिया और कह कर हसने लगी। "केवल एक औरत ने यहा बच्चा जनने की ठान ली है। वहा पर है," उसने बगल वाले डिब्बे की ओर इशारा करते हुए कहा, जहा से कराहने की आवाज आ रही थी।
"तुमन पूछा है कि हमे कुछ चाहिए या नही," अपनी आह्लादपूर्ण मुस्कान छिपाने की कोशिश करते हुए मास्लोवा ने कहा, "क्या कोई ऐसा इन्तजाम नही हो सकना कि इस औरत को यही रख लिया जाय? वह इस वक्त बडी तकलीफ म है। अगर तुम अफसरो स कहोगे तो "
"हा, मैं बात करूगा।"
"एक और बात। क्या यह अपने पति–तारास–से नही मिल सकती?" आखो से मुस्कराती फेदोस्या की ओर इशारा करते हुए उसने पूछा। "वह भी तुम्हारे साथ जा रहा है न?"

"जनाब, बाते करने की इजाजत नही है," एक कॉनवाय-सार्जेंट न कहा। यह वह सॉर्जेट नही था जिसने नेख्लूदोव को निकल जाने दिया था।

नेख्लूदोव डिब्बे के पास से हट गया और कॉनवाय अफसर को ढूंढने गया ताकि उससे प्रसव वाली औरत तथा तारास के बारे म पूछ सके। लेकिन वह कही भी नजर नही आया, न ही कानवाय के किसी दूसरे आदमी से उसका पता चल सका। सब इधर उधर भाग-दौड रह थे, कुछ लोग किसी कैदी को कही ले जा रहे थे, कुछ अपने लिए रसद लेने भागे जा रहे थे, कुछ सिपाही अपना सामान डिब्बो म टिका रहे थे या एक महिला की सेवा करने मे व्यस्त थे जो कॉनवाय अफसर के साथ जा रही था। बडी उपेक्षा से वे नेख्लूदोव के सवालो का जवाब देते।

जब दूसरी घण्टी हो गई तब कही नेख्लूदोव को कॉनवाय अफसर नजर आया। छोटे छोटे बाजुओ वाला यह अफसर ठूठ जसे हाथ से अपनी मूछो को पोछ रहा था जो उसके मुह पर लटक रही थी, और कधे बिचकाते हुए किसी बात पर एक कॉर्पोरल पर नाराज हो रहा था।

"आपको क्या कहना है?" उसने नेख्लूदोव से पूछा।

"यहा एक कैदी औरत है जिसे प्रसव पीडा हो रही है। मैं सोच रहा था अगर "

"होने दो प्रसव पीडा। बाद मे हम देख लगे।" और तेजी से अपने छोटे छोटे बाजू झुलाता हुआ वह भाग कर अपने डिब्बे की ओर जाने लगा।

उसी समय रेलगाडी का गाड, हाथ मे सीटी पकडे, सामने से गुजरा। तीसरी घण्टी बजायी गई। प्लेटफॉम पर खडे लोगो तथा स्त्रियो के डिब्बो की ओर से रोने की आवाजे आने लगी। गाडी चल दी। नेख्लदोव तारास के साथ खडा, एक एक डिब्बे को जाते देख रहा था जिनमे मुडे हुए सिरो वाले कैदी खिडकियो के सीखचो को पकडे खडे थे। आदमियो के डिब्बो के बाद औरतो का पहला डिब्बा सामने से गुजरा। खिडकियो पर स्त्रियो के सिर नजर आ रहे थे, कुछ ने रूमाल बाध रखे थे, कुछ नगे सिर थी। फिर दूसरा डिब्बा गुजरा, जिसमे से कराहने की आवाज अब भी आ रही थी। इसके बाद वह डिब्बा जिसम मास्लोवा थी। और स्त्रियो के साथ वह भी खिडकी पर खडी थी, और उसके होठो पर दयनीय मुस्कान खेल रही थी।

नेख्लूदोव की गाडी छूटने मे अभी दो घण्टे बाकी थे। उसे पहले ख्याल आया था कि इस बीच अपनी बहिन से जा कर मिल आऊगा, लेकिन आज सुबह से जो कुछ वह देख रहा था, उससे वह इतना उद्विग्न और क्लान्त महसूस करने लगा था कि फर्स्ट क्लॉस के रिफ्रेशमेंट रूम मे जा कर एक सोफे पर बैठते ही उसे नीद ने आ घेरा। उसे स्वय भी ख्याल न था कि वह इतना थक चुका है। वही बैठे बैठे उसने करवट बदली और सिर के नीचे अपनी कोहनी रख कर सो गया।

एक बैरे ने उसे जगाया, जिसने ड्रेस-सूट पहन रखा था और हाथ म नेप्किन उठाये हुए था।

"हुजूर, क्या आप ही प्रिंस नेख्लूदोव हैं? एक महिला आपको ढूढ रही हैं।"

नेख्लूदोव चौंक कर उठ बैठा, और आखें मलते हुए याद करने लगा कि वह कहा पर है और सुबह क्या कुछ घटा था।

उसे अपनी कल्पना मे कैदियो का काफिला नजर आया, फिर लाशें, रेल के डिब्बे जिनकी खिडकिया पर सीखचे लगे थे और अन्दर स्त्रिया बद थी। एक स्त्री प्रसव-पीडा से परेशान थी लेकिन उसके पास कोई मदद करने वाला नही था, दूसरी सीखचो के बीच से उसे देख रही थी और उसके होठो पर दयनीय मुस्कान थी। लेकिन जो सचमुच उसके सामने था वह सर्वथा भिन्न था। एक मेज पर बोतले और गुलदान रखे थे, आतिशदान और प्लेट-प्याले सजे थे। उसके आस-पास फुर्तीले बैरे घूम रहे थे। कमरे के एक सिरे पर एक बडी आलमारी रखी थी जिसमे बोतलो की कतारें लगी थी, फलो से भरे तश्तरीपोस रखे थे और काउटर के पीछे बारमैन खडा था। बार पर खडे मुसाफिरो की पीठें नजर आ रही थी।

नेख्लूदोव उठ बैठा और अपने विचारो को व्यवस्थित करने लगा। उसने देखा कि कमरे मे सभी लोगो की आखे बडे कुतूहल से दरवाजे पर लगी हैं, जहा पर कुछ हो रहा था। एक जुलूस सा अन्दर चला आ रहा था। कुछ आदमी एक कुर्सी उठाये हुए थे जिस पर एक महिला बैठी थी। महिला का सिर किसी बेहद महीन कपडे म लिपटा हुआ था। सबसे आगे आगे कुर्सी को थामे एक चोबदार चला आ रहा था, जो नेख्लूदोव को

जाना-पहचाना लगा। सबसे पिछले आदमी को भी वह जानता था, जिसकी टोपी पर सुनहरी डोरी लगी थी। वह दरबान था। कुर्सी के पीछे पीछे एक बडी सलीकेदार, घुघराले बालो वाली नौकरानी एप्रन लगाये चली आ रही थी। हाथ मे एक पासल, छाते और चमडे के गोल से बग मे कोई चीज रखे लिये आ रही थी। इसके बाद प्रिंस कोर्चागिन ने कमरे मे प्रवेश किया, लटकते गाल, मिरगी की मारी गदन, वह सिर पर सफरी टोपी लगाये हुए था। उसके पीछे मिस्सी, उसका चचेरा भाई मीशा और नेख्लदोव का एक परिचित ओस्टन चले आ रहे थे। यह ओस्टन कूटनीतिज्ञ था, लम्बी गदन, टेंटुआ बाहर को निकला हुआ, बडी हसोड तबीयत का आदमी था, उसके चेहरे पर से भी हर वक्त विनोदप्रियता झलकती थी। वह बडे जोरदार किन्तु मजाकिया तरीके से मिस्सी को कोई बात सुना रहा था और मिस्सी मुस्करा रही थी। पीछे पीछे डाक्टर गुस्से से सिगरट के कश लगाता चला आ रहा था।

कोर्चागिन परिवार की शहर के निकट जमीन-जायदाद थी। उसे छोड कर परिवार प्रिंसेस की बहिन की जागीर मे रहने जा रहा था, जो नीज्नी नोवगोरोद रेलमाग पर स्थित थी।

जुलूस—कुर्सी उठाने वाले, नौकरानी तथा डाक्टर—स्त्रियो के प्रतीक्षा कक्ष म गायब हो गया। कमरे मे बैठे लोग अब भी बडे कुतूहल और आदर के साथ उस ओर देखे जा रहे थे। बूढा प्रिंस कमरे मे ही रुक गया और एक मेज के सामने बैठ, बेरे का बुलाया और भोजन तथा शराब लाने को कहा। मिस्सी तथा ओस्टन भी रिफ्रेशमेंट रूम मे ही रुक गये। वे दोनो भी बठने ही वाले थे जब उन्हे दरवाजे के पास अपना कोई परिचित नजर आ गया और वे उसकी ओर चले गये। दरवाजे पर नताल्या रागोजिन्स्काया खडी थी।

नताल्या कमरे के अन्दर चली आई। उसके साथ आग्राफेना पेत्रोव्ना थी। दोनो कमरे मे इधर-उधर देखने लगी। नताल्या को एक साथ ही मिस्सी और अपना भाई नजर आ गये। भाई की ओर सिर हिला कर उसन अभिवादन किया और पहले मिस्सी से मिलने चली गई। परन्तु उसे चूमने के फौरन् ही बाद भाई की ओर मुड गई।

"आखिर तुम मिल ही गये," वह बोली।

मिस्सी, मीशा और ओस्टन मे मिलने के लिए नख्लूदोव उठ खडा हुआ। मिस्सी से उसे मालूम हुआ कि व अपनी मौसी के घर रहने के लिए

इसलिए जा रहे हैं कि उनके देहात वाले घर मे आग लग गई थी। ओस्टन किसी दूसरे अग्निकाण्ड के बारे मे कोई मजाकिया किस्सा सुनाने लगा।

नेख्लूदोव ने कोई ध्यान नही दिया और बहिन से बाते करने लगा।

"तुम आ गयी, मुझे बेहद खुशी हुई है।"

"मुझे तो आये काफी देर हो गई है," उसने कहा, "आग्राफेना पेत्रोव्ना मेरे साथ आयी है।" और आग्राफेना पेत्रोव्ना की ओर इशारा किया जो बरसाती-कोट पहने और सिर पर बानेट लगाये कुछ दूर खडी थी, ताकि भाई-बहिन की बातो मे बाधक न बने। उसने स्नेहपूर्ण तथा मर्यादित ढग से झुक कर नेख्लूदोव का अभिवादन किया। "हमने सब जगह तुम्हें तलाश किया।"

"और मैं यहा सोया पडा था। मुझे बेहद खुशी है कि तुम आयी," नेख्लूदोव ने दोहरा कर कहा। "मैंने तुम्हे एक पत्र लिखना शुरू किया था।"

"क्या, सच?" उसने कहा और डर सी गयी। "किस बारे मे?"

मिस्सी तथा उसके साथ के दोनो सज्जन यह देख कर कि भाई-बहिन के बीच किसी निजी मामले पर बातचीत होने जा रही है, वहा से हट गये। नेख्लूदोव और उसकी बहिन खिडकी के पास एक सोफे पर जा बैठे, जिस पर मखमल लगी थी और एक कम्बल, एक बक्स तथा कुछ और सामान रखा थे।

"कल तुम्हारे घर से लौटने के बाद मेरा मन करता था कि तुम्हारे पास लौट कर जाऊ और माफी मागू, लेकिन मेरी समझ मे नही आ रहा था कि तुम्हारे पति क्या सोचेगे," नेख्लूदोव ने कहा, "कल तुम्हारे पति के साथ मेरा बर्ताव अच्छा नही था, और बाद मे मुझे इसका बडा खेद हुआ।"

"मैं जानती थी, मुझे यकीन था कि तुम्हारा मतलब यह नही है," उसकी बहिन कहने लगी। "तुम जानते हो "

उसकी आखो मे आसू आ गये और उसने अपना हाथ भाई के हाथ पर रख दिया।

वाक्य स्पष्ट नही था, परन्तु नेख्लूदोव पूर्णतया उसका अभिप्राय समझ गया, और उससे उसका दिल भर आया। अभिप्राय यही था कि जहा मैं अपने पति के प्रेमपाश मे बधी हू, वहा तुम्हारे प्रति भी मेरा प्रेम बडा गहरा और महत्वपूर्ण है। इसलिए तुम दोनो के बीच कोई गलतफहमी पैदा हो जाय तो मेरे दिल को बहुत कष्ट पहुचता है।

"धयवाद, धयवाद! उफ, तुम नही जानती ग्राज मैंने क्या देखा है!" नेख्लूदोव ने कहा। सहसा उसे दूसरे मृतक कैदी का चेहरा याद हो ग्राया। "ग्राज दो कैदी मारे गये।"

"मारे गये? कसे?"

"हा, मारे गये। इस तपती धूप मे वे उन्हे बाहर ले ग्राये, ग्रौर दो को लू लग गई जिससे वे मर गये।"

"नामुमकिन है! क्या, ग्राज? ग्रभी?"

"हा, ग्रभी। मैंने लाशें देखी हैं।"

"पर मार कैसे गये? किसने उन्हे मारा?" नताल्या ने पूछा।

"जिन लोगो ने धकेल कर उन्हे बाहर निकाला, वे ही उनके कातिल थे," नेख्लूदोव ने चिढ कर कहा। उसे महसूस हो रहा था कि वह भी इस बात को ग्रपने पति की ही नजरो से देख रही है।

"हे भगवान!" ग्राग्राफेना पेत्रोव्ना के मुह से निकला, जो उनके पास चली ग्रायी थी।

"इन बदनसीब लोगो के साथ क्या बीत रही है, हमे इसका कुछ भी मालूम नही। लेकिन इसका पता चलना चाहिए," नेख्लूदोव ने कहा ग्रौर बूढे कोर्चागिन की ग्रोर देखा, जो गले के साथ नेप्किन लगाये, सामने बोतल रखे बैठा था। उसी समय उसकी भी नजर नेख्लूदोव पर गई।

"नेख्लूदोव," उसने पुकारा, "ग्राग्रो ग्रौर मेरे साथ बैठ कर थोडा खा पी लो। लम्बे सफर से पहले यह ग्रच्छा होता है।"

नेख्लूदोव ने इन्कार कर के मुह फेर लिया।

"पर तुम करोगे क्या?" नताल्या कह रही थी।

"जो बन पडेगा, करूगा। मैं कुछ नही जानता, लेकिन इतना जरूर महसूस करता हू कि कुछ करना होगा। ग्रौर जो कुछ भी हो सका मैं करूगा।"

"हा, मैं समझती हू। ग्रौर उनके बारे मे?" मुस्करा कर कोर्चागिन की ग्रोर इशारा करते हुए उसने पूछा। "क्या सचमुच तुम्हारा ग्रब इनसे कोई वास्ता नही रहा है?"

"बिल्कुल। ग्रौर मैं समझता हू दोनो तरफ से किसी को भी इसका ग्रफसोस नही होगा।"

बडे ग्रफसोस की बात है। मुझे इसका बडा खेद है। मुझे मिस्सी

वडी प्यारी लगती है। पर, मान लिया कि तुम यहा रिश्ता नही करना चाहते, पर तुम अपने का बाधना क्यो चाहते हो?" उसने शर्मा कर पूछा। "तुम जा क्यो रह हो?"

"मैं जा रहा हू क्योंकि यह मेरा कर्तव्य है," नेख्लूदोव ने गभीर आवाज़ मे रुखाई के साथ कहा, मानो इस वार्तालाप को खत्म कर देना चाहता हो।

पर उसे फौरन अपने रूखेपन पर लज्जा होने लगी। "जो कुछ मेरे मन मे है, मैं इसे क्यो न बतला दू। बेशक आग्राफेना पेत्रोव्ना भी सुन ले," बुढिया नौकरानी की ओर देखते हुए वह सोचने लगा। उसके वहा मौजूद होने के कारण उसकी इच्छा और भी तीव्र हो गयी कि मैं अपना निश्चय बहिन को बता दू।

"तुम्हारा मतलब है मैं कात्यूशा के साथ क्यो विवाह कर रहा हू? बात यह है कि मैंने तो निश्चय कर लिया था परन्तु वह इकार कर रही है, बडी दृढता से इकार कर रही है," उसने कहा और उसकी आवाज़ कापने लगी। जब कभी भी वह इस विषय की चर्चा करता था तो उसकी आवाज़ कापने लगती थी। "उसे मेरा कुर्बानी करना मजूर नही, पर वह स्वय कुर्बानी कर रही है। और उसकी स्थिति मे यह बहुत बडी बात है। और मैं इस कुर्बानी को स्वीकार नही कर सकता, यदि यह क्षणिक आवेश है। इसलिए मैं उसके साथ जा रहा हू। जहा पर वह रहेगी, वही पर मैं भी रहूगा, और जहा तक बन पडा, मैं उसके बोझ को हल्का करने की कोशिश करूगा।"

नताल्या कुछ नही बोली। आग्राफेना पेत्रोव्ना ने प्रश्नसूचक नेत्रो से नेख्लूदोव की ओर देखा और सिर हिला दिया। ऐन इसी वक्त स्त्रिया के प्रतीक्षा-कक्ष से फिर वही जुलूस निकला। वही रूपवान चोबदार फिलिप तथा दरबान प्रिंसेस कोर्चागिना को उठाये ला रह थे। उसने अपने वाहको को रुक जाने को कहा और इशारे से नेख्लूदोव को अपने पास बुलाया, फिर बडे दयनीय तथा अलसाये ढग से अपना गोरा, अगूठिया भरा हाथ नेख्लूदोव की ओर बढाया, इस आशा और डर से कि नेख्लूदोव के हाथ म उसका हाथ दब कर रह जायेगा।

Epouvantable!' * उसने कहा। उसका अभिप्राय गर्मी से था।

---

*तौबा! (फ्रेंच)

"मुझसे बर्दाश्त नही हो सकती। Ce climat me tue"* फिर कुछ देर तक वह जलवायु की चर्चा करती रही कि रूस की जलवायु बड़ी भयानक है। इसके बाद नेख्लूदोव को योता दिया कि हमें मिलने जरूर आना, और फिर अपने नौकरो को आगे बढने का इशारा करने लगी। "जरूर आना, भूलना नही," अपना लम्बूतरा चेहरा नेख्लदोव की ओर घुमा कर उसने कहा। और नौकर, पालकी उठाये, आगे बढ गये।

प्रिंसेस का जुलूस दायी ओर को घूम गया जिस तरफ फर्स्ट क्लास के डिब्बे थे। नेख्लूदोव, एक कुली से अपना सामान उठवा कर बायी ओर जाने लगा। तारास भी उसके साथ था। उसने पीठ पर अपना झोला उठा रखा था।

"यह मेरा साथी है," तारास की ओर इशारा करते हुए नख्लूदोव ने अपनी बहिन से कहा। तारास की कहानी वह उसे पहले ही सुना चुका था।

"थर्ड क्लास मे सफर करोगे क्या?" नताल्या ने कहा जब उसने देखा कि नेख्लदोव एक तीसरे दर्जे के डिब्बे के सामने रुक गया है और तारास और सामान वाला कुली डिब्बे के अन्दर चले गये हैं।

"हा, मुझे यही पसन्द है। मैं तारास के साथ जा रहा हू," उसने कहा। "एक बात और। अभी तक मैंने अपनी कुज्मिस्कोये वाली जमीन किसानो को नही दी है। इसलिए अगर मैं मर गया तो मेरे बाद तुम्हारे बच्चे उस जमीन के वारिस होगे।"

"ऐसी बातें नही कहो, द्मीत्री!' नताल्या बोली।

"अगर मैं उसे दे भी दू तो बाकी सब कुछ उन्ही का होगा। क्योंकि उमीद नही कि मैं शादी करू। जो शादी कर भी लू तो मेरे बच्चे-बाले नही होगे। इसलिए "

"द्मीत्री, ऐसी बात मुह से मत निकालो," नताल्या ने कहा। पर नेख्लूदोव ने देखा कि उसे यह सुन कर खुशी हुई है।

कुछ दूर आगे, फर्स्ट क्लास के एक डिब्बे के सामने कुछ लोग अब भी उस पालकी को देखे जा रहे थे जिसमे प्रिंसेस बैठ कर आई थी। बहुत से मुसाफिर बैठ चुके थे। देर से आनेवाले मुसाफ़िर भागते हुए प्लेटफ़ार्म

---

*यह मौसम तो मेरी जान ही ले कर रहेगा। (फ्रेंच)

के तख्तो पर पाव खटखटाते गाडी की ओर लपक रहे थे। गाड डिब्बो के दरवाजे बन्द करने लगे, मुसाफिरो को अदर बैठने के लिए और जिन्हे सफर नही करना था उन्हे डिब्बो मे से बाहर निकलने के लिए कहने लगे।

नेख्लूदोव डिब्बे के अदर दाखिल हुआ। डिब्बा तप रहा था और उसमे से दुर्गन्ध आ रही थी। फौरन् ही वह डिब्बे को लाघ कर, सिरे पर बने छोटे से प्लेटफॉर्म पर जा खडा हुआ।

आग्राफेना पेत्रोव्ना के साथ नताल्या, नये फैशन का बॉनेट और केप लगाये, डिब्बे के नजदीक खडी थी। प्रत्यक्षत वह इस कोशिश मे थी कि कोई बात करे।

जब लोग एक दूसरे से जुदा होते हैं तो अक्सर ecrivez"* कहते हैं। लेकिन दोनो भाई-बहिन इस शब्द का मजाक उडाया करते थे। इसलिए इस समय यह शब्द भी नताल्या मुह से नही निकाल सकती थी। आत्मीयता की जिन कोमल भावनाओ से उनके दिल भर उठे थे, उन्ह पैसे के मामलो की चर्चा ने एक क्षण म छिन्न भिन्न कर डाला था। वे फिर एक दूसरे से दूर हो गये थे। इसलिए जब गाडी चली और उदास, प्यार भरे मुख से मात्र "अलविदा, दमीत्री, अलविदा।" कहने का समय आया, तो उसे खुशी ही हुई। लेकिन डिब्बे के आगे निकलते ही उसने सोचा कि कैसे वह अपने पति को भाई के साथ हुआ वार्तालाप सुनायेगी और उसका चेहरा गभीर और उद्विग्न हो उठा।

नेख्लूदोव के हृदय मे अपनी बहिन के प्रति कोमलतम भावनाए थी। उसने उससे कोई बात छिपायी भी नही थी। परन्तु फिर भी अब उसकी उपस्थिति म वह उदास और खाया खोया सा महसूस करने लगा था। इसलिए जब गाडी चली तो उसने भी चैन की सास ली। उसे महसूस हुआ कि पहले वाली नताल्या, जो कभी उसके इतने निकट थी, अब नही रही, और उसके स्थान पर अब एक दासी खडी है जिसने अपने को एक अपरिचित अप्रिय, काले बालो से भरे आदमी के हाथो सौंप दिया है। इस तथ्य का प्रमाण उसे उस समय स्पष्ट मिल गया जब उसने किसानो का जमीन देने

---

* लिखना। (फ्रेंच)

तथा अपनी विरासत की चर्चा की, और नताल्या का चेहरा उसे सुन कर खिल उठा था क्योंकि यह बात उसके पति के लिए विशेषतया रुचिकर थी।

इस कारण नेख्लूदोव का दिल उदास हो उठा।

४०

तीसरे दर्जे के जिस डिब्बे मे नेख्लूदोव सफर कर रहा था वह आकार मे काफी बडा था। दिन भर चिलचिलाती धूप मे खडे रहने के कारण डिब्बा इस कदर तप रहा था कि नेख्लूदोव अन्दर नही जा सका, और पीछे ही छोटे से प्लेटफॉर्म पर खडा रहा। लेकिन यहा पर भी हवा का नाम न था। केवल उस वक्त जब शहर की इमारते पीछे छूट गयी तो हवा का झोका आया, और तब कही नेख्लूदोव को राहत मिली।

"हा, मारे गये," उसने फिर वही शब्द दोहराये जो उसने अपनी बहिन से कहे थे। उसकी कल्पना मे, उन सभी दृश्यो के बीच जो आज उसने देखे थे, दूसरे मृत कैदी का चेहरा अपूर्व स्पष्टता से उभर आया। कैसा सुन्दर नौजवान था वह। उसके होठो पर की मुस्कान, माथे से झलकता गभीर भाव, मुडी हुई, नीलावण खोपडी, छोटा सा सुगठित कान, उसके चेहरे का एक एक नक्श स्पष्ट नज़र आने लगा।

"उसकी हत्या तो की गई है लेकिन यह कोई नही जानता कि किसने हत्या की है।" वह सोच रहा था। "यही सबसे भयानक बात है। उसकी हत्या हुई है। सभी कैदियो की तरह उसे भी मास्लेन्निकोव के हुक्म पर बाहर लाया गया था। निश्चय ही मास्लेन्निकोव अपने को इसका अपराधी नही समझता होगा। उसने तो रोज़ की तरह यह आर्डर भी जारी कर दिया होगा। एक कागज़ पर, जिसके ऊपर शिरोनामा छपा होगा बेतुके ढग से रेखाए खीचते हुए उसने अपना दस्तखत कर दिया होगा। जेलखाने का डॉक्टर तो अपने को उससे भी कम कसूरवार समझता होगा, जिसने कैदियो को जाच कर के भेजा था। उसने तो बडी यथार्थता से अपना फर्ज़ निभाते हुए कमज़ोर कैदियो को अलग कर दिया था। उसे कैसे मालूम हो सकता था कि आज इतनी भयानक गर्मी पडेगी, या उन्हे धूप तेज़ हो जाने पर बाहर भेजा जायेगा, वह भी इतना बडा हुजूम बना कर? जेलखाने का इन्स्पेक्टर? लेकिन जेल के इन्स्पेक्टर ने तो केवल हुक्म को

तामील की है कि अमुक दिन, इतने जलावतनो और इतने कैदियो को—जिनमे इतनी स्त्रिया और इतने पुरुष होगे—रवाना कर दिया जाय। कॉनवाय-अफसर का भी कोई दोष नही। उसका काम तो केवल निश्चित स्थान से अमुक सख्या मे लोगो को लेना और दूसरे स्थान पर उतनी ही सख्या मे पहुचा देना था। वह उन्हे उसी ढग से ले गया जैसे हमेशा ले जाया जाता है। उसे क्या मालूम था कि उन जैसे हट्टे कट्टे आदमी गर्मी बर्दाश्त नही कर सकेगे और मर जायेंगे। किसी का भी दोष नही। तिस पर भी इन आदमियो की हत्या हुई है, और हत्या करने वाले यही आदमी हैं जिन्हें हत्या का दोष नही दिया जा सकता।

"इस सारी बात का मूल कारण यह है," वह सोच रहा था, "कि ये लोग—गवनर, इन्स्पेक्टर, पुलिस अफसर, पुलिस के सिपाही—यह समझते है कि कई ऐसी परिस्थितिया होती हैं जिनमे मनुष्यो के बीच मानवीय सम्बन्धो की जरूरत नही रहती। अगर यही लोग—मास्लेन्निकोव, इन्स्पेक्टर तथा कॉनवाय अफसर—वास्तव मे गवनर, इन्स्पेक्टर, अफ़सर इत्यादि न होते तो इतने बडे हुजूम को ऐसी चिलचिलाती धूप मे भेजने मे पहले बीस बार सोचते, रास्ते मे बीस बार रुकते, यदि किसी को लडखडाते देखते, किसी की सास फूलती देखते, तो उसे साये मे ले जाते, उसके मुह मे पानी डालते, उसे आराम करने देते, और यदि फिर भी दुघटना हो जाती, तो उस पर दुख प्रकट करते। लेकिन न केवल उन्होने स्वय दुख प्रकट नही किया, उन्होने और लोगो को भी नही करने दिया। कारण, इन्सानो के बारे मे तथा इन्सानो के प्रति अपने कतव्य के बारे मे उन्हें कोई चिन्ता नही थी। वे तो केवल अपने ओहदो की सोचते थे जिन पर वे चढे बैठे थे। इन ओहदो पर उनके जो फज होते है, उन्हे वे मानवीय सम्बन्धो से ऊचा समझते थे। मूल कारण यही है," नेख्लूदोव के विचारो का ताता जारी रहा। "यदि एक बार हम इस बात को स्वीकार कर ले—घण्टे भर के लिए ही सही, अपवाद स्वरूप ही सही—कि मानव प्रेम से अधिक महत्वपूर्ण कोई चीज हो सकती है, तो हम निश्चिन्त हो कर कोई भी अपराध करने पर उतारू हो सकते हैं, और हमारे हृदय मे अपराधी होने की भावना तक नही उठेगी।"

नेख्लूदोव अपने विचारो मे यहा तक डूबा हुआ था कि उसे मौसम के बदल जाने का पता ही न चला। इस बीच एक बादल के टुकडे ने सूरज

को ढक लिया था। पश्चिम की ओर से हल्के भूरे रंग की घटा तेज़ी से बढ़ती चली आ रही थी, और दूर खेतों तथा जंगलों पर अभी से मूसलाधार बारिश होने लगी थी। इस घटा से हवा में गुनकी आ गई थी। किसी किसी वक्त बिजली कौंध जाती और गाड़ी की खड़खड़ से बादलों का गर्जन मिलने लगता। बादल अधिकाधिक नज़दीक आ रहा था। वर्षा की तिरछी बूंदें, जिन्हें हवा उड़ा लायी थी, प्लेटफ़ॉर्म तथा नेख्लूदोव के कोट पर गिरने और अपने निशान बनाने लगीं। नेख्लूदोव हट कर प्लेटफ़ॉर्म के दूसरे सिरे पर जा खड़ा हुआ। ताज़ा, नमदार हवा में अनाज तथा भीगी धरती की गंध थी, जो मुद्दत से बारिश के लिए तरस रही थी। नेख्लूदोव वहां खड़ा था और उसकी आंखों के सामने से बाग, जंगल, रई के पीनवर्ण खेत, जई के हरे हरे खेत, आलुओं की खेती के लहलहाते गहरे हरे रंग के टुकड़े गुज़रते जा रहे थे। ऐसा लगता था जैसे हर चीज़ पर वार्निश कर दी गई हो। हरा रंग और भी गहरा हरा हो गया था, पीला और भी गहरा पीला, काला और भी गहरा काला।

"बरसो! खूब बरसो!" नेख्लूदोव बोला। प्राणदायिनी वर्षा से प्रफुल्लित बाग़ों और खेतों को देखते हुए नेख्लूदोव का रोम रोम पुलकित हो उठा।

परन्तु बारिश का छींटा ज्यादा देर तक नहीं रहा। बादल का कुछ हिस्सा तो बारिश में निचुड़ गया, बाकी आकाश में तिरता हुआ आगे निकल गया। शीघ्र ही गीली धरती पर फुहार की अन्तिम बूंदें पड़ने लगीं। सूरज फिर चमकने लगा, हर चीज़ चमक उठी, और पूर्व में—क्षितिज से कुछ ही ऊपर—उज्ज्वल इन्द्रधनुष खिंच गया, जिसमें बैंगनी रंग बड़ा स्पष्ट नज़र आ रहा था। केवल एक सिरे पर इन्द्रधनुष टूट गया था।

"हां, तो मैं क्या सोच रहा था?' नेख्लूदोव ने मन ही मन कहा जब प्रकृति में ये परिवर्तन होने बन्द हो गये और गाड़ी एक दर्रे में से गुज़रने लगी जिसके दोनों ओर ऊंची ढलानें थीं। "मैं यही सोच रहा था कि ये सब लोग—इन्स्पेक्टर, कॉनवाय के आदमी—सभी सरकारी नौकर—अधिकतर अच्छे दिल के लोग होते हैं। यदि ये जुल्म करते हैं तो इसलिए कि ये सरकारी नौकरी करते हैं।"

उसे याद आया किस उपेक्षा से मास्लेन्निकोव ने उसकी बात सुनी थी जब उसने उसे बताया कि जेल में क्या कुछ होता है। इन्स्पेक्टर की

कठोरता, कॉनवाय अफसर की क्रूरता जिसने उन लोगों को छकड़ो पर बैठने की इजाजत नहीं दी जो उसके सामने हाथ जोड़ते रहे थे कि उन्हें बैठने दिया जाय। उसने इस बात की परवाह नहीं की कि एक स्त्री गाड़ी में प्रसव-पीड़ा में छटपटा रही है। "दया की साधारणतम भावना इनके दिल को छू नहीं पाती, उनके हृदय कठोर और अभेद्य बन चुके हैं, इसलिए कि वे सरकारी अफसर हैं। सरकारी अफसर होने के कारण उनके हृदय में अनुकम्पा की भावना उसी भांति प्रवेश नहीं कर पाती जिस भांति पत्थरों के इस फर्श में बारिश का पानी रिस नहीं पाता," दर्रे की दोनों ओर की ढलानों को देखते हुए, जिन पर तरह तरह के रंगों के पत्थर लगाये गये थे, नेख्लूदोव सोच रहा था। पानी अन्दर रिसने के बजाय ऊपर से ही अनगिनत धाराओं के रूप में बह रहा था। "शायद ढलानों पर तो पत्थरों के फर्श बांधने की जरूरत हो, पर जिस धरती पर पेड़-पौधे न उग पाते हों, उसे देख कर तो दिल निराश हो उठता है। इसी धरती से अनाज, घास, पौधे-झाड़ियां, या वैसे ही पेड़ उग सकते हैं जैसे कि इस दर्रे की चोटी पर उग रहे हैं। यही स्थिति इन्सानों की भी है," नेख्लूदोव सोच रहा था। "शायद इन गवर्नरों, इन्स्पेक्टरों, पुलिस के सिपाहियों की जरूरत रहती हो। पर यह स्थिति सचमुच बड़ी भयानक है जब मनुष्य एक दूसरे के प्रति प्रेम तथा सद्भावना के मुख्य मानवीय गुण से वंचित हो।"

"बात यह है," वह सोच रहा था, "कि ये लोग उस चीज़ को नियम मानते हैं जो वास्तव में नियम नहीं है, लेकिन उस अमर तथा सनातन नियम को जो भगवान् ने मनुष्य के हृदय पर अंकित कर दिया है, नियम नहीं मानते। यही कारण है कि जब मैं इन लोगों के साथ होता हूं तो मन उदास हो उठता है। मुझे इनसे डर लगता है। और वे सचमुच बड़े भयानक लोग हैं, डाकुओं से भी अधिक भयानक। एक डाकू के दिल में शायद फिर भी तरस हो, लेकिन इनके दिल में कोई तरस नहीं। जिस भांति इन पत्थरों पर किसी पौदे का अंकुर नहीं फूट सकता, इसी भांति इन लोगों के दिल में तरस नहीं उठ सकता। इसी कारण ये लोग इतने भयानक हैं। लोग कहते हैं कि पुगाचोव तथा राज़िन* भयानक थे। परन्तु ये उनसे हज़ार

---

*रूस में हुए दो किसान विद्रोहों के नेता। राज़िन १७वीं शताब्दी में, और पुगाचोव १८वीं शताब्दी में हुआ।

गुना ज्यादा भयानक हैं," वह मन ही मन सोचे जा रहा था। "अगर यह मनोवैज्ञानिक प्रश्न पूछा जाय कि कौन सा तरीका अपनाने से हम अपने समय के ईसाई, दयानु स्वभाव परोपकारी लोगों को भयानक से भयानक अपराध करने पर उतारू कर सकते हैं, ताकि वे अपने को अपराधी न समझें, तो इसका एक ही जवाब है, कि मौजूदा व्यवस्था को बनाये रखिये, यह अपने आप होता जायेगा। जरूरत केवल इस बात की है कि इन लोगों को गवर्नर, इन्स्पेक्टर, पुलिस अफसर बनाया जाय, यानी उन्हें पहले ता पूरा विश्वास हो कि सरकारी नौकरी नाम के धंधे मे काम करने वाले मनुष्यो को इस बात की खुली इजाजत है कि वे अन्य मनुष्यो के साथ जड पदार्थों का सा व्यवहार करे, कि उनके साथ भाइयो का सा सम्बन्ध न रखें। और दूसरे यह सरकारी नौकरी उन्हे एक दूसरे के साथ इस भाति जोडे रहे कि उनके अनेक कारनामो के नतीजो की जिम्मेवारी उनमे स किसी पर भी व्यक्तिगत रूप से न आये। यदि ये शर्तें न हों तो जो भयानक काम आज मैंने होते देखे हैं वे हमारे इस जमाने मे असभव होते। इसका मूल कारण यही है कि लोग समझते हैं कि कई ऐसी परिस्थितिया भी होती हैं जिनमे हम इन्सानो के साथ बिना प्रेम के सलूक कर सकते हैं। पर वास्तव मे ऐसी कोई परिस्थितिया नही हैं। हम जड पदार्थों के साथ, बिना प्रेम के व्यवहार कर सकते है—पेड काट सकते हैं, इटें बना सकते हैं, बिना किसी प्रेम भावना के लोहे पर हथौडा चला सकते हैं, लेकिन हम मनुष्यो के साथ प्रेम के बिना व्यवहार नही कर सकत। उसी भाति जिस भाति बिना सावधानी बरते हम मधुमक्खियो की देख रेख नही कर सकते। यदि कोई आदमी मधुमक्खियो के साथ लापरवाही बरते तो उन्हे भी कष्ट देगा और स्वय भी कष्ट उठायेगा। यही स्थिति मनुष्यो की है। इसके विपरीत हो भी नही सकता, क्योकि पारस्परिक प्रेम मानवजीवन का बुनियादी नियम है। यह सच है कि एक मनुष्य अपने को काम करने पर तो मजबूर कर सकता है परन्तु प्रेम करने पर मजबूर नही कर सकता। पर इससे यह निष्कर्ष नही निकलता कि मनुष्यो के साथ हमारा व्यवहार प्रेमशून्य हो, विशेषकर उस स्थिति मे जब हम उनसे किसी चीज की आशा हो। यदि तुम्हारे हृदय मे प्रेम नही है तो चुपचाप बैठे रहो," नेख्लूदोव सोच रहा था, "जड पदार्थों के साथ काम करो, अपने आपमे मगन रहो, और जो कुछ भी चाहो करो, केवल इन्सानो से कोई वास्ता नही रखना।

जब तुम भूख लगने पर ही भोजन करते हो तो तुम्हें लाभ होता है, कोई हानि नही पहुचती, इसी भाति हृदय मे प्रेम होने पर ही तुम्हारा वर्ताव मनुष्यो से उपयोगी भी होगा और उससे किसी का हानि भी नही पहुचेगी। परन्तु जब भी तुम बिना प्रेम की भावना के किसी मनुष्य के साथ व्यवहार करोगे—जैसा कि कल मैंने अपने बहनाई के साथ किया—तब और लोगो के प्रति तुम्हारे अत्याचार तथा बबरता की कोई सीमा नही रहेगी। इसका एक उदाहरण आज मैंने अपनी आखो से देखा है। इतना ही नही, तुम्हारी अपनी यातना की भी कोई सीमा नही होगी। मेरा अपना जीवन इसका प्रमाण है। हा, हा, यही बात है," नेख्लूदोव सोच रहा था। "यह सच है, हा, बिल्कुल सच है!" उसने दोहरा कर कहा। चिलचिलाती गरमी के बाद अब नेख्लूदोव ताजा हवा का आनन्द ले रहा था। वह यह भी महसूस कर रहा था कि उसने एक ऐसे सवाल को पूर्ण स्पष्टता से समझ लिया है जिसके साथ वह मुद्दत से जूझ रहा था।

४१

गाडी के जिस डिब्बे मे नेख्लूदोव सफर कर रहा था, वह मुसाफिरो से आधा भरा था। नौकर, कामगार, फैक्टरी मजदूर, कसाई, यहूदी, दुकानदार, कामगारो की पत्निया, एक फौजी, दो महिलाए—एक छोटी उम्र की दूसरी बडी उम्र की, जिसकी नगी बाहो पर कगन चमक रहे थे, और एक सज्जन जो कठोर मुद्रा धारण किये और तुर्रे वाली काली टोपी लगाये बैठा था, ये लोग सफर कर रहे थे। सीटो पर बैठने से पहले जो शोर-गुल होता है वह कब का शान्त हो चुका था, और अब सभी लोग चुपचाप बैठे थे, कुछ लोग सूरजमुखी के बीज खा रहे थे, कुछ सिगरेट पी रहे थे, कुछ बाते कर रहे थे।

तारास गलियारे के दायें हाथ बैठा था और बडा खुश नजर आ रहा था। नख्लूदोव के लिए उसने सीट रख छोडी थी, और अपने सामने बैठे एक हट्टे-कट्टे आदमी के साथ जो सूती कपडे का कोट पहने हुए था, चहक चहक कर बाते कर रहा था। नेख्लूदोव को बाद मे मालूम हुआ कि यह शख्स कोई माली था जो किसी नई जगह पर काम करने जा रहा था।

नेख्लूदोव गलियारे मे चला आया, और पेश्तर इसके कि ताराम के पास पहुच कर उसके साथ बैठ जाय, वह रास्ते मे ही रुक गया, जहा एक सफेद दाढी वाला बुजुर्गाना शकल का वृढा आदमी बैठा एक युवा स्त्री स बाते कर रहा था। बुजुग ने नैनकीन का कोट पहन रखा था, और स्त्रा किसानो के लिबास मे थी। स्त्री की बगल मे, सातेक साल की एक छोटी सी, सुनहरी बालो वाली लडकी बैठी थी जिसने नई देहाती पोशाक पहन रखी थी और सिर पर रूमाल बाधे थी। वह सूरजमुखी के बीज खा रही थी। बूढे ने जब घूम कर देखा तो उसकी नज़र नेख्लूदोव पर पडी। अपने कोट के लटकते किनारो को सभाल कर वह आगे खिसक गया ताकि नेख्लूदोव के लिए उस चमकती सीट पर जगह बन जाय, और बडे मैत्रीपूण लहजे मे बोला—

"आइये, यहा जगह है।"

धयवाद कह कर नेख्लूदोव बैठ गया। स्त्री ने फिर से अपनी आपबीता सुनानी शुरू कर दी जिसमे थोडी देर के लिए बीच मे बाधा पड गई थी। उसका पति शहर मे था और उससे मिल कर वह अब गाव को लौट रही थी। वह बता रही थी कि शहर मे उसके पति ने किस भाति उसका स्वागत किया।

"मैं जाडे के आखिर मे त्योहार पर भी वहा गई थी, फिर भगवान की कृपा से अब भी मिलने गई," वह कह रही थी, "और भगवान ने चाहा तो क्रिसमस के समय फिर जाऊगी।"

"बिल्कुल ठीक है," एक नज़र नेख्लूदोव की ओर दख कर वृद्ध कहने लगा, "सबसे अच्छा तरीका यही है कि उसे जा कर खुद मिल आओ, वरना शहर मे तो जवान आदमी को बिगडते देर नही लगती।"

"नही जी, मेरा आदमी ऐसा नही है। फिजूल बातो की तरफ उसका ध्यान ही नही जाता। वह तो बिल्कुल गौ है। जितन पैसे कमाता है, एक एक कोपेक तक घर भेज देता है। यह हमारी लडकी है। क्या बताऊ आपको अपनी बेटी से मिल कर वह कितना खुश हुआ" औरत ने कहा और मुस्कराने लगी।

छोटी लडकी ने जा चुपचाप बठी अपनी मा की बात सुन रही थी, सिर उठा कर वद्ध और नेख्लूदोव की ओर दखा, माना अपनी मा की बात का समथन करना चाहती हा। उसकी आखा मे स्थिरता तथा चतुराई

यलक रही थी। वह सूरजमुखी के बीज चबा रही थी और छिलके थूकती जा रही थी।

"और भी अच्छी बात है अगर वह इतना सियाना-समझदार आदमी है, तो," बूढे ने कहा। "वैसी करतूत तो नही करता न?" एक पति पत्नी की ओर इशारा करते हुए उसने पूछा जो डिब्बे के दूसरी ओर बैठे थे और प्रत्यक्षत फैक्टरी-मजदूर थे।

पति, सिर पीछे की ओर झुकाये और हाथ मे बोतल पकडे, अपने मुह मे वोद्का उडेल रहा था। पत्नी हाथो मे बैग उठाये, जिसमे से बोतल निकाली गई थी, बडे दत्तचित्त नेत्रो से पति की ओर देखे जा रही थी।

"नही मेरा घर वाला तो शराब को हाथ नही लगाता। वह तो सिगरेट भी नही पीता," औरत ने कहा। वह खुश थी कि अपने पति की प्रशसा करने का उसे एक और मौका मिल गया था। "उस जैसे तो विरले ही आदमी आपको मिलेगे, ऐसा आदमी है वह," नेख्लूदोव को भी सबोधित करती हुई वह बोली।

"इससे अच्छा और क्या होगा?" फैक्टरी मजदूर की ओर देखते हुए बूढे ने कहा।

मजदूर ने जितनी शराब पीनी थी, पी ली और बोतल पत्नी के हाथ मे दे दी। औरत हसी, सिर हिलाया, और खुद भी बोतल को मुह से लगा लिया। नेख्लूदोव और बूढे को अपनी ओर देखते हुए पा कर मजदूर नेख्लूदोव से कहने लगा—

"क्या बात है, हुजूर? हम पी रहे हैं, इसलिए? लोग यह तो नही देखते कि हमे कैसा काम करना पडता है, मगर हम पीते कैसे हैं, यह सभी देखते हैं। मैं अपने पैसे से पी रहा हू, साहिब। खुद भी पी रहा हू, और अपनी बीवी को भी पिला रहा हू। और मुझे किसी का डर नही है।"

"हा, हा," नेख्लूदोव ने झेंप कर जवाब दिया। उसकी समझ मे नही आ रहा था कि क्या कहे।

"यह सच है हुजूर? मेरी बीवी बडी समझदार औरत है। मैं इससे सन्तुष्ट हू, क्योकि इसके दिल मे मेरे लिए दद है। क्यो, माव्रा, मैं जो कुछ कह रहा हू, ठीक है न?"

"यह लो, मुझे और नही चाहिए," बोतल वापस लौटाते हुए उसकी पत्नी ने कहा, "और यह बक बक क्या लगा रखी है?" वह बोली।

"लो देखो! यह बडी अच्छी औरत है, बहुत अच्छी, पर फिर यट से चीखने चिचियाने लगती है। वह गाडी का पहिया होता है न, उसे ग्रीस नही दो तो जैसे चिचियाने लगता है। क्यो, मात्रा, मैं जो कहता हू, ठीक है न?"

मात्रा हसने लगी और हाथ को इस तरह झटका, माना नशे म हो।

"लो, फिर लेक्चर देने लगा।"

"लो देखो! बडी अच्छी औरत है यह, बहुत अच्छी है। मगर एक बार विगड जाय तो आसमान सिर पर उठा लेती है। क्यो मात्रा, मैं जो कुछ कह रहा हू, ठीक है न? माफ कीजिये हुजूर, मैंने थोडी पी रखी है। किया क्या जाय?" फैक्टरी-मजदूर ने कहा और सोने की तैयारी करते हुए उसने अपनी मुस्कराती बीवी की गोद मे सिर रख दिया।

नेख्लूदोव थोडी देर तक उसी वृद्ध के पास बैठा रहा, और वद्ध ने उसे अपनी सारी कहानी कह डाली। बढा अलाव घर बनाता था, पिछले ५३ साल से अलाव घर बना रहा था। इतने अलाव घर बना चुका था कि उसे उनकी गिनती तक याद नही थी। अब वह आराम करना चाहता था, मगर उसे फुसत नही थी। अपने लडका को काम पर लगवाने के लिए शहर आया था, और अब घर के बाकी लोगो से मिलन गाव जा रहा था। बूढे की कहानी सुन चुकने के बाद नेख्लूदाव वहा से उठ कर अपनी जगह पर चला गया जो तारास ने उसके लिए सभाल कर रखी था।

"आइये, हुजूर, आइये, बोरी यहा रख देते हैं," नेख्लूदोव की ओर देखते हुए बडे दोस्ताना लहजे मे माली ने कहा जा तारास के सामन बैठा था।

"आइये बैठिये, जगह की क्या है। दिल मे जगह होनी चाहिए," तारास ने मुस्कराते हुए कहा, और बोरी उठा कर खिडकी की ओर ले गया। बोरी का वजन कम से कम एक मन रहा होगा, लेकिन वह उसे इस तरह उठा ले गया मानो फूल की सी हल्की हो। "बहुत जगह है। न भी हो तो आदमी कुछ देर खडा रह सकता है, सीट के नीचे घुस कर लेट सकता है। वहा बडे आराम से सफर किया जा सकता है। लडन-झगडन की काई जरूरत नही," तारास ने कहा। मैत्री और सद्भावना से उसका चेहरा दमक रहा था।

अपने बारे मे तारास कहा करता था कि जब तक मैं दो घूट शराब

न पी लू मेरी जबान नही चलती। शराब पी लू तो मुझे ठीक ठीक शब्द मिलते रहते हैं, तब मैं किसी बात का भी ब्योरा दे सकता हू। और वास्तव मे यह ठीक भी था। जब तारास नशे मे नही होता, तो चुपचाप बैठा रहता। पर पी कर—और वह केवल कभी कभी और खास खास मौको पर ही पिया करता था—वह मज़े से चहकने लगता। तब वह खूब बोलता, बडी सरलता और सचाई के साथ, और सबसे बडी बात बहुत ही प्यार से जो उसकी नीली नीली, कोमलता भरी आखो और उसके होठो से कभी न उतरने वाली स्नेह भरी मुस्कान से झलक रहा होता।

आज भी वह मस्ती मे था। नेख्लूदोव के चले आने पर उसकी बातो का तांता थोडी देर के लिए टूट गया था। लेकिन बोरी को अपनी जगह पर टिका लेने के बाद तारास फिर बैठ गया, और अपने मज़बूत हाथो को घुटनो पर टिकाये, और माली के चेहरे पर आखें गाडे, वह फिर अपनी कहानी कहने लगा। वह इस आदमी को, जिसके साथ उसका अभी अभी परिचय हुआ था अपनी पत्नी के बारे मे बता रहा था, और एक एक बात का पूरा ब्योरा दे कर—उसे साइबेरिया क्यो भेजा जा रहा था और वह क्यो उसके पीछे चला जा रहा था।

यह किस्सा नेख्लूदोव ने पहले कभी भी विस्तार के साथ नही सुना था, इसलिए वह बडे ध्यान से सुनने लगा। जब वह पहुचा तो तारास कहानी के उस हिस्से तक पहुच चुका था जब ज़हर देने की कोशिश सर अजाम हो चुकी थी और घर वालो को पता चल गया था कि यह फेदोस्या की करतूत है।

"मैं अपना दुखडा रो रहा हू," मित्रो की सी सद्भावना के साथ नेख्लूदोव को सम्बोधित करते हुए तारास ने कहा। "ऐसा भला आदमी मिल गया है, बस बाते चल पडी, सो अब इसे सारी कहानी सुना रहा हू।"

"ठीक है," नेख्लूदोव ने कहा।

"अच्छा तो, मैं कह रहा था, कि मामला इस तरह पता चल गया। मा ने वह रोटी उठा ली। 'मैं तो पुलिस अफसर के पास जा रही हू।' पर मेरा बाप बडा इसाफ-पसन्द आदमी है। 'मत जाओ, बीबी,' उसने कहा, 'लडकी तो अभी बच्चा है, उसे खुद भी मालूम नही था कि वह क्या करने जा रही है। हमे दिल म से रहम का निकाल नही देना चाहिए। उसे अक्ल आ जायेगी।' पर हे भगवान्। मा कहा सुनती थी। 'हम इसे

घर मे रखेंगे तो यह हम सबको कीडे-मकोडो की तरह मार डालेगी।' तो भाई मेरे, तुम्ह क्या बताऊ, वह सीधे पुलिस अफसर से मिलने चली गई। वह तो फौरन धमक पडा। गवाहो को बुलाने लगा।"

"और तुम?" माली ने पूछा।

"मैं तो, भाई मेरे, उस वक्त पेट मे दद के मारे तडप रहा था और कै पर कै कर रहा था। मेरी तो आन्तडिया बाहर आ रही थी। अब बाप ने क्या किया, उसने गाडी जोडी, छकडे मे फेन्रोस्या को बिठाया और पहले थाने और फिर मजिस्ट्रेट के पास जा पहुचा। और मेरी बीवी ने सारी की सारी बात मैजिस्ट्रेट को बता दी—उसे सखिया कहा से मिला, रोटी म कैसे गूध कर मिलाया। 'यह काम तुमने क्या किया?' मजिस्ट्रेट ने उससे पूछा। कहने लगी, 'क्या न करती? इस आदमी से मुझे नफरत है। साइबेरिया मे रहना मजूर, मगर इस आदमी के साथ मैं एक पल के लिए भी न रहूगी,' वह मेरे बारे मे कह रही थी," तारास ने मुस्करा कर कहा। "इस तरह उसने सब बात कबूल कर ली। इसके बाद बस, जेलखाना, और क्या। बाप मेरा अकेला घर लौट आया। ऊपर से फसल पकने के दिन आ गये। इधर घर मे मेरी मा ही अकेली औरत रह गई। और वह भी दुबली हो रही थी। अब हम सोच म पड गये कि करे तो क्या करें। क्या ऐसा नही हो सकता कि उसे जमानत पर छुडा ले? तो बाप किसी अफसर से जा कर मिला। कुछ काम नही बना। फिर दूसरे के पास गया। इस तरह, मैं सोचता हू वह पाच अफसरो के पास गया। हम तो तग आ गये, सोचा छोड दें। पर एक दिन क्या हुआ कि हमारी मुलाकात एक दफ्तर के बाबू से हो गई। ऐसा चतुर आदमी कि क्या कहू। 'मुझे पाच रूबल दो और मैं उसे छुडवा दूगा,' कहने लगा। आखिर तीन पर मान गया। मैंने क्या किया, बीवी के कपडे उठाये, जो उसने अपने हाथ से बुने थे, और गिरवी रख कर पैसे बाबू के हाथ मे दे आया। बस उसके कागज लिखने की देर थी," तारास इस तरह बोला, मानो गोली चलने की बात सुना रहा हो, "फौरन काम बन गया। उस वक्त तक मेरी सेहत ठीक हो गई थी और मैं खुद बीवी को लिवाने गया। ता क्या बताऊ, भाई मेरे, मैं शहर गया, घोडी एक जगह बाधी, हाथ म कागज लिया और सीधा जेलखाने के बाहर जा पहुचा। 'क्या काम है?' 'काम यह है,' मैंने कहा, 'मेरी घर वाली को इधर तुमने जेल मे रखा हुआ है।' 'तुम्हारे

पास कागज़ है?' मैंने कागज उसके हाथ मे दिया। उसने उसे देखा। 'यही
ठहरो,' वह बोला। मैं बेंच पर बैठ गया। उस वक्त दोपहर हो गई थी।
एक अफसर बाहर आया। 'तुम्हारा नाम विर्युकोव है?' 'जी।' 'ले जाओ
इसे।' बस, दरवाजे खुल गये और वह बाहर आ गई। उसने अपने ही
कपडे पहन रखे थे। 'चलो मेरे साथ।' 'क्या तुम पैदल आये हो?' 'नही
घोडे पर आया हू।' बस, मैंने सराय मे जा कर अस्तबल वाले को पैसे
दिये, घोडी खोली, छकडा जोडा, जितनी घास बच रही थी उठा कर
छकडे मे रखी, ऊपर टाट बिछाया ताकि बीवी उस पर बैठ सके। वह ऊपर
चढ आई, और शाल लपेट कर बैठ गई। और हम निकल पडे। वह भी
चुप और मैं भी चुप। जब हम घर के पास पहुचे तो कहती है, 'मा कैसी
है? जीती है?' 'हा, जीती है।' 'और बापू? जीता है?' 'हा, जीता
है।' 'मुझे माफ कर दो, तारास,' कहने लगी, 'मुझसे बडी भूल हुई।
मुझे खुद भी मालूम नही था मैं क्या कर रही हू।' मैंने जवाब दिया,
'बीती पर क्या रोना, मैंने तो कब का तुम्हे माफ कर दिया है।' बस,
मैं और कुछ नही बोला। हम घर के अन्दर गये, और वह सीधी मा के पाव
पड गई। मा कहने लगी, 'भगवान् तुझे बख्श देंगे।' और बाप ने नमस्ते
की और बोला, 'जो होना था हो गया। अब अच्छी तरह रहो। अभी यह
सब बाते करने का वक्त नही है। अभी फसल काटनी है।' उसने कहा,
'भगवान् की दया से जिस ज़मीन को खाद दी थी, वहा रई की भरपूर
फसल हुई है, इतनी घनी कि हसुआ नही चल सकता। डण्ठल एक दूसरे
मे उलझे हुए हैं, और बालिया अपने ही बोझ से दबी जाती हैं। फसल
काटनी होगी। तुम और तारास कल जाओ और यह काम सभालो।' तो
भाई मेरे, क्या बताऊ तुम्हे, उस घडी से वह काम मे जुटी, और ऐसी
जुटी कि सभी दग रह गये। उस समय हमने तीन देस्यातीना भूमि लगान
पर ली थी, और भगवान् की किरपा से जई और रई दोनो की भरपूर फसल
हमने काटी। मैं काटता हू तो वह गट्ठे बाधती है, और कभी कभी हम
दोनो फसल काटते हैं। काम पर मेरा हाथ अच्छा चलता है, मैं काम से
डरता नही हू, पर वह मुझसे भी अच्छी है, जिस काम को हाथ लगाये,
सोना सोना बना देती है। बडी चुस्त औरत है, छोटी उम्र की है, बडी
जिन्दा दिल है। और काम करने के लिए तो उसके दिल म ऐसी उमग
उठी कि मुझे उसका हाथ रोकना पडा। हम घर लौटते हैं तो हमारी

उगलिया सूजी हुई हैं, बाजू दुखते हैं, पर वह है कि बजाय आराम करने के भागी हुई खत्ती मे जा पहुचती है और अगले दिन के लिए गट्ठे बाधने की पट्टिया तैयार करने लगती है। उसमे ऐसी तबदीली आयी कि क्या कहू।"

"तो क्या तुम्हारे साथ भी प्यार मुहब्बत से पेश आयी?"

"जरूरी बात है। वह सारा वक्त मेरे साथ जुड कर रहती जैसे हम एक जान हो। मेरे मन मे जो भी ख्याल उठे, उसे पहले पता चल जाय। यहा तक कि मा भी—उसे बडा क्रोध था—कहने लगी, 'हमारी फेदोस्या तो इतनी बदल गई है कि पहचानी नही जाती। यह तो कोई दूसरी ही औरत जान पडती है।' एक बार हम दो छकडे लाये—गट्ठा को लाद कर ले जाना था। वह और मैं आगे वाले छकडे मे थे। मैंने पूछा, 'तुमने वह काम क्यो किया, तुम्हे ख्याल ही कैसे आया, फेदोस्या?' तो कहती है, 'ख्याल कैसे आया? सुनो, मैं तुम्हारे साथ नही रहना चाहती थी। मैं सोचती थी, मैं मर जाऊगी मगर तुम्हारे साथ नही रहूगी।' मैंने कहा, 'और अब, फेदोस्या?' बोली, 'अब तो तुम मेरे दिल मे बसते हो।'" तारास चुप हो गया। खुशी की मुस्कान उसके होठो पर खेलने लगी। फिर उसने सिर हिलाया, मानो हैरान हो उठा हो, "हम फसल काट कर घर लाये ही होगे, और मैं सन भिगोने गया। जब लौट कर घर आया " वह चुप हो गया और क्षण भर के लिए रुक गया, "तो आगे सम्मन आया पडा था। उसे अदालत के सामने पेश होना होगा। और हम भूल भी चुके थे कि किस बात के लिए उसे पेश होना है।"

"जरूर शैतान की शरारत है," माली कहने लगा, "भला कभी कोई इन्सान भी किसी जीव की आत्मा को नष्ट करेगा? हमारे यहा एक आदमी हुआ करता था " माली कोई कहानी सुनाने जा ही रहा था जब गाडी की रफ्तार सुस्त पड गई।

"जान पडता है कोई स्टेशन आ गया है," वह बोला, "मैं जा कर जरा गला तर करूगा।"

बातचीत खत्म हो गई, और माली के पीछे नेख्लूदोव भी चलता हुआ स्टेशन के गीले प्लेटफॉर्म पर उतर आया।

उतरने से पहले नेख्लूदोव ने देखा था कि स्टेशन के मैदान में कुछेक शानदार घोड़ा-गाड़ियां खड़ी हैं, किसी के साथ तीन घोड़े जुते हैं, और किसी के साथ चार। घोड़े खूब पले हुए थे और उनके साजों पर घण्टियां लगी थी जो बार बार खनक उठती थी। गीले, काले पड़ गये लकड़ी के प्लेटफ़ॉर्म पर उतर कर उसने देखा कि फ़र्स्ट क्लॉस के डिब्बे के सामने कुछ लोग भीड़ बनाये खड़े हैं। उनमें खास तौर पर नेख्लूदोव की नज़र एक मोटी-ताज़ी महिला पर पड़ी, जिसने बरसाती कोट पहन रखा था और टोप में बड़े कीमती पंख लगा रखे थे। उसके साथ एक ऊंचे क़द का युवक खड़ा था। युवक की टांगें पतली पतली थी और उसने साइकिल चलाने वाला की पोशाक पहन रखी थी। वह अपना भीमकाय, खूब पला हुआ कुत्ता साथ लाया था जिसके गले में कीमती पट्टा पड़ा था। इनके पीछे चोबदार, छाते और बरसातियां इत्यादि उठाये खड़े थे। एक कोचवान भी उनके साथ था। ये सब लोग किसी को लेने आये थे। मोटी-ताज़ी महिला से ले कर कोचवान तक, जो अपना ओवरकोट उठाये खड़ा था, इस दल में खड़े सभी के चेहरों पर धन ऐश्वर्य और आत्मतुष्टि की छाप थी। उन्हें देखने के लिए फ़ौरन ही भीड़ जमा हो गई, कुछ लोग अपना कुतूहल शान्त करने के लिए इकट्ठे हो गये, और कुछ चापलूसी करने के लिए। लाल टोपी वाला स्टेशन मास्टर, एक पुलिस का सिपाही, एक दुबली पतली युवती जो रूसी पोशाक पहने थी, और गले में मनकों का हार डाले थी (यह युवती गर्मियों का सारा मौसम, हर गाड़ी के आने पर स्टेशन पर पहुंचती रही थी), एक तार बाबू, तथा कुछ मुसाफ़िर—स्त्रियां और मर्द—सभी इस भीड़ में शामिल थे।

नेख्लूदोव ने कुत्ते वाले युवक को पहचान लिया। वह छोटा कोर्चागिन था जो स्कूल में पढ़ता था। मोटी महिला प्रिंसेस की बहिन थी और इसी के घर कोर्चागिन परिवार अब रहने के लिए आया था। गाड़ी के बड़े गार्ड ने, जो सुनहरी डोरी लगाये था और चमकते बूट पहने था, डिब्बे का दरवाज़ा खोला, और बड़े अदब से उसे पकड़े रहा। प्रिंसेस की सवारी बाहर निकली। लम्बूतरे मुंह वाली प्रिंसेस एक कुर्सी पर बैठी थी, जिसे तह किया जा सकता था, और जिसे फ़िलिप और एक सफ़ेद एप्रन वाले

चोबदार ने उठा रखा था। बड़े ध्यान से कुर्सी बाहर लाई गई। बहिनें एक दूसरी से मिली, और वातालाप में फ्रांसीसी वाक्यों की फुलझड़ियां छूटने लगीं। क्या प्रिंसेस बन्द गाडी में बैठ कर घर जाना पसन्द करेंगी या खुली गाडी में? आखिर जुलूस उस दरवाज़े की ओर जाने लगा जिसमें से निकल कर लोग स्टेशन से बाहर जाते थे। सबसे पीछे प्रिंसेस की घुंघराले बालों वाली नौकरानी छाता और चमड़े का बैग उठाये चली जा रही थी।

नेख्लूदोव दरवाज़े तक पहुंचने से पहले ही रुक गया और जुलूस के निकल जाने का इन्तज़ार करने लगा। वह इन लोगों से दोबारा नहीं मिलना चाहता था, क्योंकि मिलने पर उनसे फिर नये सिरे से विदा लेने का बखेड़ा उठाना पड़ेगा।

आगे आगे प्रिंसेस, उसका बेटा, मिस्सी, डॉक्टर, नौकरानी बाहर निकले। बूढ़ा प्रिंस और उसकी साली पीछे रुक गये और आपस में बातें करने लगे। नेख्लूदोव इनसे काफ़ी हट कर खड़ा था, इसलिए उनके वार्तालाप में से कुछेक टूटे-फूटे फ्रांसीसी वाक्य ही वह सुन पा रहा था। लेकिन, जैसा कि अक्सर होता है, एक वाक्य उसे बड़ी स्पष्टता से अब भी याद था, जो प्रिंस ने बोला था। न केवल वाक्य ही बल्कि उसका लहजा और प्रिंस की आवाज़ तक उसे याद रही थी।

'Oh! il est du vrai grand monde, du vrai grand monde"* अपनी साली के साथ स्टेशन से बाहर निकलते हुए ऊंची, आत्मविश्वस्त आवाज़ में प्रिंस किसी के बारे में कह रहा था। पीछे पीछे गाड़ी के गार्ड और कुली बड़े अदब से चले आ रहे थे।

ऐन इसी वक्त, स्टेशन के पीछे से, कामगारों का एक समूह निकला। छाल के जूते पहने और पीठ पर अपनी बोरियां और बकरी की खाल के कोट उठाये, वे अन्दर चले आये। हौले-हौले मगर दृढ़ता से कदम रखते हुए वे सबसे नज़दीक वाले डिब्बे की ओर लपके, लेकिन अन्दर घुसने से पहले ही एक गार्ड ने फ़ौरन् उन्हें रोक दिया और आगे जाने को कहा। कामगार रुके नहीं, तेज़ तेज़ चलते हुए और एक दूसरे को धक्के देते, अगले डिब्बे की ओर बढ़ गये, और एक एक कर के उसके अन्दर घुसने लगे। पीठ

---

*ओह! वह तो सचमुच ऊंची सोसाइटी का आदमी है, सचमुच ही ऊंची सोसाइटी। (फ्रेंच)

पर से लटकती बोरिया दरवाज़े के साथ अटक अटक जाती। लेकिन स्टेशन के दरवाज़े पर खडे किसी दूसरे गाड की नज़र उन पर पड गई और वही से चिल्ला कर उसने उन्हे अन्दर जाने से रोक दिया। कामगार अन्दर आ चुके थे। मगर उसकी आवाज़ सुनते ही बाहर निकल आये, और फिर पहले की तरह तेज़ तेज़ चलते हुए और हौले हौले दृढता से कदम रखते हुए, अगले डिब्बे की ओर जाने लगे। यह वही डिब्बा था जिसमे नेख्लूदोव बैठा था। यहा पर भी एक गाड उन्हे रोकने लगा, लेकिन नख्लूदोव बोल उठा कि अन्दर बहुत जगह है, और कामगारो को अन्दर जाने के लिए कहा। नेख्लूदोव की बात मान कर वे अन्दर घुस आये। पीछे पीछे नेख्लूदोव अन्दर आ गया। कामगार सीटो पर बैठने ही वाले थे जब तुर्रे वाली टोपी पहने सज्जन और दोनो स्त्रिया जिन्होंने अपनी टोपी मे रिब्बन लगा रखा था, बिगड उठी। कामगारो का उस डिब्बे मे उनके साथ बैठना उन्हे अपना अपमान लगा। बडे गुस्से मे वे बोलने लगे और इन्हें बाहर निकालने की कोशिश करने लगे। थके-हारे कामगार, दुबले पतले चेहरे धूप मे तपे फिर अपना सामान उठा कर बाहर जाने लगे। फिर उनकी बोरिया कभी सीटो के साथ, कभी दीवारो और दरवाज़ो के साथ उलझने लगी। उनकी सख्या बीस के करीब रही होगी, और उनमे बूढे और जवान, कई तो बहुत ही छोटी उम्र के तरुण युवक, शामिल थे। प्रत्यक्षत उन्हे महसूस हो रहा था जसे वही क़सूरवार हो, और कही भी जा कर बैठने के लिए तैयार हो, भले ही वह जगह दुनिया के दूसरे कोने मे ही क्यो न हो, नुकीली सलाखो पर ही क्यो न हो।

“अब कहा भागे जा रहे हो? गधे कही के। बैठ जाओ यही पर।” एक गाड उन्हे जाते देख कर चिल्लाया।

‘Voila encore des nouvelles!”* दो महिलाओ मे से छोटी ने कहा। उसे पूर्ण विश्वास था कि इतनी अच्छी फ्रासीसी बोल कर वह ज़रूर नेख्लूदोव का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर पायेगी। जिस महिला ने कगन पहन रखे थे, बडी देर तक नाक भौंह चढाती रही, और कुछ इस किस्म की बात भी कही कि उसकी किस्मत मे इन बदबूदार किसाना के साथ ही सफर करना लिखा था।

---

*यह क्या बला है। (फ्रेंच)

जिस भाति कोई खतरा टल जाने से मन मे खुशी और सन्तोष का सचार हो जाता है, कामगार भी ऐसी ही भावनाओं का अनुभव करते हुए, कन्धो पर से बोझल बोरिया उतार उतार कर सीटो के नीचे टिकाने लगे।

जो माली अपनी जगह छोड कर तारास के साथ बाते करने आ बठा था, अब उठ कर अपनी सीट पर वापस चला गया। इस तरह तारास के सामने दो आदमियो के बैठने की जगह खाली थी, और उसकी बगल में एक आदमी की। इन जगहो पर तीन कामगार आ कर बैठ गये। लेकिन जब नेख्लूदोव वहा बैठने आया तो उसके कुलीनो के से कपडे देख कर वे बेहद घबरा गये, और वहा से उठने लगे। लेकिन नेख्लूदोव ने उन्हे रोक दिया, और खुद एक सीट की बाजू पर, जो गलियारे की ओर थी, बैठ गया।

इस पर एक कामगार ने, जिसकी उम्र लगभग ५० वर्ष की थी, एक युवा कामगार की ओर देखा। दोनो की आखें मिली। वयस्क आदमी की नज़र मे हैरानी थी। कुलीन आदमी तो फौरन् डाटने लगते हैं और धक्के दे कर उठा देते है, मगर यह आदमी उन्हे अपनी सीट दे रहा है, यह देख कर वे चकरा गये थे। यहा तक कि उन्हे डर लगने लगा था कि इसका कोई बुरा नतीजा भी निकल सकता है। परन्तु जब नेख्लूदोव बडे सीधे-सादे ढग से तारास के साथ बात करने लगा, तो उन्हें शीघ्र ही यकीन हो गया कि इसके पीछे कोई साजिश नही छिपी है। वे आश्वस्त महसूस करने लगे और एक लडके को सीट पर से उठ कर बोरी पर बैठ जाने को कहा और नेख्लूदोव से अपनी सीट पर बैठने का आग्रह करने लगे। शुरू शुरू मे तो वयस्क कामगार, जो नेख्लूदोव के ऐन सामने बैठा था, सकुचाता रहा, और डर कर छालदार जूतो समेत अपने पैर पीछे हटाता रहा कि कही वे इस कुलीन से न छू जाय, लेकिन थोडी देर बाद वह खुलने लगा, और आत्मीयता से बाते करने लगा, यहा तक कि वह दोस्तो की तरह नेख्लूदोव के घुटने पर अपना हाथ तक मार देता ताकि वह ध्यान से उसकी बात को सुने। उसने अपनी सारी राम कहानी कह डाली। वह पीट के दलदलो मे काम करता था, और अब वही से आ रहा था। ढाई महीने तक काम करने के बाद अब अपनी पगार जेब मे डाल वह घर जा रहा था। पगार केवल दस रूबल बनती थी, क्योंकि काम शुरू करते समय वह कुछ पैसे पेशगी ले चुका था। अपने काम के बारे में बताते हुए वह कहने

लगा कि सुबह से शाम तक चौदह चौदह सोलह-सोलह घंटे वे लोग सारा वक्त पानी मे खडे रहते हैं, केवल बीच मे दो घण्टे के लिए खाना खाने की छुट्टी होती है।

"जिन लोगो को इसकी आदत नही उन्हे जरूर तकलीफ होती है" वह कहने लगा, "पर आदत पड जाने पर कुछ पता नही चलता। हा, खु़राक अच्छी मिलनी चाहिए। शुरू शुरू मे खु़राक बहुत बुरी मिलती थी। बाद मे लोगो ने शिकायत की तो खाना अच्छा मिलने लगा, फिर काम करने मे कोई तकलीफ न होती थी।"

फिर वह सुनाने लगा कि पिछले २८ बरस से वह बाहर काम कर रहा है, और हर महीने अपनी कमाई के सारे पैसे घर भेजता रहा है। पहले बाप को भेजता था, फिर अपने बडे भाई को और अब अपने भतीजे को जो घर चला रहा था। साल भर मे वह ५०-६० रूबल कमा लेता था, लेकिन अपने पर वह इनमे से केवल दो या तीन रूबल ही खर्च करता था—तम्बाकू या दियासलाई जैसी मनबहलाव की चीजो पर।

"मैं पापी हू। जब थक जाता हू तो कभी कभी वोद्का भी पी लेता हू," उसने अपराधियो की तरह मुस्करा कर कहा।

फिर वह इधर-उधर की बाते सुनाने लगा कि घर पर औरते कैसे काम करती है, और आज सुबह ठेकेदार ने खाने से पहले उन्हे आधी बाल्टी वोद्का पीने को दी। और किस तरह एक कामगार मर गया था और दूसरा बीमार घर लौट रहा था। जिस बीमार मज़दूर की वह बात कर रहा था, वह उसी डिब्बे के एक कोने मे बैठा था। वह छोटा सा युवक था, जर्द-पीला चेहरा और लगभग नीले होठ। बार बार मलेरिया होने से उसकी हालत बुरी हो गई थी। नेख्लूदोव उठ कर उसके पास चला गया, लेकिन नेख्लूदोव को देख कर वह इतना व्याकुल हो उठा, और इतनी रुखाई से नेख्लूदोव की ओर देखा कि नेख्लूदोव ने उससे सवाल पूछ कर उसे परेशान करना नही चाहा। उसने केवल उसके बडी उम्र के साथी से कहा कि उसे कुनीन दे, और एक कागज़ पर कुनीन का नाम भी लिख दिया। वह उसके लिए पैसे भी देना चाहता था लेकिन बूढे कामगार ने नही लिये, और बोला कि वह खु़द दवाई के पैसे देगा।

"मैं भी बहुत घूमा हू, बहुत दुनिया देखी है पर ऐसा कुलीन कभी नही देखा। बजाय घूसा रसीद करने के इसने अपनी सीट तक हमे दे

दी," बूढे ने तारास से कहा। "जान पडता है कि कुलीन भी सब एक जैसे नही होते।"

और उनकी ओर देखते हुए नेख्लूदोव सोच रहा था, "हा, यह बिल्कुल दूसरा, बिल्कुल नया ससार है।" इन पतले किन्तु बलिष्ठ शरीरा, माटे मोटे, घर के बने कपडो, धूप मे तपे, थके हुए, प्यार भरे चेहरा को देख रहा था और यह अनुभव कर रहा था कि वह एक नयी ही तरह के लोगो से घिरा है, जिनकी मेहनत मशक्कत की जिंदगी सही माना में इसान की जिंदगी है, जिसमे उनकी अपनी सजीदा दिलचस्पिया, खुशिया और अपने ही दुख हैं।

"यह है वास्तव मे le vrai grand monde," प्रिस कोर्चागिन के शब्द याद करते हुए नेख्लदोव ने मन ही मन कहा। उसकी आखा क सामने कोचागिन जैसे लोगो की निकम्मी, आरामतलब जिन्दगी का नक्शा घूम गया। कितनी तुच्छ और ओछी हैं इनकी दिलचस्पिया।

नेख्लूदोव को लगा जैसे कोई नया, अनजाना, और खूबसूरत ससार उसकी आखो के सामने खुल गया हो, और उसका मन खुशी से भर उठा।

दूसरा भाग समाप्त

तीसरा भाग

१

कंदियो की जिस टोली के साथ मास्लोवा को भेजा गया था, उसने ३ हजार मील तक का सफर तय किया। पेम शहर तक मास्लोवा ग्राम मुजरिमो के साथ सफर कर रही थी जिन्हे जाब्ता फौजदारी मे सजाए दी गयी थी। नेख्लदोव को वेरा वोगोदूखोव्स्काया ने यह परामर्श दिया था कि बेहतर होगा यदि मास्लोवा राजनीतिक कैदियो के साथ सफर करे। उसे स्वय भी राजनीतिक कैदियो के साथ ही ले जाया जा रहा था। लेकिन पेम तक पहुच कर कही नेख्लदोव ऐसा करने म सफल हुआ, और आगे का सफर मास्लोवा राजनीतिक कैदियो के साथ जाने लगी।

पेम तक का सफर मास्लोवा के लिए बडा कठिन रहा था, शारीरिक दृष्टि से भी और नैतिक दृष्टि से भी। शारीरिक दृष्टि से इसलिए कि डिब्बे म भीड बहुत थी, गन्द था, और कीडे मकोडे थे जिन्होने उसे चैन से नही बैठने दिया। नैतिक दृष्टि से इसलिए कि उसके साथ आदमियो का व्यवहार भी कीडे मकोडो की तरह घृणित रहा था। हर स्टेशन पर नये नये लोग उसके पीछे पड जाते, उसे घेर लेते और परेशान करते। कैदी औरतो और कैदी मर्दों, वाडरो तथा कानवाय के सिपाहियो के बीच लपट सबध तो एक रिवाज ही बन गये थे। इसलिए जो स्त्री अपने को बचाय रखना चाहती हो और अपने शरीर का व्यापार न करना चाहती हो, उसे हर वक्त अत्यधिक सावधान रहना पडता था। मास्लोवा की स्थिति बडी कठिन थी। एक तो वह देखने मे अच्छी थी, दूसरे, लोगो को उसका अतीत मालूम था, इसलिए आदमियो की नजर विशेषतया उस पर अधिक जाती। सारा वक्त उसका दिल धक्‌धक करता रहता, और अपने को बचाये रखने के लिए उसे विकट सघर्ष करना पडता। और

अब जब वह दृढता से आदमियो का मुकाबला करती तो वे बिगड उठते। अब एक और भावना भी मास्लोवा के प्रति उनके मन मे जागने लगी, वह थी द्वेष की भावना। परन्तु फेदोस्या और तारास के साथ घनिष्ठता होने से स्थिति कुछ आसान हो गई थी। जब तारास को पता चला कि उसकी पत्नी को परेशान किया जा रहा है तो नीज्नी नोवगोरोद मे जान बूझ कर उसने अपने को पकडवा दिया ताकि वह अपनी पत्नी का बचाव कर सके। और इस तरह अब वह भी कैदियो की तरह टोली के साथ सफर कर रहा था।

और जब मास्लोवा को राजनीतिक कैदियो के साथ जाने की इजाज़त मिल गई तब तो उसकी स्थिति हर तरह से सुधर गई। राजनीतिक कैदियो को सफर का ज्यादा आराम था, उन्हे जगह ज्यादा मिलती थी, भोजन बेहतर था और लोग भी उनके साथ इतनी रुखाई से पेश नही आते थे। इसके अतिरिक्त मर्दो ने उसे परेशान करना छोड दिया और अब उसे उसके अतीत की याद दिलाने वाला कोई न था, जिसे वह भूलने को इतनी आकुल थी। परन्तु सबसे बडा लाभ जो उसे हुआ वह यह था कि वह कुछेक ऐसे लोगो के सम्पर्क मे आयी जिनका प्रभाव उसके आचार विचार पर बहुत ही अच्छा और निर्णयात्मक रहा।

हर पडाव पर मास्लोवा राजनीतिक कैदियो के साथ रह सकती थी। लेकिन शरीर की मजबूत और स्वस्थ होने के कारण, जब कैदियो को एक पडाव से दूसरे पडाव तक पैदल ले जाया जाता तो उसे भी साधारण मुजरिमो के साथ पैदल चलना पडता था। इस तरह, तोम्स्क तक का सारा रास्ता उसने पैदल तय किया। टोली के साथ दो राजनीतिक कैदी भी थे। इनमे से एक तो मारीया पाव्लोव्ना श्चेतीनिना थी। यह वही सुन्दर और हल्के भूरे रग की आखो वाली लडकी थी जिसकी ओर नेख्लूदोव का ध्यान उस रोज़ आकृष्ट हुआ था जब वह वेरा से जेल मे मिलने गया था। दूसरा सिमनसन नाम का एक युवक था, अस्त-व्यस्त बाल, सावला चेहरा और धसी हुई आखें। इसे भी नेख्लूदोव ने वहा उसी दिन देखा था। यह आदमी अब याकूत्स्क प्रदेश को जा रहा था, जहा इसे निर्वासित किया गया था। मारीया पाव्लोव्ना इसलिए पैदल चल रही थी कि उसने छकडे मे अपना स्थान एक आम मुजरिम औरत को दे दिया था, जो गर्भवती थी। और सिमनसन इसलिए कि जो गहलत

उस ग्रपन वग ने वारण मिल रही थी उमका वह नाभ नही उठाना चाहता था। मुबह तडके ही ग्राम मुजरिम कैदिया के मार य तीना पैदल चल दते। वाद म राजनीतिक वदी छकडा म वठ वर ग्रात। मफर की ग्राखिरी मजिल भी इमी नियम के ग्रनुमार तय हुई ग्रार टाली गर वन्दे शहर म जा पहुची जहा उमका दायित्व किमी नय कानवाय ग्रफमर का सौंप दिया गया।

मुवह का वक्त था, ग्रौर सितम्बर का महीना। कभी वारिश पडने लगती, कभी वफ, ग्रौर किसी किसी वक्त महमा तेज ठण्डी हवा के झोके ग्राने लगते। पडाव घर के ग्रागन म कैदिया की टोली (लगभग चार मौ ग्रादमी ग्रौर पचास ग्रौरते) ग्रभी मे खडी थी। कुछ कैदी कानवाय ग्रफमर के इदगिद भीड लगाये थे जो कैदियो के मुखिया का दो दो दिन का जव खच दे रहा था। वाकी कदी खाचे वाली स्त्रिया मे खान की चीजें खरीद रहे थे, जिन्ह ग्रागन म ग्रा कर सौदा वेचने की इजाजत द दी गई थी। पैमा के खनकने, कैदियो की ग्रावाजा सौदा वचन वाली ग्रौरता की चीख-पुकार से वातावरण गूज रहा था।

कात्यूशा ग्रौर मारीया पाव्लोव्ना भी घर के ग्रन्दर से निकल कर ग्रागन म ग्रा गई। दोना न ऊचे बूट ग्रौर फर के छोटे छोटे कोट पहन रखे थे ग्रौर सिर पर शाल लपेटे हुए थी। यही पर खोचे वाली ग्रौरत, तेज हवा से वचने के लिए ग्रागन की उत्तरी दीवार की ग्रार म खाचे लगाये बैठी थी, ग्रौर ग्रपना ग्रपना सौदा वेचने की फिक्र म एक दूसरी से लड-झगड रही थी। ताजा पाव रोटी, गोश्त के ममासे, मछली, रमिसेली, दलिया, कलेजी गोमास ग्रण्डे दूध—ये चीजे वे बेच रही थी। एक ग्रौरत तो पूरा का पूरा मुग्रर भून कर ले ग्रायी थी।

टोली के चलने के इतजार म सिमनसन भी ग्रागन मे खडा था। उसने रवड की जॉकेट, ग्रौर रवड के गैलाश चढा रखे थे ग्रौर उन्ह तस्मो के साथ ग्रपन ऊनी मोजो से बाधा था (सिमनसन माम नही खाता था, इसलिए जानवरो को मार कर उनके चमडे स तैयार की गयी चीजो का इस्तेमाल नही करता था)। मायवान के पास खडा वह ग्रपनी नोट-बुक म एक बात दज कर रहा था जो उसे ग्रभी ग्रभी सूझी थी। उसने लिखा—"यदि कोई कीटाणु मनुष्य के नाखून का निरीक्षण करने की क्षमता रखता हो तो वह उसे निष्प्राण पदार्थ कहेगा। इसी तरह हम पृथ्वी

की ऊपरी कठोर परत को देख कर हम मानव उसे निष्प्राण कह देते है। यह गलत है।"

मास्लोवा न अण्डे, पाव रोटी, मछली, और रस्क खरीदे, और वह उन्हे अपने बैग म डाल ही रही थी, उधर मारीया पाव्लोव्ना खाने वाली औरतो को पैसे दे रही थी जब कंदियो मे हलचल सी मच गई। सभी एकदम चुप हो गये और अपनी अपनी जगह पर लाइना म खड़ हो गये। अफसर बाहर निकल आया और रवानगी से पहले आखिरी हुक्म दे दिये।

सब बात रोज़ की तरह चल रही थी। कैदियो की गणना कर ली गई, उनके पावो मे पडी बेडियो को अच्छी तरह से ठोक-बजा कर देख लिया गया। जिन कैदियो को दो दो की लाइन मे जाना था, उनके हाथ एक दूसरे से हथकडिया द्वारा बाध दिये गये। परन्तु सहसा अफसर की क्रोध भरी, अफसराना आवाज़ सुनाई दी, और साथ ही किसी को घमा पडने की, और एक बच्चे के रोने चिल्लाने की। क्षण भर के लिए सभी चुप हो गये, फिर लोगो के धीरे धीरे बडबडाने की खोखली सी आवाज़ सुनाई देने लगी। मास्लोवा और मारीया पाव्लोव्ना उस ओर गयी जहा से आवाज़ आयी थी।

२

वहा पहुचने पर मारीया पाव्लोव्ना और कात्यशा न यह दृश्य देखा अफसर—सुनहरी रग की मूछो वाला, हट्टा-कट्टा आदमी—भौह सिकोडे, अपने दाये हाथ की हथेली मल रहा था, और अश्लील गालिया बक रहा था क्योकि उसने अभी अभी एक कदी के मुह पर थप्पड रसीद किया था जिससे उसके हाथ को चोट पहुची थी। उसके सामन एक ऊचे कद का दुबला पतला कदी खडा एक हाथ से अपने मुह पर स खून पोछ रहा था और दूसरे हाथ स एक चीखती चिल्लाती लडकी को उठाय हुए था। लडकी शाल मे लिपटी हुई थी। कैदी का सिर आधा मुडा हुआ था, उसका कोट और पतलून कद के लिए बहुत छोटे थे।

'मैं दूगा तुम्हे (इसके बाद अश्लील गालिया)। मैं तुम्हे बताऊगा आगे स जवाब कैसे दिया जाता है (और गालिया)। इसे औरतो के हवाले कर दो।" अफसर ने चिल्ला कर कहा, "फौरन् पहनो।

तोम्स्क से चलने के बाद से वह कैदी सारा रास्ता अपनी नन्ही बेटी
ो उठा कर ला रहा था (इस कैदी को इसकी गाय की पचायत ने
निर्वासन की सजा दी थी)। तोम्स्क में उसकी पत्नी टाइफस से मर
गई थी। अब अफसर ने हुक्म दे दिया था कि कैदी को हथकडिया डाल
दी जाय। कैदी ने हुज्जत की और कहा कि हथकडिया लगाये हुए वह
बच्चे को नही उठा सकेगा। अफसर का मिजाज बिगडा हुआ था वह
चिढ उठा और कैदी को पीट दिया।*

जिस कैदी को चोट लगी थी उसके पास एक कानवाय का सिपाही
और एक काली दाढी वाला कैदी खडे थे। कैदी के एक हाथ पर हथकडी
लगी थी, और वह भौंहो के नीचे से, उदास आखो से कभी अफसर
की ओर और कभी जख्मी कैदी की ओर—जिसने लडकी को उठा रखा
था—देखे जा रहा था। अफसर ने फिर सिपाही को हुक्म दिया कि लडकी
को ले ले। कैदी और भी अधिक बडबडाने लगे।

"तोम्स्क से ले कर यहा तक सारा रास्ता तो हथकडिया नही
पहनायी गयी हैं, और अब " पीछे कही से किसी ने फटी आवाज
से कहा।

"आखिर यह बच्ची है, पिल्ला तो नही।"

"बच्ची का क्या करे?"

"यह कानून नही है," कोई और बोला।

"किसने कहा है?" मानो अफसर को साप ने डस लिया हो उसने
चिल्ला कर कहा और कैदियो की भीड के अन्दर घुस गया। 'मैं तुम्हे
कानून सिखाऊगा। किसने कहा है? तुमने? तुमने?'

"सभी यही कह रहे हैं, क्योकि " एक छोटे कद के, चौडे मुह
वाले कैदी ने कहा।

उसके मुह से ये शब्द निकल नही पाये थे कि अफसर ने दोनो हाथो
से उसके मुह पर प्रहार किया।

"बगावत? हैं? मैं तुम्हे सिखाऊगा बगावत किसे कहते है। मैं तुम

---

*इस घटना का विवरण द० अ० लियेव ने अपनी पुस्तक 'देश
निकाला' में दिया है। (लेव तोलस्तोय)

सबको कुत्तो की तरह गोली मे मरवा डालगा, और अफसर मर इस काम पर खुश हागे। ले लो लडकी को।"

भीड चुप हा गई। एक सिपाही ने चिल्लाती लडकी का खींच कर उठा लिया, दूसरे सिपाही ने कैदी का हथकडी लगा दी। कैदी न चुपचाप हाथ आगे कर दिये।

"इसे औरता के पास ले जाओ!" अपनी तलवार की पटी ठाक करते हुए अफसर ने चिल्ला कर कहा।

नन्ही लडकी अब भी जार जार म चिल्लाये जा रही थी, और शाल के नीचे से अपने बाज़ छुडाने की काशिश कर रही थी। उसका चेहरा लाल हो रहा था। भीड मे से मारीया पाव्लोव्ना निकल कर आगे आ गई और अफसर के पास जा कर बोली–

"आप इजाजत दें तो मैं लडकी को उठा लू।"

"तुम कौन हो?"

"राजनीतिक कैदी।"

मारीया पाल्लोव्ना के सुन्दर चेहरे और बडी बडी आकर्षक आखा का प्रत्यक्षत उस पर असर हुआ (पहले भी अफसर ने उसे देखा था जब कैदी उसे सौपे जा रहे थे)। वह चुपचाप उसकी ओर देखता रहा, मानो कुछ साच रहा हो, फिर बोला–

"मुझे कोई एतराज़ नही। उठाना चाहती हो ता बेशक उठाओ। बडा रहम दिखाने चली हो। लेकिन अगर कैदी भाग जायेगा तो कौन इसका ज़िम्मेवार होगा?"

"बच्चे को उठाये हुए कौन भाग सकता है?" मारीया पाव्लोव्ना ने कहा।

"तुम्हारे साथ बहस करने के लिए मेरे पास वक्त नही है। उठा लो अगर उठाना चाहती हो।"

"लडकी इनके हवाले कर दू?" सिपाही न पूछा।

"हा, दे दो।"

"आओ मेरे पास आओ," बच्ची का पुचकारते हुए मारीया पाव्लोव्ना ने कहा।

लेकिन लडकी अपने बाप की ओर बाहे फैलाये चिल्लाये जा रही थी। मारीया पाव्लोव्ना के पास वह नही जाना चाहती थी।

"जरा ठहरो, मारीया पाव्लोव्ना," बैग मे से एक रस्क निकालते
हुए मास्लोवा ने कहा, "यह मेरे पास आ जायेगी।'

बच्ची मास्लोवा को जानती थी। उसके चेहरे की ओर देख कर
और उसके हाथ मे रस्क को देख कर, वह मास्लोवा के पास आ गई।

सब चुप हो गये। फाटक खोल दिये गये। टोली बाहर निकल आई
और कैदी लाइनो मे खडे हो गये। कॉनवाय ने फिर एक बार कैदियो की
गिनती की। छकडो मे बोरियो को लाद दिया गया और उनके ऊपर
कमजोर कैदी बैठ गये। औरतो की टोली मे मास्लोवा लडकी को उठाये,
फेदोस्या के साथ जा खडी हुई। सिमनसन, जो सारा वक्त इस दृश्य
को देखता रहा था, लम्बे लम्बे डग भरता हुआ, बडी दृढता से अफसर
के पास जा पहुचा। अफसर अपने आदेश दे चुकने के बाद अपनी गाडी
मे बैठने जा रहा था।

"आपने बहुत बुरा काम किया है,' सिमनसन बोला।

"जाओ अपनी लाइन मे। तुम्हारा इसके साथ कोई मतलब नही है।"

"हा, मतलब है, मैं तुम्हे बता देना चाहता हू कि आपने बहुत बुरा
काम किया है," अपनी घनी भौंहो के नीचे से अफसर के चेहरे की ओर
एकटक देखते हुए सिमनसन ने कहा।

"रेडी! मार्च!" सिमनसन की ओर कोई ध्यान न देते हुए, और
गाडीवान के कधे को पकड कर गाडी मे चढते हुए अफसर ने कहा।

टोली चलने लगी, और बडी सडक पर पहुच कर फैल गई। सडक
पर कीच ही कीच था और उसके दोनो ओर पानी के नाले थे। और
यह एक घने जगल मे से हो कर गई थी।

३

राजनीतिक कैदियो की स्थिति कठिनाइयो से भरी थी, लेकिन उनके
साथ रहना कात्यूशा को अच्छा लगा। पिछले छ साल से शहर मे उसका
जीवन विकृत, अकर्मण्य तथा भ्रष्ट रहा था और पिछले दो महीना से वह
मुजरिम कैदियो के साथ रहती आ रही थी। कात्यूशा का स्वास्थ्य बेहतर
होने लगा। हर रोज इन्हे पन्द्रह-बीस मील पैदल चलना पडता था, और
खुराक अच्छी मिलती थी। कैदी दो दिन चलते और एक दिन आराम

करते थे। इन नये साथियो की सगति मे उसकी रुचि नयी नयी चीजों मे पैदा होने लगी जिसका उसे पहले स्वप्न मे भी ख्याल नही आया था। कितने प्यारे लोग हैं ये (वह कहा करती थी) जिनके साथ मैं आजकल रहती हू। ऐसे लोग मैंने पहले कभी नही देखे, देखना तो दूर रहा, मैंने कभी कल्पना भी नही की थी कि ससार मे ऐसे लोग हो सकते हैं।

"और मैं हू कि सजा मिलने पर रोने लगी थी!" वह कहती। "मुझे तो चाहिए कि इसके लिए भगवान का हजार हजार शुक्र करू। जिन बातो का मझे यहा आ कर पता चला है, वे मुझे कभी भी मालूम न हो पाती।"

जिन उद्देश्यो से ये लोग उत्प्रेरित थे, उन्हे समझने मे कात्यूशा को कोई कठिनाई नही हुई, न ही उसे कोई विशेष प्रयास करना पडा। और चूकि वह स्वय जनता की कोख मे से जन्मी थी, इसलिए उसके हृदय मे उन उद्देश्यो के प्रति पूरी पूरी सहानुभूति थी। वह जानती थी कि ये लोग जनता के हितैषी हैं और उच्च वर्गो का विरोध करते है, स्वय उच्च वर्गो मे पैदा हुए हैं, फिर भी जनता की खातिर अपने सब विशेषाधिकार, अपनी आजादी तथा जीवन तक कुर्बान किये हुए हैं। इस बात से, कात्यूशा की नजरो मे वे विशेषतया ऊचे और सम्मानयोग्य हो उठे थे।

यो तो सभी नये साथी उसे अच्छे लगते थे, परन्तु मारीया पाव्लोव्ना के प्रति वह विशेषतया आकृष्ट हुई थी। उसकी सगति मे उसे रहना केवल अच्छा ही नही लगता था, उसके प्रति कात्यूशा का प्रेम एक विशेष प्रकार का आदरभाव तथा श्रद्धा की भावना लिये हुए था। कात्यूशा को इस बात ने बहुत प्रभावित किया कि यह लडकी, जो इतनी सुन्दर है, तीन भाषाए जानती है, एक अमीर जनरल की बेटी है, एक साधारण कामगार स्त्री की तरह रहती है। जितने भी पैसे इसका अमीर भाई इसे भेजता है, सभी गरीबो को दे देती है। इसके कपडे सादा ही नहीं, गरीबो जैसे हैं। अच्छी लगती है या बुरी, इसकी इसे तनिक परवाह नहीं। इसमे कोई शोखी नही, कोई त्रिया चरित्र नही, यह देख कर वह विशेषकर हैरान और प्रभावित हुई। मारीया पाव्लोव्ना जानती थी कि वह सुन्दर है, और यह जान कर उसके मन को खुशी भी होती थी, परन्तु मास्लोवा ने देखा कि उसके सौन्दर्य का जो प्रभाव पुरुषो पर पडता, उससे वह तनिक भी खुश नही होती थी। बल्कि उसे डर लगता था, और उन सभी

लागो के प्रति उसका हृदय अत्यधिक घृणा तथा भय से भर उठता था, जो उसके प्रति प्रेम प्रदर्शित करने लगते थे। उनके पुरुष साथी यह बात जानते थे, इसलिए कभी भी उस पर अपना प्रेम प्रकट नहीं करते थे, और उसके प्रति वैसा ही व्यवहार करते थे जैसा पुरुष पुरुषो के प्रति करते हैं। परन्तु अजनबी आदमी अक्सर उसके पीछे पड जाते थे लेकिन मारीया पाव्लोव्ना के शरीर मे इतनी ताकत थी कि वह भली भाति ऐसे लोगो के साथ निबट लेती थी। और इस शारीरिक बल पर उसे गर्व भी था। "एक बार ऐसा हुआ" वह हस कर सुनाया करती, "कि मैं एक सडक पर चली जा रही थी जब एक आदमी मेरा पीछा करने लगा। उससे पल्ला छुडाना मुश्किल हो गया, किसी तरह भी वह हटता नही था। आखिर मैंने उसे पकड कर ऐसा झंझोडा कि वह डर कर भाग गया।"

बचपन से ही उसे जनसाधारण के जीवन से प्रेम और अमीरो के जीवन से घृणा थी। वह कहा करती थी कि इसी कारण उसने क्रान्ति का पथ ग्रहण किया। बचपन मे उसे हमेशा इस बात पर डाट पडती रहती थी कि वह बैठक मे बैठने के बजाय नौकरो के कमरे मे, रसोईघर तथा अस्तबल मे अपना समय व्यतीत करती थी।

"बावर्चियो तथा कोचवानो के साथ बात करने मे मुझे मजा आता था, लेकिन कुलीन पुरुषो और स्त्रियो के साथ बैठ कर मैं ऊब उठती थी," वह कहती। "फिर जब मैं बडी हुई तो मैंने देखा कि हमारा जीवन बिल्कुल गलत रास्ते पर चल रहा है। मेरी मा मर चुकी थी और पिता के साथ मेरा कोई लगाव नही था, इसलिए मैं घर से निकल आयी, और अपनी एक सहेली के साथ एक फैक्ट्री मे काम करने लगी। उस समय मेरी उम्र उन्नीस बरस की थी।"

जब फैक्ट्री मे काम करना छोडा तो मारीया पाव्लोव्ना एक गाव मे जा कर रहने लगी। उसके बाद वह वापस शहर मे चली गयी और एक ऐसे घर मे रहने लगी जिसमे पोशीदा तौर पर वे एक छापाखाना चला रहे थे। वहा पर वह गिरफ्तार हो गयी और उसे बडी मशक्कत की सजा मिली। इसकी चर्चा स्वय मारीया पाव्लोव्ना ने कभी नही की। लेकिन कात्यूशा ने और लोगो के मुह से सुना कि जब पुलिस उस घर की तलाशी ले चुकी तो अधेरे मे किसी क्रान्तिकारी ने गोली चला दी। मारीया पाव्लोव्ना ने इसका जिम्मा अपने ऊपर ले लिया और इस कारण उसे सजा दे दी गयी।

जब कात्यूशा मारीया पाव्लोव्ना को अधिक घनिष्टता से जानने लगी तो उसने देखा कि जिस किसी स्थिति म भी मारीया पाव्लोव्ना हो वह कभी भी अपने बारे मे नही सोचती थी, बल्कि सेवा करने के लिए तत्पर रहती थी, काम छोटा हो या बडा हो, वह जरूर किसी की मदद करने के लिए चिन्तित रहती थी। उसका एक साथी जो इन दिनो उनके साथ था, कहा करता था कि मारीया पाव्लोव्ना उसी तरह उपकार का काम करती है जिस तरह शिकारी शिकार खेलता है। और यह ठीक भी था। जिस तरह शिकारी हर वक्त अपने शिकार की ताक मे रहता है, मारीया पाव्लोव्ना इसी तरह उन अवसरो की ताक मे रहती थी जब वह और लोगो की सेवा कर सके। उसके सारे जीवन का यही मुख्य उद्देश्य था। और इस शिकार की उसे आदत हो गई थी, यह उसके जीवन का एकमात्र व्यापार बन गया था। और वह अपना सेवा-काय इतनी स्वाभाविकता से करती कि जो लोग उसके परिचित थे वे यहा तक इसके अभ्यस्त हो गये थे कि उनके हृदय मे उसके प्रति कृतज्ञता का भाव तक नही उठता था।

जब मास्लोवा राजनीतिक कैदियो के बीच आ कर रहने लगी तो मारीया पाव्लोव्ना को बुरा लगा। वह उससे दूर रहना चाहती थी। कात्यूशा ने यह देख लिया, पर साथ ही उसने यह भी देखा कि मारीया पाव्लोव्ना इन भावनाओ को दबाने की कोशिश कर रही है और इसके बाद उसका व्यवहार उसके प्रति विशेष तौर पर विनम्र और सदभावनापूण हो उठा है। ऐसी असाधारण लडकी की सदभावना और विनम्रता ने मास्लोवा को ऐसा प्रभावित किया कि वह उसे अपना दिल दे बैठी। अनजान म ही उसने मारीया पाव्लोव्ना की धारणाओ को अपना लिया, और हर बात मे उसकी नकल करने लगी। दूसरी ओर मारीया पाव्लोव्ना कात्यूशा के इस गहरे अनुराग स प्रभावित हुए बिना न रह सकी और बदले म उससे प्रेम करने लगी।

और उन्ह आपस म मिलाने वाली एक और चीज भी थी—दोनो को कामुक प्रेम से घृणा थी। एक को इसलिए कि उसे इस प्रेम के भयानक अनुभव हो चुके थे, दूसरी को इसका अनुभव नही हुआ था और उसके लिए यह कोई समझ स बाहर की, बहुत ही घृणित चीज थी, मानव गौरव के लिए अपमान की बात थी।

जिन लागा के प्रभाव का मास्लोवा ने दिल खोल कर कबूल किया था उनमे से एक मारीया पाव्लोव्ना का था। इसका कारण यह था कि मास्लोवा मारीया पाव्लोव्ना से प्रेम करती थी। दूसरा प्रभाव सिमनसन का था। और इसका कारण यह था कि सिमनसन मास्लोवा से प्रेम करता था।

ससार मे सभी लोग किसी हद तक अपने और किसी हद तक दूसरो के विचारो के आधार पर जीवन निर्वाह करते है। इसी के अनुसार हम एक मनुष्य को दूसरे से अलग भी करते हैं, कि वह कहा तक अपने और कहा तक दूसरो के विचारो की प्रेरणा से रहता और काम करता है। कुछ लोगो के लिए सोचना एक मानसिक खेल के समान होता है। अधिकतर वे लोग अपनी बुद्धि का उस गतिपालक चक्र के समान इस्तेमाल करते हैं, जिसका पट्टा उतार दिया गया हो। ऐसे लोग सदा और लोगो के विचारा का प्रेरणा से काम करते है रीति रिवाज, प्रथा, कानून इत्यादि की प्रेरणा से। कुछ अन्य लोग ऐसे होते हैं जो हर काम केवल अपने विचारा से प्रेरित हो कर करते हैं। ये लोग अपने तक की आवाज को सुनते हैं और उसका आदेश मानते हैं। केवल कभी कभार ही ये और लोगा के विचारा को स्वीकार करते हैं और वह भी अच्छी तरह माप-तौल कर। सिमनसन ऐसा ही आदमी था। वह हर तथ्य का अपने मस्तिष्क की कसौटी पर परखता था और इसी के अनुसार निश्चय करता था। और निश्चय कर लेने पर उसी के अनुसार आचरण करता था।

उसका पिता सेना रसद विभाग का एक अफसर था। अभी सिमनसन स्कूल म ही पढता था जब वह इस नतीजे पर पहुचा कि उसके पिता की कमाई सच्ची मेहनत की कमाई नही है, बल्कि झूठ और बेईमानी की कमाई है, तो उसने पिता से साफ साफ कह दिया कि उन्हे यह धन जनता का दे देना चाहिए। पिता ने बेटे के परामश पर ध्यान ता क्या देना था, उल्टा उसे डाटा फटकारा जिस पर सिमनसन न घर छोड दिया, और पिता के पैसा से कोई सरोकार न रखा। इसी तरह उसकी यह धारणा बनी कि तत्कालीन सभी बुराइया का मूल कारण जनता का अज्ञान है। मन विश्वविद्यालय म से शिक्षा प्राप्त करने के बाद वह सीधा नरोदवादिया

म जा कर शामिल हो गया, गाव के किसी स्कूल म पढाने लगा। अपनी दृष्टि के अनुसार जिस बात को वह सच समझता, बेधडक हो कर उसे विद्यार्थियो और किसानो म उसका प्रचार करता, और जिस बात को झूठ और अन्यायपूर्ण समझता उसका डट कर खुल्लमखुल्ला विरोध करता।

उसे पकड कर अदालत मे सामने पेश किया गया।

मुकद्दमे के दौरान वह इस नतीजे पर पहुचा कि उन जजो को उसका मुकद्दमा करने का कोई अधिकार नही और यह बात उसने उनको साफ़ साफ़ कह दी। जजो न उसकी बात की ओर कोई ध्यान नही दिया और मुकद्दमा करते गये। जब सिमनसन ने यह देखा तो चुप्पी साध ली और निश्चय कर लिया कि अब उनके सवालो का कोई जवाब नही दूगा। जब भी वे कोई सवाल पूछते तो वह बुत बना खडा रहता। उसे आर्खागेल्स्क गुबेर्निया मे निर्वासित कर दिया गया। यहा पर उसने एक धार्मिक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया और उसके बाद उसके सभी कर्म इसी सिद्धान्त की प्रेरणा से किये जाने लगे। सिद्धान्त की तह म यह धारणा थी कि ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु म जीव है, जड पदार्थ कोई नही। जिन चीजो को हम जड अथवा निर्जीव समझते हैं, वे वास्तव मे एक विराट चेतन शरीर के अग हैं। मनुष्य इस विराट शरीर को पूर्णतया समझने म असमर्थ है, परन्तु इसका अग होने के नाते उसका कर्तव्य है कि वह उसके जीवन को तथा उसके सभी जीवित अगो के जीवन को कायम रखे। इस तरह वह किसी भी जीव की हत्या को जुर्म समझता था, जग, प्राण-दण्ड तथा हर प्रकार की हत्या का विरोध करता था, न केवल इन्सानो की हत्या का बल्कि पशु-पक्षियो की हत्या का भी। विवाह के प्रश्न पर भी उसका अपना सिद्धान्त था। उसका विश्वास था कि प्रजनन मनुष्य के जीवन की एक गौण क्रिया है, मुख्य क्रिया पहले से विद्यमान जीवित प्राणियो की सेवा करना है। इस सिद्धात की पुष्टि वह इस तथ्य से किया करता था कि खून मे फैगोसाइट पाये जाते हैं। उसकी दृष्टि म ब्रह्मचारी लोगो की स्थिति फैगोसाइटो की सी है जिनका काम शरीर के दुर्बल तथा रुग्ण अगो की सहायता करना है। ज्यो ही वह इस निश्चय पर पहुचा तो उसने अपने जीवन को भी इसी के अनुसार ढालना शुरू कर दिया, हालाकि जवानी के दिनो मे वह विलासिता मे डूबा रहा था। अब वह

समझता था कि वह और मारीया पाव्लोव्ना मनुष्य के रूप मे फगोसाइटो का काम कर रहे हैं।

उसे कात्यशा से प्रेम था, परन्तु यह प्रेम इस धारणा का उल्लघन नही करता था, क्योकि यह निष्काम प्रेम था। उसे विश्वास था कि ऐसा प्रेम उसकी फैगोसाइट सरीखी क्रियाओ म बाधक नही बनेगा बल्कि प्रेरणा का काम करेगा।

वह न केवल नैतिक बल्कि व्यावहारिक प्रश्नो पर भी अपने ही ढग से निश्चय किया करता था। सभी व्यावहारिक मामलो के बारे मे भी उसका एक अपना सिद्धान्त था। कितने घण्टे काम करना चाहिए, कितना आराम, भोजन कैसा होना चाहिए, पोशाक कैसी, घरो मे रोशनी का प्रबध कैसा होना चाहिए, और उन्हे गर्म कैसे रखना चाहिए—इन सब बातो के बारे मे उसने अपने नियम बना रखे थे।

यह सब होते हुए भी सिमनसन बडा शर्मीला और विनम्र स्वभाव का व्यक्ति था। हा, एक बार निश्चय कर लेने के बाद ससार की कोई भी चीज उसे डावाडोल नही कर सकती थी।

उसके प्रेम का मास्लोवा पर निश्चित तौर पर प्रभाव पडा। नारी सुलभ अन्त प्रेरणा से मास्लोवा को शीघ्र ही पता चल गया कि वह उससे प्रेम करता है। यह सोच कर कि वह उस जैसे आदमी के हृदय म अपने प्रति प्रेम जागृत कर पायी है, मास्लोवा अपनी नजरो म उठने लगी। यदि नेख्लूदोव ने उसके सामने शादी का प्रस्ताव रखा था तो इसलिए कि वह उदारहृदय व्यक्ति है, और पीछे जो कुछ हुआ वह उसे धो देना चाहता है। लेकिन सिमनसन तो उस मास्लोवा से प्रेम करता था जो आज उसके सामने थी। और उसके प्रेम का और कोई कारण न था, केवल प्रेम ही था। मास्लोवा को ऐसा महसूस होता जैसे सिमनसन उसे विलक्षण नारी समझता है जिसमे विशेष, उच्च कोटि के नैतिक गुण हो। वह स्पष्टतया नही जानती थी कि कौन से ऐसे गुण सिमनसन को उसम नजर आये हैं, लेकिन वह नही चाहती थी कि उसे निराशा हो, इसलिए वह अपने अन्दर उन सभी सर्वोत्कृष्ट गुणो को जगाने का भरसक प्रयास करती जिनकी वह कल्पना कर सकती थी।

यह प्रक्रिया तभी से शुरू हो गई थी जब वे अभी जेल ही मे थे। तभी एक दिन मास्लोवा ने उसे अपनी ओर घूरते हुए देखा था, घनी

भौंहों के नीचे से उसकी सदभावनापूर्ण, गहरी नीली आखें उसे देखे जा रही थी। उस दिन मुलाकातिया स मिलन का दिन था। तब भी उस नजर आ गया था कि यह व्यक्ति कोई असाधारण आदमी है, और बड असाधारण ढग स उसकी ओर देखे जा रहा है। उसके उलझे हुए बालो और चढी हुई भौंहो स दढता का भास होता था, पर साथ ही चेहरे पर बच्चो की सी सरलता और सद्भावना झलक रही थी। इसके बाद मास्लोवा उसे तोम्स्क मे मिली थी जहा वह राजनीतिक कैदियो के साथ रहने लगी थी। दोनो ने एक दूसरे से कुछ नही कहा, लेकिन उनकी नजर म इस बात की स्वीकृति थी कि वे एक दूसरे को जानते हैं, और उनके लिए एक दूसरे का महत्व है। इसके बाद भी उनके बीच कोई गभीर वार्तालाप नही हुआ, परन्तु मास्लोवा ने यह महसूस किया कि जब कभी उसकी उपस्थिति म सिमासन कुछ कहता तो उसके शब्द उसी को सम्बोधित होते थे, और वह जो कुछ कहता उसी की खातिर कहता था। अपने भाव वह स्पष्टतम शब्दो मे व्यक्त करने की कोशिश किया करता था। परन्तु वास्तव मे उनकी घनिष्ठता उस समय बढने लगी थी जब सिमनसन आम मुजरिम कैदियो के साथ एक पडाव से दूसरे पडाव तक पैदल जाने लगा था।

५

पेम से चलने से पहले नेख्लूदोव केवल दो बार कात्यशा स मिल पाया—एक बार नीज्नी नावगोरोद मे जब कैदी एक जाली लगे बड में ले जाये जाने वाले थे और दूसरी बार पेम मे जेल के दफ्तर में। दोनो बार मास्लोवा गुपचुप रही और उसके साथ रुखाई से पेश आयी। जब नेख्लूदोव ने पूछा कि तुम्हे किसी चीज की जरूरत तो नही, तुम आराम से तो हो, तो मास्लोवा ने कोई सीधा जवाब नही दिया, सकुचाती और टाल मटोल करती रही। नेख्लूदोव को उसके व्यवहार मे उसी विरोधपूर्ण भर्त्सना का भास मिला जो कुछेक बार पहले उसे मिला था। उसे उदास देख कर नेख्लूदोव का मन विचलित हो उठा था, हालाकि उसकी उदासी का केवल यही कारण था कि उस समय मद-कैदी उसे बेहद परेशान कर रहे थे। नेख्लूदोव को डर था कि इन कठोर और भ्रष्टकारी परिस्थितियो के प्रभाववश, जिनमे मास्लोवा यात्रा कर रही थी, कही उसका मन

फिर पहले सा निराश और विक्षिप्त न हो उठे, जब वह उसके साथ रुखाई से बातने लगती थी, और सब कुछ भूलने के लिए तम्बाकू और शराब पीने लगती थी। पर यात्रा के इस भाग मे वह मास्लोवा की कोई भी मदद नहीं कर सकता था, क्योंकि वह उसे कभी भी मिल नहीं पाता था। जब मास्लोवा राजनीतिक कैदियों के साथ रहने लगी तो नेख्लूदोव ने जाना कि उसके संशय सर्वथा निर्मूल और निराधार हैं। जिस आन्तरिक परिवर्तन को वह मास्लोवा में देखने का इतना अधिक इच्छुक हुआ करता था, अब हर भेंट में अधिकाधिक निश्चित रूप में उसे नजर आने लगा। जब तोम्स्क में वह उसे पहली बार मिला तो उसका व्यवहार फिर पहले सा ही था, जैसा मास्को से रवाना होते समय रहा था। उसने भौंहें नहीं चढ़ायीं, उसे मिलने पर घबरायी भी नहीं, बल्कि बड़ी खुश खुश और सहज भाव से मिली, नेख्लूदोव की मेहरबानियों के लिए उसका धन्यवाद किया, विशेषकर उसे इन लोगों के बीच लाने के लिए जिनमें वह उस समय रह रही थी।

टोली के साथ दो महीने तक चलते रहने के बाद मास्लोवा के आन्तरिक परिवर्तन की झलक उसके चेहरे पर भी नजर आने लगी। धूप में उसका चेहरा सँवला गया, वह दुबली हो गयी, उम्र में बड़ी लगने लगी, कनपटियों पर और मुँह के आस-पास झुर्रियाँ नजर आने लगीं। अब वह माथे पर कुण्डल नहीं बनाती थी, उसके बाल रूमाल के नीचे छिपे रहते थे। जिस ढंग से वह अपने बाल बनाती या कपड़े पहनती, उसमें अब नाज़-नखरे का लेश मात्र भी नहीं था। इस परिवर्तन को देख कर, जिसकी प्रक्रिया अब भी बराबर चल रही थी, नेख्लूदोव बेहद खुश हुआ।

नेख्लूदोव के हृदय में मास्लोवा के प्रति ऐसी भावना उठने लगी जिसका अनुभव उसे पहले कभी नहीं हुआ था। यह भावना उस कवित्वपूर्ण प्रेम-भावना से पृथक थी जिसका अनुभव उसे सबसे पहले हुआ था। यह उस कामवासना से भी बहुत कुछ पृथक थी जिसका अनुभव उसे बाद में हुआ। और कर्तव्य-पूर्ति पर सन्तोष और आत्मश्लाघा की उस भावना से भी, जिसके साथ उसने मुकद्दमे के बाद उससे विवाह करने का निश्चय किया था। अब जो भावना उसके हृदय को उद्वेलित कर रही थी वह केवल अनुकम्पा और दयालुता की भावना थी। यह भावना उस समय

उसके हृदय मे उठी थी जब वह पहली बार उससे जेल म मिला था और फिर एक नयी शक्ति के साथ तब उठी थी जब हस्पताल से लौट कर उसने अपनी घृणा पर काबू पा कर उसे छोटे डाक्टर वाले काल्पनिक निम्न पर क्षमा कर दिया था (यह तो उसे बाद म ही पता लगा था कि किस्सा सरासर गढा था)। फरक केवल इतना था कि पहले जहा यह क्षणिक हुआ करती अब वह स्थायी रूप से हृदय म रहती थी। अब उसके प्रत्येक विचार और प्रत्येक काम मे यही अनुकम्पा और दयालुता की भावना निहित रहती थी, और यह न केवल मास्लोवा के प्रति बल्कि सभी के प्रति रहती थी।

ऐसा जान पडता था जैसे इस भावना ने प्रेम का बाध तोड डाला हो जो नेख्लूदोव की आत्मा म अभी तक बन्द पडा था। अब जिस किसी से भी नेख्लूदोव मिलता उसी के प्रति यह प्रेम छलछला उठता।

यात्रा के दौरान नेख्लूदोव का हृदय इन भावनाओ से इतना उद्वेलित हो उठा था कि वह हर किसी स अत्यधिक सदभावना और विनम्रता स मिलता, भले ही वह कोई कोचवान हो या कॉनवाय का सिपाही, जेल का इन्स्पेक्टर हो या गवर्नर।

मास्लोवा के राजनीतिक कैदियो के बीच रहने के कारण नेख्लूदोव का भी परिचय बहुत से राजनीतिक कैदियो के साथ हो गया। यह परिचय पहले येकातेरीनबुर्ग मे हुआ जहा इन्हें काफी आजादी मिली हुई थी, और वे सबके सब एक बडी कोठरी म रखे गये थे। बाद म रास्ते म उसका परिचय उन पाच पुरुषो और चार स्त्रियो के साथ हुआ जिनके सग मास्लोवा को लगा दिया गया था। इस तरह राजनीतिक निर्वासितो के साथ सम्पर्क मे आने से नेख्लूदोव के विचार उनके बारे म बिल्कुल बदल गये।

जब से रूस मे क्रान्तिकारी आदोलन शुरू हुआ, और विशेषकर उस पहली मार्च के दिन से जब अलेक्सान्द्र द्वितीय की हत्या की गयी थी नेख्लूदोव क्रान्तिकारियो को अवमान और घृणा की दृष्टि स देखता रहा था। उनकी क्रूरता को देख कर, सरकार के विरुद्ध अपने सघर्ष मे लुक छिप कर काम करने के उनके तरीको को देख कर, पर विशेषकर उस बबरता को देख कर जिससे वे हत्याए किया करते थ, उसके हृदय म गहरी नफरत उठा करती थी। साथ ही ये लोग अपने तुल्य किसी को नही समझते और उनके स्वभाव का यह दोष भी नेख्लूदोव को अरुचिकर

लगता था। पर जब वह उन्हें समीप से जान पाया जब पता चला कि सरकार के हाथों उन्हें कितना कुछ सहन करना पड़ा है, तो वह समझ गया कि वे जो कुछ हैं अपनी परिस्थितियों के बनाए हुए हैं, इससे भिन्न वे नहीं हो सकते थे।

यह ठीक है कि तथाकथित जरायम पेशा मुजरिम कैदियों का बड़ी भयानक और फिजूल यातनाएं पहुंचाई जाती थीं। फिर भी उन्हें सज़ा मिलने से पहले और बाद में उनके साथ अदालती कारवाई तो की जाती थी, इंसाफ का दिखावा तो किया जाता था। लेकिन राजनीतिक कैदियों के साथ तो यह दिखावा भी नहीं किया जाता था। यह बात नेख्लूदोव ने न केवल शुस्तोवा के बारे में ही बल्कि अपने कितने ही नये परिचितों के बारे में देखी थी। जिस तरह मछलियों का जाल में पकड़ लिया जाता है, इसी तरह राजनीतिक कैदियों के साथ व्यवहार किया जाता था। पहले जो कुछ भी जाल में फंस जाय उसे खींच कर किनारे ले आते हैं, बाद में बड़ी बड़ी मछलियों को, जिनकी ज़रूरत होती है चुन चुन कर अलग कर दिया जाता है, और छोटी छोटी मछलियों को वहीं किनारे पर गलने-सड़ने के लिए छोड़ दिया जाता है। सरकार सैंकड़ों ऐसे लोगों को पकड़ कर जेल में फेंक देती जो प्रत्यक्षतः निर्दोष होते और जिनसे कोई खतरा नहीं पहुंच सकता था। फिर साल-दर-साल तक वे वहीं पड़े रहते, कुछ तपेदिक के शिकार हो जाते, कुछ पागल हो जाते, कुछ आत्महत्या कर लेते। उन्हें आज़ाद कर देने की अधिकारियों को कोई प्रेरणा नहीं होती थी। वे समझते थे कि यदि यहीं पड़े रहें तो कभी किसी अदालती जांच के समय किसी नुक्ते को साफ करने में इनसे मदद मिलेगी। सरकार की दृष्टि से भी ये लोग अक्सर निर्दोष होते थे। लेकिन इनका भाग्य पुलिस या खुफिया पुलिस के किसी अफसर, किसी सरकारी वकील किसी मैजिस्ट्रेट, गवर्नर या मन्त्री की सनक पर निर्भर रहता। उसका मन आये, या वक्त हो तो इन्हें छोड़ दे वरना वहीं पड़े रहें। इनमें से किसी अफसर का मन कभी ऊब उठा, या शोहरत हासिल करने की ख्वाहिश उठी तो कुछ लोगों को गिरफ्तार करने का हुक्म दे दिया। फिर जैसा मन हुआ, या जैसे ऊपर के अधिकारियों का मन हुआ इन्हें जेल में फेंक दिया या छोड़ दिया। ऊपर के अधिकारी भी इसी तरह की प्रेरणा के अनुसार या किसी मन्त्री के साथ अपने सम्बन्ध के प्रभाववश लोगों

उसके हृदय में उठी थी जब वह पहली बार उससे जेल में मिला था और फिर एक नयी शक्ति के साथ तब उठी थी जब हस्पताल से लौट कर उसने अपनी घृणा पर काबू पा कर उसे छोटे डाक्टर वाले काल्पनिक किस्से पर क्षमा कर दिया था (यह तो उसे बाद में ही पता चला था कि किस्सा सरासर झूठा था)। फरक केवल इतना था कि पहले जहां यह क्षणिक हुआ करती अब वह स्थायी रूप से हृदय में रहती थी। अब उसके प्रत्येक विचार और प्रत्येक काम में यही अनुकम्पा और दयालुता की भावना निहित रहती थी, और यह न केवल मास्लोवा के प्रति बल्कि सभी के प्रति रहती थी।

ऐसा जान पड़ता था जैसे इस भावना ने प्रेम का बांध तोड़ डाला हो जो नेख्लूदोव की आत्मा में अभी तक बन्द पड़ा था। अब जिस किसी से भी नेख्लूदोव मिलता उसी के प्रति यह प्रेम छलछला उठता।

यात्रा के दौरान नेख्लूदोव का हृदय इन भावनाओं से इतना उद्वेलित हो उठा था कि वह हर किसी से अत्यधिक सदभावना और विनम्रता से मिलता, भले ही वह कोई कोचवान हो या कॉनवाय का सिपाही, जेल का इंस्पेक्टर हो या गवनर।

मास्लोवा के राजनीतिक कैदियों के बीच रहने के कारण नेख्लूदोव का भी परिचय बहुत से राजनीतिक कैदियों के साथ हो गया। यह परिचय पहले येकातेरीनबुर्ग में हुआ जहां इन्हें काफी आजादी मिली हुई थी, और वे सबके सब एक बड़ी कोठरी में रखे गये थे। बाद में रास्ते में उसका परिचय उन पांच पुरुषों और चार स्त्रियों के साथ हुआ जिनके संग मास्लोवा को लगा दिया गया था। इस तरह राजनीतिक निर्वासितों के साथ सम्पर्क में आने से नेख्लूदोव के विचार उनके बारे में बिल्कुल बदल गये।

जब से रूस में क्रान्तिकारी आन्दोलन शुरू हुआ, और विशेषकर उस पहली मार्च के दिन से जब अलेक्सान्द्र द्वितीय की हत्या की गयी थी, नेख्लूदोव क्रान्तिकारियों को अवमान और घृणा की दृष्टि से देखता रहा था। उनकी क्रूरता को देख कर, सरकार के विरुद्ध अपने संघर्ष में लुक छिप कर काम करने के उनके तरीकों को देख कर, पर विशेषकर उस बर्बरता को देख कर जिससे वे हत्याएं किया करते थे, उसके हृदय में गहरी नफरत उठा करती थी। साथ ही ये लोग अपने तुल्य किसी को नहीं समझते और उनके स्वभाव का यह दोष भी नेख्लूदोव को अरुचिकर

लगता था। पर जब वह उन्हे समीप से जान पाता जब पता चला कि सरकार के हाथो उन्हे कितना कुछ सहन करना पड़ा है तो यह समझ गया कि वे जो कुछ हैं अपनी परिस्थितियों के बनाये हुए हैं उससे भिन्न वे नही हो सकते थे।

यह ठीक है कि तथाकथित जरायम पेशा सजायाफ्ता कैदियो को बड़ी भयानक और फिजूल यातनाए पहुचाई जाती थी। फिर भी उन्हे सजा मिलने से पहले और बाद मे उनके साथ अदालती कार्रवाई तो की जाती थी, इसाफ का दिखावा तो किया जाता था। लेकिन राजनीतिक कैदियो के साथ तो यह दिखावा भी नही किया जाता था। यह बात नेख्लूदोव ने न केवल शुस्तोवा के बारे मे ही बल्कि अपने जितने इनके पर्रिचितो के बारे मे देखी थी। जिस तरह मछलियो को जाल मे पकड़ लिया जाता है इसी तरह राजनीतिक कैदियो के साथ व्यवहार किया जाता था। पहले जो कुछ भी जाल मे फस जाय उसे खीच कर किनारे ले आते है बाद मे बड़ी बड़ी मछलियो को जिनकी जरूरत होती है चुन चुन कर अलग कर दिया जाता है, और छोटी छोटी मछलियो को वही किनारे पर गलने-सड़ने के लिए छोड़ दिया जाता है। सरकार सैकड़ो ऐसे लोगो को पकड़ कर जेल मे फेंक देती जो प्रत्यक्षत निर्दोष होते और जिनसे कोई खतरा नही पहुच सकता था। फिर साल-दर-साल तक वे वही पड़े रहते, कुछ तपेदिक के शिकार हो जाते कुछ पागल हो जाते कुछ आत्महत्या कर लेते। उन्हे आजाद कर देने की अधिकारियो को कोई प्रेरणा नही होती थी। वे समझते थे कि यदि यही पड़े रहे तो कभी किसी अदालती जाच के समय किसी नुकते को साफ करने मे इनसे मदद मिलेगी। सरकार की दृष्टि से भी ये लोग अक्सर निर्दोष होते थे। लेकिन उनका भाग्य पुलिस या खुफिया पुलिस के किसी अफसर किसी सरकारी वकील किसी मजिस्ट्रेट, गवर्नर या मन्त्री की सनक पर निर्भर रहता। उसका मन आये, या वक्त हो तो इन्हे छोड़ दे वरना वही पड़े रहे। इनमे से किसी अफसर का मन कभी ऊब उठा या शोहरत हासिल करने की ख्वाहिश उठी तो कुछ लोगो को गिरफ्तार करने का हुक्म दे दिया। फिर जैसा मन हुआ, या जैसे ऊपर के अधिकारियो का मन हुआ इन्हे जेल मे फेंक दिया या छोड़ दिया। ऊपर के अधिकारी भी इसी तरह की प्रेरणा के अनुसार या किसी मन्त्री के साथ अपने सम्बन्ध के प्रभाववश लोगो

को दुनिया के दूसरे कोने म निवासित कर के भेज देते, कद-तनहाई म डाल देते, साइबेरिया मे भेज देते, कडी मशक्कत की, या मौत की सजा दे देते, या फिर किसी महिला के कहने पर उन्ह रिहा कर देते।

उनके साथ वैसा ही सलूक किया जाता था जैसा जग म दुश्मनो के साथ किया जाता है। और यह स्वाभाविक ही था कि जवाब म वे भी उन्ही हथियारो का प्रयोग करे जिनका प्रयोग उनके खिलाफ किया जाता था। जग के दिनो मे एक ऐसा लोकमत उठ खडा होता है जो फौजी लोगो की नजरो से उनके भयानक कृत्यो का दोष छिपाये रहता है। छिपाता ही नही, उनके कृत्यो को वीरता के कारनामे कह कर पुकारता है। इसी तरह राजनीतिक मुजरिम भी, अपने जैसे लोगो के बीच रहते हुए इसी प्रकार के लोकमत से घिरे रहते है। खतरे का सामना करते हुए, अपनी आजादी और जीवन तक को जोखिम मे डाल कर किये गये इनके कुकृत्य उन्ह बुरे तो दूर, गौरवपूर्ण तक प्रतीत होते थे। इसी मे नेख्लूदोव के लिए उस आश्चर्यजनक स्थिति की व्याख्या हो सकती थी कि ऐसे विनम्र स्वभाव लोग भी जो किसी को यातना पहुचाना तो दूर रहा, किसी जीव को दुखी देख तक नही सकते थे, चुपचाप हत्या करने पर तैयार हो जाते है। उनमे से लगभग सभी यह मानते थे कि किसी किसी मौके पर हत्या करना उचित और वैध होता है, जैसे आत्मरक्षा के लिए, या जनकल्याण के अपने महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए। यदि क्रातिकारी अपने उद्देश्य को और तदनरूप अपने आपको इतना महत्व देते थे तो इसका कारण यही था कि सरकार उनके कामो को महत्व देती थी, और उनके लिए उन्ह जालिमाना सजाए देती थी। जो यातनाए इन्ह पहुचाई जाती था, उन्ह सहन करने के लिए यह जरूरी था कि ये लोग अपने आपको असाधारण कोटि के माने।

जब नेख्लूदोव ने उन्हे ज्यादा नजदीक से देखा तो उसे विश्वास हो गया कि ये लोग न तो नीच है जैसा कि कुछ लोग इन्ह समझते हैं, और न ही ऐसे वीर हैं जैसे कि कुछ और लोगो की इनके बारे म धारणा है। ये लोग भी साधारण लोगो की ही तरह है जिनमे अच्छे, बुरे और मध्यम कोटि के, सभी तरह के व्यक्ति पाये जाते हैं। कुछ लोगो ने तो क्रान्ति का पथ इसलिए अपनाया कि वे सचमुच, बडी ईमानदारी से यह समझते थे कि मौजूदा बुराइयो के विरुद्ध सघर्ष करना उनका कर्तव्य है। परन्तु

का एक धनी जमींदार था। अभी वह बच्चा ही था जब उसके पिता का देहान्त हो गया। मा-बाप का वह इकलौता बेटा था। पिता की मृत्यु के बाद मा ने उसे पाल कर बड़ा किया। क्रिल्तसोव पढ़ाई म अच्छा था और पहले स्कूल मे और बाद म विश्वविद्यालय म, बड़ी सुगमता से वह जमात चढ़ता रहा। विश्वविद्यालय की परीक्षा म वह गणित म सभी छात्रो म पहले नम्बर पर आया। विश्वविद्यालय की ओर से उसे वजीफा भी दिया गया कि वह विदेश मे जा कर अपनी पढ़ाई जारी रखे। लेकिन वह बड़ी देर तक किसी निश्चय पर नही पहुच सका। उन दिनो वह एक लड़की स प्रेम करता था, और उससे विवाह करने और कृषि प्रबंध मे भाग लेने के सपने देखा करता था। वह हर काम मे हाथ डालना चाहता था, इसी लिए किसी एक काम को अपनाने का निश्चय नही कर सका। उन्ही दिनो उसके कुछ सहपाठियो ने उससे कुछ पैसे मागे। कहने लगे कि जन कल्याण के किसी काम के लिए जरूरत है। उसे मालूम था कि यह रुपया क्रान्तिकारी काम के लिए मागा जा रहा है, जिसम उस समय उसकी कोई रुचि नही थी। लेकिन उसने पैसे दे दिये, कुछ साथी होने के नाते, और कुछ दम्भ मे ताकि कोई यह न सोचे कि वह इन कामो के लिए पैसे देने से डरता है। बाद म, जिन लोगो ने पैसे लिये थे, वे पकड़े गये। उन्ही के पास से एक पुर्जा मिला जिससे अधिकारियो को पता चल गया कि पैसे क्रिल्तसोव ने दिये थे। उसे गिरफ्तार कर लिया गया, पहले उसे थाने मे ले गये और बाद मे जेलखाने म डाल दिया गया।

"जेल मे हमारे साथ कोई खास सख्ती नही बरती जाती थी," अपनी कहानी जारी रखते हुए क्रिल्तसोव ने कहा। वह घुटनो पर कोहनियां रखे, अपने सोने वाले ऊचे तख्ते पर बैठा था, छाती अन्दर को धसी हुई थी, और आखें बीमारी की उत्तेजना के कारण चमक रही थी। "हम एक दूसरे से बात कर सकते थे—न केवल दीवारो को खटखटा कर ही बल्कि अन्य तरीको से भी—बरामदो मे घूम फिर सकते थे, खाने पीने की चीजें और तम्बाकू एक दूसरे से बाट सकते थे, यहा तक कि शाम के वक्त मिल कर गाया भी करते थे। मेरी आवाज बड़ी सुरीली हुआ करती थी। मुझे यदि कोई चिन्ता थी तो अपनी मा की, वह मेरे कारण बेहद दुखी थी। यह न होता तो वहा सब कुछ ठीक चल रहा था, यहा तक कि वहा रहने मे मुझे मजा आ रहा था। यही पर मेरा परिचय

सुप्रसिद्ध पेत्रोव से तथा अन्य लोगो से हुआ। बाद मे पेत्रोव ने काच का एक टुकडा ले कर आत्महत्या कर ली थी। यह घटना किले मे घटी थी। परन्तु उस वक्त तक मैं क्रान्तिकारी नही बना था। मेरा परिचय अपने दो पडोसिया से भी हुआ जो मेरी ही कोठरी के नजदीक रहते थे। उन दोना को एक ही जुर्म मे पकडा गया था दोना के पास से पोलिश घोषणापत्र बरामद हुए थे। और दोना पर इस अपराध के लिए मुकद्दमा चलाया गया था कि रेलवे-स्टेशन की ओर जाते हुए उन्होने कानवाय से भाग निकलने की कोशिश की थी। उनमे से एक पोलैंड का रहने वाला था, जिसका नाम लोजीस्की था, और दूसरा यहूदी था उसका नाम रोजोव्स्की था। हा। यह रोजोव्स्की बच्चा ही था। कहा करता था कि मेरी उम्र सत्तरह बरस की है, लेकिन लगता पद्रह बरस का था। दुबला पतला सा लडका, छोटा सा कद, बडा फुर्तीला काली चमकती आख थी उसकी। और अधिकाश यहूदियो की तरह सगीत का बडा शौकीन था। अभी उसकी आवाज भारी होने लगी थी, लेकिन फिर भी वह बहुत अच्छा गाता था। जब उन पर मुकद्दमा चला तो मैंने दोना को अदालत मे लिये जाते हुए देखा। सुबह का वक्त था जब उन्हे ले जाया गया। शाम को वे लौट कर आये और आ कर कहने लगे कि उन्हे मौत की सजा दी गयी है। किसी को ख्याल नही था कि यह सजा मिलेगी। इतना मामूली सा तो उनका जुर्म था। यही न कि कानवाय से उन्होने भागने की कोशिश की थी। किसी को चोट तक उन्होने नही पहुचायी थी। और फिर रोजोव्स्की तो बिल्कुल बच्चा था। उसे फासी लगाना तो कितनी अस्वाभाविक सी बात लगती है। जेल मे हम सबने यही समझा कि उन्हे केवल डराने के लिए धमकी सी दी गयी है और यह सजा कभी भी पक्की नही की जायेगी। पहले तो हम बहुत उत्तेजित हुए थे लेकिन बाद मे हमने अपने को ढाढस दिया और चुप हो गये और जीवन पहले की सी गति से चलने लगा। हा। एक दिन शाम को चौकीदार मेरी कोठरी के दरवाजे के पास आया और बडी दबी भेद भरी आवाज मे कहने लगा कि बढई आ गये हैं और फासी का तख्ता तैयार कर रहे हैं। पहले तो उसकी बात मेरी समझ मे नही आयी। कौन सा फासी का तख्ता? पर चौकीदार इतना उत्तेजित था कि मैं शीघ्र ही समझ गया कि वह हमारे ही दो लडको के लिए होगा। मेरी इच्छा हुई कि दीवार खटखटा

का एक धनी जमीदार था। अभी वह बच्चा ही था जब उसके पिता का देहान्त हो गया। मा-बाप का वह इकलौता बेटा था। पिता की मत्यु के बाद मा न उसे पाल कर बडा किया। निरतसोव पढाई म अच्छा था और पहले स्कूल मे और बाद मे विश्वविद्यालय मे, बडी सुगमता स वह जमाते चढता रहा। विश्वविद्यालय की परीक्षा म वह गणित के सभी छात्रा म पहले नम्बर पर आया। विश्वविद्यालय की ओर से उसे वजीफा भी दिया गया कि वह विदेश मे जा कर अपनी पढाई जारी रखे। लेकिन वह बडी देर तक किसी निश्चय पर नही पहुच सका। उन दिना वह एक लडकी से प्रेम करता था, और उससे विवाह करने और कृषि प्रबध म भाग लेने के सपने देखा करता था। वह हर काम मे हाथ डालना चाहता था, इसी लिए किसी एक काम को अपनाने का निश्चय नही कर सका। उन्हा दिनो उसके कुछ सहपाठियो न उससे कुछ पैसे मागे। कहन लगे कि जन कल्याण के किसी काम के लिए जरूरत है। उसे मालूम था कि यह रुपया क्रान्तिकारी काम के लिए मागा जा रहा है, जिसम उस समय उसकी कोई रुचि नही थी। लेकिन उसने पैसे दे दिये, कुछ साथी होने के नाते, और कुछ दम्भ मे ताकि काई यह न साचे कि वह इन कामो के लिए पसे देने से डरता है। बाद मे, जिन लोगो ने पसे लिये थे, वे पकडे गय। उन्ही के पास से एक पुर्जा मिला जिससे अधिकारियो को पता चल गया कि पैसे निरतसोव ने दिये थे। उसे गिरफ्तार कर लिया गया, पहले उसे थाने मे ले गये और बाद मे जेलखाने म डाल दिया गया।

"जेल म हमारे साथ काई खास सख्ती नही बरती जाती थी," अपनी कहानी जारी रखते हुए निरतसोव ने कहा। वह घुटनो पर कोहनिया रखे, अपने सोने वाले ऊचे तख्ते पर बठा था, छाती अदर को धसी हुई थी, और आखे बीमारी की उत्तेजना के कारण चमक रही थी। "हम एक दूसर से बाते कर सकते थे—न केवल दीवारा को खटखटा कर ही बल्कि अन्य तरीको से भी—बरामदा मे घूम फिर सकत थे, खाने-पीने की चीजें और तम्बाकू एक दूसर से बाट सकते थे, यहा तक कि शाम के वक्त मिल कर गाया भी करते थे। मेरी आवाज बडी सुरीली हुआ करती थी। मुझे यदि कोई चिन्ता थी तो अपनी मा की, वह मर कारण बेहद दुखी थी। यह न हाता तो वहा सब कुछ ठीक चल रहा था, यहा तक कि वहा रहने मे मुझे मजा आ रहा था। यही पर मेरा परिचय

कर अपने साथियो को बता दू लेकिन मैं रुक गया, इस डर से कि वे दानो सुन लेगे। हमारे साथी भी चुप थे। जाहिर था कि खबर सब तक पहुच चुकी है। उस शाम बरामदे मे और सभी कोठरिया मे मौत का सा सन्नाटा था। न किसी ने दीवार खटखटायी, न कोई गीत गाया। दस बजे चौकीदार ने आ कर बताया कि मास्को से एक जल्लाद आ गया है। यह कह कर वह चला गया। मैं उसे वापस बुलाने लगा। सहसा मुझे राजोव्स्की की आवाज आयी, वह बरामदे की दूसरी ओर से मुझे पुकार कर कह रहा था—'क्या बात है? उसे क्यो बुला रहे हो?' जवाब म मैंने उसे कुछ कहा कि मेरे लिए तम्बाकू ला द, लेकिन जान पडता था जैसे वह भाप गया है, और वह पूछन लगा—'आज हम गा क्यो नही रहे? दीवारा पर खटखट क्यो नही करते?' मुझे याद नही मैंने उसे क्या कहा, और पीछे हट गया ताकि उससे बाते न करनी पडें। बडी भयानक रात थी वह। रात भर मेरे कान एक एक शब्द को सुनते रहे। सुबह होने जा रही थी, जब सहसा आवाजे आने लगी। दरवाजे खुलने लगे और कोई चला आ रहा था—एक नही, बहुत स आदमी आ रहे थे। मैं दरवाजे के छेद के पास जा पहुचा और आख लगा कर बाहर देखन लगा। बरामदे म एक लैम्प जल रहा था। पहले इन्स्पेक्टर आया। गठीले बदन का आदमी था और साधारणतया बडा दृढ और आत्मविश्वास स भरा लगता था। लेकिन आज उसका चेहरा बेहद पीला पड गया था, आखे नीची किये हुए था, ऐसा लगता था जैसे डरा हुआ हो। उसके पीछे पीछे उसका सहायक आया, उसका चेहरा उतरा हुआ था लेकिन उस पर दृढता थी। और सबके पीछे पीछे फौजी सिपाही थे। मेरे दरवाजे के पास से हो कर व साथ वाली कोठरी के सामने खडे हो गय। फिर मैंने सुना, सहायक इन्स्पेक्टर कह रहा था—'लोजोव्स्की उठो और साफ कपडे पहन कर तैयार हो जाओ।' उसकी आवाज अजीब सी हो रही थी। इसके बाद दरवाजा चरचरा कर खुलने की आवाज आयी। वे उसकी कोठरी के अन्दर चले गये। फिर लाजोव्स्की व कदमो की आवाज आयी, वह बरामदे के दूसरी ओर जा रहा था। मैं केवल इन्स्पेक्टर को देख पा रहा था। उसका चेहरा पीला हो रहा था, और वह कभी अपने कोट के बटन खोलता कभी उन्हे बन्द करता, और कधे बिचकाता। हा। वह फिर रास्ते म से हट गया मानो डर गया हो।

वह लोजीन्स्की के रास्ते मे से हट गया था, जो मेरे दरवाजे के सामने आ गया था। बडा खूबसूरत युवक था, वैसा ही जसे पोलैंड के लाग होते है, चौडा, खला माथा, सिर पर घुघराले बाल, और सुदर नीली आखें। खिला हुआ चेहरा, इतना ताज़ा और स्वस्थ! वह ऐन मेरे दरवाज़े के छेद के सामने खडा था, इसलिए मुझे उसका सारा का सारा चेहरा नजर आ रहा था। पीला जद चेहरा, पतला और भयानक। 'त्रिनत्सोव, क्या तुम्हारे पास सिगरेट है?' मैं उसे सिगरेट देना चाहता था लेकिन सहायक इन्स्पेक्टर ने झट से अपना सिगरेट-केस निकाल कर उसके सामने बढा दिया। उसने एक सिगरेट लिया, फिर सहायक ने दियासलाई जलाई। लोज़ीन्स्की सिगरेट सुलगा कर कश लेने लगा। मुझे ऐसा लगा जैसे वह कुछ सोचने लगा है। फिर सहसा वह बोलने लगा, मानो उसे कुछ याद आ गया हो—'यह जुल्म है, अन्याय है। मैंने कोई जुर्म नही किया। मैंने ' उसके गोरे गोरे तरुण गले म कोई चीज़ कापती हुई मुझे नजर आयी, और मैं उस पर से अपनी आखें नही हटा सका। फिर वह चुप हो गया। हा। उसी वक्त मैंने सुना कि रोजोव्स्की चिल्लाने लगा है। उसकी आवाज़ ऊची और यहूदियो जैसी थी। लोज़ीन्स्की ने सिगरेट फेंक दिया और दरवाजे के सामने से हट गया। अब वहा पर, मेरे छेद के सामने राजोव्स्की आया। बच्चा का सा उसका चेहरा लाल हो रहा था और नमी से तर था और स्वच्छ काली आखें चमक रही थी। उसने भी धुले हुए कपडे पहन रखे थे। पतलून बहुत चौडी थी जिसे वह बार बार खीच कर ऊपर उठाता। सिर से पाव तक उसका शरीर काप रहा था। उसका चेहरा कितना दयनीय लग रहा था। अपना मुह मेरे छेद के पास ले जा कर बोला—'त्रिनत्सोव, यह ठीक है न कि डाक्टर ने मुझे खासी की दवाई लिख कर दी है? मेरी तबीयत अच्छी नही। मुझे कुछ देर और दवाई पीने की जरूरत है।' किसी ने कोई जवाब नही दिया, और वह प्रश्नसूचक नेत्रो से कभी मेरी ओर, कभी इन्स्पेक्टर की ओर देखने लगा। उसके इस वाक्य का मतलब कभी भी मेरी समझ मे नही आया। हा। सहसा इन्स्पेक्टर ने कठोर मुद्रा बनायी, और फिर पहले सी चीखती आवाज़ म बोला—'यह क्या मजाक है? चलो।' जान पडता था जैसे राजोव्स्की को कुछ भी मालूम नही था कि उसके साथ क्या होने वाला है। बरामदे म वह सबसे आगे आगे तेज़ तेज़ कदम रखते हुए जाने लगा, यहा तक

कि भागने लगा। पर फिर वह पीछे हट गया और मुझे उसके चीखने और चिल्लाने की आवाज़ आने लगी। फिर बहुत से लोगों के कदमों की आवाज और भीड़ का सा शोर सुनाई दिया। इस पर उसकी चीखोपुकार और रोना। धीरे धीरे आवाज़ दूर होने लगी, और अन्त में दरवाज़ा बन्द होने की आवाज आयी और सब चुप हो गया हां। दोनों को फांसी पर चढ़ा दिया गया। दोनों को रस्सी में गला घोंट दिया गया था। एक चौकीदार ने—यह कोई दूसरा चौकीदार था—यह सारा काण्ड देखा। उसने मुझे बताया कि लोज़ीन्स्की ने कोई प्रतिरोध नहीं किया, लेकिन रोज़ोव्स्की बड़ी देर तक संघर्ष करता रहा, यहां तक कि उन्हें उसे घसीट कर फांसी के तख्ते पर चढ़ाना पड़ा और ज़बरदस्ती उसका सिर फन्दे में डालना पड़ा। हां। यह चौकीदार कुछ कुछ बेवकूफ था। कहने लगा—'जनाब, मुझे तो बताया गया था कि वह बड़ा भयानक नज़ारा होगा, लेकिन वह तो बिल्कुल भयानक नहीं था। जब उन्हें फांसी पर लटका दिया गया तो, सिर्फ दो बार उन्होंने कन्धे बिचकाये—इस तरह—बस।' उसने मुझे नकल उतार कर दिखाया कि किस भांति उनके कन्धे छटपटाये थे। 'फिर जल्लाद ने रस्सी को थोड़ा सा खींचा ताकि फन्दा और कस जाय, और बस, खेल खत्म हो गया, इसके बाद वे नहीं हिले-डुले।'"

और क्रिलत्सोव ने चौकीदार के शब्दों को दोहरा कर कहा—"बिल्कुल भयानक नहीं था।" और मुस्कराने की कोशिश की लेकिन फफक फफक कर रोने लगा। इसके बाद बड़ी देर तक वह चुप बैठा रहा, उसके लिए सांस लेना कठिन हो रहा था। बार बार उसे रुलाई आ जाती जिसे वह दबाने की चेष्टा करता।

"उस वक्त से मैं क्रान्तिकारी बना, हां," जब वह कुछ शान्त हुआ तो उसने कहा। उसके बाद कुछेक शब्दों में ही उसने अपनी कहानी समाप्त कर दी।

वह नरोदवादी पार्टी का सदस्य था, और उपद्रवकारी दल का मुखिया तक था, जिसका काम आतंक फैलाना था ताकि सरकार अपने आप अपनी सत्ता जनता के हवाले कर दे। इसी उद्देश्य से सम्बन्धित काम के सिलसिले में वह पीटर्सबर्ग, कीयेव, ओदेस्सा, तथा विदेश में घूमा करता था, और जहां जाता कामयाब होता था। एक आदमी ने, जिस पर उसे पूरा भरोसा था, उसके साथ दगा किया। उसे गिरफ्तार कर लिया गया, फिर

मुकद्दमा चला और दो साल तक जेल मे रखे जाने के बाद उसे फासी की सजा दी गई। लेकिन बाद मे सजा कम कर दी गई और फासी की जगह उसे उम्र भर कडी मशक्कत की सजा दे दी गयी।

जेल मे ही उसे तपेदिक का रोग हो गया। जिन स्थितियो मे वह अब रह रहा था इनमे वह छ महीने से अधिक नही जी पायेगा। यह वह जानता था लेकिन उसे अपने किये पर पछतावा नही था। वह कहता कि अगर मुझे फिर इन्सान का जीवन मिले तो मैं उसे उन कारणो का नाश करने मे लगा दूगा जिनसे ऐसी ऐसी चीजे पैदा होती है जिन्हे मैंने अपनी आखो से देखा है।

इस आदमी की कहानी से तथा उसके साथ घनिष्ठता होने पर, नेख्लूदोव को बहुत सी बाता का स्पष्टीकरण हुआ जिन्ह वह पहले ठीक तरह नही समझ पाया था।

७

जिस रोज एक पडाव पर बच्चे वाली घटना हुई थी और कॉनवाय अफसर ने कैदियो से बुरा भला कहा था, उस रोज़ नेख्लूदोव ने एक सराय मे रात बितायी और प्रात देर से उठा। उठने के बाद वह बडी देर तक चिट्ठिया लिखता रहा, इस ख्याल से कि जब आगे किसी बडे शहर मे पहुचेगा तो वहा उन्ह डाक म डाल देगा। इस कारण वह सराय म से काफी देर से रवाना हुआ और उस रोज़ वह रास्ते मे ही कैदिया के कारवा को नही पकड सका, बल्कि अगले पडाव पर उस वक्त पहुचा जब शाम पड चुकी थी और अधेरा होने लगा था।

वह एक सराय मे ठहरा जिसकी मालकिन बेहद मोटी गोरी गदन वाली अधेड उम्र की भरी-पूरी औरत थी। नख्लूदोव ने अपने कपडे सुखाये और चाय पीने के लिए एक कमरे मे गया। कमरा साफ-सुथरा और बहुत सी तस्वीरो और देव प्रतिमाओ से सजा था। चाय पीने के बाद वह जल्दी से निकल कर बाहर आ गया ताकि अफसर से मिल कर कात्यूशा से भेंट करने की इजाज़त ले सके।

पिछले छ पडावा पर उस कात्यूशा से भेंट करने की इजाजत नही मिली थी। हालाकि कई बार अफसर बदलते रहे थे फिर भी किसी अफसर ने नेख्लूदोव को पडाव क अन्दर घुसने नही दिया। इस तरह एक सप्ताह

से भी अधिक समय से वह कात्यूशा से नहीं मिल पाया था। इस कठोरता का कारण यह था कि जेलखाने का कोई बड़ा अफसर उस रास्ते से गुजरने वाला था। अब वह अफसर, बिना टोली की ओर आख तक उठाये, उस रास्ते से चला जा चुका था, इसलिए नेख्लूदोव को आस बधन लगी थी कि जिस अफसर ने आज प्रात टोली की कमान अपने हाथ म ली है वह उसे कैदियों से मिलने देगा, जिस तरह पहले अफसर मिलने दिया करते थे।

पडाव गाव के दूसरे सिरे पर था। सराय की मालकिन ने अपनी घोडा गाडी नेख्लूदोव को पेश कर दी कि उसमे बैठ कर वह पडाव तक चला जाय, लेकिन नेख्लूदोव को पैदल जाना अधिक पसन्द था। एक हट्टा कट्टा, चौडे कन्धो वाला मजदूर उसे रास्ता दिखाने के लिए साथ हो लिया। मजदूर ने खूब ऊचे ऊचे घुटना तक के बूट पहन रखे थे, जिन्हे उसने हाल ही म तारकोल से रोगन किया था, जिस कारण उनसे तारकोल की तीखी गध आ रही थी। गहरी धुध छायी थी, जिस कारण आसमान नजर नही आ रहा था। अधेरा इतना था कि यदि वह युवा मजदूर तीन कदम भी आगे निकल जाता तो वह नजर नही आता था, केवल उसी वक्त नजर आता था जब किसी खिडकी मे से रोशनी उस पर पडती। लेकिन उसके बोझल बूटो की आवाज बराबर आ रही थी जो गहरे, चिपचिपे कीच मे छप छप करते आगे बढ रहे थे।

गिरजे के सामने खुला मैदान था। मैदान लाघ कर नेख्लूदोव लम्बी सडक पर आ गया। सडक के दोनो तरफ मकानो की खिडकिया थी जिनकी रोशनी अधेरे मे खूब चमक रही थी। अपने पथ दर्शक के पीछे पीछे चलता हुआ नेख्लूदोव गाव के बाहर जा पहुचा, जहा पर घुप्प अधेरा था। परन्तु यहा पर भी पडाव घर के सामने लैम्प लगे थे जिनकी रोशनी धुध मे से छन छन कर आ रही थी। ज्यो ज्यो वे नजदीक जाने लगे, रोशनी के लाल लाल पुज आकार म बडे होने लगे। आखिर पडाव घर की बाड के डण्डे, बाहर पहरे पर इधर-उधर टहलता हुआ सन्तरी, एक खम्भा जिस पर काली-सफेद धारिया पुती थी, और सन्तरी की चौकी नजर आने लगे। जब वे नजदीक पहुचे तो सन्तरी ने हमेशा की तरह आवाज लगाई—"कौन है?" फिर जब देखा कि आगन्तुक बिल्कुल अजनबी हैं तो इतना कडाई से पेश आया कि इन्हे बाड के नजदीक तक खडा हो

कर इन्तज़ार करने की इजाजत नही देता था। पर इस कडाई का नेम्लूदाव के गाइड पर कोई असर नही हुआ।

"क्या बात है यार, इतनी सख्ती क्या करते हो? तुम जा कर अपने अफसर को बुला लाओ, हम यहा खडे इन्तज़ार करते है।"

सन्तरी ने कोई जवाब नही दिया, परन्तु फाटक मे से चिल्ला कर अन्दर कुछ कहा और फिर इस चौडे कन्धो वाले युवा मजदूर की ओर घूर घूर कर देखने लगा जो अब हाथ मे लकडी की एक खपची लिये लैम्प की रोशनी मे नेख्लदोव के बूटो पर से कीच साफ करने लगा था। बाड के पीछे से औरतो और मर्दो की आवाजे सुनाई दे रही थी। लगभग तीन मिनट के बाद किसी चीज़ के खडखडाने की आवाज़ आयी, फाटक खुला, और एक सॉर्जेंट, कन्धे पर अपना भारी कोट डाले अन्धेरे मे से निकल कर लैम्प की रोशनी मे आया और पूछने लगा कि क्या काम है। सॉर्जेंट इतनी कठोरता से पेश नही आया जितनी कठोरता से सन्तरी पेश आया था, लेकिन वह सवाल पर सवाल पूछने लगा। तुम कौन हो, अफसर से क्यो मिलना चाहते हो, तुम्हे क्या काम है, इत्यादि। ज़ाहिर था कि उसे यहा से बख्शीश पाने की उम्मीद होने लगी थी और वह इस मौके को हाथ से नही जाने देना चाहता था। नेख्लूदोव ने कहा कि वह एक खास काम से आया है और सॉर्जेंट को ज़रूर खुश कर देगा, और क्या सार्जेंट मेहरबानी कर के अफसर के पास उसका एक पुर्ज़ा ले जा सकता है? सॉर्जेंट ने पुर्ज़ा हाथ मे लिया, सिर हिलाया और वहा से चला गया।

कुछ देर बाद फाटक मे फिर खडखड हुई और स्त्रिया टोकरिया, डिब्बे, जग, बोरे इत्यादि उठाए बाहर निकली। सभी ऊची आवाज मे, अपनी विशेष साइबेरियाई बोली मे बतिया रही थी। किसी ने भी देहातिया-किसानो की पोशाक नही पहन रखी थी, सभी शहरियो के से कपडे पहने थी जाकेट और क्लोक जिनके नीचे फर लगी थी। उन्होने अपने घाघर काफी उपर तक मोड रखे थे, और सिरो पर शाले बाध रखी थी। लैम्प की रोशनी मे वे नेम्लूदोव और उसके गाइड को बडे गौर से देखती रही। चौडे कन्धो वाले मजदूर को देख कर एक औरत तो प्रत्यक्षत बडी खुश हुई और बडे दुलार से उसे खालिस साइबेरियाई ढग से गालिया देने लगी—

"अरे कलमुहे, यहा क्या कर रहा है? शैतान उठा ले जाये तुझे!" औरत ने मजदूर को सबोधित कर के कहा।

"मैं इस मुसाफिर को रास्ता दिखाने आया हू," युवक ने जवाब दिया। "और तुम यहा क्या लायी थी?"

"दूध मक्खन। कल सुबह और लाने को कहा है।"

"और रात रहने के लिए नही कहा? क्या?" युवक ने पूछा।

"तुम जाओ जहन्नुम मे, झूठे कही के!" उसने हस कर कहा। "पर हमारे साथ गाव तक तो चलो।"

जवाब मे गाइड ने कोई ऐसी बात कही जिस पर न केवल सभी औरते बल्कि सन्तरी भी हसने लगा। फिर नेख्लूदोव की ओर घूम कर बोला—

"अब तो अपने आप रास्ता ढूढ लोगे न? गुम तो नही हो जाओगे?"

"नही, मैं ढूढ लूगा।"

"गिरजे से आगे जा कर, दोमजिला मकान के साथ वाला घर है। और लो, यह मेरी लाठी ले लो।" कहते हुए उसने नेख्लूदोव के हाथ मे वह लाठी दे दी जो वह उठाये हुए था। लाठी उसके कद से भी लम्बी थी। फिर अपने बडे बडे बूटो से कीचड मे से जाते हुए, स्त्रिया के साथ अधेरे मे खो गया।

धुध मे से अब भी उसकी आवाज आ रही थी जो औरतो की आवाजो मे घुल मिल गई थी। फाटक खडखडा कर खुला और सॉर्जेंट निकल कर नेख्लूदोव के पास आया और उसे अफसर के पास ले गया।

८

पडाव घर साइबेरिया की सडक पर बने सभी पडाव घरो जसा था नुकीले लट्ठो की बाड से घिरे आगन म तीन एकमजिला मकान थे। सबसे बडे मकान की खिडकिया पर सीखचे लगे थे, यहा कदी रखे जाते थ। दूसरा मकान कॉनवाय के सिपाहिया के लिए था और तीसर म दफ्तर था। इसी म कॉनवाय का अफसर भी रहता था। तीना मकाना की खिडकियो म रोशनी थी, ऐसी रोशनी जिसे देख कर लगता है कि इन

घरो के अन्दर आराम और आसाइश वसती होगी। यहा पर यह मिथ्या भ्रम विशेष रूप से अधिक होता था। मकानो के बाहर सायबानो मे लैम्प जल रहे थे, इनके अतिरिक्त पाच लैम्प दीवारो के साथ लगे थे जिनसे सारे आगन म काफी रोशनी हो रही थी। मैदान के बीचाबीच एक लम्बा तख्ता रखा था जिस पर से चलते हुए सार्जेंट, नेख्लूदोव को सबसे छोटे मकान की ओर ले गया। मकान के बाहर सायबान की तीन सीढिया चढ कर सार्जेंट रुक गया और अदब से नेख्लूदोव को डयोढी के अन्दर चलने को कहा जिसमे एक छोटा सा लैम्प जल रहा था। डयोढी से धुए की गध आ रही थी। एक सिपाही, गाढे की कमीज, और काले रग की पतलून पहने और नकटाई लगाय, फूकें मार मार कर समोवार सुलगा रहा था। उसने एक पाव म टॉप-बूट चढा रखा था, और दूसरे बूट से भाथी का काम ले रहा था। नेख्लूदोव पर आख पडते ही सिपाही समोवार को छोड कर आगे बढ आया, नेख्लूदोव का चमडे का ओवरकोट उतरवाया, और उसके बाद साथ वाले कमरे मे चला गया।

"वह आ गया है हुजूर।'

"अन्दर भेज दो,' गुस्से से भरी आवाज आयी।

"इस दरवाज़े मे से अन्दर चले जाइये," सिपाही ने कहा और फिर समोवार सुलगाने म लग गया।

साथ वाले कमरे म एक लैम्प छत पर से लटक रहा था। नीचे खाने का मज़ रखा था जिसके सामने, आस्ट्रियाई फैशन की जाकेट पहने एक अफसर बैठा था। मेज़ पर भोजन की बची-खुची चीज़े और दो बोतले रखी थी। अफसर का चेहरा बहुत लाल हो रहा था और मूछें सुनहरी रग की थी। आस्ट्रियाई जॉकेट उसकी चौडी छाती और चौडे कधो पर खूब चुस्त बठी थी। हवा म तम्बाकू तथा किसी सस्ते इत्र की तीखी गध फैली थी। कमरा खूब गरम हो रहा था। नेख्लूदोव को देख कर अफसर उठ खडा हुआ और व्यग और सशय की दृष्टि से इस नवागन्तुक की ओर देखते हुए बोला—

"कहिये, क्या काम है?' और बिना जवाब का इन्तज़ार किये, खुले दरवाज़े म स चिल्ला कर बोला—"बेर्नोव! समोवार को क्या हो गया, लाते मरते क्यो नही हो?"

"अभी लाया हुजूर।'

"'अभी' का अच्छा। वहा तू कर क्या रहा है?" अफसर चिल्लाया और उसकी आखें गुस्से से चमकने लगी।

"आया हुजूर!" सिपाही ने पुकार कर कहा और समावार अन्दर ले आया।

सिपाही ने समावार मेज पर रखा और बाहर जाने लगा। अफसर की छोटी छोटी क्रूर आखें सिपाही की पीठ पर गडी थी, मानो उस बेचारे के लिए निशाना ढूढ रही हो। सारा वक्त नेख्लूदोव खडा रहा। अफसर एक चौरस शक्ल की ब्राडी से भरी बोतल उठा लाया, फिर अपने सफरी थैले मे से कुछ एल्बर्ट बिस्कुट निकाले और चाय बनाने लगा। सब चीजें मेज पर रखने के बाद वह नेख्लूदोव की ओर घूम कर बोला—

"कहिये, मैं आप की क्या खिदमत कर सकता हू?"

"मैं एक कैदी से मिलने की इजाजत चाहता हू," नेख्लूदोव ने खडे खडे जवाब दिया।

"क्या कोई राजनीतिक कैदी है? उसकी तो कानून इजाजत नही देता,' अफसर ने कहा।

"जिस कैदी औरत का मैं जिक्र कर रहा हू वह राजनीतिक कैदी नही है" नेख्लूदोव ने कहा।

"हा, पर आप तशरीफ तो रखिये," अफसर बोला।

नेख्लूदोव बैठ गया।

"वह राजनीतिक कैदी तो नही है," उसने फिर कहा, "पर मेरी दरख्वास्त पर बडे अफसरो ने उसे राजनीतिक कैदियो के साथ रहने की इजाजत दे दी थी।"

"हा हा, मैं जानता हू," अफसर ने बात काटते हुए कहा। "छोटी सी, काले बालो वाली। हा। इसका तो इन्तज़ाम हो सकता है। आप सिगरेट पीजिये।"

अफसर ने सिगरेटो का डिब्बा नेख्लूदोव की ओर बढाया, फिर दो गिलासो मे चाय ढाल कर एक गिलास नेख्लूदोव के सामने रखा।

"शौक फरमाइये।"

"शुक्रिया मैं चाहता हू कि "

"अभी बहुत वक्त है, रात लम्बी है। मैं अभी हुक्म दिये देता हूँ कि उसे रात को आपके पास भेज दिया जाय।"

"क्या मैं उसी के पास जा कर उसे नही मिल सक्ता ? उसे मेरे पास भेजने की क्या जरूरत है ?" नख्लूदोव ने कहा।

"जहा राजनीतिक कैदी रहते है ? यह कानून के खिलाफ है।"

"पहले तो मुझे कई बार इजाजत दी जाती रही है। अगर मेरा इरादा राजनीतिक कैदियो को कुछ देने का हो तो वह तो मैं उसके जरिये भेज सकता हू।'

"नही नही, उसकी तलाशी ली जायेगी," अफसर ने कहा और बडे अप्रिय ढग से हसने लगा।

"तो आप मेरी ही तलाशी क्या न ले ले।"

"चलो, छोडो, इसके बिना ही चला लेंगे, अफसर ने कहा और बोतल खोलकर नेख्लूदोव का गिलास भरना चाहा। "लीजिये! नही ? जैसी आपकी इच्छा। यहा साइबेरिया मे रहते हुए अगर कोई पढा लिखा आदमी मिल जाय तो हम शुक्र गुजारते हैं। हमारा काम बडा क्लेश से भरा है, आप तो जानते है, और जिस आराम से रहने की आदत हो उसके लिए बडी कठिनाई होती है। लोग हमारे बारे मे सोचते हैं कि कानवाय अफसर बडे अभद्र और अशिक्षित लोग होते हैं। किसी को यह याद नही रहता कि हमारा जन्म इससे कही बेहतर स्थिति के लिए हुआ है।"

नेख्लूदोव को यह अफसर अपने लाल लाल चेहरे, कपडो पर छिडके इत्र, अगुली मे पहनी अगूठी और विशेषकर उसकी भोंडी हसी के कारण बहुत बुरा लगा। परन्तु आज भी उसकी मानसिक स्थिति वैसी ही गभीर और दत्तचित्त बनी थी जैसी कि इस सारी यात्रा मे रही थी, जिस कारण वह किसी मनुष्य के साथ घृणा तथा अवमान के साथ पेश नही आ सकता था। इसके विपरीत वह यह महसूस करता था कि सबके साथ "सम्पूर्णता" से बातचीत करने की जरूरत है। मनुष्यो के साथ अपने इस व्यवहार को वह 'सम्पूर्णता' कह कर व्यक्त करता था। अफसर की बात सुन कर वह मन ही मन इस नतीजे पर पहुचा कि इस अफसर को अपने अधीन रखे गये कैदियो को दुख देना बुरा लगता है।

"मैं सोचता हू कि इस स्थिति मे भी यदि आप दुखी लोगो की सहायता करे तो आपके मन को सन्तोष मिलेगा," नेख्लूदोव ने गभीरता से कहा।

"उन्हे दुख क्या है ? आप इन लोगो को जानते नही है।"

"ये और लोगा से भिन्न तो नही हैं," नेख्लूदोव ने कहा, "ये भी और लोगा जैसे ही है, और इनमे से कुछ ता निर्दोष है।"

"बेशक, इनमे तरह तरह के लोग शामिल है, और यह स्वाभाविक ही है कि इनके प्रति मन म दया उठती है। हममे से कुछ अफसर जरूर उनके साथ कडाई से पेश आते है, पर मैं, जहा भी मुमकिन हो, उनका बोझ हल्का करने की कोशिश करता हू। मैं तो खुद कष्ट उठा लेता हू ताकि उन्हे कष्ट न पहुचे। और अफसर हैं कि जरा कुछ हुआ नही, फौरन कानून चलाते हैं, ज्यादा हुआ तो—शूट, पर एक मैं हू, मुझे तरस आता है इन पर। आप और चाय लीजिये," उसने कहा और नेख्लूदोव के गिलास म और चाय डाली। "और यह औरत कौन है जिससे आप मिलना चाहते है?" उसने पूछा।

"यह एक बदनसीब औरत है जो भटकती हुई चकले म जा पहुची थी। वहा इस पर जहर देने का झूठा इलजाम लगाया गया। लेकिन यह बडी अच्छी औरत है," नेख्लूदोव ने जवाब दिया।

अफसर ने सिर हिलाया।

"हा, ऐसी बाते हो जाती है। मैं आपको एक औरत का किस्सा सुना सकता हू जो कज़ान म रहा करती थी। उसका नाम एम्मा था। वह पैदा तो हगरी मे हुई थी लेकिन उसकी आखे बिल्कुल ईरानी थी," वह कहता गया। उस औरत को याद कर के उसके होठो पर मुस्कराहट आ गयी जिसे वह रोक नही सका। "उसमे इतना बाकापन था कि जैसे कोई काउटेस हो "

नेख्लूदोव ने अफसर की बात बीच मे ही काट दी और वार्तालाप का पहले विषय पर ले आया।

"मैं सोचता हू कि जितनी देर ये लोग आपके अधीन हैं, आप इन्हे जरूर सुख पहुचा सकते है, और मुझे विश्वास है कि ऐसा करने म आपको बडी प्रसन्नता होगी," नेख्लूदोव ने एक एक शब्द बडी स्पष्टता से बोलते हुए कहा, मानो किसी विदेशी से या किसी बच्चे से बात कर रहा हो।

अफसर की आखें चमक रही थी, उसने बडी बेताबी से नेख्लूदोव की ओर देखा, कि कब वह यह क़िस्सा समाप्त करे और वह उस हगरी की लडकी की बात सुना सके जिसकी आखें ईरानियो जैसी थी। जान पडता

था कि उस औरत का मुखडा बडा सजीव हो कर उसकी आखो के सामने घूम रहा था और उसका सारा ध्यान उसी पर लगा हुआ था।

"हा, यह सब तो आप ठीक कहते हैं," वह बोला, "और मुझे सचमुच उन पर दया आती है। पर मैं आपको इस एम्मा का किस्सा सुनाना चाहता हू। आप जानते हैं उसने क्या किया "

"मुझे इसमे कोई दिलचस्पी नही," नेख्लूदोव ने कहा, "और मैं यह भी साफ साफ आपको बता दू कि मैं ख ुद पहले किसी दूसरी तरह का आदमी रहा हू लेकिन अब मुझे स्त्रिया के साथ इस तरह का सम्बन्ध रखने से घृणा है।"

अफसर ने इस तरह नेख्लूदोव की ओर देखा मानो डर गया हो।

"आप और चाय पीजिये," उसने कहा।

"नही, शुक्रिया।"

"बेर्नोव!" अफसर ने आवाज़ लगाई, "साहिब को वाकूलोव के पास ले जाओ। कहो कि इन्हे राजनीतिक कैदिया के अलग कमरे मे ले जाय। वहा यह जाच के वक्त तक बैठ सकते हैं।"

६

नेख्लूदोव अदली के साथ हो लिया और बाहर मैदान मे आ गया। लैम्पो की लाल लाल रोशनी के कारण मैदान मे कुछ कुछ उजाला था।

"कहा जा रहे हो?" कॉनवाय के एक सिपाही ने अदली से पूछा।

"पाच नम्बर वाले अलग कमरे मे।"

"इस तरफ से नही जा सकोगे। वहा ताला चढा है। पीछे से घूम कर जाओ।"

"क्या?"

"बडे साब गाव चले गये है और चाभी साथ लेते गये हैं।"

"तो आइये, इस तरफ से जायेंगे।"

अदली नेख्लूदोव को दूसरी तरफ से ले गया। कुछेक तख्ता पर से चलते हुए ये लोग एक दूसरे फाटक के सामने जा पहुचे। अभी वे आगन मे ही थे कि नेख्लूदोव को अन्दर के शोर-गुल की आवाज़ें सुनाई देने लगी। ऐसा लग रहा था जैसे मधुमक्खियो के छत्ते म मधुमक्खिया प्रजनन की

तैयारी कर रही हो। पर जब वे नज़दीक पहुचे, और दरवाज़ा खुला तो यह शोर और भी ऊचा हो गया और उसमे चिल्लाने, गालिया बकने और हसने की साफ आवाज़े आने लगी। नेख्लूदोव के कान म बेडिया खनखन की आवाज आयी और उसी बदबू की लपटें आयी जिसस वह भली भाति परिचित था।

सदा की तरह यह शोर, बेडियो की खनखन, और घुटन भरी बदबू नेख्लूदोव को व्याकुल करने लगी। उसके मन मे पहले तो नैतिक घिन सी उठी और फिर सचमुच उबकाई आने लगी। दोनो भावनाए मिल कर एक दूसरी को तीव्रतर बनाने लगी।

अन्दर प्रवेश करते ही जिस चीज़ पर सबसे पहले नेख्लूदोव की नज़र गयी वह एक बडा सा, बदबूदार टब था, जिसके किनारे पर एक औरत बैठी थी, और उसके सामने एक आदमी खडा था। आदमी ने अपने मुडे हुए सिर पर गोल चपटी टोपी टेढी कर के पहन रखी थी। दोनो किसी विषय पर बात कर रहे थे। नेख्लूदोव को देख कर आदमी ने आख मारी और बोला—

"खुद ज़ार भी इस पानी को बहने से नही रोक सकता।"

पर औरत ने फौरन अपने लबादे के किनारो को नीचे खीच लिया और शरमिन्दा सी हो गयी।

अन्दर दाखिल होने वाले दरवाज़े से शुरू हो कर एक बरामदा सीधा चला गया था जिसमे बहुत से दरवाज़े खुलते थे। पहला कमरा परिवारो के लिए था। उसके आगे अनब्याहे लोगो का, और आखिर म दो छोटे छोटे कमरे राजनीतिक कैदियो के लिए अलग रख दिये गये थे।

इस मकान मे एक सौ पचास कैदियो के लिए स्थान था लेकिन इस समय चार सौ पचास कैदी भरे पडे थे। मकान इस कदर ठसाठस भरा था कि सभी कैदियो के लिए कमरो मे जगह नही थी, कई कैदी गलियारे मे पडे थे। कुछ फर्श पर लेटे या बैठे थे, कुछेक हाथो मे चायदानिया उठाये उबलता पानी लेने जा रहे थे या ले कर आ रह थे। लौटने वाले आदमियो मे तारास भी था। वह चलता हुआ नेख्लूदोव के पास आ पहुचा और बडे स्नेह से अभिवादन किया। तारास का सद्भावनापूर्ण चेहरा इस समय काले काले चोट के निशानो से विकृत हो रहा था। निशान तारास के नाक पर और आख के नीचे थे।

"तुम्हे क्या हुआ है?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"एक झगड़ा हो गया था," तारास ने मुस्करा कर कहा।

"ये लोग हमेशा लड़ते रहते है," कॉनवाय का सिपाही बोला।

"सारा झगड़ा एक औरत पर हुआ," एक कैदी ने कहा जो तारास के पीछे पीछे चला आया था, "अन्धे फेदका के साथ इसकी लड़ाई हुई है।"

"फेदास्या कैसी है?"

"ठीक है। मैं उसी की चाय के लिए पानी ले जा रहा हू," तारास ने जवाब दिया और उस कमरे के अन्दर चला गया जिसमे कैदी अपने परिवारो के साथ रहते थे।

नेख्लूदोव ने दरवाजे म से अन्दर झाक कर देखा। कमरा मर्दो और औरतो से ठसाठस भरा था। उनमे से कुछेक या तो सोने वाले तख्तो के ऊपर या उनके नीचे लेटे हुए थे। कमरे मे गीले कपडे सूखने के लिए डाले हुए थे जिस कारण वहा भाप ही भाप फैली था। औरतो की चटर-पटर रुकने म न आती थी। अगला दरवाजा अनव्याहे लोगो के कमरे म खुलता था। यहा पहले कमरे मे भी ज्यादा भीड थी, यहा तक कि दरवाजे के बीच और गलियारे मे भी वे रास्ता रोके बैठे थे, और गीले कपडे पहने, ऊची आवाज म बहस कर रहे थे, जैसे किसी निश्चय पर पहुचने की कोशिश कर रहे हो या कुछ न कुछ काम कर रहे थे। कॉनवाय के सार्जेंट ने बताया कि जिस कैदी को रसद खरीदने का काम सौपा गया था वह यहा बैठा रसद के पैसो मे से एक जुएबाज का उधार चुका रहा है (जुएबाज ने कुछेक से पैसे जीत रखे थे या कुछेक को उधार दे रखा था), और उससे ताश के पत्तो से बने छोटे छोटे टिकट ले रहा है। जब उनकी नजर कॉनवाय के सार्जेंट तथा एक कुलीन पर पडी तो जो कैदी सबसे नजदीक बैठे थे वे चुप हो गये और द्वेष भरी नजरो से उनकी ओर देखने लगे। इन्ही मे नेख्लूदोव को मुजरिम फ्योदोरोव नजर आया जो साइबेरिया मे बडी मशक्कत पर जा रहा था। फ्योदोरोव हर वक्त अपने साथ एक मैले-कुचैले गोरे नौजवान को साथ रखता था जिसका मुह सूजा रहता और भौहे घनी रहती थी, और एक और मुजरिम को भी, जिसे देख कर नेख्लूदोव का सदा घिन उठती थी। इस आदमी की नाक कटा हुआ और मुह पर चेचक के दाग थे। कैदियो म भी यह आदमी बदनाम था, रहा

जाता था कि एक बार जब वह भागने की कोशिश कर रहा था तो इसने अपने किसी साथी को जगल मे मार डाला था और उसका मास तक खाता रहा था। एक कधे पर से अपना गीला लवादा लटकाये वह गलियारे मे बडी निडर और व्यगपूर्ण नजरो से नेख्लूदोव की ओर देखता खडा रहा और रास्ता रोके रहा। नेख्लूदोव उसके पास से हो कर निकल गया।

इस तरह के दृश्य वह कई बार देख चुका था। पिछले तीन महीनो के दौरान वह इन चार सौ पचास आम मुजरिम कैदियो को बार बार विभिन्न परिस्थितियो मे देख चुका था सडक पर चिलचिलाती धूप म, जब ये अपनी बेडिया घसीटते और गर्द के बवण्डर उडाते चले जा रहे थे, रास्ते मे जगह जगह जब ये आराम के लिए रुकते थे, पडाव घरो के अन्दर, और गर्मी के मौसम मे बाहर, पडाव घरो के आगनो मे, जहा व्यभिचार के ऐसे वीभत्स दृश्य उसने देखे थे जिससे रागटे खडे हो जाय। फिर भी हर बार जब वह इनके बीच आता, और वे बडे ध्यान से उसकी ओर देखने लगते, जिस तरह वे अब देख रहे थे, तो नेख्लूदोव मन ही मन लज्जित और व्याकुल हो उठता। उसे लगता जैसे उसने उनके विरुद्ध कोई पाप किया है। एक तरफ तो यह लज्जा और जुर्म की भावना होती, दूसरी तरफ उसका मन घृणा और भय से भर उठता, जिसे दबाना असभव हो जाता था। यह जानते हुए भी कि जिन परिस्थितियो मे ये लोग रहते हैं, उनमे उनका आचार इससे बेहतर नही हो सकता, फिर भी वह अपनी घृणा को दबा नही पाता था।

"इनके तो मजे हैं हरामखोरो के," राजनीतिक कैदियो के कमरे के पास पहुच कर नेख्लूदोव ने सुना, "इनका कुछ बिगडता थोडे ही है, पेट थोडे ही फूलेगा इनका," किसी ने फटी आवाज मे, पीछे से कहा और साथ ही भद्दी सी गाली जोड दी। नेख्लूदोव की पीठ के पीछे कैदी ठहाका मार कर हसे और उनकी व्यग तथा द्वेषपूर्ण हसी गूज उठी।

१०

जब नेख्लूदोव और सार्जेंट अनब्याहे कैदियो के कमरे को पार कर चुके थे तो सार्जेंट यह कह कर वापस लौट गया कि जाच से पहले वह उसके पास आ जायेगा। सार्जेंट के चले जाने की देर थी कि एक कैदी

नगे पावो, अपनी बेडिया ऊपर को उठाये हुए, तेज तेज कदम रखता हुआ नेख्लूदोव के पास आया। उससे पसीने की तेज, तीखी गध आ रही थी। आगे बढ कर बडी रहस्यपूर्ण आवाज मे फुसफुसा कर बोला—

"मामला अपने हाथ मे लीजिये, हुजूर। इन्होंने लौंडे का बेवकूफ बना दिया है। उसे शराब पिला दी, और आज जाच के वक्त उसने अपना नाम भी कार्मानाव बता दिया। इसे रोकिये, हुजूर। हमारी हिम्मत नही पडती, ये लोग हमे जान से मार डालेंगे।" और फिर घबरा कर इधर-उधर देखते हुए वहा से चला गया।

बात यो हुई थी। कार्मानाव नाम के एक मुजरिम को खानो मे बडी मशक्कत की सजा मिली थी। कैदिया मे एक युवक भी था जिसकी शक्ल बहुत कुछ कार्मानोव से मिलती थी, और जिसे निर्वासन की सजा मिली थी। कार्मानोव ने उस युवक को फुसला कर इस बात पर रजामद कर लिया कि वह उससे अपना नाम बदल ले और उसकी जगह खानो पर काम करने चला जाय, जब कि कार्मानोव खुद निर्वासन मे चला जायेगा।

नेख्लूदोव यह मामला जानता था। इसी कैदी ने उसे इसके बारे मे हफ्ता भर पहले बता दिया था। उसने सिर हिला दिया ताकि कैदी को पता चल जाय कि उसने सुन लिया है और जो कुछ बन पडा वह कर देगा, और बिना मुड कर देखे आगे की ओर चलता गया।

जिस कदी ने नेख्लदोव से यह बात कही थी उसे वह अच्छी तरह से जानता था। और उसके इस काम पर वह हैरान हुआ था। जब कैदी येकातरीनबुग म थे तो इस आदमी ने नेख्लूदोव से अनुरोध किया था कि वह उसे अपनी पत्नी को मगवाने की इजाजत ले दे। यह आदमी बिल्कुल साधारण सा किसान लगता था, उम्र लगभग तीस साल रही होगी, और कद दमियाना था। इसे इस जुम के लिए बडी मशक्कत की सजा मिली थी कि इसने कत्ल करने तथा डाका डालने की कोशिश की थी। नाम माकार देव्किन था। इसका जुम बडा अजीब सा था। जब वह नेख्लूदोव को इसका ब्योरा दे रहा था तो कहता कि यह जुम उसने नही, शैतान ने किया है। कहने लगा कि एक बार एक मुसाफिर उसके पिता के घर आया और एक स्लेज गाडी किराये पर ली। उसे वहा से छब्बीस मील दूर किसी गाव को जाना था। माकार के बाप ने उसे यात्री को गाडी मे ले जाने को कहा। माकार ने घोडे पर साज लगाया, कपडे पहने और

यात्री के साथ बैठ कर चाय पीने लगा। अजावी ने चाय पीते समय बताया कि वह शादी करने जा रहा है और इस वक्त उसके पास पूरे पाच सौ रूबल की रकम है जो उसने मास्को मे कमाई है। जब माकार ने यह सुना तो उठ कर बाहर आगन मे आ गया और एक कुल्हाडी उठा कर स्लेज गाडी मे भूसे के नीचे रख दी।

"मुझे खुद उस वक्त मालूम नही था कि मैं यह कुल्हाडी क्या ले रहा हू," उसने कहा। "शैतान मेरे कान मे कह रहा था, 'कुल्हाडी उठा लो,' और मैने कुल्हाडी उठा ली। हम गाडी मे बैठ कर जाने लगे। पहले तो ठीक चलते रहे। मुझे कुल्हाडी भूल ही गयी। इसी तरह हम गाव के नजदीक जा पहुचे, गाव वहा से केवल चारेक मील दूर रह गया होगा। चौराहे से बडी सडक तक पहुचने के लिए पहाडी पर चढ कर जाना पडता था। मैं गाडी पर से उतर आया, और स्लेज के पीछे पीछे चलने लगा। शैतान मेरे कान मे फुसफुसाने लगा, 'तुम सोच क्या रहे हो? पहाडी की चोटी पर पहुचोगे तो बडी सडक पर तुम्हे लोग मिलने लगेंगे। आगे गाव आ जायेगा। यह अपना रुपया अपने साथ ले जायेगा, अगर कुछ करने का इरादा है तो यही वक्त है।' मैं स्लेज की ओर झुका, जैसे भूसा ठीक करने लगा होऊ, और कुल्हाडी मेरे हाथ मे अपने आप आ गयी। यात्री मेरी ओर घूमा। 'क्या कर रहे हो?' मैंने कुल्हाडी उठाई और एक ही बार मे उसका काम तमाम करना चाहता था, लेकिन वह तेज निकला, झट से उछल कर नीचे आ गया और मेरे दोनो हाथ पकड लिये। 'शैतान के बच्चे, क्या कर रहे हो?' उसने कहा और मुझे नीचे बरफ पर गिरा दिया। मैंने हाथ पाव तक नही हिलाये, फौरन् ही हार मान ली। उसने मेरे बाजू अपने कमरबन्द के साथ बाध दिये, मुझे उठा कर गाडी मे डाल दिया और सीधा मुझे थाने मे ले गया। गाव वालो ने मेरा सिफारिश की, कहा कि मेरा चालचलन अच्छा है, मैं भला आदमी हू और मुझे किसी ने कोई बुरा काम करते नही देखा। मेरे मालिका ने भी, जिनके पास मैं काम करता था, मेरी तारीफ की, पर वकील करने के लिए हमारे पास पैसे नही थे इसलिए मुझे चार साल कडी मशक्कत की सजा मिल गई।"

अब यही आदमी, अपने गाव के एक साथी को बचाने के लिए, अपनी जान जोखिम मे डाल कर, कैदियो का भेद नम्बरदार को दे रहा था। वह जानता था कि अगर कैदियो को इस बात का पता चल गया तो वे जरूर इसका गला घोट देंगे।

राजनीतिक कैदियो का दो कमरा मे रखा जाता था जिनके दरवाजे गलियारे के एक हिस्से मे खुलते थे, जहा पार्टीशन डाल कर उन्हे बाकी कमरा से अलग कर दिया गया था। जब नेख्लूदोव गलियारे के इस हिस्से मे पहुचा तो उसे सिमनसन नजर आया। रबड की जाकेट पहने और देवदार की लकडी का एक कुदा हाथ मे लिये वह अलावघर के सामने झुका हुआ था। अलावघर का ढकना आग की तपिश के कारण बार बार काप उठता था।

जब नेख्लूदोव अन्दर आया तो उसने बैठे बैठे ही, अपनी घनी भौहा के नीचे से आखे उठा कर उसकी ओर देखा, और हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ आगे बढा दिया।

"अच्छा हुआ आप आ गये। मुझे आपसे कुछ कहना है," नेख्लूदोव की आखा मे आखे डाल कर बडे महत्वपूण ढग से सिमनसन ने कहा।

"क्या बात है?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"बाद मे बताऊगा। इस वक्त मुझे काम है।"

और सिमनसन फिर अलावघर की ओर घूम गया। वह अपने ही किसी फारमूले के मुताबिक अलावघर गरम कर रहा था ताकि कम से कम तपिश जाया हो।

नेख्लूदोव पहले दरवाजे मे से अन्दर जाने लगा था जब मास्लोवा झाडू लगाती हुई दूसरे दरवाजे म से बाहर निकली। हाथ मे झाडू पकडे वह कूडे और गद के एक ढेर पर झुकी हुई थी और उसे धकेलती हुई स्टोव के पास ले जा रही थी। उसने सफेद रग की जाकेट पहन रखी थी और अपना घाघरा ऊपर को खास रखा था। सिर पर रूमाल था, जिसे उसने माथे पर भौहा तक बाध रखा था ताकि उसके बाल गद से बचे रह। नेख्लूदोव को देख कर वह बडी खुश हुई और उसका चेहरा लाल हो गया। उसन झाडू फेंक दिया और घाघरे पर हाथ पोछने हुए उसके ऐन सामने खडी हो गयी।

"झाड पोछ कर रही हो?" हाथ मिलाते हुए नेख्लूदोव ने कहा।

"हा, यह तो मेरा पुराना काम है," मास्लोवा मुस्कराई, "पर उफ! कितनी गदगी है यहा। बार बार साफ करो फिर भी जगह वैसी

की वैसी हो जाती है।" फिर सिमनसन की ओर घूम कर बोली, "कम्बल सूख गया है?"

"हा, लगभग सूख गया है," सिमनसन ने मास्लोवा की ओर विलक्षण ढग से देखते हुए जवाब दिया। उसकी यह नजर नेख्लूदोव से छिपी नही रही।

'अच्छी बात है, मैं अभी आ कर ले जाऊगी और फिर ग्रावक्लोट गुब्रान के लिए ले आऊगी।" फिर पहले दरवाजे की ओर इशारा करती हुई नख्लूदोव से बोली, "हमारे सभी आदमी इसी कमरे म हैं।" और खुद दूसरे दरवाजे के अदर चली गयी।

दरवाजा खोल कर नख्लूदोव अदर दाखिल हुआ। कमरा छोटा सा था। दीवार के साथ नीचे की ओर एक तख्ते पर टीन का छोटा सा लैम्प टिमटिमा रहा था। यही तख्ता यहा सोने के लिए लगाया गया था। कमरे मे सीलन थी, सर्दी थी, धूल की गध आ रही थी) धूल अभी तक बैठ नही पायी थी), और तम्बाकू का धुआ छाया हुआ था। टीन के लैम्प की रोशनी मे उसके आस-पास बैठे लोगो के चेहरे चमक रहे थे, लेकिन सोने वाले तख्तो पर अधेरा था। दीवारो पर साये काप रहे थे।

अधिकाश राजनीतिक कैदी इस छोटे से कमरे मे जमा थे। दो आदमी, जिन पर खाने पीने की चीज लाने का जिम्मा था, रसद और चाय के लिए उबलता पानी लेने गये हुए थे। यही पर वेरा बैठी थी, जिसके साथ नेख्लूदोव की पुरानी जान-पहचान थी। वेरा पहले से दुबली और पीली लग रही थी, आखें बडी बडी और सहमी हुई सी, छोटे छोटे बाल, और माथे पर एक नस उभरी हुई। उसने सलेटी रग की जाकेट पहन रखी थी, और अपने सामने अखबार का कागज बिछाये, कागज की नलिया मे तम्बाकू भर भर कर सिगरेट बना रही थी, और ऐसा करते हुए उसके हाथ झटक से जाते थे।

यही पर एमीलिया रात्सेवा भी थी जिसे नेख्लूदोव राजनीतिक कैदियो मे सबसे प्रिय समझता था। उसका काम "घर" का इन्तजाम करना था, और जो कठिनतम परिस्थितियो मे भी घर का सा स्निग्ध तथा आकर्षक वातावरण बना देती थी। आस्तीनें चढाये वह लैम्प के पास बैठी, प्याले और गिलास पोछ पोछ कर तख्ते पर रख रही थी जिस पर एक तौलिया बिछा हुआ था। उसके सुन्दर, धूप मे सवलाये हाथ बडी दक्षता

से काम कर रहे थे। शक्ल-सूरत से रात्सवा एक साधारण सी युवती थी और उसके चेहरे पर मृदुता तथा योग्यता का भाव रहता। जब वह मुस्कराती तो उसका चेहरा सहसा खिल उठता, और बड़ा सजीव और आकर्षक हो उठता। इस समय भी नेख्लूदोव का स्वागत करते हुए उसके चेहरे पर ऐसी ही मुस्कान खेल रही थी।

"वाह, हमने तो सोचा आप रूस लौट गये होंगे," वह बोली।

इसी कमरे के एक अंधियारे कोने मे मारीया पाव्लोव्ना बैठी एक छोटी सी, सुनहरी बालो वाली लडकी को कुछ कर रही थी। लडकी बराबर अपनी तुतलाती जवान मे प्यारी प्यारी बात किये जा रही थी।

"बहुत अच्छा हुआ जो आप आ गये," मारीया पाव्लोव्ना बोली, "कात्यूशा से आप मिले हैं?" फिर नन्ही लडकी की ओर इशारा करते हुए बोली, "यह देखिये, हमारे यहा एक नयी महमान आयी है।"

यही पर, दूर एक कोने मे अनातोली क्रिलत्सोव पाव समेटे बैठा ठिठुर रहा था। पावो पर उसने फेल्ट के बूट पहन रखे थे, और अपने दोना हाथ ओवरकोट की आस्तीनो के अन्दर दबाये हुए था। वह नेख्लूदोव की ओर बराबर देखे जा रहा था और उसकी आखें बुखार के कारण लाल हो रही थी। नेख्लूदोव सीधा उसके पास जाना चाहता था लेकिन दरवाजे के पास ही दायी ओर एक आदमी को बैठे देख कर रुक गया। यह प्रसिद्ध क्रातिकारी नोवोद्वोरोव था। लाल घुघराले बाल, आखो पर चश्मा, रबड की जाकेट पहने हुए, वह बैठा ग्राबेत्स से बात कर रहा था। सुन्दरी ग्राबेत्स मुस्करा रही थी। नेख्लूदोव जल्दी जल्दी उसे मिलने चला गया, कारण, सभी राजनीतिक कैदियो मे वही एक आदमी था जो नेख्लूदोव को बुरा लगता था। नोवोद्वोरोव ने त्योरिया चढा कर नेख्लूदोव की ओर देखा और चश्मे के पीछे उसकी नीली आखे चमकने लगी, फिर हाथ मिलाने के लिए अपना पतला सा हाथ आगे बढाया।

"कहिये, आपका सफर तो मजे मे कट रहा है?" उसने कहा। उसकी आवाज़ मे प्रत्यक्षत व्यग की झलक थी।

"जी, बहुत सी बात मुझे यहा बडी दिलचस्प लगती है," नेख्लूदोव ने जवाब मे कहा मानो उसका ध्यान नोवोद्वोरोव के व्यग की ओर गया ही न हो, बल्कि उसे उसने शिष्टतापूर्ण प्रश्न समझा हो। इसके बाद नेख्लूदोव क्रिलत्सोव की ओर जाने लगा।

प्रकट मे तो जान पडता था जैसे नेख्लूदोव को इसकी कोई परवाह न हो, लेकिन वास्तव मे इन शब्दो को सुन कर नेख्लूदोव का मन बहुत विचलित हुआ था। जाहिर था कि नोवोद्वोरोव कोई अप्रिय बात कहना या करना चाहता है। नेख्लूदोव का मन जो इन दिनो हरेक के प्रति सदभावनाओ से ओत प्रोत था, खिन्न उदास हो उठा।

"कहो कैसे हो?" क्रिलत्सोव का ठण्डा, ठिठुरता हाथ दबाते हुए नेख्लदोव ने कहा।

"अच्छा हू, केवल मेरा बदन गरम नही हो पाता। मेरे कपडे नीचे तक भीग गये थे," क्रिलत्सोव ने जवाब दिया और झट से अपने दोनो हाथ फिर लबादे की आस्तीनो के अदर रख लिये। "यहा पर भी कडाके की सर्दी पड रही है। वह देखो, खिडकी के शीशे टूटे हुए है।" और सीखचो के पीछे उसने टूटे शीशो की ओर इशारा किया। "तुम अपनी सुनाओ, इतने दिन से हमे मिलने क्यो नही आये?"

"मुझे इजाजत कहा मिलती थी। अफसर लोग टस से मस न होते थे। आज अफसर ने कुछ उदारता दिखायी।"

"उदारता! खूब!" क्रिलत्सोव ने टिप्पणी कसी, "मारीया से पूछो आज अफसर ने क्या किया।"

कोने मे बैठी हुई मारीया पाव्लोव्ना सुनाने लगी कि आज सुबह जब पडाव घर से चलने लगे थे तो इस छोटी लडकी के साथ क्या गुजरी थी।

"मै समझती हू कि यह बेहद जरूरी हो गया है कि हम सब मिल कर इसका विरोध करे" वेरा ने दृढता से कहा। परन्तु उसकी आखें अब भी सदिग्ध और डरी हुई थी और कभी एक के चेहरे की ओर और कभी दूसरे के चेहरे की ओर देख रही थी। "व्लादीमिर सिमनसन ने विरोध जरूर किया है परन्तु वही काफी नही है।"

"तुम कैसा विरोध चाहती हो?" क्रिलत्सोव चिढ कर, त्योरिया चढाते हुए बडबडाया। वेरा जब बात करती तो कृत्रिम ढग से, उसमे सरलता का अभाव था, और वह हर वक्त घबरायी सी रहती थी। ये बाते प्रत्यक्षत बहुत दिनो से क्रिलत्सोव को अखरती रही थी। "तुम कात्यूशा से मिलने आये हो?" क्रिलत्सोव ने घूम कर नेख्लूदोव से पूछा। "वह तो सारा वक्त काम करती रहती है। वह मर्दों का कमरा साफ कर

चुकी है, और अब स्त्रिया वाला कमरा साफ कर रही है। लेकिन यहा स पिस्सुओ को कोई कैसे साफ कर सकता है? वे तो इसान को जिन्दा चस जायेंगे। मारीया वहा बैठी क्या कर रही है?' कोने म बैठी मारीया पाव्लोव्ना की ओर सिर हिला कर क्रिल्त्सोव ने पूछा।

"बाल काढ रही है अपनी गोद ली हुई बेटी के," रात्सेवा ने जवाब दिया।

"कही जुए तो नही फैलायेगी हम सब पर?" क्रिल्त्सोव ने पूछा।

"नही, नही, म बडे ध्यान से अपना काम कर रही हू। बच्ची भी अब बडी साफ-सुथरी हो गयी है। अब तुम इसे ले जाओ," मारीया ने रात्सेवा से कहा, 'मैं जा कर ज़रा कात्यूशा की मदद करूगी और क्रिल्त्सोव के लिए कम्बल भी लेती आऊगी।'

रात्सेवा ने नन्ही लडकी को गोद म बिठा लिया और मा की तरह प्यार से लडकी की दोना गुदगुदी, नगी बाहे अपनी छाती से लगा ली, और चीनी का एक टुकडा उसे खाने को दिया।

जब मारीया पाव्लोव्ना कमरे मे से चली गयी तो दो आदमी कमरे म दाखिल हुए। वे हाथो म खाने-पीने का सामान और उबलते पानी से भरी चायदानिया उठाये हुए थे।

१२

इन दो नवागन्तुको म से एक तो पतला सा मझले कद का युवक था जो घुटनो तक के ऊचे बूट और भेड की खाल का कोट पहने हुए था। कोट पर कपडा चढा हुआ था। बडी चुस्ती से हल्के हल्के कदम रखते हुए वह अन्दर दाखिल हुआ। उसके हाथो म दो चायदानिया थी जिनमे से खूब भाप निकल रही थी, और बगल म, एक कपडे म लिपटी डबलरोटी उठाये हुए था।

"यह लो, आखिर प्रिंस भी आ गये," तख्ते पर प्यालो के साथ चायदानिया रखते हुए और डबलरोटी रात्सेवा के हाथ म देते हुए उसने कहा। 'हम बहुत बढिया चीजे खरीद कर लाये है,' उसने कहा और अपना खाल का कोट उतार कर बैठे लोगो के सिरो के ऊपर से एक कोने म फेंका। "माकेंल ने दूध और अण्डे खरीदे है। वाह, आज तो

खूब जशा होगा। और रालेवा की सफाई से तो कमरे चमचमा रहे है," उसने मुस्करा कर रालेवा की ओर देखा। "और अब यह चाय बनायेगी।"

इस आदमी के रोम रोम से, उसकी एक एक हरकत से, उसकी आवाज, और नजर से ओज और आनन्द फूट पडता था। दूसरा आदमी इसके बिल्कुल उलट था, उसका चेहरा निराश और उदास लग रहा था। वह आदमी कद का मझला, और हड्डियो का ढाचा भर था, गालो की हड्डिया खूब उभरी हुई थी, चेहरा पीला और होठ पतले थे, लेकिन एक दूसरी से दूर जडी उसकी हरी आखें बडी सुन्दर थी। वह एक पुराना रुईदार कोट पहने हुए था, पाव पर लम्बे बूट थे जिन पर गैलोश चढा रखे थे। उसके हाथो मे दूध के दो बरतन और बर्च की छाल के बने दो गोल डिब्बे थे, जो उसने रालेवा के सामने रख दिये। नेख्लूदोव का अभिवादन उसने केवल गरदन झुका कर किया और उसकी ओर घूर घूर कर देखता रहा। फिर, अनिच्छा से उसने अपना नमीभरा हाथ आगे बढाया और नेख्लूदोव से हाथ मिला कर रसद का सामान बाहर निकालने लगा।

ये दोनो राजनीतिक बंदी जनता म से आये थे। पहला आदमी किसान था, और उसका नाम नाबातोव था, दूसरा फैक्ट्री का मजदूर था और उसका नाम मार्केल कोंद्रात्येव था। मार्केल उस समय क्रान्तिकारियो म शामिल हुआ जब उसकी उम्र काफी बडी हो चुकी थी—३५ वष। लेकिन नाबातोव १८ वष की अवस्था मे ही उनमे जा मिला था। गाव की पाठशाला की पढाई पूरी करने के बाद, प्रतिभासम्पन्न विद्यार्थी होने के नाते, उसे हाई स्कूल मे दाखिला मिल गया। जितनी देर वह वहा पढता रहा, साथ मे अन्य लडको को पढा कर वह अपनी रोजी कमाता रहा। स्कूल छोडने पर उसे सोने का तमगा मिला। वह विश्वविद्यालय मे दाखिल नही हुआ। अभी स्कूल की अन्तिम श्रेणी मे पढ ही रहा था कि उसने निश्चय कर लिया कि वह जनता मे जा कर अपने उपेक्षित भाइयो को ज्ञानदान देगा। और यही उसने किया भी। एक बडे से गाव मे जा कर वह सरकारी दफ्तर मे क्लर्क हो गया। शीघ्र ही उसे गिरफ्तार कर लिया गया। वह किसानो को किताब पढ कर सुनाता था, साथ ही किसानो की उपज को बढाने तथा उसे बेचने के लिए उसने एक सहकारी सगठन की व्यवस्था की थी। अधिकारियो ने आठ महीने तक उसे जेलखाने मे रखा। रिहाई

के बाद भी उस पर पुलिस की निगरानी रही। जब उसे छोड दिया गया तो नाबालोव एक दूसरे गाव मे जा कर रहने लगा, एक स्कूल मे अध्यापक का काम ले लिया और फिर से वही काम करने लगा जो वह पहले गाव म करता रहा था। उसे फिर गिरफ्तार कर लिया गया और अब की बार चौदह महीने तक जेल मे रहा। जेल मे उसकी राजनीतिक धारणाए और भी दृढ हो गयी।

इसके बाद उसे पम गुबेनिया म निवासित कर के भेज दिया गया। यहा से वह भाग गया। पकडे जाने पर उसे सात महीने कद की सजा हुई और कैद से निकलने पर इसे निर्वासित कर के आर्खागेल्स्क गुबेनिया भेज दिया गया। और वहा से याकूतिया म निवासित किया गया, क्योकि उसने नय जार के प्रति प्रजा भक्ति की शपथ लेन मे इकार कर दिया था। इस तरह उसकी जवानी का आधा हिस्सा जेलो और जलावतनी मे कट गया था। परन्तु इन सब अनुभवो के बावजूद उसके स्वभाव म कटुता या उत्साह मे शिथिलता नही आ पायी। बल्कि इनसे उसे और भी प्रोत्साहन मिला। वह बडा सजीव आदमी था, उसकी पाचन शक्ति अदभुत थी, हर वक्त खुश, सक्रिय और ताजादम रहता था। उसे कभी भी किसी बात पर पश्चात्ताप नही होता था, न ही वह कभी भविष्य की चिन्ता करता था। अपनी सारी शक्ति, योग्यता तथा व्यावहारिक ज्ञान इस हेतु लगा देता था कि वह वतमान मे सक्रिय हो सके। जब जेल के बाहर होता तो वह अपने ध्येय की पूर्ति मे सचेष्ट रहता, मेहनतकश लोगो को, विशेषकर किसानो को शिक्षा देने तथा सगठित करने का काम करता। जब जेल मे होता तो उसी स्फूर्ति और व्यावहारिक कुशलता से बाहर की दुनिया से सम्पर्क स्थापित करने तथा अपने और अपने दल के जीवन को यथासम्भव सुखी बनाने म लगा रहता। उसका सबसे बडा गुण यह था कि वह एक सामाजिक व्यक्ति था। ऐसा जान पडता जैसे वह अपने लिए कुछ भी नही चाहता हो, वह थोडे म ही सन्तुष्ट था, परन्तु अपने साथियो के दल के लिए अत्यधिक चीजो की माग करता था और उनके लिए दिन-रात भूखे और उनीदे रह कर काम कर सकता था, भले ही यह काम शारीरिक हो या मानसिक। किसान होने के कारण उसमे बडी मेहनत करने की क्षमता थी, चीजो को बडे ध्यान से देखता था और अपना काम बडी कुशलता से करता था। सयत प्रकृति, तथा स्वभाव का विनम्र

व्याप्त था। न केवल लोगों की इच्छाओं की ओर ही बल्कि उनकी राय की ओर भी अत्यधिक ध्यान देता था। उसकी निरक्षर, अन्धविश्वासी ग्रामीण किसान बूढ़ी मां अब भी जीवित थी। नाबातोव अब भी उसकी सहायता किया करता था। जब जेल से बाहर होता तो अक्सर उसके पास जा कर रहता था। जितनी देर घर पर रहता, उसकी मां के हर प्रकार काम में बड़ी रुचि से और हाथ बटाता था। वहां वह अपने पुराने साथियों से मिलता, जिनके साथ वह बड़ा हुआ था। उनके साथ बैठ कर सस्ता तम्बाकू के दम लगाता, उनकी मुठभेड़ों में भाग लेता, और उन्हें सविस्तार समझाता कि किस भांति उन सबको धोखे में रखा जा रहा है, और किस भांति वे इस झूठ के जाल को तोड़ कर बाहर निकलें। क्रान्ति के बारे में उसके विचारों तथा इरादों के पीछे यही धारणा रहती थी कि जनता को—जिसमें वह स्वयं जन्मा था—उसी स्थिति में रहने दिया जायगा जिसमें वह अब है, केवल लोगों को पर्याप्त जमीन मिलेगी, और उनके ऊपर जमींदार व सरकारी अफसर नहीं होंगे। उसके मतानुसार क्रान्ति के बाद लोगों के जीवन के आधारभूत स्वरूप को नहीं बदलना चाहिए, सारे ढांचे को नहीं तोड़ डालना चाहिए, केवल इस सुदृढ़, विशाल और सुन्दर इमारत की अन्दर वाली दीवारों को बदल देना चाहिए। इस पुरानी इमारत से नाबातोव को मोह था। इस दृष्टि से उसका मत नावोद्वारोव तथा उसके अनुयायी मार्केल कोन्द्रात्येव के मत से पृथक् था।

धर्म के सवाल पर भी उसके विचार बिल्कुल किसानों जैसे ही थे। आध्यात्मिक प्रश्नों—जैसे सभी स्रोतों का मूल स्रोत क्या है, या परलोक इत्यादि के बारे में उसने कभी सोचा तक न था। भगवान को वह कल्पना के समान समझता था, (आरागो की तरह) और इसकी उसे अभी तक आवश्यकता महसूस नहीं हुई थी। विश्व का उदगम कैसे हुआ, मूसा ठीक कहता है या डार्विन, इसकी उसे कोई चिंता नहीं थी। उसके साथी डार्विनवाद को बड़ा महत्व देते थे, लेकिन नाबातोव की नजरों में वह भी मन का वैसा ही खिलौना मात्र था जैसी कि यह धारणा कि विश्व की रचना छः दिन के अन्दर हो गयी थी।

इस प्रश्न में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी कि संसार का उदगम कैसे हुआ। कारण, उसके सामने हर समय यही सवाल रहता था कि इस संसार में अच्छे से अच्छे ढंग से कैसे जियें। भविष्य के बारे में उसने

कभी नही सोचा था। कारण, उसकी आत्मा की गहराइयो मे यह शान्त और अटल आस्था जड जमाये हुए थी कि जिस भांति पशु पक्षिया तथा पेड़-पौधा के ससार म कोई चीज मरती नही, केवल अपना रूप बदलती रहती है—खाद अनाज म, अनाज मुर्गी म, मेढक का लार्वा मेढक मे, तितली का लार्वा तितली मे, ओक वक्ष का बीज ओक वृक्ष म इत्यादि—इसी तरह मनुष्य भी नही मरता, केवल उसका रूप बदलता रहता है। यह धारणा जो धरती पर पसीना बहाने वाले सभी किसाना मे पायी जाती है, नावातोव ने अपने पुरखाओ से ग्रहण की थी। इसी विश्वास के कारण उसे मत्यु का कोई भय न था, और वह उन यन्त्रणाओ को बडी निडरता से सहन करता था जो उसे मृत्यु की ओर ले जा रही थी, परन्तु वह यह नही जानता था कि ऐसी चीजो को किन शब्दा म व्याख्या करे। काम से उसे प्रेम था और वह हमेशा किसी न किसी व्यावहारिक काम म लगा रहता था। वह अपने साथियो को भी सदा काम करने की प्रेरणा दिया करता था।

दूसरा राजनीतिक कैदी—मार्केल कोद्रात्येव—इससे बहुत ही भिन्न प्रकार का आदमी था। वह भी जनता मे से निकल कर आया था। पद्रह बरस की उम्र म वह काम करने लगा था। उसी समय उसके मन म एक धूमिल सी भावना उठी थी कि उसके साथ अन्याय किया जा रहा है। इस भावना को दबाने के लिए उसने तम्बाकू और शराब पीना शुरू कर दिया। अन्याय का भास सबसे पहली बार उसे उस क्रिसमस के दिन हुआ जब फैक्ट्री के मालिक की पत्नी ने क्रिसमस के पेड को सजाने का आयोजन किया और उस पर फैक्ट्री के बच्चा को निमन्त्रित किया था। वहा पर उसे एक सस्ती सी सीटी, एक सेब, एक वरक चढा अखरोट और एक इजीर दी गयी, जबकि फैक्ट्री मालिक के बच्चो को ऐसे सुदर उपहार दिये गये जो लगता था जस परी-लोक से आये हो। बाद म उसे मालूम हुआ कि उन पर पचास रूबल से अधिक रकम खर्च हुई थी। जब वह बीस बरस का हुआ तो उनकी फैक्ट्री म एक प्रसिद्ध क्रातिकारी महिला आयी और फक्ट्री म ही मजदूरो की तरह काम करने लगी। कोद्रात्येव की योग्यता को देख कर उसने उसे किताबें और पैम्फलेट देना शुरू कर दिया, उससे राजनीतिक मसला पर बात करने लगी, उसे उसकी स्थिति की व्याख्या और उसे बदलने के उपाय बताने लगी। जब उसके दिमाग

मे यह बात साफ हुई कि उत्पीडन से उसके और अन्य लोगो को छुटकारा पाने की सभावना हो सकती है तो वतमान व्यवस्था का अन्याय उस और भी क्रूर और भयानक नज़र आने लगा। और उसके हृदय मे न केवल मुक्ति के लिए तडप उठने लगी, बल्कि उन लोगो को सज़ा देने के लिए भी, जिन्होंने इस क्रूर अन्याय की व्यवस्था की थी और इसे कायम रखे हुए थे। उसे बताया गया कि यह सभावना ज्ञान से पैदा होती है। अत कोद्रात्येव पूरे तन मन से ज्ञान सचय करने मे जुट गया। यह बात उसके दिमाग मे साफ नही थी कि किस भाति ज्ञान द्वारा समाजवादी आदर्श का क्रियान्वित किया जा सकता है। पर उसे यह विश्वास था कि जिस ज्ञान से उसे अपने जीवन की वतमान परिस्थितियो मे छिपे अन्याय का पता चला है, उसी ज्ञान से स्वय इस अन्याय का भी नाश होगा। इसके अतिरिक्त यह समझता था कि ज्ञानाजन कर के वह औरो से ऊपर उठ जायेगा। इसलिए उसने तम्बाकू और शराब का सेवन छोड दिया, और अपना सारा खाली वक्त (जो स्टॉक रूम मे तबादला हो जाने के बाद उसे अधिक मिलने लगा था) अध्ययन मे व्यतीत करने लगा।

क्रान्तिकारी महिला उसे पढाने लगी। हर प्रकार के विषय के प्रति कोद्रात्येव की ज्ञान पिपासा तथा उसकी योग्यता देख कर वह हैरान रह गयी। दो साल के अन्दर ही अन्दर उसने बीजगणित, रेखागणित तथा इतिहास (जिसमे उसकी विशेष तौर पर रुचि थी) मे दक्षता प्राप्त कर ली। साथ ही कविता, गल्प, आलोचनात्मक, और विशेषकर समाजवादी साहित्य की जानकारी प्राप्त कर ली।

क्रान्तिकारी महिला पकडी गयी। उसके साथ कोद्रात्येव भी पकडा गया, क्योकि अवैध किताबें उसके पास पायी गयी थी। दोनो कैद कर दिये गये और बाद मे उन्हे वोलोग्दा गुबेनिया म निवासित कर के भेज दिया गया। यहा पर कोद्रात्येव का परिचय नोवोद्वोरोव से हुआ। उसने यहा और भी अधिक क्रान्तिकारी साहित्य पढा, और जो कुछ पढा उसे याद रखा, और उसकी समाजवादी धारणाए और भी पक्की हो गयी। जलावतनी से लौटने के बाद उसने एक बहुत बडी हडताल का नेतत्व किया, जिसमे फैक्ट्री को नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया और उसके सचालक को मार डाला गया। उसे फिर गिरफ्तार कर के जलावतन कर दिया गया।

जिस भांति मौजूदा आर्थिक व्यवस्था के बारे मे उसके विचार नकारात्मक थे, उसी भांति धर्म के सम्बन्ध में भी उसके विचार नकारात्मक थे। जब उसे धर्म की, जिसकी उसे जन्मघुट्टी मिली थी, निरर्थकता का पता चला, तो उसने बड़े प्रयत्न से उसे अपने दिल और दिमाग में से निकाला—पहले डरते हुए और बाद में गहरे आनन्द का अनुभव करते हुए। अब वह पादरियों और धार्मिक सिद्धान्तों का बड़े क्रोध और विषैले ढंग से मज़ाक उड़ाया करता था, मानो उस कपट का बदला लेना चाहता हो जो धर्म द्वारा उस पर और उसके पुरखाओं पर किया गया था।

उसका रहन-सहन तपस्वियों का सा था, थोड़े में सन्तुष्ट। जो लोग बचपन से ही काम करने के आदी होते है, और जिनके पट्ठे खूब मजबूत हो गये होते है उनकी तरह कोन्द्रात्येव भी बहुत देर तक और बड़ी सुगमता से काम कर सकता था। हर प्रकार का शारीरिक श्रम बड़ी स्फूर्ति से कर सकता था। परन्तु जो चीज़ उसे सबसे ज्यादा पसन्द थी वह अवकाश था और यह उसे जेलखानों और पड़ाव घरों मे मिल जाता था। इसमें वह अपना पठन पाठन जारी रख सकता था। आजकल वह मार्क्स के सकलन का पहला ग्रन्थ पढ़ रहा था, जिसे वह अपने थैले में छिपाये रहता था, मानो कोई बहुत बड़ा खज़ाना हो। नोवोद्वोरोव को छोड़ कर अपने सभी साथियों के साथ उसका रवैया रुखाई और उदासीनता का था। नोवोद्वोरोव पर उसे बड़ी निष्ठा थी सभी विषयों पर उसके तर्कों को वह अकाट्य सत्य मानता था।

स्त्रियों से उसे अत्यधिक घृणा थी। उसका मत था कि स्त्रियां हर प्रकार के उपयोगी काम में बाधक बनती है। परन्तु मास्लोवा पर उसे रहम आता था और उसके साथ वह बड़ी नर्मी से पेश आता था। कारण उसके विचार में मास्लोवा एक जीवन्त उदाहरण थी जिससे इस बात का पता चलता था कि किस भांति उच्च वर्ग के लोग निम्न वर्ग के लोगों का शोषण करते हैं। इसी कारण वह नख्लूदोव से भी घृणा करता था। नख्लूदोव से वह बहुत कम बोलता था हाथ मिलाते वक्त कभी भी उसका हाथ नहीं दबाता था, केवल अभिवादन करते समय अपना हाथ आगे बढ़ा देता ताकि नख्लूदोव उसे दबा दे।

आग जलने लगी जिससे भ्रलावघर गरम हो गया। चाय तयार हा गयी और दूध मिला कर प्यालो और गिलासा मे डाल दी गयी। तख्ते पर बिछे तौलिये क ऊपर रख, ताजा गेहू की डबलरोटी, मक्खन, उबले हुए अण्ड, बछडे का सिर और टागें रख दी गयी। सब लोग तख्ते के उस हिस्से के पास आ गये जिससे खाने वाली मेज का काम लिया जाता था, और खाने बतियाने लगे। रात्सेवा एक बक्से पर बैठ कर चाय डाल डाल कर दन लगी। क्रिल्त्सोव को छोड कर सभी लाग उसके इदगिद जमा हो गये थे। क्रिल्त्सोव ने गीला ओवरकोट उतार दिया था और अब अपना सूखा कम्बल लपेटे अपनी जगह पर लेटा नेख्लूदोव से बात कर रहा था।

ये लोग सर्दी और बारिश म दिन भर चलते रहे थे। जब यहा पहुचे ता गदगी और कूडा-करकट से यह स्थान भरा पडा था। बडी मेहनत और कठिनाई से उन्होंने इसे साफ किया और जगह का रहने योग्य बनाया। और इसके बाद अब पेट भरने और गरम गरम चाय पीने के बाद व बड खुश थे और हसने चहकने लगे थे।

दीवार के पीछे से मुजरिम कैदियो के कदमो की आवाजें, उनके चीखने चिल्लाने और गालिया बकने की आवाजें आ रही थी, माना इन राजनीतिक कैदियो को याद दिला रही हा कि वे कहा पर हैं, लकिन वे इस वक्त मजे मे थे, इन आवाजो का सुन कर इनका आराम कम हाने के बजाय कुछ बढता ही जान पडता था। समुद्र मे किसी द्वीप पर पडे लोगा की तरह, ये लाग भी कुछ देर के लिए अपने का उस अपमान और क्लेश से बचे हुए महसूस कर रहे थे जो उन्ह चारा आर से घेरे हुए था। इससे वे और भी अधिक खुश और उत्तेजित थे। उनकी वतमान स्थिति तथा आगे जा उनके साथ होगा, इन विषया को छोड कर वे अन्य सभी विषया पर बातें कर रहे थे। नौजवान पुरुषा और स्त्रिया के बीच, विशेषकर जब विवश हा कर उन्ह एक साथ रहना पडता हो जसा कि ये लाग रह रह थ, तरह तरह के अनाचे रूप से मिश्रित आकषण पैदा हो जाते हैं। यहा पर भी ऐसा ही हुआ था। लगभग सभी किसी न किसी स प्रेम करते थे। नावाद्वोराव को सुदर युवती ग्राबेत्स से प्रेम था जिसके चेहरे पर हर वक्त मुस्कान खेला करती थी। ग्राबेत्स एक युवा, लापरवाह

लडकी थी जिसे क्रान्ति सम्बन्धी प्रश्नो से कभी कोई सरोकार न रहा था, परन्तु पढाई के दिनो म तत्कालीन वातावरण के प्रभाव म आ कर वही कोई भूल कर बैठी, जिससे पकडी गई और निर्वासित कर के भेज दी गयी। जिन दिनो उस पर मुकद्दमा चल रहा था उन दिनो और बाद म जेल तथा निर्वासन के दिनो म उस सबसे अधिक रुचि इस बात म थी कि वह पुरुषो को अपनी ओर आकर्षित कर पाये। पहले भी, जिन दिनो आजाद घूमा करती थी, तब भी उसके जीवन की मुख्य रुचि यही हुआ करती थी। अब सफर के दौरान उसे इस बात से ढाढस मिलता था कि नावोद्वोरोव उसे पसन्द करने लगा है अत वह भी उससे प्रेम करने लगी। वेरा के हृदय म प्रेम करने की ललक हर समय रहती परन्तु वह पुरुषो को आकर्षित नही कर पाती थी। फिर भी उसके हृदय म आशा बनी रहती कि वह और उसका प्रेमी गहरे अनुराग से एक दूसरे से प्रेम करेगे। अत वह कभी नावातोव से और कभी नोवाद्वोरोव से प्यार करने लगती। प्रेम से मिलती-जुलती ही भावना क्रिलत्सोव के हृदय म मारीया पाव्लोव्ना के प्रति भी थी। वह उससे पुरुषो की तरह प्रेम करता था, मगर जानता था कि ऐसा प्रेम मारीया पाव्लोव्ना को पसन्द नही था। इसलिए वह अपनी भावनाओ को उससे छिपाये रहता था, और जब वह बडी कोमलता और सहानुभूति से उसकी देखभाल करती तो वह इन्हे मैत्री और कृतज्ञता का रूप दे कर व्यक्त किया करता था। नावातोव और रान्त्सेवा के प्रेम म बडी जटिलता और उलझाव था। जिस प्रकार मारीया पाव्लोव्ना कुमारी थी, उसी प्रकार रान्त्सेवा अपने पति के प्रति पूर्णतया एकनिष्ठ थी।

अभी उसकी आयु केवल १६ वर्ष की थी और वह स्कूल म पढती थी जब वह रान्त्सेव से प्रेम करने लगी। रान्त्सेव उस समय पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय का छात्र था। विश्वविद्यालय की परीक्षा पास करने से पहले ही दोनो की शादी हो गयी। उस समय इस लडकी की उम्र १९ वर्ष की थी। जब उसका पति विश्वविद्यालय की चौथी कक्षा म पढता था तो वह विद्यार्थियो के किसी आन्दोलन की लपेट म आ गया। उसे पीटर्सबर्ग से निर्वासित कर दिया गया जिस पर वह क्रान्तिकारी बन गया। रान्त्सेवा उस समय डॉक्टरी की पढाई कर रही थी। उसने अपनी पढाई छोड दी और पति के साथ चली गई और स्वय भी क्रान्तिकारी बन गयी। वह अपने पति को सबसे योग्य और सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति मानती थी। यदि ऐसा

37

न मानती तो उससे प्रेम ही न करती। और जो प्रेम नही करती तो उससे शादी भी नही करती। पर जब उस सर्वोत्कृष्ट और सबसे योग्य व्यक्ति से प्रेम किया, और शादी की तो यह स्वाभाविक ही था कि जीवन तथा जीवन के ध्येय के बारे म भी उसके वही विचार हो जो उस सर्वोत्कृष्ट और सबसे योग्य व्यक्ति के थे। पहले इस पुरुष की दृष्टि मे मानापाजन जीवन का ध्येय था। अत रात्सेवा ने भी यही ध्येय अपना लिया था। जब पति क्रान्तिकारी बना तो यह भी क्रान्तिकारी बन गयी। वह बडी स्पष्टता से यह सिद्ध कर दिखाता था कि मौजूदा व्यवस्था हमेशा नही चल सकती कि प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह इस व्यवस्था के विरुद्ध सघर्ष करे, और ऐसी राजनीतिक तथा आर्थिक हालत पैदा करने का प्रयत्न करे जिनमे व्यक्ति स्वच्छन्दता से विकास कर सके, इत्यादि। रात्सेवा समझती थी कि उसकी भी सचमुच यही धारणाए तथा भावनाए हैं, परन्तु वास्तव मे वह केवल अपने पति के विचारो को परम सत्य मानती थी। उसकी एक मात्र इच्छा थी कि उसके और उसके पति के एक ही विचार हो, उसकी आत्मा और उसके पति की आत्मा मिल कर एक हो जाय। इसी एक स्थिति म ही उसे पूर्ण नैतिक सन्तोष प्राप्त हो सकता था।

अपने पति और बेटे से अलग रहना उसके लिए घोर यन्त्रणा के समान था (बच्चे को उसकी मा ने अपने पास रख लिया था), पर उसने यह भी दृढता और शान्ति से सहन किया क्योकि वह जो कुछ कर रही थी वह अपने पति की खातिर था, और एक ऐसे ध्येय की खातिर जिसे वह निसन्देह श्रेयस्कर मानती थी क्योकि उसका पति उसके लिए काम कर रहा था। उसका पति हर वक्त उसके हृदय म विचरता था, इसलिए उससे दूर रहते हुए भी वह किसी अन्य व्यक्ति से प्रेम नही कर सकती थी, ठीक उसी तरह जिस तरह वह उसके सग रहते हुए किसी अन्य व्यक्ति स प्रेम नही कर सकती थी। परन्तु नावातोव के अनुरक्त तथा पवित्र प्रेम स उसका हृदय प्रभावित हुए बिना न रह सका। यह नेक, दृढ विचारो वाला पुरुष उसके पति का मित्र था और उससे अपनी बहिन की तरह व्यवहार करता था। परन्तु इस व्यवहार मे कोई और तत्व भी आने लगा था जिससे दोनो डर स गये थे, फिर भी इसमे उनका यातनापूर्ण जीवन अधिक रोचक हो उठा था।

इस तरह इस सारी मण्डली म केवल मारीया पाव्लाव्ना और कान्द्रात्येव ही दो ऐसे व्यक्ति थे जो प्रेम से अछूते रह थे।

त्रिनत्सोव के पास बैठा नख्लूदोव बात कर रहा था। उसे आशा थी कि हमेशा की तरह आज भी चाय के बाद कात्यूशा से मिल कर बात कर सकेगा। और विषयो पर चर्चा करने के अलावा नख्लूदोव ने त्रिनत्सोव को माकार के जुर्म की कहानी सुनाई और उससे माकार ने जो प्रार्थना की थी वह भी कह सुनाई। त्रिनत्सोव बडे ध्यान से सब सुनता रहा। उसकी कान्तिपूर्ण आखें सारा वक्त नख्लूदोव के चेहरे पर लगी रही।

"हा," त्रिनत्सोव ने सहसा कहा, "मेरे मन मे अक्सर यह विचार उठता है कि इस यात्रा मे हम सारा वक्त उनके साथ चलते है—और ये कौन लोग है? ये वही लोग है जिनकी खातिर हम जा रहे है फिर भी हम उन्हे नही जानते। जानते ही नही, हम उन्हे जानना चाहते भी नही। और इससे भी बुरी बात यह है कि ये हमसे नफरत करते है, और हम अपना दुश्मन समझते है। कितनी भयानक स्थिति है।"

"इसमे भयानक क्या है?" जब नोवोद्वारोव के कानो मे बात पडी तो वह बोल उठा। "जनता हमेशा शक्ति की पूजा करती है, केवल शक्ति की। आज सरकार के पास ताकत है तो वह सरकार की पूजा करती है और हमसे नफरत करती है। कल हमारे पास ताकत होगी तो वह हमारी पूजा करने लगेगी," उसने अपनी तडकती आवाज मे कहा।

उसी वक्त दीवार के पीछे से गालियो की बौछाड और बेडियो खनकने की आवाज आयी। कोई चीज दीवार से टकरा रही थी साथ ही रोने और चीखने की आवाज आ रही थी। किसी को पीटा जा रहा था और कोई चिल्ला चिल्ला कर पुकार रहा था "मार डाला। मदद करो! कोई मदद करो!"

"जरा सुनो! ये इसान है या दरिन्दे! भला इनमे और हममे क्या मेल हो सकता है?" नोवोद्वोरोव ने स्थिर आवाज मे कहा।

"तुम उन्हे दरिन्दे कहते हो, और यहा अभी नेख्लूदोव मेरे सामने किसी ऐसी ही घटना का जिक्र कर रहा था," क्रिलत्सोव ने चिढ कर कहा और माकार का किस्सा सुनाने लगा कि किस तरह वह अपने गाव के एक आदमी की जान बचाने के लिए अपनी जान जोखिम मे डाल रहा है। "यह दरिन्दो का काम नही, यह सच्ची वीरता का काम है।"

न मानती तो उससे प्रेम ही न करती। और जो प्रेम नही करती तो उससे शादी भी नही करती। पर जब उस सर्वोत्कृष्ट और सबसे योग्य व्यक्ति से प्रेम किया, और शादी की तो यह स्वाभाविक ही था कि जीवन तथा जीवन के ध्येय के बारे मे भी उसके वही विचार हो जो उस सर्वोत्कृष्ट और सबसे योग्य व्यक्ति के थे। पहले इस पुरुष की दृष्टि मे नानापार्जन जीवन का ध्येय था। अत राल्सेवा ने भी यही ध्येय अपना लिया था। जब पति क्रान्तिकारी बना तो यह भी क्रान्तिकारी बन गयी। वह बडी स्पष्टता से यह सिद्ध कर दिखाता था कि मौजूदा व्यवस्था हमेशा नही चल सकती कि प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह इस व्यवस्था के विरुद्ध सघर्ष करे, और ऐसी राजनीतिक तथा आर्थिक हालत पैदा करने का प्रयत्न करे जिनमे व्यक्ति स्वच्छदता से विकास कर सके, इत्यादि। राल्सेवा समझती थी कि उसकी भी सचमुच यही धारणाए तथा भावनाए हैं, परन्तु वास्तव मे वह केवल अपने पति के विचारो को परम सत्य मानती थी। उसकी एक मात्र इच्छा थी कि उसके और उसके पति के एक ही विचार हो, उसकी आत्मा और उसके पति की आत्मा मिल कर एक हो जाय। इसी एक स्थिति मे ही उसे पूर्ण नैतिक सन्ताप प्राप्त हो सकता था।

अपने पति और बेटे से अलग रहना उसके लिए घोर यन्त्रणा के समान था (बच्चे को उसकी मा ने अपने पास रख लिया था), पर उसने यह भी दृढता और शान्ति से सहन किया क्योकि वह जो कुछ कर रही थी वह अपने पति की खातिर था, और एक ऐसे ध्येय की खातिर जिसे वह निसन्देह श्रेयस्कर मानती थी क्योकि उसका पति उसके लिए काम कर रहा था। उसका पति हर वक्त उसके हृदय मे विचरता था, इसलिए उससे दूर रहते हुए भी वह किसी अन्य व्यक्ति से प्रेम नही कर सकती थी, ठीक उसी तरह जिस तरह वह उसके सग रहते हुए किसी अन्य व्यक्ति से प्रेम नही कर सकती थी। परन्तु नावातोव के अनुरक्त तथा पवित्र प्रेम से उसका हृदय प्रभावित हुए बिना न रह सका। यह नेक, दृढ विचारो वाला पुरुष उसके पति का मित्र था और उससे अपनी बहिन की तरह व्यवहार करता था। परन्तु इस व्यवहार मे बाद और तब भी ध्यान सगा था जिससे दोनो डर से गये थे, फिर भी इससे उनका मातापूर्ण जीवन अधिक रोचक हो उठा था।

इस तरह इस सारी मण्डली मे केवल मारीया पाव्लोव्ना और कोन्द्रात्येव ही दो ऐसे व्यक्ति थे जो प्रेम से अछूते रहे थे।

निलत्सोव के पास बैठा नेख्लूदोव बात कर रहा था। उसे ग्राशा थी कि हमेशा की तरह ग्राज भी चाय के बाद कात्यूशा से मिल कर बात कर सकेगा। ग्रौर विषयो पर चर्चा करने के ग्रलावा नख्लूदोव ने क्रिल्त्सोव को मावार के जुर्म की कहानी सुनाई ग्रौर उससे मावार ने जो प्रार्थना की थी वह भी कह सुनाई। क्रिल्त्सोव बडे ध्यान से मन सुनता रहा, उसकी कान्तिपूर्ण ग्राखें सारा वक्त नेख्लूदोव के चेहरे पर लगी रही।

"हा," क्रिल्त्सोव ने सहसा कहा, "मेरे मन मे ग्रक्सर यह विचार उठता है कि इस यात्रा मे हम सारा वक्त उनके साथ चलते है—ग्रौर ये कौन लोग हैं? ये वही लोग हैं जिनकी खातिर हम जा रहे है फिर भी हम उन्हे नही जानते। जानते ही नही, हम उन्हे जानना चाहते भी नही। ग्रौर इससे भी बुरी बात यह है कि ये हमसे नफरत करते है, ग्रौर हमे ग्रपना दुश्मन समझते है। कितनी भयानक स्थिति है।"

"इसमे भयानक क्या है?' जब नावादवोरोव के कानो मे बात पडी तो वह बोल उठा। "जनता हमेशा शक्ति की पूजा करती है, केवल शक्ति की। ग्राज सरकार के पास ताकत है तो वह सरकार की पूजा करती है ग्रौर हमसे नफरत करती है। कल हमारे पास ताकत होगी तो वह हमारी पूजा करने लगेगी," उसने ग्रपनी तडकती ग्रावाज़ मे कहा।

उसी वक्त दीवार के पीछे से गालियो की बौछाड ग्रौर बेडिया खनकने की ग्रावाज़ ग्रायी। कोई चीज़ दीवार से टकरा रही थी, साथ ही रोने ग्रौर चीखने की ग्रावाज़ ग्रा रही थी। किसी को पीटा जा रहा था ग्रौर कोई चिल्ला चिल्ला कर पुकार रहा था, "मार डाला! मदद करो! कोई मदद करो!"

"ज़रा सुनो! ये इसान है या दरिन्दे! भला इनमे ग्रौर हममे क्या मेल हो सकता है?" नोवोद्वोराव ने स्थिर ग्रावाज़ मे कहा।

"तुम उन्हे दरिन्दे कहते हो, ग्रौर यहा ग्रभी नेख्लूदोव मेरे सामने किसी ऐसी ही घटना का जिक्र कर रहा था,' क्रिल्त्सोव ने चिढ कर कहा ग्रौर माकार का किस्सा सुनाने लगा कि किस तरह वह ग्रपने गाव के एक ग्रादमी की जान बचाने के लिए ग्रपनी जान जोखिम मे डाल रहा है। "यह दरिन्दो का काम नही, यह सच्ची वीरता का काम है।'

"छिछली भावुकता!" नावोद्वोरोव ने तिरस्कारपूर्ण स्वर मे जोड़ा। "हमारे लिए यह समझना बड़ा कठिन है कि इन लोगो की क्या भावनाए हैं, या इनकी हरकतो के पीछे कौन सी प्रेरणा काम करती है। तुम्हें इसमे उदारता नजर आती है, पर क्या मालूम यह काम उस दूसरे मुजरिम के प्रति ईर्ष्यावश किया जा रहा हो।"

"क्या कारण है कि तुम किसी मे भी कोई अच्छाई देखना नही चाहते?" सहसा मारीया पाव्लोव्ना गरम हो कर बोल उठी।

"जो चीज मौजूद ही न हो उसे देखा कैसे जा सकता है?"

"मौजूद तो है ही जब एक आदमी ऐसी भयानक मौत का खतरा मोल ले रहा है।"

"मेरे विचार मे," नोवोद्वोरोव बोला, "यदि हम कुछ करना चाहते हैं तो उसके लिए सबसे पहली शर्त यह है" (कोंद्रात्येव जो लैम्प की रोशनी मे बैठा किताब पढ रहा था, किताब नीचे रख कर बड़े ध्यान से अपने गुरू का एक एक शब्द सुनने लगा) "कि हम कपाल-कल्पना को छोड कर वास्तविकता को देखें। यथाशक्ति हमे जनता के लिए सब कुछ करना चाहिए, और बदले मे उससे किसी चीज की भी आशा नही करनी चाहिए। जब तक जनता उस जडता की स्थिति मे रहे जैसी कि वह इस समय है, तो हम उसके लिए काम करेंगे, वह हमारे कामो मे हमारे साथ भाग नही ले सकती।" वह इस तरह बोल रहा था जैसे भाषण दे रहा हो। "इसलिए जनता से यह उमीद करना कि वह हमारी सहायता करेगी, जब कि उसके विकास की प्रक्रिया शुरू नही हो पायी—जिस प्रक्रिया के लिए हम उसे तैयार कर रहे हैं—तो यह अपने को धोखा देना होगा।"

"किस विकास की प्रक्रिया?" क्रिल्त्सोव ने पूछा। उसका चेहरा गुस्से से लाल हो रहा था। "हम कहते तो यह हैं कि हम निरकुश तानाशाही का विरोध करते हैं, मगर यह तानाशाही नहीं तो क्या है? इसमे भयानक तानाशाही क्या होगी?"

"इसमे कोई तानाशाही नही है," नोवोद्वोरोव ने धीरे से कहा। "मैं केवल यह कहता हूँ कि मैं उस रास्ते को जानता हूँ जिस पर जनता को चलना चाहिए, और उसे यह रास्ता मैं दिखा सकता हूँ।"

"पर तुम्हें इस बात का यकीन कैसे हो गया कि जो रास्ता तुम दिखाओगे वही सही रास्ता है? क्या यह वैसी ही तानाशाही नही जैसी

कि फ्रांसीसी क्रान्ति के समय हुई थी जब इन्क्विज़ीशन और फांसियों का बोलबाला होने लगा था। वे भी तो जानते थे कि केवल उन्हीं का रास्ता सही रास्ता है, और विज्ञान द्वारा सुझाया हुआ है।

"उनसे भूल हुई तो इसका यह अर्थ नहीं कि मैं भी भूल कर रहा हूं। इसके अलावा सिद्धान्तवादियों के प्रलाप और उन तथ्यों के बीच बड़ा फर्क है जो ठोस आर्थिक विज्ञान पर आधारित है।"

नोवोद्वारोव की आवाज कमरे में गूंज रही थी। सभी चुप थे, केवल वही बोले जा रहा था।

"ये लोग सारा वक्त झगड़ते रहते हैं," क्षण भर के लिए जब शान्ति हुई तो मारीया पाव्लोव्ना ने कहा।

"तुम्हारी अपनी राय इस बारे में क्या है, तुम खुद क्या सोचती हो?" नेख्लूदोव ने मारीया पाव्लोव्ना से पूछा।

"मेरे विचार में क्रिलत्सोव ठीक कहता है कि हम जनता पर अपने विचार नहीं ठोसने चाहिए।"

"और तुम्हारा क्या विचार है कात्यूशा?" नेख्लूदोव ने मुस्करा कर पूछा और उसके उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा। उसे डर था कि कहीं कात्यूशा कोई बेढब सी बात न कह दे।

"मैं सोचती हूं कि साधारण लोगों के साथ जुल्म होता है" कात्यूशा बोली और उसका चेहरा लाल हो गया, "मेरा ख्याल है उनके साथ बहुत भयानक जुल्म होता है।"

"ठीक है, मास्लोवा तुम बिल्कुल ठीक कहती हो," नाबातोव ने चिल्ला कर कहा। "जनता के साथ भयानक जुल्म होता है, यह जुल्म बन्द होना चाहिए, और इसे बन्द करना ही हमारा एकमात्र कर्तव्य है।"

"क्रान्ति के उद्देश्य की यह अनोखी परिभाषा है," नोवोद्वारोव ने चिढ़ कर कहा और चुपचाप सिगरेट पीने लगा।

"इसके साथ बात करने को मेरा जी नहीं चाहता," क्रिलत्सोव ने फुसफुसा कर कहा और चुप हो गया।

"बातें करने का कोई लाभ भी नहीं," नेख्लूदोव बोला।

सभी क्रान्तिकारी नोवाद्वोरोव की बड़ी इज्जत करते थे। वह बड़ा विद्वान आदमी था और सभी उसे बड़ा बुद्धिमान समझते थे। फिर भी नेख्लूदोव उसकी गणना उन क्रान्तिकारियों में करता था जिनका नैतिक स्तर औसत स्तर से नीचा होते हुए उससे स्तर से बहुत ही नीचा था। इस आदमी में प्रखर बौद्धिक शक्ति थी, परन्तु आत्मश्लाघा इससे भी कहीं बढ़ चढ़ कर थी। वह उसकी बौद्धिक शक्ति से कहीं ज्यादा बढ़ चुकी थी।

अपने आत्मिक जीवन में यह सिमनसन के बिल्कुल उलट था। सिमनसन मूलतः पुरुषसुलभ चरित्र वाले उन लोगों में से था जो हर काम अपनी बुद्धि के अनुसार करते हैं, और उनकी बुद्धि ही उन कामों का निश्चय भी करती है। इसके विपरीत नोवोद्वारोव उन लोगों में से था,—ये मूलतः नारी चरित्र के होते हैं,—जो हर काम भावनाओं की प्रेरणा से करते हैं, और अपनी बुद्धि का किसी हद तक उन्हें क्रियान्वित करने में और किसी हद तक उन्हें सच्चा ठहराने के लिए तर्क करने में लगाते हैं।

नोवाद्वोरोव अपने क्रान्तिकारी काम की बड़ी वाक्पटुता तथा प्रभावशाली ढंग से व्याख्या किया करता था। परन्तु नेख्लूदोव के विचार में यह सारा क्रान्तिकारी काम स्वयं ऊँचा उठने और सबसे ऊपर का स्थान ग्रहण करने की लालसा पर आधारित था। शुरू शुरू में लोगों के विचार आत्मसात करने और उन्हें यथार्थ शब्दों में व्यक्त करने की अपनी क्षमता के कारण उसे हाई स्कूल तथा विश्वविद्यालय के छात्रों तथा अध्यापकों में सर्वोच्च स्थान मिला क्योंकि वहां पर ऐसी क्षमता की बेहद कद्र होती है। नोवोद्वोरोव सन्तुष्ट था। परन्तु जब उसने पढ़ाई खत्म कर ली और डिप्लोमा ले लिया, और यह सर्वोच्च स्थिति छूट गई, तो उसने फौरन अपने विचार बदल लिये ताकि किसी दूसरे क्षेत्र में यही सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर सके (क्रिलत्सोव का यही कहना था जिसे नोवोद्वोरोव अच्छा नहीं लगता था)। पहले नोवोद्वोरोव नरम उदारवादी हुआ करता था, अब बदल कर नरोदवादियों का कट्टर अनुयायी बन गया। नोवाद्वोरोव का स्वभाव उन नैतिक तथा ललित भावनाओं से सर्वथा शून्य था जिनसे मनुष्य के मन में सन्देह तथा संकोच पैदा होते हैं। इसलिए शीघ्र ही

शान्ति जगत में उसने ऐसा स्थान प्राप्त कर लिया जिससे उसे सन्तोष हुआ। यह स्थान पार्टी लीडर का था। एक बार अपना मार्ग चुन लेने के बाद उसने कभी सन्देह अथवा सकोच नहीं किया इसलिए उसे पूर्ण विश्वास था कि उसने कभी कोई भूल नहीं की। उसे हर चीज बिल्कुल सरल स्पष्ट तथा निश्चित नजर आती थी। और उसके विचार इतने सकीर्ण तथा एकागी थे कि यह स्वाभाविक भी था। बस केवल तर्कसगत होने की जरूरत थी, जैसे कि वह स्वय कहा करता था। उसमें आत्मविश्वास की मात्रा इतनी अधिक थी कि या तो लोग उससे दूर हट जाते थे या फिर उसकी सत्ता स्वीकार कर लेते थे। उसका कार्यक्षेत्र तरुण युवकों तथा युवतियों के बीच था। वे लोग इसके असीम आत्मविश्वास को विद्वत्ता और गहराई समझ बैठते थे। अधिकांश उसकी धाक मान लेते जिस कारण क्रान्तिकारी मडलियों में उसे बहुत सफलता मिली थी। उसका काम एक ऐसे विद्रोह के लिए जमीन तैयार करना था जिसमें सत्ता उसके हाथ आ जायगी, और वह एक *विधान-सभा की व्यवस्था करेगा। विधान-सभा में* उस द्वारा तैयार किया गया कार्यक्रम प्रस्तुत होगा। उसे यकीन था कि उसका यह कार्यक्रम सभी समस्याओं का समाधान कर देगा और अनिवार्यत यह क्रियान्वित होगा।

उसकी दृढता तथा साहस के लिए उसके साथी उसका मान करते थे, परन्तु उससे प्रेम नहीं करते थे। उसे किसी से भी प्रेम नहीं था, और प्रत्येक प्रतिभावान् व्यक्ति को वह अपना प्रतिद्वन्द्वी समझता था। और यदि उसका बस चलता तो सभी के साथ ऐसा ही व्यवहार करता जैसे बदरों में बूढा नर बदर छोटे बदरों से करता है। यदि उसका बस चलता तो अन्य लोगों की खोपडी में से वह उनका दिमाग नोच निकालता, उनकी क्षमता निकाल देता ताकि वे इसके दिमागी करिश्मे में बाधा न डाल पायें। उसका व्यवहार केवल उन लोगों के प्रति अच्छा होता था जो उसके आगे सिर नवाते थे। आजकल, इस यात्रा में उसका व्यवहार कोन्द्रात्येव से जिस पर उसके प्रचार का बडा प्रभाव था, तथा वेरा बोगोदूखोव्स्काया और नन्ही सुन्दरी ग्राबेत्स से अच्छा था जो दोनों उससे प्रेम करती थीं। सिद्धान्तत तो वह स्त्री आन्दोलन के हक में था, लेकिन मन की गहराइयों में वह सभी स्त्रियों को मूर्ख और नगण्य समझता था, केवल उन स्त्रियों को छोड कर जिनसे वह भावुकतावश प्रेम करने लगता था, जिस तरह

ग्राजकल वह ग्रावेत्स से करता था। ऐसी स्त्रिया उसे विलक्षण लगती थी और वह मानता था कि अकेले उसी मे उनके सूक्ष्म गुणो का पहचानने की क्षमता है।

स्त्रिया और पुरुषा के बीच कैसा सम्बध होना चाहिए? यह प्रश्न भी अय प्रश्ना की तरह उसे बहुत सरल और स्पष्ट जान पडता था और उसने इसका पूरा पूरा हल ढढ लिया था, और वह था स्वतन्त्र सभोग।

उसके दो पत्निया थी, एक जो केवल नाममात्र से पत्नी थी, और दूसरी वास्तव मे पत्नी थी, परन्तु उससे वह अलग हो चुका था, क्याकि उसे विश्वास हो गया था कि उनके बीच सच्चा प्रेम नही है। इसलिए अब वह ग्रावेत्स के साथ स्वतन्त्र सभोग का सम्बध स्थापित करने की सोच रहा था।

नावोद्वोरोव को नेख्लूदोव से घृणा थी। वह कहा करता कि नेख्लूदोव मास्लोवा से "चोचले ले रहा है", पर घृणा का मुख्य कारण यह था कि नेख्लदोव बडे स्वतत्र मन से मौजूदा व्यवस्था के दोपो तथा उन्हें दूर करने के साधनो पर विचार किया करता था। नेख्लूदोव का विचार करने का ढग नोवोद्वोरोव के ढग से पथक था और बिल्कुल अपना था, एक *प्रिस का अर्थात एक मूख का ढग था।* नेख्लूदोव नोवाद्वोराव के इस रवय का जानता था। इस यात्रा मे उसके मन की स्थिति सामायत बडी सदभावनापूण थी। इसके बावजूद वह इस आदमी के साथ "जसे को तैसे" का व्यवहार करता था और उस घृणा को दबा नही पाता था जो उसके मन मे नोवोद्वोरोव के प्रति उठती थी। इसी कारण मन ही मन वह दुखी था।

१६

साथ वाल कमरे मे से सरकारी कमचारियो की आवाजे आन लगी। सभी कैदी चुप हो गये। एक सॉर्जेंट कमरे मे दाखिल हुआ, और उसके पीछे पीछे दो कॉनवाय के सिपाही अदर आये। जाच का वक्त हो गया था। सॉर्जेंट ने *एक एक कर के सभी कदिया का गिना। जब* नेख्लूदाव की बारी आयी ता बडे दोस्ताना ढग से बोला--

"जाच के बाद आप यहा नही ठहर सकत, प्रिस। आपको अब चले जाना चाहिए।"

नेख्लूदोव जानता था कि इसका क्या मतलब है। वह सार्जेंट के पास गया और तीन रूबल का एक नोट उसके हाथ में रख दिया।

"ओह, आप जैसों का कोई क्या इलाज करे। अगर मन चाहता है तो बेशक थोड़ी देर और रुक जाइये।"

सॉर्जेंट कमरे में से बाहर जाने ही वाला था जब एक और सार्जेंट ने कमरे में प्रवेश किया। उसके पीछे पीछे एक कैदी चला आ रहा था। कैदी पतले छरहरे बदन का आदमी था, मुंह पर छोटी सी दाढ़ी और एक आंख के नीचे चोट का निशान था।

"मैं लड़की को लेने के लिए आया हूं," कैदी ने कहा।

"ओह, पिता जी आ गये!" एक बच्चे की खिलखिलाती आवाज सुनाई दी। फिर रात्सेवा के पीछे से एक सुनहरी बालों वाला सिर नमूदार हुआ। रात्सेवा लड़की के लिए कात्यूशा तथा मारीया पाव्लोव्ना की मदद से अपने ही एक पेटीकोट में से एक कुर्ता बना रही थी।

"हां, बेटी, मैं ही आया हूं," कैदी ने प्यार से कहा। उसका नाम बुजोव्किन था।

"यहां यह बड़े आराम से रहती है," बुजोव्किन के छिले पिटे चेहरे की ओर दयापूर्ण आंखों से देखते हुए मारीया पाव्लोव्ना ने कहा, "इसे हमारे पास ही रहने दीजिये।"

"रानी दीदी मेरे लिए नये कपड़े बना रही हैं" रात्सेवा के हाथ में कपड़े को दिखाती हुई लड़की बोली, "कितने अच्छे कपड़े बना रही हैं, कितने सुंदर!" लड़की बोलती गई।

"तुम हमारे पास सोना चाहती हो?" रात्सेवा ने लड़की को सहलाते हुए पूछा।

"हां, सोना चाहती हूं। और पिता जी भी।"

रात्सेवा के चेहरे पर मुस्कराहट खिल उठी।

नहीं, पिता जी नहीं सो सकते। तो हम इसे यहीं पर रखेंगे।" पिता की ओर घूम कर रात्सेवा ने कहा।

"अच्छी बात है, इसे यहीं छोड़ जाओ," पहले सार्जेंट ने कहा और दूसरे सार्जेंट को साथ ले कर बाहर चला गया।

ज्यों ही सार्जेंट बाहर निकले तो नाबातोव बुजोव्किन के पास गया, और उसका कंधा थपथपा कर बोला—

"कहो दोस्त, क्या यह ठीक है कि कार्मानोव अपनी जगह बदलना चाहता है?"

कुजोविन का विनम्र, दयालुतापूर्ण चेहरा सहसा उदास हो उठा, और एक धुंधला सा पर्दा उसकी आखो के आगे छा गया।

"हमने कुछ नही सुना," उसने धीरे से कहा, फिर उसी धुंधलके मे देखते हुए उसने बच्ची की ओर घूम कर कहा, "अक्स्यूत्का, तो जान पडता है तुम अपनी रानिया के साथ ही रहना चाहती हो।" और जल्दी जल्दी बाहर चला गया।

"तबादले की बात ठीक है, और उसे यह अच्छी तरह पता है," नाबातोव ने कहा। "तुम क्या करोगे?"

"अगले शहर पहुच कर मैं अधिकारियो का बता दूगा। मैं दोना कैदियो को पहचानता हू," नेख्लूदोव ने कहा।

सभी चुप हो गये। उन्हे डर लगन लगा कि वाद विवाद फिर शुरू हो जायेगा।

सिमनसन सिर के नीचे दानो बाजू रखे चुपचाप लेटा हुआ था। अब वह उठ खडा हुआ और बैठे हुए लोगो के इर्दगिर्द बडे ध्यान से चक्कर काट कर, नेख्लूदोव के पास गया।

"क्या इस वक्त मैं तुमसे बात कर सकता हू?"

"जरूर," और नेख्लूदोव उठ कर उसके पीछे पीछे जाने लगा।

कात्यूशा ने आख उठा कर ऊपर देखा। उसके चेहरे पर हैरानी का भाव था। जब उसकी आखे नेख्लदोव की आखा से मिली तो वह शर्मा गयी और सिर हिला दिया।

"मैं इस बारे मे तुमसे बात करना चाहता हू," जब दोना गलियारे मे आ गये तो सिमनसन ने कहना शुरू किया। गलियारे मे कैदिया की आवाजे और चिल्लाहट और भी ऊची सुनाई द रही थी। नेख्लदाव ने मुह बनाया लेकिन सिमनसन इस शोर से बिल्कुल विचलित नही हुआ जान पडता था। "मैं मास्लोवा और तुम्हारे सम्बन्धा को जानता हू," अपनी स्नेहसिक्त आखा से बडे ध्यान से सीधे नेख्लदोव की आखा मे देखते हुए उसने आगे कहा। "इसलिए मेरा कर्तव्य है कि " वह अपनी बात जारी रखना चाहता था, किंतु उसे रुकना पडा क्योकि दरवाजे के पास ही दो आदमी सहसा झगडने और चिल्लाने लगे थे।

"मैंने वह जो दिया है गधे पही म वे मर नही थ!" एक आदमी ने चिल्ला कर कहा।

"ख़ुदा तुम्हे गारत करे, शैतान नहीं रे! फरा आवाज म ग्मरा चिल्ला रहा था।

इसी वक्त मारीया पाव्लोव्ना बाहर गलियारे म आ गया।

"यहा कोई कैसे बात कर सकता है? उसने कहा। "तुम इस कमरे मे चले जाओ। अकेली वेरा ही उस कमरे म है। कहती हुई वह दूसरे दरवाजे म से जा कर एक छोटे से कमरे म दाखिल हुई। प्रत्यक्षत यह कमरा कैद-तनहाई के लिए बनाया गया था लेकिन इस समय राजनीतिक महिला कैदियो को द दिया गया था। वेरा वागोदूखोव्स्काया मुह सिर लपेटे, बिस्तर पर लेटी थी।

"उसका सिर दुख रहा था इसलिए सो गयी है। वह तुम्हारी बात नही सुन सकती, और मैं यहा से जा रही हू" मारीया पाव्लोव्ना न कहा।

"नही नही, बल्कि तुम यही पर रहो, सिमनसन बोला। 'मेरा कुछ भी किसी से छिपा हुआ नही है—कम से कम तुमसे तो बिल्कुल ही नही।'

"अच्छी बात है," मारीया पाव्लोव्ना न कहा और बच्चो की तरह अपना सारा शरीर दाय-बाये झुलाती हुई वापस सोने वाले तख्ते के पास जा पहुची और उनकी बाते सुनने के लिए बैठ गयी। उसकी सुदर भूरी आखें दूर किसी जगह पर लगी हुई थी।

"तो सुनो, मुझे तुमसे यह काम है," सिमनसन ने दोहरा कर कहा। "कात्यूशा मास्लोवा के साथ तुम्हारे सम्बन्ध का मुझे मालूम है। इसलिए मेरा यह फर्ज हो जाता है कि मैं उस स्त्री के साथ अपने सम्बन्ध के बारे म तुम्हें साफ साफ बता दू।"

नेख्लूदोव मन ही मन उस सादगी और साफगाई का आदर किय बिना न रह सका जिससे सिमनसन बात करने लगा था।

"क्या मतलब?" उसने पूछा।

"मेरा मतलब यह है कि मैं कात्यूशा मास्लोवा से शादी करना चाहता हू।"

"क्या कहा!" मारीया पाव्लोव्ना न हैरान हो कर कहा और सिमनसन की ओर देखने लगी।

"मैंने निश्चय किया है कि उसके सामने शादी का प्रस्ताव रखूगा," सिमनसन कहता गया।

"तो इसमे मैं क्या कर सकता हू ? यह उसका अपना मामला है," नख्लूदोव ने कहा।

"पर वह तुम्हारे बिना किसी निश्चय पर नही पहुच पायेगी।"

"क्यो ?"

"क्योकि जब तक उसके साथ तुम्हारे सम्बन्ध का कोई फैसला नही हो जाता, वह कोई फैसला नही कर सकती।"

"जहा तक मेरा ताल्लुक है, इसका फैसला हो चुका है। मैं केवल अपना फर्ज अदा करना चाहता हू, और उसके दुर्भाग्य का बोझ हल्का करना चाहता हू। पर मैं किसी सूरत मे भी उस पर कोई दबाव नही डालूगा।"

"हा, लेकिन वह तुम्हारी कुर्बानी कबूल करना नही चाहती।'

"यह कोई कुर्बानी नही है।"

"और मैं जानता हू कि यह मास्लोवा का आखिरी फैसला है।"

"तो फिर मेरे साथ इसकी चर्चा करने की कोई जरूरत नही," नख्लूदोव ने कहा।

"वह चाहती है कि तुम इस बात को स्वीकार करो कि तुम्हारा भी वही विचार है जो उसका है।"

"मैं यह कैसे स्वीकार कर लू कि जिस काम को मैं अपना कर्तव्य समझता हू, उसे नही करू ? मैं केवल इतना कह सकता हू कि मैं आजाद नही हू, पर वह आजाद है।"

सिमनसन चुप रहा। फिर, थोडी देर तक सोचने के बाद बोला—

"अच्छी बात है, तो मैं उससे बात करूगा। तुम यह मत समझो कि मैं उस पर फिदा हू," वह कहता गया, "मैं उससे इस नाते प्रेम करता हू कि वह एक श्रेष्ठ और विलक्षण नारी है जिसने बहुत दुख सहन किये हैं। मैं उससे कुछ भी नही चाहता। मेरे हृदय म यही तीव्र लालसा है कि मैं उसकी सहायता करू ताकि "

सिमनसन की आवाज लडखडा गयी, जिसे देख कर नख्लूदोव को बडी हैरानी हुई।

" उसकी स्थिति को कुछ आसान कर पाऊ,' सिमनसन कहता

गया। "यदि मास्लोवा को तुम्हारी सहायता मजूर नही तो वह मेरी सहायता स्वीकार कर ले। अगर वह मान जाय तो मैं दरख्वास्त दे दूगा कि मुझे भी उसी जगह रखा जाय जहा उसे रखा जायगा। चार साल कोई बहुत लम्बा अर्सा नही है। मैं उसके समीप रहूगा और शायद उसके दुर्भाग्य का बोझ हल्का कर पाऊ "

वह फिर बोलते बोलते चुप हो गया। वह इतना उत्तेजित हो उठा था कि उसके लिए बोलना कठिन हो गया था।

"मैं क्या कहू?" नेख्लूदोव ने कहा। "मुझे इस बात की खुशी है कि उसे तुम जैसा रक्षक मिला है "

"मैं यही जानना चाहता था," सिमनसन बीच मे बोल उठा, "तुम उससे प्रेम करते हो, उसका सुख चाहते हो इसी लिए मैं जानना चाहता था कि यदि मैं उससे शादी करू तो तुम इसे मास्लोवा के लिए हितकर समझोगे या नही?"

"हा, जरूर " नेख्लूदोव ने निश्चयात्मक स्वर मे कहा।

"सब बात मास्लोवा पर निर्भर है। मैं तो केवल यही चाहता हू कि उसकी दुखी आत्मा को शान्ति मिले ' बच्चो की सी मृदुता के साथ सिमनसन ने कहा, जिसकी इतने गभीर दिखने वाले व्यक्ति से आशा नही हो सकती थी।

सिमनसन उठ कर नेख्लूदोव के पास गया और शर्म से मुस्कराते हुए उसका मुह चूम लिया।

"मैं मास्लोवा से यह कह दूगा उसने कहा और वहा से चला गया।

१७

"वाह यह खूब रही!' मारीया पाव्लोव्ना ने कहा। 'इसे तो प्रेम हो गया है। सचमुच प्रेम हो गया है। किस उमीद थी कि व्लादीमिर सिमनसन प्रेम करने लगेगा, और वह भी पागलो की तरह, बिल्कुल लड़को की तरह! कितनी अजीब बात है। और सच पूछो तो मुझे तो इसका अफसोस हुआ है," उसने उसास भरी।

"पर वह—कात्यूशा? तुम्हारा क्या ख्याल है, वह इस बारे मे क्या सोचती होगी?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"मैंने निश्चय किया है कि उसके सामने शादी का प्रस्ताव रखूंगा," सिमनसन कहता गया।

"तो इसमें मैं क्या कर सकता हूं? यह उसका अपना मामला है," नख्लूदोव ने कहा।

"पर वह तुम्हारे बिना किसी निश्चय पर नहीं पहुंच पायेगी।"

"क्यों?"

"क्योंकि जब तक उसके साथ तुम्हारे सम्बंध का कोई फैसला नहीं हो जाता, वह कोई फैसला नहीं कर सकती।"

"जहां तक मेरा ताल्लुक है, इसका फैसला हो चुका है। मैं केवल अपना फर्ज अदा करना चाहता हूं, और उसके दुर्भाग्य का बोझ हल्का करना चाहता हूं। पर मैं किसी सूरत में भी उस पर कोई दबाव नहीं डालूंगा।"

"हां, लेकिन वह तुम्हारी कुर्बानी कबूल करना नहीं चाहती।"

"यह कोई कुर्बानी नहीं है।"

"और मैं जानता हूं कि यह मास्लोवा का आखिरी फैसला है।"

"तो फिर मेरे साथ इसकी चर्चा करने की कोई जरूरत नहीं," नख्लूदोव ने कहा।

"वह चाहती है कि तुम इस बात को स्वीकार करो कि तुम्हारा भी वही विचार है जो उसका है।"

"मैं यह कैसे स्वीकार कर लूं कि जिस काम को मैं अपना कर्तव्य समझता हूं, उसे नहीं करूं? मैं केवल इतना कह सकता हूं कि मैं आज़ाद नहीं हूं, पर वह आज़ाद है।"

सिमनसन चुप रहा। फिर, थोड़ी देर तक सोचने के बाद बोला—

"अच्छी बात है, तो मैं उससे बात करूंगा। तुम यह मत समझो कि मैं उस पर फिदा हूं,' वह कहता गया, "मैं उससे इस नाते प्रेम करता हूं कि वह एक श्रेष्ठ और विलक्षण नारी है जिसने बहुत दुख सहन किये है। मैं उससे कुछ भी नहीं चाहता। मेरे हृदय में यही तीव्र लालसा है कि मैं उसकी सहायता करूं ताकि '

सिमनसन की आवाज़ लड़खड़ा गयी, जिसे देख कर नेख्लूदोव को बड़ी हैरानी हुई।

" उसकी स्थिति को कुछ आसान कर पाऊं" सिमनसन कहता

गया। "यदि मास्लोवा को तुम्हारी सहायता मंजूर न हो तो वह मेरी सहायता स्वीकार कर ले। अगर वह मान जाय तो मैं दरख्वास्त दे दूंगा कि मुझे भी उसी जगह रखा जाय जहां उसे रखा जायगा। चार साल का बहुत लम्बा अरसा नहीं है। मैं उसके समीप रहूंगा और शायद उसके दुर्भाग्य का बोझ हल्का कर पाऊं"

वह फिर बोलते बोलते चुप हो गया। वह इतना उत्तेजित था कि उसके लिए बोलना कठिन हो गया था।

"मैं क्या कहूं?" नेख्लूदोव ने कहा। "मुझे इस बात की खुशी है कि उसे तुम जैसा रक्षक मिला है"

"मैं यही जानना चाहता था" सिमनसन ने बीच में बात काटी "तुम उससे प्रेम करते हो, उसका सुख चाहते हो इसी लिए मैं जानना चाहता था कि यदि मैं उससे शादी करूं तो तुम इसे मास्लोवा के लिए हितकर समझोगे या नहीं?"

"हां जरूर" नेख्लूदोव ने निश्चयात्मक स्वर में कहा।

"सब बात मास्लोवा पर निर्भर है। मैं तो केवल यही चाहता हूं कि उसकी दुखी आत्मा को शांति मिले" बच्चों की सी मृदुता के साथ सिमनसन ने कहा, जिसकी इतने गंभीर दिखने वाले व्यक्ति से आशा नहीं हो सकती थी।

सिमनसन उठ कर नेख्लूदोव के पास गया और शर्म से मुस्कराते हुए उसका मुंह चूम लिया।

"मैं मास्लोवा से यह कह दूंगा" उसने कहा और वहां से चला गया।

१७

"वाह, यह खूब रही।" मारीया पाब्लोव्ना ने कहा। "इस तो प्रेम हो गया है। सचमुच प्रेम हो गया है। किसे उम्मीद थी कि ब्लादीमिर सिमनसन प्रेम करने लगेगा, और वह भी पागलों की तरह, बिल्कुल लड़कों की तरह। कितनी अजीब बात है। और सच पूछो तो मुझे तो इसका अफसोस हुआ है," उसने उसांस भरी।

"पर वह—कात्यूशा? तुम्हारा क्या ख्याल है, वह इस बारे में क्या सोचती होगी?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"वात्यशा?" मारीया पाव्लोव्ना रुक गयी। जाहिर था कि वह सोच कर, यथासभव ठीक ठीक उत्तर देना चाहती थी। "वह? बात यह है कि उसका अतीत चाहे जैसा भी रहा हो, परतु जहा तक उसके स्वभाव का सवाल है, उसम अधिक नतिक स्त्री शायद ही कोई हो। बडी कोमल भावनाओ वाली स्त्री ह। वह तुमसे प्रेम करती है, और बहुत अच्छी तरह से प्रेम करती है। वह नही चाहती कि तुम्हारा जीवन उसके साथ उलझ जाय। उमे इसी बात की खुशी है कि वह तुम्ह ऐसा करने से रोके रहेगी। तुम्हारे साथ शादी कर के वह अपनी नजरो मे गिर जायगी। और यह यत्रणा उसके लिए उन सब यन्त्रणाओ से भयानक होगी जिन्ह वह पहले सहन कर चुकी है। इसलिए वह इस पर कभी भी रजामद नही होगी। पर इसके बावजूद तुम्हारे यहा मौजूद रहने से वह विचलित होती है।"

"तो फिर मैं क्या करू? क्या यहा से गायब हो जाऊ?"

मारीया पाव्लोव्ना के होठो पर बच्चो की सी मधुर मुस्कान आयी। वह बोली—

"हा, किसी हद तक।"

"किसी हद तक कोई कसे गायब हो सकता है?"

"मैं यो ही कह गई। पर जहा तक मास्लोवा का ताल्लुक है, मैं कहूगी कि वह भी शायद समझती है कि सिमनसन का इस तरह उन्मादियो की तरह उसे प्यार करना बेवकूफी है। इससे वह खुश भी होती है और डरती भी है। सिमनसन ने उससे अभी बात नही की। तुम जानते हो मैं इन बातो म कोई फसला देने की योग्यता नही रखती। फिर भी मैं समझती हू कि सिमनसन की भावनाए उसके प्रति एक साधारण पुरुष की सी भावनाए है, हालांकि वे प्रकट मे ऐसी नजर नही आती। वह कहता तो है कि इस प्रेम से उसके शरीर मे ओज का सचार होता है, और यह पवित्र प्रेम है, पर मैं जानती हू कि विलक्षण होते हुए भी, इसकी तह म वही गदगी है वही जो नावोद्वोरोव और ग्रावेत्स के प्रेम मे है।"

मारीया पाव्लोव्ना जिस बात को ले कर चली थी, वह उसे भूल गयी, और इस चहेते मजमून पर बोलने लगी।

"तो बताओ मैं क्या करू?' नेख्लूदोव ने पूछा।

"मैं सोचती हू तुम्ह मास्लोवा से खुल कर सारी बात कर लनी चाहिए। सब बात साफ होनी चाहिए, हमेशा यही अच्छा होता है। तुम

उससे बात कर लो। मैं उसे बुलाती हू। बुलाऊ?" मारीया पाव्लोव्ना ने कहा।

"हा, धयवाद।"

मारीया पाव्लोव्ना वाहर चली गयी।

जब नेख्लदोव इस छोटे स कमरे मे अकेला रह गया तो विचित्र सा महसूस करने लगा। वेरा सो रही थी। उसके धीमे धीमे सास लेने की आवाज़ नेख्लूदोव के कानो म पड रही थी। किसी किसी वक्त वह कराह सी उठती। दो दरवाज़ा के पीछे स, जो उसे मुजरिम कदिया मे अलग किये हुए थे, बराबर शार-गुल की आवाज़ आ रही थी।

सिमनसन की बात ने उसे उस कतव्य से मुक्त कर दिया था जो नेख्लदोव ने अपने ऊपर ले रखा था। जब कभी उसम दुवलता आती तो यह कतव्य उसे बडा अजीव और कठिन लगा करता था। लेकिन इस समय उसके मन म जो भावना उठी वह न केवल अप्रिय ही थी बल्कि दु खद भी थी। उस ऐसा महसूस हो रहा था जैसे सिमनसन के प्रस्ताव ने उसकी विलक्षण कुर्वानी को मिट्टी म मिला दिया है, जिसस उस कुर्वानी का मूल्य उसकी नज़रा मे तथा अय लोगो की नजरा म कम हो गया है। यदि सिमनसन जसा भला आदमी जिसका मास्लोवा क प्रति कोई दायित्व नही, अपनी किस्मत उसकी किस्मत के साथ जोडना चाहता है तो फिर उसकी कुर्वानी तो सचमुच कोई बडी कुर्वानी नही थी। सभव है इस भावना म साधारण ईर्ष्या का भी हल्का सा पुट रहा हो। वह मास्लोवा े प्रेम का इतना आदी हो गया था कि वह स्वीकार नही कर सकता था ा वह किसी दूसरे से भी प्रेम कर सकती है। इतना ही नही। नेख्लूदोव जो यह योजना बना रखी थी कि जहा पर मास्लोवा रहेगी उसी के दीक वह भी रहेगा, वह योजना भी अब किसी काम की न रही थी। र सिमनसन के साथ उसने शादी कर ली तो उसकी वहा कोई ज़रूरत रहेगी, और उसे अपने लिए कोई और रास्ता अख्तियार करना पडेगा।

अभी वह अपनी भावनाओ की माप-तौल भी पूरी तरह नही कर पाया था कि दरवाज़ा खुला और कात्यूशा अन्दर आ गयी। दरवाज़ा खुलने की देर थी कि कदियो का शोर-गुल सुनाई देने लगा (आज कोई खास बात उनके बाच हो गयी थी)।

33—120

बडी चुस्ती से कदम रखती हुई कात्यूशा सीधी नेख्लदोव के पास जा खडी हुई।

'मारीया पाव्लोव्ना ने मुझे भेजा है," उसने कहा।

"हा, मुझे तुमसे दो बात करनी है। बैठो। अभी अभी व्लादीमिर सिमनसन मेरे साथ बाते कर रहा था।"

कात्यूशा बैठ गयी थी, और अपने दोना हाथ जोड कर गोद मे रख लिये थे। वह काफी शान्त नजर आती थी, लेकिन नेख्लूदोव के मुह से ज्या ही सिमनसन का नाम निकला, तो कात्यूशा का चेहरा लाल हो गया।

"क्या कहता था?" उसने पूछा।

"कहता था कि वह तुमसे शादी करना चाहता है।"

सहसा उसका चेहरा मुर्झा गया, उस पर वेदना झलकने लगी। पर वह कुछ भी बोली नही, केवल आखें नीची कर ली।

"वह मुझसे मेरी रज़ामदी मागता है या यह कि मैं कुछ मशविरा दू। मैंने उसे कह दिया है कि सारी बात तुम पर निर्भर करती है। इसका निश्चय तुम्हे करना है।"

"उफ, इस सब का क्या मतलब है? क्यो?" कात्यूशा बुदबुदायी, और नेख्लूदोव की आखो मे आखें डाल कर देखा। उस समय उसकी आखो मे वह ऐचापन था जो हमेशा नेख्लूदोव को अजीब ढग से विचलित कर दिया करता था। कुछ क्षणा तक वे चुपचाप बठे एक दूसरे को देखते रहे। इस नज़र ने बहुत कुछ एक दूसरे से कहा।

"तुम्हे फैसला करना होगा,' नेख्लूदोव ने दोहरा कर कहा।

"मैं क्या फैसला करू? सब बाता का कब से फैसला हो चुका है।"

"नही, तुम्हे इस बात का फैसला करना होगा कि तुम्हे सिमनसन का प्रस्ताव मजूर है या नही,' नेख्लूदोव ने कहा।

"मैं तो सज़ायाफ्ता मुजरिम हू। मैं किसी की क्या बीवी बनूगी? क्या मैं व्लादीमिर सिमनसन की जिन्दगी को भी बर्बाद करू?" उसने भौहे चढाते हुए कहा।

"और अगर सज़ा मसूख हो जाय तो?'

"आह, छोडिये भी ये बात, मुझे और कुछ नही कहना है,' कात्यूशा ने कहा और उठ कर कमरे से जाने लगी।

कात्यूशा के पीछे पीछे नेख्लूदोव भी मर्दो के कमरे मे वापस लौट आया। वहा पर सभी लाग बडे उत्तेजित हा रहे थे। नाबातोव अभी अभी एक खबर लाया था, जिसे सुन कर सभी चक्रा गये थ। नाबातोव सब जगह घूमता, लोगा से दास्तिया गाठता था, ग्रार काई बात उससे छिपी न रहती थी। खबर यह थी कि उसने एक दीवार पर एक सन्देश लिखा देखा था। यह सन्देश क्रान्तिकारी पेत्लिन की ओर स था जिसे कडी मशक्कत की सजा मिली थी। सब लोग समझे बैठे थे कि वह कब का कारा पहुच चुका होगा, लेकिन अब पता चला कि वह कुछ ही दिन पहले इस तरफ से गुजरा है। *सजायाफ्ता मुजरिमा मे वही अकेला राजनीतिक* बन्दी था।

"सत्तरह अगस्त के दिन," नोट म लिखा था, "मुझे आम मुजरिम के साथ अकेले भेजा गया। नेवेरोव भी मेरे साथ था लेकिन कजान मे पहुच कर उसने पागलखाने मे आत्महत्या कर ली। मेरा स्वास्थ्य ठीक है और उत्साह भी ज्यो का त्या कायम है। मुझे पूण आशा है कि भविष्य उज्ज्वल हागा।" सभी लोग पेत्लिन की स्थिति और नेवेरोव की आत्महत्या की बात कर रह थे। वे सोच रहे थे कि इस आत्महत्या के पीछे क्या कारण रहे होगे। केवल क्रिल्तसाव चुपचाप बैठा कुछ सोच रहा था। उसकी आखें चमक रही थी और एकटक सामने की ओर देखे जा रही थी।

"मेरे पति ने मुझसे एक दिन कहा था कि जब नेवेरोव अभी पीटर पॉल किले मे बन्द था तो उसे प्रेत दिखाई देने लगे थे," रान्सेवा न कहा।

"हा, वह ता कवि था, ख्वाब देखने वाला आदमी था। ऐसे लोग कैद-तनहाई बर्दाश्त नही कर सकते," नोवोद्वोरोव ने कहा। "मुझे याद है जब मै कैद-तनहाई मे था ता मैंने कभी भी अपनी कल्पना की बाग-डोर ढीली नही पडने दी। मैं एक एक दिन का कायक्रम बडे बाकाइदा तौर पर निश्चित कर लिया करता था, इसलिए कैद-तनहाई बडे आराम से बितायी।"

"बिताता भी क्यो न? मैं तो खुश था जब उन्हान मुझे कैद-तनहाई म रखा," नाबातोव ने चहक कर कहा ताकि बोझल वातावरण किसी तरह

हल्का हो। "पहले तो आदमी को हर बात से डर लगता रहता है, कही खुद पकडा न जाय, और उसके अन्य साथी भी लपेट मे न आ जाय, और सारा काम खटाई मे न पड जाय। पर जब वह पकडा जाता है तो उसकी सारी ज़िम्मेवारी खत्म हो जाती है, और वह आराम कर सकता है—मज़े से बैठे और सिगरेट के कश लगाये।"

"क्या तुम उसे अच्छी तरह जानते थे?" मारीया पाव्लोव्ना न क्रिलत्सोव की ओर चिन्तित नज़रो से देख कर पूछा। क्रिलत्सोव का चेहरा उतरा हुआ था और बहुत बदल गया नज़र आता था।

"क्या तुम समझते हो नेवेरोव ख्वाब देखने वाला आदमी था?" सहसा क्रिलत्सोव बोल उठा। उसका सास फूला हुआ था मानो बडी देर तक बोलता या गाता रहा हो। "नेवेरोव एक सच्चा इन्सान था, एक ऐसा इन्सान 'जिस सरीखे बहुत कम इन्सान धरती पर जन्म लेते हैं'—जैसे कि हमारा चौकीदार कहा करता था। उसका मन शीशे की तरह साफ था, इतना निष्कपट कि तुम उसके अन्दर झाक कर देख सकते थे। वह कभी झूठ नही बोल सकता था। बहाना तक नहीं बना सकता था। न सिर्फ यह कि उसकी चमडी पतली थी, बल्कि यह कहना चाहिए कि उसके स्नायु तक साफ नज़र आते थे, मानो उसकी चमडी उतार ली गयी हो। उसकी प्रकृति बडी जटिल, बडी सम्पन्न थी। ऐसी नही जैसी कि पर बहुत बाते करने का क्या लाभ?' वह रुक गया, फिर गुस्से से त्योरिया चढा कर बोला, "हम तो बहसे करते रहते है कि क्या हमे पहले जनता को शिक्षित करना चाहिए और बाद मे समाज का स्वरूप बदलना चाहिए, या पहले समाज का स्वरूप बदले। फिर हम ये बहसे करते हैं कि हमारा सघष किस प्रकार का होना चाहिए, शान्तिपूर्ण प्रचार द्वारा या आतकवाद द्वारा। हम बहसे करते रहते हैं। लेकिन वे लोग बहस नही करते। वे अपना काम जानते है। उन्हे इस बात की कोई परवाह नही कि यहा बीसियो, सैकडो आदमी तिल तिल कर मर जाय। और आदमी भी कैसे! नही, वे तो चाहते ही यह हैं कि अच्छे से अच्छे आदमी मर जाय। हर्ज़न ने ठीक ही कहा था कि जब दिसम्बरवादी लोगो के बीच म से उठ गये तो हमारे समाज का सामान्य स्तर गिर गया था। उसने सचमुच ठीक कहा। उसके बाद स्वय हर्ज़न और उसके साथी उठा लिये गये। और अब नेवेरोव और उस सरीखे लोग "

"सब का खात्मा नही करेंगे," नाबातोव ने अपने प्रफुल्लित स्वर मे कहा, "नस्ल कायम रखने के लिए कुछ न कुछ तो बच रहेंगे।"

"नही बचेंगे, अगर हम हाकिमो से सहानुभूति दिखाने लगेंगे तो कभी नही बचेंगे," बिना किसी को बोलने का मौका दिये क्रिलत्सोव कहता गया, उसकी आवाज़ और भी ऊंची हो गयी। "एक सिगरेट देना मुझे।"

"ओह, अनातोली, मत सिगरेट पियो, यह तुम्हारे लिए अच्छा नही," मारीया पाव्लोव्ना ने कहा, "मत पियो सिगरेट।"

"मुझे कुछ मत कहो," उसने गुस्से से कहा और एक सिगरेट सुलगाया, पर फौरन् ही खासने लगा। बार बार उसे उबकाई आने लगी, मानो कै करने लगा हो। जब गले मे से बलगम निकल गयी तो वह फिर बोलने लगा, "हम गलत रास्ते पर चलते रहे है। हमारा काम बहसे करना नही है। हमारा काम यह है कि हम सब सगठित हो ताकि उनका नाश कर सके।"

"पर वे भी तो इन्सान है," नेख्लूदोव ने कहा।

"नही, वे इन्सान नही है। जैसे काम वे कर रहे हैं, वैसे काम इन्सान नही करते नही सुनते है कि कोई बम और बैलून ईजाद हुए है। हमे बैलून पर चढ कर इन लोगो पर ऊपर से बम छिडकने चाहिए, मानो ये खटमल हो, ताकि सब के सब मर जाय हा। क्योकि " उसने जारी रखने की कोशिश की लेकिन उसका चेहरा लाल हो गया, और फिर खासी का दौरा पड गया, जो पहले से भी तेज़ था, और मुह मे से खून की धार बह निकली।

नाबातोव भागा हुआ बर्फ लाने गया। मारीया पाव्लोव्ना वलेरियन ले आयी और उसे देने लगी, लेकिन उसने अपना पतला पीला हाथ उठा कर मारीया पाव्लोव्ना को परे हटा दिया और आखें बन्द किये बैठा रहा। उसकी सासो की गति तेज़ और बोझल हो रही थी। बर्फ और ठण्डे पानी से उसकी हालत कुछ सुधरी, उसे कम्बलो मे लपेट कर सोने के लिए लिटा दिया गया। नेख्लूदोव ने विदा ली और सार्जेंट के साथ जो थोडी दूर से खडा उसका इतजार कर रहा था, बाहर निकल आया।

मुजरिम अब शात हो गये थे और उनमे से अधिकाश सो रहे थे। बंदी तख्ता पर, तख्तो के नीचे और तख्ता के बीच की जगह पर पडे सो रहे थे। इसके बावजूद वे सब कमरो मे नही समा पाये थे। कितने ही

बंदी गलियारे में, अपने गीले लबादे ओढ़े हुए और सिर के नीचे हाथ रखे हुए पड़े सो रहे थे।

खर्राटे भरने, कराहने और नींद में बड़बड़ाने की आवाज़ें खुले दरवाज़ों और गलियारे में से आ रही थीं। हर ओर इन्सानों के ढेर के ढेर, जेलखाने के लबादों में ढके हुए पड़े थे। मगर कोई नहीं सो रहा था तो अनब्याहे बंदियों के कमरे में कुछेक आदमी, जो मोमबत्ती जलाये उसके पास बैठे थे (लेकिन सार्जेंट को आता देख कर उन्होंने वह भी बुझा दी)। या फिर गलियारे में लैम्प के नीचे एक बूढ़ा नंगे बदन बैठा था और अपना कमीज़ में से जुएं बीन रहा था। यहां इतनी बदबू और घुटन थी कि उसके मुकाबिले में राजनीतिक बंदियों के कमरे की गन्दी हवा भी स्वच्छ लगती थी। लैम्प धुआं छोड़ रहा था और उसकी रोशनी मद्धिम थी मानो धुएं से घिरी हो। सांस तक लेना कठिन हो रहा था। गलियारे में इतनी खाली जगह भी नहीं थी कि आदमी खुली तरह चल सके। एक एक कदम देख देख कर रखना पड़ता था। तीन आदमी ऐसे भी थे जिन्हें प्रत्यक्षत गलियारे में भी लेटने की जगह नहीं मिली थी और वे ड्योढ़ी में, बदबू से भरे और चूते हुए टब के पास लेटे हुए थे। उनमें से एक तो वही बूढ़ा पागल था जिसे नेख्लूदोव ने कई बार टोली के साथ साथ मार्च करते हुए देखा था। दूसरा एक लड़का था, जिसकी उम्र दस बरस की रही होगी, जो बाकी दो कैदियों के बीच, एक की जांघ पर सिर रखे पड़ा सो रहा था।

फाटक में से बाहर निकल कर नेख्लूदोव ने लम्बी सांस ली और बड़ी देर तक पाले भरी हवा में लम्बी लम्बी सांसें लेता रहा।

१६

आसमान साफ हो गया था और तारे चमक रहे थे। किसी किसी जगह को छोड़ कर जहां कीचड़ जम कर कठोर हो गया था, सभी तरफ बरफ ही बरफ थी। नेख्लूदोव वापस अपनी सराय में लौटा और एक अंधेरी खिड़की को खटखटाया। चौड़े कंधों वाले मजदूर ने नंगे पांव आ कर दरवाज़ा खोला। नेख्लूदोव अन्दर दाखिल हुआ। दायीं ओर के एक दरवाज़े में से, जहां से पिछवाड़े को जाने का रास्ता था, गाड़ीवानों के

खर्राटो की ऊची ऊची आवाजे आ रही थी। आगन मे से बहुत से घोडो के जई चबाने की आवाज आ रही थी। सामने वाले कमरे म देव प्रतिमाओ के सामने लाल रग का लैम्प जल रहा था। कमरे मे से चिरायते और पसीने की गध आ रही थी। पार्टीशन के पीछे कोई आदमी बराबर सुड सुड करता खर्राटे भर रहा था, जिनको सुनते हुए लगता था कि उसके फेफडे बहुत ही मजबूत रहे होगे। नेख्लूदोव ने कपडे उतारे, रोगनी कपडा चढे सोफे पर अपना कम्बल बिछाया, और चमडे का अपना सफरी सिरहाना रखा और लेट गया। उस दिन जो कुछ उसने देखा या सुना था, उसी के बारे म उसके मन मे विचार उठ रहे थे। बदबूदार टब और उसमे से चूता हुआ गन्दा पानी, और इसके पास दो कैदियो के बीच एक की जाघ पर सिर रखे सोया हुआ बालक—सभी दृश्यो म से यह दृश्य नख्लूदोव का सबसे अधिक भयानक लग रहा था।

जो बात आज सिमनसन और कात्यूशा से उसकी हुई थी वे बडी अप्रत्याशित और महत्वपूण थी। लेकिन नेख्लूदोव उनके बारे में नही साच रहा था। इस सम्बन्ध मे उसका रवैया इतना जटिल और अनिश्चित था कि उसने इस बारे मे सोचना ही छोड दिया था। लेकिन इन बदनसीब कदियो की तसवीर, विशेषकर उस भोले भाले बालक का चेहरा जो कैदी की जाघ पर सिर रखे उस गन्दी हवा म, गन्दे पानी मे लेटा सो रहा था, पहले से भी अधिक सजीव हो कर उसकी आखो के सामने घूम रही थी, और हटाये नही हटती थी।

सुनने और अपनी आखो से देखने मे बडा फरक है। इतना भर जान लेना कि दूर कही कुछ ऐसे लोग हैं जो अन्य लोगो पर जुल्म ढाते हैं, उन्हें अपमानित करते हैं, उन पर अमानुषिक यन्त्रणाए पहुचाते हैं, यह एक बात है। और खुद अपनी आखो से तीन महीने तक इस अत्याचार और अपमान को हर वक्त देखते रहना, बिल्कुल दूसरी बात है। और नेख्लदोव का हृदय इस बात को महसूस करता था। इन महीनो म, एक बार नही कई बार उसने अपने आपसे यह सवाल किया—"क्या मैं पागल हो गया हू जो मुझे ऐसी बाते नजर आती हैं जो औरो का नजर नही आती? या क्या वे लोग पागल हो गये है जो ऐसी बाते करते हैं जिन्ह मेरी आखें देखा करती हैं?" लेकिन यह मानना कठिन है कि व लोग—और उनकी सख्या भी कम नही है—पागल हागे, क्योकि ये काम वे इतने

ग्रात्मविश्वास के साथ, इसे बडा जरूरी ग्रौर महत्वपूर्ण ग्रौर लाभदायक समझ कर कर रहे थे। न ही नेख्लूदोव अपने को पागल समझ सकता था, क्योकि जो कुछ वह सोच रहा था वह इतना स्पष्ट था। अत सारा वक्त उसका मन उलझा सा रहता।

पिछले तीन महीना म जो कुछ उसन देखा था, उसकी छाप या उसके मन पर पडी थी सरकार जनता मे से उन लोगो को चुन चुन कर पकडती थी जो स्वभावतया सबसे अधिक घबराने वाले, तेज़ मिज़ाज, जल्दी उत्तेजित होने वाले, सबसे अधिक प्रतिभावान ग्रौर सबमे अधिक मजबूत लोग थे, पर साथ ही जो सबसे कम सावधान तथा चालाक थे। इन्हे वह मुकद्मो तथा शासकीय ग्राज्ञप्तिया द्वारा पकडती थी। ये लोग उन लोगो से जो ग्राज़ाद घूमते थे, तनिक भी अधिक दोषी ग्रौर खतरनाक नही थे। पर इन्हे या तो जेल की कालकोठरी म बन्द कर दिया जाता था या साइबेरिया भेज दिया जाता था। वहा इन्हे रोटी कपडा मिल जाता लेकिन महीनो, बल्कि साला तक, ये वहा निठल्ले पडे रहते–प्रकृति से दूर, अपने परिवारा से दूर तथा हर प्रकार के उपयोगी काम से दूर–अर्थात उन सब स्थितियो से दूर जो एक स्वाभाविक तथा नतिक जीवन के लिए ग्रावश्यक होती है। यह थी पहली बात जो नेख्लूदोव के मन मे उठती थी। दूसरी यह कि इन सस्थाग्रा मे इन लोगो को हर तरह से अपमानित किया जाता था जिसकी कोई जरूरत नही थी, हथकडिया ग्रौर बेडिया पहनायी जाती, सिर मूड दिये जाते, लज्जाजनक वदिया पहनने को दी जाती, मतलब कि उन्हे उन मुख्य बातो से वचित कर दिया जाता जिनसे दुबल व्यक्तियो को भले ग्रादमियो की तरह रहने की प्रेरणा मिलती है। ग्रौर ये बाते हैं यह भावना कि लोग क्या कहते है, लज्जा की भावना तथा मानव गौरव की भावना। तीसरी यह कि कदखाना मे इन्हे हर वक्त जान से हाथ धोने का डर रहता–छूत की बीमारी लगने के कारण या शारीरिक दण्ड ग्रौर थकान के कारण (यह कहने की ज़रूरत नही कि कई लोग लू लगने से, या डूब कर या ग्राग मे भस्म हो कर जान दे देते थे)। इसलिए सारा वक्त ये लोग ऐसी स्थिति म रहते जिसम भले से भले ग्रौर नेक से नेक लोग भी, ग्रात्मरक्षा के लिए ग्रत्यन्त बबर ग्रौर भयानक काम करने पर उतारू हो जाते है ग्रौर उन लोगो को क्षमा भी कर देते हैं जो ऐसे काम करते है। चौथी यह कि इन लोगो का ऐसे लोगो

के साथ रहने पर मजबूर किया जाता था जो अहृत ही पतित होते थे। इनका पतन भी विशेषतया इन्ही सस्थाग्रो द्वारा हो चुका होता था। इन भ्रष्टाचारी लोगो, हत्यारो और बदमाशो के साथ रहने से उन पर भी वही असर होता जो गुधे हुए आटे पर खमीर का होता है। पाचवी यह कि सरकार को जब अपना उल्लू सीधा करना होता तो वह न केवल हर प्रकार की हिंसा, अत्याचार, और बबरता को दरगुजर हो करती है बल्कि इसकी खुली इजाजत भी देती है। इस तथ्य पर इन सब लोगो का अनिवायत विश्वास हुआ, क्योकि इन पर अमानुषिक जुल्म किया जाता था, बच्चो, स्त्रिया और बूढो पर जुल्म होता डण्डो और चाबुको से इन्हे पीटा जाता, कोई कैदी भाग जाता तो उसे पकड कर वापस लाने के लिए–जिन्दा या मरा हुआ–इनाम रखे जाते, पति पत्नी को एक दूसरे से अलग कर दिया जाता और उन्हे दूसरो की स्त्रिया और पत्नियो के साथ व्यभिचार करने पर मजबूर किया जाता, लोगो को गोलो से उडा दिया जाता और फासी पर लटका दिया जाता। इसलिए यदि वे लोग हिंसात्मक कारवाइया कर जिनकी आजादी छीन ली गयी हो और जिन्हे अभाव और हीनता की स्थिति मे रखा जाता हो तो यह और भी क्षम्य जान पडता है।

ऐसा जान पडता था जैसे इन सब सस्थाग्रो को बनाया ही इसलिए गया हो कि वे भ्रष्टता और दुराचार फैलायें। और इस केन्द्रीभूत भ्रष्टता और दुराचार को सारी आबादी मे फैलाने के लिए इससे अधिक व्यापक साधन और कोई न होगा।

"ऐसा लगता है मानो इस सवाल का हल ढूढने का बीडा उठाया गया हो कि कौन सा उपाय है–सबसे अच्छा और सबसे सक्षम–जिसके द्वारा अधिक से अधिक सख्या मे लोगो को भ्रष्ट बनाया जा सके।" जेलखानो और पडाव घरो मे जो कुछ घटता है इसके बारे मे सोचते हुए नख्लूदोव ने मन ही मन कहा। हर साल लाखो लोगो को पतन के निचले से निचले स्तर तक पहुचा दिया जाता था, और जब वे बिल्कुल भ्रष्ट हो जाते तो उन्हें छोड दिया जाता ताकि जो रोग उन्हें जेलखाने मे चिपटा था उसे और लोगो मे फैला सकें।

समाज ने जो लक्ष्य अपने सामने रखा जान पडता था उसे वह किस सफलता से क्रियान्वित कर रहा है, यह नेख्लदोव ने त्युमेन, यकातेरीनबुर्ग

तथा तोम्स्क के जेलखानो मे देख लिया था। सीधे-सादे लोगो ने साधारण रूसी सामाजिक, ग्रामीण तथा ईसाई नैतिकता को त्याग कर एक नयी नैतिकता को अपना लिया है जो इन जेलो मे पनपती है और जो मुख्यत इस विचार पर आधारित है कि इन्सानो के साथ किसी प्रकार की भी हिंसा और अत्याचार करना उचित है यदि उससे अपने को लाभ पहुच सकता हो। जेलखानो मे रह चुकने के बाद इन लोगो का रोम रोम यह समझने लगता है कि जैसा व्यवहार उनके साथ हुआ है उसे देखते हुए, यथार्थ जीवन मे वे सारे के सारे नैतिक नियम जिनका उपदेश गिर्जों म तथा सन्तो महात्माओ द्वारा दिया जाता है–कि लोगा के साथ आदर तथा सहानुभूति से पेश आओ–ताक पर रख दिये जाते हैं। इसलिए उन्ह भी इन नियमा का पालन करने की कोई जरूरत नही। जितने भी कैदियो को नेख्लूदोव जानता था–फ्योदोरोव, माकार, यहा तक कि तारास पर भी–उन सब पर जेल के जीवन का असर हुआ था। तारास केवल दो महीने तक ही कैदियो के बीच रह पाया था लेकिन फिर भी उसके तर्कों म नैतिकता के अभाव से नेख्लूदोव दग था। सफर के दौरान उसे मालम हुआ था कि कई कैदी जो भाग कर टैगा जगला मे चले जाते थे वे अपने साथ अपने अन्य साथियो का भी बरगला कर ले जाते थे और वहा पर उन्ह मार कर उनका मास खा कर जीते थे। उसने ऐसे ही एक जीते-जागते आदमी को देखा था जिस पर यह दोष लगाया गया था, और उसने इसे स्वीकार किया था। और सबसे भयानक बात यह थी कि मनुष्य भक्षण का यह एकमात्र उदाहरण नही था, अक्सर इस तरह की बात होती रहती थी।

केवल बुराइयो के विशेष सपोषण द्वारा ही, जैसा कि इन सस्थाओ म किया जा रहा था, एक रूसी को नैतिक पतन की चरम सीमा तक ढकेल कर इन जैसा आवारा बनाया जा सकता था। ये लोग यही मानते थे कि हर काम की खुली छुट्टी है, किसी बात की कोई मनाही नही, और इसमे वे नीत्शे के नवीनतम उपदेश का मानो पहले ही जान कर अनुसरण कर रहे थे और इसका प्रचार पहले कैदिया म और बाद म जनसाधारण म कर रहे थ।

इस सबकी सफाई म केवल यह कहा जाता था कि इसका उद्देश्य अपराधा को रोकना है, लोगा के दिल म डर पैदा करना है, मुजरिमा

को सीधे रास्ते पर लाना और सजा के रूप मे उन्हे उनके कुकर्मों का नियमित प्रतिफल देना है, जैसा कि पुस्तको मे कहा गया है। पर वास्तव मे जो परिणाम निकलते थे उनका इनसे कोई भी मेल नही था। बल्कि व इनके उलट निकलते थे। भ्रष्टता रुकने के बजाय और फैलती थी। अपराधियो के दिल मे डर बैठाना तो दूर रहा उनका साहस और बढता था। कितने ही आवारा खुद-ब-खुद जेलखाना म लौट आते थे। सीधे रास्ते पर आने के बजाय लोगो को हर प्रकार की भ्रष्टता बडी बाकायदगी से सिखायी जाती थी। और जहा तक सजा देने की भावना का सवाल है, यह सरकार की दड प्रणाली से कमजोर पडने के बजाय उन लोगो के दिलो मे जड पकडती थी जिनमे यह पहले कभी नही थी।

"तो फिर यह सब क्यो किया जाता है?' नख्लूदोव न अपन आपसे पूछा। पर उसे कोई उत्तर नही मिला।

सबसे आश्चर्यजनक बात यह थी कि ये कारवाइया आकस्मिक तौर पर या किसी भूलवश नही की जा रही थी। न ही ये इक्के-दुक्के मामले थे, बल्कि सदियो से यह व्यापार चला आ रहा था। भेद केवल इतना था कि पहले लोगो के नाक और कान काट दिये जाते थे, बाद मे वक्त आया जब लोगो के शरीर तप्त हुए लोहे से दागे जात थे, और लोहे की सलाखो के साथ उन्हे बाध दिया जाता था जहा आज उन्हे हथकडिया लगायी जाती हैं और उन्हे छकडा म एक जगह से दूसरी जगह भेजने के बजाय भाप से चलने वाली गाडियो म भेजा जाता है।

सरकारी अफसरो का यह तर्क है कि जिन बातो को देख कर क्रोध उठता है उनका कारण यह था कि जेलखानो के प्रबन्ध मे बडी त्रुटिया पायी जाती थी, और ये सब दूर हो सकती है यदि आधुनिक ढग के जेलखाने बनाये जाय। पर इस तर्क से नख्लूदोव को सन्तोष नही होता था। उसके मन मे जो घृणा उठती थी उसका कारण जेलखानो का अच्छा या बुरा प्रबन्ध नही था। उसने ऐसे आदर्श जेलखानो के बारे म पढ रखा था जिनमे बिजली की घण्टिया लगी रहती हैं, और जहा लोगो को बिजली द्वारा फासी दी जाती है, जिसका ताद ने सुझाव दिया है परन्तु इस प्रकार की सुचारु हिंसा से नेख्लूदोव के मन मे उससे भी अधिक घृणा उठती थी।

परन्तु सबसे अधिक घृणा उसके मन मे यह देख कर उठती थी कि कचहरियो और मन्त्रालयो मे ऐसे लोग रहते हैं जिन्हे इन कामो के लिए

बडी बडी तनख्वाह मिलती हैं जो तनख्वाह जनता के जेब मे से आती हैं। इन लोगो के पास किताबें होती हैं जो इन्ही जैसे अन्य अफसरा ने इन्ही के से उद्देश्या से प्रेरित हो कर लिख रखी होती हैं। इस तरह की पुस्तको मे कानून लिखे होते हैं। और जब इस तरह लिखी गयी पुस्तका के अनुसार किसी कानून का उल्लघन होता है तो ये लोग इन पुस्तका मे झाकते हैं, एक या दूसरे किसी कानून से उसे जोडने की चेष्टा करते हैं, और फिर इन्ही कानूना का अनुकरण करते हुए, अपराधियो को ऐसे स्थानो पर भेज देते हैं, जहा वे फिर इन्ह कभी नही देख पाते, परन्तु जहा पर वे ऐसे इन्सपेक्टरो, वार्डरो और कॉनवाय सिपाहिया के रहम पर जीते हैं जो क्रूर और जुल्म करने के आदी होते हैं। वहा लाखो-करोडा आदमियो का न केवल शारीरिक बल्कि आत्मिक दृष्टि से भी मलियामेट कर दिया जाता है।

अब नेख्लूदोव जेलखानो को अधिक नजदीक से जानता था। उसे मालूम हो गया कि कैदियो मे जितनी भी बुराइया फैलती हैं—शराबखोरी, जुएबाजी, बबरता, भयानक जुर्म करने की प्रवत्ति, यहा तक कि मनुष्य भक्षण भी—ये सब आकस्मिक नही होती न ही नैतिक अध पतन, मानसिक विकारो अथवा जन्मजात अपराध प्रवृत्ति के परिणाम हैं, जसा कि उन मूढ वैज्ञानिको का कहना है जो सरकार के पिट्ठू बनते हैं। यह सभी बुराइया इस भ्रम का अनिवाय परिणाम हैं कि मनुष्यो को एक दूसरे को दण्ड देने का अधिकार है। नेख्लदोव ने देखा कि मनुष्य भक्षण टैगा जगलो से शुरू नही होता बल्कि मत्रालयो, समितियो तथा राज्य विभागा से शुरू होता है। टैगा मे तो वह केवल सपन्न होता है। उसने देखा कि उसके बहनोई को मिसाल के तौर पर, या बहनोई को ही क्या, पेशकार से ले कर मन्त्री तक सभी वकीला और अधिकारियो को न्याय की तनिक भी चिन्ता नही होती, न ही जनकल्याण की जिसकी वे बात करते हैं, बल्कि केवल अपने रूबला की चिन्ता होती है जा उन्ह ये कारवाइया करने के लिए मिलते है जिनके कारण यह सब पतन और क्लेश पैदा होते हैं। यह तथ्य बिल्कुल स्पष्ट है।

"तो फिर क्या इस सबको तह म कोई गलतफहमी रही है? क्या ऐसी व्यवस्था नही की जा सकती कि सभी अधिकारिया की तनख्वाह भी सुनिश्चित रह, बल्कि इनके अलावा इन्ह बट्टा भी मिले, और ये वे सब

काम न करे जो आजकल करते हैं?" नेख्लूदोव ने सोचा। बाहर मुर्गे दूसरी बार बाग दे चुके थे। जब भी नेख्लूदोव करवट बदलता या हरकत करता तो उसके चारो ओर पिस्सू यो दौडते, जसे फौवारे मे से पानी की धाराए निकल रही हो। पर इनके बावजूद, इन्ही विचारो मे खोया हुआ नेख्लूदोव गहरी नीद सो गया।

२०

जब नेख्लूदोव जागा तो छकडो वाले कब के जा चुके थे। सराय की स्थूलकाय मालकिन चाय पी चुकी थी। हाथ मे रूमाल लिए अपनी मोटी गदन से पसीना पोछते हुए वह अन्दर आयी और नेख्लूदोव से कहा कि एक सिपाही पडाव घर से उसके नाम कोई चिट्ठी लाया है। चिट्ठी मारीया पाव्लोव्ना की ओर से थी। लिखा था कि क्रिलत्सोव को खासी का बहुत बुरा दौरा पडा है, हमे उमीद न थी कि उसकी हालत इतनी चिन्ताजनक हो जायेगी। "पहले तो हमारी यही इच्छा थी कि इसे यही पर रहने दें, और अधिकारियो से इजाजत माग ले कि कोई आदमी इसके साथ रह सके, लेकिन इसकी इजाजत नही मिली। अब हम इसे साथ ही ले जायेंगे। लेकिन इसकी स्थिति अत्यन्त शोचनीय है। कृपया ऐसा प्रबन्ध करो कि इसे शहर मे छोडा जा सके, और हममे से एक आदमी इसके साथ रह सके। यदि इजाजत हासिल करने के लिए इस बात की जरूरत हो कि मैं इसके साथ शादी कर लू तो बेशक, मैं यह करने के लिए तैयार हू।"

नेख्लूदोव ने युवा मजदूर को फौरन घोडा चौकी पर घोडों का प्रबन्ध करने के लिए भेज दिया और जल्दी जल्दी अपना सामान बाधने लगा। अभी वह चाय का दूसरा गिलास भी नही पी पाया था कि सायबान मे तीन घोडो वाली गाडी घटिया खनकाती आ पहुची। जमे हुए कीच पर उसके पहिये इस तरह खडखड करते चले आ रहे थे जैसे पत्थरो पर चल रहे हो। नख्लूदोव ने पैसे निकाले और मोटी गदन वाली मालकिन का हिसाब चुकाया, फिर भागा हुआ बाहर आया और गाडी पर पैर रखते ही गाडीबान को हुक्म दिया कि गाडी भगा कर कैदियो की टोली के पास ले चले। पचायती चरागाह के फाटको के कुछ ही आगे वे गये होगे कि उन्हें कैदियो के छकडे मिल गये जिनमे बोरे और बीमार कैदी भरे पडे थे। छकडो के पहिये जमे कीच पर खडखडाते चले जा रहे थे, जो अब

उनके बोझ के नीचे धीरे धीरे हमवार होता जा रहा था। अफसर वहा पर नही था, वह आगे चला गया था। सडक के किनारे किनारे कुछ सिपाही हसते बतियाते चले जा रहे थे, जा प्रत्यक्षत शराब पिये हुए थे। छकडे सख्या मे बहुत थे। अगले छकडा म, एक एक छकडे पर छ छ बीमार कैदी बठे थे, जा मुश्किल स उनम समा पाय थे। पिछल तीन छकडो पर, हरक मे तीन तीन राजनीतिक कैदी थे। एक मे नोवोद्वोरोव, ग्राबेत्स और कान्द्रात्येव थे, दूसरे मे रात्सेवा, नाबाताव और वह स्त्री जिसे मारीया पाव्लोव्ना ने अपनी जगह दे दी थी, बैठे थे। तीसरे छकड मे क्रिलत्सोव भूसे के ढेर पर सिर के नीचे सिरहाना रखे लेटा हुआ था और छकडे के सिरे पर मारीया पाव्लोव्ना उसके पास बैठी थी। नख्लूदोव ने गाडीवान को गाडी रोकने के लिए कहा और उतर कर क्रिलत्सोव के पास गया। एक शराबी सिपाही न उसे रोकने के लिए हाथ हिलाया लेकिन नेख्लूदोव ने कोई परवाह न की और छकडे के साथ साथ, एक हाथ से उसे पकडे हुए क्रिलत्सोव के निकट चलने लगा। क्रिलत्सोव ने भेड की खाल का कोट और सिर पर फर की टोपी पहन रखी थी। मुह पर रूमाल बधा हुआ था। पहले से कही अधिक पीला और दुबला लग रहा था। उस की सुन्दर आखे बडी बडी लग रही थी और उनमे विचित्र चमक थी। छकडे म हिचकोला के कारण उसका शरीर कभी एक तरफ को, कभी दूसरी तरफ को झूल जाता। लेकिन उसकी आखें एकटक नेख्लूदोव को देखे जा रही थी। जब नेख्लदोव ने उससे स्वास्थ्य के बारे मे पूछा तो उसने केवल आखें बन्द कर ली और गुस्से से सिर हिला दिया। जान पडता था कि छकडे के हिचकोले बर्दाश्त करने के लिए उस शरीर की सारी शक्ति लगा देने की जरूरत है। मारीया पाव्लोव्ना दूसरी तरफ बठी थी। उसने नेख्लूदोव की ओर बडे सारपूण ढग से देखा ताकि उसे क्रिलत्साव की चिताजनक स्थिति का पता चल जाय, फिर हस हस कर बात करने लगी।

"जान पडता है अफसर को शम आ गयी," उसने चिल्ला कर कहा ताकि पहियो की खडखड के बीच उसकी आवाज सुनाई दे सके। "बुजाव्किन की हथकडिया उतार दी गयी हैं, अब वह अपनी बेटी का खुद गोद मे उठा कर ले जा रहा है। कात्यूशा और सिमनसन उसके साथ हैं, और वेरा भी। वेरा ने मेरी जगह ले ली है।"

क्रिल्त्सोव कुछ बोला लेकिन शोर के कारण उसकी आवाज सुनाई नही दी। उसे खासी उठने लगी और उसने भौह चढा कर उसे दबाने की चेष्टा करते हुए सिर हिलाया। नेख्लूदोव आगे की ओर झुक कर उसकी बात सुनने की चेष्टा करने लगा। क्रिल्त्सोव किसी तरह रूमाल म से मुह निकाल कर फुसफुसाया –

"पहले से तबीयत बहुत अच्छी है। बस, सर्दी नही लगनी चाहिए।"

नेख्लूदोव ने समर्थन म सिर हिलाया। फिर एक बार मारीया पाव्लोव्ना और नेख्लूदोव की नजरे मिली।

"तीन नक्षत्रा का क्या बना?" बडी कठिनाई से मुस्कराने की चेष्टा करते हुए क्रिल्त्सोव ने फुसफुसा कर कहा। "क्या उनका मसला हल करना बहुत मुश्किल है?"

बात नेख्लूदोव की समझ मे नही आयी, लेकिन मारीया पाव्लोव्ना ने समझाया कि क्रिल्त्सोव का मतलब गणित के उस सुपरिचित प्रश्न से है जिसमे सूर्य, चन्द्रमा तथा पृथ्वी के आपसी सम्बन्ध का जिक्र है और यह उससे तुम्हारी, सिमनसन और कात्यूशा की स्थिति की तुलना कर रहा है। इस पर क्रिल्त्सोव ने सिर हिला कर हामी भरी कि मारीया पाव्लोव्ना न उसके मजाक को ठीक समझा है।

"इस प्रश्न का हल मेरे हाथ मे नही है," नेख्लूदोव ने कहा।

"क्या तुम्हे मेरी चिट्ठी मिल गयी है? क्या यह काम करोगे?" मारीया पाव्लोव्ना न पूछा।

"जरूर," नेख्लूदोव ने जवाब दिया। फिर जब उसने देखा कि क्रिल्त्सोव नाराज नजर आ रहा है तो घूम कर सीधा अपनी गाडी म जा बैठा, और हिचकोला से बचने के लिए दोनो तरफ से उसे पकड लिया। कच्ची सडक की लीका पर गाडी झूलती हिचकोले खाती कैदियो की टोली से आगे बढने लगी, जो अपने भूरे लबादो, भेड की खाल के कोटो, बेडिया और हथकडिया को पहने सडक पर छ फर्लांग आगे तक फैली हुई थी। सडक की दूसरी तरफ नेख्लूदोव को कात्यूशा का नीले रग का शाल, वेरा का काला कोट और सिमनसन की बुनी हुई टोपी और सफेद लम्बे मोजे नजर आये जिन पर उसने फीते बाध रखे थे जैसे सैंडलो पर लगाय जाते हैं। सिमनसन दोनो औरतो के साथ साथ चल रहा था और किसी मसले पर बडे जोश से बहस कर रहा था।

नेख्लूदोव को देख कर तीनो ने उसका झुक कर अभिवादन किया, और सिमनसन ने बडी गभीरता से सिर पर से टोपी उतारी। नेख्लूदोव रुका नही क्योकि उसे उन्हे कुछ भी कहना नही था, और शीघ्र ही आगे निकल गया। थोडी देर के बाद सडक के ज्यादा हमवार हिस्से पर पहुच कर गाडीवान ने गाडी और भी तेज कर दी, पर बार बार उसे लीको पर से हट जाना पडता था क्योकि सडक पर दोनो तरफ से छकडा की कतारे आ-जा रही थी।

सडक देवदार के एक घने जगल मे से हो कर गयी थी जिसमे कही कही बच और लाच के वृक्ष भी खडे थे और जिनके पीले पत्ते अभी तक गिरे नही थे और झिलमिला रहे थे। सडक के बीचाबीच गाडिया के पहिया की गहरी लीके खिची थी। आधे रास्ते पर जगल खत्म हो गया। अब सडक के दोना तरफ दूर दूर तक खेत फैले हुए थे। दूर किसी मठ के गुम्बद और क्रॉस नजर आये। बादल छितर गये थे और मौसम अच्छा हो गया था। जगल के ऊपर सूरज चमकने लगा था जिसकी रोशनी मे पेडो के पत्ते, गड्ढो मे जमा हुआ पानी और मठ के सुनहरी नाम और गुम्बद चमकने लगे थे। थोडा दायी ओर दूर क्षितिज के ऊपर जहा आकाश का रग भरा-सुरमई हो रहा था बरफ से लदे पहाडो की सफेदी झिलमिलाने लगी। गाडी ने एक बडे से गाव मे प्रवेश किया। सडक पर रूसी तथा अन्य जातिया के बहुत से लाग विचित्र से लबादे और टोपिया पहने घूम रहे थे। दूकाना, शराब घरा और छकडो के आस-पास मर्दों और औरतो की भीड लगी थी, जिनमे से कई एक ने शराब पी रखी थी। इस सबसे पता लगता था कि नजदीक ही कोई शहर है।

गाडीवान ने रास झटकी, अपने दायें हाथ वाले घोडे पर चाबुक चलायी, और रासो को ढीला छोड कर सीट के दायें सिरे पर बैठ गया, और लोगा पर रोब कसने के लिए गाडी को तेज तेज चलाता हुआ, नदी की ओर ले जाने लगा। नदी को बेडे पर पार किया जाता था। नदी मे बेडा उन्ही की दिशा मे बहता आ रहा था, और नदी के मध्य तक पहुच चुका था। किनारे पर लगभग बीस छकडे नदी पार करने के इन्तजार मे खडे थे। नेख्लूदोव का बहुत देर इन्तजार नही करना पडा। नदी का बहाव तेज था साथ ही बेडे को धार के ऊपर काफी दूर तक ले जाया जा चुका था, जिस कारण शीघ्र ही वह घाट के साथ आ लगा।

नाविक बडे ऊचे ऊचे कद के, चौडे कन्धो वाले, मासल और चुपचाप काम करने वाले व्यक्ति थे। सभी ने भेड की खाल के कोट पहन रखे थे। किनारे पर पहुच कर उन्होंने अपने अभ्यस्त हाथो से रस्से फेंक कर बेडे का किनारे से बाधा, फिर जिन छकडो को उस पार से ढो कर लाये थे उन्हें किनारे पर उतारा और किनारे पर खडे छकडो को बेडे मे लादने लगे। छकडो और घोडो से सारा बेडा भर गया। पानी को देख कर घोडे बेचन होने लगे। बेडे के पाश्व पर चौडी, वेगवती नदी के थपेडे लग रहे थे जिससे रस्से और भी तन गये थे। बेडा भर गया नेख्लूदोव की गाडी मे से घोडे खोल दिये गये थे और उसे बेडे के एक तरफ बहुत से छकडो के बीच खडा कर दिया गया था। नाविको ने और छकडो का अन्दर आना बद कर दिया, और रस्से खोल कर बेडा खेने लगे। बहुत से लोग जिन्हे बेडे पर जगह नही मिली थी, चिल्लाने और मिन्नत करने लगे लेकिन नाविको ने उनकी ओर कोई ध्यान नही दिया। बेडे पर मौन छा गया। नाविको के कदमो और घोडो के खुर पटकने की आवाजो के अतिरिक्त कोई आवाज सुनाई नही पडती थी।

२१

बेडे के किनारे पर खडा नेख्लूदोव विशाल नदी का दृश्य देख रहा था। उसके मन मे दो चित्र बार बार उभर रहे थे। कभी उसे आक्रोश से भरपूर, ससार से विदा होते क्रिलत्सोव का गाडी के हिचकोले से इधर-उधर पटकता सिर दिखाई देता और कभी कात्यूशा, जो दढता से डग भरती हुई सिमनसन के साथ साथ चली जा रही थी। क्रिलत्सोव इस तरह अचानक मरना नही चाहता था, इसलिए इस चित्र से नेख्लूदोव का मन खिन्न और उदास हुआ। कात्यूशा के रोम रोम से ओज फूट रहा था, उसे सिमनसन जैसे व्यक्ति का प्रेम प्राप्त हुआ था, साथ ही वह भलाई के सच्चे मार्ग पर दृढतापूर्वक चली जा रही थी। इस चित्र से नेख्लूदोव को खुश होना चाहिए था, किन्तु इससे भी उसका मन उदास हुआ और इस उदासी को वह दूर नही कर सका।

नगर की ओर से कासे के किसी बडे घटे की आवाज गूजती हुई आयी। नेख्लूदोव के गाडीवान ने तथा बेडे मे खडे अन्य लोगो ने सिर

पर से टोपियां उतारीं और छाती पर क्रॉस का चिन्ह बनाया। रनिंग के बिल्कुल पास खड़े एक छोटे से बिखरे बालों वाले यार बूढ़े ने, जिसकी ओर नसरुद्दीन का ध्यान पहले नहीं गया था, क्रॉस का चिन्ह नहीं बनाया, बल्कि सिर ऊंचा करके नसरुद्दीन की ओर देखने लगा। बूढ़ा बदन पर टांकियां लगा कोट, सूती पतलून और पैरों में फटे-पुराने, टांकियां लगे बूट पहने था। पीठ पर एक छोटा सा सफरी थैला लटकाये और सिर पर एक फटी-पुरानी परकी ऊंची सी टोपी पहने हुए था।

"तुम प्रार्थना क्यों नहीं कर रहे हो, बड़े मियां?" नसरुद्दीन के गाडीवान ने सिर पर टोपी रख कर ठीक करते हुए उससे पूछा। 'क्या तुम्हारा बपतिस्मा नहीं हुआ?

"प्रार्थना किस की करूं?" एक एक शब्द पर बल देते हुए, रूखी आवाज़ में उस फक्कड़ बूढ़े ने पूछा।

"भगवान की, और किस की?" गाडीवान ने तुनक कर कहा।

"दिखाओ तो, तुम्हारा यह भगवान है कहां पर?'

वृद्ध के चेहरे पर कुछ ऐसी गंभीरता तथा दृढ़ता का भाव था कि गाडीवान कुछ झेंप गया। वह समझ गया कि आज किसी मस्त मिज़ाज आदमी से वास्ता पड़ा है। लेकिन भीड़ खड़ी देख रही थी, और वह नहीं चाहता कि उसके सामने बुद्धू बने और शर्मिन्दा हो। इसलिए अपनी झेंप छिपाने की कोशिश करते हुए झट से बोला—

"कहां है? स्वर्ग में है और कहां होगा?"

"तो तुम वहां हो आये हो क्या?"

"मैं वहां हो आया हूं या नहीं सभी जानते हैं कि भगवान की प्रार्थना करनी चाहिए।"

"आज तक कभी किसी आदमी ने भगवान् को नहीं देखा। केवल भगवान का एकमात्र बेटा, जो उसी के हृदय में बसता है प्रगट हुआ था," उसी तरह त्योरियां चढ़ाये वृद्ध ने तेज़ बोलते हुए कहा।

"जाहिर है तुम ईसाई नहीं हो, तुम तो यों ही बे सिर पैर चीज़ को भगवान मानते हो, उसी की पूजा करते हो गाडीवान ने चाबुक का दस्ता पेटी में खोंसते हुए और एक घोड़े पर का साज़ सीधा करते हुए कहा।

भीड़ में से कोई हंसने लगा।

"तुम्हारा धम क्या है वडे मिया?" अधेड उम्र के एक आदमी ने पूछा जो बेडे के उसी तरफ अपने छकडे के पास खडा था।

"मेरा कोई भी धम नही, क्योकि मेरा किसी म भी विश्वास नही है—मेरा विश्वास केवल अपने आप पर है ' उसी दढना और तज़ी के साथ वृद्ध ने जवाब दिया।

"अपन पर विश्वास कैसे हो सकता है?" वाद विवाद म भाग लेते हुए नेख्लूदोव न पूछा, "तुम भूल भी तो कर सकते हो। '

"नामुमकिन है," सिर हिला कर वद्ध न दढता स जवाब दिया।

"तो फिर लोगो के अलग अलग धम क्या है?" नख्लूदोव ने पूछा।

"केवल इसलिए कि लोग औरो म विश्वास करते है अपन आप पर विश्वास नही करते। इसी लिए ससार मे अलग अलग धम हैं। मैंने भी पहल लोगो मे विश्वास किया था यहा तक कि मैं दलदल मे फस गया। मुझे कोई बाहर निकलने का रास्ता ही नही मिलता था। कट्टरपथी और नवीनपथी, जूडामवादी और ख्रिस्ती, पोपोव्त्सी और बेजपोपोव्त्सी, अवस्त्रियाक और मालोकान, और स्कोप्त्सी – सभी धम अपने ही गुण गाते हैं। यही कारण है कि सभी अधे पिल्लो की तरह रगते रहत है। धम तो बहुत हैं परन्तु आत्मा तो एक ही है—मुझमे, तुमम उसम। इसलिए अगर हर आदमी अपन म विश्वास करन लगेगा, तो सबमे एकता आ जायगी। सभी लोग अपने प्रति सच्चे रह तो सभी मिल कर एक हो जायेंगे।'

वद्ध बडी ऊची आवाज़ मे बोल रहा था, और बार बार अपने इदगिद दखता था। प्रत्यक्षत उसकी इच्छा थी कि अधिक से अधिक लोग उसकी बात सुनें।

"क्या तुम्हारा यह मत बहुत दिनो से है?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"मेरा? हा, बहुत दिनो से। पिछले २३ बरस से वे मेरे पीछे पडे हुए हैं।"

"पीछे पडे हुए हैं? वह कैसे?"

"जिस तरह उन्होने यीसु मसीह पर जुल्म किये उसी तरह मुझ पर भी जुल्म कर रहे है। मुझे पकड लेत है और अदालतो के सामन, पादरियो, कानूनदानो, और पाखण्डियो के सामने पश करते रहते हैं। एक बार उन्होने मुझे पागलखाने म बन्द कर दिया। पर वे मेरा क्या बिगाड सकते है? म तो

आज़ाद जीव हू। वे मुझसे पूछते है–'तुम्हारा नाम क्या है?' वे समझते हैं कि मैं अपना नाम बतलाऊगा। पर मेरा कोई नाम ही नही है। मैंने सब कुछ त्याग दिया है। मेरा न कोई नाम है, न स्थान, न देश, मेरा कुछ भी नही। मैं बस, केवल स्वय हू। 'तुम्हारा नाम क्या है?' 'इसान।' 'तुम्हारी उम्र कितनी है?' मैं जवाब देता हू, 'मैं अपनी उम्र के साल नही गिनता, गिन सकता भी नही, क्योकि मैं सदा से था और सदा रहूगा।' 'तुम्हारे मा-बाप कौन है?' 'मेरे कोई मा-बाप नही, भगवान और धरती माता के अतिरिक्त मेरा कोई नही। भगवान मेरा पिता है, धरती–माता है।' 'और ज़ार? क्या तुम ज़ार को मानते हो?' वे पूछते है। मैं जवाब देता हू, 'क्यो नही। वह अपना ज़ार है, मैं अपना ज़ार हू।' 'तुम्हारे साथ मगज़पच्ची करने का क्या लाभ?' वे कहते हैं। और मैं कहता हू, 'मैं कब तुमसे कहता हू कि मेरे साथ मगज़पच्ची करो।' इस तरह वे लोग मुझे परेशान करते हैं।"

"अब कहा जा रहे हो?" नख्लूदोव ने पूछा।

"जहा भगवान ले जाय। जहा मुझे काम मिल जाय वहा काम करता हू। जो काम नहीं मिले तो भीख मागता हू।"

वृद्ध ने देखा कि बेडा किनारे पर पहुचने वाला है इसलिए उसने अपनी बात खत्म की और बडे गर्व के साथ आसपास खडे लोगों की ओर देखा, मानो मैदान मार लिया हो।

बेडा दूसरे किनारे पर जा लगा। नेख्लूदोव ने अपना बटुआ निकाला और कुछ पैसे बूढ़े को दिये। लेकिन उसने लेने से इकार कर दिया। बोला–

"मैं इस तरह की चीज़ नही लेता, केवल रोटी लेता हू।"

"अच्छा तो, अलविदा, माफ करना।"

"माफ करने की इसमे क्या बात है। आपने मेरा कोई अपमान नहीं किया, और मेरा अपमान किया भी नही जा सकता।" और बूढ़े ने अपनी पीठ पर सफरी थैला फिर रख लिया जो पहले उसने उतार दिया था।

इस बीच गाड़ी किनारे पर उतार दी गयी थी और उसमे घोडे जोत दिये गये थे।

"मैं तो हैरान हो रहा था, हुजूर, कि आप उस आदमी के साथ

बाते करने लगे थे," जब नख्लूदोव तगड़े नाविकों को पैसे दे कर गाड़ी में बैठा तो गाड़ीवान ने कहा, "यह तो किसी काम का आदमी नहीं, बिल्कुल आवारा है।"

२२

नदी की ढलान पर चढ़ कर जब वे ऊपर पहुँचे तो गाड़ीवान बोला—
"किस होटल में ले चलूँ हुजूर?'
"सबसे अच्छा कौन सा होटल है?'
''साइबीरियन' से अच्छा कोई होटल नहीं है, लेकिन 'दयूकोव' भी बुरा नहीं है।"
"तुम्हारा जहाँ मन चाहे ले चलो।'

गाड़ीवान फिर सीट के एक तरफ हो कर तिरछा बैठ गया, और पहले से भी अधिक तेज़ गाड़ी चलाने लगा। यह शहर भी अन्य शहरों जैसा ही था। वैसे ही घर, हर घर की छत हरे रंग की और ऊपर बरसाती, वैसा ही गिरजा, बड़ी सड़क पर वैसी ही छोटी-बड़ी दूकानें, यहाँ तक कि वैसे ही पुलिस के सिपाही भी थे। परन्तु लगभग सभी घर लकड़ी के बने थे और सड़कें कच्ची थीं। एक सड़क पर पहुँच कर, जिस पर काफी रौनक थी, गाड़ीवान एक होटल के सामने रुका। लेकिन कोई भी कमरा खाली नहीं था, इसलिए वह दूसरे होटल की ओर गाड़ी ले चला। यहाँ पर, दो महीने के बाद, नेख्लूदोव को वैसी जगह रहने को मिली जिसका वह आदी था, जो काफी साफ और आरामदेह थी। कमरा साधारण ही उसे मिला लेकिन दो महीने तक छकड़ों पर हिचकोले खाने के बाद तथा गाँवों की सरायों और पड़ावघरों में रहने के बाद उसने चैन की साँस ली। पड़ावघरों से उसे जुएँ पड़ गयी थीं जिनसे वह कभी भी पूर्णतया छुटकारा नहीं पा सका था, इसलिए उसने पहला काम यह किया कि अपने बदन और कपड़ों को साफ किया। सामान खोलने के बाद वह पहले रूसी हमाम में गया, उसके बाद अपने शहरी कपड़े पहने—कलफ लगी कमीज़, पतलून जिस पर कुछ कुछ सिलवटें पड़ गयी थीं, फ्राक-कोट, उस पर ओवरकोट और इलाके के गवर्नर को मिलने के लिए चल पड़ा। होटल वाले ने एक गाड़ी मँगवा दी जिसका घोड़ा तो खूब पला हुआ किरगीज़ घोड़ा था लेकिन गाड़ी के चूल चलते

हुए चरमर करते थे। शीघ्र ही गाडी एक विशाल और भव्य इमारत के बडे से सायबान मे जा कर खडी हो गयी। सायबान के सामने सन्तरी और एक पुलिस का सिपाही पहरा दे रहे थे। भवन के सामने और पीछे एक बाग था, ऐस्पन और वच वक्षो के बीच, जिनकी पल्लवहीन टहनिया फैल रही थी, देवदार और फर के घन पेड गहरे हरे रग की ओढनी ओढे खडे थे।

जनरल बीमार था और मुलाकातियो से नही मिल रहा था। फिर भी नेख्लूदोव ने चोबदार से अपना काड अन्दर ले जाने को कहा, और चोबदार अन्दर से सन्तोषप्रद जवाब ले कर आया।

"अन्दर तशरीफ ले चलिये।"

हाल, चोबदार, अरदली, सीढिया, नाचने वाला कमरा जिसका फश खूब चमक रहा था—सभी वैसे ही थे जसे कि पीटसबग मे। लेकिन यहा उनका रोब ज्यादा था, और वे गन्दे भी उससे ज्यादा थे।

नेख्लूदोव को पढने वाले कमरे मे ले जाया गया।

जनरल एक फूला हुआ लेकिन जिन्दादिल आदमी था, उभरी हुई नाक, माथे पर जगह जगह सूजन, आखो के नीचे का मास फला हुआ और गजा सिर, वह तातारी सिल्क का ड्रेसिंग-गाउन पहने हुए था, और चादी के होल्डर मे चाय का गिलास थाम चाय की चुस्किया ले रहा था और सिगरेट के कश लगा रहा था।

"मिज़ाज शरीफ, मेहरबान, आइये। माफ करना मैं ड्रेसिंग गाउन चढाये हुए हू। पर न मिलने से तो यो मिलना ही अच्छा है,' अपनी स्थूल गदन पर ड्रेसिंग-गाउन चढाते हुए, और गदन के पिछले भाग को गाउन की सिलवटो से ढकते हुए, उसने कहा, 'मेरी तबीयत कुछ अच्छी नही, इसलिए घर से बाहर नही निकलता। कहो, हमारे इतने दूर दराज इलाके मे कैसे आना हुआ?"

"मैं कैदियो की एक टोली के साथ साथ जा रहा हू। इसमे एक व्यक्ति है जिसके साथ मेरा निकट का सम्बन्ध है, नेख्लूदोव ने कहा "और मैं हुजूर की खिदमत मे कुछ तो उस व्यक्ति की खातिर और कुछ एक दूसरे मतलब के लिए हाज़िर हुआ हू।'

जनरल ने एक और कश लगाया और चाय की चुस्की ली सिगरेट को मलाकाइट की बनी राखदानी मे रखा और दत्तचित्त हो कर नेख्लूदोव

की बात सुनने लगा। उसकी चमकती ग्राँखें जो फूले हुए घेरों म छोटी छोटी दरारो सी लगती थी नख्लूदाव के चेहरे पर टिकी थी। केवल एक बार उसन नेख्लूदाव को टोका और वह भी सिगरेट पेश करने के लिए।

जनरल एक सुसस्कृत व्यक्ति था और फौज के उन अफसरो मे से था जिनका यह विश्वास है कि अपने पशे के साथ उदार तथा मानवीय विचारो का मेल बैठाया जा सकता है। लेकिन स्वभाव का सदभावनाशील तथा समझदार होने के कारण उसे शीघ्र ही पता चल गया कि यह सधि मिलाप असम्भव है। अत अन्दर ही अन्दर वह अशान्त रहने लगा और इस आन्तरिक अशान्ति को भुलाने के लिए उसन शराब की शरण ली। यह शराबखारी की आदत फौज के लोगो म बहुत पायी जाती है। धीरे धीरे वह इसमे अधिकाधिक डूबता गया, यहा तक कि ३५ वष तक फौज की नौकरी करने के बाद डॉक्टरो की परिभाषा म वह बिल्कुल "अलकोहली" हो गया। अल्कोहल उसके अग अग म रच गया था यहा तक कि अगर वह किसी प्रकार का भी तरल पदाथ पी ले तो उसे चढ जाती थी। शराब के बिना वह रह न सकता था, वह उसके लिए अनिवाय बन गयी थी। शाम को हर रोज वह नशे म चूर होता। लेकिन इसकी भी उसे ऐसी आदत पड गयी थी कि न ही वह लडखडाता था और न ही मुह से कोई ऊल-जलूल बात कहता। और यदि कोई ऊल-जलूल बात कह भी जाता तो उसे बडी विद्वत्तापूण बात समझा जाता क्योंकि वह बडे ऊचे और महत्वपूण पद पर था। केवल सुबह के वक्त—उस वक्त जब नख्लूदाव उससे मिलने आया था—उसका दिमाग ठीक काम करता और जो कुछ उससे कहा जाता उसे ठीक समझता था। एक मुहावरा दोहरान की उसे बडी आदत थी और वास्तव मे उसी मुहावरे की वह खुद जीती जागती मिसाल भी था। वह कहा करता—"वह नशे म है पर साथ ही अक्लमन्द भी है, इसलिए उसके सग बैठ कर दो मजे मिलते है।' ऊचे अधिकारियो को मालूम था कि वह पियक्कड है लेकिन वह अन्य लोगो से *ज्यादा पढा लिखा था—हालाकि उसकी शिक्षा उस समय खत्म हो गयी* थी जब उसे पीने की लत्त लगी। साहसी और चतुर आदमी था चाल-ढाल का रोबीला, नशे म भी चतुराई की बात करता, इसलिए उसे इतनी बडी जिम्मेदारी वाले पद पर नियुक्त किया गया था और इस पद पर वह अब भी कायम था।

नेख्लूदाव ने उसे बताया कि जिस कैदी म उसकी दिलचस्पी है वह एक स्त्री है, और यह कि उसके साथ अन्याय हुआ है, और उसकी ओर से एक अपील ज़ार के पास भेजी गयी है।

"अच्छा, तो फिर?" जनरल बोला।

"पीटसबग मे मुझसे कहा गया था कि एक महीने के अन्दर अन्दर इस दरख्वास्त का फसला मेरे पास यहा भेज दिया जायेगा '

जनरल जोर ज़ोर से खासने लगा और अपना हाथ मेज़ की ओर बढाया और वहा पर रखी घटी का अपनी गठीली उगलियो से बजाया। उसकी आखे अब भी नख्लूदोव के चेहरे पर लगी थी और वह बराबर सिगरेट के कश लगाये जा रहा था।

"मेरी यह दरख्वास्त है कि इस औरत का उस वक्त तक यही पर रहने की इजाजत दी जाय जब तक कि इसकी अपील का जवाब नही आ जाता।"

एक अदली ने जो वर्दी पहने था कमरे म प्रवेश किया।

"दर्याफ्त करो कि आना वासील्येव्ना जाग गयी है या नही," जनरल ने अदली से कहा। "और थोडी चाय और ले आओ।" फिर, नेख्लदोव की ओर घम कर बोला, "हा, तो और क्या बात है?"

"मेरी दूसरी दरख्वास्त एक राजनीतिक कैदी के बारे मे है। वह भी इसी टोली म जा रहा है।'

"यह बात है!" जनरल ने कहा और बडे महत्वपूण ढग स सिर हिलाया।

"वह बहुत सख्त बीमार है—मर रहा है—शायद उसे या भी यहा अस्पताल मे छोड जायगे। इही राजनीतिक कैदियो म से एक स्त्री उसकी टहल-सेवा करने के लिए उसके साथ रहना चाहती है।"

"क्या वह उसकी रिश्तेदार है?'

"नही, लेकिन वह उसके साथ शादी कर लेगी, अगर शादी कर लेने से उस यहा रुकने की इजाज़त मिल सकती हो।"

जनरल की चमकती आखें अब भी नख्लूदाव के चेहरे पर लगी थी। वह चुपचाप सिगरेट के कश लगाता हुआ उसकी आर देखे जा रहा था ताकि मुलाकाती विचलित हो जाय।

जब नख्लूदोव अपनी बात कह चुका तो जनरल न मेज़ पर मे एक

किताव उठायी, अगुली को लव स तर किया और जल्दी जल्दी पन्ने उलटते हुए वह पता निकाल कर पढने लगा जिस पर शादियों के बारे म सरकारी कानन दज था।

'उस औरत को क्या सज़ा दी गयी है? किताब पर स सिर उठाते हुए उसने पूछा।

"कडी मशक्कत की।"

'जिसे कडी मशक्कत की सज़ा दी गयी हो उसकी स्थिति शादी द्वारा वेहतर नही बनायी जा सकती।"

"यह तो ठीक है, लेकिन ,

"माफ कीजिये। यदि कोई आज़ाद आदमी भी उसके साथ व्याह करेगा उस हालत म भी उस अपनी सज़ा भुगतनी पडेगी। ऐसी स्थिति म देखना यह होता है कि किसको ज्यादा कडी सज़ा मिली है—आदमी को या औरत को।"

"दोनो को एक जैसी कडी मशक्कत की सज़ा मिली है।

"वस फिर दोनो बराबर हो गये। जनरल ने हस कर कहा। जो मद को मिला है, वही औरत को भी मिला है। पर चूंकि मद बीमार है उस यही पर छोडा जा सकता है। उसकी देखभाल के लिए जो कुछ भी ज़रूरी हुआ किया जायेगा। लेकिन जहा तक उस स्त्री का सवाल है, यदि वह उसस शादी कर भी ल तो भी उसके साथ पीछे नही रह सकती।

"मालकिन काफी पी रही है " अदली न आ कर कहा।

जनरल न सिर हिलाया और अपनी वात जारी रखत हुए कहा—

"अच्छा, मैं सोचूगा। उनके नाम क्या है? यहा कागज़ पर लिख दो।"

नेख्लूदोव न उनके नाम लिख दिये।

इसके बाद नेख्लूदोव ने मरणासन्न कैदी से मिलने की इजाजत मागी।

"नही, इसकी इजाज़त भी मैं नही दे सकता ' जनरल ने जवाब दिया, "मुझे तुम पर शक तो बिल्कुल नहीं है लेकिन तुम उसम और अन्य कैदियो म दिलचस्पी रखते हो और तुम्हारे पास पैसा है। और यहा, जिसके जेब म पैसा हो वह सब कुछ कर सकता है। मुझसे कहा जाता है "रिश्वतखोरी को बन्द कराओ।' मगर मैं रिश्वतखोरी को कैसे बन्द करा सकता हू जब सभी रिश्वत लेते हैं? जितना छोटा अफसर होगा उतना

ही जल्दी रिश्वत के लिए हाथ फैलायेगा। और तीन हज़ार मील के लम्बे चौडे इलाके मे इसका पता भी कैसे लगाया जा सकता है? बाहर तो हर अफसर जार बना हुआ है, जिस तरह मैं यहा पर हू," उसने हस कर कहा। "और शायद तुम राजनीतिक बंदियो से मिल भी चुके हो। बस, पैसे दिये होगे और इजाज़त मिल गयी होगी, क्यो?" वह मुस्करा रहा था। "क्या, ठीक है न?"

"हा, ठीक है।"

"मैं समझ सकता हू कि इसके बिना तुम्हारे लिए कोई चारा न था। तुम्हारे दिल म राजनीतिक बंदी के लिए दद उठता है और तुम उससे मिलना चाहते हो। दूसरी तरफ इस्पेक्टर या कॉनवाय का सिपाही इसलिए रिश्वत ले लेता है क्योकि उसे केवल ४० कोपेक रोज़ाना के हिसाब से तनख्वाह मिलती है, और उसके बाल-बच्चे हैं। वह अपनी जगह लाचार है। अगर मैं तुम्हारी जगह पर होऊ, या उसकी जगह पर, तो मैं भी यही कुछ करूगा। पर अपनी जगह पर यहा मैं कानून से एक इच भी इधर से उधर नहीं हो सकता। मैं इसकी अपने को इजाज़त ही नहीं देता, क्योकि मैं इन्सान हू और मुझ पर भी भावुकता का असर हो सकता है। मैं तो खुद प्रशासन मे हू और मेरे हाथ म एक जिम्मेवारी का काम सौंपा गया है, जिसकी अपनी खास शर्तें हैं, और मुझे इन शर्तों को हर हालत मे पूरा करना है अच्छा, अब यह काम तो खत्म हुआ। अब कुछ राजधानी की खबर सुनाओ।" और जनरल बहुत कुछ पूछने और सुनाने लगा। वह खबरे भी सुनना चाहता था और साथ ही अपने प्रभुत्व और दयालुता का रोब भी गाठना चाहता था।

२३

"तुम ठहरे कहा हो?" जब नेख्लूदोव विदा होने लगा तो जनरल ने पूछा। 'द्यूकोव होटल म? जगह तो बेकार ही है। आज शाम को पाच बजे मेरे साथ खाना खाओ। तुम अग्रेज़ी जानते हो?"

'जी जानता हू।

'यह बहुत अच्छा हुआ। अभी अभी यहा एक अग्रेज़ यात्री पहुचा है। वह निर्वासन के विषय पर अध्ययन कर रहा है और साइबेरिया के

जेलखाना की जाच करने आया है। आज वह हमारे यहा खाना खाने आ रहा है। जरूर आना। हम पाच बजे मेज पर बैठ जाते है और मेरी पत्नी वक्त की बडी पाबन्द है। मैं उस वक्त तुम्हे उस औरत और बीमार कदी के बारे मे भी अपना जवाब बता दूगा। शायद बीमार के पास किसी का छोडना सभव हो जाय।"

जनरल से विदा ले कर नेख्लूदोव गाडी मे बैठ डाकखाने की ओर जाने लगा। वह एक नयी उत्तेजना भरी स्फूर्ति का अनुभव कर रहा था।

डाकखाना नीची छत के एक मेहराबदार कमरे म था। काउटर के पीछे कुछेक कमचारी बैठे काम कर रहे थे और काउटर के सामने लागो की भीड लगी थी। एक कमचारी सिर एक ओर को झुकाये चिट्ठिया पर मोहर लगा रहा था। बडी फुर्ती से उसके हाथ चल रह थे। नख्लूदोव को ज्यादा देर इन्तजार नही करना पडा। उसने अपना नाम बताया तो फारन ही उसकी डाक उसके हाथ मे दे दी गयी। डाक मे बहुत कुछ था कई चिट्ठिया, रुपया किताबे, "ओतेचेस्त्वेनिये जापीस्की" पत्रिका का नया अक। नेख्लूदोव इन्हे उठा कर लकडी के एक बेंच पर जा बैठा जिस पर कोई फौजी हाथो मे किताब पकडे, पहले से बैठा इन्तजार कर रहा था। नख्लदोव उसके पास ही बैठ गया और अपनी चिट्ठिया छाटने लगा। चिट्ठिया म एक रजिस्ट्री चिट्ठी थी, जिसका लिफाफा बहुत बढिया था और ऊपर साफ चमकती लाल रग की मोहर लगी थी। नेख्लूदोव न मोहर को तोडा। अन्दर सेलेनिन की एक चिट्ठी थी जिसके साथ कुछेक सरकारी कागज उसने भेजे थे। देखते ही नेख्लूदोव का चेहरा लाल हो गया, और दिल धडकने लगा। कात्यूशा की अपील का जवाब आया था। यह जवाब कैसा होगा? कही अपील को रद्द तो नही कर दिया गया। नख्लदोव न जल्दी जल्दी खत पढ डाला, जो बडी बारीक लिखावट मे लिखा था। शब्दो की बनावट दृढ थी किन्तु व बहुत ही एक दूसरे के साथ जुडे हुए थे। खत को पढना मुश्किल हो रहा था। उसे पढत ही नख्लूदोव ने चैन की सास ली। जवाब उत्साहवद्धक था।

'प्रिय मित्र,' सलेनिन न लिखा था, "आखिरी बार जब तुम मुझसे मिल तो तुम्हारी बातो का मुझ पर गहरा असर हुआ। मास्लोवा के बारे म जो कुछ तुमने बताया वह ठीक था। मैंने मुकद्दमे की फाइल को ध्यान स पढा है और देखता हू कि उस पर घोर अन्याय हुआ है। जिस अपील

कमेटी का तुमने उसकी दरख्वास्त पश की थी, वही इसका निणय कर सकती थी। मुकद्दमे की जाच मे मैंने भी सहायता की। इस चिट्ठी के साथ उस हुक्मनामे की नकल भेज रहा हू जिसके अनुसार उसकी सज़ा बहुत कम कर दी गयी है। तुम्हारी मौसी काउटेस येकातेरीना इवानाव्ना से मुझे तुम्हारा पता मिला और इसी पर मैं तुम्ह यह नकल भेज रहा हू। असल दस्तावेज उस जगह पर भेज दिया गया है जहा पर मुकद्दमे से पहले उसे रखा गया था। वहा से सभवत फौरन ही साइबेरिया के मुख्य सरकारी दफ्तर मे भेज दिया जायेगा। इस शुभसमाचार को फौरन तुम तक पहुचाने के लिए यह खत लिख रहा हू। सप्रेम—तुम्हारा, सेलनिन।'

सरकारी हुक्मनामा इस तरह था—"महाराजाधिराज के अपील कार्यालय से जहा महाराजाधिराज के नाम दी हुई दरख्वास्ते ली जाती हैं।' आगे तारीख तथा अन्य कानूनी बात लिखी थी। "महाराजाधिराज के अपील कार्यालय के मुख्य अधिकारी की ओर से मश्चा का येकातेरीना मास्लोवा को सूचित किया जाता है, कि महाराजाधिराज ने उसकी दरख्वास्त पर विचार कर के उसे मजर करने की कृपा की है, और हुक्म फमाया है कि कडी मशक्कत की सजा के स्थान पर साइबेरिया के किसी निकटवर्ती स्थान पर केवल निर्वासित कर दिया जाय।"

बडी अच्छी खबर थी और महत्वपूण। जिस चीज़ की नेख्लूदाव अपने लिए तथा कात्यशा के लिए आशा करता था वही पूरी हो गयी थी। यह ठीक है कि मास्लोवा की इस नयी स्थिति के कारण उनके आपसी सबधा म नयी उलझनें पैदा हो गयी थी। जितनी देर तक उस पर कडी मशक्कत की सजा लागू है उतनी देर तक उसके साथ शादी भी सच्ची शादी नही होगी। और सिवाय इसके कि वह इस द्वारा उसकी यातना को हल्का बना सके उसका कोई अथ भी नही होगा। पर अब दाना के एक साथ रहन मे कोई रुकावट नही थी। और इसके लिए नेख्लूदोव तैयार नही था। यही नही, सिमनसन के साथ मास्लोवा के सम्बन्ध का क्या होगा? जो शब्द कल मास्लोवा ने कहे थे, उनका क्या अथ था? और यदि वह सिमनसन के साथ शादी करने पर रज़ामन्द हो गयी तो यह अच्छा होगा या बुरा? नेख्लूदोव के लिए इन सवालो को गुत्थी सुलझाना आसान नही था इसलिए उसने इनके बारे मे सोचना छोड दिया। "अपने आप कोई रास्ता निकल आयेगा,' उसने सोचा इस समय इस उधेडबुन मे नहीं

पडना चाहिए। इस वक्त तो मुझे जितनी जल्दी हो सके यह खुशखबरी मास्लोवा को सुनानी चाहिए और उसे कैद से छुडाना चाहिए। उसका ख्याल था कि हुक्मनामे की नकल से ही यह सभव हो जायगा। इसलिए डाकखाने मे से निकलते ही उसने गाडीवान को जेलखाने की तरफ चलने को कहा।

जेलखाने के भीतर जाने की उसने गवर्नर से उस रोज इजाजत नही ली थी। लेकिन अपने अनुभव से वह जानता था कि जिस बात की इजाजत बडे अफसर नही देते वह छोटे अफसरो से आसानी से पूरी हो जाती है। अब उसका यही इरादा था कि कोशिश कर के जेल के अन्दर चला जाय और कात्यूशा को यह शुभसमाचार सुनाये और हो सके तो उसे फौरन छुडवा दे। साथ ही वह क्रिल्त्सोव की सेहत के बारे मे दर्याफ्त करना चाहता था और जो कुछ गवर्नर ने कहा था वह उस तथा मारीया पाब्लोव्ना को बता देना चाहता था।

जेल इन्स्पेक्टर ऊचा-लम्बा रोबीला आदमी था। मूछे और गलमच्छे दोनो का रुख उसके होठो के कोनो की ओर था। नेख्लूदोव के साथ वह बडी रुखाई से पेश आया और साफ साफ कह दिया कि चीफ के विशेष आर्डर के बिना वह बाहर के किसी भी आदमी को कैदियो से मिलने की इजाजत नही दे सकता। जब नेख्लूदोव ने कहा कि उसे तो राजधानी तक मे कैदियो से मिलने की इजाजत मिलती रही है तो बोला—

"जी ठीक होगा, लेकिन मैं तो इजाजत नही दे सकता।" उसके लहजे से जान पडता था मानो वह कह रहा हो, "शहरो के अमीरजादे समझते हैं कि हम पर रोब गाठ कर हमे हतबुद्धि कर सकेगे। पर हम पूर्वी साइबेरिया मे रहते हुए भी कानून से अच्छी तरह वाकिफ है बल्कि हम उन्हे कानून सिखा सकते हैं।"

न ही जेल इन्स्पेक्टर पर हुक्मनामे की उस नकल का ही कोई असर हुआ जो सीधी महाराजाधिराज के अपने दफ्तर से आयी थी। उसने दृढता से कह दिया कि वह नेख्लूदोव को जेलखाने की चारदीवारी मे नही घुसने देगा। वह नेख्लूदोव के भोलेपन पर बडी घृणा से मुस्करा दिया जो यह समझे बैठा था कि मास्लोवा को जेल से छुडाने के लिए यह नकल ही काफी है। उसने साफ साफ कह दिया कि अपने से बडे अधिकारी की ओर से सीधा हुक्म मिलने पर ही वह किसी कैदी को रिहा कर सकता

है। हा, इस बात का उसने आश्वासन दिया कि वह मास्लोवा से कह दगा कि उसके लिए सजा कम करने का हुक्म आ गया है, और ज्यो ही उसके चीफ से उसे आदेश मिला वह मास्लोवा को फौरन रिहा कर देगा, उसे बिल्कुल नही रोकेगा।

क्रिलत्सोव की भी कोई खबर वह दने के लिए तैयार न था। वह यह भी बतान के लिए तैयार नही था कि इस नाम का कोई कैदी जेलखाने म है भी या नही। इस तरह नख्लदोव के कुछ भी हाथ नही लगा और वह गाडी म बैठ कर वापस अपन होटल की ओर रवाना हो गया।

इस्पक्टर की कठोरता का एक कारण था। जेलखाने म टाइफ्स की बीमारी फैल गयी थी क्योकि जेलखाने मे जितने कैदियो क लिए जगह थी उससे दुगुने भर पडे थे। गाडीवान ने नेख्लूदोव को बताया कि "हर रोज कितने ही लाग जेलखान म मर जाते हैं। कोई भयानक रोग उन्ह लग गया है। एक एक दिन मे बीस बीस लाशो को दफनाया जाता है।"

२४

जेलखान मे तो नेख्लदाव नाकामयाब रहा, मगर इसके बावजद वह उसी स्फूर्ति और उत्साह के साथ गवनर के दफ्तर की ओर यह पता लगाने के लिए चल पडा कि मास्लोवा के लिए असल हुक्मनामा पहचा है या नही। वह नही पहुचा था। वहा से नख्लूदोव सीधा अपने होटल को गया और उसी वक्त सेलेनिन तथा अपने वकील को इस बार म खत लिख दिये। खत लिख चुका तो घडी देखी। गवनर के घर जान का समय हो गया था।

रास्त म फिर उस यही खयाल आन लगा कि जब कात्यूशा को पता चलेगा कि उसकी सजा कम कर दी गयी है तो उसकी क्या प्रतिक्रिया होगी। अब उस कहा रहना पडेगा? यदि नख्लदाव उसके साथ रह तो उनके बीच कैसा सम्बध होना चाहिए? और सिमनसन? वह उसके बार म क्या सोचती है? उसे याद आया कि मास्लोवा बदल गयी है और इस परिवतन के बारे म सोचते हुए उसे मास्लोवा के अतीत की याद आन लगी।

"फिलहाल मुझे इन बातो के बारे मे नही सोचना चाहिए,' उसने सोचा और मास्लोवा को मन मे से निकालने की चेष्टा करने लगा। "जब वक्त आया तो देख लेगे," उसने मन ही मन कहा और यह सोचने लगा कि उसे गवनर से क्या कहना चाहिए।

जनरल के घर भोजन का प्रबन्ध उसी शानोशौकत से हुआ था जिसका नेख्लूदोव अभ्यस्त रहा था। अमीरो और बडे बडे अफसरो के घरो मे ऐसा ही आयोजन किया जाता है। नेख्लूदोव को बहुत आनन्द आया, विशेषकर जब कि आराम आसाइश तो दूर, वह मुद्दत से साधारण आराम से भी वंचित रहा था।

घर की मालकिन पीटसबग की रहने वाली पुराने ढग की grande dame* थी, जार निकोलाई प्रथम के दरबार की कुलीन सेविका थी फ्रासोसी भाषा बडे स्वाभाविक ढग से और रूसी भाषा बडे अस्वाभाविक ढग से बोलती थी। वह सारा वक्त सीधी तन कर रहती और जब हाथो को हिलाती तो कोहनियो को कमर के साथ जोडे रखती। पति के प्रति उसका आदर भाव सयत और उदासी का पुट लिये था। मेहमानो के प्रति वह अत्यन्त सदभावनापूण थी हालाकि प्रत्येक के प्रति उसकी स्थिति के अनुसार, उसके व्यवहार मे हल्का सा फरक होता। नेख्लूदोव से वह इस तरह मिली जसे घर का आदमी हो। इतने सुचारु ढग से बिना पता चले, उसने नेख्लूदोव की तारीफ की कि नेख्लूदोव को फिर एक बार अपने गुणो का आभास होने लगा और उसका हृदय सन्तोष से भर उठा। उस स्त्री ने नेख्लूदोव को महसूस कराया जैसे उसे मालूम हो कि वह क्यो साइबेरिया मे आया है, जसे वह जानती हो कि जो कदम उसने उठाया है वह अनठा होते हुए भी सच्चे दिल से उठाया गया है, जसे वह उसे कोई विलक्षण पुरुष समझती हो। इस चतुर चापलसी तथा गवनर के घर की कमनीयता और ठाठ-बाट ने नेख्लूदोव को अभिभूत कर दिया। इस घर के सुन्दर वातावरण, स्वादिष्ट व्यजन, तथा सुशिक्षित लोगो के साथ आराम से बैठ कर वार्तालाप करने के आनन्द मे वह बिल्कुल खो गया। उसे ऐसा जान पडने लगा जसे वह वातावरण जिसमे वह पिछले महीने रहता रहा है एक स्वप्न था जिसमे से अब वह जाग कर वास्तविकता से साक्षात कर रहा है।

---

*ऊचे समाज की महिला (फेंच)

घर के लोगों के अतिरिक्त—जिनमें जनरल की बेटी, दामाद तथा एड डि-कम्प शामिल थे—वहां पर एक अंग्रेज सज्जन, एक व्यापारी जिसका सोने की खानों से सम्बन्ध था, तथा साइबेरिया के एक दूरस्थ नगर के गवर्नर मौजूद थे। नेख्लूदोव को सभी लोग बड़े रुचिकर लगे।

अंग्रेज सज्जन की बात बड़ी रोचक थी। सेहत अच्छी, और गालों का रंग लाल, यह सज्जन फ्रांसीसी भाषा तो बहुत बुरी बोलता था लेकिन अपनी भाषा वह खूब जानता था, और एक प्रभावशाली वक्ता था। दुनिया का उसने बहुत कुछ देखा था और अमरीका, भारत, जापान, तथा साइबेरिया के बारे में बड़ी रोचक बातें सुनाता था।

नेख्लूदोव को वह युवा व्यापारी भी बहुत अच्छा और रुचिकर लगा, जिसका सोने की खानों से सम्बन्ध था। वह एक किसान का बेटा था। लन्दन का सिला सायकालीन सूट पहन कर आया था, और कमीज में हीरों के स्टड लगा रखे थे। उसके पास पुस्तकों का बहुत अच्छा संग्रह था, जनकल्याण के कामों में खुले दिल से पैसे दिया करता था। उसके विचार यूरोपीय उदारवादी थे। नेख्लूदोव को इसमें एक प्रकार की नवीनता और श्रेष्ठता नजर आयी। वह उन स्वस्थ और भोले भाले किसानों में से था जो यूरोप की सभ्यता और संस्कृति की कलम लग जाने से निखर उठते हैं।

साइबेरिया के दूरस्थ नगर का गवर्नर वही आदमी था—सरकारी विभाग का भूतपूर्व डायरेक्टर—जिसकी पीटर्सबर्ग में उन दिनों बड़ी चर्चा थी जब नेख्लूदोव वहां पर था। स्थूलकाय आदमी था, बारीक घुंघराले बाल, हल्की नीली आंखें, गोरे हाथ जिन पर बहुत सी अंगूठियां थीं, बड़ी नफासत से तराशे हुए नाखून, और चेहरे पर मृदु मुस्कान। उसके जिस्म का निचला हिस्सा खासा भारी भरकम था। जनरल को अपना यह साथी बहुत पसन्द था, क्योंकि जहां चारों ओर सभी अधिकारी घूस लेते थे, वहां पर यही एक आदमी था जिसके हाथ बिल्कुल साफ थे। घर की मालकिन भी इसकी बड़ी कद्र करती थी। मालकिन को संगीत का शौक था और वह बहुत अच्छा पियानो बजाती थी। वे दोनों मिल कर चार हाथों से पियानो बजाते थे। इस समय नेख्लूदोव का मन इतना खुश था कि उसे यह आदमी भी बुरा नहीं लगा।

नेख्लदोव को एड डि-कैम्प भी अच्छा लगा। खिला हुआ चेहरा, फुर्तीला बदन, ठोडी का रंग कुछ कुछ नीला और भूरा यह आदमी स्वभाव का इतना अच्छा था कि आगे उठ बढ कर सबकी सेवा कर रहा था।

परन्तु सबसे अधिक उस जनरल की बेटी और उसका पति पसन्द आये। यह जोडी बडी प्यारी थी। लडकी शकल की सीधी-सादी और मन की सरल थी, और अपने दो बच्चो म दुनिया को भूले हुए थी। शादी से पहले इस युवक से उसे गहरा प्रेम रहा था और व्याह करने के लिए उसे अपने मा-बाप के साथ बडी जद्दोजहद करनी पडी थी। उसका पति उदार विचारो का युवक था, मास्को विश्वविद्यालय का स्नातक था और पठन पाठन मे रुचि रखता था। अब सरकारी नौकरी कर रहा था और सांख्यिकीय विभाग मे काम करता था। उसका काम मुख्यतया गैररूसी जातियो से सम्बधित था, उनम उसकी गहरी रुचि थी और वह उन्हे नेस्तानाबूद हो जाने से बचाना चाहता था।

सभी लोग नेख्लूदोव के साथ बडी सदभावना से पेश आये, उसकी एक एक बात को बडे ध्यान मे सुनते। इतना ही नही व उसे एक नये और दिलचस्प व्यक्ति के नाते भी मिल कर खुश हुए थे। जनरल भोजन पर अपनी वर्दी पहन कर आया जिस पर सफेद क्रास चमक रहा था। वह नेख्लूदोव से दोस्तो की तरह मिला और फिर सब मेहमानो को न्योता दिया कि आइये दो दो घूट वोद्का के पी ले, और उन्हे साथ वाले छोटे से मेज़ की ओर ले गया जिस पर शराब वगैरा रखी थी। जनरल ने नेख्लूदोव से पूछा कि मेरे यहा से जा कर दिन भर क्या करते रहे हो। नेख्लदोव ने बताया कि वह डाकखाने गया था जहा उसे यह खबर मिली कि जिस व्यक्ति के बारे म उसने ज़िक्र किया था, उसकी सज़ा बहुत कम कर दी गयी है। नेख्लूदोव ने दोबारा जेलखाने मे जा कर कैदियो म मिलने की इजाज़त मागी।

जनरल की भौहे चढ गयी पर वह बोला कुछ नही। ज़ाहिर है उसे इस वक्त काम-काज का पचडा ले बैठना अच्छा नही लगा।

"वोदका पियेंगे आप?" जनरल ने फ्रासीसी भाषा मे अग्रेज़ से पूछा जो अभी अभी मेज के पास आया था। अग्रेज न वोद्का पी, फिर बताने लगा कि वह उस रोज़ गिरजा और फैक्ट्री देखने गया था, लेकिन वह

बडा जेलखाना देखना चाहता था जहा निर्वासित किय जाने वाले कैदियो को रखा जाता है।

"तब तो बात बन गयी," जनरल ने नेख्लूदोव से कहा, "आप दोना एक साथ जा सकेगे। इह एक पास बना दो," उसने एड डि-कम्प से घम कर कहा।

"आप कब जाना चाहते ह?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"अक्सर मुझे शाम को जेलखाना मे जाना ज्यादा अच्छा लगता है,' अग्रेज ने कहा, "सभी कैदी अदर होते हैं, और पहले से किसी किस्म की तैयारी नही की होती। कैदियो को आप उनके असली रूप म देखत है।"

"ख़ूब, हमारे मित्र उह अपने पूरे जीवन पर देखना चाहते हैं। देखें, ज़रूर देखे। मै कई बार लिख चुका हू, लेकिन वे लोग कोई ध्यान नही देते। अब उह विदेशी पत्रिकाओ से इसका पता चलेगा," जनरल ने कहा और चलता हुआ खाने की मेज़ के पास जा पहुचा जहा मालकिन मेहमानो को अपने अपने स्थान पर बिठा रही थी।

नेख्लदोव के एक तरफ मालकिन और दूसरी तरफ अग्रेज सज्जन थे। उसके सामने जनरल की बेटी और सरकारी विभाग का भूतपूव डायरेक्टर बैठे थे। मेज़ पर वार्तालाप उखडा उखडा सा रहा, अब अग्रेज सज्जन ने हिदुस्तान के बारे मे कुछ कहा तो फिर जनरल ने टाकिन अभियान की चर्चा की और कहा कि वह उसके बिल्कुल हक म नही है, फिर साइबेरिया मे व्यापक घूस और भ्रष्टाचार की बात चली। इन सब विषयो मे नेख्लदोव की रुचि नही थी।

लेकिन भोजन के उपरात, कॉफी पीते समय, घर की मालकिन, नेख्लदोव और अग्रेज़ सज्जन के बीच बडी दिलचस्प बातचीत होन लगी। विषय था ग्लैंड्स्टन। नेख्लूदोव को लगा जैसे उसके मुह मे से बडी विद्वत्तापूण बाते निकल रही है जिनसे उसके साथी काफी प्रभावित हो रहे है। भोजन बहुत अच्छा था। और भोजन के बाद आराम-कुर्सी पर इन कुलीन, मिलनसार लोगा के बीच बठ कर कॉफी की चुस्किया लेते हुए, नख्लूदोव का और भी अच्छा लग रहा था। इसके बाद अग्रेज सज्जन ने मालकिन से पियानो बजाने की दरख्वास्त की। मालकिन और भतपूव डायरेक्टर बडे अभ्यस्त ढग से पियानो पर बीथोवन की पाचवी सिम्फनी

बजाने लगे। उसे सुनते हुए नेख्लूदोव पूर्ण आत्मसन्तोष का अनुभव करने लगा। मुद्दत से वह इस सन्तोष से अनभिज्ञ रहा था, मानो उसने अभी अभी जाना हो कि वह कितना अच्छा आदमी है।

ग्रैंड पियानो बहुत बढिया था और सिम्फनी बडी कुशलता से बजायी गयी थी। कम से कम नख्लूदोव को ऐसे ही लग रहा था। उसे यह सिम्फनी पसन्द थी और उससे वह परिचित भी था। जब "अन्दान्त" बजाया जाने लगा तो नेख्लूदोव का हृदय अपने बहुसख्यक गुणो का भास पा कर इतना उद्वेलित हो उठा कि उसके नाक म खारिश होने लगी।

नेख्लूदोव ने मालकिन का धन्यवाद किया, और कहा कि आज उसने उस आनन्द का अनुभव किया है जिससे वह बहुत दिनो से वचित रहा था। जब वह विदा लेने लगा तो मालकिन की बेटी उसके पास आयी — उसके चेहरे पर दृढता का भाव था — और शर्मा कर कहने लगी —

"आपने मेरे बच्चो के बारे मे पूछा था। उन्हे देखना पसन्द करेगे?"

"यह समझती है कि हर कोई इसके बच्चे देखने के लिए मचल रहा है," अपनी बेटी के इस प्यारे भोलेपन को देख कर मालकिन ने मुस्करा कर कहा। "प्रिस को इसमे कोई दिलचस्पी नही है।"

"नही नही, इसके बिल्कुल उलट, मुझे इसमे बेहद दिलचस्पी है," नेख्लूदोव ने कहा। इस छलकती आनन्द विभोर ममता ने उसके दिल को अभिभूत कर दिया था। "जरूर मुझे उनके पास ले चलिये।"

"प्रिस को अपने बच्चे दिखाने ले जा रही है!" जनरल ने हसते हुए खूब ऊची आवाज मे कहा। वह एक मेज पर बैठा, अपने दामाद, सोने की खानो के मालिक और एड डि-कैम्प के साथ ताश खेल रहा था। "जाइये, जाइये, अपना फर्ज निभा आइये।"

लडकी तेज तेज चलती हुई भीतर के कमरो की ओर जाने लगी। वह बडी उत्तेजित थी कि अभी उसके बच्चो पर निर्णय दिया जायेगा। पीछे पीछे नेख्लूदोव जा रहा था। वे तीसरे कमरे मे पहुचे। कमरा विशाल और ऊचा था, दीवारो पर सफेद कागज लगा था, एक तरफ एक लैम्प जल रहा था जिस पर शेड लगा था। दो पालने थे, जिनके बीच एक आया कधो पर सफेद रग का केप डाले बैठी थी। आया के चेहरे पर मृदुता का भाव था और उसकी शक्ल-सूरत खास साइबेरिया के लोगो की सी थी, गालो की हड्डिया उभरी हुई थी। वह उठ खडी हुई और

झुक कर अभिवादन किया। मा एक पालने के पास जा कर उसके ऊपर मुकी। पालने मे दो बरस की एक लडकी आराम से सो रही थी। उसका मुह खुला था और लम्बे लम्बे घुघराले बाल सिरहाने पर छितर हुए थे।

"इसका नाम कात्या है," बच्ची का सफेद और नीले रग का बुना हुआ कम्बल ठीक करते हुए मा ने कहा, जिसके नीचे से बच्ची का एक गोरा गोरा पैर बाहर निकला हुआ था। "सुन्दर है न? अभी केवल दो बरस की है।"

"बडी सुदर है!"

"और यह वास्युक है। इसके नाना ने इसका यह नाम रखा है। यह बिल्कुल और तरह का है। इसकी शकल साइबेरिया के लोगो जैसी है। क्यो, है नही?"

"बडा प्यारा बच्चा है।" नेख्लूदोव ने कहा। गोल मटोल बालक, पेट के बल मजे से सो रहा था।

"हा?" मा बोली। उसके चेहरे पर गर्वपूर्ण मुस्कान खेलने लगी।

नेख्लूदोव को याद आया हथकडिया-बेडिया, मुडे हुए सिर, लडाई झगडा, भ्रष्टाचार के दृश्य, मरणासन्न क्रिल्सोव, कात्यूशा और उसका सारा अतीत। उसका मन ईर्ष्या से भर उठा। उसका मन इस सुख के लिए ललक उठा जो उसे स्वच्छ और सुसस्कृत लग रहा था।

उसने बार बार बच्चो को सराहा जिससे किसी हद तक जरूर मा को सन्तोष हुआ होगा, क्योकि वह सराहना का एक एक शब्द बडी आतुरता से सुन रही थी। इसके बाद दोनो बठक मे लौट आये। यहा, जैसा कि प्रबध किया गया था, अग्रेज जेलखाने म चलने के लिए नेख्लूदोव का इन्तजार कर रहा था। घर के लोगो—बूढा और छोटा—सभी से विदा ले कर अग्रेज और नेख्लूदोव दोनो घर के बाहर ओसारे मे आ गये।

मौसम बदल गया था। बरफ पड रही थी, जिसके बडे बडे फाहा से सडक, मकानो की छत, बाग के पेड, ओसारे की सीढिया, तथा गाडी की छत और घोडे की पीठ तक सभी ढक गये थे। अग्रेज के पास अपनी गाडी थी। उसके गाडीवान को जेलखाने की ओर ले चलने को कह कर नेख्लूदोव अपनी गाडी म अकेला बैठ गया और अग्रेज की गाडी के पीछे पीछे चल दिया। उसका दिल बोझल हो रहा था, मानो कोई अप्रिय सा कर्तव्य निभाने जा रहा हो। नरम नरम बर्फ पर गाडी कठिनाई से चल रही थी।

यद्यपि जेलखाने का ओसारा, छत, दीवारें—सभी कुछ बरफ की साफ, सफेद चादर से ढका हुआ था, फिर भी फाटक पर खड़े संतरी और ऊपर से लटकते लैम्प समेत यह मनहूस इमारत और उसकी रोशन खिडकियों की कतार सुबह से भी अधिक मनहूसी फैला रही थी।

जेलखाने का रोबीला इन्स्पेक्टर फाटक पर आया। लैम्प की मद्धिम रोशनी मे उसने उस प्रवेशपत्र को पढा जो अंग्रेज और नख्लूदोव का दिया गया था। हैरान हो कर उसने अपने सुगठित कन्धे बिचका दिये परन्तु आदेश का पालन करते हुए उन्ह अन्दर चलने को कहा। आगन लाघ कर उसने दायें हाथ एक दरवाजे म प्रवेश किया फिर सीढिया चढ कर उन्ह अपने दफ्तर म ले गया। उसने उन्हे बैठने को कहा फिर पूछा कि उनकी क्या खिदमत कर सकता है। नख्लूदोव ने कहा कि वह फौरन मास्लोवा से मिलना चाहता है। इस पर इन्स्पेक्टर ने एक वाडर का हुक्म दिया कि मास्लोवा का लिवा लाये और स्वय अंग्रेज के सवालो का जवाब देने को तैयार हो गया। अंग्रेज तुरत ही उससे सवाल पूछने लगा। नेख्लूदोव दोनो के बीच दोभाषिये का काम कर रहा था।

"यह जेलखाना कितने कैदियो को रखने के लिए बनाया गया है?" अंग्रेज ने पूछा। "इस समय यहा पर कितने कैदी मौजूद है? आदमी कितने? औरत कितनी है? बच्चे कितने हैं? कितने कैदियो को कडी मशक्कत की सजा मिली है? जलावतनी की सजा वाले कितने हैं? बीमार कितने है?"

नेख्लूदोव यन्त्रवत अंग्रेज के प्रश्नो और इन्स्पेक्टर के उत्तरो का अनुवाद करता जा रहा था। उनके अर्थो की ओर उसका ध्यान नही था। मास्लोवा के साथ होने वाली भेंट के बारे मे सोच कर सहसा उसका मन विचलित हो उठा था। इसकी उसे तनिक भी आशा नही थी। अंग्रेज के किसी वाक्य का वह अनुवाद कर रहा था जब कदमो की आवाज आयी, फिर दरवाजा खुला, और जैसा कि पहले भी कई बार हो चुका था, पहले एक वाडर ने और उसके पीछे पीछे कात्यूशा ने प्रवेश किया। कात्यूशा ने सिर पर रूमाल बाध रखा था और कैदियो की जाकेट पहने हुए थी। उसे देखते ही नख्लूदोव का मन उदास हो उठा।

"मैं जीना चाहता हू। मैं चाहता हू मेरे परिवार हो, बच्चे हो, मैं इन्सानो की तरह जीना चाहता हू।" सहसा यह विचार नख्लूदोव के मन मे कौंध गया, जब आखें नीची किये, तेज तेज डग भरती हुई कात्यूशा कमरे मे दाखिल हुई।

वह उठ खडा हुआ और उसे मिलने के लिए कुछ कदम आगे बढ आया। उसे कात्यूशा का चेहरा कठोर और अप्रिय लगा, वैसा ही जैसा उस दिन लगा था जब कात्यूशा ने उसे बुरा भला कहा था। वह झेंप गयी और उसका रग पीला पड गया, घबराहट मे उसकी अगुलिया जाकेट के एक कोने को बार बार मरोड रही थीं। उसने एक बार नेख्लूदोव की ओर देखा, फिर आखें नीची कर ली।

"तुम्हे मालूम है कि तुम्हारी सजा कम कर दी गयी है?"

"हा, मुझे वार्डर ने बताया था।"

"ज्यो ही हुक्मनामे की असली कापी पहुचेगी तुम बाहर आ सकती हो और जहा भी रहना चाहो उसका फैसला कर सकती हो। हम इस पर विचार कर लें ..."

सहसा कात्यूशा बीच मे बोल उठी—

"मुझे क्या विचारना है? जहा व्लादीमिर सिमनसन जायेंगे, उनके पीछे पीछे मैं जाऊगी।"

वह उत्तेजित थी, फिर भी उसने आख उठा कर नख्लूदोव की ओर देखा और जल्दी जल्दी किन्तु बडी स्पष्टता से ये शब्द बोल गयी, मानो पहले से ही यह सोच कर आयी हो कि क्या कहेगी।

"क्या सच?"

"सुनो दमीत्री इवानोविच, वह चाहता है कि मैं उसके साथ रहू ..." वह डर कर रुक गयी और फिर अपनी भूल सुधारती हुई बोली—"उसकी इच्छा है कि मैं उसके नजदीक रहू। मेरे लिए इससे अच्छी बात क्या हो सकती है? मुझे तो इसे ही अपना सुख मानना चाहिए। इसके अलावा मेरे लिए और है ही क्या? ..."

"दो मे से एक ही बात है या तो यह सिमनसन से प्रेम करने लगी है और मेरी कुर्बानी बिल्कुल चाहती ही नही थी, वह कुर्बानी जिसकी मैं कल्पना करता रहा हू कि इसके लिए कर रहा हू। या फिर यह है कि यह अब भी मुझसे प्रेम करती है, और मेरी ही खातिर मुझे छोडे जा रही

है। श्रौर अब सिमनसन के साथ शादी कर के अपना सर्वस्व एक ही दाव पर लगा देना चाहती है," नेख्लूदोव ने सोचा। उसे अपने आप पर शर्म आने लगी। उसे अपना चेहरा लाल पड़ता जान पड़ा।

"अगर तुम उससे प्रेम करती हो " उसने कहा।

"प्रेम करना, ना करना, ये बात मैंने भुला दी है। और फिर व्लादीमिर सिमनसन बहुत विलक्षण आदमी हैं।'

"हां, वह तो है ही," नेख्लूदोव कहने लगा "बहुत अच्छा आदमी है, और मैं सोचता हू "

पर कात्यूशा ने फिर उसकी बात काट दी, मानो डर रही हो कि यदि तो नेख्लूदोव बहुत कुछ कह जायगा या उसे स्वय सारी बात कहने का मौका नहीं मिलेगा।

"नहीं दमीत्री इवानोविच, मुझे माफ कर दो जो मैं तुम्हारी इच्छा का पालन नहीं कर रही हू," उसने कहा और अपनी ऐंची आंखों से, जिनकी थाह पाना असम्भव था, नेख्लूदोव की ओर देखा। "जाहिर है ऐसा ही होना चाहिए। तुम्हें भी जीना चाहिए।"

कात्यूशा ने वही बात कही थी जो कुछ ही क्षण पहले स्वय उसके मन में उठी थी। परन्तु अब यह विचार उसके मन में नहीं उठ रहा था। अब तो बिल्कुल भिन्न विचार उसके मन में उठ रहे थे। वह न केवल लज्जित ही अनुभव कर रहा था बल्कि उसे इस बात का खेद था कि कात्यूशा के चले जाने से वह जीवन में कितना कुछ खो बैठेगा।

"मुझे इसकी आशा नहीं थी," उसने कहा।

"तुम क्या यहां रहो और यातना भोगो। तुम पहले ही काफी यातना भोग चुके हो," कात्यूशा ने कहा और एक अनूठी सी मुस्कान उसके होंठों पर कांप गयी।

"मैंने कोई यातना नहीं भोगी है। इसमें मेरा हित था और मैं अब भी चाहता हू कि जैसा बन पड़े मैं तुम्हारी सेवा करता जाऊं।"

"हम " "हम" शब्द कहते ही कात्यूशा ने नेख्लूदोव की ओर देखा, "हमें कुछ नहीं चाहिए। तुम पहले ही कितना कुछ मेरे लिए कर चुके हो। अगर तुम न होते ' वह कुछ कहना चाहती थी परन्तु उसकी आवाज़ लड़खड़ा गयी।

'मेरा तो शुक्रिया अदा तुम्हें नहीं करना चाहिए," नेख्लूदोव ने कहा।

"लेखा करने का क्या लाभ? भगवान् हमारा लेखा-जोखा करेंगे," उसने कहा और उसकी काली काली आखो मे आसू चमकने लगे।

"तुम कितनी अच्छी स्त्री हो!" उसने कहा।

"मैं? मैं कहा अच्छी हू?" उसने झरते आसुओ के बीच कहा। एक दयनीय सी मुस्कान उसके होठो पर आयी और उसका चेहरा खिल उठा।

'Are you ready?"* अंग्रेज ने पूछा।

"Directly '** नेख्लदोव ने जवाब दिया और कात्यूशा से क्रिल्त्सोव के बारे मे पूछा।

उसकी उत्तेजना विलीन हो गई और स्थिर आवाज़ मे जो कुछ भी उसे मालूम था उसने बता दिया। क्रिल्त्सोव बहुत ही कमजोर पड गया है और उसे अस्पताल मे भेज दिया गया है। मारीया पाव्लोव्ना को बडी चिन्ता हो रही है और उसने दरख्वास्त की है कि उसे एक नर्स के नाते अस्पताल मे रहने दिया जाय, लेकिन उसे इजाज़त नही दी गयी।

"तो मैं चलू?" कात्यूशा ने यह देख कर कि अंग्रेज खडा इन्तज़ार कर रहा है, नेख्लूदोव से पूछा।

"मैं तुमसे अभी विदा नही हो जाऊगा। मैं तुमसे फिर मिलूगा," नेख्लूदोव ने कहा।

"मुझे माफ कर देना," कात्यूशा ने कहा, उसकी आवाज़ इतनी धीमी थी कि नेख्लूदोव बडी मुश्किल से सुन पाया। उनकी आखे मिली। उसकी ऐंची आखो मे अनोखा भाव था, और ये शब्द कहते हुए उसके होठो पर दयनीय सी मुस्कान आ गयी थी। नेख्लूदोव समझ गया कि उसके निर्णय के पीछे जिन दो कारणो का मैं सोच रहा था, उनमे से दूसरा ही सच है। यह मुझसे प्रेम करती है और समझती है कि अगर मेरे साथ चली आयी तो उससे मेरा जीवन खराब होगा। सिमनसन के साथ जाने से, यह समझती है कि मुझे आजाद कर देगी। यह काम करते हुए वह खुश भी है, परन्तु फिर भी मुझसे विदा होते समय वह व्याकुल हो रही है।

---

*आप तयार है? (अंग्रेजी)

**अभी, (अंग्रेजी)

कात्यशा ने उसका हाथ दबाया, फिर झट से घूम कर कमरे से बाहर हो गयी।

नेख्लूदोव चलने के लिए तैयार था, मगर यह देख कर कि अंग्रेज़ बैठा अपनी टिप्पणियां लिख रहा है, उसने उसे बुलाना नहीं चाहा, और दीवार के साथ रखे एक लकड़ी के बेंच पर बैठ गया। सहसा उसे महसूस होने लगा जैसे वह थक कर चूर हो गया है। उसकी थकान का कारण यह नहीं था कि वह रात भर सोया नहीं था, न ही सफर के कारण, न ही इस उत्तेजना के कारण। वह जीने से थक गया था। बेंच की पीठ के साथ उसने टेक लगायी, आंखें बन्द कर लीं, और क्षण भर में ही गहरी नींद सो गया।

"अगर आप चाहें तो अब चल कर जेलखाने की कोठरियां देख सकते हैं," इन्स्पेक्टर ने कहा।

नेख्लूदोव ने आंखें खोलीं। वह अपने को उस जगह बैठा देख कर हैरान रह गया। अंग्रेज़ अपनी टिप्पणियां लिख चुका था और कोठरियों को देखने के लिए जाना चाहता था। नेख्लूदोव उसके पीछे पीछे चल पड़ा। वह थका हुआ था और इस काम में उसकी कोई रुचि नहीं थी।

२६

इन्स्पेक्टर तथा वार्डरों के साथ नेख्लूदोव और अंग्रेज़ जेलखाने में दाखिल हुए। ड्योढ़ी लांघ कर वे बरामदे में पहुंचे। बरामदे में से बदबू की लपटें उठ रही थीं और दो कैदी फर्श पर पेशाब कर रहे थे, नेख्लूदोव और उसके साथी देख कर हैरान रह गये। बरामदे में से गुज़र कर वे पहले वार्ड में गये जिसमें उन कैदियों को रखा गया था जिन्हें कड़ी मशक्कत की सज़ा दी गयी थी। वार्ड के बीचोंबीच सोने के लिए तख्ते लगे थे। उन पर अभी से कैदी लेटे हुए थे। लगभग ७० कैदी रहे होंगे। सिर के साथ सिर जोड़ कर तथा साथ साथ वे लेटे हुए थे। इनके प्रवेश करने पर सभी उछल कर तख्तों के सामने खड़े हो गये। बेड़ियां खनकीं और आधे मुंडे सिर चमक उठे। केवल दो कैदी नहीं उठे। एक युवक था जिसे तेज़ बुखार हो रहा था, दूसरा कोई बूढ़ा कैदी था जो लेटे लेटे कराहे जा रहा था।

"लेखा करने का क्या लाभ? भगव
उसने कहा और उसकी काली काली आर
"तुम कितनी अच्छी स्त्री हो!" उर
"मैं? मैं कहा अच्छी हू?" उसने
एक दयनीय सी मुस्कान उसके होठा पर
उठा।

"Are you ready?" * अग्रेज ने पूछ

"Directly,' ** नेम्लदोव न जवाब
के बारे मे पूछा।

उसकी उत्तेजना विलीन हा गई औ
उसे मालम था उसन बता दिया। निलर
है और उसे अस्पताल मे भेज दिया गया
चिता हो रही है और उसने दरख्वास्त
अस्पताल मे रहन दिया जाय, लेकिन उ

"तो मैं चल?" कात्यशा ने यह दे
कर रहा है नेख्लूदोव से पूछा।

"मैं तुमसे अभी विदा नही हो ज
नख्लूदोव ने कहा।

"मुझे माफ कर देना' कात्यशा
धीमी थी कि नख्लदोव बडी मुश्किल से
उसकी ऐची आखो मे अनोखा भाव था,
हाठो पर दयनीय सी मुस्कान आ गयी थी,
निणय के पीछे जिन दो कारणो का मैं
ही सच है। यह मुझसे प्रेम करती है और
चली आयी तो उससे मेरा जीवन खराब ह
से, यह समझती है कि मुझे आजाद कर दे
खुश भी है, परतु फिर भी मुझसे विदा होत
है।

---

*आप तैयार है? (अग्रेजी)

**अभी (अग्रेजी)

तीसरे कमरे मे से चीखने-चिल्लाने की आवाजें आ रही थी। इन्स्पेक्टर ने दरवाज़ा खटखटाया और चिल्ला कर कहा—"शोर बन्द करो!" जब दरवाज़ा खुला तो कैदी यहा भी उसी तरह तख्तो के सामने तन कर खडे थे। कुछेक बीमार होने के कारण नही उठे और दो एक दूसरे के साथ गुत्थमगुत्था हो रहे थे। दोनो के चेहरे क्रोध से विकृत हो रहे थे, दोनो ने एक-दूसरे को पकड रखा था, एक ने बालो से, दूसरे ने दाढी से। जब इन्स्पेक्टर लपक कर उनके पास गया तभी उन्होंने एक दूसरे को छोडा। एक के नाक मे से घूसा पडने के कारण टप टप खून बह रहा था। साथ ही कफ और लार भी निकल रही थी। इन्हे वह अपने लबादे की आस्तीन के साथ पोछ रहा था। दूसरा अपनी दाढी मे से उखडे बाल निकाल रहा था।

"मुखिया!" इन्स्पेक्टर ने कडक कर कहा।

एक हृष्ट-पुष्ट, सुदर जवान आगे बढ आया।

"मैं इन्हे नही छुडा सका, हुजूर," उसने कहा। आमोदवश उसकी आखें चमक रही थी।

"मैं इन्हे सीधा कर दूगा!" इन्स्पेक्टर ने तेवर चढाते हुए कहा।

"What did they fight for?'* अग्रेज़ ने पूछा।

नेख्लूदोव ने मुखिया से सवाल किया।

"एक ने दूसरे के चिथडे चुरा लिये थे," मुखिया ने जवाब दिया। वह अब भी मुस्करा रहा था। "पहले इसने घूसा मारा, और जवाब मे दूसरे ने लगाया।"

नेख्लूदोव ने अग्रेज़ को बता दिया।

"मैं इन लोगो से कुछ कहना चाहता हू," अग्रेज़ ने इन्स्पेक्टर से कहा।

नेख्लूदोव ने अनुवाद किया।

"कहिये," इन्स्पेक्टर ने कहा। इस पर अग्रेज ने अपनी इजील निकाली जिस पर चमडे की जिल्द चढी थी।

"कृपया अनुवाद कीजिये," उसने नेख्लूदोव से कहा। "तुम्हारे बीच झगडा हुआ तो तुम मार पिटाई पर उतर आये। परन्तु ईसा ने—जिन्होने

---

*ये क्यो लड रहे थे? (अग्रेज़ी)

अंग्रेज के पूछने पर कि क्या युवक बहुत दिन से बीमार है, इन्सपेक्टर ने जवाब दिया कि नही, उसी रोज सुबह से उसे बुखार आने लगा है। हा, बडे को बहुत दिनो से पेट म दर्द की शिकायत है, लेकिन अस्पताल म बिल्कुल जगह न होने के कारण यही पडा है। अंग्रेज ने सिर हिला कर अपनी असम्मति प्रकट की और कहा कि वह इन लोगो से दो शब्द कहना चाहता है। नेख्लूदोव से उसने अनुवाद करने को कहा। मालूम हुआ कि अंग्रेज केवल साइबेरिया के जेलो और जलावतनो को रखे जाने के स्थानो का अध्ययन करने के लिए ही नही निकला है। वह साथ साथ एक और काम भी कर रहा है। वह जहा जाता है लोगो को यह उपदेश देता है कि ईसा पर ईमान लाओ, अपने पापो का प्रायश्चित करो ताकि तुम्हे मुक्ति प्राप्त हो सके।

"इन्हे कहिये," वह बोला, "ईसा के हृदय म इनके लिए दया तथा प्रेम था। इन्ही के लिए उन्होने अपनी जान दी थी। यदि इस सत्य मे ये विश्वास करेंगे तो भगवान् इनकी रक्षा करेंगे।" जितनी देर वह बोलता रहा, कैदी अपने बाजू सीधे लटकाये, खडे सुनते रहे। "इन्हे बताइये कि इस पुस्तक मे सब कुछ लिखा है," वह कहता गया, "क्या इनमे से कोई पढना जानता है?"

बीस से अधिक कैदी पढना जानते थे।

अंग्रेज ने बैग मे से सजिल्द इंजील की कुछ प्रतिया निकाली। बहुत से हाथ आगे बढ आये। दृढ-कठोर हाथ, जिनके नाखुन काले और कठोर पड गये थे, कमीजो की खुरदरी आस्तीनो के नीचे से निकले और बंदी एक दूसरे को धक्के देते हुए आगे बढ आये। इस वार्ड मे अंग्रेज ने इंजील की दो प्रतिया भेंट कर दी।

दूसरे वार्ड मे भी यही कुछ हुआ। यहा पर भी बदबू की लपटे उठ रही थी, उसी तरह खिडकियो के बीच देव प्रतिमा लटक रही थी, दरवाजे के बायी ओर वैसा ही टब रखा था। सभी कैदी साथ साथ जुड कर लेटे हुए थे। उसी तरह वे उछल कर सीधे खडे हो गये और बाजू सीधे कर लिये। तीन कैदी नही खडे हुए। उनमे से दो उठ कर बैठ गये लेकिन तीसरा ज्यो का त्यो लेटा रहा, बल्कि नवागतुको की ओर आख उठा कर देखा भी नही। ये तीनो भी बीमार थे। यहा पर भी अंग्रेज ने वैसी ही तकरीर की और इंजील की दो प्रतिया दे दी।

तीसरे कमरे मे से चीखने-चिल्लान की आवाजें आ रही थी। इस्पेक्टर ने दरवाजा खटखटाया और चिल्ला कर कहा—"शोर बद करो!" जब दरवाजा खुला तो कैदी यहा भी उसी तरह तख्तो के सामने तन कर खडे थे। कुछेक बीमार हाने के कारण नही उठे, और दो एक दूसरे के साथ गुत्यमगुत्या हो रह थे। दोना के चेहरे क्रोध स विकृत हो रहे थे, दोनो ने एक-दूसरे का पकड रखा था, एक ने बाला से, दूसरे ने दाढी से। जब इस्पेक्टर लपक कर उनके पास गया तभी उहोने एक दूसरे को छोडा। एक के नाक मे स घसा पडने के कारण टप टप खून वह रहा था। साथ ही कफ और लार भी निकल रही थी। इह वह अपने लबाद की आस्तीन के साथ पोछ रहा था। दूसरा अपनी दाढी मे से उखडे बाल निकाल रहा था।

"मुखिया!" इस्पेक्टर ने कडक कर कहा।

एक हृष्ट-पुष्ट, सुदर जवान आगे बढ आया।

"मैं इहे नही छुडा सका, हुजूर," उसने कहा। आमादवश उसकी आखे चमक रही थी।

"मैं इह सीधा कर दगा!" इस्पेक्टर ने तेवर चढाते हुए कहा।

"What did they fight for?'* अग्रेज ने पूछा।

नेख्लूदोव ने मुखिया से सवाल किया।

"एक ने दूसर के चिथडे चुरा लिये थे," मुखिया ने जवाब दिया। वह अब भी मुस्करा रहा था। "पहले इसने घसा मारा, और जवाब मे दूसरे ने लगाया।"

नेख्लूदोव ने अग्रेज को बता दिया।

"म इन लोगा से कुछ कहना चाहता हू," अग्रेज न इस्पेक्टर से कहा।

नेख्लूदोव ने अनुवाद किया।

"कहिये," इस्पेक्टर ने कहा। इस पर अग्रेज ने अपनी इजील निकाली जिस पर चमडे की जिल्द चढी थी।

"कृपया अनुवाद कीजिये," उसने नेख्लूदोव से कहा। "तुम्हारे बीच झगडा हुआ तो तुम मार पिटाई पर उतर आये। परन्तु ईसा ने—जिन्होने

---

*ये क्यो लड रहे थे? (अग्रेजी)

हमारी खातिर अपने प्राण निछावर किये थे—हमे झगडे निबटाने का एक दूसरा तरीका बताया है। इनसे पूछिये कि ईसा के उपदेशो के अनुसार हम उन लागा के साथ कैसा बरताव करना चाहिए जो हमारे साथ बुरी तरह पेश आते हैं।"

नेख्लूदोव ने अग्रेज़ के वाक्यो तथा उसके प्रश्न का अनुवाद कर दिया।

"साहब से शिकायत करो, वह निबटारा करा देगा। क्या यही उपदेश है?" एक कैदी ने कनखियो से इन्स्पेक्टर के रोबीले डील डौल की ओर देखते हुए कहा।

"मुह पर एक घूसा जड दो, दोबारा कोई बुरी तरह पेश नही आयेगा," दूसरा बोला।

कमरे मे हसी की एक हल्की सी लहर दौड गयी। लोगो को यह जवाब पसन्द आया था।

जो कुछ इन आदमियो ने कहा, नेख्लूदोव ने अनुवाद कर सुनाया।

"इनसे कहिये कि ईसा के आदेशानुसार इनका व्यवहार बिल्कुल इसके उलट होना चाहिए। अगर कोई तुम्हारे एक गाल पर तमाचा मारे तो तुम्हे चाहिए कि तुम अपना दूसरा गाल उसके सामने कर दो," अग्रेज़ ने अपना गाल सामने कर के दिखाते हुए कहा।

नेख्लूदोव ने अनुवाद किया।

"यह खुद आज़मा कर देखे," कैदिया म से किसी की आवाज़ आयी।

"अगर वह दूसरे गाल पर भी तमाचा जड दे तो फिर सामने क्या करोगे?" एक बीमार कैदी ने पूछा।

"फिर वह सिर से पाव तक तुम्हारा भुरता बना देगा।"

"बना के देखे तो!" किसी ने ठहाका मार कर कहा। कमरे म सभी ज़ोर ज़ोर से हसन लगे। जिस आदमी के नाक म से खून बह रहा था वह भी, खून और कफ की परवाह न कर के हसने लगा। इस हसी मे बीमार कैदी भी शामिल हो गये।

परन्तु अग्रेज़ ज़रा भी विचलित नही हुआ। उसने नेख्लूदोव से यह कहने को कहा कि जिन लोगा के हृदय म सच्चा विश्वास है उनके लिए जो कुछ असभव जान पडता है वही सभव और आसान हो जाता है।

"इनसे पूछिये कि क्या ये शराब पीते हैं?"

"जरूर!" किसी ने कहा और इसके बाद फिर ठहाका और नाक सुडकने की आवाजें आने लगी।

उस कमरे मे चार कैदी बीमार थे। अग्रेज ने पूछा कि क्या कारण है, सभी बीमार कैदियो को एक ही वाड म क्यो नही रखा जाता। जवाब मे इन्स्पेक्टर ने कहा कि वे खुद अलग रहना नही चाहते, उन्हे छूत की बीमारी नही है, सहायक डॉक्टर उनकी पूरी पूरी देखभाल करता है और उनकी हर जरूरत पूरी करता है।

"उसकी सूरत देखे दो हफ्ते गुजर चुके है," किसी ने बडबडा कर कहा।

इन्स्पेक्टर ने कोई जवाब नही दिया और अगले वाड की ओर उन्हे ले चला। यहा पर भी उसी तरह दरवाजा खोला गया, सभी उठ कर चुपचाप खडे हो गये। यहा पर भी अग्रेज ने इजील की प्रतिया बाटी। पाचवे और छठे और बाकी सभी वार्डो मे भी यही कुछ हुआ।

कडी मशक्कत वाले कैदियो के वाड देख चुकने के बाद, वे जलावतनो के वाड देखने गये। वहा से वे उन कैदियो के वाड म गये जिन्हे उनकी पचायतो ने निर्वासित किया था, फिर उन लोगो के वाड मे जो अपनी खुशी से कैदियो के साथ साथ जा रहे थे। हर वाड मे उन्हे वही कुछ नजर आया ठिठुरते, भूखे, निठल्ले कैदी, रोगग्रस्त, अपमानित और बेडियो मे जकडे हुए। उन्हे यो दिखाया जा रहा था मानो वन्य पशु हो।

इजील की जितनी प्रतिया अग्रेज को देनी थी, दे चुकने के बाद, उसने और देना बन्द कर दिया और भाषण भी देना बद कर दिया। उस जगह के दृश्य इतने निराशाजनक थे, और वातावरण मे तो विशेषतया इतनी घुटन थी कि उसका भी उत्साह शिथिल पड गया। वह भी अब एक कोठरी से दूसरी कोठरी मे जाते हुए, इन्स्पेक्टर की रिपोर्ट के जवाब मे केवल 'all right' * कहे जा रहा था। नेख्लूदोव उनके पीछे पीछे चला जा रहा था। उसे लगा जैसे वह स्वप्न देख रहा है। वह न और देखने से इन्कार कर पा रहा था, न ही उसमे इतनी शक्ति थी कि वहा से बाहर निकल जाय। उसका भी शरीर शिथिल और मन निराश हो रहा था।

---

*ठीक है, (अग्रेजी)

जलावतनो के एक वाड मे, अचानक नख्लूदोव को वह विचित्र बूढा नजर आया जिसने उसी दिन प्रात उसके साथ बेडे मे नदी पार की थी। फटे-हाल और मुह पर झुरिया पडी हुइ, वह तख्ता के बीच फश पर बैठा था। नगे पाव, बदन पर एक मैली, सुहागे के रग की कमीज और उसी रग की पतलून पहने था। कमीज एक कधे पर से फटी थी। नवागन्तुको की ओर उसने बडे कठोर तथा प्रश्नसूचक नेत्रो से दखा। मैली-कुचैली और जगह जगह से फटी कमीज मे से उसका कृश शरीर झाक रहा था परन्तु उसका चेहरा पहले से भी अधिक सजीव और गभीर नजर आ रहा था। अय वार्डो की तरह यहा पर भी अफसरो के अन्दर आने पर सभी कैदी उछल कर सीधे खडे हो गये। लेकिन बूढा बैठा रहा। उसकी आखे चमक रही थी और भौहे क्रोध से सिकुडी हुई थी।

"खडे हो जाओ!" इन्स्पेक्टर ने उसे पुकार कर कहा।

वढा नही उठा, केवल घृणा से मुस्कराने लगा।

"तेरे चाकर तेरे सामने खडे हैं, मैं तेरा चाकर नही हू। वह निशान तेरे " इस्पेक्टर के माथे की ओर इशारा करते हुए बूढे ने कहा।

"क्या आ आ?" इन्स्पेक्टर ने धमकाते हुए कहा और उसकी ओर कदम बढाया।

"मैं इस आदमी को जानता हू," नेम्लूदोव बोला, "इसने क्या कसूर किया है?"

"इसके पास पासपाट नही है, पुलिस वाला ने इसे पकड कर यहा भेज दिया है। हम कई बार उन्ह कह चुके हैं कि ऐसे लोगा को हमारे पास मत भेजा करो लेकिन वे फिर भी भेज देत हैं," इन्स्पेक्टर ने गुस्से से, बूढे की ओर कनखिया से देखते हुए कहा।

"मालूम पडता है तू भी ईसा के दुश्मना के साथ मिल गया है?" बूढे ने नेख्लूदोव से कहा।

"नही, मैं तो जेलखाना देखने आया हू।'

"क्या यह देखने आया है कि ईसा का दुश्मन इन्सानो पर किस तरह जुल्म करता है? हजारो इन्साना को इसन पिजडे म बन्द कर रखा है। भगवान् ने कहा है कि इन्सान अपन पसीने की कमाई स अपना पेट

भरे। पर ईसा के दुश्मन ने उन्हे बन्द कर रखा है ताकि वे निठल्ले बैठे रहे। उनके सामने इस तरह रोटी फेंकता है जिस तरह जानवरो के सामने फेंकी जाती है, ताकि ये भी जानवर बन जायें।"

"यह आदमी क्या कह रहा है?" अंग्रेज न पूछा।

नेख्लूदोव ने बताया कि बूढा इन्सपेक्टर को दोष दे रहा है कि उसने इन्सानो को जेलखाने मे बन्द कर रखा है।

"उससे पूछिये यह क्या कहता है कि अगर कोई आदमी कानून तोडे तो उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए?" अंग्रेज़ ने कहा।

नेख्लूदोव ने प्रश्न का अनुवाद किया।

बूढा विचित्र ढग से हसने लगा। उसके दातों की बनावट बडी अच्छी थी।

"कानून?" बूढे ने घृणा से कहा। "पहले ईसा के दुश्मन ने सब को लूटा, सारी पृथ्वी पर कब्जा कर लिया इन्सानो के सब अधिकार छीन लिये—सभी अपने पास रख लिये, अपने सभी विरोधियो को मौत के घाट उतार दिया, फिर कानून बनाने बैठ गया कि चोरी करना और हत्या करना जुर्म है। उसे चाहिए था कि ये कानून पहले बनाता।"

नेख्लूदोव ने अनुवाद किया। अंग्रेज मुस्कराने लगा।

"अच्छा तो इससे पूछिये कि अब क्या करना चाहिए—डाकुओ और हत्यारो के साथ कैसा सलूक करना चाहिए?"

नख्लूदोव ने फिर उसके प्रश्न का अनुवाद किया।

"इससे कहो कि ईसा विरोधी की जो मोहर उस पर लगी है उसे मिटा दे" बूढे ने बडी दृढता से भौंहे चढा कर कहा। "तब उसे न डाकू नजर आयेंगे और न ही हत्यारे। इसे यह कह दो।"

He is crazy"* नेख्लूदोव के अनुवाद करने पर अंग्रेज़ ने कहा और कन्धे बिचकाते हुए कमरे मे से बाहर चला गया।

"तू अपना काम देख, औरो को मत तग कर। हर कोई अपनी गठरी खुद उठाये। भगवान् जानते है किसे सज़ा देनी है और किसे क्षमा करना है। हम इन्सान कुछ नही जानते," बूढे ने कहा। "तू अपना अफसर खुद बन, फिर अफसरो की ज़रूरत नही रहेगी। जा, जा," गुस्से से भौहे

---

*यह पागल है, (अंग्रेज़ी)

सिकोड़ते हुए, और चमकती आखो से नेख्लूदोव की ओर देखते हुए जो अभी तक वाड मे ही खडा था, बूढा कहता गया। "क्या तुझे और कुछ देखना बाकी है? देख नही रहा है किस तरह ईसा के दुश्मन के चाकर इसानो के खून पर जुए पाल रहे है? जा, चला जा।"

नेख्लूदोव वाड मे से निकल गया और अग्रेज के साथ जा मिला जो इस्पेक्टर के साथ एक खुले दरवाजे के पास खडा था। अग्रेज इन्स्पेक्टर से पूछ रहा था कि यह कौन सा कमरा है।

"मुर्दाखाना है।"

"ओह!" अग्रेज ने कहा और कहा कि वह कमरा देखना चाहता है।

साधारण सा कमरा था, बहुत बडा भी नही था। दीवार से एक छोटा सा लैम्प लटक रहा था, उसकी मद्धिम सी रोशनी मे एक कोने म रखे कुछ बोरे और लकडी के कुन्दे नजर आ रहे थे। दायी ओर सोने वाले तख्तो पर चार मुर्दे पडे थे। पहली लाश किसी ऊचे लम्बे आदमी की थी, मुह पर छोटी सी दाढी और आधा सिर मुडा हुआ था। गाढे की मोटी कमीज और पतलून पहने था। लाश अकड चुकी थी। नीले नीले हाथ जिन्हे प्रत्यक्षत छाती पर जोडा गया था, अब एक दूसरे से अलग हो गये थे। टागें भी बिखर गयी थी और नगे पाव बाहर निकले हुए थे। उससे आगे एक बुढिया की लाश रखी थी, पैर नगे और सिर भी नगा था। सफेद जाकेट और पेटीकोट पहने थी। बालो की पतली सी चोटी कपडे के नीचे से झाक रही थी। मुह पिचका हुआ और पीला था और नाक तीखी। उससे परे एक और आदमी की लाश रखी थी जिसने बैगनी से रग के कपडे पहन रखे थे। इस रग को देख कर नेख्लूदोव को किसी चीज की याद आयी।

उसने और भी नजदीक जा कर लाश को देखा।

छोटी सी नोकदार दाढी ऊपर को उठी थी। मजबूत, सुगढ नाक, ऊचा, सफेद माथा, पतले घुघराले बाल—नेख्लूदोव ये परिचित नाक-नक्श देख कर ही पहचान गया, लेकिन उसे अपनी आखो पर विश्वास नही हो रहा था। कल इसी चेहरे पर कितना क्रोध, कितनी उत्तेजना और यन्त्रणा नजर आ रही थी, परन्तु इस समय शान्त, निश्चल और बेहद सुन्दर लग रहा था।

वह क्रिलत्सोव ही था, या यो कहे उसके पार्थिव जीवन के अवशेष पड़े थे।

"उसने क्यो इतने दुख झेले? क्यो जिया? क्या इसका भेद अब इसने पा लिया है?" नेख्लूदोव सोचने लगा लेकिन इसका कोई भी उत्तर उसे नही मिला। मौत के अलावा और कुछ नज़र नही आ रहा था। नेख्लूदोव का जी घबराने लगा, जैसे बेहोश होने लगा हो।

इन्स्पेक्टर से उसने कहा कि मुझे बाहर आगन मे ले चलो। और बिना अंग्रेज से विदा लिये वह गाडी मे बैठ कर होटल के लिए रवाना हो गया। वह निराले म बैठ कर उन सब बातो के बारे म सोचना चाहता था जो आज शाम को उसने देखी थी। यह उसके लिए अत्यावश्यक हो गया था।

२८

नेख्लूदोव सोया नही, बडी देर तक कमरे म चक्कर लगाता रहा। कात्यूशा के साथ अब उसे कोई काम न रहा था। कात्यूशा को अब उसकी जरूरत नही थी और यह सोच कर वह उदास और लज्जित अनुभव कर रहा था। लेकिन उसका मन इस कारण विचलित नही था। उसका दूसरा काम अभी खत्म नही हुआ था। न केवल खत्म ही नही हुआ था, बल्कि उसे पहले से कही अधिक बेचैन किये हुए था, और नेख्लूदोव से यह माग कर रहा था कि वह सक्रिय रूप से कोई काम करे।

पिछले कुछ दिनो से वह जिस घोर दुष्टता को देख रहा था और जिसको उसने जाना था—और विशेषकर आज जिससे उसका उस भयानक जेल मे साक्षात्कार हुआ था, जिसके हाथो उस अतिप्रिय क्रिलत्सोव की हत्या हुई थी, उसी दुष्टता का चारो ओर राज था, उसी की विजय हुई थी। नेख्लूदोव को कोई सभावना नज़र नही आ रही थी कि कभी उस पर विजय पायी जा सकती है, या कैसे पायी जा सकती है।

उसकी आखो के सामने उन सैकडो, हज़ारो अपमानित इन्सानो का चित्र घूम गया जो दुर्गन्ध भरे जेलखाना मे बन्द हैं। और जो लोग उन्हे बन्द करते हैं—जनरल, सरकारी वकील तथा इन्स्पेक्टर—उन्ह इन इन्सानो की तनिक भी परवाह नही है। उसकी आखो के सामने उस विचित्र बूढे आदमी का चेहरा घूम गया जो आज़ाद था और अधिकारियो का

परदाफाश कर रहा था, इसलिए उसे पागल ठहराया जाता था। उसकी आखो के सामने, उन लाशो के बीच, त्रिलत्सोव का सुदर चेहरा, जो मानो मोम का बना हो, घूम गया, जो मरने से पहले क्रुद्ध हो रहा था। एक बार फिर वही सवाल नेख्लदोव के मन म उठने लगा क्या मैं पागल हू या वे लोग पागल है जो ये दुष्कम करते हुए भी समझे बैठे हैं कि उनके दिमाग ठीक काम कर रहे है। यह प्रश्न पहले से भी अधिक आग्रह के साथ उसके मन मे उठा और उससे इसका उत्तर मागने लगा।

वह कमरे मे इतनी देर तक चलता रहा था और इतना अधिक सोचता रहा था कि वह थक गया और लैम्प के निकट सोफे पर बैठ गया। या ही उसने इजील को मेज़ पर से उठाया और उसके पन्ने उलटने लगा। यह इजील अग्रेज़ ने उसे भेट की थी, और बाहर से लौट कर उसने अपने जेब खाली करते समय इसे भी निकाल कर मेज़ पर रख दिया था।

"लोग कहते है कि हर प्रश्न का उत्तर इस पुस्तक म मिल जाता है," वह सोचने लगा, और जो पन्ना सामने आया उसी को पढने लगा। पन्ना मत्ती अध्याय १८ पर खुला था।

१ उसी घडी चेले यीशु के पास आ कर पूछने लगे, कि स्वग के राज्य मे बडा कौन है?

२ इस पर उसने एक बालक को पास बुला कर उनके बीच म खडा किया।

३ और कहा, मैं तुमसे सच कहता हू यदि तुम न फिरो और बालको के समान न बनो तो स्वग के राज्य मे प्रवेश करने नही पाओगे।

४ जो कोई अपने आप को इस बालक के समान छोटा करेगा वह स्वग के राज्य मे बडा होगा।

"हा हा, यह ठीक बात है," नेख्लदोव ने सोचा। उसे याद आया कि उसके जीवन का सबसे सुखमय तथा शान्तिमय काल वही था जब उसके हृदय म विनम्रता थी।

५ और जो कोई मेरे नाम से एक ऐसे बालक को ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है।

६ पर जो कोई इन छोटो म से जो मुझ पर विश्वास रखते हैं एक को ठोकर खिलाए, उसके लिए भला होता, कि बडी चक्की का पाट उसके गले मे लटकाया जाता, और वह गहरे समुद्र मे डुबाया जाता।

"यह किस लिए – 'जो कोई ग्रहण करता'? क्हा ग्रहण करता? ग्रौर 'मेरे नाम से' का क्या मतलब है?" नेख्लूदोव ने मन ही मन सवाल किया। उसे महसूस हो रहा था जैसे ये शब्द उसके पल्ले नही पड रहे ह। "ग्रौर उसके गले मे वडी चक्की का पाट क्या लटकाया जाय? ग्रौर गहरे समुद्र म क्या? नही, यह ठीक नही, यह बात सटीक नही है, स्पष्ट नही ह।" उसे याद ग्राया कि जीवन मे कितनी ही वार उसन इजील को पढना शुरू किया था लेकिन इन वाक्यो की ग्रस्पष्टता के कारण वह उसे वद कर देता रहा था। उसने सातवा, ग्राठवा, नौवा ग्रौर दसवा पद पढे। इनमे प्रलोभना का जिक्र था, तथा यह कि वे ग्रवश्य ससार म ग्रायेगे तथा नक की ग्राग मे दड का जिक्र था, जिसम लोगा को झोका जायेगा ग्रौर वाल फरिश्ता की चर्चा थी जो स्वग मे परम पिता का मुखारविन्द देखते हैं। "कितने खेद की वात है कि यह इतना ग्रस्पष्ट है," वह सोचने लगा, "फिर भी दिल कहता है कि इसम कोई ग्रच्छी वात है।"

११ क्योकि मानव-पुत्र उस चीज की रक्षा करने ग्राया है जो खो गयी थी, – उसन ग्रागे पढा।

१२ तुम क्या समझते हो? यदि किसी मनुष्य की सौ भेडें हा, ग्रौर उनम से एक भटक जाय, तो क्या निनानवे को छोड कर, ग्रौर पहाडा पर जा कर, उस भटकी हुई को न ढूढेगा?

१३ ग्रौर यदि ऐसा हो कि उसे पाय, तो मैं तुमसे सच कहता हू, कि यह उन निनानवे भेडो के लिए जा भटकी नही थी इतना ग्रानन्द नही करेगा, जितना कि इस भेड के लिए करेगा।

१४ ऐसा ही तुम्हारे पिता की जो स्वग म है यह इच्छा नही, कि इन छोटा म से एक भी नाश हो।

"हा, पिता की इच्छा नही थी कि इनम से एक का भी नाश हा, ग्रौर यहा सवडा ग्रौर हजारा की सख्या म इन्सान नष्ट हो रहे हैं। ग्रौर इनके बचाव जान की कोई सभावना नही है," उसन सोचा ग्रौर ग्रागे पढ़ने लगा

२१ फिर पतरस ने पास ग्रा कर, उससे कहा, हे प्रभु, यदि मरा भाई ग्रपराध करता रहे, तो मैं कितनी वार उसे क्षमा करू, क्या सात वार तक?

२२ यीशु ने उससे कहा, मैं तुझसे यह नहीं कहता, कि सात बार, वरन सात बार के सत्तर गुने तक।

२३ इसलिए स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिसने अपने दासों से लेखा लेना चाहा।

२४ जब वह लेखा लेने लगा, तो एक जन उसके सामने लाया गया जो दस हजार तोड़े धारता था।

२५ जबकि चुकाने को उसके पास कुछ न था तो उसके स्वामी ने कहा, कि यह और इसकी पत्नी और लड़केवाले और जो कुछ इसका है सब बेचा जाय, और वह कर्ज चुका दिया जाय।

२६ इस पर उस दास ने गिर कर उसे प्रणाम किया, और कहा, हे स्वामी, धीरज धर, मैं सब कुछ भर दूंगा।

२७ तब उस दास के स्वामी ने तरस खा कर उसे छोड़ दिया और उसका धार क्षमा किया।

२८ परन्तु जब वह दास बाहर निकला, तो उसके संगी दासों में से एक उसको मिला, जो उसके सौ दीनार धारता था, उसने उसे पकड़ कर उसका गला घोंटा, और कहा, जो कुछ तू धारता है भर दे।

२९ इस पर उसका संगी दास गिर कर, उससे विनती करने लगा, कि धीरज धर मैं सब भर दूंगा।

३० उसने न माना, परंतु जा कर उसे बन्दीगृह में डाल दिया, कि जब तक कर्ज को भर न दे, तब तक वहां रहे।

३१ उसके संगी दास यह जो हुआ था देख कर बहुत उदास हुए, और जा कर अपने स्वामी को पूरा हाल बता दिया। वे राजा के पास गये और उसे सारी बात बतायी।

३२ तब उसके स्वामी ने उसको बुला कर उससे कहा, हे दुष्ट दास, जो मुझसे विनती की, तो मैंने तो तेरा वह पूरा कर्ज क्षमा किया।

३३ सो जैसे मैंने तुझ पर दया की, वैसे ही क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया करना नहीं चाहिए था?

"तो क्या यही असल बात है?" सहसा नेख्लूदोव चिल्ला उठा। उसके रोम रोम में से यह आवाज उठी—"हां यही है, यही है।"

नेख्लूदोव के साथ भी वही कुछ हुआ जो अक्सर उन लोगों के साथ होता है जो आध्यात्मिक जीवन जी रहे होते हैं। जो विचार पहले अनोखा

सा, विरोधाभास से भरा, यहा तक कि मजाक़ सा लगा करता था, उसे जब जीवन के अनुभवो से अधिकाधिक समर्थन प्राप्त होता गया, तो सहसा वही विचार अतिसरल, तथा अटल सचाई नजर आने लगा। निश्चय ही, जिस भयानक दुष्टता से इन्सान यन्त्रणाए भाग रहे हैं उससे छुटकारा पाने का केवल एक ही साधन है कि वे भगवान के सामने हमेशा इस बात को कबूल करे कि वे कसूरवार हैं, और इसलिए दूसरो को दण्ड देने या सुधारने के योग्य नही हैं। यह बात नेख्लूदोव के सामने स्पष्ट हो गयी। उसने समझ लिया कि वह भयानक दुष्टता जिसे वह कैदखानो और बन्दीगृहो मे देखता रहा है तथा इस दुष्टता को बढावा देने वालो का आत्मविश्वास इसी बात से पैदा हुआ था कि लोग वह काम करना चाहते ह जो उनके लिए नामुमकिन है, अर्थात् स्वय बुरे होते हुए दूसरा की बुराई को दूर करना चाहते हैं। दुश्चरित्र लोग अन्य दुश्चरित्र लोगो को सीधे रास्ते पर लाने की कोशिश करते हैं, और समझते हैं कि यह काम वे यान्त्रिक उपाया द्वारा सम्पन्न कर सकेगे। परिणाम यह होता है कि जरूरतमन्द और स्वार्थी लोग इस मिथ्या दण्ड तथा सुधार को अपना पेशा बना लेते हैं और स्वय भ्रष्टता की चरम सीमा तक जा पहुचते हैं, तथा जिन लोगो पर अत्याचार करते है उन्हे भी सारा वक्त दूषित करते रहते हैं। नेख्लूदाव की आखें खुल गयी। उसे साफ नजर आने लगा कि जिन विभीषिकाओ का वह देखता रहा था, उनका स्रोत क्या है, और उनका अन्त करने के लिए क्या करना होगा। यह उत्तर वही था जो ईसा ने पतरस को दिया था और जो नेख्लूदोव को स्वय नही मिल पाया था। सदा क्षमा करते रहो, सब को क्षमा करते रहो, एक बार नही, अनन्त बार, क्योकि कोई भी ऐसा व्यक्ति नही जो स्वय दोषी न हो, इसलिए कोई भी इस योग्य नही कि वह किसी को दण्ड दे या किसी का सुधार करे।

"लेकिन यह बात इतनी सरल तो नही हो सकती," नेख्लूदोव ने सोचा। परन्तु फिर भी उसने देखा कि यही उस प्रश्न का, न केवल सैद्धान्तिक बल्कि व्यावहारिक हल भी है, हालाकि पहले यही बात उसे बडी अजीब सी लगती थी। साधारणतया यह आपत्ति की जाती है कि बुरे काम करने वालो का क्या किया जाय? उन्हे सजा दिये बिना छोडा तो नही जा सकता। लेकिन अब यह आपत्ति नेख्लूदोव को उलझन मे नहीं

डालती थी। यदि दण्ड देने से जुर्म कम होते हों या जुर्म करने वाले का आचार सुधरता हो तब तो इस आपत्ति का कोई मूल्य हो सकता है, लेकिन बात इसके बिलकुल उलट है, और यह भी स्पष्ट है कि दूसरों का चरित्र सुधारने की सामर्थ्य जिन्हों में भी नहीं है तो विवेक यही कहता है कि वह काम करना छोड दें जो हानिकारक, अनैतिक तथा निर्दयी है। शताब्दियों से उन लोगों को फांसी पर चढाया जाता रहा है जिन्हें अपराधी समझा जाता था। तो क्या वे खत्म हो गये हैं? खत्म तो क्या होंगे, उनकी संख्या पहले से भी बढ गयी है। और उनको बढाने वाले एक तो मुजरिम हैं जिन्हें सजायें दे कर भ्रष्ट किया जाता है और दूसरे वे वैध मुजरिम हैं—अदालतों के जज, सरकारी वकील, जांचकर्ता, जेलर इत्यादि—जो लोगों पर इन्साफ करने बैठते हैं और उन्हें सजाएं देते हैं। यह बात भी नेख्लूदोव की समझ में आ गयी कि सामान्यतया यदि समाज और उसकी व्यवस्था बनी हुई है तो इसलिए नहीं कि ये वैध मुजरिम विद्यमान हैं, जो लोगों पर इन्साफ करते और उन्हें दण्ड देते हैं वरन् इसलिए कि उनके भ्रष्टकारक प्रभाव के बावजूद इन्सानों के दिल में अब भी दया भावना है और वे एक दूसरे से प्रेम करते हैं।

इस आशा से कि शायद उसके विचारों का समर्थन उसे इंजील में मिले, नेख्लूदोव शुरू से उसे पढने लगा। पढते हुए वह पहाड पर दिये गये उपदेश वाले स्थल तक पहुंचा। सदा ही इस उपदेश का उसके मन पर गहरा असर हुआ करता था, हालांकि वह उसे सुन्दर किन्तु अव्यावहारिक लगता था, और वह समझता था कि इसमें मनुष्य से उन बातों की मांग की गयी है जो अत्यधिक दूर की और अप्राप्य हैं। परन्तु आज पहली बार इस उपदेश में उसे सरल, स्पष्ट, व्यावहारिक नियमों का बोध हुआ, जिन पर आचरण करने से (और इन पर आचरण किया जा सकता था) सामाजिक जीवन में बिल्कुल नयी स्थिति पैदा होगी, और हिंसा, जिससे नेख्लूदोव का हृदय क्रोध से भर उठता था, अपने आप खत्म हो जायेगी। इतना ही नहीं यह पृथ्वी स्वर्ग तुल्य हो जायेगी और मनुष्य महानतम प्रसाद का भोगी होगा।

ऐसे पांच नियम थे

पहला नियम (मत्ती, अध्याय ५, २१–२६) यह कि मनुष्य किसी की हत्या न करे, अपने भाई से गुस्सा तक न करे किसी को भी 'राका"

अर्थात अयोग्य न समझे। यदि किसी से उसका झगडा हो जाय तो अपनी भेंट भगवान् के चरणा म रखने से पहले, अर्थात् आराधना करने से पहले, उससे सुलह कर ले।

दूसरा नियम (मत्ती, अध्याय ५, २७–३२) कि मनुष्य परस्त्री के साथ व्यभिचार नही करे, स्त्री के सौन्दय का रसभोग तक करने की चेष्टा न करे। और जब किसी स्त्री के साथ उसका मिलाप हो जाय तो आजीवन उसके प्रति सच्चा रहे।

तीसरा नियम (मत्ती, अध्याय ५, ३३–३७) कि मनुष्य कभी भी शपथ द्वारा अपने को बाधे नही।

चौथा नियम (मत्ती, अध्याय ५ ३८–४२) कि मनुष्य किसी से भी बदला न ले, बल्कि यदि कोई एक गाल पर तमाचा मारे तो अपना दूसरा गाल उसके सामने कर दे। यदि उसे कोई हानि पहुचाये तो उस क्षमा कर दे और उसे नम्रता से सहन करे। लोगा की सेवा करने के लिए सदैव तत्पर रहे।

पाचवा नियम (मत्ती, अध्याय ५, ४३–४८) कि मनुष्य अपने शत्रुआ स कभी भी घृणा नही करे न ही उनके साथ लडे बल्कि उनसे प्रेम करे, उनकी सहायता करे, उनकी सेवा करे।

लैम्प पर आखें गाडे नेख्लूदाव बैठा था। ऐसा लगता था जसे उसके दिल की गति बन्द हो गयी हा। हमारा जीवन कितना असगत और उलझा हुआ है। उसे साफ नज़र आने लगा कि यदि लोगो का इन नियमा का पालन करना सिखाया जाय तो जीवन मे कैसा महान परिवतन आ जायेगा। उसकी आत्मा आनन्दविभोर हो उठी। इतने गहरे आनन्द का उसने पहले कभी भी अनुभव नही किया था। उसे जान पडा जस वरसो की थकान और यन्त्रणा के बाद उस सहसा आराम और आज़ादी मिली हो।

रात भर वह जागता रहा। उसके मन की भी वही स्थिति थी जो अक्सर इजील पढने वालो के मन की हुआ करती है। आज पहली बार वह उन शब्दा का पूरा अथ समझ रहा था जिन्हे पहल वह कई बार पढता जाया करता था किन्तु उनकी ओर कभी ध्यान नही देता था। इस समय ये आवश्यक महत्वपूण तथा आनन्दपूर्ण शब्द उसके लिए आकाशवाणी के समान हो रहे थे और वह इन्हे इस भाति हृदयगम कर रहा था जिस

भाति स्पज पानी का अपने म समा लेता है। जो कुछ भी वह आज पढ रहा था, वह उसे परिचित लग रहा था। वे बातें जिन्हें वह जानता तो पहले से था किन्तु जिनकी सत्यता को उसने महसूस नही किया था और उन पर पूणतया विश्वास भी नही किया था, आज उभर कर उसकी चेतना म आ गयी थी। आज उन्हे समथन प्राप्त हो रहा था। आज वह उन्ह समझ रहा था और उसे यह विश्वास भी था कि यदि मनुष्य इन नियमा का पालन करे तो उन्ह महानतम सुख की प्राप्ति होगी। आज वह यह समझ रहा था और इस पर उसकी आस्था पक्की हो गयी थी। इतना ही नही, वह यह भी समझता और विश्वास करता था कि प्रत्येक मनुष्य के लिए यही एकमात्र उपाय है कि वह इन नियमा पर आचरण करे, कि इसी मे जीवन की एकमात्र साथकता निहित है, इन नियमा से तनिक भी इधर उधर होना भूल होगी जिसकी मनुष्य को फौरन सजा भोगनी पडगी। सारे उपदेश का यही सार है और यह बात अगूरा वाले बगीचे की कथा से अत्यधिक स्पष्टता तथा सजीवता से प्रमाणित होती है।

किसान यह समझे बठे थे कि अगूरा की जिस खेती म उनका मालिक उन्ह काम करने के लिए भेजता था वह उनकी अपनी थी, कि वहा पर जो कुछ भी था उनके लिए था, और उनका काम यही था कि वहा मौज-मला करे मालिक को भूले रह और उन लोगो को मौत के घाट उतारते रह जो उन्ह यह याद तक दिलाये कि उनका मालिक भी कही मौजूद है।

"क्या हम भी वही बात नही करते?" नेख्लूदाव ने साचा। "जब हम यह साचने लगते है कि हम ही अपन जीवन के मालिक ह, और समझत है कि जीवन ऐश आराम करने के लिए है? प्रत्यक्षत यह फिजूल बात है। हम यहा किसी की इच्छा से और किसी उद्देश्य से भेजे गय है। परन्तु हमन यही निश्चय कर लिया है कि हम केवल अपने सुख क लिए जीते है। परिणाम यह होता है कि हम भी उन किसाना की तरह दुखी होते ह जो अपन मालिक के आदेश का पालन नही करते। मालिक क्या चाहता है, यह इन नियमा म बता दिया गया है। ज्या ही मनुष्य इन नियमा को क्रियान्वित कर लगे, ता धरा पर स्वग उतर आयेगा, और मनुष्य श्रेष्ठतम सुख को प्राप्त करगे।

"सबसे पहले भगवान क राज्य तथा उसके सत्य की खोज करो।

ग्रौर बाकी सारी चीजें तुम्हे स्वय मिलती रहगी।" परन्तु हम इन बाकी चीज़ो को खोजते हैं, ग्रौर, ज़ाहिर है, इन्हे प्राप्त करने मे ग्रसमर्थ रहते है।

"यह है मेरे जीवन का ध्येय। मैं एक काम ग्रभी समाप्त कर ही पाया हू कि दूसरा शुरू हो गया है।"

उस रात नेख्लूदोव के लिए एक बिल्कुल ही नया जीवन ग्रारम्भ हुग्रा। इसलिए नही कि उसके लिए जीवन की परिस्थितिया वदल गयी थी, वल्कि इसलिए कि उस रात के बाद जो कुछ भी वह करता उसका उसके लिए नया ग्रौर सवथा भिन्न ग्रथ होता। समय ही बतायेगा कि उसके जीवन के इस नये ग्रध्याय का ग्रन्त किस भाति होगा।

१८९९

समाप्त

पाठको से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिजाइन के बारे म आपके विचार जानकर अनुगहीत हागा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमे वडी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है

प्रगति प्रकाशन,
२१, जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को सोवियत सघ।

प्रकाशित हो चुकी है

सराफीमाविच, अ०

'तूफान' (कहानी सग्रह)

अलेक्सांद्र सेराफीमोविच वरिष्ठतम साहित्यकार, गोर्की के घनिष्ठ मित्र और शोलोखोव, आस्त्राव्स्की, फुरमानोव आदि अनेक प्रसिद्ध सोवियत लेखको के पहले शिक्षक है।

प्रस्तुत सग्रह म सराफीमोविच की ६ कहानिया शामिल हैं "वालू", "गालीना", "तूफान" "मृत्यु अभियान", "चाटी के साये मे" और "दो मौतें"।

सग्रह की पहली कहानी "वालू" की लेव तालस्तोय ने बहुत प्रशसा की थी।

पुस्तक के आरभ म लेखक के कृतित्व का सक्षिप्त परिचय दिया गया है।

प्रकाशित होनेवाली है

कोरोलेंको, व्ला०
'अंधा संगीतज्ञ' (उपन्यास)

"कीयेव के मेले में एक खास संगीतज्ञ को सुनने के लिए बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गयी। वह अंधा था, मगर उसकी संगीत प्रतिभा और ज़िंदगी के बारे में बड़ी अद्भुत अफ़वाह थी। कहा जाता था कि उसका बचपन में एक समृद्ध परिवार से अपहरण कर लिया गया था... कुछ औरों का कहना था कि उसने स्वयं कुछ रोमानी विचारों के कारण अपना घर छोड़ दिया था और भिखारियों के एक दल में शामिल हो गया था। कारण चाहे कुछ भी रहा हो, पर हॉल ठसाठस भरा हुआ था..."

इस उपन्यास की कथावस्तु इसी अंधे बालक प्योत्र पोपेल्स्की की कहानी है, जो एक विख्यात संगीतज्ञ बन जाता है। यह एक ऐसे आदमी की कहानी है, जिसने आत्मिक दृष्टि के साथ साथ सुख के अपने लक्ष्य को भी पा लिया है।

लेव तोलस्तोय और चेखोव के समकालीन व्लादीमिर कोरोलेंको (१८५३-१९२१) बड़ी बहुमुखी प्रतिभा के धनी लेखक थे और गोर्की के पहले शिक्षक थे।

लेर्मोन्तोव, म०
कवितायें

महान रूसी कवि मिखाईल लेर्मोन्तोव (१८१४–१८४१) के काव्य से यदि आप परिचित होना और उसका रस-पान करना चाहते है, तो इस सग्रह को हाथ मे लीजिये। इसम "मत्सीरी" (बाल-मठवासी), "दानव" जैसी लम्बी कवितायें और विभिन्न वर्षो की छोटी कविताये सग्रहीत है। हमारा प्रकाशनगृह हिन्दी म पहली वार ऐसा सग्रह प्रस्तुत कर रहा है। आपके सुपरिचित कवि श्री "मधु" ने सीधे रूसी से इह हिदी म ढाला है।

प्रसिद्ध सोवियत कवि सेर्गेई नारोवचातोव ने इस सग्रह के लिए भूमिका लिखी है।